दानवीर माणिकचन्द्र भुवन ग्रंथमाला नं. १

ॐ नमः श्रीवीतरागाय।

दानवीर माणिकचन्द्र

(बम्बई निवासी स्व० दानवीर जैनकुलभूषण

सेठ माणिकचन्द हीराचन्द जौहरी

जे. पी. का विस्तृत जीवनचरित्र)

लेखकः—

श्रीमान् जैनधर्मभूषण—

ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी

संपादक "जैनमित्र"- सूरत।

प्रकाशकः—

मूलचंद किसनदास कापड़िया—सूरत।

वीर सं. २४४५.] विक्र. सं. १९७५. [ई० १९१९.

प्रथमावृत्ति] [प्रति १०००

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस—सूरत।

मूल्य सिर्फ रु. [illegible]

Printed by
Ishwarlal Kisandas Kapadia at 'Jain Vijaya
Printing Press near Khapatia chakla,
Laxminarayan's Wadi-- SURAT.

Published by
Moolchand Kisandas Kapadia,
from Khapatia Chakla, Chandawadi-SURAT.

प्रस्तावना।

—⋇—

बम्बई निवासी स्वर्गीय दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचंद हीराचंदजी जौहरी जे० पी० को कौन नहीं जानता? आपकी जन्मभूमि सूरत है और हम भी आपकी जाति (वीसा हूमड़) और एक गोत्री होनेसे तथा हमारे ऊपर आपका प्रेम एक पुत्रसे भी अधिक होनेके कारण आपसे हमारा विशेष परिचय था और सेठजीने जीवित अवस्थामें हमसे कई वार कहा था कि "भाई मूलचंद, तुम हमारा जीवनचरित्र हमारे जीते हुए ही प्रकट करो"। परंतु खेद है कि हम आपकी आज्ञाका पालन नहीं कर सके थे; क्योंकि इस कार्यके लिये विशेष सामिग्री एकत्रित करनेकी आवश्यकता थी तो भी एकवार भ्रमणके समय रेल ट्रेनमें बैठे २ आपके वंशका परिचय और बम्बईमें जाकर व्यापार शुरू किया वहां तककी सब घटनाएं आपसे नोट कर ली थीं और विशेषके लिये फिर मौका न मिलनेसे यह काम रह गया था। इतनेमें अकस्मात् आपका स्वर्गवास वीर सं० २४४० विक्रम संवत १९७० आषाढ़ वदी ९ (गुजराती) को हो जानेसे हमें और सारी जैन समाजको जो दुःख हुआ उसका कोई पारावार न था परंतु क्या किया जाय, होनहार बलवान है वह कभी भी मिट नहीं सकती।

आपके स्वर्गवास होते ही हमने 'दिगंबर जैन' द्वारा आपका एक स्मारक फंड स्थापित किया था जिसका मूल उद्देश्य आपका विस्तृत जीवनचरित्र प्रकट करना था। इस फंडमें हमें निम्नलिखित सहायता प्राप्त हुई थीः—

स्मारकफंडकी संक्षिप्त सूची।

५१) सेठ मूलचंद किसनदास कापड़िया सूरत
५१) "दिगम्बरजैन" कार्यालय ,,
२५) सेठ शिवलाल झवेरचंद ज्यारा सूरत
५)- सेठ देवचंद गुलाबचंद ,,
१०) शा० नानचंद रूपचंद ,,
१४।)ॾ फुटकर ,,
६) करमसद (आणंद)के भाइयों द्वारा
२१॥) वडु (पादरा) ,, ,,
४) बलासण (आणंद)
६) डभका (वडोदा) ,, ,,
२५) सेठ डाह्याभाई रीखवदास सूरत
२०) दोशी गेबीलाल कस्तूरचंद मार्फत दि० जैन पंच झालुआ
२५) शा० डाह्याभाई शिवलाल करमसदवाले गिरीडिह
७) वसोके भाइयों द्वारा
१५।) दि० जैन पंच काणीसा (खंभात)
९) सायमा (खंभात)के भाइयों द्वारा
२५) समस्त दि० जैन पंच महुवा (सूरत)
१६।।।) बोरसदके भाइयों द्वारा
१५) वांच (अमदाबाद) ,,
११) सेठ लालचंद कहानदास बड़ौदा
११) ,, गिरधरलाल नारणदास बड़ौदा
१८।।।) फुटकर बडोदाके पंचोंके मार्फत सेठ लालचंद कहानदास
२५) सेठ छगनलाल चेलाभाई तासवाला सूरत
५) प्रेमजी सवजी वखारीया डूंगरपुर

६) मालावाड़ा (पेटलाद)के भाइयों द्वारा
५) सराफ गेबीलाल कुंदरजी दाहोद
२३) दाहोदके भाइयों द्वारा फुटकर मार्फत जेचंद नाथजी
५) कुवालगढ़के पंचों द्वारा
५) सेठ वजेचंद हरीचंद रानकुवा (सूरत)
५८) राणापुरके दि० जैन पंच मार्फत जवेरचंद भोजराज
८) शा० प्रेमचंद दीपचंद तारापुर
५) शा० तिलोकचंद रतनजी दाहोद
५) वदेलके भाइयों द्वारा
४०) वसवरीया (बंगाल) के भाइयों द्वारा मार्फत
शा० तलकचंद ईश्वरदास
१०) शा. जेसंगभाई गुलाबचंद प्रभासपाटण
९।=) मलीआव (आणंद)के भाईयों द्वारा
६।=) समस्त दि० जैन पंच द्रग
५) सेठ अमृतलाल गुलाबचंद बम्बई
५१) सेठ गुलाबचंद हीरालाल धूलिया
५) बोधगांवके भाइयों द्वारा
६) मायज (बड़ौदा)के पंचों द्वारा
१५) शा० मोतीचंद नेमचंद बुहारी (सूरत)
११) ,, नानचंद कस्तूरचंद ,,
९) ,, सीमचंद भगवानदास ,,
११) ,, प्राणजीवनदास माणिकचंद ,,
६) ,, बेचरदास मकनदास ,,
११) ,, ताराचंद मोतीचंद ,,
१८) ,, मगनलाल तथा मणीलालकी कंपनी
११) ,, मणीलाल ताराचंदकी कंपनी

५) ,, अंबेलाल आतमारामकी कंपनी
[illegible]२।) अंकलेश्वरके दि० जैन पंच मार्फत
शा० छोटालाल घेलाभाई गांधी
१५) टेंभुर्णी (सोलापुर)के भाइयों द्वारा
२०॥) रणासणके भाइयों द्वारा मार्फत
सेठ पूनमचंद सांकलचंद
१८) थांदला (रतलाम) के भाइयों द्वारा
[illegible]) नाथूराम दीपचन्द्र परवार नरसिंहपुर
१२॥) रतलामकी बोर्डिंग द्वारा फुटकर
५) शा० श्रीकमदास खुशालदास बाकरोल
६॥) देलवाड़के भाइयों द्वारा
१५॥) वेडच ,, ,,
८) पेटलाद ,, ,,
२८) दि० जैन पंच मार्फत सेठ हरजीवन लालचंद बड़ौदा
१०३) सेठ रोडमल मेघराजजी सुसारी
११) जवरचंद कंवरलाल जैन म्हुव
१०) शा० दलपतभाई केवलभाई वलसाड
५) मुनीम धरमचंदजी हरजीवनदास पालीताना
३०) शा० परभुदास लखमीदास झेहर
१०) ,, केवलदास हरजीवनदास ,,
४६) झेहरके भाइयोंद्वारा फुटकर
५) खेरगाम (सूरत) के भाईयोंद्वारा
१०) श्राविकाश्रम (बम्बई) की श्राविकाओंद्वारा
१०) श्री० शिवलाल सुन्दरलाल बैनाड़ा झालरापाटन
९।) जांबुडीके भाइयों द्वारा
१७॥) सेठ भगवानदास झवेरदास सोजित्राकी मार्फत आए

२५)	शा० परभूदास हेमचंद	सूरत
१५)	,, त्रिभोवनदास मोजलाल	,,
५)	,, छगनलाल उत्तमचंद खरैया	,,
५)	,, परभुदास पानाचंद खरैया	,,
५)	,, मंछाराम जगजीवनदास	,,
८२॥-)	फुटकर	

१३९१-५-०

इसके बाद सेठजीकी विधवा नवीबाईसे पत्र व्यवहार करने पर आपके द्वारा रु० ५००)की रकम इस फंडमें मिली थी जिससे यह फंड १८९१।-)का हो गया।

तदनंतर जीवनचरित्रके लिये सामिग्री एकत्रित करनेका काम हमने लिया और सेठजीसे गाढ़ परिचयवाले और जैनसमाजकी उन्नतिके लिये रात्रि दिन लवलीन श्रीमान् जैनधर्मभूषण **ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी**ने यह चरित्र लिख देनेका काम सहर्ष स्वीकार कर लिया। बादमें इसकी आवश्यक सामग्री एकत्र करनेके लिये 'दिगम्बरजैन,' 'जैनमित्र' आदि पत्रोंमें विज्ञापन छपाया गया और हमने इतस्ततः बहुत पत्र व्यवहार किया; किन्तु खेद है कि हमको आने दो आने समाचार ही सेठजीके बारेमें प्रगट हुए जिसमें आमोदके सेठ हरजीवन रामचंद शाहने सेठजीके कई कार्योंके उल्लेखरूप एक बड़ा लेख भेजा था जिसके लिये हम आपके आभारी हैं। इस प्रकार जब पूर्ण सामग्री न मिल सकी तब हमने जातीय साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक सभी पत्रोंकी फाइलें एकत्रित कीं जिसमें 'जैनगजट'की पुरानी फाइलें

भेजनेके लिये भारतवर्षीय दि० जैन महासभा कार्यालयके, सबसे पुराना मासिक 'जैन बोधक' (मराठी) की प्रारंभसे फाइलें भेजनेके लिये सेठ रावजी सखाराम दोशी सोलापुरके, 'जिनविजय' (मराठी) मासिककी फाइलें भेजनेके लिये श्रीयुत भरमप्पा पदमप्पा पाटील (होसूर)के और 'जैनमित्र' तथा 'जैनगजट'की कुछ फाइलें भेजनेके लिये बम्बई दि० जैन प्रांतिक सभा कार्यालयके हम आभारी हैं; क्योंकि इन फाइलोंसे ही इस चरित्रके लिये हमें बहुतसी सामग्री मिल सकी है।

अब सेठजीके वंशका विशेष परिचय जाननेकी आवश्यकता थी जिसको आपके लघु भ्राता **सेठ नवलचंदजी** (जो कि इस जीवनचरित्रको प्रकट हुआ देख नहीं सके और गत वर्षमें स्वर्गवासी हुए हैं) और आपकी पत्नी श्रीमती परसनबाईको पूछ कर नोट किया था और आपके पिताकी जन्मभूमि भींडर (मेवाड़ उदयपुर) का कुछ परिचय प्राप्त किया और स्वर्गीय सेठजीकी जन्मभूमि **सूरत** शहरका–जो कि " सोनानी मूरत " (सोनेकी मूर्ति) कही जाती है और अति प्राचीन शहर है, जहां कई भट्टारक हो गये हैं, कई ग्रन्थ तैयार हुए थे, और कई मंदिरोंका निर्माण हुआ था–और उसके आसपास यानी गुजरात देशका प्राचीन इतिहास इस चरित्रमें प्रकट करनेका हमारा और ब्रह्मचारीजीका विचार हुआ था; क्योंकि जिससे स्वर्गीय सेठजीकी जन्मभूमिका महत्व प्रकट हो जाय और साथ २ अपने धर्मकी पूर्व महत्ताका परिचय मिल जाय इसलिये इधर उधर घूमकर कई पुस्तकें एकत्रित कीं और कई प्रतिमाओंके लेख उद्धृत

किये और हस्तलिखित कई ग्रन्थोंसे भी सूरत और आसपासके मन्दिर, प्रतिमाओं और ग्रन्थादिका पता लगाया। सूरत, रांदेर आदिके मंदिरोंकी प्रतिमाओंके लेखादि संग्रह करनेमें यहांके हमारे उत्साही मित्र भाई छगनलाल उत्तमचंद सरैयाने बहुत सहायता की थी जिसके लिये भाई सरैयाके हम आभारी हैं। इसके सिवाय सेठजीकी फर्मसे स्वर्गवासके बाद आये हुए तार पत्रादि प्राप्त किये और पत्रोंके शोकजनक लेख और कविताएं प्राप्त कीं। इस तरह इस बृहत् चरित्रकी सामग्री इकट्ठी करनेमें बहुत समय लग गया। फिर मान्यवर ब्रह्मचारीने जब तीसरे वर्ष बड़ौदेमें चौमासा किया था तब इस चरित्रको लिपिबद्ध कर लिया। बाद छपानेका काम प्रारंभ हुआ जिसमें कई कारणोंसे विलंब हुआ और फिर इसमें सेठजीकी कई अवस्थाओंके चित्र, आपकी स्थापित संस्थाओंके चित्र ऐसे कई चित्र प्रकट करनेका इरादा था जिसको प्राप्त करने और तयार करनेमें भी विलंब हुआ।

पाठकगण ! आपने बहुतसे जीवनचरित्र पढ़े होंगे परंतु इस बृहत् चरित्रमें आपको कुछ विशेषता अवश्य ही दृष्टिगोचर होगी; क्योंकि स्वर्गीय सेठजीका वंशपरिचय और अपनी समाजोन्नतिकी कार्य प्रणालीका वर्णन पढ़नेसे पाठकोंको बहुत ही लाभ होगा और सूरत जिलेके जैनोंकी पूर्व कीर्ति-कौमुदीका वर्णन तथा शिलालेख, भट्टारकोंकी पट्टावली तथा जातियोंकी उत्पत्तिका वर्णन पढ़नेसे यह जीवनचरित्र एक संग्रह करने योग्य जैनशास्त्र ही मालूम होगा। जब एक ऐशआराम करनेवाला बहुत बड़ा धनिक अपने पैसेका उपयोग धार्मिक और सामाजिक कार्योंमें

नहीं करता है तब स्वर्गीय सेठजीने सामान्य धनिक होकर भी सामाजिक और धार्मिक उन्नतिके लिये रात्रि दिन इतना परिश्रम और द्रव्य व्यय किया था कि आज सेठजीकी जोड़का एक भी पुरुष नज़र नहीं आता।

इस चरित्रमें करीब २५–२६००) रु०की रकम खर्च हुई है और २००० प्रतियां प्रकट की गई हैं जो सिर्फ १) रु० लेकर ही प्रथम 'दिगम्बर जैन'के ग्राहकोंको ही दी जांयगी और कुछ प्रतियाँ समालोचनादिमें तथा अपनी संस्थाओंको भेटमें बटेंगी और शेष करीब २०० ही विक्रीके लिये रह जांयगी जो देखते २ बिक जांयगी ऐसी आशा है।

स्वर्गीय सेठजीको पुस्तकें प्रकाशित करनेका शौक था और इसकी आवश्यकता है ही इसलिये यह चरित्र बिक जानेपर जो रक़म बचेगी उसको स्थायी रखके उसकी उपजमेंसे **"दानवीर माणिकचंद सुलभ ग्रन्थमाला"** प्रकट करनेका हमारा विचार है जिसके ग्रंथ बिलकुल लागतके मूल्य पर ही प्रकट किये जांयगे और हिन्दी तथा गुजराती दोनों भाषाओंके ग्रंथ इसमें प्रकट होंगे।

इस चरित्रमें क्या क्या विषय है वह तो इसकी विषयसूची पढ़नेसे मालूम होगा इसलिये यहां विशेष न लिखकर पाठकोंसे हम सिफारिश करते हैं कि आप इस बृहत् चरित्रको आदिसे अंत तक शनैः २ अवश्य पढ़ें और बादमें अपने मित्रोंको भी पढ़नेको देवें। हमारे अजैन भाई भी इस चरित्रको पढ़कर बहुत लाभ उठा सकेंगे।

चार वर्षसे इस चरित्रको पढ़नेके लिये सारा जैन समाज लालायित हो रहा था और बहुत समयसे अनेक आर्डर भी आ गये थे परन्तु तैयार होनेमें कई कारणोंसे विलंब हो गया इसलिये पाठकोंसे हम क्षमाप्रार्थी हैं तथा इसमें जो कुछ त्रुटि मालूम पड़े उसकी सूचना हमको अवश्य देवें क्योंकि यदि इस जीवनचरित्रकी विशेष मांग होगी तो इसकी दूसरी आवृत्ति निकालनेका भी हमारा पूर्ण विचार है ! इति शुभम् ।

वीर सं० २४४५
पौष वदी ३ गुरूवार
ता० २६-१२-१८
सूरत.

जैन जातिसेवक—
मूलचन्द किसनदास
कापड़िया

विषय-सूची।

अध्याय पहिला।

अध्याय दूसरा।

गुजरात देशके सूरत शहरका दिग्दर्शन-

अध्याय तीसरा।

उच्च कुलमें जन्म

अध्याय चौथा।

सेठ माणिकचंदजीकी वृद्धि।

अध्याय पांचवां ।

युवावस्था और गृहस्थाश्रम

अध्याय छठा ।

संतति-लाभ

अध्याय सातवां ।

लक्ष्मीका उपयोग

अध्याय आठवां।

संयोग और वियोग।

अध्याय नवां ।

समाजकी सच्ची सेवा ।

अध्याय दसवां।

महती जातिसेवा-प्रथम भाग।

अध्याय ग्यारहवां।

महती जातिसेवा-द्वितीय भाग।

अध्याय बारहवां।

महती जातिसेवा–तृतीय भाग।

अध्याय तेरहवा।

दानवीरका स्वर्गवास।

शुद्धिपत्र।

पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
८	२०	थीरता	थिरता
९	६	हठ	हट
१३	१७	शीघ्र	सिद्ध
१६	१८	प्लोटो	प्लेटो
,,	२३	कार्णों	कर्णों
४७	८	अय्यु	लघु
५४	१०	तंवतके अंक तीनठो	संवतके अंक तीन ही
६१	२०	पुरुषार्थ	पुरुषार्थी
६३	७	विनकसेन	विनयसेन
,,	१९	उम्मेगं	उम्मगं
६४	१२	ग्राम ने काउ	ग्राममें काउा
६९	१७	यथन	कथन
७३	१८	कंगूनेदार	कंगूरेदार
१०५	२२	बढ़ाता	बढ़ता
१३८	१८	उत्कृष्ट	उत्कट
१९७	८	रमणीकता	रमणीकताका
१९६	३	पुरापार्थी	पुरुषार्थी
१९७	१७	एक	एक में
३२०	१४	संबन्धियोंमें	सम्बन्धियोंमेंसे
३२६	१४	जरता	जाता

पृ.	लं.	अशुद्ध	शुद्ध
३१०	१९	अपने	आपने
३४०	२२	जो	ज़ोर
३१२	३	तुदु	डुडु
,,	१७	सुवर्णम	सुवर्णमय
३४९	१	पंजीकी	फानस
३५१	४	सिताई	सितारे
३६५	११	व	वे
३७०	४	योगान	योगाने
,,	१४	व्याप्त	व्यावृत
३९३	१८	देशका	देशकी
३९४	१०	शोक	शौक
४२१	२१	२०००	२००००
४५१	१७	भाई	भारी
४५६	१९	अप्रैलको	अप्रैलको सेठजी छिन्दवाड़ा आए वहां
२०८	२३	१९८०	१९४०
२३२	७	खनपर	खनका
२३४	९	कम	कर्म
२३६	३	जमीन	जीमन
२४७	११	वृद्धि	बुद्धि
२५८	१३	महलमें कशसे	महलके फर्शमें
२९५	१	वं०	पं०

पृ.	ला.	अशुद्ध	शुद्ध
,,	११	आदनी	आदमी
२५८	८	साश्रार्थ	सर्व शास्त्रार्थ
२६४	७	१९१०	१९१७
२७३	१६	४	१
२७७	२०	समासोत	समासांत
२९९	९	प्रढ़वीए	पुढ़वीए
२९७	२०	अ:ल	अ:ा
४७३	१६	वतन	वेतन
४९४	५	लैट	लौट
५२७	१३	लाला	लाट
५३९	१४	माणिकचंद्रजी	माणिकचंद्रजीको
६००	७	कि	की
६२१	७	हैं	है
,,	२४	ही ज्ञान	विज्ञान
७०६	१६	की	बोर्डिङ्गकी
७२३	१३	सांगलीकी	सांगलीका
७४४	४	फंद	फन

स्वर्गीय श्रीमान दानवीर जैनकुलभूषण

सेठ माणिकचन्द हीराचन्द जौहरी जे॰ पी॰ बम्बई।

जन्म सं १९०८ स्वर्गवास सं १९७०

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

दानवीर माणिकचन्द्र।

स्व० दा० जैनकुलभूषण सेठ माणिकचन्द्र हीराचन्द्र जौंहरी जे०पी०बम्बईका संक्षिप्त जीवन चरित्र।

अध्याय पहिला।

जीवन चरित्रकी आवश्यकता।

इस संसारमें कोई भी प्राणधारी एक पर्यायमें बहुत कालतक नहीं रहता। यह बात प्रत्यक्ष है कि लाखों कोशिशोंके किये जानेपर भी एक जीता जागता मानव, एक जगतके जीवोंका मित्र, एक अपनी शक्तियोंको परमात्म-भक्तिमें व परोपकार-वृत्तिमें लीन करनेवाला, यहां तक कि स्वयं सर्वज्ञ अवस्थाको प्राप्त होनेवाला इस पुद्गलके स्कंधोंसे रचे हुए शरीरमें अपनी आयुसे अधिक रह नहीं सक्ता। मरण किसीको नहीं छोड़ता। किन्तु मरण उन्हींका मरणरूप है जो फिर अन्य शरीर-को धारण करते हैं। जिन्होंने अपने आत्माके ऊपरसे कारण शरीर अर्थात् कार्माण देहको या आठों कर्मोंको जला डाला है और उसे शुद्ध निर्विकार ज्ञानानंदमय बना डाला है उनका यह शरीर-वियोग मरण नहीं किन्तु मोक्ष है। वे स्वाधीन, अव्याबाध,

आनंदमय होकर निरंतर स्वात्मानुभूति तियाके विलासमें मग्न रह परमामृतका स्वाद लेते हुए परम सुखी रहते हैं। ऐसे महात्माओंको वीर, महावीर, परमविजयी, सिद्ध, परमऐश्वर्यधारी, परमप्रभु कहते हैं। आत्मा अपूर्व शक्तियोंका भंडार है। इसका लक्षण उपयोग है। ज्ञान क्रियाका स्वामी आत्मा ही है, अन्य कोई भी अनात्मा नहीं। ज्ञान एक गुण है। गुण और गुणका आश्रयी द्रव्य इस जगतमें कभी मिटते नहीं, चाहे जितनी उनकी अवस्थायें पलटती चली जावें। निःसन्देह एक अवस्था जरूर मिटनेवाली और अन्य अवस्था होनेवाली है, पर जिसकी दशा पलटती वह अपनी सत्ताको इस जगतमें सदा बनाये रखता है। हमको प्रत्यक्ष अनुभव है कि किसीका निश्चयसे नाश नहीं होता। एक उजड़े हुए वृक्षकी शाखायें काटे जानेपर लकड़ी होकर कोयला, राख होती और फिर पानी हवाके साथ इधर उधर बहती हुई फिरती हैं। वह मसाला, वह द्रव्य, वह चीज़ जो शाखाओंमें थी वह इस संसारसे लुप्त न हुई किन्तु एक दूसरी ही हालतमें बदल गई, तो भी जो गुण उस शाखाके द्रव्यमें थे वे सब उसके उसीमें हैं।

ज्ञान आत्माका मुख्य गुण, हरएकके अनुभवमें है। हरएक जानता है कि मैं जानता हूं, मैं देखता हूं, मैं सुनता हूं, मैं काम करता हूं, मैं दुःखी हूं, मैं सुखी हूं। इस ज्ञान गुण और इसके स्वामी आत्माका कभी नाश नहीं। ये दोनों अजर अमर अविनाशी अमिट हैं। इससे आत्मा अपने सर्व गुणोंके साथमें इस जगतमें सदा ही एक न एक पर्यायमें बना रहता है। जब तक शुद्ध नहीं, मुक्त नहीं, निरंजन नहीं तब तक इसको अपने कर्मोंके अनुसार

कोई न कोई देहमें अवश्य रहना पड़ता है । कर्म सहित, जीवोंका मरण एक नये जन्मके लिये होता है । जो कुछ भी हो यह निश्चय है कि इस शरीरका सम्बन्ध किसीका भी अमर नहीं रह सका । ऐसी दशामें प्रवीण मनुष्य मानव शरीरमें रहते हुए इसका ऐसा उपयोग करते हैं जिससे न कि यह जन्म ही सुन्दर, सुखदायी और हितकारी होता है, किन्तु पर जन्ममें भी शुभ शरीर व शुभ सम्बन्ध पानेका दृढ़ पुण्य उनके साथ हो जाता है ।

सर्व प्राणधारियोंमें मानव सबसे श्रेष्ठ है। इसको मनकी शक्तिका अपूर्व लाभ है। मनकेद्वारा यह बड़े २ आश्चर्ययुक्त तरकीबोंको सोच सक्ता है । आज कल जो हवाई जहाज़, बेतारका तार आदि नाना यंत्र निकल पड़े हैं ये सब मनका ही चमत्कार है । मनके द्वारा यह जगत क्या है? इसमें कौन२ पदार्थ हैं ? उनमें मुझे हितकारी क्या व अहितकारी क्या ? यह सब ज्ञान होता है । सूक्ष्मसे सूक्ष्म तत्त्व जो एक शुद्ध आत्माका अनुभव है उस तककी पहुंच इस मानवको हो जाती है और यह उस तत्त्वका सेवी होता हुआ जो आनन्द लाभ करता है वह वचन अगोचर है, केवल अनुभव-गम्य है। यही अनुभव आत्माके मैलको धीरे२ धोता है, यहां तक कि यही आत्माको शुद्ध कर देता है।

मानवोंके लिये धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चार पुरुषार्थ हैं । मोक्ष धर्मका अंतिम फल है। अर्थ और कामका भी अंतरंग हेतु पुण्यरूप धर्म है । धर्मसाधन बिना तीनोंका लाभ नहीं, इससे धर्मका सेवन सबसे ज़रूरी है।

धर्म वास्तवमें आत्माके उस परिणामको कहते हैं जो शुद्ध

आत्मा या परमात्माकी ओर तन्मय होता हुआ वीतरागमय हो। यही परिणाम कर्मोंसे मुक्ति देनेवाला है। इसके अलाभमें उस परिणामको भी धर्म कहते हैं जो आत्माको पापोंसे बचाकर पुण्य कार्य्योंमें लगाता है पर वीतरागरूप होनेकी चाहसे मिला होता है। जिसका परिणाम क्रोध, मान, माया, लोभ कषायोंकी मंदतामें होता है। वह शुभ परिणाम है और जो इन कषायोंकी अतिशय मंदतामें होता है उसे शुद्ध या वीतराग परिणाम कहते हैं। जो इन दोनोंसे रहित तीव्र कषाय युक्त होकर पांचों इन्द्रियोंके भोगोंमें अनुरागी व पर अहितमें निडर व परकी बुराई व कष्ट देनेमें उत्सुक होता है उसे अशुभ परिणाम कहते हैं। यह अधर्म है क्योंकि पापका कारण है।

जो मानव श्रीऋषभदेव, अजितनाथ, चंद्रप्रभु, शीतलनाथ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ व महावीर सरीखे उत्कृष्ट क्षत्रियोंके समान आत्माको शुद्ध करना चाहते हैं वे केवल वीतराग भावके ही रसिक हो योगाभ्यासमें लीन हो साधुपनेके जीवनमें रह मुख्यतासे अपना नर जन्म सफल कर मोक्ष पुरुषार्थ साधते हैं। परंतु जो इतनी कषायोंकी हीनता करनेमें असमर्थ हैं वे घरहीमें रह धर्म, अर्थ और काम तीनों पुरुषार्थ साधते हैं। यद्यपि अर्थ याने लक्ष्मीका लाभ, काम याने न्यायपूर्वक इन्द्रियोंके भोग, शुभ परिणामसे किये हुए पुण्य कर्मको अपना अंतरंग कारण रखते हैं पर इनके लिये न्यायपूर्वक बाहरमें उद्यम या पुरुषार्थ किया जाता है तब ये सिद्ध होते हैं। जैसे दो पहियोंके बिना गाड़ी नहीं चलती ऐसे ही अंतरंग और बहिरंग दोनों कारणोंके बिना अर्थ और काम नहीं होते। जो आलसी बाहरी उपायोंमें सुस्त होते हैं वे अंतरंग

कारण होनेपर भी न तो द्रव्य पैदा कर सके और न न्याय सहित भोग ही पा सके हैं।

इस जगतमें वे ही मानव अपने जीवनके सुयशकी सुगंधको चारों ओर फैला जाते हैं जो अपने जीवनकी घड़ियोंको–उनके पल व विपलोंको, आवली व समयोंको सम्हाल २ कर काममें लेते–अर्थात् जो अपने आत्माको परमात्म शक्तिका भंडार निश्चय करते हुए उस शक्तिके खिलाने व उसीकी प्रफुल्लतामें परम सुख-अनुभवके श्रद्धानको रखते हुए गृही जीवनमें शरीरके इन्द्रिय सम्बन्धी विषयोंकी तुच्छ परवाह रखते हुए अर्थ व कामकी सिद्धि करते हुए **परके उपकारमें अपनी शक्तियोंका उपयोग करना अपना कर्तव्य समझते हैं** और रात्रि दिन सर्व जीवमात्रका कैसे हित हो इस चिन्तामें, इस उद्योगमें, इस धुनमें मस्त रहते हैं। ऐसे परोपकारियोंसे अधिक जीवोंका हित होता और उन जीवोंको अपनी उन्नतिका मार्ग सूझता है।

जो मानव इस पृथ्वीपर जन्म ले केवल अपनी इन्द्रियोंकी गुलामीमें ही अपने इस जीवनको बिता कर मृत्युकी शय्यामें सो जाते हैं वे यहां भी अपने जीवनसे बहुतोंकी हानि करते हैं और परलोकमें भी उनकी आत्माको योग्य पर्यायका लाभ नहीं होता। उनका जीवन पाशविक जीवनसे भी गया-बीता है।

मानवमें मानसिक, वाचनिक और कायिक ये तीन शक्तियां बड़ी बलवती हैं। जो इनको लोहेकी तरह बेकाम डाल रखते हैं उनकी शक्तियोंमें लोहेकी तरह जंग लग जाता है और वे बेचारे

उनसे कुछ भी लाभ नहीं उठा सके। करोड़ों मनुष्य इस संसारमें ऐसे हैं जिनकी शक्तियां शिक्षा, योग्य उदाहरण व योग्य सहारेके बिना यों ही पड़ी रहती हैं । जिनकी शक्तियोंको शिक्षादेवीकी उपासना नहीं मिलती है वे यों ही रह जाते हैं, कोरे पशुसम जीवन काटते हैं। भारतमें करोड़ों मनुष्य इसी रंगके हैं। शिक्षा शक्तियोंको खिलाती है, उन्हें मजबूत करती है, उनसे उपयोग लेना बताती है। मानवको जब धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थोंकी सिद्धि करनी है तब उसको शिक्षा भी ऐसी ही मिलनी चाहिये जो चारों साधनोंमें सहायक हो । यदि वह शिक्षा इनमेंसे किसी एकको भी हानि करनेवाली होगी तो वह शक्तियोंको उन्मार्गमें उपयुक्त करनेकी तरफ प्रेरणा करेगी । और इसका फल प्रायः ऐसा भी हो जायगा कि वह शिक्षाके होनेपर शिक्षाविहीन रहने-की अपेक्षा अपनी अधिक हानि कर बैठेगा। इस कारण इन ऊपर कहे हुए चारों वर्गोंको साधनेमें सहायक जो शिक्षा है वही सुशिक्षा है । यही सुशिक्षा मानवकी शक्तियोंको ऐसी चमत्कृत बनायेगी कि जिससे वह जगतके उपकार करनेके सिवाय अपना भी उपकार कर लेवेगा। **केवल पुस्तकोंके पढ़ने वा रटनेको शिक्षा नहीं कहते**—जिस रीतिसे मनुष्यको अपनी मानसिक, वाचनिक और कायिक शक्तियोंको उपयोगी मार्गमें ले जाकर उनसे यथोचित स्वपर उपकारक कार्य लेनेकी योग्यता आजाय वही रीति सुशिक्षा है।

जगतमें तीन तरहके मनुष्य होते हैं—उत्तम, मध्यम और जघन्य ।

उत्तम मनुष्य वे ही हैं जो प्रत्येक कार्य्यको विचारपूर्वक

शुरू करते, उसके शीघ्र करनेके लिये अनेक साधनोंको मिलाते, कार्य्यमें उद्यम करते हुए जो अनेक आपत्ति, उपसर्ग और कष्ट आजाते उनको समभावसे सहते, ज्यों ज्यों कष्ट पड़ते त्यों त्यों और अधिक उस संकल्प किये हुए कार्य्यके साधनमें लीन होते और अंततः उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं। यदि कदाचित आयु कर्म शीघ्र ही क्षय हो जावे और इस शरीरसे उनकी आत्माका वियोग हो जावे तो भी वे कुछ खेदित नहीं होते किन्तु अपने दृढ़ संकल्प और उद्योगके कारण अपने पीछे ऐसा दृष्टान्त छोड़ जाते हैं जिससे उसी कामके पूरा करनेमें कोई न कोई उद्योगी निकल आते हैं। और उनका उदाहरण सदाके लिये इस जगत्में अंकित हो जाता है।

मध्यम मनुष्य वे हैं जो काम तो विचारसे ही शुरू करते हैं और उसके साधन भी मिलाते हैं, पर यदि कष्ट, परीषह और उपसर्ग आनकर खड़े हो जाते हैं तो कायर होकर उस कार्य्यको छोड़ बैठते हैं। यद्यपि इनमें कार्य्यको अंतिम हद्द तक पहुंचानेका साहस नहीं होता तो भी उत्तम कार्य्योंके करनेमें उत्साह दिखलाते हैं व कुछ प्रयत्न भी करते रहते हैं इससे उनका उपयोग हितरूप भावोंमें ही वर्तन किया करता है।

जघन्य पुरुष वे हैं जो पहले तो किसी उपयोगी कामका विचार ही नहीं बांधते हैं और यदि किसीके कुछ विचार भी होता है तो उनको कायरता, डर व आलस्य इतना सताता है जिससे वे अपने विचारका कुछ भी उपयोग नहीं कर सक्ते। ऐसे मनुष्य बुरे कामोंमें तो जल्दी तय्यार हो जाते हैं और उनको जिस तिस

तरह करते भी हैं पर उनमें भी इनकी शक्ति दृढ़रूप नहीं रहती। उन्मत्त पुरुषकी तरह एकको छोड़ दूसरेमें, दूसरेको छोड़ तीसरेमें घूमा करते हैं। ऐसे पुरुष प्रायः इस जगतमें भाररूप हैं। उत्तम पुरुष अपने कार्योंकी सिद्धि इन नीचे लिखे गुणोंके ही कारणसे कर सक्ते है:—

(१) **समयकी उपयोगिता**—जो लोग अपने समयकी कदर नहीं जानते हैं वे अपने जीवनके मूल्यको नहीं पहचानते हैं। समयोंसे ही यह जीवन बना है। रत्नोंसे अधिक मूल्य हरएक समयका है। एक सेकन्ड या पलमें बेगिनती समय बीत जाते हैं। अपने समयोंकी कदर करना ही जीवनको उपयोगी बनानेका एक मुख्य साधन है।

(२) **नियमित कामकी विभाग शक्ति**—मनुष्यमें शरीरके बलको व स्वास्थ्यको रक्षा करते हुए अपने कामोंको पूरा कर डालनेका अवसर उसी समय आता है जब वे भगवद्भक्ति, शरीर क्रिया, भोजन, शयन आदि नित्यके कामोंको नियमके अनुसार प्रतिदिन करते हैं। जो विना किसी नियमके चाहे-जब खाते, सोते, काम करते हैं उनके बहुतसे काम रह जाते हैं तथा कोई भी काम निराकुलतासे नहीं होता तथा प्रायः अनियमित काम करनेवालोंका शरीर अस्वस्थ रहता है। जो सूर्य्योदयसे पहले उठकर काममें लगते और रात्रिको ही धीरताके साथ छह सात आठ घंटे आराम करते हैं वे प्रायः नियमसे अपना काम कर सक्ते हैं।

(३) **दीर्घदर्शिता**—मानवके कामोंकी सफलताके लिये उसमें दीर्घदर्शिताकी बहुत बड़ी ज़रूरत है ताकि वह अपने उस

कार्य्यके फलको पहलेसे ही विचार ले और गंभीरतासे सोच ले । जो गंभीर विचार नहीं कर सक्के वे प्रायः अपने कार्यमें विफल हो जाते हैं ।

(४) **इन्द्रिय-पराजय**—पांचों इन्द्रियोंकी चाहनायें मनुष्यको जब अपना दास बना लेती हैं तब वह उपयोगी कामोंसे हठ करके उनकी पूर्ति करनेमें लग जाता है जिससे उसका जीवन इन्द्रियोंके दासत्वमें पड़कर बेकार हो जाता है । जो उपयोगी काम करना चाहते हैं वे हमेशः अपनी इन्द्रियोंपर काबू रखते हैं । वे सही-सलामत रहें ऐसी भावनासे उन्हें भोजन-पानादि देते हैं और उनसे खूब काम लेते हैं । मुंहका चटोरापन, मेले तमाशेकी दौड़-धूम, नाच-रंगकी चटक-मटक, अतर-फुलेलकी महक आदिसे उनका दिल गन्दा नहीं होता है ।

(५) **सहनशीलता**—जगतमें रहते हुए और किसी भी कामकी सिद्धि करते हुए अपने सिवाय और बहुतसे लोगोंसे काम पड़ता है । उनके साथ व्यवहारमें कभी २ कठोर शब्द व अनुचित वर्तावका भी सामना हो जाता है । उस वक्त अपने भावोंको सम्हालने और क्रोध न करनेकी बहुत :बड़ी ज़रूरत है । जिनमें किसी बातको सहनेकी शक्ति नहीं होती वे हेल-मेलसे नहीं रह सक्के और न दूसरोंसे कोई लाभ ले सक्के हैं । सहनशीलताके गुणसे आदमी जगत् भरको अपने वशमें कर सक्ता है । यह भी कार्यसिद्धिका एक अमूल्य गुण है ।

(६) **धैर्य्य**—यह गुण भी बहुत ज़रूरी है । धैर्य्यके बिना कोई काम पार नहीं उतर सक्ता । किसी कामकी सिद्धिका यत्न करते हुए बहुतसे विघ्न व संकट व चिन्तायें उपस्थित होती हैं उस

समय धैर्य्य ही एक ऐसा गुण है जो वारवार कोशिश किये जानेकी उत्तेजना देता है । और जो इस गुणको अपने गलेका हार बनाते और कभी आकुलित नहीं होते वे अपने काममें अवश्य सफल होते हैं ।

(७) **नम्रता**--नम्रताकी भी मानवको बहुत बड़ी ज़रूरत है । जो मानव अपने पास धन, बल, तप, विद्या आदि बलोंको बढ़ते हुए देख करके भी अहंकार नहीं करते किन्तु सदा नम्र रहते हैं, वे ही बड़े पुरुष हैं। वे बिना कारण जगतको अपना बन्धु बना लेते हैं। वास्तवमें नम्रताकी छायाके नीचे सब कोई आना चाहते हैं। उसकी सुगंधको सर्व कोई सूंघते हैं। जो किसी भी बातमें बलवान् होकर मान नहीं करते हुए नम्र रहते हैं वे ही दूसरोंसे गुण ले सक्ते व दे सक्ते हैं, स्वयं उपकार पा सक्ते व छोटेसे छोटेका भी उपकार कर सक्ते हैं।

(८) **सत्यता**--सत्य बोलना और सत्य व्यवहार मानवकी शोभा व उन्नतिका भंडार है। जो मनमें सोचकर कहते और उसी तरह वर्तन करते हैं वे ही सत्यवादी हैं । जो असत्यको सर्व पापोंका सरदार समझते और उससे डरते हैं, जो वादा करते हैं उसको पूरा करते हैं, जो श्रीदशरथ व श्रीरामचंद्रकी भांति दृढ प्रतिज्ञाको निवाहनेवाले हैं वे ही कुछ काम कर जाते हैं। मनुष्यकी वाणी सत्यके बिना महा अनर्थकी करनेवाली होती है । सत्यतासे किसीको दुःख नहीं होता । केवल सत्यतासे ही मनुष्य लौकिक व पारलौकिक सर्व तरहकी उन्नति कर सक्ते हैं ।

(९) ब्रह्मचर्य—मानवकी शक्तिको दृढ़ और मनको पवित्र रखनेके लिये मानव जातिके लिये यह एक अति आवश्यक गुण है। जो विवाहित नहीं हैं वे अपने वीर्य्यकी रक्षा पूर्णपने करके श्री महावीरस्वामीके समान परम वीर बननेका यत्न करते हैं। पर जो विवाहित हैं वे केवल संतानकी इच्छासे गृहसंसारमें वर्तते हैं तो भी इच्छाको आधीन रखते हैं। जो इस गुणकी कदर नहीं करते वे वीर्य्यको बरबादकर निकम्मे हो जाते हैं और पवित्रता उनके मनसे विदा हो जाती है। जिससे उत्तम विचार व उत्तम कार्य्य नहीं होने पाते। उत्तम मनुष्य इन ऊपर लिखित नौ या अधिक गुणोंकी बदौलत ही इस नरभवकी घड़ियोंको ऐसे २ कामोंमें लगाते हैं जिससे वे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थोंकी सिद्धिमें कुछ उन्नति पा जाते हैं और जगतका उपकार कर जाते हैं।

आज हम अपने पाठकोंको एक उत्तम मनुष्यके जीवनका परिचय कराना चाहते हैं जिसमें ये ऊपर लिखित गुण कूट कूट कर भरे हुए थे व जिसने अपने पौरुषके बलसे गृहस्थ धर्मकी जो उन्नति की व अपनी उन्नतिसे जो दूसरोंका हित किया वह वचनसे अगोचर है। जिनका उस मानवसे रात्रि दिनका सम्बन्ध रहा है वे अच्छी तरह जानते हैं कि उस मानवमें कैसी २ खूबीके गुण थे। आज वह मानव इस मानव पर्य्यायमेंसे चला गया है—उसकी आत्मा इस शरीरसे विदा होकर अन्य किसी देहमें चली गई है। यद्यपि अब उसके मन वचन कायके चरित्र दृष्टिमें नहीं आते तो भी उस मानवने अपने जीवनमें जो कुछ किया है वह कृत्य उसके सर्व जैसेके तैसे मौजूद हैं—वे मरे नहीं हैं।

हमारा (लेखक) उस उत्तम मानवसे बहुत वर्षोंतक सम्बन्ध रहा है—हमने उसके सद् विचारों और भावनाओंको रात्रिदिन अनुभव किया है अतएव यह हमारा फर्ज आन पड़ा है कि हम उनका एक दिग्दर्शनमात्र वर्णन जगतके मानवोंके हितार्थ करें जिससे अनेक मानव उस उत्तम मानवका दृष्टान्त ले अपने जीवनको उपयोगी बनावें।

यद्यपि वे गृहस्थ थे, त्यागी नहीं थे, तो भी **हृदयके त्यागी** थे वैरागी थे और बड़े पुरुष थे और इसीलिये उनके जीवनका वर्णन हमारे द्वारा हो जाना हमें भी उनके उत्तम मानवीय गुणोंमें प्रेरित करनेवाला है। अतएव **उस उत्तम मानवके उपदेशद्वारा इस समय** परोपकारतामें रात्रिदिन लवलीन **सेठ मूलचंद्र किसनदास कापड़िया** सम्पादक—"दिगम्बर जैन," सूरतकी प्रेरणाके अनुसार **दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचंद्र हीराचंद्र जे० पी०** सभापति—"भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा"का कुछ चरित्र आगे लिखा जाता है।

अध्याय दूसरा ।

गुजरात देशके सूरत शहरका दिग्दर्शन ।

गुजरातका महत्त्व। वास्तवमें वह देश अवश्य सौभाग्यशाली होता है जहां महान् व उत्तम पुरुष जन्म लेते हैं। उत्तम पुरुषोंका शरीर जिस प्रदेशके अन्न, जल व वायुसे वृद्धि पाता है, छोटेसे बड़ा होता है, वह प्रदेश वास्तवमें पुण्यशाली है। किसी स्थानको भाग्यवान् कहनेसे उन मानवोंके भाग्यवान् होनेका ही उपचार होता है। गुजरात देश ऐसा ही एक देश है जहां जैनधर्मकी मान्यताके अनुसार **श्रीरामचन्द्र**-जीके सुपुत्र **लव** और **अंकुशने** मुनि हो विहार किया, धर्मो-पदेश दे अनेकोंको स्वसंवेदन ज्ञानसे उत्पन्न आत्मानंदका पान कराया और अंतमें प्रसिद्ध चांपानेर नगरके निकटस्थ **पावागढ़** पर्वतके शिखरपर ध्यान धर कर्म इंधनको जला और केवलज्ञान ज्यो-तिको प्रगट कर अर्हत हो अनेकोंको शुद्ध धर्म मार्गपर चला तथा शेष कर्मोंसे आत्माको छुड़ा पवित्र हो परमात्मपदका लाभ किया।

श्री**गिरनार**, **शत्रुंजय**, **तारंगा**, इन सिद्धक्षेत्रमय पर्वतोंसे शीघ्र गतिको प्राप्त होनेवाले श्रीनेमिनाथ, युधिष्ठिर, भीम-सेन, अर्जुन, आदि अनेकों अगणित महात्माओंने इस गुर्जर देशको अपने विहारसे पवित्र कर इन पर्वतोंके शिखरोंसे मुक्तधामका परम अभिराम आनन्दका आस्वाद किया। मौर्य्य चंद्रगुप्तको सन् ई०के

२२० वर्ष पूर्वके अनुमान परम निर्ग्रन्थ दिगम्बरी दीक्षा देनेवाले श्रीभद्रबाहु श्रुतकेवली १२००० साधुसंघ और मुनि प्रभाचंद्र (चंद्रगुप्तका द्वितीय नाम)को साथ लिये हुए मगध देशसे दक्षिणको जाते हुए इसी गुजरात देशमें होकर श्रीगिरनार पर्वत तक गये थे और वहां अपनी आयु निकट जान अपने आचार्य्य पदका तिलक श्री**विशाखाचार्य**को प्रदान किया था और फिर वहांसे मैसूरके श्रवणबेलगोला स्थानमें पहुंच कटवप्र पर्वतपर समाधि मरण से स्वर्गधाम प्राप्त किया।

श्रीधरसेनाचार्यने प्रथम शताब्दीके अनुमान जिन पुष्पदंत और भूतवलि अतितीव्र बुद्धि मुनियोंको श्रीगिरनार पर्वतपर जैन सिद्धान्त पढ़ाया था। उन्होंने गिरनारसे ९ दिन चलकर कुरीश्वर ग्राममें आकर चतुर्मास किया था और श्रुतस्कंधकी महिमा विस्तारी थी। और फिर दक्षिण देशको विहार किया था। (श्रुतस्कंध)

यह कुरीश्वर गुजरात देशमें होना चाहिये। संभव है इसीका नाम बिगड़कर अंक्लेश्वर हो गया हो। यह बड़ौदेके और सुरतके मध्यमें अब भी प्राचीन जिन बिम्बोंको शोभायमान किये हुए विराजित है।

श्रीजिनसेनाचार्य्यने अपने गुरु श्रीवीरसेनाचार्य्यकी करी हुई श्रीजयधवलकी टीकाको ६०००० श्लोकोंमें गुर्जर देश प्रतिपालक श्री**अमोघवर्ष**के राज्यमें वाटग्रामके भीतर शक संवत् ७५९ फाल्गुण सुदी १० को प्रातःकाल श्रीअष्टाह्निका महोत्सवके समय पूर्ण किया था। (जयधवल प्रशस्ति)

यह गुजरात देश श्रीशुभचंद्र, सकलकीर्ति, ज्ञानभूषण आदि

बड़े २ विद्वानोंसे सुशोभित रह चुका है जिन्होंने अनेक शास्त्रोंकी टीका व रचना की है।

इस धर्म-जन-भरपूर गुजरात देशमें ताप्ती नदी बड़े वेगसे सतपुरा पर्वतकी इंगरडी पहाड़ीकी तलहटीसे निकलकर खानदेश-में बहती हुई अनुमान ५०० मीलकी लंबाईको लिये हुए रांदेर और सूरत दो बड़े प्रसिद्ध नगरोंके मध्यमें आध मीलके अनुमान पाटके साथ खंभातकी ओर चली जाती है।

नर्मगद्य गुजराती गद्यात्मक ग्रंथके कर्ता कवि नर्मदाशंकर लाभशंकर लिखते हैं कि श्रीमहावीर संवत् २७१ व सन् ईसवीके २५५ वर्ष पूर्व इस ताप्ती नदीके उस ओर रांदेर नामका एक बड़ा प्रसिद्ध नगर था। जिसपर संपत्ति नामका जैनी राजा राज्य करता था* वह रांदेर शहर अब भी मौजूद है पर अब वह एक छोटासा कसबा है। वर्तमानमें ताप्तीके इस ओर रांदेरके ठीक सामने अतिविख्यात और ऐतिहासिक सूरत नगर मौजूद है। यद्यपि नर्मगद्यके कर्ताने यह खुलासा नहीं किया कि जब एक ओर ताप्तीके आजसे २२०० वर्ष पहले एक बड़ा राज्यनगर था तब उसीके ठीक सामने जहां आज सूरत पाया जाता है वहां उस समय किसी बस्तीकी सूरत थी कि नहीं?

विचारनेसे यह अवश्य निश्चित होता है कि ताप्तीके इस पार भी कुछ बस्ती अवश्य बसती होगी। संभव है कि उस समय इसका नाम सूरत न हो।

---

* इस कथनको नर्मगद्यके अनुसार ही यहां उल्लेख किया जाता है।

बहुतसे जन इस नगरको सुर्यपुरके नामसे पुकारते हैं तथा नर्मगद्य कर्ताने भी लिखा है कि सूरतसे ८ गांव दूर कामलेज ग्रामके निवासी एक राजाके बड़े २ प्रसिद्ध कुए थे। उनमें एक सूरजवाड़ी नामका कुआ था। उसी बाड़ीके नामसे यह सूरजपुर या सुर्जपुर कहलाता था जो फिर बिगड़के सुरत हो गया। ९वीं गुजराती साहित्य परिषद् सन् १९१५की बैठककी स्वागत कारिणी कमिटीके प्रमुख रा० मधुवच-राम बलवचरामने अपने व्याख्यानमें यहांतक अनुमान लगाकर प्रगट किया है कि सन् ईसवीके वीसहजार २०००० वर्ष पहले भी यह स्थान आबाद था। आपने अमेरिकाके प्रसिद्ध विद्वान् प्रोफेसर डेंटन-कृत "The Soul of things" नामकी पुस्तकके आधारसे लिखा है कि यूनानका विद्वान् **प्लैटो** अपने किसी पूर्व जन्ममें इसी (सुरत) स्थानके किसी बड़े मंदिरका मुख्य अधिकारी या भक्त था। रासमालाके प्रथम भागके आधारसे आप लिखते हैं कि यह स्थान तब सूर्यपुर कहलाता था जिस समय सन ९००में अनहिड़वालकी सेना भरुच और सुर्यपुरके आगेसे होकर निकली थी। सन् १९०८के इम्पीरियल गैजेटियरसे मालूम हुआ कि सन् १५०में होनेवाले यूनानके विद्वान् प्लोटोने पुलिपदा नामके व्यापारिक स्थानका वर्णन किया है जिसका नाम शायद फुलपाद होना चाहिये और यह स्थान इसी सूरत नगरका एक पवित्र भाग है।

सूरत नगर कैसे वसा?

जो कुछ हो इसमें सन्देह नहीं कि सुरत और रांदेर दोनों ही अतिप्राचीन नगर तासीके इधर उधर एक शोभनीक स्त्रीके कार्णोंमें पड़े हुए सुर्य और चंद्रकी कांतिवत् चमकते हुए मनोहर कुंडलोंकी भांति दीर्घ कालसे शोभा पा रहे थे।

ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी संपादक 'जैनमित्र' इस ग्रंथके लेखक.

रांदेर व्यापारमें प्रसिद्ध स्थान था। ताप्तीद्वारा जहाज़ोंका आना जाना खूब होता था और वे जहाज़ कुछ ताप्तीके इधर कुछ उधर कलकत्ते और हवड़ाकी भांति अपना लंगर डाला करते थे।

अरब व फारसके व्यापारी भी आया जाया करते थे। ईसवी सन् ७९० में मुसल्मान अब्दुलआबाद सेफा नामके खलीफा अपने बहुतसे साथियोंको लेकर रांदेरमें आकर रहने लगे और धीरे २ मुसल्मानी धर्मका प्रचार करने लगे।

ये लोग धीरे २ व्यापारादिसे अपनी सत्ताको मजबूत करने लगे। इनका दल अब्बासी खलीफा या नवायता (नया आया हुआ) नामसे यहां प्रसिद्ध हुआ। उस वक्त रांदेरकी जैन और हिन्दू वस्ती सुख शांतिमें लीन थी। पर कालांतरमें जैन और हिन्दुओंका जोर घटता गया और मुसल्मानोंका जोर बढ़ता गया। यहां तक कि ५०० वर्षके अनुमानमें वे ऐसे दृढ़ हो गये कि उन्होंने राज्य सत्ता इनसे छीन ली। सन् १२०८का गैजेटियर बताता है कि बादशाह कुतबुद्दीनके समय १३ वीं सदीमें मुसल्मानोंने अनहिलवाड़के राजपूत राजा भीमदेवको हराकर रांदेर और सूरत लिया। वह हिन्दू राजा सूरतसे १३ मील पूर्व कानेरजके किलेसे भागा और आधीन हो गया। सन् १३४७में मुहम्मद तुघलकके समयमें बलवा होनेपर सूरत जिला लूटा गया। पर सन् १३७३में फीरोज़शाह तुघलकने सूरतकी रक्षार्थ भीलोंसे बचानेके लिये एक किला बनवाया। मुसल्मानोंने यहांके बहुतसे मंदिरोंको तुड़वाकर मसजिदें बनवाईं। तथा जैन मंदिरों व मूर्तियोंके पत्थरोंको भी तोड़कर कई मसजिदें बनवाई गईं। एक मसजिद ऐसी ही बनी मौजूद भी है जिसपर हिजरी ६४१ व सन् १२२५ है।

सन १९०८का गैजेटियर बताता है कि रांदेरकी जमा मसजिद, मियां खखा ४ मुन्शीकी मसजिदें, जैन मंदिरोंको तोड़कर बनाई गई हैं। नर्म्मगाधके कर्त्ताने सूरत नगरके नाम होनेके विषयमें कुछ और भी दंतकथायें लिखी हैं। उनका भी सारांश पाठकोंके ज्ञान हेतु कह देना अनुचित न होगा।

तासी नदीके तटपर सूरत नगरकी ओर बहुतसे जहाज़ ठहरा करते थे। जहाज़का काम करनेवाले माछी लोग वहांपर रहते थे। इससे उस तटके बहुतसे प्रदेशका नाम **माछीवाड़ा** प्रसिद्ध था। उसी महल्लेमें कुछ नागर ब्राह्मण भी रहते थे। उनमें एक ज़मीदार-की विधवा स्त्री अपने पुत्र **गोपी**के साथ रहा करती थी। उसकी स्थिति बहुत गरीब हो गई थी। रांदेरके एक मुसलमान नबायताके यहां नृत्यकला करनेवाली एक सूरज नामकी कंचनी इस माछीवा-ड़ेमें आकर ठहरी। इसके पास धन भी बहुत था। उस समय गोपी-की गरीब मा उस कंचनीका यथायोग्य काम करके उसकी अधिक स्नेहपात्रा हो गई तथा उसके बालक गोपीको वह सूरज बहुत प्यार करने लगी।

जब वह नृत्यकारिणी उस मुसलमान नवायताके साथ हज करनेके लिये करीब १५०० सन् ई० के जहाज़पर बैठ मक्का जाने लगी तब उसने गोपीकी माको विश्वासपात्रा जान अपना लाखोंका जवाहरात उसको अमानत सौंप दिया। इसमें सन्देह नहीं कि ईमानदारी, सचाई और सरलता ऐसे गुण हैं जो सबको वश कर सक्ते हैं। जब वह सूरज कंचनी लौट कर आई, गोपीकी माने विना किसी कपटके जो कुछ जवाहरात उसने सौंपा था उस

सबको वैसाका वैसा ही उस कंचनीके सामने लाके धर दिया। सूरज इसकी सरलता व सत्यताको देख अचंभेमें आ गई। और इतनी प्रसन्न हुई कि वह सब माल उसको दे दिया और दिनपर दिन इससे व उसके पुत्र गोपीसे उनकी सच्ची खिदमतके कारण बहुत ही राजी रहने लगी। सूरजकी उमर छोटी नहीं थी। आयु कर्म शेष होनेसे जब वह मरने लगी तब अपनी सब जायदाद गोपीकी मा और गोपीको दे दी और कहा—तुम इसका अच्छा व्यवहार करना और मेरा नाम मशहूर करना। मैं तो जाती हूं, पर मेरा नाम रहना चाहिये। वास्तवमें जिसके दिलमें सम्यक्त्व नहीं होता, जो आत्माको अजर अमर अविनाशी आनन्दरूप नहीं अनुभव करता, उसके दिलको सन्तोष केवल कषायोंको पोषनेसे ही होता है। सारी दौलतका वियोग होते हुए उस सूरजके दिलमें मान कषायने जोर किया और इसीसे पीछे मेरा नाम रहे इस स्वार्थने कंठगतप्राण होनेपर भी उस कंचनीकी आत्माको नहीं छोड़ा। खैर, गोपी और उसकी माने बहुतसे मकानात बनवाये तथा गोपीपुरा बसाया और गुजरातके बादशाह शाह मुहम्मद बेगड़ाके पुत्र खलीलखां अलकाब मुज़फ्फरशाहसे मिलकर नायबका खिताब हासिल किया। गोपी बड़ा उद्योगी था। इसके प्रयत्नसे यहां व्यापार और भी बढ़ने लगा। सन् १५१६ में इसने एक तालाब बनवाया जो अब **खेतरवाड़ी** (खेतरपाल) के पास गोपीतालावके नामसे मौजूद है।

इस वक्त यूरुपसे पुर्तगाल लोग, जिनको यहां फिरंगी कहते थे, आने लगे थे। सन् १४९८ में वास्कोडिगामा पहिले पहिल भारतमें आया। इस समय इस ताप्ती नदीके तटपर उनके जहाज़पर जहाज़

आने लगे। ये लोग हिन्दुस्तानी व्यापारियोंके जहाज़ोंसे माल लूटने लगे व शहरमें भी घूमकर प्रजाको कष्ट देने लगे। प्रजाकी पुकार सुन गुजरातके बादशाह मुज़फ्फरशाहने सन् १५१५में यहां किला बंधवाया और इनकी रोक व जांचका प्रबन्ध किया। दिनपर दिन गोपीपुराके आसपास रौनक बढ़ते देख गोपीने उस सूरज कंचनीके मरते समयके वचनको याद किया और उसका नाम कायम रखनेके लिये यही विचार किया कि इस बस्तीका नाम उसीके नामसे प्रसिद्ध हो।

बादशाह मुज़फ्फरशाहसे गोपीने सब हाल कहा और सूरज नाम रखनेके लिये निवेदन किया। बादशाहने सिर्फ इस खयालसे कि वेश्याके नामसे नगरका नाम प्रसिद्ध करना ठीक न होगा, यह स्वीकार किया कि आखरी अक्षर जको बदलकर त कर दिया जाय। गोपीने स्वीकार किया और सन् १५२१ में इसका नाम **सूरत** प्रसिद्ध कर दिया। ज्यों २ व्यापार चमकता गया गुजरातके बादशाहका अमल बढ़ता गया। इस समय सूरत नगर एक बड़ा व्यापारी बन्दर था। सन् १५१४ में पुर्तगाला यात्री बार्बसा आया था। उसने लिखा है, सूरत बड़ा ही कीमती बन्दर था जहां मलाबार आदिसे जहाज़ आते थे। (Barbase describes Surat as a very important seaport frequented by many ships from malabar and all other ports vide Imp. G. 1908) सन् १५४६ में अहमदाबादके बादशाहने एक किला बनवाया।

सन् १५६१ में जब तीसरे मुज़फ्फरशाह गुजरातकी गद्दीपर बैठे तब सूरत मिरज़ाके हाथमें था। यह बादशाह अकबरसे विरुद्ध हो गया, तब देहलीका बादशाह अकबर स्वयं बड़ी भारी फौज

लेकर आया और ता० १९ जनवरी सन् १५७३ में सुरतके गोपी-पुरामें अपना अड्डा जमा और १ मार्च १५७३ के दिन किलेपर अपना झंडा गाड़ा और खलीज़खांको अपना कारबारी नियतकर देहली चला गया। देहली पहुंचकर राजा टोडरमलको बंदोबस्तके लिये भेजा। उक्त राजाने बहुत अच्छा प्रबन्ध किया। कोई किसीकी ज़मीन न दबावे, कोई कम बढ़ तौलकर दे ले नहीं, बाज़ारका भाव ठीक रहे, ऐसे कई उपयोगी महकमे नियत किये। इस वक्त सुरतमें व्यापार खूब बढ़ रहा था। जो रांदेरमें था वह सुरतमें चमक उठा था। यूरुपसे भी व्यापारी बहुत आने लगे थे। अकबर, शाहजहां व जहांगीर बादशाहके वक्तमें यह Mercantile city of India भारतका व्यापारी नगर कहलाता था। अकबरकी मालगुज़ारीमें इसको First class port पहले नंबरका बंदर लिखा है (Imp. G. 1908)

अंग्रेजोंका आगमन।

जिस वक्त बादशाह जहांगीर देहलीमें राज्य कर रहे थे उसी वक्त इङ्गलैंडमें पहले जेम्स (James the I) का राज्य था और भारतसे व्यापार करनेके लिये ईस्ट इंडिया कम्पनी बन चुकी थी। कप्तान हेक्टर विलियम होकिन्स एक व्यापारी जहाज़को लेकर इस कम्पनीकी तरफसे हिन्दुस्तानमें आये और ता० २० अगस्त १६०८ को पहिले पहिल सुरतमें आ लंगर डाला। और बादशाह जेम्सका पत्र ले अंग्रेज लोग देहली दर्बारमें पहुंचे। परंतु उस समय फिरंगियों अर्थात् पूर्तगालोंका अधिक जोर था। वे दूसरे किसी-के भी जहाज़को लूट लेते थे। वे अंग्रेजोंको नहीं चाहते थे। इन

पत्रोंके द्वारा अंग्रेजोंने बादशाहसे व्यापारकी आज्ञा मांगी थी व अपनी रक्षा चाही थी। पर ४ वर्ष तक उद्योग करना पड़ा तब कप्तान बेस्टेने ता० ११ जनवरी १६१२ को बादशाहसे यह सनद लिखवा ली कि अंग्रेज लोग व्यापारके लिये अपनी कोठी कर सक्ते हैं तथा वे सूरत, खंभात, अहमदाबाद और घोघामें व्यापार कर सक्ते हैं। इनसे ३॥) सैकड़ा महसूल लिया जाय तथा इनका एक एलची मुगल दर्बारमें रहे।

सन् १६१४में सर **टामसरो** प्रथम एलची मुगल दर्बारमें नियत हुआ। इसने बादशाह जहांगीरसे और भी हक प्राप्त किये। अंग्रेज व्यापार करने लगे। उस वक्त यहांसे कपड़ा खरीदकर विलायत बहुत जाता था। अंग्रेज लोग कपड़ा बनानेवालोंको पेशगी रुपया दे माल बनवाते थे और विलायत भेजते थे।

सूरतमें व्यापारकी वृद्धि व यूरुपको कपड़ा आदि जाना।

सूरत नगर १५७३से १७५९ तक मुगल बादशाहोंके कब्जेमें रहा। इस वक्त यह बहुत तरक्कीपर था। यहांसे कपड़ा, रुई, किनखाब, मसरू, किनारी, कसब, कारचोब, शाल, मसाला, हीरा, मोती, मीनाकारी, अफीम, अनाज, मिठाई, आदि परदेशको जाते थे और इंगलैंडसे सीसा, लोहा, लोहाका तय्यार माल, चीनसे बिलौरी सामान या रेशम, सुमात्रासे मसाला, ईरानसे मोती, गलीचा, मेवा, अरबसे अतर वगैरह, मलाबारसे देशी ऊनका कपड़ा, बंगालसे रेशम और शक्कर, मालवासे अफीम इत्यादि सामान

बाहरसें सुरतमें आकर बिकता था। रुईका कपड़ा खूब बुना जाता था। एक गरीब आदमी १ रुईकी आंटी (९ टांक तौलमें) बुन लेता था तो उसको ≡) मिल जाते थे। सुरतके बंदरमें १०००–१२०० टनके लादनेवाले जहाज़ हमेशः तय्यार रहते थे। इस कदर व्यापार था कि सुरतके बाज़ारमें २- लाख रुपयेका रोज़ सौदा होता था। यहांपर इतना कह देना अनुचित न होगा कि यह भारत दो-ढाईसौ वर्षमें कुछका कुछ हो गया। उस वक्त जब परदेशके व्यापारी यहांसे कपड़ा ले जाते थे तब आज यहां ही कपड़ा आता है। यहांका बुना तो शायद ही कहीं जाता हो। उस वक्त सारा भारत अपने कारीगरोंके बनाये हुए कपड़ोंसे ही अपनेको ढकता था। और यह भी नहीं था कि मोटा माल ही बनता हो किन्तु महीनसे महीन और बढ़ियासे बढ़िया कपड़ा भी यहां बनता था। इसके सिवाय यूरुप आदि देशके व्यापारी यहांसे लाखों रुपयोंका कपड़ा प्रतिमास अपने देशको भिजवाते थे, उनको भी पूरा करता था। आज वह अपनी कारीगरीको खो बैठा है। इसका कारण केवल आलस्य है। आलस्यसे आज यह ज़रा ज़रासी चीज़के लिये परदेशका मुंहताज़ हो गया है। जब कि उद्यमके बलसे एक छोटासा जापान प्रदेश अपने लिये सब चीज़ें आप बनाता है। इतना ही नहीं, पर अपना बना करोड़ोंका माल बाहर बिक्रीके लिये भेजता है। जैसे आजकल बम्बई व्यापारमें प्रसिद्ध है ऐसे ही मुगलोंके जमानेमें सूरत प्रसिद्ध था।

इस वक्त कम्पनीके सिवाय प्राइवेट अंग्रेज भी बहुत आये और व्यापार करने लगे। औरंगजेब बादशाहके वक्तमें ता० ५ जनवरी १६६४को मराठोंका सरदार शिवाजी सूरतको लूटने आया। उस वक्त

ईस्टइंडिया कम्पनीकी कोठीमें ८७ लाखका माल था। कोठीपर सर जार्ज ओक्सेन्डनने बड़ी चतुराईसे काम किया। अपना माल बचानेके सिवाय साहूकारोंकी भी रक्षा की तो भी शिवाजी ३० करोड़का माल लूट ले गये। साहूकारोंने अंग्रेजोंकी तारीफ बादशाह देहलीको लिख भेजी। इससे प्रसन्न हो बादशाहने ३॥ रु०के बदले सिर्फ १) सैकड़ा जकात कर दी। १६७०में फिर शिवाजीने ३ दिन सूरत लूटा। इस वक्तसे मि० कुक ऐसे अंग्रेजोंने भी लूट-पाट शुरू कर दी। १६८० में एक मक्के जाते हुए जहाज़को लूटनेसे बादशाहने जकात फिर ३॥) रु० कर दी। इधर कम्पनीने टकसालमें रुपया बनानेका हुकुम बादशाहसे ले लिया। इस वक्त फ्रेंच लोग भी सूरतमें खूब व्यापार कर रहेथे।

अंग्रेजोंकी सत्ताका जमना।

१६८७में कम्पनीकी सत्ता बम्बईमें होजानेसे व्यापरका जमाव सूरतसे उठ कर बम्बई होने लगा। इस वक्त एक अंग्रेज सर जान चाइल्डने कम्पनीके नामसे सूरतमें खूब व्यापार किया। पर किसीको कुछ न दिया। बादशाहके हुक्मसे हैरिस और ग्लैडस्टोन कैद किये गये। पर यह चाइल्डे भागकर बम्बई गया। ४० जहाज़ मुगलोंके और पकड़े तब लोगोंका विश्वास जाता रहा। बादशाहने अंग्रेज व फ्रेंच आदि परदेशियोंको बहुत धमकाया; पर फल कुछ न हुआ। उधर देहलीमें भी मुगल सल्तनत मौज़ व शौकमें पड़ने लगी। इधर सूरतमें भी सत्ता ढीली पड़ गई।

सन् १७३४ में मराठोंने कुछ गांव दाव लिये तथा पेशवा

और गायकवाड़ने दबाव डालकर अपना कर सूरतपर लगा दिया। १७३४से १७५९ तक बड़ी भारी गड़बड़ रही। परस्पर फूटकी आग भभक उठी। इस गड़बड़में अंग्रेजोंने अपना दाव जमा लिया। सूरतके नवाब मियां अच्चनने मराठोंसे परेशान हो अंग्रेजोंसे संधि की कि अंग्रेज लोग किल्लेदार रहें, सेनाकी अफसरी करें तथा नवाब दो लाख रुपया प्रतिवर्ष देवे। इस वक्त किलेपर अंग्रेजोंका झंडा गड़ गया तथा नाममात्र मुगलोंका भी गड़ा रहा। इस सूरतपर अंग्रेजोंके आधीन नवाब अच्चनके वंशवाले राज्य करते रहे। नवाब अच्चन उर्फ मुईनुद्दीनने १७६३ तक राज्य किया। फिर नवाब हफीजुद्दिन १७६३ से १७९० तक राज्य करते रहे। १७९०में निजामुद्दीन नवाब हुए। ये १७९९ तक रहे। इनके समयमें सूरतपर बड़ी विपत्तियें आईं। ये नवाब भी जुल्मी थे। १७९१में इतना भारी दुर्भिक्ष पड़ा था जिससे १ रुपयेमें ८ सेर अनाज मिलता था। यद्यपि इस समय यह भाव प्रायः रहा करता है तो भी उस समय अनाजका भाव बहुत मन्दा रहा करता था। इस अपेक्षा वह भाव दुर्भिक्ष रूपमें ही था। तथा १७९७ में ताप्ती नदीकी बाढ़ आई जिससे भी सूरतकी बरबादी हुई। बहुतसे व्यापारी इधर उधर चल दिये। सन् १७९९में नसीरुद्दीन गद्दीपर बैठे। उस वक्त नवाबसे अंग्रेजोंने ३॥) लाख रुपया मांगा। नवाब दे नहीं सका तब बम्बईके गवर्नर डंकनके हुकमसे सूरतकी सीनेटने **सूरतपर अपना पूरा कबजा ता० १९ मई सन् १८०० को जमा लिया** और नवाबको सिर्फ १ लाख रुपया पेन्शन कर दी।

यह नियम है कि जब देशका शासक इन्द्रियोंके विषयोंमें लीन

होकर प्रजाके हितकी चिन्ताको छोड़ देता है और इतना ही नहीं प्रजापर जुल्म करके उससे अपना स्वार्थ साधना चाहता है तब अवश्य उसका पुण्य क्षीण होता है। और राज्यशासनका प्रतापी छत्र उसके हाथसे जाता रहता है। अकबर बादशाहसे ले औरंगजेबके राज्यके पहिले तक मुगल बादशाहोंने प्रजाके हितका खयाल किया तब नीचेके नवाबोंने भी अपने प्रबन्धमें ढील नहीं की। पर जब मुगल बादशाह ऐशो—आराममें लीन हुए, तब इधर उधरके नवाब भी प्रजाशासनमें सुस्त पड़ गये। इसीका यह फल हुआ कि सूरतसे नवाबोंकी सत्ता १८००में बिलकुल उठ गई। पेन्शनवालोंमें नसीरुद्दीन सन् १८२१ तक और अफजुलुद्दीन सन् १८२४ तक कायम रहे।

सूरतपर अंग्रेजी कम्पनीका राज्य हो जानेसे मराठाओंसे सुलह हो गई। काम बदस्तूर चलने लगा। पर इस समय विलायतमें कलोंकेद्वारा कपड़ा बुने जानेसे यहां कपड़ा बुननेका काम कमती होने लगा। बहुतसे लोग बम्बई जाकर रहने लगे।

जो उन्नति मुगलोंके समय थी वह सब अवनतिमें परिणत हो गई। वास्तवमें किसी भी वस्तुकी थिरता इस असार संसारमें नहीं है। सब वस्तुयें अपनी दशाओंको पलटनेकी अपेक्षासे क्षणभंगुर हैं। कम्पनीके राज्यमें मुख्य २ बातें इस तरहपर हुई कि—

सूरतकी अवनति।

सन् १८०४ में फिर एक बड़ा भारी दुर्भिक्ष पड़ा जो कि साठोकालके नामसे प्रसिद्ध हुआ। सन् १८१८ में सबसे पहले सूरतमें बसनेवाले यूरुपियन पोर्चुगीज़ फिरंगी लोग बिलकुल यहांसे चल दिये। सन् १८१२ में तापी नदीकी बाढ़ आजानेसे बहुतसे

मनुष्य डूबे व खराबी हुई। सन् १८२४ में एक अंग्रेजी पुस्तकालय बिलंदाके बंदरमें खोला गया जो इस वक्त ऐडूस लाइब्रेरीके साथ मिला दिया गया है। सन् १८३७ ता० २४ अप्रेलको (संवत १८९३ चैत्र वदी ४) ४ बजे पिछले पहर माछलीपीठमें एक पारसीके यहां आग लगी। यह आग दो दिन तक जली। इसने सूरत शहरका नाश कर दिया। कहते हैं इस अग्निमे ६००० मकान जले, ५०० मनुष्य व अनेक पशु मरे, ७० हजार लोग मुफलिस हो गये।

सन् १८४२में सबसे पहिले अंग्रेजी स्कूल स्थापित हुआ। सन् १८४३में निमकपर महसुल नियत किया गया। प्रजाने कबूल न किया, हुल्लड़ हुआ, तब सरकारने कुछ महसुल कम कर दिया। १ मई सन् १८५६को अमरोलीमें रेल्वे बननेका काम चला। तथा १ नवम्बर १८६४ के दिन सूरतसे बम्बई तक रेल्गाड़ी चलने लगी। यह सूरत १८वीं सदी अर्थात् सन् १७९७में बहुत आबाद था। ८ लाख मनुष्योंकी वस्ती थी। परंतु सन् १८११ में घटकर ५ लाख रह गई। अवनति होते २ सन् १९०१में सूरत नगरमें केवल १ लाखकी वस्ती रह गई, अर्थात ८५५७७ हिन्दू, २२८२१ मुसल्मान और ४६७१ जैन। कुल सूरत जिल्लेकी वस्ती, जिसमें ८ नगर व ७७० गाम हैं, सन् १९०१में ६३७०१७ थी। इनमें २ सैकड़ा जैनकी वस्ती थी।

सूरत व रांदेरमें जैनियोंका वर्णन।

जैसा ऊपर कहा गया है कि जब रांदेरमें संपत्ति राजा जैनी थे व जहां बड़े २ मंदिर थे कि जिनको तोड़कर मसजिदें बनवाई

गई हैं तब वहां या कुछ सूरत जिलेमें जैनियोंका कितना बल होगा, सो पाठकगण स्वयं ही विचार कर सक्ते हैं ।

खेद है कि जैनियोंके प्राचीन इतिहासका कुछ पता नहीं चलता है । वर्तमानमें रांदेर कसबेमें

रांदेरमें जैनियोंका महत्त्व अब भी जो हाल मिलता है इससे वहांके पूर्वज जैनियोंका महत्त्व भली भांति प्रगट होता है । इस समय वहां श्वेताम्बर जैनियोंकी संख्या ५०० व उनके ६ मंदिर हैं, जब कि १०० व १५० वर्ष पहले २००० की संख्या थी। दिगम्बरियोंकी वस्तीमें अब वहां केवल २ घर हैं जो दसा हूमड़ जातिके हैं। उनके नाम चुन्नीलाल लालचंद और दीपचंद हीराचंद हैं, जब कि १०० व १५० वर्ष पहले वहां दिगम्बर जैनियोंकी बहुत वस्ती थी। उनके रहनेके तीन महल्ले अबतक प्रसिद्ध हैं—निशाल फलिया, सोनी फलिया और हूमड़ फलिया। इसीमें अब दो घर हैं। दिगम्बरी जैन मंदिरोंमें अब केवल एक मंदिर अवशेष है जो बहुत पुराना बना मालूम होता है तथा इसमें बहुतसी प्रतिमायें हैं जो दूसरे मंदिरोंके टूटनेपर लाई गई हों, ऐसा भी संभव है । इस मंदिरके नीचे एक भौंरा है अर्थात् गभारा व तहखाना है। इसमें भी प्रतिमायें सुशोभित हैं । वहां एक धातुकी प्रतिमाका लेख इस भांति हैः—

“ सं० १३८७ माघ सुदी ५ रविं० श्रेष्ठि भीमा भार्या रूपलता तयोः सुत बालखान श्रीरत्नत्रय बिम्बं राउल श्रीअभयनंदि—शिष्य आचार्य माघनंदी उपदेशेन श्रीमूलसंघे प्रतिष्ठितं ”

तथा एक शांतिनाथस्वामीकी मूर्तिपर सं० ११४८ है ।

ऊपरकी वेदीमें जो प्रतिबिम्ब हैं उनमें संवत १५१८, १५१९, १५३७, १६४८, १६६९ व १६८१ है। जिनपर प्राय: ऐसे लेख हैं कि—

विद्यानंदि, मल्लिभूषण, लक्ष्मीचंद्र वीरचंद्र, ज्ञानभूषण, प्रभाचंद्र वादिचंद्र, या महीचंद्रना उपदेशथी हुमड ज्ञाति आदि............

एक बिम्बपर है—

"१५३७ वैसाख सुदी १२ देवेन्द्रकीर्त्ति- पदे विद्यानंदि हूमडज्ञातीय श्रेष्ठी चांपा..........................

तथा एकपर है—

"१५१८ माघ सु. ५ बुधवार देवेन्द्रकीर्त्ति शिष्य विद्यानंदि उपदेशथी हूमडवंशे समधर भार्या जीवी ना पुत्री नव करण सिंह..."

यहां एक प्राचीन पोथी याने गुटका है जिसमें 'महीचंद्र, प्रभाचंद्र, महीचंद्रके शिष्य ब्रह्मचारी जयसागर' वर्णित है।

इन लेखोंसे प्रगट है कि हूमड़ ज्ञातिके दिगम्बरी रांदेरमें बहुत माननीय व धनाढ्य हुए हैं। यहां तक कि अभी तक यह प्रसिद्ध है कि जहांगीर बादशाहके समयमें एक धनाढ्य दिगम्बर जैनीकी बुगल रांदेर नगरमें बजा करती थी। तथा ऊपरके लेखोंसे यह भी पता चलता है कि सम्वत् १३८७में आचार्य्य माघनंदि हुए। माघनंदि शब्दके पूर्व भट्टारक शब्द न होनेसे ये निर्ग्रन्थ दिगम्बर मुनि प्रतीत होते हैं। संवत् १५१८ से भट्टारकोंके नाम हैं जिनमें विद्यानन्दि प्रथम है। **सूरत** नगरके **कतारगांवमें विद्यानंदि** नामका एक जैनियोंका माननीय स्थान है जहांपर भट्टारकोंकी बहुतसी समाधियें हैं। बहुत संभव है कि भट्टारक विद्यानंदिकी पहिली समाधि

यहां बननेसे यह स्थान विद्यानंदिके नामसे प्रसिद्ध हुआ हो। कहते हैं कि यहां मूलबेदीको **रायकवाल** जातिके शिवामोरारने बनवाई थी। यह जाति भी इस ओर बहुत प्रसिद्ध हो गई है। इस जातिके घर सूरतके सलाबतपुरा, खरादीसेरी व बम्बईपुरा मुहल्लोंमें १०० वर्ष पहिले ४० थे तथा सूरतसे १९ मील बारडोलीमें २०० वर्ष पहिले ५० घर थे। अब सूरतमें इसका नाम व निशान भी नहीं है परंतु अब भी इस जातिके ५ घर व्यारामें मुखिया सेठ शिवलाल झवेरचंद तथा ८ घर महुआमें मुखिया सेठ इच्छाराम झवेरचंद तथा कुछ घर वांच आदिमें भी है। जिस तरह आज कल छोटी २ जातियोंमें जैनियोंका विभाग होनेसे व जातिमें बाल विवाह, वृद्धविवाह, व्यर्थव्यय आदि कुरीतियोंके होनेसे प्रत्येक जातिके स्त्री पुरुषोंकी संख्या बड़े वेगसे घट रही है—विधवा व विधुरोंकी संख्या अधिक होनेसे दिनपर दिन संतानक्रम बन्द हो रहा है, ऐसा ही सौ दो सौ वर्ष पहिले भी था। इसीसे इस जातिका अब कोई मनुष्य सूरतमें नहीं दिखलाई पड़ता। सूरत नगरमें इस जातिका कैसा गौरव था इसको प्रगट करनेवाला एक शिलालेख नीचे दिया जाता है। यह लेख उन २४ बड़ी भव्य प्रतिबिम्बोंसे एक प्रतिबिम्बपर है जो **बड़ा चौटा** जिसको अब नानावट कहते हैं, के मंदिरजीमें विराजमान थी और अब वे सब चंदावाड़ीके पासवाले बड़े (पुराने) मंदिरजीमें स्थापित हैं।

नकल शिलालेख।

"श्रीजिनो जयति। स्वस्ति श्री १८०५ वर्षे शाके १६७५ प्रवर्तमाने वैसाख मासे शुक्लपक्षे चन्द्रवासरे गुर्जरदेशे सूरतबन्दरे

कुम्यादिचैत्यालये श्रीमूलसंघे नन्दीसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दीदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीविद्यानन्दीदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीमल्लीभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीवीरचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीज्ञानभूषणदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीवादीचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीमहीचन्द्रस्तत्पट्टे भट्टारक श्रीमेरुचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीविद्यानन्दीगुरूपदेशात् सूरतवास्तव्य रायकवालजातीय धर्मधुरंधर सम्यक्व्रतधारक गुर्वाज्ञाप्रतिपालक सप्तक्षेत्रविलसतवित् सा कुँवरजीसुत सौजीसुत लक्ष्मीदासस्तत्पुत्रधर्मदासभार्या रतनबाई तयोःसत्पुत्र धर्मधुरन्धर पूजाबिम्बप्रतिष्ठासंघवच्छलकरणसमर्थ जैनप्रसिद्धमार्गे विलसतावित् श्रावकाचारचतुर गुर्वाज्ञाप्रतिपालक जगजीवनदास भार्या नवीवहू ताभ्यां बिम्बप्रतिष्ठा करीता सेठ श्रीलालभाईस्तेषां पुण्यपवित्रसमस्त प्राणिगणप्रतिपालक करुणामूर्ति सेठ जगन्नाथबाई सान्निध्य विराजमाने श्रीआदिनाथजी मूलनायकजी प्रतिष्ठित नित्यं प्रणमति। श्रीरस्तु। लेखकवाचकयोः भद्रं भूयात्।"

इस लेखसे भट्टारकोंकी वंशावलीका कुछ पता चलता है। रांदेरके जिन मंदिरकी एक प्रतिमापर जैसा ऊपर लिखा है संवत १५१८में देवेन्द्रकीर्ति, शिष्य विद्यानंदि हैं। इससे प्रगट है कि ये विद्यानंदि वेही विद्यानन्दि हैं जो बड़ाचौटेके प्रतिबिम्बपर लिखित हैं। संवत १५१८ से लेकर १८०५ तक नीचेप्रमाण क्रमसे भट्टारक हुए व उनसे पहिले विद्यानंदिके गुरु देवेन्द्रकीर्ति व इनके गुरु भट्टारक श्री पद्मनंदि थे। ऊपरके लेखसे यह भी झलकता है कि इस सूरत जिलेमें सबसे पहिले भट्टारक ये ही पद्मनंदि हुए, क्योंकि इनके पहिलेके

किसी भट्टारकका नाम लेखमें नहीं है, केवल श्रीकुन्दकुन्दाचार्य्यजी महाराज हैं, जो परम ऋषि दिगम्बरी आत्मज्ञानी व अनुपम विद्वान् और योगीश्वर थे।

सूरतकी गद्दीका संबंध ईडरकी गद्दीसे है, ऐसा सुनते हैं। इस ईडरकी गद्दीके भट्टारकोंकी नामावली इस प्रकार है:-

१ श्रीभद्रबाहु	१८ श्री वसुनन्दी	३५ श्री नागचन्द्र
२ ,, गुप्तिगुप्त	१९ ,, वीरनन्दी	३६ ,, नयचन्द्र
३ ,, माघनन्दी	२० ,, माघनन्दी	३७ ,, हरिचन्द्र
४ ,, जिनचन्द्र	२१ ,, माणिक्यनंदी	३८ ,, महीचन्द्र
५ श्री पद्मनन्दी	२२ ,, मेघचन्द्र	३९ ,, माघचन्द्र
६ ,, उमास्वामी	२३ ,, शांतिकीर्ति	४० ,, लक्ष्मीचन्द्र
७ ,, लोहाचार्य	२४ ,, मेघकीर्ति	४१ ,, गुणकीर्ति
८ ,, यशःकीर्ति	२५ ,, पद्मकीर्ति	४२ ,, विमलकीर्ति
९ ,, देवनन्दी	२६ ,, विनयकीर्ति	४३ ,, लोकचन्द्र
१० ,, गुणनन्दी	२७ ,, भूषणकीर्ति	४४ ,, शुभचन्द्र
११ ,, वज्रनन्दी	२८ ,, शीलचन्द	४५ ,, शुभकीर्ति
१२ ,, कुमारनन्दी	२९ ,, नन्दीकीर्ति	४६ ,, भावचन्द्र
१३ ,, लोकचन्द्र	३० ,, देशभूषण	४७ ,, महीचन्द्र
१४ ,, प्रभाचन्द्र	३१ ,, अनन्तकीर्ति	४८ ,, माघचन्द्र
१५ ,, नेमिचन्द्र	३२ ,, धर्मचन्द्र	४९ ,, ब्रह्मचन्द्र
१६ ,, अभयनन्दी	३३ ,, विद्यानन्दी	५० ,, शिवनन्दी
१७ ,, सिंहनन्दी	३४ ,, रामचन्द्र	५१ ,, वीरचन्द्र

५२ ,, हरिचन्द्र	६९ ,, ललितकीर्ति	८६ ,, गुणकीर्ति
५३ ,, भावनन्दी	७० ,, केशवचन्द्र	८७ ,, वादिभूषण
५४ ,, सुरेन्द्रकीर्ति	७१ ,, चारुकीर्ति	८८ ,, रामकीर्ति
५५ ,, विद्याचन्द्र	७२ ,, अभयकीर्ति	८९ ,, पद्मनन्दी
५६ ,, सूरचन्द्र	७३ ,, वसन्तकीर्ति	९० ,, देवेन्द्रकीर्ति
५७ ,, माघनन्दी	७४ ,, विशालकीर्ति	९१ ,, क्षेमकीर्ति
५८ ,, ...नन्दी	७५ श्री शुभकीर्ति	९२ ,, ÷ ÷
५९ ,, गंगनन्दी	७६ ,, धर्मचन्द्र	९३ ,, नरेन्द्रकीर्ति
६० ,, हेमकीर्ति	७७ ,, रतनचन्द्र	९४ ,, विजयकीर्ति
६१ ,, चारुकीर्ति	७८ ,, प्रभाचन्द्र	९५ ,, नेमिचंद्र
६२ ,, मेरुकीर्ति	७९ ,, पद्मनन्दी	९६ ,, रामकीर्ति
६३ ,, नाभिकीर्ति	८० ,, सकलकीर्ति	९७ ,, यशःकीर्ति
६४ ,, नरेन्द्रकीर्ति	८१ ,, भुवनकीर्ति	९८ ,, सुरेन्द्रकीर्ति
६५ ,, चन्द्रकीर्ति	८२ ,, ज्ञानभूषण	९९ ,, रामकीर्ति
		१०० ,, कनककीर्ति
६६ ,, पद्मकीर्ति	८३ ,, विजयकीर्ति	१०१ ,, विजयकीर्ति*
६७ ,, वर्द्धमान	८४ ,, शुभचन्द्र	("दिगम्बरजैन"
६८ ,, अकलंक	८५ ,, सुमतिकीर्ति	वर्ष ४ अंक ७)

ऊपरकी पट्टावलीमें नं० ८३ श्रीविजयकीर्त्तिदेव सं० १५६८ में मौजूद थे तथा नं० ८० श्रीसकलकीर्ति शिष्यपरम्परामें थे। इसका प्रामाणिक लेख बड़ौदा नवी पोलके चैत्यालयमें विराजित श्री-

* ये आजकल मौजूद हैं, परन्तु सर्व सम्मतिसे गद्दीपर नहीं बैठे हैं इसलिये बहुतसे लोग इनको नहीं मानते हैं।

पद्मनंदिपंचविंशतिका संस्कृत ग्रंथके अंतिम पत्रे ९९ की लिपि-प्रशस्तिमें है। यह ग्रंथ बहुत शुद्ध है अन्वयके नं० शब्दोंपर दिये हैं व कठिन शब्दोंके अर्थ भी लिख दिये हैं। परन्तु शुरूके ३० पत्रे नहीं मिलते हैं। सेठ लालचंद कहानदास द्वारा देखनेको मिल सक्ते हैं। ग्रंथ दर्शनीय है। वह प्रामाणिक लेख यह है:—

"सं० १५६८ वर्षे फागुण मासे शुक्लपक्षे १० दिन गुरौ श्रीगिरिपुरे श्रीआदिनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कार-गणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीसकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीभुवन-कीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीज्ञानभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीविजयकीर्तिदेवा-स्तत् भगिनि आर्यिका श्रीदेवश्री तस्यै पद्मनंदिपंचविंशतिका श्रीसंघेन लिखाप्य दत्ता।"

इस लेखसे यह भी पता लगता है कि श्रीविजयकीर्ति भट्टारक-की बहन देवश्री आर्यिका थीं व संस्कृत पद्मनंदिको समझ सक्ती थीं। उन्होंको यह ग्रंथ संघने भेटमें दिया था।

यहांपर पाठकोंका यह अवश्य भ्रम होगा कि जो नाम इस ईडरके भट्टारकोंकी नामावलीमें हैं वे सर्व दिगम्बर नग्न मुनि थे या आजकलके ऐसे वस्त्रधारी भट्टारक थे? जिसके समाधानमें पाठकोंको बताया जाता है कि सन् १२९५ ई० के पहिले सर्व ही मुनि या भट्टारक नग्न होते थे। इस सन्में आलमशाह अलाउद्दीन बादशाह देहलीके थे। इनको किसी धर्ममें आस्था नहीं थी। इनकी सभामें **राघो** और **चेतन** दो ब्राह्मण भी थे जो कि नास्तिक मतके पक्षपाती मंत्रवादी तथा विद्वान् थे। ये बादशाहके मनको और भी धर्मशून्य करते रहते थे। एक दिन उन्होंने बादशाहको बहकाया कि

सर्व धर्मोंकी परीक्षा होनी चाहिये, जो सत्य ठहरे उसके सिवाय सर्वको मुसल्मान बना लिया जावे। बादशाहने देहलीमें आज्ञा दी कि सर्व अपने२ धर्मकी परीक्षा दें और अपने गुरुको लेकर आवें, नहीं तो हमारा धर्म स्वीकार करना पड़ेगा। जैनियोंको भी यह आज्ञा हुई। उस ओर तब कोई दिगम्बर मुनि नहीं थे। उनको ढूंढनेके लिये जैनियोंने बादशाहसे छह मासका समय मांगा। बादशाहने स्वीकार किया। जैनी लोग दक्षिणकी ओर आये और उन्हें तीन मास बाद गिरनारपर **श्रीमाहवसेन** (महासेन) स्वामीका दर्शन हुआ। उनसे सर्व हाल कहा। जैनी लोग वहीं ठहरे रहे, पर स्वामी-का विहार नहीं हुआ। इतनेमें जब छह मासमें एक दिन ही शेष रहा तब श्रावक लोग घबड़ाये। स्वामीने कहा तुम चिन्ता न करो। तपोबलसे दूसरे दिन प्रातःकाल स्वामी देहलीकी मसानभूमिमें पहुंच गये और सर्व जैनी अपने २ घरोंमें सोते २ उठे। उसी रात्रिको एक सेठके पुत्रको सर्पने डंस लिया। उसको मृतक समझ लोग वहीं जलानेको आये जहां मुनि महाराज विराजमान थे। मुनिने पुत्रको देखकर कहा कि यह मरा नहीं है सर्व लोग ठहर गये। मुनिने पुत्रको सचेत कर दिया। वह अच्छी तरह खेलने लगा। इस बातकी बड़ी प्रसिद्धि हुई। बादशाह राघो और चेतनके साथ मुनि महाराजसे मिले। इन ब्राह्मणोंने मुनिको देखते ही कहा कि आपने अपने कमंडलुमें मछलियां क्यों रख छोड़ी हैं? मुनिने कहा कि पूजनके लिये पुष्प हैं, मछलियां नहीं। कमंडलु देखा गया तो पुष्प ही निकले। फिर दोनों ब्राह्मणोंने मुनिराजसे पट् पत-पर खूब वादानुवाद किया। मुनि महाराजकी विजय हुई। जैन

धर्मकी बड़ी प्रभावना हुई। बादशाहने स्वयं प्रशंसा की। मुनि महाराज उसी ओर ठहरे। बादशाहने जैनियोंसे कहा कि आपके गुरु सदा देहलीमें रहें ऐसा कहिये तथा हमारी बेगमें भी दर्शन किया करें इससे उनको वस्त्र रखना चाहिये। जैनी लोग इस बात-पर विचार करने लगे। इतनेहीमें अर्थात् सन् १३१९में **फिरोजशाह तुघलक** देहलीके बादशाह हुए। दि० जैनि-योंके अति आग्रह व बादशाहकी इच्छासे श्रीमहासेनके शिष्य मुनिने वस्त्र रखना स्वीकार किया। बादशाहने ३२ पदकी उपाधियां दीं व कुछ सनदें दीं जो देहली, कोलहापुर, नागौर आदिके भट्टारकोंके पास मौजूद हैं (देखो, जैनसिद्धान्तभास्कर किरण ४, सफा ११४, छपा १९१५)। उस समयसे जो वस्त्र रखने लगे उनकी भट्टारकोंकी गद्दी प्रसिद्ध हुई। और देहलीके भट्टारकने अपनी शाखाएं भारतके अनेक स्थानोंपर कायम कीं।

यद्यपि कालदोषसे भट्टारकोंका पद वस्त्रसहित स्थापित हो गया तथापि नग्न मुनियोंका कभी अभाव नहीं हुआ था। नग्न मुनि भी होते रहे हैं। सं० १९३४ में श्रीसोमसेन मुनि ९० वर्षके वृद्ध बड़ौदा नगरमें पधारे थे। सोजित्रामें चातुर्मास किया था। जैनबद्रीमें बराबर मुनि होते आये हैं। अब भी वहां श्रीअनन्तकी-र्तिजी महाराज मौजूद हैं। झालरापाटनमें थोड़े ही दिन पहिले श्रीसिद्धसेन मुनि हुए हैं। हालमें वहां मुनि चन्द्रसागरजी विराजमान हैं।

यद्यपि शास्त्राज्ञासे विरुद्ध भट्टारकोंने वस्त्र रक्खा, पर मुसल्मा-नोंके जमानेमें उन्होंने भारतमें दिगम्बर जैन समाज, धर्म और उनके

मंदिर व शास्त्रोंकी बहुत रक्षा की है। कई तीर्थोंका उद्धार किया है। विद्याबलसे अनेक चमत्कार दिखाये हैं व ग्रंथ-रचना भी की है। यद्यपि आज कलके कुछ भट्टारक चारित्रहीन दिखलाई पड़ते हैं तथापि पहिले ये लोग सिवाय वस्त्र रखनेके और सर्व चारित्र-बाह्य क्रिया योग्य करते थे व धर्मकी रक्षार्थ ही जीवनका उपयोग करते थे।

सूरतकी गद्दीके भट्टारक।

१ श्रीपद्मनन्दि

२ ,, देवेन्द्रकीर्ति

३ ,, विद्यानन्दि (सं० १५१८)

४ ,, मल्लिभूषण (चंद्रावाड़ीके बड़े मंदिरकी प्रतिमाओंपरसे सं० १५४४)

५ ,, लक्ष्मीचंद्र

६ ,, वीरचंद्र

७ ,, ज्ञानभूषण

८ ,, प्रभाचंद्र

९ ,, वादिचंद्र (चंद्रावाड़ीके बड़े मंदिरकी प्रतिमाओंपरसे (सं० १६४१)

१० ,, महीचंद्र-(इन्होंने संस्कृतमें पंचमेरुपूजा आदि पुस्तकें रची हैं।)

११ ,, मेरुचंद्र (इन्होंने संस्कृतमें नन्दीश्वरपूजाविधान रचा है। सं० १७२२)

१२ ,, जिनचंद्र

१३ ,, विद्यानन्दि (सं० १८०५)

३०० वर्षोंमें १० भट्टारकोंका क्रमवार होना सर्वथा संभव है। विद्यानन्दिके पीछेके भट्टारकोंके नाम ये हैं:—

१४ श्री देवेन्द्रकीर्ति (इन्होंने पादरा तथा आमोदके मंदिर बंधवाये हैं। इनके पास १६ शिष्य रहते थे।

१५ ,, विद्याभूषण (इन्होंने महुवा, सूरत, अंक्लेश्वर, सजोत, सोजित्राके मन्दिर बंधवाये। इनके एक शिष्य पण्डित भाणा था कि जिन्होंने व्याराका मन्दिर बंधवाके सं० १८७१ में प्रतिष्ठा की तथा सोजित्रामें एक मंदिरका मंडप बंधवाया। इनके शिष्य पण्डित पीताम्बर थे, जिन्होंके लिखे हुए कई ग्रन्थ पादराके मन्दिरमें मौजुद हैं।)

१६ ,, धर्मचंद्र।

१७ ,, चंद्रकीर्ति (ये बंबईवाले सेठ सौभागशाह मेघराजके भाई थे। संवत् १९२८ में नरोड़ामें देवलोक गये। वहां एक प्रतिष्ठा भी कराई थी। इनके शिष्य पण्डित शिवलालजी महुवामें रहते थे और पालीताणा क्षेत्रपर देखरेख रखते थे। इन्होंने शिखरजीकी यात्रा करते हुए सं० १९२९ में शिखरजीकी एक पूजा रची है।)

१८ ,, गुणचंद्र (बागड़ देशमें कई कुरीतियां बंद कराई। जैसे-कन्यादानमें गर्दभका दान। अहमदाबादमें रायकवालजातिने वैष्णवकी कंठी बांध ली थी सो तुड़वाके उनके लिये मंदिर बंधवाया। ये अभी हालमें विद्यमान है।)

१९ ,, सुरेन्द्रकीर्ति (ये भी हालमें विद्यमान हैं।)

सूरतजिलेमें दिगम्बर जैनियोंकी बस्ती १०० व १५० वर्ष पहिले निम्न स्थानोंपर थी। वहांपर मंदिरजी भी थे।

१-**बलसाड**-यहां अब कोई नहीं है न मंदिर है।

२-**मंदरोही**-यहां अब कोई नहीं है न मंदिर है। परन्तु यहांके लिखे हुए कई ग्रंथ मिलते हैं।

३-**रांदेर**-यहां अब दो घर व एक जूना जिन मंदिर है।

४-**हांसोट**-यहां अब कोई नहीं है न मंदिर है परन्तु यहांके लिखे ग्रंथ मिलते हैं।

५-**महुआ**-यहां अब भी १० घर हैं, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथका अतिशय युक्त प्राचीन जिनमंदिर है व संस्कृतका अच्छा शास्त्रभंडार है।

६-**कोदादा**-यहां अब कोई नहीं है न मंदिर है, परंतु बड़ौदा नवी पोलके दि० जैन चैत्यालयमें विराजित श्रीसकलकीर्तिकृत संस्कृत श्रीपालचरित्रसे पता लगता है कि कोदादामें श्रीशीतलनाथस्वामीका मंदिर सं० १६३७ में मौजूद था। ग्रंथलिपिकी प्रशस्ति जो अंतिम पत्र ६७ पर दी हुई है इस भांति है:—

"संवत १६३७ वर्षे वैशाख वदि ११ सोमे अदेहश्रीकोदादा शुभस्थाने श्रीशीतलनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भ० श्रीदेवेन्द्रकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानंदिदेवाःतत्पट्टे भ० श्रीमल्लिभूषणतत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचंद्रपट्टे भ० श्रीवीरचंदपट्टे भ० श्रीज्ञानभूषणपट्टे भ० श्रीप्रभाचंद्रः तत्पट्टे भ० श्रीवादिचंद्रः तेषां मध्ये उपाध्यायधर्मकीर्ति स्वकर्म्मक्षयार्थे लेखि।"

इस लेखमें जितने भट्टारकोंके नाम हैं उनका नाम व ग्राम

सर्व ऊपर लिखित सूरत गद्दीके भट्टारकोंसे बिलकुल मिलते हैं। सूरत चंद्रावाड़ीके मंदिरमें वादिचंद्र भट्टारक प्रतिष्ठित प्रतिमा मौजूद है।

७–**नौसारी**–यहां अब कोई नहीं है न जैन मंदिर है परन्तु संवत १९१३ तक यहांपर मंदिरजी था।

८–**सूरत**–यहां पहले ९ जातियोंके जैनी थे अब वीसा हुंबड़के २० घर, दसा हुंवड़के ७९ घर व नरसिंहपुराके २० घर हैं। तो भी पंच पांच गोटकी कहलाती है। रायकवाल व मेवाड़ा नहीं है। यद्यपि मेवाड़ा लोग प्रगटपने वैष्णव हो गये हैं। सूरत शहरमें १०० वर्ष पहले दिगम्बर जैनियोंकी संख्या ७०० के अनुमान थी। पहले इनके खास रहनेके मुहल्ले सगरामपुरा, काजीका मैदान और नानावट भी थे। यहां अब कोई घर नहीं है। अब हरिपुरा, नवापुरा, खपाटियाचकला आदिमें रहनेवाले अब केवल २५० हैं। श्वेताम्बर जैनी पहले १२००० थे अब ३००० के अनुमान है। वर्तमानमें श्वे० जैनियोंके ५० मंदिर व ७५ घर चैत्यालय और दि० जैनियोंके ६ मंदिर व ९ घर चैत्यालय हैं।

इन छह मंदिरोंमें सबसे पुराना मंदिर खपाटिया चकलेमें चंदा-वाड़ी धर्मशालाके पास छोटा जिन मंदिर है जिसमें एक भौंरा है। इस भौंरेमें ३ बड़ी अवगाहनाकी भव्य प्रतिमाएं विराजमान थीं सो अब ऊपर बेदी बनाकर स्वर्गवासी सेठ चुन्नीलाल झवेरचंद जौंहरी, सहायक महामंत्री–" भारतवर्षीय दि० जैनतीर्थक्षेत्र कमेटी " द्वारा स्थापित की गई हैं। इनमेंसे दोपर लेख हैं जो ऐसी भाषामें हैं कि पढ़ा नहीं जाता। श्रीपार्श्वनाथकी प्रतिबिम्बपर संवत १२३९ वैशाख

सुदी १० उल्लिखित है। नंदावाड़ीके पास दूसरा बड़ा मंदिर है जिसमें बहुतसे प्रतिबिम्बोंका समूह है। उनपर संवत व प्रतिष्ठा-कारक भट्टारकोंका नाम इस भांति है—

सं० १४९४ श्रीअमयचंद्र

सं० १४९९ नंदीश्वरकी मूर्ति, भट्टारकका नाम नहीं है।

सं० १५०७ श्रीभट्टारक विद्यानंदि।

सं० १५१३ श्रीभट्टारक विद्यानंदि।

,, १५२३ ,, ,, भुवनकीर्ति।

,, १५४४ ,, ,, मल्लिभूषण।

,, १५४८ ,, ,, जिनचंद्र

,, १६४१ ,, ,, वादिचंद्र।

,, १६४१ ,, ,, गुणकीर्ति।

,, १६४७ ,, ,, ,,

,, १६५१ ,, ,, वादिभूषण।

,, १६६६ ,, ,, वादिचंद्र।

,, १६७९ ,, ,, महीचंद्र।

,, १६८४ ,, ,, महीचंद्र।

,, १६८४ ,, ,, कुमुदचंद्र।

,, १७१३ ,, ,, महीचंद्र।

,, १७२२ ,, ,, मेरुचंद्र।

मन्दिरके नीचेके भागमें विराजमान चन्द्रप्रभुकी प्रतिमापरका लेख।

"४०॥ संवत् १६७९ वर्षे शाके १५५३ श्रीमूलसंघ नन्दीसंघे सर-स्वतीगछे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवाः

स्त० भ० देवेन्द्रकीर्तिदेवास्त० भ० ॥ श्रीविद्यानन्दिदेवास्त० भ० श्रीमल्लिभूषणास्त० भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्रस्त० भ० श्रीवीरचन्द्रास्त० भ० श्रीज्ञानभूषणास्त० भ० श्रीप्रभाचन्द्रास्त० भ० श्रीवा दीचन्द्रदेवास्त० भ० श्रीमहीचन्द्रोपदेशात् हुंबड़जातीयः वीउंलवास्तव्यः मातर गोत्रे सं० श्रीवर्द्धमानभार्या संवनादे तयोः पुत्रः स० कुंअरजीत ।० संकोटमदे तयोः पुत्रः सं० श्रीधर्मदासभार्या सं धनादे पुत्री बेमबाई चन्द्रप्रभं प्रणमति ।"

चंद्रप्रभुकी बांई ओरकी बड़ी प्रतिमाका लेख ।

"संवत् १६७९ वर्षे वैशाख वदी ५ गुरौ श्रीमूलसंघे भारती गच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वय भट्टारक श्रीपद्मनंदीदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीदेवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री विद्यानंदीदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीमल्लिभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचंद्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीवीरचंद्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीज्ञानभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्ततपट्टे भ० श्रीवादीचंद्रदेवास्तत्पटे भट्टारक श्रीमहीचंद्रोपदेशात् सं० श्रीधर्मदासः श्रीवासुपूज्यं प्रणमति"

चन्द्रप्रभकी दांई ओर भी एक आदिनाथ स्वामीकी उतनी ही विशाल प्रतिमा है, लेकिन उसपर कोई लेख नहीं है। यहांके वृद्ध पुरुषोंके कथनके आधारपर तलाश करनेसे ज्ञात हुआ कि ये तीनों प्रतिमाएं पहिले नानावट बड़े चौटेकेके भौंरेमें थीं। वहांपर अब सिर्फ घेलाभाई मंछालाल दसा हुंबडका एक घर है। उनके आधिन वह भौंरा अभी है और वहां तीन प्रतिमाओंके आसन भी मौजूद हैं।

यह बड़ा मंदिर संवत १८९३ में भस्म हो गया था। उस वक्त अग्निकांडसे आधा शहर जल गया था पर प्रतिमाएं सुरक्षित रही थीं। सं० १८९५से १८९८ तकमें फिर तय्यार होकर इसकी

प्रतिष्ठा वैसाख सुदी १२ संवत् १८९९ को माणा पंडितके द्वारा की गई थी जो यहीं रहते थे और यंत्र मंत्रमें बहुत प्रवीण थे। उस समयकी प्रतिष्ठित पद्मावतीकी मूर्तिपर नीचे प्रकार लेख है।

पद्मावतीकी पाषाणकी प्रतिमा।

"सं० १८९९ वैशाख सुद १२ गुरुवार श्रीमुलसंघे सरस्वतीगछ बलातकारगण कुंदकुंदाचार्य भट्टारक श्रीविद्यानंदि-तत्पट्टे भ श्रीदेवेन्द्रकीतिस्ततपट्टे भट्टारक श्रीविद्याभूषणजीस्ततपट्टे भ० श्री धर्मचंद्रस्तस्गुरु भ्राता पंडित माणचंद उपदेशात् सा० वेणिलाल केसुरदास तत्सुता बाई इछाकोर नीत्यं प्रणमति।"

पद्मावती (पाषाणकी खड्गासन)

"सं० १५४४ वर्षे वैशाख शुदी ३ सोमे॥ श्री मूलसंघे॥ सरस्वतीगछे॥ बलात्कारगणे॥ भट्टारक श्रीविद्यानंदीदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्रीमल्लीभूषण॥ श्री स्तंभस्तीर्थे॥ हुंबड ज्ञातेय। श्रेष्ठी चांपा भार्या रूपिणि तत्पुत्री श्रीआर्जिका आर्जिका रत्न सिरीक्षुल्लिका जिनमती श्रीविद्यानंदी दीक्षिता आर्जिका कल्याण सिरीतत्वल्ली अग्रोतका ज्ञातोसाह देवा भार्या नारिंगदे॥ पुत्री जिनमती नस्स ही कारापिता प्रणमति श्रेयार्थम्।"

पंचमेरुकी धातुकी बड़ी प्रतिमा।

"सं० १५११ वर्षे वैशाख सुदी १० बुधे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगछे। भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवाःतत्पट्टे भ। श्रीपद्मनंदीतत्शिष्य श्रीदेवेंद्रकीर्तिदीक्षिताचार्य श्री....विद्यानं-

दि गुरूपदेशात् गाधारवास्तव्य हुंबड ज्ञातीय समस्त श्री संघेन कारापित मेरुशिखरा कल्याण भूयात्"

मेरुके नीचे चारों कानोंपर चारों दिशाओंमें चार मुनियोंकी मूर्तियां हैं जो जाप करते हुए दाहिना हाथ छातीपर और बांया हाथपर रख हुए हैं ।

चारों मुनिओंके नाम ।

१ मुनिश्री कल्याणनंदी मूर्तिः

२ भ० श्रीपद्मनंदी देवस्य मूर्तिरियम्

३ मंडलाचार्य श्रीदेवेंद्रकीर्तिः...... मूर्तिः

४ ....नंदी मूर्तिः

पंचपरमेष्टीकी धातुकी प्रतिमा ।

" सं० १५१३ वर्षे वैशाख सुदी १० बुधे श्रीमूलसंघे आचार्य श्रीविद्यानंदीगुरूपदेशात हुवड ज्ञातीय दो० डुंगर भा० सोनी देवलदेसुतदोशी शंखा भार्या वासुदिवी०का भार्या मटका तेनेदं श्री जिन विम्बं कारिता । "

मूलनायक श्रीआदिनाथस्वामीकी प्रतिमा मूलसंघे सं० १३७६ की है । विशेष लेख पढ़ा नहीं जाता ।

सम्यक्ज्ञानका यंत्र ।

"सं० १६८५ वर्षे माघ सुदी ५ श्रीमूलसंघे कुंदकुंदाचार्यान्वये श्रीवादीचन्द्रस्तत्पट्टे श्रीमहीचंद्रोपदेशात् सिंघपुरावंशे संघवी वल्लभजी सं० हीरजी ज्ञानं प्रणमति ।"

चौवीसी।

" सं० १५४४ वर्षे वैशाख सुदी ३ सोमे श्रीमूलसंघे भ० श्रीभुवनकीर्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात् हुंबडशाह-रामाभार्या कर्मा सु० कर्णाभार्या हासी सुत मना एते नित्यं प्रणम्य श्रीमहावीर जिनम् ।"

पार्श्वनाथकी धातुकी छोटी प्रतिमा।

"सं० १४९९ वर्षे वैशा० वादि ५ गुरुवारे श्रीकाष्ठा-संघगणे हुंबडवांशायं जगपालभाः सांति बि। सुत नरपालेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं करारि....।"

सम्यक्ज्ञानका यंत्र।

"सं० १३७८ भाद्र० सुदी १२ साधु चादावोदा प्रणमति नित्यम् ।"

तीसरा दि० जैन मंदिर गोपीपुरामें हैं। यहांपर भी बहुत प्रतिबिम्ब हैं अधिकतर काष्टासंघकी गद्दीके भट्टारकोंके द्वारा प्रतिष्ठित हैं। इस मंदिरमें संस्कृत ग्रंथोंका प्राचीन शास्त्र भंडार है, परंतु बहुत ही अव्यवस्थित स्थितिमें पड़ा है। बम्बईके सेठ डाह्या-भाई प्रेमचंदका प्रबंध है। खेद है कि वे इनकी सम्हाल नहीं कराते। इस भंडारमें संस्कृत–प्राकृतके अपूर्व २ हजार डेढ़ हजार ग्रंथ हैं।

यहांपर एक पद्मावती देवीका प्रतिबिम्ब है उसपर संवत् १६९४ जेठ सुदी १० है। प्रतिष्ठाकारक भट्टारक काष्ठासंघी लक्ष्मीसेन हैं। इसकी प्रतिष्ठा गुर्जरदेश सुरत बंदर नरसिंहपुरा ज्ञातीय पंचलालगोत्रे शाह रामजी भार्या फवाई तयोः सुत कल्याणजी भार्य्या गौरीने की।

एक पंचमेरु है उसके १ लेखसे इस तरफ होनेवाले काष्ठासंघी भट्टारकोंके क्रमका पता चलता है।

नकल लेख पंचमेरु दि० जैन मंदिर गोपीपुरा सूरत।

"संवत १७४७ शाके १६२२ प्रमोदनाम संवत्सरे ज्येष्ट मासे कृष्णपक्षे सातम बुधवासरे नंदीतटगच्छे भट्टारक विद्यगणे भट्टारकश्रीरामसेनान्वये तत्पट्टे भट्टारकश्रीविशालकीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारकश्रीविश्वसेन तत्पट्टे भट्टारकश्री विद्याभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्रीभूषण तत्पट्टे भट्टारकश्री चंद्रकीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्री राजकीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारक पं० लक्ष्मीसेनजी तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्रीसुरेन्द्रकीर्त्ति प्रतिष्ठितं।"

यहां धातुका एक रत्नत्रयका प्रतिबिम्ब है जिसमें तीन कायोत्सर्ग प्रतिमाएं एक साथ अंकित होती हैं उसको इधर रत्नत्रय बिम्ब कहते हैं। इसका लेख यह है:—

"सं० १७६२ माघ वदी ७ शुक्र श्रीसूरत बंदरे श्री चंद्रनाथ चैत्यालये काष्ठासंघे..........नरसिंहपुरा ज्ञातीय कुकालोलानी संघवी नाना सुत हीरजी तस्य भा० त्रिनीबाई तयो पुत्रा सुन्दरदासजी हीरजी तथा त्रीकमजी हीरजी तथा हेमजी हीरजी तथा बहन मेघबाई तथा जगबाई प्रतिष्ठितं"

काष्ठासंघके जो नाम ऊपरके शिलालेखमें आये हैं वे सर्व नाम उस संस्कृत गुर्वावली पाठमें है जो ६४ श्लोकोंकी है तथा जो करमसदके उस संस्कृत गुटकेमें है जो सुरेन्द्रकीर्ति भट्टार-

कने अपने खास पढ़नेके लिये संवत् १७४३ चैत्र सुदी १४ रवि-के दिन श्रीवन्धपुर (यह कौन नगर है सो इसमें नहीं आया)-के श्रीआदिनाथ चैत्यालयमें लिखवाया था। इस गुटकेके देखनेसे विदित होता है ये सुरेन्द्रकीर्ति विद्वान् थे क्योंकि इसमें प्राकृत संस्कृतकी निम्न भक्तियां हैं—सिद्धभक्ति, श्रुतज्ञानभक्ति, दर्शनभक्ति, चारित्रभक्ति, वीरभक्ति, २४ तीर्थंकरभक्ति, चैत्यभक्ति, वृहद् स्वयंभू, पंचमहागुरुभक्ति, शांतिभक्ति, ३४ अतिशयभक्ति, नंदीश्वरभक्ति, समाधिभक्ति, योगभक्ति, निर्वाणभक्ति, अग्घुआलोचनाभक्ति, वृहदालोचनाभक्ति, इनके सिवाय तत्त्वार्थसूत्र, ऋषिमंडल, अष्टान्हिका वीनती, आराधनप्रतिबोध, गुर्वावली, वृहद्दीक्षा विधि व प्रतिष्ठा विधि है, यह गुटका २७९ पत्रोंका है। इसके २११ में गुर्वावली है। इसके १९ श्लोकसे काष्ठासंघका वर्णन इस भांति है कि इस काष्ठासंघके ४ गच्छ हैं—नंदीतट, माथुर, बागड़ और लाडबागड़। सो यहां नंदीतट गच्छकी गुर्वावली कही जाती है। सो नीचेके क्रमसे नाम हैं—

१ अर्हद्वल्लभसूरि	४ नागसेन	७ नोपसेन
२ श्रीपंचगुरु	५ सिद्धान्तसेन	८ रामसेन
३ गंगसेन	६ गोपसेन	

रामसेनके सम्बन्धमें लिखा है कि इन्होंने **नारसिंह** नामकी जाति स्थापित की।

रामसेनोति विदितः प्रतिबोधनपंडितः। स्थापिता येन सज्जाति-**नारसिंहा**भिधा भुवि ॥२४॥

इससे पता चलता है कि जो ८४ जातियां जैनियोंमें प्रसिद्ध हैं वे प्रायः पंचम कालके मुनि व भट्टारकोंके द्वारा किसी २ खास

कारणसे स्थापित की गई हैं । वह कारण भी बहुत करके यह हो सका है कि जब किसीने किसी अजैन समूहको एक साथ जैनी किया तब उसका एक खास नाम रखके उसे एक जाति करार दे दिया ।

९ नाभिसेन	२८ मेरुसेन	४५ सुवर्णकीर्ति
१० नरेन्द्रसेन	२९ शुभंकरसेन	४६ भानुकीर्ति
११ वासवसेन	३० नयकीर्ति	४७ कविभूषण
१२ महेन्द्रसेन	३१ चंद्रसेन	४८ संयमसेन
१३ आदित्यसेन	३२ सोमकीर्ति	४९ विख्यातमूर्ति
१४ सहस्रकीर्ति	३३ लघुसहस्र कीर्ति	५० लघु राजकीर्ति
१५ श्रुतकीर्ति	३४ महाकीर्ति या महासेन	५१ नंदकीर्ति
१६ देवकीर्ति		५२ चारुकीर्ति
१७ रामसेन	३५ यशःकीर्ति	५३ विश्वसेन (वादि प्रसिद्ध)
१८ विजयकीर्ति	३६ गुणकीर्ति	
१९ वासवसेन	३७ पद्मकीर्ति	५४ देवभूषण
२० महासेन	३८ भुवनकीर्ति	५५ ललितकीर्ति
२१ मेघसेन	३९ मल्लकीर्ति या विमलकीर्ति	५६ श्रुतकीर्ति
२२ सुवर्णसेन		५७ जयकीर्तदेव
२३ विजयसेन	४० मदनकीर्ति	५८ उदयसेन
२४ हरिषेण	४१ मेरुकीर्ति	५९ गुणदेवसूरि
२५ चारित्रसेन	४२ गुणसेन	६० विशालकीर्ति
२६ वीरसेन	४३ सहस्रकीर्ति	६१ अनंतकीर्ति
२७ कुलभूषण	४४ विजयसेन	६२ महेन्द्रसेन

सुरेंद्रकीर्ति भट्टारक-सूरत.

सं० १७९०.

(देखो पृष्ठ ५२.) J. V. P. Surat.

६३ विनयकीर्ति
६४ श्रीजिनसेन (कवीश्वर)
६५ सुर्यकीर्ति
६६ विश्वसेन
६७ श्रीकीर्ति
६८ चारुसेन
६९ शुभकीर्ति
७० भयकीर्ति
७१ भवसेन
७२ लोककीर्ति
७३ त्रैलोक्यकीर्ति
७४ विजयकीर्ति
७५ कर्मोवसेन
७६ सुरसेन
७७ कुमारसेन
७८ रामसेन
७९ जयकीर्ति या दयाकीर्ति
८० राजकीर्ति
८१ कुमारसेन
८२ पद्मकीर्ति
८३ पद्मसेन
८४ भुवनकीर्ति
८५ विख्यातकीर्ति
८६ भावसेन
८७ रत्नकीर्ति (सं० १५०२)
८८ लक्ष्मीसेन
८९ धर्मसेन (सं० १५४७)
९० बिमलसेन
९१ विशालकीर्ति
९२ विश्वसेन
९३ विद्याभूषण (सं० १६०४*)
९४ श्रीभूषण या रत्नभूषण
९५ चंद्रकीर्ति या जयकीर्ति
९६ राजकीर्ति
९७ लक्ष्मीसेन
९८ इन्द्रभूषण या चंद्रभूषण (सं० १७०८)
९९ सुरेन्द्रकीर्ति

इस संस्कृत गुर्वावलीमें सुरेन्द्रकीर्ति तक नाम है उसका संवत गोपीपुरा मंदिरके पंचमेरुके लेखके व इस गुटकेके अनुसार वि० सं० १७४३ और १७४७है। प्रतिमाके शिलालेखमें विशालकीर्तिसे सुरेन्द्रकीर्ति तक जो नाम दिये हैं वे बराबर मिलते हैं।

इस गुटकेके अंतमें अलग जो नाम गिनाए हैं उनमें कई नाम विशेषणके शामिल किये गए हैं तथा सुरेन्द्रकीर्तिके आगेके चार

* बड़ौदा मंदिरके प्रतिबिम्बके लेखसे देखो, अध्याय ३ में।

भट्टारकोंके और नाम हैं–सकलकीर्ति, लक्ष्मीसेन, रामसेन और रत्नकीर्ति। ऊपर जो पट्टावली दी है वह आगरा मोतीकटराके दि० जैन मंदिरके सरस्वती भंडारके गुटके नं० १३९ से भी मिलती है।

इसी गोपीपुराके मंदिरमें दूसरे मेरुपर लेख है। उसमें काष्ठासंघ लाड़ वागड़ गच्छका वर्णन है और बघेरवाल जाति प्रतिष्ठाकारक है। इससे मालूम होता है कि बघेरवाल लोग काष्ठासंघ लाड़ वागड़ गच्छको मानते हैं। जब कि नरसिंहपुरा नंदीतट गच्छको मानते हैं।

गोपीपुरा मंदिरकी एक चौवीसीपरका लेख।

"सं० १५१३ वर्षे वैशाख सुदी १० बु० आचार्य श्री देवेन्द्रकीर्ति शिष्य श्रीविद्यानंदी देवादेशात् काष्ठासंघे हुमड वंशे श्रेष्ठी काना भार्या बारु सुत साजण भार्या सुहवदे भ्राता सोमसा भार्या रही भानर सींधराज भार्या वरमादे साजण भार्या अधन सुत सदा श्रे सींधराज सुत वदा श्रे साजणे स्वश्रेयोय श्री जिन बिंब कारपितम्। श्री घोघा वेलातट वास्तव्य श्री मूलसंघे आर्जिका संयम श्री श्रेयार्थम्।"

नवापुरा–मेवाडा मंदिरकी प्रतिमाएं।

मेवाड़ाका, गुजरातीका, चोपड़ाका, ऐसे नवापुरामें ३ दिगम्बर जैन मंदिर हैं। जिसमें **चिंतामणि पार्श्वनाथका** मेवाड़ा जातिका मंदिर प्रसिद्ध है—इसमें भी काष्ठासंघी नंदीतट गच्छकी आम्नाय है यहां जो मुख्य **श्रीशीतलनाथस्वामीकी** प्रतिमा अभी भौंरेमें है उसपर यह लेख है—

"स्वस्तिश्री नृप विक्रमात १८१२ माघ सुदी ५ गुरौ श्रीमद काष्ठा संघ नंदीतट गच्छे विद्या गुरौ श्रीरामसेनान्वये भट्टारक श्रीलक्ष्मीसेनदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री विजयकीर्ति विजयराज्ये सुरतबंदरे वास्तव्य मेवाड़ा ज्ञाती लघु शाखायांम् शा सनाथा विशनदास सुत

पिठकभ्राता मूलजी इत्यादि पुत्र पौत्रादिभिः सह श्रीशीतलनाथ बिम्बं नित्यं प्रणमति ''

इस लेखमें लक्ष्मीसेनके बाद कई नाम रह गए हैं—विजय-कीर्ति सुरेंद्रकीर्तिके शिष्य थे तथा शायद इन्हींका नाम सकल-कीर्ति है जो गुटकेमें सुरेन्द्रकीर्तिके पीछे हुए लिखे हैं अथवा यह दूसरे शिष्य हों—क्योंकि यह भी किंवदन्ती कही जाती है कि गोपीपुराके भट्टारकके दो शिष्य थे—तकरार होनेसे जो मूर्ख था उसको लज्जा आई वह विद्या पढ़नेको कर्नाटक गया और खूब विद्वान् होकर करमसदकी गद्दीका भट्टारक हो गया और सूरत आनेका विचार किया, पर गुरुबंधु जिससे झगड़ा हुआ था और जो यहां गोपीपुरामें भट्टारक था उसने सूरतके नबाबसे आज्ञा ले ली कि नर्बदाके इस पार उसको उतरने न दिया जाय। करमसदवाले भट्टारक सूरतके लिये रवाना हुए। भरुच याने भृगुपुर जब आए तब नर्बदा नदीमें नौकावालोंने उतारनेसे इनकार किया तब मंत्र आराधनकर सेत्रंजी विद्या इस पार आगए तब भरुचके नबाबको नौकावालोंने खबर दी। नबाब आया और इनकी विद्या देखकर क्षमा मांगी। ये आगे चलकर बरियाव आए और ताप्ती नदी उतरना चाही। यहांपर भी नाविकोंने इनकार किया तब फिर आपने मंत्र आराधा सेत्रंजी विद्या नदी पारकर बरियावी भागलके द्वारपर सूरतमें आए। वहां द्वार बन्दकर दिये गए। तब फिर मंत्र आराध कर आप आकाश मार्गसे उसी स्थानपर आए जहां-पर नबापुरामें यह मेवाड़ाका मंदिर बना है। सूरतका नबाब व श्रावक आए—और इनकी विद्या देखकर सबने क्षमा मांगी। तब

आपने वहीं यह मंदिर बंधवाया। इससे साफ प्रगट है कि ये विजयकीर्ति हैं और इनके गुरुभ्राता सकलकीर्ति हैं। दोनोंके गुरु सुरेन्द्रकीर्ति हैं क्योंकि इसी भौंरेमें एक चरणपादुका भी है जिसपर यह लेख है–

"स्वस्ति श्री सं० १६१२ माघ सुदी ५ गुरौ काष्ठा...संघे... ....श्री विजयकीर्ति गुरुपदेशात् सुरेन्द्रकीर्ति गुरुपादुका नित्यं प्रणमति—"

तथा यह प्रगट है कि यह सुरेन्द्रकीर्ति सं० १७९० तक रहे विजयकीर्तिने अपने गुरुके स्मरणमें यह पादुका स्थापित करवाई यह बात भी साफ २ प्रगट है—

सुरेन्द्रकीर्तिका चित्र उसी समयका खींचा हुआ इस मंदिरजीमें पाया गया है जो पाठकोंके ज्ञान हेतु यहांपर प्रगट किया जाता है। इस मंदिरका प्रबन्ध वीसा मेवाड़ा भगुभाई चुन्नीलाल कस्तूरचंद चोखावाला करते हैं। दसा मेवाड़ाके पहले यहां १०८ घर थे परंतु वे कन्याओंके लोभसे वैष्णवोंसे मिलनेके लिये कंठी बांधकर वैष्णव हो गए तौ भी उनमेंसे ८ व १० घरवाले श्री जिनमंदिरजी दर्शनार्थ अभी भी आते हैं।

पद्मावतीकी धातुकी प्रतिमा।

"श्री मूलसंघे प्रतिश्ठा श्री श्री काय मुनींद्र ११६४ सशनीथ संवत्सरे पुतमय भवतु।"

धातुकी प्रतिमा।

"सं० १४९७ मूलसंघे श्रीसकलकीर्ति हुबड ज्ञातीय शाह कर्णा भार्या भोली सुता सोमा भार्या मोदी भार्या पासी आदिनाथं प्रणमति।"

चौवीसी धातुकी।

"सं० १४९० वर्षे वै० सु० ९ सनौ श्री मूलसंघे नंदी संघे बलात्कार गणे स० गच्छे श्री कुं० म० श्री पद्मनंदी तत्पट्टे श्री श्री शुभचंद्र तस्य भ्राता जगत्रय विख्यात मुनि श्री सकलकीर्ति उपदेशात् हुंबड ज्ञातीय ठा० नरवद भार्या वला तयोः पुत्रा ठा० देपाल अर्जुन भीमा कृपा चाखण चांपा काहा श्री आदीनाथ प्रतिमेयं।"

पद्मावतीकी धातुकी प्रतिमा।

"सं० १३०४ वर्षे चैत्र सुदी ८ रवौ सूरत तीर्थ वास्तव्य हुंबड ज्ञातीय आल्हा रान ठका जूरा गत सेगण गर्जा धार प्रसादी कर्तव्या।"

पार्श्वनाथकी प्रतिमा।

"सं० १३८० वर्षे महा सुदी १२ रवौ श्रीमूल संघे व्याघ्रेरवालान्वये साधु रतन सुत सोया भार्या लक्ष्मी प्रणमि तम् तत्।"

चोपडाका मंदीरकी प्राचीन प्रतिमा।

पार्श्वनाथ—सं० ११६० श्री मूलसंघे भट्टारक श्री शुभचंद्र दो० सिंघराज।"

पद्मावतीकी प्रतिमा—सं० १२३५ की है।

गुजराती मंदिरकी प्राचीन प्रतिमाएं।

रत्नत्रयकी धातुकी प्रतिमा।

"सं० १५१८ वर्षे श्रीमूलसंघे आचार्य श्रीविद्यानंदी गुरोरुपदेशात् हुंबड वंशे दो साहया भार्या अहीवदे तयोः पुत्राः हुया बिम्बभज आस आवा प्रणमंति।"

चौवीसी धातुकी।

"सं० १४९९ वर्षे वै० वदी २ सोमे श्री मूलसंघे सरस्वतिगच्छे

मुनि देवेंद्रकीर्ति तत्शिष्य श्री विद्यानंदीदेवा उपदेशात् श्री हुमड वंश शाह सेता भार्या रूडी तयो: पुत्र शा राजा भार्या गोरी द्वितीय राणी तयो: सु० अदा वदा राजा भ्राम्री रुपाणा भार्या अणसु तयो पुत्री वदा मल्लीदास एतेषां मध्ये राजा भम्मी राणी श्रेया चतुर्विंशतिका करापिता ।"

पाषाणकी चौवीसी प्रतिमा ।

"संवत ८७५ माघ वदी ५ श्रीदोशी लाड हेम हुलाका माना तुतीय प्रणमंति ।"

यह प्रतिमा बहुत प्राचीन मालूम पडती है। संवतका निश्चय नहीं हो सकता संवतके अंक तीनठी हैं ।

धातुकी प्रतिमा ।

"सं० १४२९ वर्षे श्रीमूलसंघे श्री स० गच्छे श्री विद्यानंदी गुरूपदेशात् सिंघपुरा ज्ञातिय श्रेष्ठी पासा भार्या ऐभू पुत्र दामोदर सानवाल भीपति श्री आदिनाथ कारापिता ।"

आदिनाथ स्वामीकी धातुकी प्रतिमा ।

"सं० १३८० वर्ष वैशाख सुदी १२ सनौ श्री प्रवरसेन देव उपदेशेन सं० खंडी बाला देव साले एपज सुत धींजासा माकोसा तंत्परिदारेण प्रणमति ।"

सिद्धयंत्र ।

"सं० १५०४ वर्षे फाल्गुण सुदी ११ गुरौ श्री गांधार वेला कुले श्री आदिश्वर जिनालये श्री मूल सं० ब० स० गच्छे श्री कु० श्री पद्मनंदी देवा तत्पट्टे श्री सकलकीर्ति देवा तत्शिष्य श्री भुवनकीर्तिदेवन एनेदं श्री सिद्ध........श्री हुमडज्ञातीय श्री सुग्राम भार्याणि जंत्र नित्यं प्रणमति ।"

नंदीश्वरकी प्राचीन प्रतिमा।

"श्री मूलसंघे भारतीय गच्छाधिप पद्मनंदी शिष्य श्री देवेंद्रकीर्ति भाता श्री विद्यानंदी सच्छष्य: २ श्री संवत चतुर्दश ख्याते नवतिर्नव संयुता वैशाख कृष्ण पक्षे च तृतीयापि शुभे दिने यो मदविख्यातमते हुंबडवंशे जनाधिरवंतशे सुवीयमाल देवा विजयदेवी भवेभाया पुत्रा: अवनि भार्या खेतोदा हाख्यो भरणि तले भार्या हांसलदेवी तीत: जाता: त्रया सुता ४ प्रथम साईयो जाता लीलादे भा० गुणवति भार्या भीम मुजदोषागा सद् रांजौ तत्सुतौ जातौ द्वितीय: सहदेवाख्यो भार्या मेरु सुत्तो सु वीर गंगादे या रागी संग तृतीयो निसाये तयो: पुत्रौ ६ जुठानी भार्या सवीरा सुत मक्तौ दे नेर्वा रम्यते मध्ये पापकर्म क्षयार्थं श्रीबीहं बिम्बं हंसलादं अमदाहा भार्या हासंत्रदे तयो: पुत्री अमकसात्र प्रणमति।"

इस मंदिरमें सफेद पाषाणकी और धातुकी कई कायोत्सर्ग प्रतिमाय हैं। जो अतिप्राचीन होनेके कारण ऊपरके लेख पढ़े नहीं जाते।

और भी इस मंदिरमें एक सुवर्ण अक्षरोंका लाल कागज़ोंपर लिखा श्रीतत्त्वार्थ सूत्र है जिसमें सुनहरी स्याहीसे व्याख्यान करते हुए एक भट्टारकका चित्र है और उसके चारों ओर चौवीस तीर्थंकरका चित्र है। पास ही कुछ श्रोतागण भी बैठे हुए हैं। जो कि वि० सं० १५२६ में मूलसंघी भट्टारक श्री विद्यानंदिके उप-देशसे श्री राहुलस्याना....विकरमीणीसाने लिखवाया था।

सिंहपुरा ज्ञातिका वर्णन।

सूरतनगरमें झांपाबाजारमें सेठ प्रभुदास पानाचंदके यहां एक चैत्यालय है वहां एक पद्मावती देवीकी मूर्ति है जिसपर यह लेख है—

"सं० १७२२ जेठ सुदी २ मूलसंघे भट्टारक श्री मेरुचंद पट्टे साह

श्री सिंहपुराज्ञातीय प्रेम जीवा भाई सुत भट्टारक श्री महाचंद्र शिष्य ब्र० जयसागर प्रणमति "

इस लेखमें सिंहपुरा जातिका वर्णन आया है। इसकी दन्तकथा सुरतमें यह प्रसिद्ध है कि इस सिंहपुरा जातिका एक दीवान देहलीकी सल्तनतमें था। वहां बादशाहसे कुछ अनबन होनेके कारण वह कुटुम्बसहित खंभातके नवाबके यहां आकर रहा। फिर सुरत, महुआ, व्यारा तथा बलसारमें रहा। सुरत जिलेमें अब भी इस जातिके १९ घर हैं। मुख्य सेठ प्रेमचंद हरगोविन्दभाई देवचंद मोतीरूपावाला सुरत है। परन्तु वे सब घर नरसिंहपुरा जातिसे सम्बन्ध करते हैं। क्योंकि सिंहपुरा जातिके और घर इधर नहीं रहे। इस लिये संवत् १९०४में सिंहपुरा और नरसिंहपुरा दोनों जातियां मिल गईं।

यहांपर यह कह देना उचित होगा कि समयसमयपर जब जातियां छोटी२ रह गईं तब वे एक दूसरेमें मिलती भी गई हैं ऐसा प्रमाण मिलता है। ऐसी दशामें यदि दिगम्बर जैन धर्म पालनेवाली सर्व शुद्ध भिन्न २ जातियां परस्पर खानपान और बेटी व्यवहार करे तो छोटी जातियोंके घरोंका नाश न हो। और क्षेत्र विशाल होनेसे योग्य सम्बन्ध प्रत्येकको प्राप्त हो जावे।

इस समय यहां दिगम्बर जैनियोंमें मुख्य सेठ कालीदास वखतचंद हैं जो दशाहुंबड़ हैं। ये ही पांच गोटोंके सेठ कहलाते हैं। वीसाहुमड़ मंत्रेश्वर गोत्री परोपकार–कार्य्यमें लीन सेठ मूलचंद किसनदासजी कापड़िया हैं जो 'दिगम्बर जैन' पत्रके सम्पादक 'जैन मित्र' के प्रकाशक व 'जैनविजय' प्रेसके स्वामी हैं–नवापुरामें १ जैन पाठशाला व १ फुलकौर जैन कन्याशाला है। धर्मशाला चंदावाड़ी

है, जहां परदेशी यात्री ठहरते हैं। नवापुरामें फुलवाडी नामक दशा हुंबडोंकी वाडी भी है।

ऊपर दि० जैनियोंकी कुछ स्थितिका जो वर्णन किया गया है उससे पाठकोंको मालूम होगा कि सुरत नगरमें दि० जैन समाजका बहुत बड़ा प्रभाव था।

वर्तमानमें इस सुरत शहरकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरमें कतारगाम, पूर्वमें रेलवेकी सड़क, दक्षिणमें ऊमनाके मजूरोंकी जमीन तथा पश्चिममें ताप्ती नदी है।

वर्तमानमें सुरतकी स्थिति।

पौने दो मील लम्बा सुरत शहर बसा है। यहां रेशम कीनखाब और जरीका काम अच्छा होता है। लकड़ी, चंदन व हाथीदांतपर सुन्दर कढ़ावका काम होता है। गुलामबाबा मिल, पीपल्स मिल और स्वदेशी मिल सुत और कपड़े बनानेकी है। देशी कागज़ बनानेकी जमूं मिया कागजीकी मिल है। इसके सिवाय कई कातनेके जीन व बांधनेके प्रेस चावलकी मिलें व बरफ व सोडावाटर बनानेके कारखाने हैं। मीनाकारी व जवाहरातका जड़ावकाम भी अच्छा होता है।

सुरतमें प्रसिद्ध मुहल्ले इस भांति हैं—

१—बेगमपुरा, बादशाह औरंगजेबकी बहन सुरतमें रही थी उसके नामसे बसा हुआ है इसमें नवाबी महल, स्वदेशी मिल देखने योग्य है।

२—सलाबतपुरा, सिलाबतखांने बसाया यहां ईलदाव मुहम्मदी बाग है।

३—नवापुरा—यहां झांपाबाजार कापड़ बाजार, दि० जैन मंदिर, सेठ माणिकचंदकी पुत्रीके नामसे फुलकौर कन्याशाला व दि० जैन पाटशाला है। दि० जैनियोंकी वस्ती ज्यादा है। यहां गोकुल अष्टमीका मेला होता है।

४—इंद्रपुरा—इंद्र नामके अनावला ब्राह्मणने बसाया।

५—रुस्तमपुरा—अंग्रेजोंके दलाल रुस्तमजीने बसाया। यहां रुस्तम बाग, कबीरका मंदिर व मारकट है।

६—सगरामपुरा—सिवराम नामके अनावेल ब्राह्मणने बसाया। यहां नवसारी बाज़ार, व रोकड़िया हनुमान मशहूर है। तथा उसीका मेला भरता है।

७—सामपुरा—सामजी नामके अनावेल ब्राह्मणने बसाया।

८—रुद्रपुरा—रुद्र नामके अनावेल ब्राह्मणने बसाया।

९—रहमतपुरा—रहमतखांने बसाया।

१०—खंडेरावपुरा—इसको खंडेराव मराठाने बसाया। यहां गणपती चौथका मेला भरता है।

११—नानपुरा—यहांपर बलंदों (पुर्तगालों)ने कोठी की थी। प्रसीद्ध स्थान—जहांगीर बंदर या वलंदा बन्दर, प्रिन्सेस बाग, कोर्ट, जेल, सार्वजनिक हाईस्कूल।

१२—घास्तीपुरा—सुरतके गयासुद्दीन नवाबके नामसे प्रसिद्ध है। यहां आरमीनियन कबरिस्थान है।

१३—सैय्यदपुरा—सैय्यद एद्रुसके नामसे।

१४—रामपुरा—रामभाई नामके ब्राह्मणने बसाया। यहां अर्देसर

कोटवालका बंगला, अनाथबालाश्रम, अशक्ताश्रम, प्रसिद्ध स्थान है।

१५–रुघनाथपुरा–रुघनाथ ब्राह्मणने बसाया।

१६–हरिपुरा–हरि ब्राह्मणने बसाया। यहां प्रेमचंद रायचंद श्वे० जैन कन्याशाला, भवानी बड़, चारखानाका चकला मशहूर है।

१७–महीधरपुरा–महीधर ब्राह्मणने बसाया।

१८–हैदरपुरा–हैदरखांने बसाया।

१९–मंचरपुरा–मंचेरजी पार्सीने बसाया। यहां दिल्ली दरवाजा है।

२० कनपीठ–यहां पहले अनाजका मोटा बाजार था। अब भी अनेक दूकाने ऊंच कौमकी हैं। यहां यूनियन हाईस्कूल, बेंक व लीमड़ा चौक मशहूर जगह हैं।

२१–रहिया सोनीका फलिया (केलापीठ)–रहिया सुनारके नामसे मशहूर है। ऊंच कौम रहते हैं। यहां रामजी, बालाजी, अंबाजी आदिके हिंदू मंदिर प्रसिद्ध हैं।

२२–वाड़ी फलिया–यहां संस्कृत पाठशाला है।

२३–संघाड़ियावाड़–यहां गुलाबदास भाईदास कन्याशाला है।

२४–गोपीपुरा–प्रसिद्ध गोपीने बसाया। यहां श्वे० जैनियोंकी बहुत बस्ती है। यहां मगनभाई प्रतापचंद फ्री लाईब्रेरी, प्रेमचंद रायचंद धर्मशाला, श्वे० जैन मंदिरों व गोविंदजीका मंदिर प्रसिद्ध हैं। दि० जैन मंदिरजी भी है।

२५–खपाटिया चकला–यहां दि० जैनियोंकी बस्ती भी है। सेठ माणिकचंदजीके घरानेकी चंदावाड़ी दि० जैन धर्मशाला, २ दि० जैन मंदिर, रायचंद दीपचंद कन्याशाला, वनिताविश्राम

है। 'जैनविजय' प्रेस तथा "दि० जैन", 'जैन मित्र' पत्रोंका दफ्तर है।

२६—केलापीठ—यहां कापड़ बाजार, व मोटा मंदिर है।

२७—भागातलाव—यहां स्त्री छोकड़ोंको अस्पताल, पारेख हुन्नरशाला, फिरंगीका कबरिस्तान है।

२८—बड़ेखांका चकला—यहाँ काजीकी मसजिद व मीनारा तथा पशु दवाखाना है।

२९—आसुरबेगका चकला—यहाँ जूना दर्बार, मारकेट व जैन पाठशाला है।

३०—चौक बाज़ार—यहां मोटी अस्पताल, विक्टोरिया बाग, सुवा-वड़खाना, बम्बई बैंक, किला, गवर्नमेंट हाईस्कूल, श्वे० जैन नगिनचंद हॉल, होपपुल, बकसीका दरिया महल प्रसिद्ध है। शनिवारका हाटका मेला भरता है।

३१—मुल्लांचकला—यहां फ्रेज़रका दरियामहल, म्यूनिसिपल हॉल, अंग्रेजी कोठी, मिशन हाईस्कूल, चिंतामणि व पाताली हरमानके मंदिर, पारसी ऑर्फनेज, मिरज़ास्वामीकी मसीद, चुड़गरकी मीनारें प्रसिद्ध हैं।

३२—माछलीपीठ—यहां डाक्टर बहरामजीका धर्मादा दवाखाना है।

३३—रानीतलाव—गोपीकी स्त्री द्वारा एक तालाव बनाया गया था उससे यह नाम पड़ा है।

शहरमें म्यूनिसिपलटीकी २९ शालाएँ हैं जिनमें ४ गुजराती कन्याशाला, १ उर्दू कन्याशाला, दो अस्यंज शाला, छः उर्दू शाला, १६ बालकोंकी गुजराती शाला हैं। इसके सिवाय तीन जैनियोंकी, दो पारसियोंकी व ४ मिशनकी कन्याशालाएं हैं। गुजराती पाठशाला

३ मिशनकी, ३ पारसियोंकी, १ जैनोंकी है। ४ फ्री रात्रिशालाएं हैं। एक संस्कृत शाला, १ पारख हुन्नरशाला तथा ५-६ बोहरोंके मदरसे हैं। अंग्रेजी हाईस्कूल ४ हैं, मिडलस्कूल ३ हैं, पार्सी लड़कियोंकी एक इंग्रेजी स्कूल व मिशन जनानास्कूल व १ फ्री अंग्रेजी रात्रिशाला है।

यहां फ्री लायब्रेरी ११ व १२ हैं जिसमें जैनियोंकी मगनभाई प्रतापचंद जैन लायब्रेरी है। एंड्रुस लायब्रेरी सबसे बड़ी है।

वर्तमानमें सूरत शहर साधारण व्यापारका स्थान है।

पाठकोंको मालूम होना चाहिये कि यही वह नगर है जहां इस पुस्तकके चरित्रनायक **सेठ माणिकचन्द्रजीने** जन्म धारण किया था। जिस मुहल्लेमें उक्त सेठका जन्म हुआ था उसको अब **खपाटिया चकला** कहते हैं। जिस **साधारण** मकानमें उस शरीरने माताके उदरसे अवतार लिया था वह मकान चंदावाड़ी धर्मशालाके पास जैन मंदिरके बगलमें एक मंजलका **छोटासा** घर है जिसका अब भी दर्शन होता है।

पाठकोंके ज्ञानके लिये हम **उसका चित्र** यहांपर दिये देते हैं जिससे मालूम होगा कि जिस आत्माने अपने जीवनमें महा-परोपकार व अपनी कीर्ति विस्तारी वह पुरुष एक बहुत ही साधारण स्थितिवाले घरमें जन्मे थे। जो अपनी निम्न दशासे ऊपरको चढ़ता है वही पुरुषार्थ और पुण्यात्मा मनुष्य है। जिसने जन्म लेकर अपने वंशकी उन्नति की उसीका जीना सफल है। जो योंही पैदा होकर जीता है वह मरेके समान है। कहा भी है—

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्॥

अध्याय तीसरा।

उच्चकुलमें जन्म ।

हुंबड जातिका वर्णन ।

जैनियोंमें एक प्रसिद्ध जाति **हुंबड़ है** जिसका मूल निवासस्थान बागड़ या मेवाड़ प्रान्त है वहांसे ही इस जातिके लोग निकलकर अर अन्यस्थानोंमें फले हैं। हुंबड़ जातिमें अधिकतर दिगम्बराम्नायके माननेवाले व कुछ श्वेताम्बराम्नायी भी हैं। इस जातिकी स्थापनाका क्या इतिहास है उसका कोई प्रामाणिक पता नहीं चलता है। तौ भी इस सम्बन्धमें भाई जवाहरलाल गुमानजी वैद्य परतापगढ़ राज्यने जो छानवीन करके पता लगाया है व हमें एक निबन्ध दिया है, उसके आधारपर यह प्रकाशित किया जाता है कि यह जैनियोंकी ८४ जातियोंमेंसे ९९ वीं जाति है। इसको स्थापित करनेवाले विनयसेन आचार्यके शिष्य **कुमारसेन** हुए हैं। इन्होंने सम्वत् ८०० के अनुमान बागड़ देशमें इस जातिको स्थापित किया है। इसके प्रमाणमें गुमानजीने वि० सं० ९०९ में श्रीदेवसेनाचार्य रचित प्राकृत **दर्शनसार**की गाथाएँ दी हैं जो निम्न प्रकार हैं:—

गाथा—सिरिवीरसेणसीसो जिणसेणो सयलसच्छविण्णाणी ।
सिरिपउमणंदिपच्छा चउसंगसमुद्धरणधीरो ॥ ३० ॥

भावार्थ—श्रीवीरसेनके शिष्य श्रीजिनसेन सकल शास्त्रोंके ज्ञाता और श्रीपद्मनंदिके पीछे चारों संघोंकी रक्षामें धीर हुए ॥३०॥

गाथा-तस्सय सीसो गुणवं, गुणभद्दो दिव्वणाण परिपुण्णो ।
पक्खोववास मंडिय महातवो भावलिंगो य ॥ ३१ ॥

भावार्थ-उनके शिष्य गुणवान श्रीगुणभद्रजी हुए जो दिव्य ज्ञानसे परिपूर्ण, पक्षोपवासके कर्ता, महातपी और भावलिंगी थे ॥३१॥

गाथा-तेण पुणोवि य मुच्चं णेऊण मुणिस्स विणयसेणस्स ।
सिद्धंतं घोसित्ता सयं गयं सग्गलोयस्स ॥ ३२ ॥

भावार्थ-इन्होंने श्री विनयसेन मुनिको सिद्धांत शास्त्रोंका उपदेशदिया । आप स्वर्गलोक गए ।

गाथा-आसी कुमारसेणो णंदियडे विणयसेण दिक्खयओ ।
सण्णास भंजणेण यं अगहिय पुण दिक्खओ जाओ ॥३३॥

भावार्थ-विनयसेनका शिष्य कुमारसेन नदीयड़ ग्राममें हुआ उसने सन्यास या समाधिमरणको भंग किया फिरसे दीक्षा दी सो ग्रहण न की ॥ ३३ ॥

गाथा-परिवज्जऊण पिच्छं चमरं घेऊण मोहकलिदेण ।
उम्मग्गं संकलियं बागड विसएसु सव्वेसु ॥३४॥

भावार्थ-उसने मोरकी पीछी छोड़कर चमरीकी पीछी ग्रहण की तथा मोहके वशमें होकर सर्व ही बागड़ देशमें प्राचीन मार्गसे रहित उन्मार्गकी प्रवृत्ति की ।

गाथा-इच्छीणं पुण दिक्खा खुल्लय लोयस्स वीर चीरयत्तं ।
कक्कसकेसग्गहणं छट्ठं च गुणव्वदं णाम ॥ ३५ ॥

भावार्थ-स्त्रीको पुनः दीक्षा, क्षुल्लकोंको वीरचर्या, चमरीके कर्कस केशोंका ग्रहण बताया व छठे गुणस्थानका विपरीत स्वरूप कहा ॥ ३५ ॥

गाथा-आयम सच्छ पुराणं पायच्छित्तं च अण्णहा किंपि ।
विरइत्ता मिच्छत्तं पविट्ठियं मूढ लोएसु ॥ ३६ ॥

भावार्थ-आगम शास्त्र पुराण व प्रायश्चित्तको और प्रकार कहा । इस तरह मूढ़ लोगोंमें मिथ्या प्रवृत्ति चलाई ॥ ३६ ॥

गाथा-सो सवण संघवज्झो कुमारसेणो हु समयमिच्छत्तो ।
चत्तोवसमो रूधो कट्ठो संघं परूवेदि ॥ ३७ ॥

भावार्थ-सो मुनि संघसे बाहर कुमारसेनने आगममें मिथ्यात व उपशमभावरहित रौद्र होकर काष्ठासंघकी प्रवृत्ति की ॥३७॥

गाथा—सत्तसए तेवण्णे विक्कमरायस्स मरण पत्तस्स ।
णंदियडे वरगामे कट्ठो संघो मुणेयव्वे ॥ ३८ ॥

भावार्थ-विक्रमराजाकी मृत्युके ७५३ वर्ष बाद नंदीतट ग्राममें काष्ठसंघ हुआ ऐसा जानना चाहिये ।

बागड़ देशमें काष्ठसंघकी प्रवृत्ति अधिक है और बागड़की तीन जातियां अर्थात् नागदा, नरसिंहपुरा और हुंबड़ काष्ठसंघके नामसे बोली जाती हैं। हुंबड़ोंमें जो मूलसंघी हैं वे बहुत थोड़े हैं। बागड़ देशमें नंदीतट कोई ग्राम अब नहीं है परन्तु मालूम होता है कि नंदिपड़का अपभ्रंश नागहृद हुआ और वह कालान्तरमें नागदा हुआ। ८४ जातियोंके सिलसिलेमें ५४ वीं जाति नागद्रह (नागदा) है । जो लोग नंदीतटके निवासी थे वह नागदा जाति हुई तथा इसी मेवाड़ वागड़में **नरसिंहपुर पट्टन** है वहांके निवासी **नरसींहपुरा** जाति कहलाई । शेष जो लोग **कुमारसेनके** शिष्य हुए वे **हुमड़** कहलाए। कालांतरमें कोई मूलसंघको मानने लगे। काष्ठासंघकी उत्पत्ति लोहाचार्यजीसे भी कही जाती है। ऐसा

मालूम होता है कि अग्रोहेके अग्रवालोंको जैनी करते हुए जो संघ स्थापित किया वह उनके समयमें काष्ठासंघ कहलाया। इधर बागड़ मेवाड़देशमें कुमारसेनने मूलसंघसे कुछ अनमिलती प्रवृत्ति चलाई इससे यह भी काष्ठासंघ कहलाया।

श्वेताम्बरी लोगोंमें 'हुवल वार्णकस्य आसीसो' नामकी एक पुस्तक है उसमें हूमडोंकी उत्पत्तिमें यह लेख है कि—माड़वगढ़ देश मालवामें एक भट्टारक विजयसेनसूरि थे उन्होंने अपने शिष्य धनेश्वरसूरिको अपनी वृद्धावस्था जान आचार्यपद दिया। एक दिन धनेश्वरसुरि सभाको व्याख्यान दे रहे थे, तब उनके गुरु आए। कथा-रसमें लीन होनेके कारण गुरूको आया न जान किसीने विनय न की जिससे विजयसेनका चित्त खेदित हुआ सो एक दिन धनेश्वरको बाहर रवाना कर दिया। धनेश्वरसुरी सिद्धपुर पाटन पहुंचे वहां चमत्कार दिखा कर भूपतिसिंह आदि १८००० क्षत्रियोंको सेत्रुंजामें ले जाकर संवत ८२० में श्रावक बनाये और उस जातिकी नाम हुंबल रक्खा इस अहंकारसे कि मैंने अपने उपदेशसे जैनी किया। यह नाम बिगडकर हूमड हो गया। यह यथन इस कारण ठीक नहीं जचता है कि विजयसेन नाम श्वेताम्बर आचार्यका न होकर दिगम्बर आचार्यका होना चाहिये क्योंकि सेनगण दिगम्बरियोंमें है। यह विजयसेन नहीं किन्तु विनयसेन हैं, जिनके शिष्य कुमारसेनने हूमड़ ज्ञाति स्थापित की।

सं० ८२० व ७८२ करीब २ मिलते हुए हैं। धनेश्वरसुरि बिड़ालसेनके शिष्य नहीं हुए किन्तु यह वल्लभीपुरमें हुए, वहाँ शिलादित्य राजाकी प्रेरणासे सेत्रुंजय माहात्म्य रचा है तथा इनका

काल भी भिन्न २ है। इस हूमड जातिका मुख्य स्थान बागड देशमें होनेसे तथा वहाँ उस जातिके अधिक दिगम्बराम्नायी प्राप्त होनेसे यह बात अधिकतर ध्यानमें जमती है कि कुमारसेनने हूमड़ ज्ञातिकी स्थापना की हो। हूमड़ जातिकी स्थापनाके सम्बन्धमें इतना ही लिखकर यह कहना पड़ता है कि यह जाति भी बहुत उच्च और प्रवीण हुई है। इस हूमड़ जातिके अंदर २० गोत्र कहे जाते हैं परन्तु १८ के नाम प्रचलित हैं वह इस प्रकार हैं—

हूमडके १८ गोत्र।

१ खेरजु	७ भद्रेश्वर	१३ सोमेश्वर
२ कमलेश्वर	८ गंगेश्वर	१४ राजीवानो
३ काकडेश्वर	९ विश्वेश्वर	१५ ललितेश्वर
४ उत्तरेश्वर	१० संखेश्वर	१६ कासवेश्वर
५ मंत्रेश्वर	११ आंबेश्वर	१७ बुद्धेश्वर
६ भीमेश्वर	१२ चाचनेश्वर	१८ संघेश्वर

ये नाम कैसे प्रसिद्ध हुए इसका हमारे पास कोई इतिहास नहीं है।

हूमड़ जातिमें दो भेद पाए जाते हैं-एक बीसा हूमड, दूसरे दसा हूमड। ये दो भिन्न भेद कैसे हुए इसका भी कोई विश्वास योग्य इतिहास नहीं मिलता है। परंतु यह दोनोंही भेदके लोग बहुत अधिक संख्यामें मिलते हैं, कहीं २ बीसोंसे दसा हूमड बहुत ज्यादा हैं। तथा दोनोंही भेदके लोगोंके बनवाए हुए व प्रतिष्ठा कराए हुए जिन मंदिर पाए जाते हैं व दोनोंही समान भावसे श्रीजिन प्रतिबिम्बोंकी प्रछाल व पूजन करते हैं। इस सम्बन्धमें एक दूसरेसे कोई

घृणा नहीं है। इन दोनों भेदोंमें खानपान भी सर्व तरहसे होता है। फर्क केवल परस्पर लग्न न होनेका है।

बड़ौधामें वाड़ी मुहल्लेके दिगम्बर जैन मंदिरके प्रतिबिम्बोंसे पता लगता है कि संवत १६०४में काष्ठासंघी भट्टारक विद्याभूषणके उपदेशसे हुंबड़ ज्ञातीय अनंतमतीने श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी प्रतिष्ठा कराई। लेख यह है—

"सं० १६०४ वर्षे वैशाख वदी ११ शुक्रे काष्ठासंघे नंदीतट गच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये भ० श्री विशालकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री विश्वसेन तत्पट्टे भ० श्री विद्याभूषणेन प्रतिष्ठितं—हूंबड ज्ञातीय गृहीत दीक्षा बाई अनंतमती नित्यं प्रणमति।

दूसरे भी इसी मंदिरकी एक प्रतिमाके लेखसे काष्ठासंघी हूंबड़ ज्ञातिका पता लगता है। लेख यह है:—

"सं० १६८६ वर्षे चैत्र वदी ३ भौमे भ० श्री रत्नभूषण भ० जयकीर्ति हूंबड ज्ञातीय....पार्श्वनाथं प्रणमति"

इस लेखके यह भट्टारक काष्ठासंघी हैं इसके प्रमाणमें एक इसी मंदिरकी दूसरी प्रतिमाका लेख है—

"श्री काष्ठासंघे सं० १६८६...भ०...भूषण भ० जयकीर्ति नरसिंहपुरा ज्ञातीय..."

इस लेखसे नरसिंहपुरा जातिका काष्ठासंघी होना भी सिद्ध होता है।

नरसिंहपुरा जातिके काष्ठासंघी होनेके प्रमाणमें इसी मंदिरकी एक और प्रतिमाका यह लेख है—

"संवत १६५८ मा० सु० ५ दि० श्री काष्ठासंघे भ० श्री विश्वभूषण गुरूपदेशात् नरसिंहपुरा ज्ञातीय भाव्ण होका गोत्रे सा सिंहदे भा० ब्रह्मयोजिता...."

परतावगढके हूमड़ ।

हूमड ज्ञातिका मुख्य केन्द्रस्थान परतावगढ़ राज्य है, उसमें इस ज्ञातिके बहुत प्रतिष्ठित विद्वान आदि हो गए हैं व अब भी कई उच्च राज्य कर्म्मचारी हैं । परतावगढ़ शहरसे ८ मील देवगढ़ एक पुरानी वस्ती है। इसको बीकाजी महाराजने सं० १६१० में बसाया था । कई पीढ़ियोंतक यह बड़ाभारी नगर रहा था जिसका प्रमाण यह है कि यहाँ अमृतसागर, केसरविलास, परतापवावड़ी आदि कई मनोहर वापिकाएं हैं व पुराने मकान है । यहाँ दिगम्बर जैनियोंका एक बड़ा आलीशान मंदिर है जिसकी प्रतिष्ठा सं० १७७४ में हुई थी उस समय हूमड़ोंके यहां ८०० घर थे। इस मंदिरके मूलनायक श्री मल्लिनाथ स्वामी है । मंदिरके प्रतिष्ठाकारक वर्षावत रिषभदासके पुत्र वर्द्धमानजी हूमड़ हुए है । यहाँ एक शिलालेख है उससे पता लगता हैं कि मूलसंघी भट्टारक रत्नचंद्रके उपदेशसे हूमड़ ज्ञातीय मंत्रेश्वर गोत्रधारी संघवी वर्षावतके पुत्र वर्द्धमान आदिकोंने प्रतिष्ठा कराई । हमारे चरित्रनायकका जन्म जिस मंत्रेश्वर गोत्रमें हुआ है उसीमें यह वर्षावतजी भी थे।

सारांश नकल लेख ।

"ॐ. स्वस्ति.. विक्रमादित्य समयातीत सं० १७७४ वर्षे शाके १६३९ प्रवर्तमाने माह सुदी १३ रवि श्री देवगढ़ नगरे महाराजाधिराज महारावत श्री पृथवीसिंहजी विजयी राज्ये कुंवरे श्री पहाड़सिंघ विराजमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे श्री कुंद० भ० श्रीरत्नचंद्र त० भ० श्री हर्षचंद त० भ० श्रीशुभचंद्र त० भ० श्री अमरचंद्र त० भ० श्री रत्नचंद्र गुरूपदेशात् श्रीमत् हूंबड ज्ञातीय मंत्रीश्वर गोत्रे

संघवी वर्षावत भार्या नानी रुक्मणी तयोः पुत्र सं० वर्द्धमान. भ्राता उदैभाण शाह इंदर खेमजीसा चंद्रभानजी गोविंदजी वल्लभजी, श्री मल्लिनाथप्रासाद प्रतिष्ठा महामहोत्सवैः सह करावित ।

वर्द्धमानजीके वंशमें किशनजी अबसे २९ वर्ष पहले हो गए हैं उनके दो महल अब भी यहाँ मौजूद हैं एकमें राज्यका डॉक्टर रहता है।

इस बड़े मंदिरजीमें एक वेदी श्री आदिनाथ स्वामीकी है इसकी प्रतिष्ठा हूंबड ज्ञातीय अगस्त्य गोत्रे पाड़लिया धारी शाहजी रघुनाथजीने सं० १८३८में कराई थी उस समय यहाँ सामंतसिंहजीका राज्य था। इनके बंशमें शाह हीरालाल जागीरदार अब भी मौजूद हैं । इसी बड़े मंदिरजीमें एक सहस्रकूट चैत्यालय है जिसकी प्रतिष्ठा पाड़लिया गोत्र धारी फौजके कामदार रायोजी वख्सीने कराई थी । इनके वंशमें अब रामलाल फूलचंद बम्बईमें एक धनिक व प्रतिष्ठित व्यापारी है । देवगढ़में हूमड़ जैनियोंका इतना जोर था कि राज्यकी ओरसे यह आज्ञा हो गई थी "कि दिगम्बरियोंके १० दिन दशलाक्षणी व श्वेताम्बरियोंके ८ दिन पर्यूसन व सालमें २४ चौदस, २४ आठम व वर्षके पहले दीतवारके दीन कोई पशुघात न करे, न मदिरा बेची जाय ।" इस भावार्थका शिला लेख सं० १७७४ वैसाख सुदी १३ का श्रीपृथ्वीसिंहजी महाराजका देवगढ़के खास चौक बाजारमें अब भी लगा हुआ है ।

अब यहाँ दिगम्बर हूमडोंके केवल ९ घर रह गए हैं क्योंकि अब इसकी बसती उजाड़ है । एक ग्रामके समान है । मनुष्य संख्या २० है । मुखिया भाई कानजी कून्पा, मगनलाल गांधी, गेबीलाल दोसी और वर्द्धमान खापरा है ।

परताबगढ़ शहरमें ८९०० कुल बस्ती है। जिसमें १५०० जैनी हैं इनमें १००० दिग०, ३०० श्वे०, और २०० स्थानकवासी हैं। इन दिगम्बरियोंमें थोडेसे नरसिंहपुरा जातिके हैं जिनका १ जुदा मंदिर है शेष सर्व हूमड़ हैं। इनके ३ मंदिर बड़े २ आलीशान और सुन्दर हैं। पाड़लिया गोत्रधारी संवत् १७०० के अनुमान जीवराजजी कामदार बड़े प्रसिद्ध हुए उनके बाद क्रमसे बर्दुवानजी, सूरजी, लानजी, कपूरजी, शिवजी, नवलचंदजी, जोधकरणजी प्रधान पदधारी हुए, उनके पुत्र कानजी परताबगढ़ राज्यकी ओरसे जोधपुरमें वकील हैं। जोधकरणजीके बड़े भाई जोधराजजी भी प्रधान हुए, उनके पोते एक मुन्नालाल है जो वर्तमान महाराज कुंवरके प्राइवेट सेक्रेटरी हैं। दूसरे पन्नालालजी है जो मंगरा जिलेमें हाकिम रह चुके हैं।

इसी गोत्रमें सखारामजी प्रधान हुए हैं इनकी सन्तान शाहजी चम्पालाल हैं जो जातिमें मुखिया व कौंसिलमें काम करते हैं। इसी गोत्रमें लालजी प्रधान हुए हैं उनके वंशमें शाहजी रत्नलाल अब मौजूद हैं यह गोम्मटसार समयसार आदि जैन शास्त्रोंके अच्छे मरमी हैं।

हूमड़ ज्ञातिकी तलाटी अड़कमें शाह जड़ावचंदजी प्रधान हुए हैं इन्हींके वंशमें पंडित किशनलाल एक अच्छे जैन विद्वान थे जो हालहीमें स्वर्ग पधारे हैं। बंडी अड़कमें शाहजी शंकरलालजी प्रधान होगए हैं जिनके वंशमें पन्नालालजी आदि राज्यमें हेडक्लर्क हैं।

श्री गिरनारजी तीर्थमें दिगम्बर जैनियोंके प्रभावको विस्तारनेवाले बंड़ी कस्तूरचंदजी हूमड़ यहीं हो गए हैं। यह धनाढ्य, धर्मात्मा व शास्त्रोंके ज्ञाता भी थे। धर्मसे अत्यन्त प्रेम करते थे। प्रसिद्ध

जैन विद्वान भागचंदजीकी संगति व वैय्यावृत्तिसे आपको बहुत लाभ होता था। इनके वंशमें बंडी मन्नालाल और हीरालाल विद्यमान है।

सं० १९१२ में सेठ लालजी बंडीके खानदानके लोग सेठ कस्तूरचंदजी हीरालालजी आदिने गिरनार तीर्थके मंदिरोंका जीर्णोद्धार कराया तथा एक नवीन मंदिरकी स्थापनाकर उसकी प्रतिष्ठा सं० १९१९ में कराई।

इस समय परताबगढ़में चीपावाला, रतनलालजी जुवा और साह कस्तूरचंदजी तलाटी हूमडोंमें मुखिया हैं।

हूमड़ जातिके लोक बागड़से निकलकर कुछ मालवामें व कुछ बम्बई, शोलापुर और गुजरातमें आकर बसे हैं।

शोलापुरके हूमड़ोंने ऐश्वर्यमें विशेष उन्नति की है। वहाँके

शोलापुरमें हूमड़ोंका प्रभाव।

प्रसिद्ध सेठ हरीभाई देवकरणने श्री मांगी-तुंगी, सम्मेद शिखर, पालीताना आदि तीर्थों पर मंदिर जीर्णोद्धार व धर्मशाला आदिमें बहुत द्रव्य खर्च किया है तथा प्रत्येक धर्म-कार्यमें दानार्थ अग्रगामी रहते हैं। इनके वंशके सेठ वालचंद, हीराचंद और फूलचंद तीनों भाई उदारचित्त हैं। इसी तरह सेठ रावजी नानचंद, सेठ हीराचंद अमीचंद, सेठ सखाराम व हीराचंद नेमचंद, सेठ नाथा रंगजी गांधी है। इन्होंने भी श्री गजपंथा, तारंगा, गिरनार, पावागढ़ आदि तीर्थों पर श्री जिन मंदिर निर्माण आदिमें बहुत द्रव्य खर्च किया है। सेठ हीराचंद नेमचंद विद्वान और शास्त्रके मरमी तथा जैन जातिके उत्थानमें मुख्य भाग लेनेवाले हैं। सेठ नाथा रंगजी विद्यादान व शास्त्र प्रचारमें अति प्रेमी हैं। आपके वंशके सेठ

गंगाराम, रामचंद्रजी आदिने शोलापुरमें एक दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्थापित किया है। सर्व हूमड़ोंकी ओरसे शोलापुरमें चतुर्विध दानशाला अनुमान ४००००) के व्याजसे व ५००००) के व्याजसे ऐलक पन्नालाल दि० जैन पाठशाला है। श्राविकाशाला भी है जिसकी सम्हाल श्रीमती कंकुबाई सुपुत्री सेठ हीराचंद नेमचंद करती है आपको धार्मिक ग्रंथोंका अच्छा मर्म है ।

शोलापुरके सेठोंने सन् १८९५ तक कहाँ२ प्रतिष्ठा कराई उसका वर्णन ।

सिद्धक्षेत्र	साल	प्रतिष्ठा करानेवालोंके नाम
१ सम्मेदशिखर	१९३८	पदमसी निहालचंद तथा नानचंद खेमचंद
२ चंपापुरी	१९३३	मोतीचंद प्रेमचंद तथा जोतीचंद नेमचंद।
३ पावापुरी	१९५०	रामचंद सांकला ।
४ गिरनार	१९२६	खेमचंद उगरचंद, पदमसी निहालचंद तथा नेमचंद निहालचंद ।
५ पालीताना	१९५१	हरीभाई देवकरण तथा मोतीचंद परमचंद।
६ मांगीतुंगी	१९१६	पानाचंद जोतीचंद तथा हरीभाई देवकरण।
७ गजपंथ	१९४४	वस्ता खुशाल ।
८ तारंगा	१९२३	हरिचंद, मोतीचंद, अभेचंद, जोतीचंद परमचंद ।
९ कुंथलगिरि	१९४७	हरिभाई देवकरण, पदमसी निहालचंद ।
१० सिद्धवरकूट	१९५१	मलुकचंद गणेश ।
११ पावागढ़	१९४३	गौतमचंद नेमचंद ।

फलटनमें हूमड़ोंकी महिमा ।

फलटनके हूमड़ोंमें सेठ हीराचंद अमुलक एक वैरागी धर्मज्ञाता, श्रद्धालु महात्मा हो गए हैं जिनके रचे हुए भजनोंका बहुत प्रचार है। इसी फलटनके निवासी हूमड़ जातिमें उत्पन्न बाल ब्रह्मचारी बाबा दुलीचंदजी हैं जिनकी अब १०० वर्षकी आयु है जिन्होंने आजन्म जिनवाणीकी सेवा की है। जैपुरके तेरापंथी बड़े मंदिरमें एक बहुत बड़ा दर्शनीय सरस्वती भंडार एकत्र किया है बहुतसे ग्रंथोंकी विद्वानोंसे भाषा कराई है व अपने हाथसे नकल की है। आप दिनभर अब भी शास्त्रोंको व किसी रचनाको लिखा ही करते हैं। बहुतसे मंदिरोंकी प्रतिष्ठा कराई हैं। आप मंत्रशास्त्रके भी मरमी हैं। गुजरातमें हूमड़ोंका अधिक जोर ईडर तथा सुरतमें है। बागड़में बांसवाडाके रायबहादुर सेठ चंपालाल विजयचंदजी प्रसिद्ध, राज्यमान्य और धनाढ्य हैं।

बागड देशमें हूमड़।

बागड़ देशवाले हूमड़ें भी बहुत प्रसिद्ध हो गए हैं। श्री धुलेव केशरियाजीमें प्राय: बहुतसी दि० जैन प्रतिमाओंके प्रतिष्ठाकारक ये लोग हुए हैं। श्री ऋषभदेवके बड़े मंदिरजीके चारों ओर एक बड़ा भारी ऊंचा कंगूनेदार कोट है उसको सागवाड़ा निवासी हूमड़ ज्ञातीय कमलेश्वर गोत्रीय दि० जैनी सेठ धनजी करणजीने संवत १८६३में बनवाया है ऐसा वहाँपरके शिला लेखसे प्रगट है (देखो नकल शिला लेख दि० जैन डाइरेक्टरी छपी सन् १९१४ सफा ४७३)।

बागड़ देशके एक दूसरे कमलेश्वर गोत्रीय हूमड़ द्वारा संवत

१७३४की प्रतिष्ठित प्रतिमा श्री सेत्रुंजय पालीतानाके उस दिगंबर जैन छोटे मंदिरमें है जो पहाडपर है व जिसको अब श्वेताम्बरियोंने अपने कबजेमें कर लिया है उसके शिला लेखकी नकल यह है–

" सं० १७३४ वर्षे मूलसंघे सरस्वति गच्छे बलात्कार गणे श्री कुंदकुंदाचार्याम्नाये भट्टारक सकलकीर्ति तत्पट्टे श्री पद्मनन्दी · तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री क्षेमकीर्ति शुद्धाम्नाये वागडदेश शीतलवाडा नगरे हूमड ज्ञातीय लघशीरवाया कमलेश्वर–गोत्रे दोशी श्री सुरदास तथा सूरमद तयोः पुत्र दोसी सांगीता सरताण देतयोः पुत्रीः................." (दि० जैन डाइ० सफा ८००)

यह भट्टारक ईडर गादीके मालूम होते हैं। ईडर गादीके भट्टारकोंकी नामावली द्वितीय अध्यायमें दी हैं उसके अनुसार पद्मनंदीसे क्षेमकीर्ति तक तीनों नाम मिलते हैं। सकलकीर्तिके पीछे रामकीर्ति तक नाम इस लेखमें नहीं हैं। केशरियाजी या ऋषभदेवजीका जो मंदिर धुलेव ज़िला उदयपुरमें है उसमें बड़े मंदिरके चारों ओर जो दालानोंमें वेदियाँ हैं उनमें दिगम्बर जैन मूर्तियां भट्टारकों द्वारा प्रतिष्ठित हैं–इनके कुछ संवत व भट्टारकके नाम इस भांति हैं—

सं०	प्रतिष्ठाकारक भट्टारक	सं०	प्रतिष्ठाकारक भट्टारक
१७४६	क्षेमकीर्ति	१७३४	यशकीर्ति
१७७२	देवेन्द्रकीर्ति	१७६४	त्रिभुवनकीर्ति
१७९२	सुरेन्द्रकीर्ति		

१७९४–सुरेन्द्रकीर्ति–यह प्रतिमा श्री ऋषभदेवकी श्याम वर्ण है। इस पर जो लेख है उससे प्रगट है कि धुलेवके सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक द्वारा हूमड ज्ञातीय सेठ कानजीकी भार्य्याने प्रतिष्ठा कराई।

१७४६–श्री शांतिनाथ स्वामीकी–इसमें जो लेख है उसमें

मूलसंघ सरस्वती गच्छ सकलकिर्ति, देवेन्द्रकीर्ति, पट्टे श्री....कीर्तिद्वारा सुरतवासी हूमड ज्ञातीय विमलदास माणकजी नेमिदास आदिने प्रतिष्ठा कराई ।

इससे भी सुरतके हूमड़ोंकी धनाढ्यता व धर्मज्ञता झलकती है।

१७६४ सुमतिकीर्ति

१७६८—श्री वासुपूज्यस्वामीकी—इसकी प्रतिष्ठा भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति द्वारा महुआ वासी हूमड जातीय साह दादा नानजीने कराई ।

गुजरात देशके श्री तारंगाजी सिद्धक्षेत्रपर एक चांद सूरजकी देहली है उसके भीतर जो शिला लेख है उससे विदित होता है कि उसे दिगम्बर जैन हूमड़ ज्ञातीय गांधी नरपति आदिने बनवाया था। जीर्णोद्धार कराया था । उस लेखकी नकल जो पढ़ी गई और जैनमित्र ता० २१ नव० १९०७ में छपी है सो यह हैं:—

" संवत १६२५ वर्षे पौष वदी ५ शुक्रे श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे आचार्य्य कुन्दकुन्दाचार्य भट्टारक श्री शुभचंद्रस्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुमतिकीर्ति गुरूपदेशात्....हूमड ज्ञातीय गांधी नरपति भार्या....

हूमड़ोंकी वस्ती ।

हूमड़ोंकी वस्ती अर्थात् मनुष्यसंख्या दिगम्बर जैन डाइरेक्टरी छपी सन् १९१४के अनुसार (देखो सफा १४२०) इस भांति है ।

	बंगाल विहार	मध्य प्रदेश	राजपूताना और मालवा	गुजरात और बम्बई आहाता	कुल
वीसा हूमड	×	×	८४१	१७०९	२,५५५
दसा हूमड	३	४९	१०६३९	७३९२	१८०७९

कुल २०६३४

बीसा हूमड़ोंकी विगत ।

राजपूताना व माल्वामें ८४१ नीचे भांति है (देखो डाइरेक्टरी सफा १३६१)—

ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
उज्जैन	७	झालरापाटन	९०	भींडर	९
उदयपुर	११०	डुंगरपुर	४६	मंदसौर	३
कुरावड़	१२	धरियाबाद	१४	रतलाम	३३
खानपुर	६	धार	४	सलुंबर	४०
खेमरा	६५	भुलेव	४६	सागवाड़ा	२०
गलियाकोट	१२	परताबगढ़	२४८	सेलाना	७
जावद	३२	मानपुर	२२	कुल	८४६

गुजरात व बम्बईके आहातेमें १७०९ की विगत ।

(देखो सफा १३७९–१३८०)

ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
आसु	७	कुंभारगांव	७	घोडेगांव	५
इन्दापुर	२	कुरबानी	१३	चिंचोली	१३
ईडर	५०	कुरवली	४०	जिंती	१४
उमरड़	२	केडगांव	६	टेंमुरणी	४
अंतुर्णे	६०	कोराले	११	तिखंडी	१२
कडियादरा	५०	खटाव	१८	दहीगांव	५४
करमाला	६४	खंडाळी	८	देवरगणूर	१३
कलंब	१६	घाडग्याचीवाड़ी	१	नातेपुते	१११

ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
नांदल	६	बिबी	४	लोणन्द	१५
नान्नज	२६	बुध	१	वाखरी	२२
निगडी	४	मोरगांव	२९	वाघोली	७
पलसमंडल	१३	मांबुर्डी	१६	विडणी	१०
पाडली	१	भड	४	विहाल	११
पिंपलाचीवाडी	५	मोडयांची वाडी	७	विजापुर	३२
पिंपोडे	१	म्हसवड	१००	वीट	११
पिरलें	९	मगराचें लिंबगांव	२	वेलापुर	२४
पुरन्दावडे	२१	महीमानगढ	३९	शिरसणें	६
पुना	१०	मांडवे	१८	शोलापुर	९
पंढरपुर	६	मांढ	२५	सांगवी	६
फडतरी	१	मालखांची	७	सिद्धेश्वर करोली	४०
फल्टण	१७५	मेडद	१८	सिपुरे	३
फोंडशिरस	२८	लउल	१०	हातुरने	११
बंबई	१५०	लवंग	१३	हिंगणगांव	७
बारामती	१०	लासुर्णे	४०		
बिधवन	१३	लिम्बझागर	६	मीजान	१७०९

नोट—सूरतमें वीसा हूमडकी ५० की संख्या है यह डाइरैक्टरीमें लिखनेका छूट गया है ।

विगत दसा हूमड़।

बंगालआहाता—सम्मेदशिखरमें २ (सफा १२७२ ।

मध्यप्रदेश । सफा १२२२

बुरहानपुर ३३, मूर्तिजापुर ७, सावरगांव ९—मीजान ४९

राजपुताना मालवा (सफा १३५९)

ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
आंजनो	१६०	खोडन	२९	जुहाबा	१२
आणोद	२७९	गढ़ा	९०	जेठाना	८
आंतरी	३५	गढ़ी	१९०	झाडोल	२०
आरोन	४९	गनोडा	४९	झाबुआ	३२
उदयपुर	४०	गलियाकोट	२००	ठाकरणा	४९
ओगना	८०	गांठोल	९००	डडूका	१९९
ओवरी	१०१	गामडा	३	डुंगरपुर	१९०
कचनार	८	गावडी	१०९	ढालवाडा	६
कनेजरा	१९०	गुवाडी	१९	तलवाडा	३००
कुआं	९०	गोरना	४०	तेजपुर	७
कुलयारी	२२	गंगाधार	१	थांदला	८०
कुवाला	१६	घाटागांव	२०	थोबावाणा	१९
कुशलगढ़	४२५	घाटोल	३४०	दडूका	१५०
कोकापुर	२५	चीतरी	६०	दीवड़ा	१२
कोठडा	२३	छानी	२००	देवगढ़	२०
कोठरी	१०२	जवास	३०	देवल	१६
खमरा	१४०	जाडोल	७	धरियाबाद	२७०
खाकड	७८	जाबद	११	धुलेव (रुखबदेव)	४
खूंटा	३६	जावरा	५	नरवारी	१८६

ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
नवागांव	१५०	बावलवाडा	८०	मोर	८
नादवेल	२५	बांसवाडा	७०	रतलाम	९
नेनोर	१९	बीसाबेडा	३६	राणापुर	९०
नोगाम	२००	बीसीवाडा	७०	रियावन	१४
प्रतापगढ़	१११९	बोरी	१००	रीवा	१६
पचलासाखुर्द	१५	भाउगढ़	५८	रोयड़ा	३
परतापुर	३५०	भानदा	४०	सनावदा	३५
परासिया	९५	भोलूडा	२००	समेजा	२०
पाड़वा	२०	भूदर	७०	सलुंमर	१२५
पाड़सोला	२८७	मंदसौर	१०४	सलोदा	५५
पाडा	१६	मनासा	२२	सागवाड़ा	४५०
पारोदा	१५०	माडोब	४२	सालिमगढ़	२८
पीठ	७५	मावता	६०	सावला	२६९
बजवानी	८	मुगाना	९६	सिंगोली	३
बड़ोदिया	१५०	मुंबई	७	सिंघाना	१०
बदराणा	२२	मेतवाला	३०	सिडोदिया	६०
बरखा	१०	मेलखेडा	५०	हनुजाउ	१२
बागीदौरा	४००	मोगड़ा	५०		
बावनगजाजी (सिद्धक्षेत्र)	१	मोटा पचलासा	१९	मीजान	१०६३९

दसा हूमड बम्बई आहाता ।

(सफा १३७६–७७–७८–७९)

ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
अम्मोड़ा	१२	उपाले	४	कुरोली	३
अमनगर	१२५	उमदी	११	कुसुंबा	११७
अक्कलकोट	६८	खोरान	२००	केम	२३
आकलूज	८	कण्हेरगांव	२	कोथले	१
आगरखेड	३१	करकम्ब	३४	कोरफल	१
आगोती	७	करजगी	२१	कोराले	४
आनगर	१०	करमाले	२९	कोरगांव	१३
आप	१३	करियाली	६	कोल्हापुर	५
आलंद	११६	करोल	७०	कोलेगांव	१
आष्टी	५३	कलमन	१२	खनीपुर	३०
आष्टे	३	कलस	७	खरडा	७१
आसु	९	कलंब	१०	खरेगांव	१५
इन्डी	९७	कव्हे	१४	खांडज	१६
इडर	१५०	किणी	८	खुंटे	१०
इन्दापुर	९	कुकेरी	२९	खेरोल	५
उज्जनी	४	कुंथलगीरी	६	खोटाना मुवाड़ा	३०
उजेड़िया	१३५	कुमारगांव	९	खंडाली	१३
उफ्लाई (धाकटी)	१४	कुमारी	३	गढोडा	२०
,, (थोरली)	४	कुर्दुवाड़ी	३०	गणेगांव	१६
उफलवाटे	१४	कुरूल	१२	गारोले	८०

ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
गिर्वी	२८	जेऊर	२	दारपाल	२४
गुंनोटी	२५	जेजले	३	दालवडी	४
गुणवडे	१६	जेह्लर	१२	दाहोद	५००
गुलंचे	८	टेंमुर्णी	८	दूधनी	३०
गुलबर्गा	४५	ठोंग्याची उपलाई	१२	देराले	२६
गोखली	१९	डोणजे	१२	देलवाड	२५
घोत्रा	४०	डोरलानी	५७	धमनार	४
घोटी	९	तडवेल	५	धाराशिव	३६
चड्चण	१९	तडरगांव	६४	धारीमणा	४०
चिक्रमण्णूर	१	तलदंगे	२	धूलिया	१०
चितरोड़ा	३०	तलोद	२५	न्हावी	२
चुंभली	२	तांदुलवाड़ी	२	ननानपुर	६५
चोपडे	१००	तांत्रे	६	नरखेड़	१
छाला	४०	तारापुर	१३	नखणे	८
जबलगी	१५	तुलशी	१	नरोने	८
जबले (सोलापुर)	५०	तेभाई	१६	नलदुर्ग	८
जबले (निजामुद्दीन)	६	दगड़	५	नागणपुर	९
जबले (अष्टी)	३६	देहीगांव	४१	नागणसुर	९
जबल्गी	१७	दहीगांव	३	नातेपुते	७
जांबुली	२५	दहीटन	११	नांदगांव	१
जिगुर्डी	२	दहीवड़ी	११	नाजग	१२
जिंती	३	दहेल	५	निंबगाम	८४

ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
निंबरगी	२६	पिंपोडे	६	भालेक	७०
निंबल्गा	२०	पुलन	१३	भावनगर	५०
निर्गुडी	२	पूना	२	भूम	१६
नेकाडा	४०	पेणूर	१७	भुथार	४
नेरी	२	पंढरपुर	८२	भोंसे	५
नंदुर	३	फलटण	२४८	भंडाद कवठे	१८
प्रांतिज	४५	बडोली	२०	म्हसवड	१९
पणदरे	३९	बंबई	२५०	म्हेसगांव	६
परिले	२१	बलसंग	३४	मउ	६०
परड़ा	३०	बाकरोल	१००	मगरूळ	३०
पलसदेव	३३	बार्सीटाउन	३६	मरोडे	६
पांग्री	३	बारामती	७७	मलवडी	२०
पापरी	९	बालोसणा	१०	मसले	४
पारोला	१२५	बावडे	२२	महूद	२०
पालदी	३	बावी	१०	मांडल	३५
पालिम	२५	बिबि	४	मांडवी	१९
पिंगली	४०	बुध	१३	मालेगांव	१०
पिठेवाड़ी	१	बेवले	१८	मुरुम	२३
पिंपरज	६	बोराले	२०	मैंदरगी	५१
पिंपरे	१	बोरी	१७	मोडनिंब	५३
पींपलनेर	३४	भडगांव	७	मोहाडी	१७
पिंपलनेर	३	भांडगांव	१३	मोहोळ	५०

ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
मंगलवेढ	१५	वडगांव	३१	शिरसणे	२
मंद्रुप	६	वडगांव (खरडे)	७	शिरसाले	६८
मुधोल	२	वडगांव (मंद्रुप)	३	शिरसाव	१५
येवती	७	वडाले	३२	शिराल	११
रखीयाल	३०	वडासण	३९	शेटफल	८
रणमोडवाडी	४	वडूज	१९	शेटफल	२४
रणासण	४०	वदराड	२०	शेन्दरी	४०
राजाके	४	वरखेडा	३१	शेन्दूरणी	३५
रांदेल	१३	रवड	९	शेरीचीवाडी	९
रानकुवा	१०	वाखरी	९	शेलगांव	४
रोंपाले	३	वागदरी	१८	सोलापुर	३००
लउल	४९	वाघोली	१०	सदानामुवाड़ा	३०
लच्छन	९	वागर	८	सरडे	६
लाकरोड़ा	६९	वांदखेला	४	सांडावी	२२
लाखेवाडी	७	वालवड	२	सांगवी	४
लासुर्णे	४	वालून	६	सादडवेल	९
लिंबगांव	२८	विडणी	२९	सापडे	१२
लिंबलक	२३	बिजपुर	३	सामोड़े	३
लिंबुरे	७	विनापुर	१०	सायरा	९
लंगेर	११	वेळापुर	६	सासकल	३
लोणंद	४	सिंदेवाडी	४	सीतवाड़	२५
		शिरबल	१२		

ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
सुरखडी	९	सोनासण	११९	हिराली	६
सेलगांव	१४	सोनगांव	१	हिवले	१४
सोनगांव	४	हरीश्वरपीपलगांव	१६	होल	४
सोनगिर	१२१	हातकलंगडा	१३		
सोनारी	५२	हांतूर	७	मीज़ान	७३९२

नोट—सूरतमें दशा हूमडकी संख्या १५० की है। यह भी डिरैक्टरीमें लिखना छूट गया है।

शेठ माणेकचन्दजीका वंश-परिचय

उदयपुरसे २८ मीलपर एक **भींडर** नामका छोटासा देशी राज्य है। जिसकी अब वार्षिक उपज अनुमान रुपया २ लाखकी है। यद्यपि अब इसमें २००० घरोंकी वस्ती है परंतु १०० वा १५० वर्ष पहले इसमें ७ या ८००० घरोंकी वस्ती थी जिनमें चौथाई वस्ती जैनियोंकी थी। अब भी वहाँ जैनियोंके ४०० घर हैं, दिगम्बर जैन मंदिर तीन जब श्वेतांम्बरी मंदिर १ है। किसी समयमें यहाँ दिगम्बर जैन हूमडोंके बहुतसे घर थे परंतु व्यापारादिके निमित्त परदेश जानेके कारण अब यहाँ केवल १० घर ही देखनेमें आते हैं।

हम जिस समयकी बात कहते हैं, उस समय भींडर नगर बहुत रमणीक था। जैनियोंकी प्रबलताके कारण वह एक अहिंसामई राज्य था। कहीं पर पशु वधका नाम भी नहीं सुन पड़ता था। मांसका किसीको दर्शन नहीं होता था। मद्य पीना तो दूर रहा

उसका कोई नाम भी नहीं लेता था। लोग सत्यवादी व नीति परायण थे। अपने पुण्य कर्मके उदयसे जो उपार्जन करते थे उसमें संतोष पाते हुए तृप्त थे। तौ भी निरुद्यमी नहीं थे। जिन मंदिरोंमें नरनारी धर्ममें लौलीन, विनयको प्रदर्शित करनेवाले तथा अर्हंत, साधु और शास्त्रभक्तिमें तन्मय थे। श्री जिनेन्द्रके बिम्बका नित्य अभिषेक करके जलचन्दनादि अष्ट द्रव्यसे बहुत ही विनय और सार गर्भित अर्थ सूचक छन्दोंको पढ़ते हुए पूजन होता हुआ दिखलाई पड़ता था। पूजनमें ऐसे लीन हो जाते हुए नरनारी मालूम पड़ते थे कि उनको और किसी बातकी मानो खबर ही नहीं है। पूजनके पीछे शास्त्र सभामें सर्व ही स्त्री पुरुष विनय सहित बैठकर परोपकारी धर्मात्मा शास्त्रमरभी वक्ताके द्वारा जिनवाणीको सुनकर अपना हृदय पवित्र करते थे। शास्त्रके पीछे मंदिरजीके बाहर पात्र भक्तिके निमित्त धर्मात्मा श्रावकोंको अपना घर पवित्र करनेके लिये आमंत्रण देते थे। और भक्ति पूर्वक जघन्य व मध्यम पात्रों-को दान करके आल्हाद भावसे परम पुण्य बांधते थे। कभी २ नग-रमें कोई मुनि महाराज व ऐलक, क्षुल्लक भी आ जाते थे उस समय श्रावक जन भोजनके समय द्वारापेक्षण करके प्रतिग्रहण करते थे। आहार एकके यहाँ होता था पर आनन्द सब मानते थे।

शास्त्रस्वाध्यायमें व सामायिक या जापमें दत्तचित्त श्रावक व श्राविकाएं दीख पड़ती थीं। शामको मंदिरजीमें अनेक जन ध्यानमें लीन दिखलाई देते थे। यद्यपि यह कोई व्यापारी मंडी नहीं थी तौ भी लोग जब धर्म कार्य व खानपानसे निबट कर बाजारमें जाते थे तो वहां एक मन हो न्यायपूर्वक लेन देन करते थे। शामको

घंटा दो घंटे पहलेसे ही लोग घर पर आकर संध्याका भोजन कर लेते थे जिससे रात्रिको भोजन न करना पड़े ।

और व्यापारोंके साथ वहाँ अफीमका व्यापार भी होता था । जबसे चीन देशमें अफीमका ज्यादा व्यवहार होने लगा तबसे भारतको अफीम पैदा करके चीनको भेजना पड़ा । उस समय चीनको बहुत अफीम जाती थी । भींडरमें भी अफीमकी खेती होती थी और व्यापारी लोग अफीम एकत्र कर बाहर भेजा करते थे ।

विक्रम सं० १८४०के अनुमान बीसा हूमड़ ज्ञातिमें **मंत्रेश्वर गोत्रधारी** एक साधारण व्यापारी गृहस्थ भींडरमें निवास करते थे जिनका नाम **शाह गुमानजी लालजी** था । यह साधारण श्रावकके धार्मिक कृत्योंमें सावधान, शरीरके दृढ़, उद्योगी और विचारशील थे ।

भींडरमें इनके सिवाय और भी कई बड़े २ अफीमके व्यापारी थे । शाह गुमानजी उनकी मंडलीमें जब जाके बैठते थे तब अफीमके व्यापारकी बहुतसी बातें सुनते थे ।

भींडरसे सूरत आनेका कारण।

हिन्दुस्तानके प्राय: हर विभागसे अफीम आकर सूरतके बाज़ारोंमें जमा होता था । और वहाँसे जहाज़ोंके द्वारा चीन देशको जाया करता था । इससे गुमानजीके कानमें सूरत नगरके व्यापार व वहाँकी सुन्दरताकी भनक हरसमय पड़कर उनको यह लोभ दिलाती थी कि सूरतमें स्वयं जाकर अफीमका काम करना चाहिये । यहाँ पड़े २ साधारण उपज होती है जिससे पूरा गृहस्थीका खर्च भी नहीं चलता है । वास्तवमें जो उद्योगी होते हैं वे द्रव्योपार्जनके योग्य मार्गोंको सदा ही ढूंढ़ा करते हैं । और वे

कृत मनोरथ भी होते हैं। पुरुषार्थी मनुष्य यदि पुण्यके मंद उदयसे धनशाली न भी होवे तौभी अपने खर्चेके लायक धन अवश्य पैदा कर लेता है। वह कर्ज़ लेना बड़ा भारी फन्दा समझता है। आलसी मनुष्य सदा दुःखी रहता है। वह उद्योग करनेके बदलेमें बहुत दुःख व अन्यायसे अपना खर्च चलाकर अपने शरीरकी भी रक्षा करनेमें असमर्थ होता है। यदि उसके आश्रय कुटुम्ब हो तब तो बहुत ही कष्टमें आप भी रहता है और परिवारको भी रखता है।

साह गुमानजी पुरुषार्थी थे। इनका मन दिनपर दिन सूरत देखनेको ललचाने लगा। इन्होंने यह भी सुना था कि आजकल बहुतसे इंग्रेज़ लोग सूरतमें आकर खूब व्यापार कर रहे हैं तथा उन्होंने अपनी सत्ता ऐसी जमाई है कि सूरतके किलेपर अंग्रेज़ोंका झंडा गड़ गया है तथा नाम मात्र मुगलोंका भी है। तथा नवाब अच्चन जो सूरतके नवाब थे वे बिलकुल इंग्रेजोंके हाथकी कठ पुतली होकर रहे और उनके पीछे जो नवाब हफीजुद्दीन हैं वे भी उन्हींके हाथमें हैं। गुमानजी जिन्दे दिलके मनुष्य थे। वारवारकी रगड़से जैसे पत्थर घिस जाता है, वारवार पाठ करनेसे जैसे विद्यार्थीको पाठ पक्का हो जाता है, वार वार जाप करनेसे जैसे भाव निर्मल हो जाते हैं, ऐसे ही पुनः पुनः सूरत नगरकी चर्चाने गुमानजीके दिलको सूरत जानेके लिये पक्का ही कर दिया। एक दिन आप श्री जिन मंदिरजीसे आकर रात्रिको बैठे २ विचारने लगे कि यहाँसे सूरतकी यात्रा हम अकेले करें कि कुटुम्बके साथ करें। मनमें यही भाव आया कि परदेशमें अकेले जानेसे अपनी अर्धाङ्गिणीके साथ जानेमें बहुत आराम है। क्योंकि भोजनादिकी चिंतासे छुड़ाकर घरहीके समान सर्व

प्रकार आराम देनेवाली स्त्री है । पत्नी सहित पति जंगलमें भी हो तब भी वहाँ बरसाही आराम है और यदि पत्नी रहित पति व पति रहित पत्नी किसी ऊँचे बड़े भारी रत्न जड़ित महलमें भी रहते हों तो एक दूसरेके चित्तको साता नहीं । वास्तवमें पत्नी और पतिके युगलको ही गृहस्थ कहते हैं और यह एक दूसरेके सहायक हैं । पतिका काम बाहर घूमकर द्रव्य लाना है, पत्नीका काम आमदनीके भीतर घरका प्रबन्ध करना, सुन्दर स्वादिष्ट शरीरको लाभकारी भोजन तयार करना, वस्त्रादिको संवारना, घरके खर्चेका हिसाब रखना, घरकी सफाई रखना, बच्चोंको पालकर प्रवीण करना, पतिको अपने मधुर मुखके हास्यमई व मिष्ट वाणीसे जैसे चंद्रमा कुमुदनीको प्रफुल्लित करे ऐसे रंजायमान करना, पतिके गृही धर्मके आचरणके पालनमें सहायता देना, व समय पाकर शिल्पादि द्वारा कारीगरीकी चीजें बनाना, तथा कभी काम पड़े और घरका खर्च अधिक हो तो उनको विकवाकर घरका काम चलाना आदि है। सच्ची पत्नी पतिके जीवनको आदर्श रूप बनानेमें पूर्ण सहकारी होती है।

गुमानजीकी स्त्री पतिव्रता थी–पतिसे अतिशय प्रेम करती थी–उनके मुखसे उनके मनकी बात समझकर उनके कहनेके पहले ही सर्व काम तय्यार कर देती थी, धर्ममें भी सहायक थी, रसोई भी शुद्ध बनाती थी, कुदेवोंकी भी भक्त न थी। ऐसी स्त्रीके प्रसंगको गुमानजी क्षणभर छोड़ना नहीं चाहते थे। यद्यपि गुमानजीके चित्तमें एकदफे यह बात आई कि यहाँसे चौगुणा खर्च सूरत नगरमें है । कदाचित वहाँ हम आमदनी ज्यादा न कर सके तब हम तो चने फाककर ही काट लेंगे परन्तु स्त्री होनेसे बड़ा भारी खर्च करना पड़ेगा तौभी आपने विचारा कि हमारी स्त्री बड़ी ही संतोषप्रिया

है। यदि हम सूखा खाएँगे तो उसे भी कोई इनकार न होगा। ठहरनेको मकान तो हमें रखना ही पड़ेगा इससे हर तरह साथ ले जाना ही अच्छा है। तीसरे साहजीने यह भी विचार किया कि हमें बैल गाड़ी करके ही जाना है। हम दोनों एक गाड़ी कर लेंगे और धीरे २ रास्तेमें भगवानके मंदिरोंके दर्शन करते हुए सूरत पहुंच जायंगे।

ऐसा दृढ़ संकल्पकर विक्रम संवत १८४० अर्थात् ई० सन् १७८३में गुमानजी सपत्नी सूरत नगरको प्रस्थान कर गए। अपने रहनेका मकान अपना ही था उसे अपने कुटुम्बियोंके सुपुर्द कर दिया। अब भी यह मकान भींडरमें मोजूद है और गुमानजीके ही कुटुम्बीजन उसमें वास करते हैं।

सेठ माणेकचन्दके पितामहका सूरत आना।

थोड़े दिनोंमें आप सूरतमें आ पहुंचे और वहांके श्री चंद्रप्रभुके बड़े जिनमंदिरजीमें जो अब चंदावाड़ीधर्मशालाके पास है दर्शन करनेके लिये गए। भींडरमें गुमानजी एक छोटेसे अफीमके व्यापारी थे। इनकी सीधी आढ़त सूरतके किसी व्यापारीसे नहीं थी। आप दर्शन करनेके बाद जाप देकर स्वाध्याय करने लगे। पासमें और भी श्रावक शास्त्र पढ़ रहे थे। उन्होंने इनको मेवाड़ देशका निवासी तथा धर्मात्मा और चतुर जान पूछा कि आपका कहाँ निवास है और कैसे आना हुआ? गुमानजीने अपना सब हाल सरल मनसे कह दिया। वे श्रावक आजकलकेसे रूखे मनके न थे, परंतु वात्सल्य गुणके धारी थे। इनको एक श्रावक बड़े आदरसे अपने घर ले गए और हर प्रकारसे खातिर की। गुमानजी अपने साथ अफीम भी लाए थे सो इनके सुपुर्द की। यह भी अफीमके

व्यापारी थे। भींडरकी ताजी अफीमको देखकर गुमानजीसे भाव चुकाकर सबकी सब खरीद ली। गुमानजीको इस सौदेमें दुगनेसे ज्यादा लाभ हुआ।

उसी मंदिरजीके निकट एक छोटासा एक एकमंजला मकान खाली पड़ा था। उसीको भाड़े लेकर गुमानजी सपत्नी रहने लगे और बाज़ारमें अफीमका व्यापार करने लगे। अब यह भींडरसे स्वयं अफीम मंगाते थे और अच्छे भावोंसे बाज़ारमें बेचते थे।

अब ये दोनों बड़े सुखसे रहने लगे। भींडरमें जो खचकी तंगी रहती थी वह भी मिट गई। यह अपने निकटके कुटुम्बियोंको भी खर्चके लिये भींडर रुपया भेजने लगे और कुछ दान पुण्य भी करने लगे। पूर्वोपार्जित पुण्यका इतना तीव्र उदय नहीं था जिससे लक्षपति आदि तो नहीं हुए पर वर्षमें कुछ दान पुण्य करनेके सिवाय दोसौ चारसौ रुपये बचा भी लेते थे।

साह गुमानजीको पुत्रोंका लाभ।

गुमानजीके दिन सूरतमें अपनी पतिव्रता स्त्रीके साथ बड़े ही आनन्दसे बीतने लगे। सूरतमें इनको बहुत दिन रहनेके पीछे हीराचंद और बखतचंद दो पुत्ररत्नोंका लाभ हुआ जिनमें हीराचंद बड़े और बखतचंद छोटे थे।

साह गुमानजी बड़े विचारशील थे और ब्रह्मचर्यका बहुत खयाल रखते थे। और उनका लग्न भी प्रौढ़ अवस्थामें हुआ था, बाल्यावस्थामें नहीं। यद्यपि भींडरमें बालविवाहका रिवाज भी था पर वह धनाढ्योंमें था। गुमानजी एक साधारण गृहस्थ थे इससे

इनका विवाह युवावस्थामें हुआ था और उसीके एक दो वर्ष बाद ही यह भींडरसे सूरत आकर रहने लगे थे।

गुमानजीने सूरतमें जिस घरका आश्रय लिया था उसको छोड़ा नहीं। आपने और कोई घर भी नहीं बनवाया। उसी घरको उसके मालिकसे खरीद लिया और उसीमें आनन्दपूर्वक अपना जीवन विताया।

साह गुमानजीका अपने पुत्रोंके सम्बन्धमें यह विचार था कि यह धर्मके श्रद्धावान हों और अभिषेक पूजन जप व स्वाध्यायमें सावधान हों, कामके योग्य हिसाब किताब व लिखना पढ़ना कर सकें और व्यापारमें कुशल हो जावें, अतएव घरके पास श्री बड़े जिन मंदिरजीमें जो पंडित रहते थे उनके पास स्तुति, दर्शन, भक्तामर आदि पढ़वाते थे और दिनमें देशी पाठशालामें साधारण प्राथमिक शिक्षा लेने भेजते थे। जिस समयकी यह बात है उस समय प्रायः बालकोंको पढ़ानेका ऐसा ही कायदा था। धर्मका ज्ञान परोपकारार्थ देनेवाले कोई न कोई धर्मात्मा जिन मंदिरमें अवश्य तय्यार रहते थे। बहुतसे मंदिरोंमें पंडित या ब्रह्मचारी रहते थे जिनका पठन पाठन ही मुख्य काम होता था। हीराचंद बुद्धिके तीव्र, उत्साही और सुआ-चरण व आज्ञापालनमें दक्ष थे जब कि वखतचंदकी बुद्धि मंद थी।

थोड़े ही दिनोंमें जब हीराचंद हिसाब किताबमें पक्के हो गए तब गुमानजी इनको अपने साथ व्यापार सिखानेके लिये बाज़ारमें ले जाने लगे। वास्तवमें व्यापार भी विना सिखाये व विना उसमें बुद्धि प्रवेश किये नहीं आता है। प्रायः मारवाड़ी लोग व्यापारमें कुशल इसी कारण होते हैं कि उनके पिता उन्हें छोटी उमरसे ही

व्यापार करनेकी रीतियां बताते रहते हैं, जो उनके मगज़में जम जाती हैं। यद्यपि उनमें यह दोष अवश्य होता है कि वे और ऊंची शिक्षा अपने पुत्रोंको देते ही नहीं। व्यापारी शिक्षाके साथ साथ उनको दिनमें २ व ३ घंटे अच्छे शिक्षक द्वारा साहित्य, नीति व धर्मकी शिक्षा अवश्य दिलानी चाहिये। जहाँ तक देखा गया है जो बालक अपने १० व १५ वर्ष स्कूलकी संगतिमें विताते हुए विश्व विद्यालयकी परीक्षाओंमें उत्तीर्ण होनेके झंझटमें लगजाते हैं वे फिर अपने मनको देशी व्यापारकी ओर नहीं झुका सक्ते। फिर व्यापारकी ओर झुकना उनके लिये कठिन हो जाता है यद्यपि असंभव नहीं है।

हीराचंदजीका स्वभाव

हीराचंदका चित्त व्यापारमें लग गया और यह भी पिताकी भांति अफीमका व्यापार करने लगे। थोड़े दिनों बाद बखतचंद भी पिताके साथ व्यापार-को जाने लगे पर इनका मन जैसे पढ़नेमें कम लगता था वैसे व्यापारमें भी न लगा। इनको बाजारकी मिठाई खाने व मेले तमाशे देखनेका अधिक शौक था जब कि हीराचंद अपने पिताकी भांति शुरूसे ही विवेक बुद्धि थे। माता जो घरमें शुद्ध भोजन व मिठाई पकवान बनाती थी उसीको लेकर संतोषी रहते थे। मेले ठेलेका भी शौक न था। सवेरे शाम साधारण धर्म ध्यानमें चित्त लगाकर आनन्दित रहते थे।

गुमानजीको इस बातका अवश्य विश्वास था कि बाल्यावस्थामें विवाह करना बहुत हानिकारक होता है। जब तक पक्कवीर्य्य न हो तब तक विवाहका ख्याल भी पुत्रके दिलमें नहीं आना चाहिये

और उसे वीर्य रक्षा और ब्रह्मचर्यका पूरा २ ध्यान रहना चाहिये। इसी कारण गुमानजी समय २ पर अपने पुत्रोंको समझाते रहते थे कि वीर्य रक्षाके बहुत बड़े लाभ हैं। युवावस्था तक इसको भले प्रकार स्थंभन करना चाहिये, किसी भी तरह इसको खराब नहीं करना चाहिये। बहुतसे पिता अपने पुत्रोंको लज्जाके भयसे ब्रह्मचर्य्य-की रक्षाके उपायोंकी शिक्षा नहीं देते हैं इस कारण वे कुसंगतिमें पड़कर और हानि लाभसे अजान रहकर अपने ब्रह्मचर्य्यको बिगाड़ कर अपने मन और शरीरको निर्बल कर बैठते हैं और फिर उन्हींको बड़े होनेपर अपने पूर्व कृत्योंका पछतावा करना पड़ता है।

प्रौढ़ अवस्थामें विवाह।

जब हीराचंद २० वर्षसे ऊपर अवस्थाके होगए तब गुमानजी-ने इनकी लग्न सुरत निवासी एक बीसा हूमड़ गृहस्थकी कन्यासे कर दी। इसका नाम विजलीबाई था। यह कन्या १२ वर्षकी थी और यद्यपि लिखना पढ़ना नहीं जानती थी तो भी घरके काम-काजमें बड़ी चतुर, सरलचित्त, सौम्यमूर्ति, दयावती और जिनध-र्ममें श्रद्धालु थी। ऐसी स्त्री-रत्नको पाकर हीराचंद चित्तमें बहुत ही प्रसन्न हुए और दोनों अति प्रेमके साथ गृहीधर्म सेवने लगे।

गुमानजी और उनकी पत्नीका मरण

सेठ गुमानजीकी स्त्री एक दिन कुछ बीमार होगई। सेठजी और उनके पुत्रोंने बहुत औषधि की परन्तु आयु-कर्म शेष होनेका समय आजाने पर कोई उपचार कारगर नहीं हुआ। यद्यपि वह रोगग्रस्त थी पर होशसे नहीं चूकी थी। अपने दिलमें अर्हंत सिद्ध जपा करती थी और उसके पति व पुत्र

भी उसको धर्मकी बातें सुनाते रहते थे। निदान णमोकार मंत्र सुनते २ उसके प्राण पखेरू शरीरको त्यागकर अन्य गतिमें चलदिये।

सेठ गुमानजी और उनके पुत्रोंको खासकर हीराचन्दजीको इस वियोगसे बहुत कष्ट हुआ। गुमानजीका जैसा प्रेम अपनी अर्धांगिणी से था उसीके प्रमाणमें उतना ही उन्हें वियोगका दुःख भी हुआ। वास्तवमें इस संसारके पदार्थ सर्व क्षणिक अवस्था वाले हैं। जो किसी अवस्थाके होते हुए हर्ष करेगा उसेही उस अवस्थाको बिगड़ जाते देखकर कष्ट व शोक होगा। जो ज्ञानी व निर्मोही साधुजन होते हैं वे किसीसे मोह नहीं करते अतएव उनको सांसारिक हर्ष और विषाद नहीं होता। यद्यपि गुमानजी शास्त्रके जाननेवाले थे पर विशेष वैराग्यवान न थे। इनको अपनी पत्नीके वियोगका ऐसा दुःख हुआ कि यह भी थोड़े ही दिनोंमें कुछ अस्वस्थ हो गए। और बहुत बीमारी न पाते हुए एक दिन बहुत स्वस्थतासे णमोकार मंत्र जपते हुए तथा श्री अरहंत की प्रतिमाका ध्यान करते हुए शरीरको त्यागकर स्वर्ग पधारे।

मातापिताके वियोग का दुःख

विवाहके थोड़े ही दिनोंके पीछे हीराचन्दको अपने माता पिताका वियोग सहना पडा, परन्तु हीराचन्द शास्त्रस्वाध्याय करतेथे इससे अपने मनको समझाकर अपने गृहकर्तव्यमें लग गए। शाह गुमानजी हीराचन्दका विवाह तो कर पाये थे परन्तु वखतचन्दका विवाह नहीं कर सकेथे। साह हीराचन्द बड़े बुद्धिमान थे और अपने छोटे भाईसे बहुत प्रेम रखते थे। कुछ काल पीछे हीराचन्दने वखतचन्दकी लग्न करके अपने कर्त्तव्यको पूरा किया और दोनों

भाई एक ही घरमें सुखसे शांति पूर्वक रहने लगे। यद्यपि हीराचंदको छोटे भाईसे प्रेम था परन्तु बखतचन्दका मन अपने भाईका बाजार व जातिमें आदर देखकर ईर्षाभावसे भर आता था और इस कारण कभी २ स्वतंत्र होनेको मन चाहता था।

साह हीराचंदजीको संतानको लाभ।

साह हीराचंद अपनी पत्नी बिजलीबाईके साथ अति प्रेमसे रहते हुए। सं० १८९३ में एक कन्याका लाभ हुआ जिसका नाम हेमकोर (हेमकुमरी) रक्खा गया। यद्यपि इस युगलको यह इच्छा थी कि पुत्रका लाभ होगा क्योंकि प्रायः सर्वसाधारणको पुत्रीकी अपेक्षा पुत्रकी प्राप्तिका अधिक प्रेम होता है। तौभी शाह हीराचंदको पुत्रीके लाभसे किसी प्रकारकी उदासी नहीं हुई। सर्वसे पहले सन्तानका लाभ होनेपर इनको व सर्व कुटुम्बियोंको बड़ा हर्ष हुआ। इन्होंने यथायोग्य उत्सव मनाया। श्री मंदिरजीमें पूजन कराई व यथायोग्य दान धर्म किया। इस वर्ष सूरत नगरमें इतनी भारी अग्नि लगी कि आधा नगर भस्म होनेके साथ वह अग्नि साह हीराचंदके मुहल्लेमें भी आई। खपाटिये चकलेके बहुतसे घर जल गए। साह हीराचंदका घर भी भस्म हो गया। साह हीराचंदने अपने घर भस्म होनेका दुःख नहीं किया परन्तु बड़ा भारी दुःख जो साह हीराचंद व अन्य श्रावकोंको हुआ वह इस चंदावाड़ीके निकटस्थ बड़े मंदिरमें अग्नि लगनेसे हुआ। श्री मंदिरजीमें अग्निकी लपकोंको जाते हुए देखकर साह हीराचंद, बखतचंदने अपने घरकी चिंता छोड़ तुर्त ही निकटके श्रावकोंको बुलाया और मंदिरके भीतरसे श्री जिन बिम्बोंकी रक्षा की। सर्व

प्रतिमाओंके सुरक्षित होनेपर मंदिरकी भीतें भस्म हो जानेपर भी श्रावकोंने संतोष माना और साह हीराचंदके साहसकी सराहना की, जिसने अग्रगामी होकर अपना खयाल छोड़ इस उपसर्गको निवारण किया। उस दिनसे साहजीने धीरे २ अपना मकान तो ठीक किया ही, पर श्री मंदिरजीके जीर्णोद्धारकी बहुत बड़ी फिक्र की। चार वर्ष पीछे सं० १८९७में बिजलीबाईको दूसरी सन्ततिका लाभ हुआ। इस समय जब बिजलीबाईको गर्भ रहा तब साह हीराचंदके चितमें यह उमंग उठी कि अब तो शायद पुत्रकी प्राप्ति अवश्य होगी। परंतु इस वक्त भी साहजीको १ कन्यारत्नकी प्राप्ति ही हुई। साहजीने इसका नाम मंच्छाकोर (मंछाकुमरी) रक्खा और पूर्वोपार्जित कर्मके उदयसे जो लाभ हुआ उसीमें सन्तोष किया।

बिजलीबाईकी संतान रक्षा।

बिजलीबाई सन्तानकी रक्षा करनेमें बहुत चतुर थी। योग्य खानपान करती थी ताकि उसके दूधमें कोई विकार नहीं हो क्योंकि जो माता ऐसी वैसी चीज़ें खाकर शरीरको विकारी व रोगग्रसित कर लेती है उसके विकारी दूधसे बच्चेके शरीरमें बहुतसे रोग हो जाते हैं। बहुतसे बच्चे तो माताकी गोदमें ही कालके ग्रास हो जाते हैं। बिजलीबाईकी सावधानीसे न हेमकुंमरीके न मंच्छाके कोई भारी रोग हुआ जिससे माता पिताको चिन्ता हो। मंच्छा जब माताका दूध पान करती थी तब हेमकुमरी चार वर्षकी थी। इसका शरीर बहुत सुन्दर व गठा हुआ था। चिहरा गोल था, चंचलनेत्र थे व मुख हंसता हुआ प्रफुल्लित कमलके समान था। जो कोई देखता उसका दिल उमङ्ग आता और इसे गोदमें लेकर प्यार करता था।

सेठजीका जन्मगृह सूरत. (देखो पृष्ठ ९१)

इसकी बोली भी बड़ी ही मीठी थी। माताने इसको न तो कोई अपशब्द सिखाए थे और न मारना पीटना ही सिखाया था जैसे बहुधा करके माता पिता व कुटुम्बीजन छोटे २ बच्चोंको गाली देना व मारना पीटना सिखाते हैं। माता विजलीबाई हेमकुमरीका हाथ पकड़कर जिन मंदिरजीमें ले जाया करती थी और वहाँ पर कायदेसे हाथ जोड़ना व दंडवत करना सिखलाती थी व भगवानके २४ नाम बुलवाती थी। विजलीबाईने हेमकुमरीकी ऐसी अच्छी आदत डलवाई थी कि वह नित्य प्रति समय पर ही भोजन करती थी और रात्रिके पहले ही भोजनसे निश्चिन्त हो जाती थी। रात्रिको भोजन मांगती ही न थी। हां जल व दूध लिया करती थी। सबेरे उठकर 'जयजय चंद्रप्रभुकी जय' ऐसा कहती थी।

विजलीने जैसे हेमकुमरीके पालनेमें परिश्रम किया था वैसी ही मिहनत मंच्छाके भरणपोषणमें की। विजली अपनी कन्याको न कभी मारती थी न गाली देती थी और न कभी क्रोधभरे शब्द कहती व आकृति दिखाती थी। न कभी उसके मनमें यह खयाल आता था कि यह कन्या पर घर जानेवाली है, इसकी अच्छी तरह रक्षा क्यों करें जैसा बहुधा पुत्रमोही माताएँ स्वार्थ वश खयाल किया करती हैं और कन्याओंको सैकडों गालियाँ सुनाकर व मारकूटकर, रुलाकर, पटककर, कोसकर, कुढ़कर अपना जला दिल ठंडा करती हैं और समयपर भोजनपान नहीं खिलाती हैं। बहुधा कन्याएं माता पिताकी बेपर्वाही और अनुत्साहरूप पालनसे शीघ्रही कालका ग्रास हो जाती हैं। सांह हीराचंद दोनों पुत्रियोंकी प्रफुल्लित

मूर्तियोंको देखकर बहुत आनन्दित होते थे और निरन्तर इस बातका उद्योग करते थे कि ये दोनों सुपुत्री बनें, जिससे ये अपने पतिके घरोंको दीप्तमान कर सकें और मेरे यशको उज्वल रक्खें ।

चंद्रप्रभुके मंदिरका जीर्णोद्धार ।

साह हीराचंद व अन्य श्रावकोंने उस बड़े जिनमंदिरजीके, जो भस्म हो गया था जीर्णोद्धार करनेका बहुत ही शीघ्र प्रबन्ध किया, यहां तक कि संवत् १८९८ तक वह मंदिर फिरसे तय्यार हो गया, तब मुहूर्त्त दिखाकर इसकी प्रतिष्ठा करानेकी मिती वैशाख सुदी १२ संवत् १८९९ नियत की गई । देशदेश पत्र भेजकर संघको एकत्रित किया गया । भट्टारकोंकी आम्नायके भाणा पंडितने जो विद्याभूषण भट्टारकके शिष्य थे इस मंदिरकी प्रतिष्ठा विधिके अनुसार की । सूरतमें उस दिन जैन धर्मकी बड़ी प्रभावना हुई । सम्पूर्ण संघके मध्यमें साह हीराचंद अपनी दोनों पुत्रियोंके साथ जिनकी अवस्था क्रमसे ६ और २॥ वर्षकी थी लिये हुए बहुत ही शोभते थे और अन्य सज्जनोंको यह उत्साह होता था कि ये कन्याएं चिरंजीवित रहें तो हम हमारे पुत्रोंसे इनका सम्बन्ध करें । श्रीमंदिरजीकी प्रतिष्ठा होकर सर्व प्रतिमाएँ सविनय विराजमान की गई । भट्टारकोंकी आम्नायमें पद्मावती देवीके मस्तक पर पार्श्वनाथ स्वामीकी छोटी प्रतिबिम्ब हो ऐसी प्रतिमा निर्मापणका रिवाज़ प्रचलित है उसीके अनुसार भाणा पंडितने एक मूर्ति निर्मापण कराय उसकी प्रतिष्ठा की, जिसका लेख दूसरे अध्यायमें दिया गया है । इस समय सूरतमें जितने लोग बाहरसे आए थे उनका भोजनादिसे यथायोग्य सत्कार किया गया ।

इस धर्मके कार्य्यमें यद्यपि साह हीराचंदने पंचायतीके साथ धनकी मदद बहुत नहीं दी थी तौ भी अपनी उदारतासे अपनी शक्तिसे अधिक सहायता की थी, इतना ही नहीं इस कार्य्यके मुख्य प्रबन्धकर्ताओंमें साह हीराचंद भी थे। इनके प्रबन्धमें निर्विघ्नतया और बिना किसी शिकायतके कार्य्यकी पूर्ति देखकर लोग इनकी बुद्धि और धर्मवात्सल्यताकी बहुत सराहना करते थे।

साह हीराचंदजीकी जातिमें अति प्रशंसा होते देखकर बखतचंदका मन अप्रसन्न रहता था। इसके सिवाय बखतचंदकी प्रकृति भी हीराचंदसे नहीं मिलती थी। दूसरे इनकी पत्नी भी अपने पतिको जुदा रहनेकी सम्मति दिया करती

बखतचंदका पृथक् होना।

थी क्योंकि वह दूरदर्शिता और बुद्धिमत्तासे काम लेना नहीं जानती थी। बखतचंदका मन पृथक् होनेको होता भी था पर जब वह बड़े भाईके बर्तावको अपनी ओर देखता था तब उसका मन तुर्त इस विचारको मिटा देता था। पर उसकी स्त्रीके पुनः पुनः प्रेरणा करने पर बखतचंदका चित्त स्थिर हो गया कि हम कल अवश्य २ अपने भाईसे जुदा हो जायगे। संवत् १९०० में या सन् १८४३में कि जब सूरतमें सर्कार इंग्रेज द्वारा बिठाए हुए निमकके महसूलको प्रमाणसे अधिक समझकर प्रजाने हड़ताल की थी साह बखतचंदने एक दिन सवेरे जब साह हीराचंद श्री मंदिरजीसे निबटकर घरमें आए उदास मुख करके अपने मुँहसे शब्द न निकलते हुए भी बड़ी कठिनतासे ज्यों त्यों कर कह डाला कि मेरी इच्छा आजसे अलग ही रहकर भिन्न ही व्यापार करनेकी है। अब तक तो मैं क्यों

त्योंकर एक साथ रहा परंतु अब मुझको साथ रहना नहीं है इससे आप सर्व मालका विभाग कर देवैं।

साह हीराचंदको यह बात वज्रके समान लगी। क्योंकि यह अपने छोटे भाईसे अति प्रेम करते थे और अपनी संतानसे इनकी अधिक खातिर करते थे व किसी प्रकारका कष्ट नहीं होने देते थे। दूसरे हीराचंदजीको अब तक किसी पुत्ररत्नका लाभ भी नहीं हुआ था, अतएव वह अपने भाईही को देखकर हर तरह सन्तोष मानते थे।

हीराचंदजीने बखतचंदसे इस नादानीका कारण पूछा परन्तु कुछ उत्तर न पाकर परस्पर मेलके लाभ और भिन्नताके अलाभ भले प्रकार समझाए, पर जिसकी बुद्धिमें किसी प्रकारका हठ होजाता है वह उसको नहीं छोड़ता। निदान जब बखतचंदकी समझमें कुछ भी नहीं आया तब हीराचंदने लाचार हो पृथक् होनेका प्रबन्ध किया। १९ दिनका समय लेकर सर्व हिसाब तय्यार करके सर्व मालमता रुपया पैसा आधा आधा इस तरह बाँट दिया कि बखतचंद और उसकी स्त्रीको इसमें पूरा २ सन्तोष हुआ। यद्यपि हीराचंदकी कमाई प्राय: उसीके ही परिश्रमकी थी पर हीराचंदने अपना स्वार्थ कुछ न रख धर्म सम्बन्धको मध्यमें डाल कर पूरा २ न्याय कर दिया। बिजलीबाईको भी इसमें किसी तरहकी नाराजी नहीं हुई। यद्यपि पृथक् होनेमें अवश्य उसको दुःख हुआ क्योंकि वह बखत-चंदकी बहूको बहुत चाहती थी और घरके कामकाजमें उससे मदद भी बहुत मिलती थी। पुराना मकान साह हीराचंदके ही अधिकारमें आया। बखतचंद दूसरे मकानमें रहने लगे।

साह हीराचंदको पुत्र लाभकी चिन्ता अवश्य रहा करती थी सो धर्म और न्याय प्रकृतिधारीके पुण्यके उदयसे संवत् १९०३ में प्रथम पुत्ररत्नका लाभ हुआ। साहजी और उनके कुटुम्बियोंने पुत्र लाभका बड़ा ही आनन्द माना।

सेठ मोतीचंदका जन्म।

हीराचंद धनाढ्य नहीं थे, साधारण गृहस्थ थे, इससे इन्होंने किसी प्रकारका नाच तमाशा न करके केवल मंदिरजीमें उत्सव सहित पूजन कराई, कुटुम्बियोंका भोजनसे सत्कार किया और याचकोंको यथाशक्ति दान बाँटा। खूब विचार कर पुत्रका नाम **मोतीचंद** रक्खा। यह पुत्र सुन्दराकार और गोल मोतीके समान मुखवाला था। विजलीबाईके पुत्रपालनके हुनरसे पुत्र धीरे २ बढ़ता गया और किसी प्रकारके रोगमें ग्रसित न हुआ। इस समय हेमकुमरी १० वर्ष व मंछाकुमरी ६ वर्षकी थीं। हेमकुमरीको माताने घरका कामकाज सर्व धीरे २ सिखला दिया था। साधारण स्थितिके कारण हीराचंदके घरमें नौकर चाकर नहीं थे। हेमकुमरी और मंछाकुमरी छोटे बच्चेको खिलानेमें बहुत सहायता देती थीं। उस समय कन्याओंके पढ़ानेका रिवाज़ बहुत ही कम था इससे हीराचंदने अपनी कन्याओंको अक्षरज्ञान करानेका कुछ उपाय नहीं किया। तौभी जहाँ माता धर्मात्मा, प्रवीण और गुणवाली होती है वहाँ उसकी कन्याएं भी यदि माता चाहे तो प्रवीण बना सक्ती है। विजलीबाईके दिलमें सर्वसे पवित्र काम भगवत् भजन और तब फिर अपने बालकोंकी सेवा थी। बालिकाकी सुश्रुषाके सामने पतिभक्ति व पतिसेवा भी गौण रूपसे थी। मेरे लड़कालड़की बड़े यशस्वी व उपयोगी हों, धर्मकर्ममें सावधान

हों, आचरणमें कुशल और निर्मल हों, यही भावना निरंतर विजली-बाईके हृदयमें लहराया करती थी।

सेठ पानाचंदका जन्म।

मोतीचंदके जन्मके २-२॥ वर्ष पीछे ही संवत् १९०५ आषाढ़ सुदी ८ के दिन जब अष्टान्हिकाका महान पर्व प्रारंभ होता है, विजलीबाईको दूसरे पुत्र-रत्नका लाभ हुआ। इस पुत्रका उदय देखकर व इनके मुखको निहारकर माताको बड़ा ही हर्ष हुआ। पिताने इसका नाम पानाचंद रक्खा। यद्यपि हीराचंद अफीमका काम करते थे पर अपना नाम हीरा होनेसे पन्ना हीरा मोती आदि जवाहरातके धन्देका मानो स्वप्न ही देखते थे और यह भावना रखते थे कि हम अपने पुत्रोंको जौहरी ही बनाएंगे। इसी भावनासे प्रेरित हो ऐसे ही नाम अपने पुत्रोंके नियत किये। पानाचंदके जन्मपत्रका हाल सुनकर हीराचंद व कुटुम्बियोंको बड़ा ही आनन्द हुआ। जैसा इसका मुख अपने उच्च भाग्यको प्रगट करता था ऐसा जन्मपत्रने भी सूचित किया। मातापिताको अपने पुण्यके उदय पर बड़ा ही सन्तोष था।

हेमकुमरीका लग्न।

इस समय हेमकुमरीकी अवस्था १२ वर्षकी हो गई थी। अबतक इसकी सगाई मातापिताने नहीं की थी। यद्यपि चारों ओरसे माँग आरही थी। अब साह हीराचंदने विवाह योग्य जान हेमकुमरीकी लग्न बागड निवासी पर बम्बईमें व्यापार करनेवाले एक वीसा-हूमड सेठ प्रेमचंदके पुत्र हेमचंदके साथ बड़े प्रेमके साथ कर दी। इस लग्नमें साह हीराचंदने सम्बन्धियोंका बड़ा सन्मान किया और

न अपनी शक्तिको छिपाकर न स्वशक्तिसे बाहर विवाहमें खर्च उठाया। हेमचंद बड़ा ही सुशील, सौम्यमुख, उद्योगी और धर्म प्रेमी १८ वर्षका युवान था।

सेठ चुन्नीलालका परिचय।

हेमकुमरी हेमचंदको प्राप्त होकर परस्पर प्रीतिमें इस तरह रम गई जैसे हेमकी चमक हेममें रम जाती है और दोनोंकी एकता अति सुन्दराकार सुवर्णको दिखाती है। हेमचंद प्रेमचंदका व्यापार बम्बईमें चलता था। यह जरीके कामके लिये प्रसिद्ध थे। अब भी इनके यहाँ ज़रदोज़ी काम बहुत ही अच्छा होता है। सेठ हेमचंद व हेमकुमरीके तीन पुत्रोंमें एक पुत्र सेठ चुन्नीलालजी इस समय बम्बईमें विद्यमान हैं। इनको धर्मसे बड़ा ही प्रेम है। श्री जिनेन्द्रकी भक्ति व स्वाध्यायमें निरन्तर लीन रहते हैं। इनकी स्त्री नंदकोरबाई भी बड़ी धर्मात्मा लिखी पढ़ी व पतिभक्त हैं। इनसे ५ पुत्र व १ पुत्री है। बड़े पुत्रका नाम अमरचंद है, जो व्यापारमें दक्ष है। इससे छोटा पुत्र रतनचंद बी० ए० क्लासमें पढ़ रहा है, तीसरा नौनीतलाल इन्टरमें पढ़ रहा है और और २ लड़के भी विद्याभ्यास करते हैं। सेठ चुन्नीलाल-जीने श्री पावागढ़ क्षेत्रके एक प्राचीन जिन मंदिरका जीर्णोद्धार कराया है और उसकी प्रतिष्ठामें भी खूब द्रव्य लगाकर उस मौकेपर बम्बई दिगंबर जैन प्रांतिक सभाका वार्षिक अधिवेशन कराया था। आप श्री पावागढ़ क्षेत्रकी प्रबन्धकारिणी सभाके सभापति हैं। व्यापार भी अच्छा चलता है। बम्बईके गुजराती प्रतिष्ठित धनाढ्यों-मेंसे आप भी एक प्रसिद्ध मान्य पुरुष हैं और गुजराती मंदिरके

प्रबंध करनेमें आप ही प्रधान व्यक्ति हैं। वास्तवमें जिसकी कुल-परम्परा अच्छी होती है उसकी सन्तति यदि ऐसा कोई अंतराय न पड़े तो वह भी अच्छी ही होती है। हेमकुमरीकी लग्न करनेके वाद साह हीराचंद व्यापारमें लीन हो गए। माता पिता पानाचन्दकी वृद्धि पाती हुई मूर्तिको देखदेखकर हर समय प्रफुल्लित होते थे।

गणपतराव गायकवाड़का दान।

सूरत नगरमें इंग्रेजी राज्यके होनेसे इंग्रेजी पढ़नेकी चर्चा बढ़ने लगी और साथ ही लोगोंमें पुस्तक और समाचार पत्र पढ़नेका भी शौक बढ़ा। संवत् १९०७ व सन् १८५० में एंड्रूस लायब्रेरी नामका पुस्तकालय स्थापित हुआ। लोग इसके द्वारा गुजराती व इंग्रेजी पुस्तक व पत्रोंके पढ़नेका लाभ लेने लगे। संवत् १९०८ व सन् १८५१ में गणपतराव गायकवाड़ जिनको अपने वैष्णव धर्मसे बहुत प्रेम था जंजूरी ग्राममें खंडोबाकी यात्रा करनेको निकले थे तब सूरत होकर गए थे। यहाँके नागरिकोंने इनका बहुत सन्मान किया था। गायकवाड़ने स्वधर्म वृद्धि या यश लाभ चाहे जिस कारणसे हो सूरतमें इतना धर्म व दान किया कि सारे नगरमें उनकी कीर्त्ति छा गई। जितने दिन वे ठहरे मानो धर्म व दानका राज्य ही हो गया।

दानकी वासनाओंमें शेठ माणिकचन्दका अवतार।

उसी समय एक रात्रिको अपनी पत्नीसे बातें करते हुए साह हीराचंदने गायकवाड़के दानकी बड़ी प्रशंसा की और गायकवाड़की जो कुछ चर्चा बाज़ारमें सुनी थी वह सब कह सुनाई। उसी कथनमें यह भी बयान किया कि गायकवाड़ने ब्राह्मणोंके सत्कार करनेके सिवाय हरएक मंदिर व पाठशालामें द्रव्यदान किया तथा नगरके

गरीबोंको तृप्त किया। बिजलीबाईका चित्त बड़ा कोमल था। जब वह किसी गुणकी बात सुनती थी तो उसका दिल भर आता था। उसके मनमें यह आया कि कि कब मैं इस योग्य होऊँ कि खूब दान धर्म करूँ और सर्वको तृप्त करूँ। विचारते २ उसने हीराचंदजीसे कहा कि देखो हमारे भी कभी ऐसे पुण्यका उदय आवे जो हमसे भी खूब दान धर्ममें द्रव्य खर्च किया जावे। साह हीराचंदने कहा कि हम तो इतने भाग्यशाली नहीं है क्योंकि इतने दिन व्यापार करते बीते कभी हम अपने खर्चसे अधिक नहीं कमा सके। ज्यों त्यों कर हेमकुमरीका विवाह किया था उसके पीछेसे व्यापार साधारण ही चला। हाँ, जिस वर्ष पानाचंदका जन्म हुआ था उस वर्ष व्यापारमें अच्छी पैदा की थी। अब तो साधारण ही लाभ हो रहा है। परंतु यह मुझे आशा है कि पानाचंद अवश्य भाग्यशाली होगा और द्रव्य कमाएगा। उस समय यदि उसका परिणाम दान धर्ममें होगा तो वह भी अपने दानकी सुगंधको उसी तरह विस्तारेगा जैसे आज गायकवाडका यश हो रहा है। इस तरह परस्पर वार्तालाप करते पति पत्नी उस रात्रिको अति प्रेमसे अपने खास शयनालयमें सोए। उसी रात्रिको बिजलीबाई गर्भवती हुई। बिजलीबाईका मन रात्रिभर दानकी उमंगमें भीज रहा था। यह वही रात्रि है जिसमें इस पुस्तकके नायक प्रसिद्ध सेठ माणिकचंदका जीव बिजलीबाईके गर्भमें आया, जिस आत्माने गर्भस्थानमें निवास करते ही उस स्थानको दानधर्मकी वासनासे वासित पाया।

ज्यों २ गर्भ बढ़ाता था बिजलीबाईका मन दानके लिये उमंगता था। साधारण स्थितिके कारण इतना तो वह अवश्य करती थी

कि जो कोई अपाहज दरवाज़े पर आ जाता था उसको मुट्ठीभर अन्न जरूर दे आती थी। अच्छी भावनाओंका असर भी अच्छा ही हुआ करता है। विजलीबाईके धर्ममें झुकते हुए भावोंका असर उस गर्भ स्थित बालक पर भी पड़ता था। जगतमें निमित्त नैमित्तिक सम्बन्धसे अनेक अवस्थाएं हो जाती हैं। पूर्वबन्ध जड़ द्रव्य कर्मोंका असर संसारी आत्मापर पड़ता है। और संसारी आत्माके भावोंसे पुद्गलका परिणमन होता है। बाहरी पदार्थ भी भावोंमें असर डालते हैं।

सेठ माणिकचन्दका जन्म सं० १९०८।

सुयोग्य सम्बन्धोंमें प्राणोंकी वृद्धि करते हुए नौ (९) मास वीत गए और दिवालीकी निकटताका समय आ गया। इस कारण उच्च कुली सर्व ही अपने स्थानोंकी सफाई तथा लीपापोती कराने लगे। साह हीराचन्दने भी अपने मकानकी शुद्धि व पुताई कराई। कार्तिक वदी १३ (आसौज वदी १३ गुज०) का दिन आ पहुँचा। इसको धनतेरस भी कहते हैं। बहुतसे लोग आजकल घरमें कुछ नए बरतन भी खरीद कर लाते हैं। यह दिन एक मंगल दिवस माना जाता है। इसी दिन प्रातःकालके शुभ मुहूर्तमें विजलीबाईने पुत्ररत्नका जन्म दिया। इस समय भी पुत्रका मुख देखकर माता पिताको जो आनन्द हुआ वह वचन अगोचर है। जैसे पानाचंदके मुखपर तेज झलकता था ऐसा ही इस पुत्रके मुखसे प्रगट होता था। साह हीराचंदने इस पुत्रका माणिकचन्द नाम रक्खा और यथायोग्य श्री जिनमंदिरजीमें पूजा कराई, कुछ दान बाँटा तथा कुटुम्बियोंको तृप्त किया।

जब यह गोदमें खिलानेलायक हुआ इसको देखकर हरएक प्यार करना चाहता था। ऊंचा माथा, बड़ा सिर, बड़ी चक्षु, सुडौल हस्त पग आदि देखनेसे माणिकचंद एक महान पुरुष होगा ऐसी कल्पना बुद्धिमानोंके चित्तमें हो उठती थी। जन्म पत्रसे भी इस बालकके ऐश्वर्यवान व यशस्वी होनेका पता लगता था। इसका शरीर भी बहुत सुन्दर और गठा हुआ था। खपाटिया चकलेका मकान जिसका चित्र पहले दिया गया है और जो अब भी मौजूद है मोतीचंद, पानाचंद और माणिकचंद पुत्र और मंच्छाकुमरी पुत्रीसे बड़ा ही रमणीक मालूम होता था। इस समय मंच्छाकुमरीकी आयु ११ वर्षकी, मोती-चंदकी ५ और पानाचंदकी २॥ वर्षकी थी।

मंछाकुमरीका विवाह।

हेमकुमरीकी तरह मंच्छाकुमरी भी घरके कामकाजमें प्रवीण कर दी गई थी। जब यह १२ वर्षकी हुई साह हीराचंदने इस कन्याका विवाह सुरत निवासी बीसा हूंमड़ गंगेश्वर गोत्री व्रीजलाल शीतलदासके पुत्र झवेरचंदके साथ कर दिया। झवेरचंद साधारण लिखा पढ़ा था पर बुद्धि तीव्र थी। अप-नी मध्यम स्थिति होनेके कारण पिताके साथ व्यापारमें जाता था।

सेठ चुन्नीलाल झवेरचन्दका जन्म।

मंच्छाबाई और झवेरचंदके संयोगसे संवत् १९२४ चैत्र सुदी ११ के दिन सेठ चुन्नीलालजीका जन्म भया। यह चुन्नीलाल सेठ माणिकचन्द पानाचंदके व्यापारमें मुख्य सहायक होनेके सिवाय धर्म कार्योंमें बड़े ही उत्साही थे। आप भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र क-

मेटीके सहायक महामंत्री थे, तीर्थभक्त थे। इन्होंने सूरतके सर्वसे प्राचीन श्री शांतिनाथजीके छोटे मंदिरका जीर्णोद्धार संवत् १९९६ में कराया और इसका शिखर बंधवाकर धूमसे प्रतिष्ठा की थी।

सेठ नवलचन्दका जन्म।

मोतीचन्द जब ६ वर्षसे अधिकका होगया तब हीराचंदने इसको देशी निशालमें पढ़ने भेज दिया। पानाचन्द और गोदके बच्चे माणिकचन्दको विजलीबाई घर ही में नाना प्रकारकी उत्तम शिक्षा दिया करती थी। इतनेमें वह फिर गर्भवती हुई और संवत् १९११ में चतुर्थ पुत्ररत्नको उत्पन्न किया। इस समय भी पुत्रका लाभ देखकर माता पिताको बड़ा ही सुख भया। हीराचन्दने इसका नाम नवलचंद रक्खा। इसका जन्मपत्र भी इसके सौभाग्यवान और ऐश्वर्यवान होनेकी साक्षी देने लगा।

इस तरह चार पुत्रोंसे सुशोभित होकर हीराचंद और विजलीबाई अपने घरको इसी तरह दीप्तमान मानने लगे जैसे राजा दशरथ और कोशल्या श्री रामचंद्र, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्नको देख कर आनन्दित होते थे।

हीराचंद अब धर्ममें और अधिक प्रीति करते भए। अधिक समय श्रीजिनेन्द्रकी भक्ति व स्वाध्यायमें व्यतीत करने लगे। तृतीय पुत्र माणिकचंदको उंगली पकड़कर यह मंदिरजी ले जाते थे और अपने पास बिठालेते थे। यह बालक शुरूसेही बहुत विचारवान और शांत मिज़ाज़का था। रोना तो जानता ही न था। सच है जो अपने जीवनमें महान कृत्य करनेवाले होते हैं उनकी शुरूसे ही उत्तम चेष्टा

होती है। उनको पूर्वजन्मका उत्तम संस्कार भी होता है। इसतरह हीराचन्द धर्म, अर्थ और काम पुरुषार्थको भोगते हुए अतिसंतोषसे रहने लगे और जातिमें एक आदरणीय गृहस्थ माने जाने लगे।

अध्याय चौथा ।

सेठ माणिकचंदकी वृद्धि ।

१८५७के गदरका समय।

साह हीराचंद अब पुत्रोंकी सम्हाल व उनकी साधारण शिक्षा पर ध्यान रखने लगे। मोतीचंदको दो वर्ष तक देशी निशालमें पढ़ाकर फिर एक गुजराती स्कूलमें पढ़ने भेज दिया, इसी तरह पानाचंदको भी दो वर्ष तक देशी निशालमें पढ़ाकर गुजराती स्कूलमें भेजा। इतनेमें माणिकचंद ६ वर्षके हुए। इसको मंदिरजीमें देर तक बैठनेका शौक था। जो कोई शास्त्र पढ़ता यह बिना समझे भी सुना करता था। संवत् १९१४ या सन् १८५७ बड़ा विकट वर्ष था। सूरतमें लश्करका आना जाना बहुत रहता था। यद्यपि वहाँ कोई हुल्लड नहीं था। पर उत्तर हिंदुस्तानमें इंग्रेजोंसे देशी फौज बिगड़ उठी थी जिससे देहली, कानपुर, लखनऊ आदि स्थानोंमें बड़ा भारी गदर हो गया था। प्रजाजन लूटे जाते थे। लोग अपने २ मकान छोड़कर परदेश भाग रहे थे। इतिहासमें यह वर्ष बहुत प्रसिद्ध है। इस समय ईष्ट इंडिया कम्पनीकी सत्ता भारतमें थी। गदर शांत होनेके पश्चात् सन् १८५८की १ नवम्बरको प्रसिद्ध रानी क्वीन विकटोरियाने भारतकी राज्यसत्ता कम्पनीके हाथसे अपने हाथमें ली और भारतके धर्मकर्ममें समभाव रखने व हस्तक्षेप न करने आदिकी घोषणा प्रसिद्ध की।

इस समय माणिकचंदकी अवस्था ७ वर्षकी थी। पिताने इसे देशी निशालमें पढ़ने भेज दिया। नवलचंद घर-हीमें माता पिताद्वारा शिक्षा प्राप्त करता था।

हीराचन्दकी चिंतित अवस्था।

संवत् १९१६का वर्ष हीराचंदके लिये कठिन था। उधर पुत्रोंका खर्च बढ़नेके साथ २ व्यापारमें शिथिलता हो गई। इधर बिजलीबाईका शरीर बहुत नर्म रहने लगा और थोड़े दिनोंके पीछे ऐसा शिथिल हो गई कि उससे घरका कामकाज भी न होने लगा। बड़ी कठिनतासे कुछ दिन सारे कुटुम्बकी रसोई बनाई परंतु जब अधिक ढीली पड़ गयी अर्थात् शय्यासे उठा नहीं गया तब हीराचंदजी और छोकरोंको मिलकर सबकी रसोई बनानी पडी व घरका सब कामकाज करना पड़ा। इस समय हीराचंदको चित्तमें बहुत खेद रहने लगा। व्यापारमें लाभ कम होनेसे घरका खर्च बडी तंगीसे चलता था तथा अपनी पतिभक्ता स्त्रीके शरीर शिथिल होनेसे मनको और भी उदासी हो गई थी। संसारकी विचित्र दशा है। पुण्य पापकर्मका उदय एकके पीछे दूसरा आया ही करता है। इस समय मोतीचंद १३, पानाचंद ११, माणिकचंद ८ तथा नवलचंद ५ वर्षके थे। सिवाय छोटेके तीनों अपना बहुतसा काम अपने आप कर लिया करते थे। **सबोंमें माणिकचन्दको अभीसे धर्मकी बहुत बड़ी लग्न थी,** यहाँतक की हररोज पासके मंदिरजीमें जा और लोगोंके साथ श्री जिनेन्द्रकी प्रतिमाओंका प्रक्षाल किया करता, जाप देता व कभी २ पूजनमें भी खड़ा होता था। पिताको इस समय दुःखी व उदास देखकर मोतीचंद और पानाचंद आश्वासन देते थे, जिसमें

पानाचंद बड़े साहसके साथ कहते थे कि–पिताजी, आप चिंता न करें, मैं बड़ा हूँगा तब बहुत धन कमाऊँगा। माताकी सेवामें चारों ही पुत्र लवलीन थे। माता अपनी शिथिल अवस्थामें इनको देखदेखकर अपने जीवनमें मैंने रत्न उत्पन्न किये ऐसा मानकर परम सन्तोष प्राप्त करती थी और जब कभी प्रेमभरी दृष्टिसे अपने स्वामीको निरखती थी तब अंतरंगमें महासुख प्राप्त करती थी। मनमें सिवाय 'अर्हंत सिद्ध' के किसीका स्मरण नहीं करती थी। मुखसे भी यही सदा कहा करती थी।

माता विजलीबाईका स्वर्गवास।

एक दिन विजलीबाईके चित्तमें यह अच्छी तरह जम गया कि अब मेरा अन्तसमय आ गया है। उसने साह हीराचंदको कहा कि अब मेरी आयु नहीं मालूम होती, मुझे धर्मके वचन सुनाओ और जो कुछ मुझसे दान पुण्य कराना हो सो इसी समय करा लो। साह हीराचंदकी आंखोंसे आंसू बहने लगे, दिल घबड़ा गया, पर एकायक मनको सम्हालर कहा–तुम्हें मरणकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। चिन्ता करनेसे भी आयु कम होती है ऐसा शास्त्रोंमें सुना है। धैर्य रक्खो। श्री पंच परमेष्ठिका ध्यान करो। मुझे तो आशा है तुम बहुत शीघ्र अच्छी हो जाओगी। यदि तुम्हारी इच्छा है कि अभी कुछ दान धर्म किया जाय तो तुम्हारे लिये सब कुछ हाज़िर हैं। ये चार पुत्ररत्न तुम्हारे मौजूद हैं। हमें तुम्हें कोई बातकी फिकर नहीं है। साहजीने मोतीचंदको १०) दिये और कहा कि बाज़ारमें गांधीके यहाँसे पूजनकी सामग्री ले आ। मोतीचंद समझता था, वह तुर्त गया पर बड़े उदास मनसे

सामग्री बंधवाकर घर आया । साहजीने तीनों लड़कोंको सामग्री साफ करके तय्यार करनेको आज्ञा दी। उन तीनोंके साथ नवलचंद भी चाँवल उलटने पलटने लगा । उस समय माणिकचंदका मुंह सबसे अधिक उदास था । यद्यपि वह ८ वर्षका था, पर वह समझता था कि माताजीने अंत समयपर दान करनेको यह सामग्री मँगाई है । माणिकचंदका चित्त बड़ा कोमल था । किसी खास बातका उसके दिलपर बड़ा असर हो जाता था । कभी २ आंखसे पानी भी निकलनेको होता था, पर वह रोक लेता था कि और भाई बुरा समझेंगे ।

सामग्री तय्यार होने पर सुरतके सर्व मंदिरोंमें दिये जानेको साहजीने थाल सजे और यथायोग्य दो दो एक एक रुपया नगदी रखकर विजलीबाईके सामने रख दिये । बाईने कहा कि हर एक मंदिरमें इनको भेज दो । साहजीने लड़कोंके द्वारा मंदिरोंमें सामग्री भिजवा दी तथा प्रबन्ध करके २५०) और उसके सामने रख दिये और कहा—"जहाँ तुम्हारी इच्छा दानकी हो वहाँ दान करो।" इस समय मंच्छाकुमरी भी आ गई थी। वह देखकर रोनेको हुई परन्तु साहजीने मना किया । विजलीबाईने २९०) देखकर एक दफे पतिसे कहा-आप मेरे लिये कष्ट न सहें। मंदिरोंमें सामग्री भेज दी सो बस है। हीराचंदजीने कहा मैं इस समय लाचार हूं नहीं तो तुमने जो उपकार किया है उसके लिये मैं कुछ नहीं कर सक्ता। हजारों लाखोंका दान तुम्हारे हाथसे होता। मेरी तो यह भावना थी। यह रकम तो कुछ नहीं है ! श्री जिनेन्द्रके प्रतापसे व्यापारद्वारा सब कुछ मिल जायगा, सब कुछ हो लेगा; पर तुम्हारे हाथसे दान तो

होना ही चाहिये। विजलीबाईने पचीस २ रुपये श्री सम्मेदशिखर, पावापुर, चम्पापुर, गिरनार सिद्धक्षेत्रोंमें, १५) पालीताना सत्रुंजय, १५) श्री गजपंथाजी, १५) श्री पावागढ़जी, १५) तारंगाजी सिद्धक्षेत्रोंमें, ४०) भूखोंको अन्नादि बांटनेमें और शेष रुपये शास्त्रदानमें देनेको कहे। साहजीने सब लिख लिया।

हीराचंदको भी मनमें निश्चय हो गया कि अब इसका शरीर चलता हुआ नहीं मालूम होता। हेमकुमरी भी उन दिनों सूरतमें ही थी। वह भी आ गई। रात्रिको विजलीबाईने हेमकुमरीसे कहा कि, हेम! आज रात्रिको मेरा शरीर नहीं रहेगा ऐसा मालूम होता है; सो तूम मुझे एक दफे देहरासर ले चल कि मैं श्री जिनेन्द्र प्रभुके दर्शन कर लूं। श्री मंदिरजी पासमें ही था। मंदिरजीमें एक व्यासन थी। वह बलिष्ठ शरीरकी थी। वह अपनी गोदमें विजलीबाईको मंदिरजी ले गई। साथमें दोनों बहनें गई। वहां बहनोंने भगवानके सामने बिठाया। बहुत ही भक्तिसे प्रभुकी शांत छबिको निरखकर मन ही मन स्तुति पढ़ झुक गई और वहीं प्रतिज्ञा ले ली कि अबसे आज रातभर मुझे जलपानी आदिका त्याग है जो कुछ वस्त्र व शय्या आदि मेरे पास है उसके सिवाय और परिग्रहका भी त्याग है।

घर आकर विजलीबाई शांतिसे शय्यापर लेट गई। इस समय सबको निश्चय हो गया कि अब बाईके प्राणान्तका अवसर है। और भी कुटुम्बीजन आ पहुँचे। नवलचंद तो सो गया, पर माणिकचंदको नींद नहीं आई। यह पड़े २ रोने लगा। उधर साह हीराचंदजीका भी जी घबड़ाया और थोड़ी देरके लिये एकान्तमें जाकर खूब रोए। फिर वे मन थांभकर शय्याके पास आए और

उस समय कुटुम्बियोंका ज्यादा जमाव देखकर इनने सबसे कहा कि इनके पास वे ही रहें जो धर्मके पाठ व णमोकार मंत्र पढ़ें, शेष दूर २ बैठें और इस तरह बात न करें जो इनके कानमें शब्द जाय ।

रात्रिको अनुमान ३ बजे होंगे तब बिजलीबाईने कहा कि मुझे शय्यासे भूमिपर ले लो। भूमिपर त्रासक्त साथरा करके उन्हें धीरसे लिटा दिया गया। उस समय साह हीराचंद स्वयं बड़े ही मिष्ट बचनोंसे णमोकार मंत्र पढ़ने लगे व बारह भावना या समाधिमरणका पाठ सुनाने लगे । धर्मध्यान करते २ बिजलीबाईकी आत्मा प्रातःकाल होते होते इस क्षणिक शरीरको छोड़ कर चल दिया–जीवके सम्बन्धमें होते हुए जो कान्ति शरीरकी थी वह सब जाती रही। अंगोपांग वैसेके वैसे रहते हुए भी शरीर अचेतन-जड़-मिट्टीके समान होगया । वे नाना प्रकारके ज्ञान पूर्ण विचार जो अभी २ शरीरके आश्रय हो रहे थे वे सर्व बंद होगए । कारण यही कि चैतन्य गुणधारी पदार्थ इस तन रूपी झोंपड़ीसे बाहर चला गया। जीवन क्षणिक है। कोई भी शरीरधारी अमर नहीं रह सक्ता, सर्व ही को परलोकमें जाना है, अतएव ज्ञानी जीव परलोकके लिये अवश्य यत्न रखते हैं। जो वर्तमानके विषय-भोगोंमें गाफिल हो जाते हैं वे अपने आपको ठगते हैं और खोटी गतिमें जानेकी तय्यारी कर लेते हैं। चारों ही पुत्र अपनी माताको अबोल व मुर्दा देखकर हम असहाय हो गए ऐसा मानते हुए। माणिकचंद और पिता हीराचंदके आंखोंसे आंसुओंका टपकना बन्द न हुआ। प्रातःकाल ही सर्व दग्ध क्रिया आदिका प्रबन्ध

हुआ। अब वह घर जो बिजलीबाई सरीखी स्त्रीरत्नके रहते हुए बिजलीके समान चमकता था, बिलकुल सुनसान हो गया। मानो एक प्रकाशमान दीपक ही बुझ गया।

घरमें कोई भी स्त्री न होनेसे कुछ दिन तो हेमकोंर और मंच्छाने रसोई बनाकर खिलाई तथा घरका कामकाज किया, पर जब वे अपनी ससुराल चली गई तब फिर अकेले हीराचंदजीको द्रव्य कमानेके साथ २ स्त्री सम्बंधी आरंभ कार्य्य भी करने पड़े, क्योंकि स्थिति साधारण थी, इससे कोई रसोई करनेवालेको नहीं रख सक्ते थे। पर साह हीराचंद बड़े ही बुद्धिमान, धर्मबुद्धि व धैर्य्यधारी थे, समताके साथ सारा काम करते हुए अपना समय बिताते थे, पर जब जरा भी खाली होते थे तभी बिजलीबाईकी स्मृति बिजलीके समान इनके चित्तके सन्मुख चमक उठती थी। वे ऐसी पतिव्रता स्त्रीको कब भूल सक्ते थे?

मोतीचंदका बम्बई जाना।

इस समय हेमकुमरी जब बम्बई जाने लगी तब अपने पितासे विनती की कि सूरतमें जब व्यापार कम हो चला है और बम्बईमें व्यापारकी वृद्धि है तब उचित है कि आप मोतीचंदको मेरे साथ कर देवें तो मैं इसे कोई व्यापारकी शिक्षामें डाल दूं। हीराचंदकी दशा बहुत शोचनीय थी। इस समय इनके अशुभ कर्मका उदय था। वह चाहते ही थे कि मोतीचंदकी उम्र १२ वर्षकी है, इसे कोई आलम्बन मिले; क्योंकि अफीमका व्यापार मंद दशापर है, इसे उसमें जोड़नेसे कोई लाभ न होगा।

पुत्री हेमकुमरीके साथ पिताने मोतीचंदको बम्बई भेज दिया । उस वक्त सूरतमें बम्बईकी शोभा और महत्ताकी बड़ी धूम थी । मोतीचंद अपने साथके लड़कोंसे व इधर उधर बम्बईकी बातें सुन चुका था । पिताकी आज्ञा पाते ही यह खुशीसे बहिनके साथ बम्बई चला गया ।

हेमचंदजीने मोतीचंदको बड़े प्यारसे रक्खा । भोजनपानादिमें भले प्रकार खातिर की कि जिसमें इसका मन उचाट न हो, और हेमकुमरीकी सम्मतिसे मोतीचंदको मोती पुराना सिखानेके लिये मोती पोरनेवाले एक प्रवीण जौहरीके सुपुर्द कर दिया । मोतीचंद बड़े आनन्दसे रहता और मोती पोरनेके हुनरको बड़े प्रेमसे सीखता था । उस समय बम्बईमें मोती पोनेका हुनर जिनको अच्छी तरह आ जाता था वे प्रतिदिन दो २ तीन २ रुपयेकी मजदूरी सुगमतासे कर लेते थे । जब इसको बम्बईमें दो वर्षके अनुमान हो गया और यह इस हुनरमें चतुर हो गया तथा इसे कुछ लाभ भी होने लगा तब हेमकुमरीने अपने पिताको खबर की कि द्वितीय पुत्र पानाचंदको भी यहां भेज दो ।

पानाचन्दका बम्बई जाना ।

पानाचंदकी उमर उस समय १२ वर्षकी थी । यह गुजराती स्कूलमें पांचवीं कक्षा तक पढ़ चुके थे । पिताने इस भारी आशासे, कि यह बालक चारोंमें तीव्र बुद्धि और साहसी है, अवश्य यह एक दिन भारी व्यापारी हो जायगा, हेमकौरके लिखते ही इसे भी बम्बई भेज दिया । इसका मन पढ़नेकी अवस्थामें भी द्रव्य कमानेको चला करता था । पितासे आज्ञा पाते ही यह किसी

सम्बन्धीके साथ बम्बई आया और अपनी बहिनके यहां ठहरा। बहिनके कहनेसे सेठ हेमचंदने पानाचंदको भी मोती पुरानेके काम पर सीखनेको बिठा दिया।

इसने बहुत ही थोड़े दिनोंमें इस हुनरको सीख लिया, क्योंकि यह बहुत चतुर व भाग्यशाली था। इसके पगमें पालकीका आकार था। इनको देखकर प्रवीण पुरुष भाग्यशाली कहकर बुलाते थे। बाद सीखनेके इसको भी व्यापारियोंसे मोती पोरनेका काम मिलने लगा। मोतीचन्द और पानाचन्द दोनों भाई बहुत दिलचस्पीसे व्यापारियोंका काम कर देते थे, जिससे इनको परिश्रमका अच्छा फल मिलने लगा। एक दिन दोनों भाइयोंने सलाह की कि बहिनके यहां सदा ही खाना पीना अच्छा नहीं। यहाँ परदेशियोंके जीमनेके लिये बीसियां व भोजनशालाएं बहुत हैं, हम उनमें खर्च देकर भोजन कर आएगें और स्वतंत्रतासे रहेंगे ऐसा विचार दोनों भाइयोंने किया और एक दिन अपनी बहिनको अपने मनकी बात समझा दी। हेमकौर बड़ी चतुर व समझदार थी। इनको आज्ञा दे दी। अब ये दोनों बीसीमें जीमने लगे और रुपये कमाकर अपने पिताजीको भी भेजने लगे।

बम्बईकी दिवाली।

सं. १९१९की दिवालीके उत्सव देखनेके लिये इनकी बहिन मंच्छाकुमरी बम्बई आई, क्योंकि उस समय बम्बईकी दिवालीकी शोभा मशहूर थी। अब भी दिवालीमें बम्बई बहुत ही सुसज्जित हो जाती है। मंच्छाबहिनने अपने दोनों भाइयोंको मोती पुरानेके काममें उद्योगी व अपने परिश्रमसे द्रव्य कमाते व खर्च

करते हुए देखा तब बहुत ही प्रसन्न हुई और लौटकर अपने पिताको सर्व हाल कहा, तथा यह भी कहा कि यदि आप भी इन दोनों पुत्रोंको साथ लेकर बम्बई जावें तो अच्छा हो। इधर पानाचंदने भी अपने पूज्य पिताजीको पत्र लिखा कि आप वहाँ अफीमका काम बन्दकर दोनों भाइयोंको लेकर बम्बई चले आवें, जिससे हम सब मिलकर यहां अपना भाग्य अजमावें। साह हीराचंदका काम वहाँ नहीं चलता था, रोज़ स्वयं हाथसे रोटी बनाकर खिलाते थे, इससे साहजीने भी बम्बई चलनेकी ठान ली।

सेठ माणिकचंदजीका छोटे भाईके साथ बम्बई जाना।

इस समय माणिकचंदकी अवस्था १२ वर्षकी थी। यह देशी निशालसे उठकर गुजराती शालामें ५वीं कक्षा तक भाषा आदिका ज्ञान कर चुके थे तथा नवलचंद केवल ९ वर्षके थे। यह देशी निशालसे उठकर किसी गुजराती शालामें भरती नहीं हो सके। घर ही में अपने पूज्य पितासे गुजराती आदि सीखे थे। साह हीराचंदने अपना सब काम समेट कर बाज़ारमें जिसका जो देना था सो सब चुका दिया और संवत् १९२०के प्रारंभमें ही हीराचंदजी दोनों पुत्रोंको लेकर बम्बई आ गए और एक 'ब्राकमीनी चाल' नामक भाड़ेके मकानमें ठहरे।

हीराचंदजीकी पुत्र सेवा।

साह हीराचंदजीको यह पसन्द नहीं था कि ब्राह्मण आदि अजैनोंकी व अविवेकी जैनोंकी वीसीमें मूल्य देकर अशुद्ध भोजन किया जाय। उन्होंने जाते ही मोतीचंद और पानाचंदको भी वीसीमें नहीं जीमने दिया, अपने हाथसे

रसोई बनाकर रोज चारों पुत्रोंको खिलाने लगे और समयपर बाजारमें भी जाकर कुछ साधारण व्यापार करने लगे।

माणिकचंदकी रुचि हिसाब किताबमें देखकर एक सराफके यहाँ बही खाता सीखनेके लिये बैठाया। १ वर्षमें ही यह सब ढंग जान गए तब हेमकौरके कहनेसे सेठ हेमचंद प्रेमचंदने अपनी दूकानपर बिठाकर मुनीमतका काम लेना शुरू किया। थोड़े दिनोंके बाद पानाचंदने पिताजीसे कहा कि माणिकचंद बहुत परिश्रमी और चतुर है, मेरी रायमें इसे भी मोती पुराना सिखलाना चाहिये। हीराचंदजीने यह बात मानकर मोती पुराना सिखलानेमें माणिकचंदको भी लगा दिया।

वास्तवमें माणिकचंद पानाचंदकी उच्च स्थिति लानेमें मूल निमित्त कारण सेठ चुन्नीलाल हेमचंदकी

हेमकुमरीका उपकार। माता हेमकुमरी थी, जिसने अपने पिताको सुखी करने व भाईयोंकी उन्नत दशा करानेमें पूरी २ सहायता दी। हेमकुमरीने अपना सच्चा बहिनपना पालन किया।

माणिकचंदमें एक यह बड़ाभारी गुण था कि जिस काममें दिल लगाते थे उसमें बिलकुल लवलीन हो जाते थे, वास्तवमें

सेठ माणिचंदका उपयोगकी एकाग्रता बड़े २ काम व्यापारमें लगना। कर सकी है। यह उपयोगकी एकाग्रता है जिसके कारण एक मुनि धर्मध्यानसे शुक्लध्यानको पाकर कर्मोंको काट मोक्ष अवस्थाको प्राप्त कर लेते हैं। उपयोगकी एकतासे ही एक विद्यार्थी थोड़े ही कालमें किसी पाठको कंठ कर

लेता है व समझ लेता है। उपयोगके एक ओर देर तक जमाए रखनेके कारण एक व्यापारी व्यापारके ढंग भले प्रकार सोच सक्ता है। प्रयोजन यह कि हरएक कामको धैर्य्यके साथ पूरा करनेके लिये उपयोगकी थिरताकी आवश्यकता है। **एडिसन** जैसे अमेरिका आदि देशोंके विद्वानोंने इसीकी बदौलत नाना प्रकारके यंत्र निर्माण किये हैं। विद्वान् लोग जब एकान्तमें किसी विषयका मनन करते हैं तो उसके भेदको खोज लेते हैं। टेलीग्राफ, टेलिफोन, बेतारका तार, मोटर गाड़ी, हवाई विमान आदि सर्व ही उपयोगकी थिरताके फल हैं। **माणिकचंद** इस उपयोगी गुणके आश्रयसे कुछ ही महीनोंमें ही मोती पुरानेमें चतुर हो गए और अपने दोनों भाइयोंके साथ मोती पोकर द्रव्य कमाने लगे। बाजारमें लोग पानाचंद और मणिकचंदके कामको बहुत ही पसंद करते थे और इनको खूब ही काम मिलता था।

नवलचंद भी व्यापारमें शामिल।

कामकी अधिकता व अपना यश फैलता देख भाइयोंने पिताजीको कहा कि नवलचंदको भी यह काम सिखाना चाहिये। नवलचंद अब अनुमान ११ वर्षके थे। नवलचंदने भी १ वर्ष परिश्रम कर इस कामको सीख लिया।

एकतासे चारोंकी व्यापारमें वृद्धि।

अब चारों भाई मिलकर बाजारके व्यापारियोंका मोती ले लेकर और पो पोकर देते थे। इनको सबसे अधिक बाजारमें काम मिलने लगा, क्योंकि यह बहुत चित्त लगाकर और सफाईसे वक्तके ऊपर सबका काम कर देते थे। चारों भाइयोंमें पूर्ण

प्रेम था। किसीके चित्तमें यह ईर्षा भाव नहीं था कि मैं इनसे चतुर हूं व मैं अधिक धनका हकदार हूं। चारोंमें पानाचन्द और माणिकचन्द ही बड़े चतुर और उद्योगी थे, पर यह बहुत ही समझदार, क्षमाशील और सादे मिजाजके थे। अधिक द्रव्य कमानेकी शक्ति रखनेपर भी कभी अपने मुंहसे अपनी बड़ाई नहीं करते थे। **यदि इनमें मेल न होता तो इनकी इतनी प्रसिद्धि न होती।** एकताके कारण बाजारमें चारों भाइयोंका कोई नाम नहीं लेता, किन्तु "**भाई राम**"के नामसे पुकारता था। सर्व व्यापारी इन चारोंको **एक ही दिलवाले, ईमानदार, सत्यवादी और विश्वासपात्र** जानने लगे। चार पांच वर्ष इस तरह मिहनत करने से इन्होंने खर्चसे अधिक रुपया पैदा कर लिया तथा मोती व जवाहरातकी पहचान भी अच्छी तरह कर ली।

जब हीराचंदजी सूरतसे बम्बई आए थे तब सूरतसे बम्बई तक रेलगाड़ी नहीं थी, पर संवत् १९२१ या सन् १८६४ ता० १ नवम्बरसे सूरतसे बम्बई तक रेलगाड़ी चलने लगी। इन चारों भाइयोंमेंसे जब किसी की इच्छा होती तब एक दो दिनके लिये सुरत चले जाते थे और वहाँके लोगोंसे व अपनी बहिन मंच्छाबाईसे मिल आते थे। अब इनके मुखोंपर कांति बढ़ गई थी, निराला जोश आरहा था। सूरतके लोग इनको उद्योगशील व कमाऊ जानकर बहुत ही प्रसन्न होते थे और जहाँ ये जाते थे व जिससे ये मिलते थे वह इनका सन्मान करता था। वास्तवमें देखा जावे तो व्यवहारमें द्रव्य और परमार्थमें आत्मज्ञान ही पूजे जाते हैं।

सूरतसे बम्बई तक रेल्वे।

जिस गृहस्थके पास धन होता है उसकी सब लौकिक जन कदर करते हैं। वे यह भय नहीं खाते हैं कि इसको हमें कुछ धन देना पड़ेगा या हमसे यह कुछ मांगेगा, किन्तु इसके विरुद्ध उन्हें यह आशा होती है कि यदि हमें कभी कुछ जरूरत होगी तो इनसे मिल जावेगा। जगत स्वार्थ बुद्धिके नातेसे ही रहता है। इसी तरह जो साधु हैं उनमें यदि आत्मज्ञान और वैराग्य होता है तो जो समझदार हैं वे सन्मान करते हैं। गृही धनके विना और साधु वीतरागता सहित आत्मज्ञानके बिना निःसार है। गृहस्थके दिलको साहसयुक्त व रौनकदार बनानेवाले उद्योग हीमें धनका आगमन है। बस, इसी कारणसे अब इन चारों भाइयोंकी हर जगह खातिर होती थी। इनमेंसे पानाचंद और माणिकचंदके ऊपर लोग अधिक मोह करते थे, क्योंकि चारोंमें यही दो सिंह युगलकी भांति झलकते थे।

चारों ही भाई धर्ममें सावधान थे। पूज्य पिताकी कृपासे चारों ही बम्बईमें नित्य श्री जिनेन्द्रका दर्शन व जाप देकर भोजन करते थे। इनमें सबसे अधिक ध्यान धर्मकी ओर माणिकचंदका था। इनको ८ वर्षकी अवस्थासे श्री मंदिरजीमें प्रक्षाल पूजा करनेकी आदत थी। इसको इन्होंने बम्बईमें आकर भी जारी रक्खा। यह गुजराती दि० जैन मंदिरमें रोज़ सवेरे जाते, वहीं स्नान कर प्रक्षाल पूजन करते, जाप देते व कुछ पढ़कर घर आ भोजन करते थे।

माणिकचन्दजीको ८ वर्षसे प्रक्षालकी आदत।

१५ वर्षकी उमर तक इनका स्वाध्याय बहुत मामूली था। एक दिन यह अपने १५ वें वर्षमें अर्थात् संवत् १९२३में पूनासे

निपटकर बैठे हुए थे तब एक मारवाड़ी शास्त्रके ज्ञाता उस मंदिरमें दर्शनार्थ आये। वे इस बालकको देखकर इसके पास बैठ गए और इससे धर्मकी चर्चा पूछने लगे। इस समय तक यद्यपि ये कुछ पढ़ते तो रहते थे, पर किसी प्रश्नका जबानी उत्तर नहीं दे सक्ते थे।

माणिकचंदका शास्त्र-स्वाध्याय प्रारंभ।

उस विद्वान्ने इनको उपदेश दिया कि तुम नियमसे शास्त्रोंका स्वाध्याय क्रम क्रमसे किया करो और जो बात न समझो वह किसीसे मालूम कर लिया करो। उसने कहा कि तुम **श्रीपद्मपुराण** और **श्रीरत्नकरंड श्रावकाचार**का स्वाध्याय पांच सात बार कर जाओ, तुम्हें बहुतसी चर्चा मालूम हो जायगी। माणिकचंद शुरूसे ही गुणग्राही थे। इस बातको इन्होंने पल्ले बांध उसी दिनसे श्रीपद्मपुराणका स्वाध्याय करना प्रारंभ कर दिया। माणिकचंदको गुजराती पुस्तक व समाचारपत्र बांचनेका भी शौक था। घरमें फुरसतके समय यह नाना प्रकारकी पुस्तकें पढ़ते थे तथा बम्बईमें जब कभी **व्याख्यान सभा** सुनते थे, मौका निकालकर जाते थे और व्याख्यान सुनकर उसका सार ग्रहण करते थे और तीनों भाइयोंका इस तरफ कुछ ध्यान नहीं था। वे साधारण धर्म-क्रिया व व्यापार धन्धेमें ही लीन थे।

मजदूरीसे व्यापारमें आना।

संवत १९२४ तक मोती पुरानेकी मजूरी करते रहे किन्तु बहुत सादगीसे रहने, किसी भी व्यसनमें न पड़ने और द्रव्यका व्यर्थ व्यय न करनेके कारण इनके पास इतनी पूंजी हो गई कि इन्होंने मोती पुरानेका काम छोड़

स्वयं संवत १९२५में जवाहरातका व्यापार करना शुरू कर दिया।

इस वक्त बम्बईमें यद्यपि नरसिंहपुरा जातीय सेठ प्रेमचंद धरमचंद जौहरीका काम अच्छा चलता था तो भी बीसा हूमड़ दिगम्बर जैनियोंमें तो सबसे पहले इन्होंने ही जौहरीका काम शुरू किया। पुण्यके उदयसे इनको व्यापारमें दिनपर दिन लाभ होता गया। पिता हीराचंदके समान इनकी भी प्रवृत्ति दान करनेमें थी। इसमें **सबसे अधिक रुचि दानकी तरफ माणिकचंदजी की थी**। जो कुछ रुपया ये चारों भाई कमाते थे उसे पिताजीको पास सौंपते थे, वे ही सब हिसाब रखते थे, तथा परस्पर यह भी ठहराव कर लिया था कि **आमदनीमेंसे अमुक रकम धर्मादा खाते** अवश्य निकालना और इस रकममेंसे जब जैसा अवसर होता था दानमें विचारपूर्वक द्रव्यको लगाते रहते थे। संवत् १९२६ की दीपमालिकामें सेठ हीराचन्दने चिट्ठा बनाया और तब मालूम किया कि अब इतना द्रव्य हो गया है जिससे बम्बईमें दूकान खोली जा सकती है।

बम्बईमें बीसा हूमड़ोंमें प्रथम जोहरी।

परस्पर सम्मति करके दूकान खोलनेका निश्चय किया। उस समय यह विचार पड़ा कि **दूकानका क्या नाम रक्खा जावे**। तब हीराचंदजीने कहा कि जिनका पुण्य व तेज प्रबल हो उन्हींके नामसे दूकानको चलाना चाहिये। मैं ऐसा पुण्यात्मा नहीं इससे मेरा नाम नहीं होना चाहिये।

माणिकचंद पानाचंद फर्मका खुलना।

तब एकाएक मोतीचंद बोल उठे कि पिताजी ! हम सबमें **पुण्याधिकारी, तेजस्वी और चतुर पानाचंद और माणिकचंद हैं** इससे इन्हींके नामसे दूकानको प्रारंभ करना चाहिये । सर्वकी सम्मति इसीमें जमी और संवत् १९२७ में **माणिकचन्द पानाचन्द जौंहरी** नामसे दूकान–कोठी स्थापित की । गुजरात देशमें पहले छोटेका फिर बड़ेका नाम रहता है । प्रायः जब किसीका नाम लेते हैं तो पिताके साथ ही लेते हैं, जैसे यदि माणिकचंदजीका नाम लेना होगा तो माणिकचंद हीराचंद नाम कहेंगे ।

शुभ मुहूर्तमें जिनधर्मके अनुसार **पूजा पाठ** करके माणिकचंद पानाचंद जौंहरी नामका फर्म कायम करके बड़ी सावधानीसे व्यापार करना शुरू किया गया । क्योंकि व्यापारी मंडलीमें प्रायः ऐसा होता है कि जब कोई नयी दूकान होती है तो दूसरोंको वह नहीं सुहाती है और वे जिस तरह हो उसे हराना चाहते हैं । यदि व्यापारी चतुर होता है तो सर्व दूकानदारोंके ऊपर अपने व्यापारकी उत्तमता, दृढ़ता और सत्यतासे अपना प्रभाव जमा देता है और कुछ दिनोंके बाद उसका काम पक्का समझा जाता है । माणिकचंद और पानाचंद दोनों ही व्यापारमें बड़े ही कुशल थे । इनकी नज़र व सचाई व विश्वासपात्रता पहलेसे ही मशहूर थी । इन्होंने दूकान करते ही अपना प्रभाव व्यापारियोंपर डाल दिया ।

व्यापारमें कुशलता सत्यता व न्याय-परायणता ।

इनके हाथ मोतीका बहुत माल आने लगा और ये बहुत नफेके साथ बम्बईके ग्राहकोंमें फिरकर व दलालोंके द्वारा बेचने लगे। **सेठ पानाचंद माल खरीदनेमें अति चतुर थे, जबकि सेठ माणिकचंद माल बेचनेमें अति प्रवीण थे।** माणिकचंदकी बातपर ग्राहकोंको तुरंत विश्वास आजाता था और जो दाम यह बताते थे उसको सहजमें मान लेते थे। **माणिकचंदजीका सत्यवादीपना प्रसिद्ध था।** अपनी बड़ी उमरमें जब कभी यह किसीको शिक्षा देते थे तो यही कहते थे कि **सत्य बोलो, सत्यव्यवहार** करो, सत्यसे ही प्रतीति होती है तथा मैंने **सत्यसे ही रुपया कमाया है।** व्यापारमें विश्वासपात्रताकी आवश्यकता है और वह प्रतीतिपना सत्य वचन और सत्य व्यवहारसे जमता है।

इस समय सेठ पानाचंद और माणिकचंद क्रमसे २२ और १९ वर्ष ही के थे, तथा मोतीचंद २४ और नवलचंद १६ वर्षके थे। चारों भाई मिलकर कोठीमें काम करते थे। किसी मुनीम गुमाश्तेको भी नहीं नियत किया था। सबने काम बांट लिया था। द्रव्य कमाते हुए रहते भी चारों ही भाई अपने पिताके अति दृढ़ उपदेशके कारण ब्रह्मचर्यमें दृढ़ थे। अभी तक इनमेंसे किसीका लग्न नहीं हुआ था, तौभी किसीको भी किसी खोटे मार्गमें जानेका व्यसन न था। पिताश्री अब भी इनको अपने हाथसे रसोई बनाकर खिलाते थे। इनको दूसरे किसी नौकरकी रसोई खाना व खिलाना

पसन्द न था। सेठ हीराचंदको अपने इन चार पुत्ररत्नोंको मेल मिलापके साथ रहते हुए व सदाचारमें चलते हुए व अपनी आज्ञाका उलंघन न करते हुए देखकर जो हर्ष होता था उसका अनुभव वास्तवमें उसी पिताको होसक्ता है जिसके ऐसे ही उद्योगी सदाचारी कई पुत्र हों।

सेठ हीराचंदजीको प्रौढ़ विवाहका पक्षपात।

पाठकोंको इस बातको जानकर बहुत आश्चर्य होगा कि सेठ हीराचन्दने २४ वर्षके पुत्रका भी अभी तक विवाह नहीं किया था। हीराचन्द चाहते तो १२ वर्षकी उम्रमें ही विवाह हो जाता, पर सेठ हीराचंद मामूली पुरुष नहीं थे। यद्यपि बाह्य दृश्यमें बहुत भोले और सौम्य थे; तथा **होंठ कटा हुआ था** सो कोई २ परोक्षमें **'होठ कटे'** के नामसे भी पुकार देते थे तथापि अपने दिलमें संसार व व्यवहारको अच्छी तरह समझते थे। एक तो उनको यह विश्वास था कि प्रौढ़ अवस्था ही में लग्न करना चाहिये, दूसरे उनकी यह इच्छा थी कि हमारे पुत्र खूब व्यापारकुशल हों जिससे धनवान हो जावें। किसी बातकी कुशलता व प्रवीणताका लाभ भले प्रकार तब ही होता है जब बिल्कुल एक चित्त हो उसीपर लक्ष्य दिया जावे। विद्यार्थी नगरसे एकान्त स्थलमें जब अभ्यास करता है तब उसका चित्त विद्या लाभमें निरन्तराय जमा रहता है। शहरमें या घरमें रहकर पढ़नेवाले छात्र प्रायः मौज़-शौकमें, सम्बन्धियोंके यहां जाने आनेमें, दावत रखनेमें, मेला ठेला देखनेमें, नाचरंग खेल कूदमें ऐसे लग जाते हैं कि सिवाय कुछके और सर्व अधपढ़े रह जाते हैं। ऐसी दशामें यदि उनकी लग्न

१३, १४, १५, १६ वर्षमें कर दी गई तब फिर उनका ध्यान पढ़नेसे हटकर श्वसुरालका माल उड़ानेमें व स्त्रीसे मिलनेके ख्यालमें बंट जाता है। फल यह होता है कि वे विद्याका लाभ नहीं कर पाते। सेठ हीराचंद यह बात अच्छी तरह जानते थे। इसी लिये जब तक कि मेरे पुत्र जौहरीके काममें प्रवीण न होंगे तब तक मैं इनकी लग्न नहीं करूंगा चाहे जो कुछ हो यद्यपि इनकी माता नहीं है, घरमें कोई रसोई बनानेवाला नहीं है तौभी मैं रसोई बनाकर खिलाउंगा परंतु विवाहकी जल्दी तो नहीं करूंगा इसी दृढ़ प्रतिज्ञाके कारण अनेक सम्बन्धोंकी मांग आनेपर भी हीराचंदजीने अबतक किसीकी सगाई तक भी नहीं की, विवाह तो दूर ही रहे। रसोई खिलाते समय सेठ हीराचंद इनको व्यापारमें साहसयुक्त होनेकी, सदाचारसे चलनेकी, व ब्रह्मचर्य्यकी रक्षाकी शिक्षा दिया करते थे।

वास्तवमें जब तक ऐसा उपकारी पिता नहीं होता तब तक सन्तान उद्योगी और साहसवान नहीं बन सकती। आजकल लाखों पिता अपने पुत्रोंके साथ अन्याय करते हैं, उनके छोटेसे गलेमें स्त्रीरूपी भारी पाषाण बांध देते हैं, वे बिचारे उस भारसे कुचले लकीरके फकीर बन ज्यों त्यों चलते हैं, अपनी बुद्धिको चमत्कृत बनानेका अवसर उनके हाथसे जाता रहता है, इससे वे विचारे शारीरिक, मानसिक व धार्मिक तथा योग्य औद्योगिक उन्नतिमें बहुत पीछे रह जाते हैं इतना ही नहीं किन्तु अवनतिके गर्तमें गिर जाते हैं और अपनी गुप्त शक्तियोंको प्रफुल्लित करनेके उपायसे वञ्चित रह जाते हैं।

आजकलके मातापिताओंको सेठ हीराचंदका दृष्टान्त ग्रहण

करना चाहिये और अपने पुत्रोंको ब्रह्मचर्य्यके लाभ व अब्रह्मके दोष बताकर विद्या व हुनर सिखलाना चाहिये। जब वे सीख जावें और उसके अनुसार द्रव्य पैदा करने लगे तब ही पुत्रोंकी लग्न करनी चाहिये, विवाह हो जानेपर एक तरहका बंधन हो जाता है, जिससे नवयुवक अपनी शक्तियोंका विकाश नहीं कर सकते।

पाठकोंको यह भी जानकर आश्चर्य्य होगा कि इतनी उमर होनेपर भी सेठ हीराचंदजीके पुत्रोंने अपने ब्रह्मचर्य्यको दृढ़ रक्खा, किसी कुसंगतिमें नहीं पड़े, किसी असत् आचारको ग्रहण नहीं किया इस दशाका भी मूल कारण सेठ हीराचंदजीकी शिक्षा और दूसरा कारण लड़कपनसे दर्शन आदि धर्मकार्योंका अभ्यास था, तीसरा कारण व्यायाम था, इन सबको डंड मुगदर आदि देशी कसरत व कुश्ती लड़ना आता था। वास्तवमें दृढ़ विश्वास और यथार्थ ज्ञान ही चारित्र सुधारके उपाय हैं। पिताकी शिक्षाके ऊपर दृढ़ प्रतीति हीने इनको योग्यमार्गी रखा और ये चारों ही सर्व तरह व्यापार कुशल होकर उन्नतिके मार्गमें अग्रगामी हो गए। पुण्योदयसे व्यापार चलने लगा, लक्ष्मी आने लगी और सुख व शांतिसे अपने पूज्य पिताके साथ निर्वाह करने लगे।

अध्याय पांचवां ।

युवावस्था और गृहस्थाश्रम ।

मोतीचंदकी ब्रह्म-चर्य्यमें दृढ़ता ।

एक दिन सेट मोतीचन्द अपने एक मित्रके साथ शामके वक्त बम्बईमें समुद्रके तट पर हवा खाते हुए टहल रहे थे । मनरंजायमानकी बातें होते होते मित्रने कहा—"सेठजी ! आपकी अर्द्धांगिणी आपके साथ प्रेमभाव रखती है कि नहीं ? मुझे तो पुण्योदयसे ऐसी स्त्रीका समागम हुआ है जिससे मुझे बहुतही आराम है । वह बहुत ही सौम्य और घरके कामकाजमें कुशल है।"

सेठ मोतीचंद अपने ही समान वयस्क मित्रको देखकर चित्तमें लज्जायमान हुए और सोचने लगे कि हमारा तो अभी विवाह ही नहीं हुआ है, हम क्या जवाब देवें ? फिर भी अपना मन थांभ अपने पूज्य पिताकी शिक्षाको याद कर बोले—"प्रिय मित्र ! मुझे तो अभी तक विवाहकी परवाह नहीं है । मैं अच्छी तरह जानता हूं कि **विवाहके बन्धनमें पड़नेके पहले मनुष्यको धनपात्र, व्यवसाई, दृढ़शरीर, तथा पक्व वीर्य्य होना चाहिये** । सो भाई, मेरे पुण्यके उदयसे यह सब बातें मेरे और मेरे भाइयोंके उद्यमसे मुझे आकर प्राप्त हुई हैं । अब मेरी उम्र २४ वर्षसे अधिक है । अबतक तो मुझे इसका ख्याल न था पर आज तुम्हारे पूछनेसे मुझे कुछ ख्याल आया है कि अब योग्य अर्द्धांगिणीका लाभ हो तो उचित है । तौभी हे मित्र !

मैं इसका कुछ उद्यम करना उचित नहीं समझता हूं क्योंकि मेरे पूज्य पिता मेरे हितमें पूर्ण उद्योगी हैं, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। वे जब उचित समझेंगे तब मुझे गृही बनावेंगे तबतक मैं अति स्वतंत्र रहता हूँ और ब्रह्मचर्य्यको पाल, व्यायामकर, योग्य भोजन ले, व्यापारमें उद्यमी रह तथा सदाचारसे चल अपने धर्ममें विश्वास रखता हुआ पूर्ण सुखी हो रहा हूं। हे मित्र ! वास्तवमें यह स्त्री तो शरीरके वीर्य्यको नष्ट करनेवाली और बहुतसी आकुलताओंमें फंसानेवाली है। हां, गृहस्थको संतानके लाभार्थ पत्नीकी आवश्यकता होती है।

मित्र भी बहुत विचारशील थे—बोले—" सेठजी ! आपके विचार बहुतही अच्छे हैं, मुझे बड़ा हीआनन्द हुआ है। असलमें ब्रह्मचर्य्यके समान इस मनुष्यका कोई मित्र नहीं है। परमात्माका ध्यान वही कर सक्ता है जो इसको अच्छी तरह पालता है। आप इसकी चिन्ता न करें। मैं जानता हूं आपके पूज्य पिता बड़े ही गंभीर विचारवाले और धर्मात्मा हैं। आपको अपने जीवनका आधार उनहीको समझकर उनमें भक्ति रखनी चाहिये। फिर मित्रने पूछा कि आजकल आपका व्यापार कैसा चलता है ? सेठ मोतीचंदने कहा कि मेरे छोटे भाई पानाचंद और माणिकचंद व्यापारमें बहुत कुशल और भाग्यशाली है उनके निमित्तसे बाजारमें बहुत अच्छा काम चल रहा है। यद्यपि अभी लक्षपति तो हम अपनेको नहीं कह सक्ते पर सहस्रोंकी कितनी संख्या तक हम पहुँच गए हैं और पहुँचते जाते हैं। हमारे पानाचंदकी निगाह माल खरीदनेमें ऐसी सुघड़ है कि वे जिस मालको लेते हैं उसमें बहुत अच्छा

नफा उठाते हैं। मित्र मोतीचंदके इन शब्दोंको सुनकर चित्तमें कहने लगे कि वास्तवमें यह बहुत ही लायक मनुष्य है जो अपने छोटे भाइयोंके गुणानुवाद परोक्षमें कर रहा है और अपने आपको उनके सामने हीन जता रहा है, यही आर्य्यपन है, यही सज्जनता है, यही गुणग्राहकता है, यही एकताका कारण है। यदि परस्पर एक दूसरेके गुणोंको ग्रहण किया जाय और प्रत्यक्ष या परोक्ष एकसे ही भावोंसे गुणोंका कीर्त्तन किया जाय और दोष व छिद्र देखनेमें कम दृष्टि दी जावे तो एकतादेवी उनसे कभी नहीं रूठती है, जहाँ एक दूसरेके अवगुणको ग्रहणकर टीका की जाती है वहाँसे एकता रूठ जाती है और फूट चंडालिनीका वास हो जाता है यही गुणग्राहकताका गुण इनके पिता सेठ हीराचंदमें है। हर्षकी बात है कि इन भाइयोंमें वही गुण है तब ही ये चारों भाई एक साथ मिलकर व्यापार करते और रहते हैं— किसी प्रकारकी भिन्नता देखनेमें नहीं आती है। इस तरह अनेक बातें करते २ दोनों मित्र हवा खाकर लौट आए।

सेठ मोतीचंद उस रात्रिको घरमें बैठे थे पर मित्रका वह प्रश्न इनके दिमागसे नहीं जाता था इससे कुछ चित्तपर उदासी सी छा रही थी। सेठ हीराचंदजी नित्य रात्रिको अपने चारों पुत्रोंसे दिनभरकी बातें पूछा करते थे तब परस्पर मित्रवत् गोष्ठी करते हुए पांचों जने अपना थोड़ा समय विताते थे। यह मित्रगोष्ठी भी एकताके स्थापनका एक मुख्य कारण है। इसके निमित्तसे किसी तरहका अविश्वास व गैरसमझपना नहीं होने पाता है। उस रात्रिको सेठ हीराचंदने मोतीचंदको कुछ उदास देखा। सर्व भाइयोंके सामने तो सेठजीने

इसका कारण पूछना उचित नहीं समझा क्योंकि यह न्याय ही है कि जो अंतःकरणका रहस्य है वह एकान्तमें ही कहा जाता है। जब मोतीचंद शयनालयको गए तब सेठ हीराचंद कुछ रात्रि बीतने पर उनको जगा उनकी उदासीका कारण मालूम करने लगे। मोतीचंदको मित्रके प्रश्नकी बात कहते हुए बहुत लज्जा आती थी पर पितासे किसी बातको छिपाना भी वे उचित नहीं सभझते थे। उन्होंने थोड़ी देरबाद संध्याकालकी वार्ताको कह दिया।

सेठ हीराचंद अपने मनमें बिचारने लगे कि अब मुझे देर नहीं करना चाहिये और अपने पुत्रोंकी शीघ्र लग्न

मोतीचंदका विवाह। करना चाहिये। मोतीचंदको कहने लगे कि तुमने उसे बहुत योग्य उत्तर दिया। हमने तुमारे लिये योग्य सम्बन्ध ठीक कर लिया है। मोतीचंदने सिर नीचा कर लिया।

पाठकोंको पहले कहा जा चुका है कि हूमड़ोंका विस्तार ईडरकी ओर भी था। गुजरात देशमें **ईडर** एकदेशीराज्य है। वहाँपर अब भी बीसाहूमड़ और दशाहूमड़ जैनियोंकी अच्छी वस्ती है, भट्टारककी गद्दी है, और एक प्राचीन दि० जैन शास्त्रभंडार भी है। वहीं गांधी मोतीचंद फूलचंद बीसाहूमड़ एक धर्मात्मा दिगम्बर जैनी रहते थे। संवत १९१२ में उनको एक कन्याका लाभ हुआ जिसका नाम **रूपवती** था। यह कन्या स्वरूपमें सुन्दर थी, इसके पिता भी बहुत बुद्धिमान और धार्मिक नियमोंसे परिचित थे। इन्होंने रूपवतीको बड़े प्रेमसे पाला था, इसे शुरूसे ही श्रीजिनमंदिरजीमें ले जाया करते थे। इस कन्यामें ऐसी आदत पड़

गई थी कि यह श्री जिनेन्द्रके दर्शनमें बड़े भाव लगाती व खूब स्तुति पढ़कर नमस्कार करती थी। मंदिरमें हरएक नरनारी इसे देखकर प्रसन्न होते थे। यह कन्या मातापिताकी अति आज्ञाकारिणी थी। उस समय ईडरमें भी कन्याओंकी शिक्षाका न तो कुछ प्रबन्ध था और न मातापिताओंको यह भाव ही पैदा होता था कि हम कन्याओंको पढ़ावें। विना पुस्तकके ज्ञानके भी रूपवतीकी माताने इसे घरका सर्व कामकाज बहुत ही सुघड़ रीतिसे करना बता दिया था। रसोईकी विधि व शुद्धता, पानी छाननेकी विधि, अन्न बीनना, घरकी सफाई, वस्त्र सीना आदि सर्व कामोंको यह बहुत चतुराईसे करती थी। कभी २ पिता इसको अपने साथ धर्मोपदेश सुनानेको ले जाते थे यह बहुत रुचिसे सुनती और जो सुनती उसे धारण कर लेती थी, इसका चित्त धर्मकथा व धर्मसेवनमें खूब ही लवलीन रहता था। विवेक और दया भी इसके चित्तमें थे जिससे हरएक काममें जीवरक्षाका बहुत विचार रखती थी। यह कन्या मातापिता व कुटुम्बियोंकी अति ही प्यारी थी। माताके आग्रह होनेपर भी गांधी मोतीचंदने रूपवतीकी लग्न अल्प वयमें करना ठीक नहीं समझा। गांधी मोतीचंद यही चाहते थे कि किसी बहुत योग्य सम्बन्धके साथ इसका पाणिग्रहण किया जाय। गुजरातके हूमड़ोंमें उन दिनों सेठ हीराचंद और उनके पुत्रोंकी कीर्तिकी सुगंध फैल गई थी और हरएक उनके उद्योगकी सराहना करता था। ईडरमें भी यही चर्चा होती थी। गांधी मोतीचंदका मन भी यही चाहने लगा कि इस कन्याका सम्बन्ध बम्बईके जौहरी सेठके साथ करें, जिसमें इसका जीवन बहुत सुखसे बीते और यह दान व धर्म

खूब ही कर सके क्योंकि इसका चित्त अति ही आर्द्र और कोमल है। एक दफे गांधी मोतीचंद उस कन्याके साथ बम्बई पधारे और वहाँ मौका पाकर सेठ हीराचंदसे मिले और निवेदन किया कि हमारी कन्या रूपवतीको हम आपके श्रेष्ठ पुत्रको देना चाहते हैं।

हीराचंदने उसका जन्मपत्र माँगा तथा वह भी इच्छा प्रगट कि कि यदि आप रूपवतीको यहां लाए हों तो मैं उसे किसी मौकेपर देख भी लूँ। गांधी मोतीचंद इस बातसे बहुत ही प्रसन्न हुए और कहा कि कल श्री जिनमंदिरजीमें जब वह दर्शन करने जायगी तब आप उसको देख सक्ते हैं। सेठ हीराचंद मंदिरजीमें घंटा आध घंटा रोज सवेरे बैठते थे। दूसरे दिन गांधी मोतीचंदके साथ रूपवती बहुत ही विनयके साथ द्रव्यको लिये दर्शन करनेके लिये श्री जिन मंदिरजीमें गई, उस समय सेठ हीराचंद शास्त्र स्वाध्याय कर रहे थे। गांधीजीके साथ एक कन्याको दर्शन करते हुए देखकर बहुत ही प्रसन्न हुए, उसकी चाल, ढाल, विनय भक्ति, स्तुति पठन, सौम्य और सुन्दर रूप सेठ हीराचंदके मनमें नक्श हो गए और उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि इस कन्यासे ही मेरा पुत्र सुशोभित हो, यही सच्ची गृहिणी होगी। दूसरे समय पर गांधी मोतीचंद जब फिर सेठ हीराचंदजीसे मिले तब परस्पर वार्तालापमें एक दूसरेकी पसन्दगी हो गई, केवल जन्म पत्रिकाओंका विचार ही करना शेष रहा। थोड़े दिनके बाद यह विचार भी हो लिया।

जिस दिन सेठ मोतीचंद और एक मित्रसे बम्बईके समुद्र-तट पर वार्तालाप हुआ था उसीके तीन मासबाद संवत् १९२८ में जब मोतीचंद २९ वर्षके थे सेठ हीराचंद इनके विवाहकी तय्यारियां

करने लगे। इस समय सेठजीके चित्तमें बड़ा भारी उत्साह था क्योंकि अपने जीवनमें यह पहला ही पुत्रका विवाह था जो इनको करना था। सुरतकी स्थितिसे अब इनकी स्थिति बहुत बदल गई है, बम्बईमें भी अब यह सेठोंकी गिनतीमें है तथा अपनी हूमड़ जातिमें तो यह धनाढ्योंमें प्रसिद्ध हैं। इनका व्यापार ज्यों २ दिन बीतते जाते हैं चमकता जाता है। **पुण्यात्मा पानाचंद और माणिकचंद जिस सौदेमें हाथ डालते हैं लाभ उठाते हैं।** सेठ हीराचंदने एक रात्रिको अपने चारों पुत्रोंको एकत्र कर सम्मति ली कि इस विवाहमें कितना रुपया खर्च करना चाहिये। जिस समय इस बातको छेड़ा गया। नवलचंद जिनकी उमर १७ वर्षकी थी और जिनको कुछ बाहरी चीजोंका शौक अधिक था यकायक कहने लगे कि पिताजी! आजकल हम लोगोंका नाम बहुत प्रसिद्ध हैं, हमें इस विवाहमें खूब धन खरचना चाहिये जिसमें हमारी खूब प्रशंसा हो और जातिमें महत्पना प्रगटे। ईडर राज्यमें भी हमारी खूब ही प्रसिद्ध हो। इसकी बात सुनकर सेठ हीराचंद हंसे और बोले कि हमको बहुत उछलना कूदना नहीं चाहिये, हमें अपनी सादी चाल व सादा स्वभाव नहीं छोड़ना चाहिये। व्यापारका क्या भरोसा है? आज यदि लाभ है कल हानि हो जाय तो क्या किया जायगा? इससे हमको खूब विचार करके एक रकम इस निमित्त काढ़नी चाहिये और व्यापारमें किसी तरहकी जोखम आ जावे सो काम नहीं करना चाहिये। सेठ पानाचंद बोले, पिताजी! आप कोई शंका न करें। हमारे व्यापारमें हानि की कोई आशंका नहीं है। आपके प्रतापसे जो माल अपनी

निगाहमें आता है और खरीदा जाता है उसमें लाभ ही होता है। आप दिल खोलकर खर्च कीजिये। अपने भाग्यके अनुसार हम और बहुत कमा लेवेंगे। माणिकचंदजीने कहा कि भाई पानाचंद, यह तो तुम्हारा कहना ठीक है पर हरएक काममें पूर्वापर विचारकी जरूरत है। बाजारकी स्थितिको पलटते देर नहीं लगती है। इससे हम लोग कितना रुपया इस विवाहके निमित्त निकालें इसका पक्का आंकड़ा बांधदेना चाहिये, पिताजी उसीमें सब काम निबटावेंगे। पानाचंदजीने पितासे पूछा कि कितनी रकम आप खरचना चाहते हैं? सेठ हीराचंदजीने कहा कि विवाहमें जितना खर्च किया जाय उतना हो सक्ता है। १ हजारसे १० हजारतक खर्च हो सक्ता है, पर मेरी समझमें २०००) दो हजार रुपयेका अनुमान बांधा जाय तो बश होगा। सर्व भाइयोंके ध्यानमें यह बात जंच गई और तय होगया कि दो हजार रुपये खर्च किये जावें।

विवाहका समय निकट आते ही बम्बईमें तय्यारियां होने लगीं और नियत मितीपर बारात ईडर पहुंची। सूरत और बम्बई-से बहुतसे भाई शामिल हुए। ईडरमें गाजेबाजे आदिसे बहुतही धूम-धाम छा गई। बम्बईसे बारात आई है इस खबरसे बहुतसे नरनारी उसके देखनेको उत्कण्ठ हो घरसे निकल आए। २९ वर्षके युवान वरको घोड़ेपर सवार देखकर बुद्धिमान लोग बहुतही गुण गाते थे कि वास्तवमें विवाह तो इसी उमरमें ही करना चाहिये। बारात गांधी मोतीचंदके द्वारपर पहुंची। उसके उपर एक खिड़कीमें रूपवती वस्त्राभूषणोंसे सज्जित अतिशय यौवनमें परिपूर्ण बैठी थी।

अब इसकी अवस्था १६ वर्षकी थी । यद्यपि ईडरमें और लोग अपनी २ कन्याओंकी लग्न १२, १३ वर्ष ही में कर देते हैं पर यह खास लग्न बम्बईवालोंके सम्बन्धके निमित्तसे इस अवस्थामें हुई । यदि देखा जाय तो १६ और २५ वर्षोंका सम्बन्ध बहुत ही प्रौढ़ और योग्य होता है । कन्या रूपवती अपने पतिको अति दृढ़ जवान देखकर बहुत प्रसन्न हुई । जातिकी रसमके अनुसार लग्नादि क्रियायें हुई । गांधी मोतीचंदने बरातियोंका बहुत ही सन्मान किया, किसी प्रकारकी दिल मैली न हुई जैसी कि बहुधा आजकलके मूर्ख सम्बन्ध करने वालोंमें हो जाया करती हैं । शुभ महूर्तमें बारात विदा होकर ईडरसे सुरत आई । सूरतमें अपने जन्मके मकानमें ही सेठ मोतीचंद आदि ठहरे । वहाँ अपनी नव वधूको देखकर यह बहुत ही गदगद बदन हो गए और ऐसी सौम्य व रूपवान वधूको पाकर अपने पुण्यके तीव्र उदयको मानते हुए । कुछ दिनों बाद रूपवतीका अपने पिताके घर आना हुआ । सेठ मोतीचद व्यापारार्थ बम्बई आ गए । अभी इनको अपनी पत्नीसे सांसारिक प्रेम करनेका अवसर प्राप्त नहीं हुआ था ।

सेठ पानाचंदका विवाह ।

सेठ हीराचंदजीने सुरतमें आकर सेठ घेलाभाई धरमचंदजी तासवालाकी कन्या फूलकुमरीसे पानाचंदकी लग्न करनेका निश्चय किया, चार मास पीछे ही विवाहकी मिती नियत की । सेठजी बम्बई गए और पहलेकी तरह इस विवाहमें भी २०००) रु० खरचनेका निश्चय करके ठीक मिती पर विवाहका प्रबन्ध हुआ । पानाचंदकी अवस्था २३ वर्षके अनुमान थी ।

फूलकुमरी करीब १४ वर्षकी थी, पर शरीरमें सुकुमारपना अधिक होनेसे बहुधा अस्वस्थ रहा करती थी। शुभ मुहूर्तमें दोनोंका पाणि-ग्रहण हुआ। सूरत नगरमें इस विवाहकी खूब धूमधाम हुई। सेठ हीराचंद और सेठ घेलाभाई तासवालाने संबंधियोंका यथायोग्य सत्कार करनेमें कोई त्रुटि नहीं की।

सेठ हीराचंद अपने दो पुत्रोंका विवाह कर बहुत ही संतुष्ट हुए। इनमें किसी तरहका अपयश न पाते हुए अपनेको कृतार्थ मानते हुए।

थोड़े दिनोंके बाद मोतीचंद और पानाचंदकी पत्नियाँ बम्बईमें आ गईं। अब सेठ हीराचंदको अपने हाथसे

रूपवतीका सुघड़पना। रसोई बनानेसे छुट्टी मिली। ये दोनों स्त्रियां घरका सर्व काम कर लेती थी। दोनोंमें विशेष चतुर रूपवती थी जो अकेले ही सर्व कामकाज करनेमें निरालस्य थी। पानाचंदकी स्त्री निर्बलशरीर होनेके कारण घरके काममें अधिक मदद नहीं दे सकती थी तौभी रूपवतीको इसका कोई दुःख न था, जैसा बहुधा स्त्रियोंमें हो जाया करता है कि परस्पर द्वेष व ईर्षाभावसे प्रेम नहीं रखते सो बात इन दोनोंमें न थी। रूपवती बहुत ही सहनशील, समझदार और धर्मात्मा थी। बहुत ही आनन्दसे सारे कुटुम्को हर तरह तृप्त रखती थी।

थोड़े ही दिन पीछे रूपवती गर्भावस्थाको प्राप्त हुई। सेठ हीराचंद और मोतीचंदके दिलमें बहुतही हर्ष

रूपवतीको कन्या लाभ। हुआ। सेठ हीराचंदको आशा हुई कि अब पौत्रका मुख देखूंगा और जन्मोत्सव भले प्रकार करूंगा। ९ मास पीछे रूपवतीने पुत्री-

का जन्म दिया। यद्यपि इससे सेठ हीराचंदजीकी वह आशा पूरी नहीं हुई क्योंकि संसारमें सर्व ही काम इच्छानुसार होना अतिशय दुर्लभ है तथापि पुत्रीके होनेमें भी यथायोग्य दान पूजा व उत्सव मनाया गया। गांधी मोतीचंदको भी बहुत हर्ष हुआ। रूपवती इस कन्याको प्राप्त कर बहुत तृप्त हुई और बहुत होशियारीसे उसे पालने लगी। अब सेठ हीराचंदके कुटुम्बकोएक धनाढ्य, न्यायवान गृहस्थीको जैसा संतोष होता है ऐसा संतोष रहने लगा, सो ठीक ही है, जब पुण्यका उदय होता है तब सांसारिक अवस्थाएं साताकारी प्राप्त होतीं हैं।

पुण्योदयसे व्यापारमें वृद्धि।

उधर व्यापारमें भी दिनपर दिन वृद्धि हो रही थी। जो मोतीका व्यापार पहले साधारण था वह अब बहुत बढ़ गया था। यह मोतीके बड़े व्यापारी बाजारमें माने जाने लगे। संवत् १९३० तक इनके यहाँ लक्ष्मीका अच्छा वास हो चला। इस सालसे यह थोकबंध माल एकत्रकर बम्बईमें व परदेशमें भी बेचने लगे। हूमड़ दिगम्बरियोंमें इनको सबसे पहले सफलीभूत सुनकर इधर उधरके बहुतसे दिगम्बरी हूमड़ व्यापारार्थ बम्बई आने लगे और अपने२ ग्राम लौटकर इन सेठोंके व्यापार, सादे स्वभाव और कीर्तिकी महिमा गाने लगे। यह भी एक बड़े महत्वकी बात इन चारों भाइयोंमें थी कि **लक्ष्मीकी वृद्धिके साथ विनय, नम्रता और सादगी बढ़ती जाती थी**—अभिमान तो पास छूकर नहीं निकलता था।

चारों भाईयोंमें सेठ माणिकचन्दकी आदत मिलनसारीकी अच्छी थी। यह सबसे मिलते, उनके दुःख सुखको पूछते और जो कुछ अपनेसे बनता मदद देते थे। पाठकोंको मालूम ही है कि यह रोज श्री जिनमंदिरजीमें प्रछाल पूजन स्वाध्यायादि कार्य्य बड़े प्रेमसे करते थे। बम्बई नगरमें व्यापारादि अनेक कार्योंके निमित्त बहुधा अनेक देशोंके जैनी भाई आते और जब वे दर्शनार्थ मंदिरजीमें जाते तो जहाँ तक सेठ माणिकचन्दजीकी दृष्टि पड़ती व मौका होता यह अवश्य उन सबसे मिलते, उनका हाल पूछते और उनके कामकाजमें हर तरह सहायता देते थे। बहुतसे दक्षिण व उत्तरके जैनियोंके लौकिक और धार्मिक काम उक्त सेठकी मददसे हो जाते थे। इनके प्रतिदिनका थोड़ा समय इस प्रकारके परोपकारमें भी जाता था। कई भाई जो आजीविकार्थ बम्बई आवे उनको यह आजीविकामें जोड़ देते व जब तक विना द्रव्य कमाए उनको दो चार मास रहना पड़ता यह उनके भोजन खर्चका व ठहरनेका प्रबंध भी कर देते थे।

माणिकचंदका परोपकारी स्वभाव।

छोटे व बड़े सबके साथ बहुत ही प्रीतिसे बात करना इनका एक जातीय स्वभाव था। अन्य तीन भाइयोंमें मिलनसारीका गुण बहुत ही साधारण था। यदि कोई चाह करके बात करता तो ये सुनकर उसको उत्तर देते थे। ये तीनों भाई अपने नित्यके चालू काम करनेमें ही दत्तचित रहतेथे परोपकारकी खोज नहीं करते थे तो भी अभिमानी व संकुचित चित्त नहीं थे। जिस परोपकारके काममें सेठ माणिकचंद द्रव्य खर्चनेकी इच्छा प्रगट

करते ये सर्व बड़ी ही खुशीसे राजी हो जाते थे। सेठ माणिकचंद परोपकारी व धर्मात्मा हैं यह देखकर सर्व भाइयोंको बहुत ही हर्ष होता था। इस कारण माणिकचंदजीका सुयश अभी ही से दूर दूर तक फैलना शुरू हो गया था। बहुतसे परदेशी हूमड़ बम्बईमें आकर जब यह मालूम करते कि सेठ माणिकचंदजी अभी तक कुमारे हैं तब उनके चित्तमें यह इच्छा हो उठती कि हम अपनी कन्या ऐसे ही योग्य पुरुषको परणावें तो उसका जन्म सफल हो।

सेठ माणिकचंदजीका विवाह।

शोलापुर जिलेके करमाला तालुकेके **नान्नेजजवाला** ग्रामनिवासी एक मुख्य हूमड़ साह पानाचंद उगरचंद दोभाड़ा भीएक दफे बम्बई आये और सेठ माणिकचंदको प्रत्यक्ष देखकर बहुत ही प्रसन्न हुए। इनके तीन कन्यायें और एक पुत्र था। जिनमें दो कन्यायोंका विवाह हो चुका था और तीसरी कन्या कुमारी थी जो बहुतही सौम्य शरीर, गुणशाली और चतुर थी, जिसका नाम भी **चतुरमती** था। इसकी माताका नाम माणिकबाई था। इस कन्याके लाभसे मातापिताको बड़ा भारी हर्ष था और इसे सब ही चाहते थे। यह अपने मातापिताकी आज्ञानुसार चलनेवाली व माताके सिखानेसे घरके कामकाजमें अति प्रवीण हो गई थी। मातापिता यह चाहते थे कि इसको किसी प्रसिद्ध पुरुषके साथ ही परणाया जाय। सूरतके इन चारों भाइयोंकी कीर्ति दूर २ तक हूमड़ोंमें फैली हुई थी। शाह पानाचंद दोभाड़ा माणिकचंद सेठको कुमारा जानकर बहुत ही संतोषित हो अपने चित्तमें यही ठानते हुए कि हम अपनी **चतुरबाईको** इन्हींके

साथ परणाएंगे। शाहजी सेठ हीराचंदसे मिले और अपनी इच्छा प्रगट की। सेठ हीराचंद भी यह चाहते थे कि माणिकचंदकी आयु अब २२ वर्षकी हो गई है अतएव इसका विवाह हो जाना ही मुनासिब है, पर सेठजी बहुत चतुर थे। वे हीरेको विना देखे हीरा कहनेवाले नहीं थे। शाह पानाचंदजीको कहा कि यदि आपकी इच्छा अपनी कन्या देनेकी है तो एक दफे आप उसे लेकर बम्बई आइये, मैंउसे देखकर व जन्म पत्री जांचकर आपसे पक्का सम्बन्ध करूंगा। साह पानाचंदको तो यह खटका था, शायद सेट माणिकचंदकी सगाई कहीं और हो गई हो तो हमें निराश होना पडेगा सो अब वह शंका निकल गई और यह निश्चय हुआ कि अवश्य मेरी मनोकामना पूर्ण होगी क्योंकि वह कन्या भी एक भाग्यशाली है। कौन ऐसा है जो उसके गुणोंको पसन्द न करैं ? पानाचंदने सेठ हीराचंदजीको कहा कि आपकी इच्छानुसार ही कार्य्य होगा। कुछ काल पीछे दोभाड़ाजी बम्बईमें व्यापारिक काम करके लौटे और अपनी पत्नी व चतुरमतीको साथ लेकर श्री कुंथलगिरीकी यात्रा करते हुये बम्बई पधारे और अवसर पाकर सेठ हीराचंदजीको खबर दी कि कल आप मंदिरजीमें मेरी कन्याका निरीक्षण करैं। दूसरे दिन साह पानाचंद दोभाड़ा सपत्नीक चतुरमतीके साथ श्री जिनमंदिरजी गए। उस समय सेठ हीराचंद स्वाध्यायसे निवृत्त हो समतासे बैठे थे इतनेमें देखते क्या हैं कि एक कन्या चंद्रमाके समान अपनी मुखकी सौम्यताको प्रगट करती हुई बहुत विनयके साथ मुंह नीचा किये जमीनको देखती हुई हाथमें एक वाटकीमें सामग्री लिये हुए अति कोमलाङ्गी सुघड़पनेको धारे हुए एक बड़ी स्त्रीके साथ मंदिरजीके भीतर आई। पीछेसे शाह पानाचन्दजी

दोभाड़ा भी आए। इनको देखते ही सेठ हीराचन्दने निश्चयकर लिया कि यही वह कन्या है जिसके लिये माणिकचन्दको दोभाड़ाजीने चाहा है। इसको विनयसे दर्शन करते, सामग्री चढ़ाते, स्तुति करते, प्रदक्षिणा देते व नमस्कार करते हुये देखकर हीराचंदजी बहुतही राजी हुए तथा इसके गुणोंकी झलकसे हीराचंदजीको निश्चय हो गया कि माणिकचंदको हर प्रकार प्रसन्न करनेवाली यह कन्या होगी। उधर सेठ माणिकचंदजी भी स्वाध्याय कर रहे थे। एकाएक वे उठे और उनकी दृष्टि इस कन्याके मुखपर पड़ी, पड़नेके साथ ही इनका मन उसको अपने अंतःकरणमें रखकर लोभायमान हो गये। दक्षिण व गुजरातकी स्त्रियोंमें परदा रखनेका रिवाज न अब है और न पहिले था। यह परदेका रिवाज बंगाल, विहार, युक्तप्रांत और पंजाबमें मुसल्मानोंके विशेष सम्बन्धसे ही चला है। वह कन्या अपनी माताके साथ एक कोनेमें जाप करने बैठ गई। साह पानाचंद भी जाप पाठ करने लगे। अपने स्वाध्याय करनेके स्थान पर सेठ माणिकचन्दजी फिर बैठकर एक और शास्त्रको निकाल बाहरसे देखने लगे पर इनका मन उस कन्याके ख्यालमें उलझ गया था। उधर वह कन्या जब अपनी माताके साथ उठी और चलते हुए जब फिर श्री जिनेन्द्रके सन्मुख नमस्कार करनेको आई तब नमस्कार करनेके पीछे चलते हुए उसकी दृष्टि सेठ माणिकचंद पर पड़ी और उसके हृदयने उसको यही गवाही दी कि यदि यह कुमार हो तो मेरे पति होने योग्य यही है। इस कन्याकी अवस्था अनुमान १६ वर्षके होगी।

दूसरे समयपर शाह पानाचंद दोभाड़ा सेठ हीराचंदजीसे

मिले और बातचीत करके व जन्मपत्र आदि देख दिखा कर इस सम्बन्धका पक्का निश्चय कर लिया और शीघ्र ही विवाहकी मिती तय करली।

एक दिन सेठ हीराचंद मोतीचंद और पानाचंदको माणिकचंदके इस सम्बन्ध होनेकी बात कह रहे थे व चतुरमती कन्याकी बहुत प्रशंसा कर रहे थे, कारणवश सेठ माणिकचंद भी उस समय घरमें आए और उनके कानमें यह सब शब्द सुन पड़े। इन शब्दोंके सुननेसे सेठ माणिकचंदजीको जो हर्ष हुआ वह वचन अगोचर है। वह जिस रूपको अपने चित्तमें बिठा चुके थे, जिसकी मूर्तिका नक्शा अपने अंतःकरणकी भूमिपर जमा चुके थे, जिसके पुष्प गुणोंकी सुगंध अपनेको स्पर्शित करानेके लिये आकर्षण कर चुकी थी, उसके लाभका दृढ़ निश्चय जानकर, उससे साक्षात्कार होनेका दृढ़ विश्वास कर व उस मूर्तिके साक्षात् ग्रहणका उमंग धारकर सेठ माणिकचंद अपनी युवावस्थाके निमित्त काम भावके विचारोंमें उलझकर मन मोदक बनाने लगे।

२२ वर्षकी आयु धारी सेठ माणिकचंदकी बारातमें बम्बई व सूरतके बहुतसे हूमड़ोंको लेकर सेठ हीराचंद दक्षिणकी ओर रवाना हुए। वहाँपर महाराष्ट्रदेशकी शोभा इनको गुजरातकी अपेक्षा एक विलक्षणता बताती थी। सेठ हीराचंदने अपने पुत्रोंसे संम्मति करके इस विवाहमें २०००) रु. खर्च करनेका निश्चय किया। बहुतही धूमधामसे नात्रजजवला ग्राममें बारात पहुँची। गांववाले बम्बईके सेठों व सूरतके गुजरातियोंकी पगड़ियोंको देखकर आश्चर्यान्वित हुए और चतुरमतीके भाग्यकी सराहना करने लगे। सारे ही गांववाले

सेठ माणिकचंद्रको सिंह समान तेजस्वी, २२ वर्षका नवयुवक और बलिष्ठ देखकर बहुतही आनन्दित हुए और ऐसा उत्तम सम्बन्ध प्राप्त करलेनेके निमित्त शाह पानाचंद दोषाड़ाकी बुद्धिमानीकी खूब प्रशंसा करने लगे ।

शुभ महूर्तमें लग्नादिक क्रियाएँ हुई । जिस समय सेठ माणिकचंदका हाथ चतुरमतीके हाथसे मिलाया गया उस समय दोनोंको परस्पर स्पर्श होनेसे ऐसा हर्षभाव हुआ कि जैसा किसीको अमृतरसके पीने व चिन्तामणि रत्नके लाभसे होता है । सो बात ठीक ही है जहाँ प्रेमभावका सम्बन्ध होता है वहीं अपनी कल्पनासे रतिपना झलकता है । सांसारिक सुख मनकी कल्पनाका फल है । इस विवाहमें श्री जिनमंदिरजीको व अन्य स्थानोंको दान धर्म भी अच्छी तरह किया गया ।

रूपमतीकी पुत्रीका परलोक ।

इस विवाहको पूर्ण करके और नवीन वहूको लिवाकर सेठ हीराचंदजी बम्बई आए और थोड़े दिन सुखसे रहे कि एकाएक सेठ मोतीचंदकी पुत्री एक रात्रिको अतिशय शीत पवनके लग जानेसे बीमार पड़ गई । कुछ दिनतक बीमार रही । उसके अच्छे होनेके लिये खूब रुपये खर्च हुए पर वह अच्छी न हुई । उसकी आयुका अंत आन पहुंचा और वह सारे कुटुम्बको उदास करके व रूपवतीको अतिक्लेशित अवस्थामें छोड इस जड़मयी शरीरको छोड़कर चलदी—उसका आत्मा अन्य पर्यायको प्राप्त हो गया ।

इस समय सेठ हीराचंदजीको जो दुःख हुवा, रूपमतीको

जो क्लेश हुवा व मोतीचंदको जो उदासी हुई उसको वे ही जानते हैं। **संसारका चारित्र ऐसा क्षणिक है कि किसीका भरोसा नहीं है** । जिस वस्तुपर यह आस्था की जाती है कि यह वस्तु हमारे पास बनी रहेगी वही वस्तु कालान्तरमें जब लुप्त हो जाती है तब इस क्षुद्र मनुष्यका कोई वश नहीं चलता और यह हाथ मलकर रह जाता है। जिस कुटुम्बको थोड़े ही दिन पहले सेठ माणिकचंदजीके विवाहसे हर्ष हुआ था उसीको इस समय शोक प्रवाहमें बहना पड़ा।

केशरियाजीकी यात्रा।

थोड़े ही दिन पीछे सेठ हीराचंदजीके भाव श्री **केशरिया**-जीकी यात्राके हुए। गुजरात व मेवाड़के जैनियोंको इस अतिशय क्षेत्रकी पूर्ण भक्ति है। यह क्षेत्र उदयपुर राज्यमें धुलेव व ऋषभदेव नामके ग्राममें है। जहाँ यह क्षेत्र है वहाँ अति प्राचीन श्रीऋषभदेवजी जैनियोंके प्रथम तीर्थंकरकी बहुत ही मनोज्ञ और सौम्य दिगम्बर जैन बिम्ब मूल मंदिरजीमें विराजमान है। वही केशरियाजीके नामसे प्रसिद्ध हो गया है। प्रायः जैनियोंमें भी ऐसे लोग पाए जाते हैं जो किसी लौकिक कामकी सिद्धिके लिये ऐसी कामना करते हैं कि यदि हमारा अमुक कार्य्य सिद्ध हो जायगा तो हम अमुक काम करेंगे। किसी प्रसिद्ध धनाढ्यने यह भावना की होगी कि हमारा अमुक काम हो जायगा तो हम अमुक तौलभर केशर चढ़ावेंगे। उस कार्यकी सिद्धि उसके पूर्व पुण्यके उदयसे हुई पर उसने यही विश्वास कर लिया कि मैंने जो मानता मांगी थी उसको श्री ऋषभदेवजीने पूर्ण कर दी, उसने वहां बहुतसी केशर चढ़ाई। यह

बात ज्यों २ प्रसिद्ध हुई और लोग भी ऐसा करने लगे। इस तरह इस क्षेत्र व प्रतिमा दोनोंको केशरियाजीके नामसे पुकारने लगे। यह भव्य मूर्ति करीब ६ फुट ऊंची पद्मासन श्याम वर्ण अति सौम्य है। इस पर कोई सम्वत नहीं है इससे वह संवत लिखनेके रिवाजसे पहलेकी निर्मापित है। इसके चारों ओर और भी दि० जैन मूर्तियां एक धातुपटमें अंकित हैं। इस मूल मंदिरके चारों ओर और भी वेदियाँ हैं जिनमें दि० जैन मूर्तियां विराजमान हैं, मन्दिरके चारों ओर एक बड़ा भारी कोट हैं जिसको **सागवाड़ा** निवासी **हूमड़** जातीय दिगम्बर जैनी **सेठ धनजी करणजीने** सं० १८६३ में बनवाया था। इस क्षेत्रकी भक्ति करनेको दिगम्बर श्वेताम्बर सर्व जैनी जाते हैं। पहले सर्व प्रबन्ध दि० जैनियोंके भट्टारकोंके हाथमें था, पीछे उनकी ढीलसे राज्यने एक कमेटीके आधीन किया है जिसमें ८ मेम्बर हैं उसमें अधिकांश श्वेताम्बरी हैं, इससे वहां प्रतिमाओं पर केशर फूल व श्रृंगारादि होने लगा है। श्वेताम्बरियोंने मूल प्रतिमाजी पर कई बार चक्षु चढ़ाना भी चाहा था परंतु इस प्रतिमाजीके अतिशयके कारण वे ऐसा न कर सके। यद्यपि यहां १०० घर दि० जैनयोंके हैं पर प्राय: सर्व मामूली व्यापारी हैं। मुखिया सेठ बच्छराजजी व सेठ छगनलालजी हैं। यह मंदिर इतना प्रसिद्ध है व इसकी ऐसी मान्यता है कि **इसके चारों ओर शिकार खेलना व मत्स्यादि मारना मना है**। गांवके बाहर सूर्य कुंड नामका तालाब है जिसके किनारे पर इसी मनाहीका एक लेख है जिसमें हस्ताक्षर जान सी० ब्रुक केप्टेन स्कुल—हिली ट्रेक्स

मेवाड़ खेरवाड़ा ता० २२ मई सन् १८५४ है। इसकी अंग्रेजी नक़ल यह है—

NOTICE.

To all whom it concerns the shrine of Rikhsabdeva being one held in great sanctity by the Hindus of Gujrat and other countries, gentlemen and others encamping in the place are requested not to kill peafoul or peageons in the neighbourhood or to catch the fish in the small pucka tank, near the village or to kill animals there.

Kherwarah
22 nd May
1854.

John C. Brooke
Captain Sule-Hilly Trocks,
Mewar.

इस क्षेत्रकी भक्ति करनेकी बहुत कालसे सेठ हीराचंदजीकी इच्छा थी सो अब सर्व कुटुम्बको लेकर सेठ हीराचंदजी केशरियाजी पधारे। सेठ माणिकचंद पानाचंद और मोतीचंद व्यापारार्थ बम्बई ही में ठहरे। वहाँ जाकर इन्होंने बहुत कुछ दान पुण्य किया। यहाँसे श्रीतारंगाजी गिरनारजी और पालीतानाकी यात्रा बड़े भावसे की और धर्ममें जी खोलकर पैसा लगाया। यात्रासे लौटकर श्री केशरियाजीकी वीतराग प्रतिमाकी महिमा अपने पुत्रोंसे कही जिसे सुनते ही माणिकचंदजीसे न रहा गया वे अकेले एक नौकरको साथ ले केशरियाजी पहुंचे और वहां बड़े भावसे पूजन भजन करके बहुत दान पुण्य किया।

सेठ माणिकचंदजीका चरित्र लिखते हुए ता० २९ अक्टूबर

१९०२का गुजराती पत्र 'सत्यवक्ता' अपने अंक १९ पुस्तक १७में इस भांति कहता है:—

"तेओ सं० १९३१मां पवित्र स्थान श्रीकेशरीआजीनी महान् यात्राए गया हता, ते समय त्यां मोटो खर्च करी आवा धर्मने शोभा आपनारां मान्य भरेलां कार्यो करी आव्या हता."

सेठ माणिकचंदजीको विद्या व धर्ममें शुरूसे ही प्रेम था। इसी कारण वहाँके दिगम्बर जैनियोंको आपने शास्त्रस्वाध्याय करने व अपने २ बालकोंको विद्या पढ़ाने व धर्मके स्तोत्रादि सिखानेकी प्रेरणा की। केशरियाजीसे लौटकर सुरत होते हुए माणिकचंदजी बम्बई आए।

अब सेठ हीराचंदजी अपना समय धर्मध्यानमें अधिक देने लगे। इनको न तो अब घरके कामकी चिन्ता थी और न व्यापार की। चारों भाई बड़े प्रेमसे इस तरह द्रव्य उपार्जनमें वृद्धि पा रहे थे जिस तरह दुइजका चंद्रमा प्रतिदिन अपनी कलाको बढ़ाता जाता है।

सेठ हीराचंदके चित्तमें कभी २ जो ख्याल उठ आता था वह केवल अपने चतुर्थ पुत्र नवलचंदके विवाहका था। नवलचंदकी लग्नके लिये हीराचंदके पास प्रतिदिन इधर उधरसे आदमी आते व पत्र आया करते थे पर सेठ हीराचंदने तो यही ही निश्चय कर रक्खा था कि २२ वर्षकी आयु जब तक नवलचंदकी न होगी तब तक हम उसकी लग्न नहीं करेंगे। तथा सगाई भी १ वर्षसे अधिक पहिले नहीं करेंगे। दिन जाते देर नहीं लगती है। संवत १९३२के अंतमें इनके पास टेंभुरणी

सेठ नवलचंदका विवाह।

जिला शोलापुरनिवासी दोभाड़ा देवचंद जीवराज बम्बई आकर मिले और अपनी पुत्री प्रसन्नकुमरीका वर्णन किया। हीराचंदजीने जन्मपत्र दिया और लिया तथा पुत्रीके देखनेकी इच्छा प्रगट की। देवचंदजीने कहा-मैं दो मास बाद बम्बई आऊंगा तब मैं उसे लेता आऊंगा। यद्यपि वह ११ वर्षकी है पर शरीर ठिंगना है। मैं आपके पास ही उसे उस समय ले आऊंगा जब आपके पुत्र व्यापारार्थ घरसे बाहर जाते हैं। देवचंदजी अपने कहनेके अनुसार प्रसन्नकुमरीको लाए। सेठ हीराचंदजी उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुए। यह भी बहुत ही प्रसन्नचित्त, ठंडेमिज़ाज़ और लज्जावती थी। इसके मुखको देखकर हीराचंदजी राज़ी हो गए। और संवत् १९३३ में लग्नकी मिती निश्चित हो गई। ज्योंही देवचंदजी प्रसन्न-कुमरीको लिये हुए घरसे बाहर जा रहे थे कि उधरसे नवलचंद किसी कामके लिये घर आए थे सो इस कन्याको सिरसे पैर तक देखकर भौंचकसे रह गए और वह कन्या भी इनके प्रफुल्लित और दृढ़ शरीर व मुखको देखकर आनन्दित हो गई। दोनों अपने २ रास्ते चलदिये पर अपने २ मनमें एक दूसरेके रूपकी झलकको न भुला सके। प्रेमका अंकुरा उसी दिन उग उठा। यह उसी प्रेम अंकुरेका प्रभाव है जिससे आज भी यह प्रसन्नबाई अपने पतिकी प्रेमपात्रारूप होती हुई व कई पुत्रपुत्रियोंकी माता होकर सेठ नवलचंदके अर्द्धांगिणीपनेके कर्तव्यको बजारही है।

इस शुभ लग्नमें सेठ हीराचंद एक बड़ी बारातको लेकर व ४०००) खर्चका निश्चयकर दक्षिण दिशामें नवलचंदके विवाहार्थ

पधारे। टेंमुरणी छोटासा कसबा है। बम्बईवाले व्यापारियोंका ठाठबाट पहनाव उढ़ाव व बारातका उत्सव देखनेके लिये आस-पास ग्रामोंके इतनेलोग आगये थे कि कई दिन तक टेंमुरणीमें एक बड़ाभारी मेलासा होगया था और गरीबोंको भोजनादिसे भी तृप्त किया था। विधिके साथ लग्न होकर सेठ नवलचंद नवोढ़ा प्रसन्नकुमरीके साथ बिदा होकर अति प्रसन्नतासे सर्व संघसहित बम्बई आए और जैसे और तीनों भाई सपत्नीक गृहीधर्ममें लीन थे ऐसे यह भी लीन होगए।

सेठ हीराचंदजीको संतोष।

अब सेठ हीराचंद चारोंही पुत्रोंका विवाहकर और उन्हें व्यापार और गृहस्थधर्मके साधनमें तल्लीन कर अपने कर्तव्यको साधन कर बहुत ही संतुष्ट हुए और जब कभी यह अपनी उस सुरत नगरकी उस अवस्थाका मिलान जब कि इनकी स्त्रीका देहान्त हुआ था इस समयसे करते थे तो इनको अपने व अपने पुत्रोंके पुण्योदय पर बहुत ही तृप्तता होती थी। और यही मनमें आता था कि यद्यपि पूर्वजन्मकृत पुण्यकर्म्मका उदय ही लक्ष्मी, कीर्ति आदि सामग्रियोंके संयोग करानेमें कारण है तौभी इस जन्मकृत धर्मसेवनसे बांधा हुआ पुण्य भी इस जन्ममें अपना उदय दे सक्ता है क्योंकि हमने अनेकबार शास्त्रोंमें सुना है कि जो कर्म्म यह जीव बांधता है उसमें स्थिति अंतमुहूर्त्त तककी पड़ सक्ती है। इस-से यदि किसी पुण्य या पापकर्मकी स्थिति १० व २० वर्षकी पड़े तो इसी जन्ममें उसका सर्व फल भोग लिया जाता है। इस कारण यह बात बहुत ही उचित है कि बाल्यावस्थासे ही धर्मका

सेवन किया जाय। यह धर्म इस लोक परलोक दोनोंमें उपकारी है। धर्मके सेवनसे इस लोकमें भी मनमें शांति होती है और आगामी भी धर्मका उत्तम फल होता है। यह बड़े आनन्दकी बात है कि हमारे चारों ही पुत्रोंका ध्यान धर्मके सेवनमें है। इस धर्मकी संगतिसे ही वे सदाचारी हैं और कीर्तिमान हो रहे हैं। हीराचंदजी ऐसा विचार करते हुए अब चित्तमें अति शांति रखने लगे।

चारों स्त्रियोंमें एकता।

यह बात भी बड़े आनन्दकी थी कि सेठ हीराचंदजीके घरकी स्त्रियोंमें कोई तकरार नहीं थी। चारों ही स्त्रियां बड़े हेलमेलके साथ रहती थीं। रूपमतीबाईकी शांत प्रकृति व काम करनेकी चतुराई व सहनशीलता और धार्मिक झुकावका ऐसा प्रभाव था कि जिसके सामने अन्य तीनों स्त्रियां रूपमतीकी आज्ञामें चलती थीं। वास्तवमें जिस घरकी स्त्रियोंमें सुमति होती है वहां अवश्य लक्ष्मी और आनन्दका निवास होता है। तथा वह घर ही वास्तवमें घर है जहां सुमति और एकता देवीका निवास है। उस घरमें पुरुषोंको एक आनन्द बाग नज़र आता है। इसके विरुद्ध जिस घरकी स्त्रियोंमें अनैक्य व कुमति होती है वहां भावोंके अशुभ रहनेसे प्रायः दारिद्य, दुःख और अपकीर्तिका निवास होता है और वह घर पुरुषोंके लिये एक नर्कके समान भासता है। बाहरके कामकाजसे त्रासित मुख होकर घरमें घुसते हुए उनको और अधिक त्रास भोगना पड़ता है। अपनी पत्नीसे मिष्ट व आनन्दित बचनोंके सुननेके स्थानमें उनको कटुक और दुःखभरी घर भरकी शिकायतें इस तरह सुननेको

मिलती हैं जिससे हृदय बड़ी भारी चिन्ता और खेदमें पड़ जाता है। पर जहाँ सुमति व एकताका वास है वहाँ घरमें पहुंचते ही स्त्रियोंके मुख पर प्रफुल्लता दीखती है। जब पति अपनी पत्नीसे मिलता है मिष्ट और प्यारकी भरी वार्तालापसे चित्त खिल जाता है। उसकी बाहरकी सारी थकावट दूर हो जाती है।

पूर्व पुण्यका उदय।

यद्यपि शुभ व साताकारी सम्बन्धकी प्राप्तिमें अंतरंग पुण्यका उदय निमित्त कारण है तौभी बाह्य पुरुषार्थकी भी आवश्यकता है क्योंकि अंतरंग पुण्योदय होने पर भी धनकी प्राप्तिमें बाह्य कारण व्यापारादिका निमित्त मिलाना ही पड़ता है। इसके सिवाय श्री समन्तभद्राचार्य्यने भी दैव अर्थात् पूर्वपुण्यके उदय और पुरुषार्थके सम्बन्धमें एकान्त पक्षका निराकरण करते हुए यही कहा है—

अबुद्धिपूर्वापेक्षायां इष्टानिष्टं स्वदैवतः।
बुद्धिपूर्वापेक्षायां इष्टानिष्टं स्वपौरुषात्॥

अर्थात्—जो कोई कार्य्य अबुद्धि पूर्वक अर्थात् अपनी बुद्धिके विना लगाए अकस्मात् होता है जिससे अपना इष्ट या अनिष्ट हो, जैसे बैठे २ अपने ऊपर मकानका गिर पड़ना वह कार्य्य अपने पूर्व कृत कर्मके उदयकी मुख्यतासे होता है पर जो बुद्धि पूर्वक कार्य्य होते हैं जैसे धनागम, भोजनपान उनमें अपने इष्ट या अनिष्ट होनेमें मुख्यता अपने पौरुषकी है यद्यपि इसमें भी सिद्धिका होना अंतरंग पुण्यकर्मका उदय है परंतु पुरुषार्थ मुख्य इसलिये है कि यदि उद्योग न होता तो वह पुण्य कर्म यों ही झड़ जाता इसलिये पुरु-

षको तो सदा पुरुषार्थी ही रहना ही चाहिये । सेठ हीराचंदका सन्तोष और चारों भाइयोंका अटूट परिश्रम ही इस उन्नतिमें मुख्य कारण हुआ है । यद्यपि अंतरंग पुण्य कर्म-का भी उदय है पर जैन सिद्धान्तानुसार प्रायः बाह्यनिमित्तके न होने पर कर्म्म विना रस दिखलाए यों भी झड़ जाता है। जैसे किसीको भगवत् भजनमें २ घंटे लगे उसको उस समय किसी बातकी असाता नहीं है । उस वक्त मन्द असाता वेदनी कर्म अपना विना रस दिये ही झड़ रहा है। युवावस्था व गृहस्थाश्रम-के सुख भोगते हुए चारों भाई अपने पूज्य पिताका बहुत ही भक्तिसे सन्मान करते हुए रहने लगे और दिन पर दिन व्यापार वृद्धि करके धन द्वारा अपने ऐश्वर्यको बढ़ाने लगे ।

अध्याय छठा ।

सन्तति लाभ ।

व्यापार वृद्धिका कारण ।

ज्यों २ बृटिश राज्यकी दृढ़ता भारतमें होती गई त्यों २ विलायतके साथ भारतका व्यापार संबन्ध बढ़ता गया। संवत १९३२ या सन् १८७५ में जब वहां लार्ड नार्थब्रुक वायसरायका काम कर रहे थे तब भारतमें एक बड़ी भारी बात यह हुई कि भारतकी रमणीकता हाल जानकर भारतकी सैर करनेके लिये बादशाह इंग्लैण्डके पुत्र **प्रिन्स आफ वेल्स** बम्बईमें ता. ८ नवम्बरके दिन पधारे, उनके स्वागतार्थ सारा बम्बई नगर खूब सजाया गया था, जगह २ ध्वजाएं सुशोभित थीं, २ मास पहलेसे सर्व नगरवासियोंने अपने २ मकान झाड़ने, पोतने और संवारने शुरू कर दिये थे। हम बादशाहके पुत्रसे मिलेंगे ऐसी उत्कंठा देशीराजाओं व प्रतिष्ठित मनुष्य और धनपात्रोंको हुई, इससे हमें वस्त्र और आभूषण अच्छे २ बनाने चाहिये, इस भावके जगनेसे बम्बईमें **जवाहरातकी विक्री खूब बढ़ी**। मोतियोंके कंठोंकी बहुत माँग हुई। इस समय सेठ माणिकचंद पानाचंदने बहुत अच्छे २ कंठे तय्यार किये और दलालोंके द्वारा विक्री कर बहुत लाभ उठाया। इन चारों भाइयोंमें मोतीको छांट कर ठीक रीतिसे ऐसा सजाना कि उन सबकी लड़ी एक विशाल शोभाका विस्तार करै इस बातका एक अपूर्व गुण था। राजकुमार दिहली, पटियाला, ग्वालियर, इन्दौर आदि स्थानोंमें भी गए थे

इससे वहाँके लोगोंमें भी जवाहरात खरीदनेकी बहुत उमङ्ग हुई थी। सेठ माणिकचंद पानाचंदका बहुतसा मोती इन शहरोंमें भी खूब बिका। इतने ही में हिन्दुस्तानमें यह खबर उड़ी कि ता० १ जनवरी सन् १८७७ (अर्थात् संवत १९३४) को **दिहली**में एक बड़ा भारी **दरबार** होगा जिसमें सर्व राजा महाराजा आदि प्रतिष्ठित जन शरीक होंगे। इस दरबारकी खबरने और भी लोगोंके चित्त-को सुन्दर २ वस्त्राभूषण खरीदनेके लिये उभार दिया। इस मौके-को पाकर उक्त सेठ माणिकचंद पानाचंद और भी उद्योग शील हुए, और अच्छे २ मोतीके कंठे बनाकर बम्बई व हिंदुस्तानमें बिक्रीकर **खूब नफा** उठाया। यह दरबार भारतमें बड़ा नामी हुआ। पार्लियामेन्टने **महारानी क्वीन विक्टोरियाको एम्प्रेस आफ इन्डिया** अर्थात भारतकी बादशाहज़ादीका पद देनेके लिये यह दरबार करवाया था। इससमय भारतके वाइसराय **लार्ड लिटन थे**। इस दरबारमें बहुतोंको ईनाम व पेन्शनें दी गईं तथा १६००० कैदी छोड़ दिये गए।

विलायतसे व्यापार।

माणिकचंदजीको इधर उधर हरएकसे मिलने जानेका व सभा आदि देखनेका बहुतही शौक था। यद्यपि यह दूकानमें व्यापारकी अधिकतासे दिहली तो न जासके पर बम्बईमें इसकी चर्चामें खूब दिल आते थे। इन्होंने मालूम किया कि विलायतवालोंको भी जवाहरात लेनेका अब शौक हो चला है। जब प्रिन्स आफ वेल्स विलायत लौटकर गए और अपने मित्रोंसे

भारतके राजा महाराजा धनाढ्योंके आभूषण पहननेका वर्णन किया तबसे वहाँके लोगोंमें जवाहरात खरीदनेका जो शौक थोड़ा था वह बहुत ही बढ़ गया । बम्बईमें एक पारसी व्यापारी सेठ फरामजी एण्ड सन्सकी कम्पनी है । इन्होंने पहले पहल विलायके व्यापारियोंको जवाहरात भिजवानेका उद्योग किया । बम्बईमें एक जौहरी व्यापारी सेठ साकरचंद लालभाई श्वे० जैनी हैं, सबसे पहली इन्हींके मालको फरामजी कम्पनीने विलायत भेजना शुरू किया । माणिकचंदजी सेठ फरामजीसे मिले और विलायत किस तरह माल भेजना उसका सर्व कायदा जानकर अपने भाई पानाचंद और नवलचंदसे कहा । इस समय मोतीचन्द बीमार थे । इनको भगंदरका रोग हो गया था जिससे दूकान पर बहुत कम आते जाते थे । पानाचंदने कहा कि जब हमारा व्यापार यहीं खूब चमक रहा है तब हमें इतनी दूर अपना माल भेजनेकी क्या जरूरत है ? इतनेमें नवलचंद साहस करके बोले कि भाई, व्यापार करनेमें हमें संकोच नहीं करना चाहिये, यहाँ तो हमें थोड़ासा ही लाभ मिलता है पर विलायतमें अभी ही मालकी विक्री शुरू हुई है, वहां शाहज़ादेके लौटनेसे नया २ शौक बढ़ा है, तथा अभी इस बाज़ारमें केवल एक ही व्यापारी माल भेजते हैं वहाँ दुगने तिगने हो जानेमें कोई संदेह नहीं है इससे विलायतके साथ व्यापार अवश्य शुरू करना चाहिये । माणिकचंदजीने भी इस बातका समर्थन किया, पानाचंदजी चुप हो रहे । तय हो गया कि फरामजी कम्पनीके मारफत माल भेजा जाय ।

बम्बईसे विलायत माल भेजनेवालोंमें दूसरे देशी व्यापारी **सेठ माणिकचंद पानाचंद** हुए।

प्रथम पारसलमें घाटा । पहले एक पारसल भेजा उसपर विलायत-वालोंने बहुत कमती दामोंकी मांग की। इसको देखकर पानाचंद चित्तमें बहुत नाराज़ हुए, पर विलायतवालोंकी जवाहरातके खरीदनेमें सदा ही यह आदत रहती है कि वे पहिले बहुत कम दाम देते हैं फिर धीरे २ बढ़ते हैं, इनके इनकार करनेपर थोड़ा २ दाम बढ़ाकर ऑफर आया। पानाचंदकी यह आदत नहीं थी कि किसी सौदेमें इतनी देर लगाई जाय। अब भी लागतमें नुकसान ही होता था। पानाचंदने माणिकचंद और नवलचंदको कहा कि विलायतवाले माल पहचानना नहीं जानते हैं। हमने तुम्हारे कहनेसे वहाँ माल भेजा नहीं तो अब तक हम उसमें बहुत कुछ नफा कर लेते, अब तो हम ज्यादा न ठहरकर घाटेसे ही बेचे डालते हैं और आगामी हम माल भेजना पसन्द नहीं करते। दोनों भाइयोंने बहुत समझाया भी कि अभी आप ठहरें, थोड़े ही दिनोंमें अच्छा ओफर आएगा पर पानाचंदजी झुँझला गए, इस तरह इन्होंने पहिले पारसलमें घाटा सहा।

कुछ दिन बाद माणिकचंद और नवलचंदने सलाह की कि यह बात तो ठीक नहीं हुई कि हमारी

दूसरे पारसलमें दुगना मुनाफा । सलाहसे विलायतके व्यापारमें घाटा हो। हमें फिर भी साहस करना चाहिये और देखना चाहिये कि क्यों नहीं नफा होता है।

साकरचन्द लालभाईने तो विलायतके व्यापारमें अच्छी सफलता पाई

है और हमें भी पहिले पारसलमें नफा होता पर भाईकी जल्दीसे ही नुकसान हो गया है, ऐसा विचार कर एक दिन आपने बड़े भाईसे आग्रहपूर्वक कहा कि हमारे कहनेसे एक छोटासा पारसल एक दफे आप और भेजिये । इनके साहसको देखकर केवल ५०००) की लागतका एक पारसल फिर भेजा गया । इसके ऑफर ऐसे अच्छे आए कि इस पारसलमें इनको ५०००) का मुनाफा हो गया । अब तो तीनों भाइयोंका खूब दिल भर गया और लगातार १५, २०, ३०, ४०, पचास पचास हजारकी लागतके पारसल भेजने लगे और प्राय: हरएकमें दुगना तिगना मुनाफा कमाने लगे । इस तरह इनका विलायतसे व्यापार शुरू हुआ जो अब तक जारी है ।

सेठ पानाचंदकी पत्नीका मरण ।

संसारकी बहुत ही विचित्र दशा है । कोई भी सदा सुखकी नींद नहीं सो सके । एक न एक आकुलता रूपी कांटा लगा ही रहता है । सेठ पानाचंदकी स्त्री फुलकुमरी अपनी निर्बलताके कारण सदा ही बीमार रहा करती थी । पानाचंदको इस स्त्रीसे सांसारिक सुखका लाभ यथोचित नहीं हो सका जिससे सेठ पानाचंदका मन कभीर बहुत उदास हो जाता था । यह फुलकुमरी एक दिन बहुत बीमार हो गई और कुछ दिन पलंग पर पड़ी रही । बहुत कुछ औषधि करने पर भी आराम नहीं हुई और अपने विवाहके ५ वर्ष बाद ही उसका आत्मा देहको त्याग गया ।

थोड़े ही दिन पीछे पानाचंदका द्वितीय विवाह सांगली ज़िला फलटन निवासी नवीबाईके साथ हो गया ।

सेठ पानाचंदका द्वितीय विवाह ।

इस विवाहको सेठ हीराचंदने बहुत साधारण रीतिसे कर दिया था । यह बहुत भोली व आज्ञामें चलनेवाली थी पर कर्मयोगसे इसका

भी शरीर निर्बल और रोगी बना रहता था जिससे सेठ पानाचंदको पत्नीका यथेष्ट सुख प्राप्त करनेमें बहुत अन्तराय भोगना पड़ता था।

सेठ माणिकचंदको पुत्रीका लाभ।

सेठ माणिकचंद और चतुरमतीमें अतिप्रेम था। चतुरमती गर्भवती हुई और मिती फागुण वदी १ संवत १८३४ के दिन एक कन्याको उत्पन्न किया जिसका नाम सेठ हीराचंदने **फूलकुंवरी** (फुलकौर) रक्खा। वृद्धावस्थामें पौत्रीका मुख देख हीराचंदकी आत्माको बहुत संतोष हुआ। इस कन्याके जन्मका यथोचित उत्सव किया। यह कन्या चतुरमतीके द्वारा दिन परदिन वृद्धिको प्राप्त होने लगी। सेठ माणिकचंद कभी२ घरमें शामके वक्त भोजन करके इसे हाथमें लेकर खिलाते व इसका गुलाबके फूलसदृश मुख देखकर आनन्दित होते थे।

त्यागी महाचंद्रजीका परिचय।

इस संवतके चातुर्माससमें **अंकलेश्वर** (गुजरात) नगरमें **त्यागी महाचंद्रजीने** चातुर्मास किया था। यह त्यागी प्राकृत व संस्कृतके बड़े भारी पंडित थे। इनको गोम्मटसार त्रिलोकसारादि अनेक ग्रंथ कंठ थे। इन्होंने कई ग्रंथोंकी रचना की है। अधिक निवास सीकर (राजपूताना) की तरफ रहता था। इनका रचा **एक जैनेन्द्रपुराण** सीकरमें मौजूद है जिसके कुछ भाग उनके शिष्य पंडित रिषभदास बड़ाछिन्दवाड़ा (मध्यप्रदेश) के पास देखनेमें आए हैं। इस ग्रंथमें चारों अनुयोगोंका वर्णन प्राकृत, संस्कृत और देश भाषा तथा छंदोंमें हैं, अभी तक इसकी प्रसिद्धि नहीं हुई है।

इनका बनाया हुआ एक लघु जैनेन्द्र व्याकरण है। परतापगढ़ राज्य मालवामें नये दिगम्बर जैन मंदिरजीके भंडारमें इस व्याकरणके ३० पत्रे हमें देखनेको प्राप्त हुए, पूर्ण नहीं मिला। अंकलेश्वरमें किसीके पास पूर्ण है ऐसा सुनते हैं। इसके ५००० श्लोक हैं ऐसा मालूम हुआ है। प्रारंभमें कर्त्ताने इस भांति प्रतिज्ञा की है।

" महावृत्तिं शुंमत्सकलबुधपूज्यां सुखकरीं।
विलोक्योद्यद्, ज्ञान प्रभुविभयनंदी प्रविहिताम्।
अनेकैः सच्छन्दैर्भ्रमविगतकैः सद्दृ भूतां ?
प्रकुर्वेऽहम् तनुमति महाचन्द्र विबुधः।

इसका भाव यही है कि जैनेन्द्र महावृत्तिको देखकर मैं यह वृत्ति लिखता हूँ।

अनेकांतात्सिद्धिः—सूत्रकी व्याख्या इस तरह की है:—

" प्रकृत्यादि विभागेन अस्तित्वनास्तित्वनित्यत्वानित्यत्व-सामान्यासामान्याधिकरण्य विशेषणविशेष्यादिक शब्दानां, सिद्धिरनेकाः स्वभावो भवेत्।

पृष्ठ ३० वें में है कृष्णश्चकंबलश्च कृष्णकंबलः" यहाँ समासका वर्णन है।

इनको बुध महाचंद्र कहते हैं। इन्होंने हिन्दी भाषामें बहुतसे पद व सामायिक पाठ बनाया है जो अति प्रसिद्ध है जिसकी प्रारंभित कड़ी है—

काल अनंत भ्रम्यो जगमें सहिये दुःख भारी,
जन्म मरण नित किये पापको है अधिकारी।
कोडि भवांतर मांहि मिलन दुर्लभ सामायिक,
धन्य आज मैं भयो योग मिलियो सुखदायक।

इनके पद भी बड़े ही वैराग्यवर्द्धक व आध्यात्मिक हैं। कल-कत्तेके ८४ वर्षके वृद्ध पंडित अर्जुनलालजी इनके एक भजनको कभी २ कहा करते है जिसकी प्रारंभकी कड़ी यह है ।

"सुन अतापा रे रवि बद्दल छाया रे त्यूं ही कर्म छिपाया मैला हो रहा रे ।
तू सिद्ध सरूपी रे नित अचल अरूपी रे जड़ पुद्गल रूपी मांही रमि रह्या रे,

उस समय इनके पास केवल एक लंगोट और एक चद्दर-की ही परिग्रह थी । मोरपिच्छिका तथा कमंडल था । दिनमें केवल एक दफे भोजन करते थे तथा उस चातुर्मासमें केवल ४ वस्तु ही रक्खीं थीं। गेहूं, इमली, लालमिरच और सूखी सांगड़ीका साग; और सर्वरसोंका त्याग कर दिया था। इतना होनेपर भी विना किसी शास्त्रको रक्खे हुए व्याख्यान देते हुए इतनी ज़ोरके गंभीर शब्द कहते थे कि बहुत दूरतक आवाज़ जाती थी । इनको किसी भी सवारीपर चढ़नेका त्याग था । चातुर्मासके बाद यह अंकलेश्वरसे पैदल चलनेकी यहाँतक प्रशंसा प्रसिद्ध है कि एक दफे इनको अंक-लेश्वरसे श्री कुंथलगिरी प्रतिष्ठाके अवसरपर जाना था तब वहाँपर इनके शिष्य अमरेन्द्रकीर्ति तो रेलके द्वारा कुंथलगिरी गए और यह पैदल ही ठीक मितीपर वहाँ पहुंच गए थे ।

त्यागी बुध महाचंद्रजीने त्रिलोकसार पूजा बहुत ही मनोहर छन्दोंमें बनाई है । अंकलेश्वरके चातुर्मासमें आपने श्रावकको उपदेश देकर इस बृहत् पूजन करानेके समारंभको कराया जिसका महूर्त वैशाख सुदी ३ का पड़ा । १९ दिनका पूजन विधान हुआ। नगरके बाहर पारसीबाड़ेके नाकेपर खेतकी वाडीमें एक वड़ा भारी मंडप बांधा गया था जिसमें एक बड़े बिस्तारके साथ चावलोंसे तीन लोकका

मंडल पुष्पाकार बनाया गया। प्रतिदिन श्रीयुत महाचंद्रजी बहुत गाजे बाजेके साथ स्वयं उस अपनी बनाई भाषा पूजनको पढ़ते थे। तीन लोकके अकृत्रिम चैत्यालयोंकी पूजनके समय स्थापना उस मंडलमें ठीक उसी स्थानपर होती थी जहाँ कि चावलोंसे वह स्थान निर्देश किया गया था। छोटे २ लकड़ीकी स्थापनाएं उतनी ही बनाई गई थी, जिनपर रकाबी रखकर स्थापनाके समय नियत स्थानपर रक्खीं जाती थीं। बाहरसे आसपास ग्रामोंके बहुत भाई आते जाते रहते थे।

अंकलेश्वरकी पूजामें सेठ माणिकचंद।

इस समय कारणवश सेठ माणिकचंदजी बम्बईसे सूरत आए। वहाँ अंकलेश्वरकी पूजा समारंभकी बात सुनकर व त्यागी महाचंद्रके दर्शनकी भावना करके सेठ माणिकचंदजी अंकलेश्वर आए। पूजन समारंभ देख व महाचंद्रजीके दर्शन प्राप्तकर आप बहुतही राजी हुए। रात्रिको मंडपमें खूब भजनगान हुआ करता था। गंधर्व भी आए थे।

सजोतके शीतलनाथजी।

अंकलेश्वरसे ६ मील एक सजोत ग्राम है वहाँपर एक अति प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर है जिसके भौंरमें चतुर्थकालकी बहुत ही शांत वीतरागमई पद्मासन ३ हाथ ऊंची **श्री शीतलनाथ स्वामीकी** प्रतिबिम्ब विराजमान है। इस बिम्बके दर्शनसे लेखकको जो आनन्द हुआ है वह वचन अगोचर है।

उस सजोतमें एक मेवाड़ा दि० जैनी **धर्मचंद हरजीव-**

धर्मचंदजीका सेठसे परिचय।

नदास फुटकल अनाजकी दूकान करते हुए रहते थे। इनको भजनभाव व नृत्यका शौक था। श्री शीतलनाथजीके सन्मुख भजनभाव करते हुए आनन्द मनाते थे। यह धर्मचंदजी धर्मके बड़े रोचक थे। पहले लड़कईमें तो इनको धर्मसे कुछ भी प्रेम नहीं था इसके दो वर्ष पहले महुवा निवासी एक खंडेलवाल विद्वान् जैन **पंडित शिवलालजीने** अंकलेश्वरमें चातुर्मास किया था। यह पंडित बहुत विद्वान् व गंभीर ध्वनिके थे। शास्त्र सभा प्रतिदिन करते थे और सर्व लोग सभामें जाते थे। धर्मचंद दिलमें रुचि न रखनेपर भी शर्मके मारे शास्त्रमें बैठ जाते थे और ज्यों त्यों कर समय पूरा करते थे पर पंडितजीकी दृष्टि धर्मचंद पर जम जाती थी। जिसदिन यह नहीं जाते दूसरे दिन पंडितजी टोकते थे। इसपर अधिक भाव होनेका कारण यह था कि धर्मचंदके पिता **हरजीवन रतनचंद** शास्त्रके जानकार व शास्त्रानुसार आचारके पालनेवाले तथा पंडित शिवलालके मुलाकाती थे। एक गुण इनमें यह था कि यह भजन गान व कवितामें चतुर थे। अपने घरके चैत्यालयमें नित्य खूब गागाकर पूजन करते थे, इसी कारण इनके पुत्र धर्मचंदको भी शुरूसे ही गाने बजानेकी रुचि हुई। यह परोपकारी भी थे। अंकलेश्वरके १०, १२ लड़कोंको अपने घरमें भक्तामर सूत्रजी पूजा पाठ आदि पढ़ाते थे। इन्होंने रविव्रत कथाका हिन्दीमें एक नाटक बनाया है जिसका नाम **रविव्रत आख्यान है**। इस नाटकको यह मंदिरजीमें खेलते थे। सर्वस्वांग कायदेसे भरवाते थे। कई इनके साथी भी थे। जिस स्थानपर मुनिका वर्णन आता है वहां नग्न मुनिका भेष न

बनवाकर एक बड़ा चित्रपट टांगते थे और उसके पीछे एक भाई खड़े होकर मुनिका पाठ करते थे। उपदेश देते थे। इस आख्यानका एक पद नीचे दिया जाता है।

" कहो मुनि कौनसी करम गति आई—टेक०
सेठ सेठानी पूंछत मुनिसे, सुख गया दरिद्रता आई। कहो०
क्या मैंने जैनधर्म भ्रष्ट कीया, क्या घृतमें तेल मिलाई॥ कहो०
क्या मैंने रात्रि भोजन नहीं पाला, व्रत निंद्या झूठ मिलाई। कहो०
हरदास अरहंत चरणकूं वारवार बलि जाई॥ कहो०

शिवलालजीके द्वारा बार बार टोके जानेपर एक दिन धर्मचंदको लज्जा आई और यह शिवलालजीसे एकान्तमें मिलकर बोले कि हमें कुछ धर्मकी बात बतावें जिससे मुझे रुचि हो। तब शिवलालजीने कहा कि जो पुस्तक हमने तुम्हारे पिताको दी थी व जिसमें दशलाक्षणी व अष्टान्हिका आदि पूजन भाषा द्यानतराय कृत हैं, उसे ले आओ। इस पुस्तकको धर्मचंदजी पहचानते थे क्योंकि दशलाक्षणीके दिनोंमें उस पोथीके द्वारा इनके पिता गावजाकर पूजन पढ़ते थे और यह खड़े हुए द्रव्य चढ़ाते थे। उस समय पहले २ द्यानतराय कृत पूजनोंका प्रचार इसी पोथीसे हुआ। धर्मचंदजी उस पुस्तकको लाए। शिवलालजीने उसमेंसे नीचे लिखी तीन गाथाएं बड़ी कठिनतासे धर्मचंदजीको कंठ कराई और उनका मतलब समझाया—

गाथा

गइ इंदियं च काये। जोये वेये कषाय णाणेय
संजम दंसण लेस्सा। भविया सम्मत्त सण्णि आहारे॥ १॥

गुणजीवा पजत्ति । पाणा सण्णाय मग्गणा ऊये ।
उवऊगो विय कमसो । वीसंतु परूवणा भणिया ॥ २ ॥
झाणाविय पच्चाविय जाय कुलकोडि संजुया सव्वे ।
गाहा तियेण भणिया कमेण चौवीस ठाणाणि ॥ ३ ॥

भावार्थ—गति ४, इंद्रिय ५, काय ६, योग १५, वेद ३, कषाय २५, ज्ञान ८, संयम ७, दर्शन ४, लेश्या ६, भव्य २, सम्यक्त ६, संज्ञी २, आहारक २, गुणस्थान १४, जीवसमास १४, पर्याप्ति ६, प्राण १०, संज्ञा ४, उपयोग १२, यह बीस प्ररूपणा कही हैं। तथा ध्यान १६; प्रत्यय अर्थात आश्रव ५७; जाति ८४ लक्ष; कुलकोड़ १९९॥ इन चारोंको मिलाकर २४ स्थान क्रमसे जानने चाहिये। वास्तवमें इन गाथाओंके उलझावमें डालकर उसके सुलझानेके लिये जो परिश्रम करेगा वह जिनवाणीके रहस्यको जान जायगा। पं० शिवलाल बड़े बुद्धिमान और परोपकारी थे जिन्होंने धर्मचंदके साथ बड़ा उपकार किया। इन गाथाओंको कंठकर अब यह गति आदिका विशेष हाल जाननेके लिये भाषा शास्त्रोंको देखने लगे। इनको शौक इतना बढ़ा कि ये सजोतमें अपनी अनाजकी दूकान पर पुस्तक रखते, सौदा देते २ जब छुट्टी पाते तब वांचते और उसमेंसे एक कापी पर नोट कर लेते थे। इस तरह यह अपनी स्त्रीके साथ सजोतमें धर्म सेवन करते रहते थे। पिताजीका देहान्त हो चुका था, सो इस धर्म विद्या सीखनेकी रुचिके दो वर्ष पीछे ही अंकलेश्वरमें यह उत्सव हुआ था। इस महा पूजाके कार्य्यमें धर्मचंद मुख्य भाग लेते थे और **महाचंद**जीसे बहुत हित रखते थे। उनकी भले प्रकार वैय्यावृत्त करते थे। एक दिन

धर्मचंदजीने महाचंदजीसे प्रार्थना की कि इस उत्सवके सम्बन्धमें कोई पद बना दीजिये। महाचंदजीने दूसरे दिन एक पद लिखकर धर्मचंदजीको दे दिया। जिस रात्रिको सेठ माणिकचंद मंडपमें बैठे हुए थे उस रात्रिको धर्मचंदने वह पद मंडपमें गाया। इस भजनको सुनकर सेठ माणिकचन्दका प्रेम इस भजनपर हो गया। यह तो पाठकों-को मालूम ही है कि सेठ माणिकचंद गुणग्राही और मिलनसार थे, यह मौका पाकर धर्मचंदसे बात करने लगे। धर्मचंद पहलेसे ही बात करना चाहते थे क्योंकि वे इनके गंभीर सिंह सदृश अति सुन्दर मुख और शरीरको देखकर अपने मनमें यह जान रहे थे कि यह कोई बड़ा भारी सेठ है। इनकासा सुन्दर रूप धर्मचंदके देखनेमें नहीं आया था। यह उस समय धोती, कोट और सुरती पगड़ी पहने हुए थे। दाहने कानमें सुन्दर दो गोल मोती और नीलमकी एक कड़ी अटकाए हुए, गलेमें मोतियोंका कंठा डाले हुए, हाथोंमें सुवर्णके कड़े पहने हुए एक राजाके समान दीखते थे, पर धर्मचंदका साहस नहीं पड़ता था कि ऐसे प्रभावशाली व्यक्तिसे बात करें। जब माणिकचंदजीने स्वयं बात की तो यह बहुत ही हर्षित हुए और तब इनको मालूम हुआ कि यह सुरत निवासी बम्बईके प्रसिद्ध सेठ माणिकचंद हैं। माणि-कचंदजीने धर्मचंदजीके भजन गानेकी बहुत प्रशंसा की और कहा कि आप यह भजन मुझे नकल करके बम्बई भेज देवें क्योंकि मैं ज्यादा ठहर नहीं सक्ता, कल ही मुझे बम्बई पहुंचना है। धर्मचंदजीने सहर्ष स्वीकार किया। धर्मचंदकी स्थिति साधारण थी तथा इनको दिन रात यह दुःख रहता था कि इनको आजीविकाके लिये हिंसा-

कारी गल्लेका व्यापार करना पड़ता था। माणिकचंदसे मिलकर इनको यह भी आशा हुई कि कभी कोई लौकिक काम होगा तो इनसे निकल सकेगा। यह सेठ इतना धनाढ्य और पुण्यात्मा होने पर भी गर्व रहित है। हमारे पाठकोंको मालूम होना चाहिये कि यह धर्मचंद वही परोपकारी तीर्थभक्त भाई धर्मचंद मुनीम पालीताना दिगम्बर जैन कारखाना हैं जिनके उद्योगसे उस तीर्थका बहुत ही सुधार हुआ है व जिन्होंने अपने उपदेशसे हजारों यात्रियोंका कल्याण किया है व कर रहे हैं। इनकी अवस्था अब ६४ वर्षकी हैं। अपने प्रणके अनुसार ५ व ७ दिनमें धर्मचंदने वह भजन नकल करके बम्बई भेज दिया।

वह भजन इस भांति है।

(राग जंगलो)

मंडलसार त्रीलोक सीरोमणी, पुर अंक्लेसर माही हो २
मंडलसार० ॥ टेक ॥

संवत् सत उगनीस तासपरि धरि पैंतीस समाय हो।
पंडित राज महेंद्र आवे चोथी शुक्ल चैत्राय हो ॥ १ ॥ मं०
अंक्लेश्वरके सर्व पंच बुध राज समीप जुं आय हो।
बोले उत्सव जिनवरकी प्रभावना करणी चाहि हो ॥ २ ॥ मं०
चैत्र शुक्ल पूनिम दिन मंडप आरंम्यो पुरवांही हो।
गज चालीस लंब अति सोभित व्यास वीश गज पायहो ॥ ३ ॥ मं०
वदि ग्यारसी रवीवारे मंडल भरणारंभ कराय हो।
सुदि वैशाख तिजी रवीवारे पूंजा प्रारंभाय हो ॥ ४ ॥ मं०
तादिन श्री जिनवर सुलग्नमैं रथ यात्रा करवाय हो।

नाचत भविजन सनन सनन सन सनन सन नाय हो ॥ ५ ॥ मं०
तननतनन तनतनन नननननननन तान होत सुखदाय हो ।
छमछमछमछमछमछमछमछमछम घुंघरू नाद कराय हो ॥ ६ ॥ मं०
साग्रदिसाग्रदिंसाग्रदिसाग्रदि जह चलत सारंगी वाय हो ।
दम दम दम दम दम दम दम दम होत मृदंग स्वराय हो ॥ ७ ॥ मं०
घनन घनन घन घनन घंट घना घनकाय हो ।
रिरिरिरिरिरिरिरिरिरिरिरिरिरिरिरिरिरि रूपभध्वर सुखदाय हो ।८। मं०
ससससससससससससससससर्ज स्वर चलताय हो ।
गगगगगगगगगगगगगगगगग गंधारो स्वर गाय हो ॥ ९ ॥ मं०
पपपपपपपपपपपपपपपप पंचम नाद कराय हो ।
ममममममममममममममममम मध्यम स्वर सरराय हो ॥ १० ॥ मं०
धधधधधधधधधधधधधधधध धैवेत स्वर सुरराय हो ।
निनिनिनिनिनिनिनिनिनिनिनिनिनिनिनिनि निहोत
निस्वाद सुखाय हो ॥ ११ ॥ मं०
ऐसे गावत और बजावत नरनारी चितलाय हो ।
श्रीजिनचलत पालखीमें जहां नर तिर्यंच दुतरफाय हो ॥१२॥ मं०
फिरी श्रीजिनको उत्सव सजूत मंडपमें पधराय हो ।
करि अभिषेक करि फिरी पूजन महाचंद्र चितलाय हो ॥१३॥ मं०
सप्तस्वर संजूत करी पूजा दिन पंद्रहा तक ताय हो ।
बदि दुतियासनीवारे पूजन पुरण करी सुख पाय हो ॥१४॥ मं०
देश देशके नात्री आये मंडल जिन दरसाय हो ।
पूजन करी करि श्री जीनवरको सब हर्षे मनमाहि हो ॥१५॥ मं०
श्री जीन प्रभावनां ठाईम महाचंद्र बुधराय हो ।

पा यह जन्म सफल लखि अपनौ सीकर नगर गया हि हो।

॥ १६ ॥ मंडल सार०

पाठकोंको इससे प्रगट होगा कि हमारे चरित्र नायक माणिकचंदजी कैसे धर्मप्रेमी, विद्याप्रेमी और गुणानुरागी थे।

सेठ मोतीचंदकी स्त्री रूपमतीको फिर गर्भ रहा था। जबसे इसको यह गर्भ हुआ तबसे इसका प्रेम दान व धर्ममें और भी अधिक हो गया था। इसके मनमें पूजा व शास्त्र सुननेकी ही गाढ़ रुचि रहा करती थी। जब संवत १९३४ का चातुर्मास निकट आया तब इसके मनमें यह भावना हुई थी कि मुझे ईडर जाना चाहिये और वहीं मेरेको प्रसूति हो तो अच्छा है क्योंकि यहां कोई बराबर सेवा करनेवाला नहीं है– चतुरबाईके एक छोटी कन्या है और पानाचंद तथा नवलचंदकी बहुएँ बहुत छोटी हैं। रूपमती बहुत बुद्धिमती थी। इसलिये अपने पतिसे इस बारेमें पूछा मोतीचंदने भी यही उचित समझा और अपने पिता सेठ हीराचंदजीको कहा। हीराचंदजीने भी इस बातको पसन्द किया और गांधी मोतीचंदको पत्र दिया। गांधीजी स्वयं आकर रूपमतीको ईडर लेगए। श्रीषोडशकारण व श्री दशलाक्षणी पर्वमें रूपाबाईने ईडरमें खूब धर्मध्यान और कुछ दान भी किया। गर्भावस्थामें ऐसे दान धर्मकी प्रवृत्तिको देखकर सर्व बुद्धिमान यही अनुमान करने लगे कि कोई अतिधर्मात्मा बालक रूपवतीके गर्भमें आया है। यह भी एक निमित्त नैमित्तिक सम्बन्ध है कि जैसा बालक गर्भमें आता है वैसी ही प्रवृत्ति माताकी हो जाती है। एक दरिद्री पापी पुत्रको गर्भमें रखनेवाली माता मिट्टीके टुकड़े खाती

प्रेमचंदका जन्म।

और चने चवाती है व लड़ाई झगड़ा करना अच्छा समझती है। इस सम्वतमें बम्बई और मदरास हाते में पानीके कम पड़नेसे इतना कठोर दुष्काल पड़ा था कि जिससे पार्लियामेन्टमें ऐसी रिपोर्ट की गई कि इस दुष्कालसे साढ़े तेरा लाख आदमी मर गए। ऐसे समयपर रूपाबाईने बहुत कुछ अन्नादि बटवाया तथा बम्बईके उदार सेठोंने गुजरात व दक्षिणकी तरफ बहुतसा द्रव्य भेजकर दुष्काल पीड़ितोंकी सहायता की। इतनेमें आसौज बदी १४ का दिन आगया और प्रातःकाल शुभ नक्षत्रमें रूपमतीने एक बहुतही सौम्य मूर्ति **पुत्ररत्नको** जन्म दिया। इसके अति सुहावने मुखको देखकर माताको जो हर्ष हुआ वह कहा नहीं जा सकता। गांधी मोतीचंदने अपनी पुत्रीकी संतति रत्नको निरखकर बहुत ही हर्ष माना और बड़ी धूमधामसे इस पुत्रका जन्मोत्सव किया। सर्व कुटुम्बको इसकी ओर बहुत ही प्रेम आकर्षित हुआ इससे सबने इसका नाम **प्रेमचंद** रक्खा। जन्मपत्र बनवाया गया। ज्योतिषियोंने इसको पुण्यशाली, विद्यावान तथा धर्मात्मा होगा ऐसा कहा। गांधीजीने श्री जिन मंदिरजीमें बड़े उत्सवसे पूजन कराई और कुटुम्बियोंको उचित दिन भोजन कराया व दुःखियोंको दान बांटा। जिस दिन इस पुत्रका जन्म हुआ उसी दिन तार द्वारा बम्बई खबर भेजी गई। सेठ हीराचंद, मोतीचंद आदि सर्व ही कुटुम्बी जन व स्त्रियोंको पुत्र जन्म सुनकर बड़ा ही आनन्द हुआ क्योंकि यह सेठ हीराचंदका प्रथम ही पौत्र था और चारों भाइयोंमें एक यही बालक जन्मा था। सेठ हीराचंदने बम्बईके जिन मंदिरजीमें वृहत् पूजन रचाई तथा दानके लिये भी द्रव्य निकाला।

सेठ मोतीचंदको यद्यपि पुत्रके लाभसे बहुत सन्तोष हुआ पर इनको भगन्दरके रोगने बहुत व्याकुल कर रक्खा था । कितनी ही औषधियें की पर कुछ शान्त न हुआ—रोगको कम होनेके बदले वर्द्धित देखकर पूज्यपितासे कहा कि अब चातुर्मास वीत गया है ईडरसे कुटुम्बको बुलाना चाहिये मगसर मासमें रूपाबाई पुत्र रत्न **प्रेमचंद**के साथ बम्बई आई परंतु अपने पतिके रोगको बढ़ा हुआ देखकर बहुत खेदित हुई । मोतीचंदजी बीमारीसे बहुत दुःखित थे पर अपने धर्मके स्मरणमें सावधान थे असातावेदनीय कर्मका उदय है ऐसा मानकर चित्तमें धैर्य लाते थे ।

और जब कभी अपने पुत्रका मुख देखते तो प्रफुल्लित हो जाते थे क्योंकि यह पुत्र रत्न हरएकको बहुत ही प्यारा लगता था ।

पुत्रके जन्मको ९ मास ही वीते थे कि फागुणमासमें एकाएक मोतीचंद बहुत ही अधिक बीमार हो गए

मोतीचंदका परलोक ।

और ऐसे वक्तमें कि जब रूपाबाई घर काममें लगी थी पिता और भाई सब घरसे बाहर थे । यह अपने कमरेमें लेटे हुए ही यकायक अरहंत अरहंत कहते हुए अपने इस शरीरको छोड़कर चल दिये । थोड़ी देर बाद जब रूपाबाई छोकरेको लिये हुए कमरेमें आई और अपने पतिको बहुत ध्यानसे देखा तो इसे निश्चय हो गया कि इनका आत्मा इस शरीरको छोड़कर चल दिया है । रूपाबाईका स्वरूपवान मुख एकाएक कुम्हला गया । उसके मुखको प्रेमचंद आंख खोलकर देखता है तो आश्चर्य्यमें भर जाता है । रूपाबाई एकाएक बैठ गई और नीचा मुख करके शोक सागरमें निमग्न हो गई ।

संसारकी ही बड़ी विचित्र दशा है। ६ वर्ष पहले जिस स्त्रीको अपने पतिके सम्बन्धसे सांसारिक सुखका लाभ हुआ व ५ मास ही पहले जिसको एक अति उत्तम पुत्रका लाभ होकर सन्तोष हुआ उसीको आज अपने प्राणप्रियका वियोग सहना पड़ा! कर्मोंके उदयकी दशा बड़ी ही विचित्र है। जैसे कहीं धूप आती है और थोड़ी देर बाद वही पर छाहीं पड़ जाती है और जहां पर छाहीं होती है वहीं फिर धूप आ जाती है, ऐसे ही पुण्य कर्मके स्थान पर पाप और पापके स्थान पर पुण्य अपनी रंगत दिखलाते हुए अज्ञानीको कभी महा आनन्द व कभी महाशोकमें डाल देते हैं परंतु ज्ञानीके लिये एक मात्र नाटकका खेल है। ज्ञानी अपने शरीरके सम्बन्धको ही त्यागना चाहता है। उसके यह भावना है कि यह आत्मा शांत आनन्दमय अवस्थाका लाभ लेवै और सदा ही मुक्त रूप रहे अतएव वह ऐसा विचारता है—

श्लोक—तप्तोऽहं देहसंयोगाज्जलं वानलसंगमात्
इह देहं परित्यज्य शीतीभूताः शिवैषिणाः (आ० शा० २५४)

भावार्थ—मैं देह संयोगसे उसी तरह दाहको पा रहा हूं जिस तरह अग्निके सम्बन्धसे जल गर्म होकर जला करता है जो मोक्षके इच्छुक साधुजन हैं वे इस देहको त्यागकर शांत हो गए हैं। ऐसा २ विचार करनेवाले ज्ञानीजीवको अपना व दूसरेका देह आत्मासे अलग हो जाय उसमें कोई विषाद नहीं होता। रूपाबाईने यद्यपि अनेक शास्त्र सुने थे और अच्छी तरह आत्मा और देहके भेद विज्ञानको जानती थी, केवल आत्मोन्नतिकी भावनासे ही धर्मको अतिप्रेमसे साधन करती थी तौ भी इस समय यकायक

शोक नोकषायके तीव्र उदयसे इसका चित्त धैर्य्यसे चलायमान हो गया, मन म्लानित हो गया, तरह २ के विकल्प आने लगे, आंखोंसे भी अश्रुधारा वहने लगी, मेरी कौन रक्षा करेगा ? इस छोटे पुत्रको कौन खिलाएगा ? इसको कौन विद्या पढ़ाएगा ? मैं कैसे दिन काटूंगी आदि अनेक भावोंके आवेशोंसे मन क्षोभित हो समुद्रकी तरह डगमगाने लगा ।

इतनेहीमें खबर पहुँच गई कि सेठ मोतीचंद एकाएक चलबसे। यह संवाद सेठ हीराचंदको वज्रके समान हृदय भेदनेवाला हुआ । तीनों भाई भी इसे सुनकर, आज हमारे शरणभूत कमरेका एक खंभा टूट गया, आज हम तीन खंभेवाले ही रहकर इस गार्हस्थ्यके बोझको कैसे सम्हाल सकेंगे इत्यादि चिंताओंमें डूब गए। अति उदास मुख हो घरमें आए और मृत मोतीचंदके जड़माई निर्जीव कलेवरको आभा रहित देखकर कुछ कह सुन न सके और मनमें अति पश्चाताप करते हुए कि हम इनके मरणके अवसरमें इनको कोई धर्मोपदेश न दे सके और न भगवानका पवित्र नाम सुना सके और न दान पुण्य कुछ करा सके। थोड़ी देरमें बम्बईके सारे बाजारमें खबर पहुंच गई कि सेठ हीराचंदके बड़े पुत्र युवावस्थामें ही शरीर त्याग गये। अनेक कुटुम्बीजन व मित्र मुलाकाती जमा हो गए अज्ञानी आंसू भरभरकर रोते हुए और ज्ञानियोंने वस्तुका स्वरूप विचार कर सन्तोष धारण किया । हीराचंद जीने मृत कलेवरको जन्तुओंकी विशेष उत्पत्तिके भयसेपड़ा रखना उचित न समझा और तत्काल स्मशान भूमिमें लिवा जाकर दग्ध क्रिया की ।

इस समय और सबने ही किसी न किसी तरह अपने चित्तको धैर्य्य

सेठजीके भतीजे सेठ प्रेमचंद मोतीचंदजी.

J. V. P. Surat.

(देखो पृष्ठ १७२)

बंधाया और इसे होनेहार मान संतोष धारण किया पर विधवा रूपाबाईके चित्तको जो क्षोभ व कष्ट हुआ वह उसीके या श्री केवलीभगवानके अनुभव गोचर था।

रूपाबाईकी अवस्था इस समय २२ वर्षकी थी--खिलती जवानी थी। अति मनोहरांगी रूपाबाईको एक परम

विधवा रूपाबाईके पवित्र धर्मकी श्रद्धा ही ऐसी प्यारी धार्मिक विचार। सखी थी जो इसके मनको थांभती थी,

इसके वैधव्यपनेके दुःखको भुलाती थी तथा इसके चित्तमें ज्ञान ज्योति प्रगट कराकर संसारकी क्षणभंगुरताका चित्र खींचती थी, जब पतिस्मरणका बहुत कष्ट होता था और यह अपनी दृष्टि पुत्र प्रेमचंद्र पर डालती तब यह तुर्त प्रसन्न चित्त हो जाती थी। प्रेमचंद्रको वारवार निरखकर उसके रूप व गुण इसके मनको शोक रहित करनेमें बहुत सहायता देते थे।

यद्यपि रूपाबाईको पति वियोगका क्लेश था परंतु उसको किसीने हाय हाय करते, रोते रड़ते व छाती कूटते नहीं देखा क्योंकि उसके आत्म विचारमें यह भी निश्चय था कि हरएक जीव अपने २ कर्मोका फल इस शरीरमें भोगता है, आयु भी एक कर्म है। जब इसकी स्थिति पूरी हो जाती है तब हरएकको शरीर छोड़कर जाना होता है। रूपाबाईने श्री पद्म पुराणको कई दफा सुना था। श्री सीताजीका वह वर्णन इसके मनके सामने आजाता था कि जब अग्निकुंडसे रक्षित होनेपर सीताजी तुर्त आर्यिकाकी दीक्षाके लिये वनको चली गई थी। रामचंद्रजीके गृहस्थ अवस्थामें रहते हुए व उनकी अंतरंग इच्छा व प्रेम रहने पर भी

ऐसा कि यह अभी दीक्षा न ले और राजमंदिरमें चले, पर सीताजीको शरीरसे प्रेम न था इसीसे शरीरके सम्बन्धी पतिसे भी प्रेम हट गया था--उनका प्रेम आत्माकी ओर आकर्षित हो गया था इसीसे आत्म कल्याण करना पतिकी क्षणिक सेवासे भी उत्तम समझकर सीताजी बनको ही चलदीं थी। इस वर्णनको जब २ स्मृतिमें लाती थीं रूपाबाई पतिकी स्मृतिके दुःखको भूलाती थीं और धर्ममें दिन पर दिन दृढ़ भाव करती जाती थीं ।

सेठ माणिकचंद बड़े विचारशील व दयालुचित्त थे । युवती रूपाबाईको वैधव्यमें देखकर इनका चित्त भीतरसे भर आताथा और यही विचार करते थे कि इसे किसी तरहका कष्ट न हो । एक दिन सेठजी अपनी भावजके पास जाकर उसको कहने लगे—माताजी, आप कोई चिन्ता न करें, अब आप मन लगाकर खूब दान पुण्य करें, तीर्थ यात्र करें, व्रत उपवास तप करें, पुत्र प्रेमचंदको पालन करें, आपकी आज्ञा हम सब तरह माननेको तयार हैं, मोतीचंदजी अपने हाथसे कुछ दान नहीं कर गए थे । अब आप इच्छानुसार दान धर्म करें, किसी तरहका संकोच मनमें न लावें । यह सर्व लक्ष्मी आपकी ही है ।

रूपाबाईको इन बचनोंसे बहुत ही सन्तोष हुआ। इसके हाथ--खर्चको प्रति मास १००) कभी १५०) सेठ माणिकचंद दे दिया करते थे। रूपाबाई घरमें सबकी सम्हाल रखती हुई तीनों भाइयोंकी स्त्रियोंको संतोषित करती हुई, अपनेसे किसीको कष्ट न हो इस तरह वर्तन करती हुई और पुत्र प्रेमचंदको बड़ी सुरक्षासे पालती हुई रहने लगी । रात्रिको जलपान लेनेका भी त्याग कर दिया, शृंगार

करना बन्द कर उदासीन रूपमें कत्थई रंगके कपड़े पहनने शुरू किये जैसा कि गुजरात देशमें रिवाज है। पान खाना त्याग दिया, दिनमें नियम करके दो तीन वार प्रमाणसे भोजन पान करने लगीं, प्राय: सदा ही एक न एक रसको छोड़ने लगी, अष्टमी व चतुर्दशीको उपवास व एका-सन करने लगीं, दोनों समय कभी तीनों समय बड़े भावसे जाप व सामायिक करने लगीं। जैसा समय मिले पूजा सुनने व शास्त्र सुननेमें बिताने लगीं। अब घरमें कामकी अधिकतासे रसोई करने वाले नियत हो गए थे, इससे स्त्रियोंके आधीन केवल सामानकी देख भाल व साग तर्कारी आदिकी तय्यारी करना इतना ही काम रह गया था। इधर इन सेठोंका व्यापार खूब बढ़ चला था। विलायतके हर सप्ताहके मेलमें इनके एक २ दो २ पार्सल पचास पचास हजार तकके जाने लगे थे, दूसरे तीसरे दिन विला-यतसे मालके ऑफर तार द्वारा आने लगे थे।

व्यापारमें अटूट लाभ।

तारद्वारा विक्री होने लगी। दो तीन वर्षतक विलायतका व्यापार इतना जोरसे चला कि हरएक पार्स-लमें इन्होंने दुगनेसे कम लाभ नहीं किया, विलायतमें जवाहरात पहननेका नया शौक पैदा हुआ था उससे मोतीकी खूब ही विक्री हुई। **माणिकचंद पानाचंदका फर्म** मालकी सुन्दरता, सफाई व छांटमें **विलायतमें भी प्रसिद्ध हो गया**। इन वर्षोंमें लक्ष्मीने सेठोंके घरको अच्छी तरह भर दिया।

इन दिनों **चीन** देशमें भी माल जाने लगा था। प्रसिद्ध सेठोंने वहां भी माल भेजना और अच्छा नफा करना शुरू कर दिया

बिलायत, चीन, व भारत तीनोंके व्यापारमें तीनों भाइयोंने बहुत सचाईसे बर्तन करके अच्छा धन पैदा किया। इधर जब लक्ष्मीकी कृपा थी तब उधर और चिंता न हो ऐसा नहीं था। सेठ हीराचंदको संवत १९३५ में लकवाकी बीमारी हो गई जिससे वे बड़ी कठिनतासे मंदिर तक जाते थे, शेष घरमें ही पड़े रहते थे। अपने पिताको कष्टावस्थामें देखकर कृत उपकारको न भूलनेवाले कृतज्ञ सेठोंका दिल बहुत दुःख पाता था पर प्रत्येक जीव भिन्न२ हैं, हरएकका कर्म्म हरएकके साथ है, कोई महान हितु भी अपने मित्रके सुख तथा दुःखको बटा नहीं सक्ता, हरएकको अपने बांधे कर्मका फल आप ही भोगना पड़ता है।

सेठ हीराचंदको लकवेका रोग।

इस समय इनके घरमें एक बालक और रहता था जिसका नाल चुन्नीलाल था, यह सेठ हीराचंदजीकी दूसरी कन्या मंच्छाबाईका पुत्र था जिसकी लग्न सेठजीने गंगेधर गोत्रधारी सूरतके शाह झवेरचंद ब्रीजलालके साथकी थी और जिसका जन्म संवत १९२४ चैत्र सुदी ११ को सूरतमें हुआ था। यह बालक तीक्ष्णबुद्धि था। पिताकी स्थिति बहुत साधारण थी, यह किरानेकी दलाली करते थे। इसके पिताने इसे गुजराती पांचमी पुस्तकतक पढ़ाकर १० वर्षकी ही उमरमें इसके **मामा** सेठ माणिकचंद पानाचंदके पास बम्बई भेजा दिया कि यह चतुर होकर धनपात्र हो जावे। यह बालक सेठके घरमें बड़े प्रेमसे रक्खा गया।

चुन्नीलाल झवेरचंदका सम्बन्ध।

एक वर्ष भी बम्बई आए नहीं हुआ था कि इसके पिताने सुरत बुलाकर इसका विवाह ११ वर्षकी उमरमें ही कर दिया। बम्बईके सेठोंने बहुत रोका पर उसने ध्यान नहीं दिया। इस कन्याकी उम्र ११ की थी और नाम जड़ावबाई था। विवाह होनेपर फिर चुन्नीलालको बम्बईमें भेज दिया। यह सेठोंके साथ रहकर दूकान व घरके काममें पड़ गया और अधिक पढ़ने लिखने पर कुछ भी मन न लगाया; और कुछ काल पीछे मोती पोरनेका काम सीखने लगा।

द्वितीय पुत्री मगनमतीका जन्म।

इतने ही में सेठ माणिकचंदकी पत्नी चतुरमतीको द्वितीय गर्भ रहा। इस समय सेठ माणिकचंदको यह अभिलाषा हुई कि पुत्रका दर्शन हो तो अच्छा है। यह बात गृहस्थियोंमें प्रायः स्वाभाविक ही है कि वे पुत्रीकी अपेक्षा पुत्रके अस्तित्वको उत्तम मानते हैं।

चतुरमतीको इस गर्भके रहते हुए अपने पतिसे अधिक प्रेम उत्पन्न होता था, यद्यपि प्रेमभाव पहले भी था, पर इस गर्भके कारणसे एक बहुत ही गाढ़ प्रीतिभाव पतिकी ओर झलक उठा था जिससे चतुरबाई सेठ माणिकचंदकी खूब ही सेवा करने लग गई थी, बारबार इनको देखकर प्रसन्न हुआ करती थी।

चतुरबाईको धर्मके सम्बन्धमें जैसे रूपाबाईको खबर थी व रुचि थी ऐसी खबर व रुचि नहीं थी, साधारण रीतिसे दर्शन व जपकरना जानती थी, पर जबसे इसके यह गर्भ रहा यह चतुरमती धार्मिक कार्योंमें खूब मन लगाने लगी। मंदिरजीमें

कभी २ पूजन सुनने बैठ जाती, कभी कोई शास्त्र पढ़ता तो सुनने लग जाती, दान धर्म करनेमें भी खूब मन चलने लगा। इसकी ऐसी चेष्टा देख बुद्धिमान जन अपने दिलमें यही जानते हुए कि जो कोई जीव इसके गर्भमें आया है वह कोई पुण्यवान, धर्मात्मा और उत्तम जीव है । सेठ माणिकचंद भी बड़े चतुर थे, इनको भी अपनी पत्नीकी विलक्षण दशा देखकर मनमें यही भान हुआ कि हमारे पुण्य वृक्ष खिला हैं, किसी महान जीवने आकर मेरी स्त्रीके गर्भवासको पवित्र किया है। कुछ मासका गर्भ हो गया, तब सेठ माणिकचंदने मनमें विचारा कि यहां रूपाबाईके एक छोटे पुत्र प्रेमचंदकी सम्हाल है, पानाचंदकी स्त्री छोटी व निर्बल रोगी है, नवलचंदकी वहू बहुत ही छोटी है, यहाँपर प्रसूति होनेसे बालककी सम्हाल नहीं हो सकेगी अतएव इसको अपनी माताके यहां भेज देना ठीक होगा। सेठ हीराचन्दजीसे आज्ञा ले आप अपनी स्त्रीको नानेज ग्राम पहुँचा आये। धीरे २ प्रसूतिका दिन आ गया और सं० १९३९ के मिती पौष वदी १० (गुजराती मगसर वदी १०) के दिन चतुरमतीने शुभ नक्षत्रमें एक चंद्रमुखी पुत्रीका जन्म दिया। यह कन्या बहुत ही सुन्दर शरीर, सौम्यवदन और गंभीर मुखवाली थी। माता देखकर बहुत प्रसन्न हुई और अपने पिताको इशारा कराया कि सेठ माणिकचंदजीको तार देकर बुला लिया जावे क्योंकि चतुरबाईका अति गाढ़ प्रेम सेठजीकी तरफ हो उठा था। तार पाते ही सेठ माणिकचंद नानेज आ गए और पुत्रीकी जन्म कुंडली ठीक करा उसका नाम **मगनमती** रखा। सेठजी एक माससे अधिक वहीं ठहरे। पुत्रीका गंभीर, सौम्य, गोल और विशाल मुख,

व शरीरकी सुंदरता देख अपनेको धन्य मानते हुए, यद्यपि इनको पुत्रीजन्म सुनकर कुछ खेद हुआ था पर जब इस पुत्रीको देखा तो सारा खेद जाता रहा, इसकी चैतन्यता व आंखकी ज्योति इसे एक होनहार कन्या बतलाते थे। सेठ माणिकचंदको इस कन्याकी तरफ इतना मोह हुआ कि जैसा किसीको पुत्र पर भी नहीं होता। कई मास बाद सेठजी फिर नावेज आए और चतुरबाईको फुलकुमरी और मगनमतीके साथ बम्बई ले आए।

सेठ हीराचंदका स्वर्गवास।

बम्बईके जौहरी बाजारमें ही सेठ हीराचंद मयकुटुम्बके रहते थे। यद्यपि हीराचंदजी लकवेकी बीमारीसे दुःखी रहते थे पर घरमें प्रेमचंद व फूलकुमरीको इधर उधर खेलते कूदते, हंसते, गिरते पड़ते और मगनमतीको भी चतुरबाईकी गोदमें जमीनपर घिसिलते हुए देखकर बहुत ही खुश हो जाते थे।

सं० १९३७ के दशलक्षणीके दिन आ गए, बम्बईके श्रावक लोग धर्मध्यानमें लीन हो गए, नरनारी सुन्दर वस्त्राभूषण पहन सवेरेसे ही मंदिरजीमें जा पूजन पाठ पढ़ने सुननेमें लग गए। भादो सुदी ९ की प्रातःकालका समय था, पुष्पांजलि व अष्टमीके व्रतवाले सवेरेसे ही मंदिरजी आ गए थे, सेठ माणिकचंदजीने अष्टमीका उपवास किया था तथा यह प्रक्षाल पूजन नित्य ही करते थे सो उस दिन बड़े सवेरेसे ही घरसे मंदिरजी आ गए थे, ८ बजेके अनुमान पानाचंदजी भी मंदिर चले आए रूपाबाई, नवीबाई व चतुरबाई भी पुत्रपुत्रियोंके साथ मंदिरजी आ गई थी, नवलचंदजी आनेकी तय्यारी-में थे—स्नान करके कपड़े पहन रहे थे। उधर हीराचंदजी अब

ऐसे अशक्त हो गए थे कि कुछ दिनोंसे इनका मंदिर जाना भी बन्द हो गया था। पर प्रगट रूपसे कोई ऐसी बात नहीं थी कि जिससे सेठ हीराचंदकी तवियत असाध्य व नाजुक समझी जाती हो। उधर तो भादों मासकी खटपट इधर हीराचंदजीने एकाएक णमोकार मंत्र कहते व श्री अरहंत सिद्धको नमस्कार करते हुए अपने ही सहवासमें प्राण छोड़ दिये।

एकाएक मरण जानकर तीनों ही सुपुत्र बहुत ही दुःखित हुए। हम अपने पूज्य पिताकी कुछ भी सेवा न कर सके इसका पछतावा करते हुए जो उदासी इनके चित्तको हुई उसका वर्णन नहीं हो सक्ता है। माणिकचंदजीका चित्त बड़ा कोमल था, इनके अश्रुओंकी धारा वह निकली थी पर थे समझदार। तुर्त सम्हालकर जीवको गया जान व केवल जड़ पुद्गलको देख उसमें अधिक जंतु न पड़े इस ख्यालसे शीघ्र ही सर्व सम्बन्धियोंको एकत्रकर स्मशानमें दग्ध क्रिया की। सेठ हीराचंदजी ६० वर्षकी आयुमें अपने जीवनके कर्तव्यको बहुत ही नीति व परिश्रमसे पूर्ण कर, सेठ माणिकचंद, पानाचंद, नवलचंद ऐसे उद्योगशील धर्म व जाति हितैषी तथा परोपकारी पुत्रोंको छोड़ स्वर्गधाम पधारे। हीराचंदजीके भाव मृत्युके समय आर्तध्यान रूप नहीं थे किन्तु श्री पंचपरमेष्ठीके ध्यानमें अनुरक्त थे जिससे सेठजीकी आत्माको शुभभावोंके निमित्तसे अवश्य शुभ गति प्राप्त हुई होगी। मरण कालमें जैसे भाव होते हैं वैसी ही गति आत्माकी होती है। जिन जीवोंको निरन्तर धर्मध्यान, सामायिक, जाप, पूजन, भक्ति तथा स्वाध्यायका अभ्यास रहता है वे जीव

अवश्य मरण कालमें पूर्व अभ्यासके निमित्तसे शुभ भावोंको प्राप्त कर सकते हैं परंतु जो अपने जीवनमें धर्मध्यानका अभ्यास नहीं करते हैं उनके भाव मरणकालमें सांसारिक संबंधके चेतन अचेतन पदार्थोंमें उलझ जाते हैं जिससे आर्त्त व रौद्र ध्यानके वशीभूत हो वे नीच गतिमें चले जाते हैं, इससे हरएक प्राणीको उचित है कि वह अपनी आत्माके भविष्यको विचार कर धर्मकी शरणको कदापि न त्यागे, गृह सम्बन्धी कामोंको करते हुए धर्मका अभ्यास करना हरएक गृहस्थका मुख्य कर्तव्य है।

सेठ हीराचंदके जीवन वृत्तान्तका अंत इस अध्यायमें होता है। इस सेठका जीवन वृत्तान्त मनन करने योग्य है। धैर्य्यको कायम रखते हुए, परिश्रमको न छोड़ते हुए अपने पुत्रोंको योग्य सुआचरणी व धर्मसेवी बनानेमें जो भाव उक्त सेठके थे वे प्रशंसनीय थे। इन्होंने बालविवाहसे विरोध करके प्रौढ़ आयुमें जब पुत्र धन कमानेके योग्य हो गए तब उनका विवाह किया, यह बात इस कालमें बहुत ही अनुकरणीय व प्रशंसनीय है। यदि छोटी आयुमें वे लग्न कर देते तो उनके पुत्रोंका उपयोग भोगविलासमें अधिक लीन हो जाता और एक महान गरीब व साधारण स्थितिसे एक धनाढ्य प्रसिद्ध व्यापारीकी अवस्थामें पहुंचना स्वप्नमें भी दुर्लभ हो जाता। पुत्रोंको कष्ट न हो, उनका शरीर अशुद्ध घीसीके भोजनसे रोगिष्ट न हो इसलिये वर्षों तक जो सेठ हीराचंदजीने अपने हाथसे रसोई बनाके खिलाई है यह एक अतिशयगंभीर, सहनशील, प्रेमालु और दीर्घ दर्शी व्यक्तिका ही कार्य्य हो सकता है।

वर्तमान कालमें भी सेठ हीराचंदजी ऐसे पिताओंकी जरूरत है

जो अपने स्वार्थका खयाल न करके अपने पुत्रोंको सुपुत्र बनानेमें पूरी २ चेष्टा करें, उनके सच्चे हितको देखें । हमारे पुत्र धर्म, अर्थ और काम पुरुषार्थके पालनमें प्रवीण हों यही भावना मातापिताके दिलोंमें यदि हो और वे उस भावनाकी सफलतामें प्रमादी न हों तो उनकी सन्तान अवश्य सुयोग्य बन सकती है। भारतका उद्धार उस समय तक होना कठिन है जब तक संतानकी रक्षा और शिक्षाका योग्य प्रबन्ध न होगा । हमारे पाठकोंको सेठ हीराचंदके जीवनसे पूरी २ शिक्षा लेनी चाहिये ।

अध्याय सातवाँ।

लक्ष्मीका उपयोग।

शुभ कार्यमें देर न लगाना।

सेठ माणिकचंदजीको अपने पूज्य पिताके वियोगका बड़ा भारी दुःख था, रह रह कर यह खयाल आता था कि हमने कोई भी भारी दान अपने पितासे नहीं कराया यह हमने बड़ी भूल की। यद्यपि मेरे दिलमें तो बहुत दिनसे था कि पिताजीसे प्रार्थना करूं कि वे कुछ आज्ञा देवैं पर अभी क्या जल्दी है फिर करलेवेंगे इसी खयालसे मैं पिताजीसे कुछ भारी दान न करासका। वास्तवमें जो दान धर्म आदि कार्य्य करने हों उनको जब सोचे तब ही कर डाले। पीछे करूंगा, इस विलम्बसे बहुधा पछताना पड़ता है क्योंकि हम कर्मभूमियोंकी आयुकी समाप्ति होनेके कालका कोई निश्चित समय नहीं है। खैर, यद्यपि अब पिताजीकी आत्माको दानका पुण्य नहीं होगा तोभी मैं उनका यश स्थिर करनेके लिये जहां तक मेरा बश होगा कुछ दानधर्मके बड़े २ काम अवश्य करूंगा। अब मुझे लक्ष्मीको केवल एकत्र ही नहीं करनी चाहिये किन्तु और भी अधिक दानमें लगाकर सफल करना चाहिये, कारण यदि मैं और पानाचंद भाई मोतीचंदकी तरह अकाल मृत्युके वश हुए तो फिर इतना धन प्राप्तिका परिश्रम वृथा ही चला जायगा, इस भांति विचार कर एक दिन माणिकचंदजीने भाई पानाचंद और नवलचंदसे एकान्तमें बात की कि हमलोगोंने

अबतक रुपया कमाया तो बहुत पर कोई भारी काम नहीं किया। देखो न, पिताजीसे और न भाई मोतीचंदजीसे हमलोग कुछ दान करा सके, इसी तरह हमलोग भी मर गए तो हमारी यह लक्ष्मी हमारे द्वारा सदुपयोगमें न लग सकेगी। इससे अब कुछ काम करना चाहिये। पानाचंदजीने बड़े साहसके साथ कहा कि दान धर्ममें कहां पर क्या काम करना व किस तरह करना यह सब तुम्हारे सुपुर्द है, तुम विचार करके जिस काममें द्रव्य लगाना चाहो मुझसे केवल पूछलो और खर्च करो, किसी प्रकारका संकोच मत करो, मेरा चित्त तो व्यापारके सिवाय दूसरी वार्तोके विचारमें कम जाता है तुम अच्छी तरह लक्ष्मीका उपयोग करो। नवलचंदने भी इस बातमें अपनी पसन्दगी प्रगट करनेके अर्थ अपना प्रसन्न मुख दिखा दिया-कुछ उत्तर न दिया क्योंकि नवलचंदजीको बात करनेमें बहुत संकोच होता था।

इस समय भारतमें बड़े लाट लॉर्ड रिपनका जमाना था, यह लाट बड़े दयालु, प्रजावत्सल व भारतमें शिक्षा आदिके प्रचार करानेमें उत्साही थे। इनके समयमें बहुतसी प्रबन्धक शक्ति स्थानीय हाकिमोंको दी गई कि वे द्रव्यको एकत्र कर अपनी शक्तिसे उपयोगी कामोंमें लगावें। इनके समयमें शिक्षा की ओर खास ध्यान दिया गया जिसके लिये सर विलियम हन्टरके नेतृत्वमें एक कमीशन नियत किया गया। इनके समयमें नेपाल और काश्मीरके सिवाय सर्व भारतकी जनसंख्या एक साथ पहले पहल सन् १८८१ में लिखी गई।

इस समय जैनियोंमें भी लिखने पढ़नेकी चर्चा कुछ ज्यादा हो चली थी। रेलवेके निमित्तसे परदेश जाना आना भी बढ़ गया था। हूमड़ोंकी ऐश्वर्य्य वृद्धिका दक्षिणमें शोलापुर नगर अब भी प्रसिद्ध है। उस समय शोलापुरमें सेठ हीराचंद नेमचंद दोशी परोपकारके काममें

सेठ हीराचंद नेमचंदका सेठ माणिकचंदसे परिचय।

प्रसिद्धि पारहे थे। यह शेठ हीराचंद नेमचंद निहालचंद उत्रेश्वर गोत्र धारी दशा हूमड़के रत्नबाईसे उत्पन्न दो पुत्रोंमेंसे छोटे पुत्र हैं। बड़े का नाम सखारामजी है, यह मूल निवासी ईडरस्टेटके वांकानेर ग्रामके हैं। नेमचंदके पिता निहालचंद भीमजी पहले व्यापारके लिये फल्टनमें बसे और कपड़ेका काम शुरू किया। संवत १८९९ में इन्होंने एक दूकान शोलापुरमें भी की। सेठ हीराचंद मगसर वदी ८ (गुजराती कार्तिक वदी ८)सं. १९१३के दिन शोलापुरमें जन्मे। १० वर्षकी उम्रतक सर्कारी शालामें मराठी पढ़ी फिर स्कूल छोड़कर संस्कृत, व्याकरण और काव्यका अभ्यास किया और सागवाड़ाके भट्टारक राजेन्द्रभूषणसे जब वे शोलापुरमें ४ मास ठहरे, भक्तामर व सूक्तमुक्तावलीके अर्थ सीखे। संवत १९२६ में यह अपने पिताजीके साथ श्री गिरनार और सेत्रुंजयकी यात्राको गए थे। जूनागढ़में इनके पिताने अपने भानेजे शाह मोतीचंद खेमचंद और भतीजे दोसी तलकचंद पदमसी आदिके योगमें एक दि० जैनमंदिर नया बंधवाकर सं० १९२६ वैशाखमें प्रतिष्ठा करा दी और वहां चार महीना ठहरे। आयुकर्म समाप्त होनेसे नेमचंद (गु०) वैशाख वदी १४के दिन स्वर्ग पधारे। यात्रासे लौटकर इन्होंने खानगी रीतिसे अंग्रेजीका भी इतना अभ्यास

कर लिया कि यह समाचार पत्र व पुस्तकें पढ़ लेते व चिट्ठीपत्री कर लेते थे। सं० १९३०में इनकी लग्न हुई। १७ वर्षकी उम्रसे यह कपड़ेकी दूकान सम्हालने लगे। शोलापुरमें स्पिनिंग एन्ड वीविंग मिल है इसके एजन्ट बम्बईनिवासी **सेठ वीरचंद दीपचंदजी** थे। इनके साथ सेठ हीराचंद कपड़ेका व्यापार करते थे। इनको धर्मशास्त्रोंके बांचनेके सिवाय बाहरी पुस्तकोंके पढ़नेका भी बहुत शौक था। संवत १९३६में इन्होंने शोलापुरके बाजारमें एक लायब्रेरी (सार्वजनिक पुस्तकालय) स्थापित कराया और आप उसके मंत्री हुए। लायब्रेरीके निमित्तसे सेठ हीराचन्दजीकी सर्व साधारणमें बहुत मान्यता हो गई, यहां तक कि संवत १९३७में शोलापुरकी म्यूनिसिपालिटीमें आप सर्कारी मेम्बर नियत हुए। उस समय व्यापारियोंपर कर बढ़ाया गया था उसको उक्त सेठने लोगोंकी तरफसे सर्कारसे लिखा पढ़ी करके बहुत घटवा दिया इससे इनकी बहुत कीर्ति हुई, **जैन जातिमें जो कुछ जागृति इस समय फैली हुई है**, स्वाध्यायका जो प्रचार हो रहा है, ग्रन्थोंके प्रकाशनका जो कार्य्य हो रहा है, संस्कृत व धर्म विद्याकी पढ़ाईमें विद्यार्थी दत्तचित्त हो रहे हैं **इस सर्वके मूल कारण उक्त सेठजी हैं**। अब भी आप आनेररी मजिस्ट्रेट हैं और जाति व धर्मसेवामें लीन हैं तथा बम्बई दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभाके सभापति हैं। सं० १९३७को शोलापुरसे आप किसी व्यापारी कार्य्यके निमित्त बम्बई आए उसी समय और भी शोलापुरसे जैनीमें व्यापारी बम्बई आए थे। सेठ हीराचंदजीको शास्त्र स्वाध्यायका नियम था, यह बम्बईके जिन मंदिरमें स्वाध्याय करने लगे इतनेमें नया

देखते हैं कि एक बहुत स्वरूपवान सेठ सिंहसमान दैदीप्यमान मुखाकृतिको रखनेवाले, धोती दुपट्टा ओढ़े हुए श्री जिनेन्द्रकी प्रक्षाल पूजा करके आये और शास्त्रस्वाध्याय करने लगे। सेठ हीराचंदने इनको प्रतापशाली व धर्मप्रेमी तथा स्वाध्यायमें अनुरक्त देखकर बात करनेकी इच्छा दिलमें धारण की। जब यह सेठ स्वाध्याय कर चुके तब ही अपना स्वाध्याय पूर्ण किया और इनसे कुछ पूछना ही चाहते थे कि इतनेमें सेठ माणिकचंदने अपनी आदतके वश स्वयं प्रश्न किया कि आपका कहाँ निवास है, कब आए इत्यादि। परस्पर वार्तालापसे सेठ माणिकचंदने निश्चय कर लिया कि यह एक बुद्धिमान, चतुर, विद्वान्, शास्त्रके मर्मी तथा परोपकारी व्यापारी हैं। आपने सेठ हीराचन्दको अपनी दूकानपर बुलाया।

माणिकचन्दजीने दूकानपर इनका बहुत सन्मान किया तथा हित जनाया। यही प्रथम अवसर है जब सेठ माणिकचंदने अपने जीवनके धर्मकार्योंमें मुख्य मंत्र देनेवाले सच्चे धर्मात्मा मित्रसे मिलनेका लाभ लिया। बातचीत होते हुए सेठ माणिकचंदने पूछा कि आजकल जैन जातिमें कौन २सी आवश्यकताएं हैं जिनमें धन व्यय करना चाहिये ? उत्तरमें सेठ हीराचंदने कहा कि आजकल जैन जातिमें धर्मविद्याका बहुत कम प्रचार है, लोग स्वाध्याय बहुत कम करते है, तथा जो इंग्रेजी पढ़ते हैं उनको धर्म शिक्षा बिलकुल नहीं मिलती, बहुतसे लोग स्वाध्याय करना भी चाहते हैं तो उनको ग्रंथ बड़ी कठिनतासे मिलते हैं, प्राय: पुजा पाठ आदिके ग्रन्थ लिखे हुए अशुद्ध देख पड़ते हैं इससे लोग अशुद्ध पूजा पढ़ते हुए दीख पड़ते हैं, आपने अपनी गिरनार व पालीताना

की यात्राका हाल भी कहा कि तीर्थोंकी व्यवस्था योग्य नहीं है, प्राचीन मंदिर बेमरम्मत पड़े हैं, अंतमें आपने बताया कि हमारी रायमें अब विना खास आवश्यकताके नवीन श्रीजिनमंदिरजी बंधवानेमें द्रव्यको न लगाकर प्राचीन मंदिरोंका जीर्णोद्धार करना चाहिये, तीर्थोंकी व्यवस्था सुधारना चाहिये, वहांका हिसाब ठीक कराना चाहिये, धर्मशालाओंकी दुरुस्ती कराना चाहिये, पाठशालाएं आदि स्थापित करना चाहिये, जो इंग्रेजी पढ़नेवाले छात्र धर्मशिक्षा लेवें उन्हें पारितोषिक व मासिक छात्रवृत्ति देनी चाहिये, शुद्ध ग्रंथ लिखाने चाहिये व मेरी रायमें तो यदि ग्रन्थ छपाएं जाय तोभी कुछ हर्ज नहीं है ।

इस बातको सेठ हीराचंदने दबे शब्दोंमें इस लिये कहा था कि उस समय ग्रन्थ छपनेकी बात भी कोई नहीं करता था व जो ऐसा कहता उसे बहुत निन्द्य समझते थे । सेठ माणिकचंदजी बड़े गुणग्राही थे और उत्तम बातको उसी तरह अपनेमें लीन करते थे जैसे कोमल भूमिमें मेघका पानी समा जाता है, सेठ हीराचंदकी बातोंको दिलमें जमाकर उनकी पूर्तिका मनन करने लगे ।

चंद्रप्रभुके मन्दिरका पुनः जीर्णोद्धार ।

थोड़ ही दिनोंबाद सेठ माणिकचंदजी सूरत गए और श्री चंद्रप्रभुजीके बड़े जिन मंदिरको जिसके जीर्णोद्धारमें अग्निसे भस्म होजाने पर सेठ हीराचंदजीने बहुत उद्योग किया था फिर जीर्ण दशामें देखकर उसका उद्धार करना ऐसा मनमें निश्चय किया और बम्बई आकर अपने भाइयोंसे सम्मति करके जीर्णोद्धारके वास्ते प्रबन्ध किया। मंदिरके नीचे श्री चंद्रप्रभु स्वामी
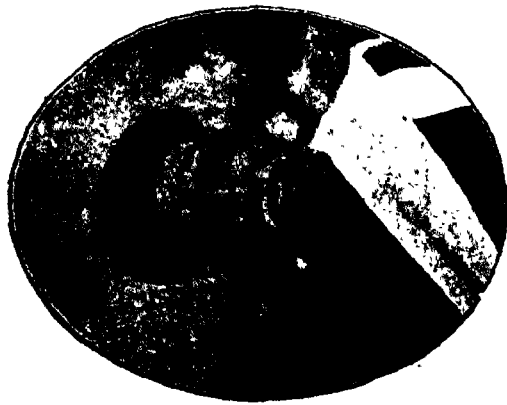
सेठ हीराचंद नेमचंद सोलापुर.

[देखो पृष्ठ १८९]
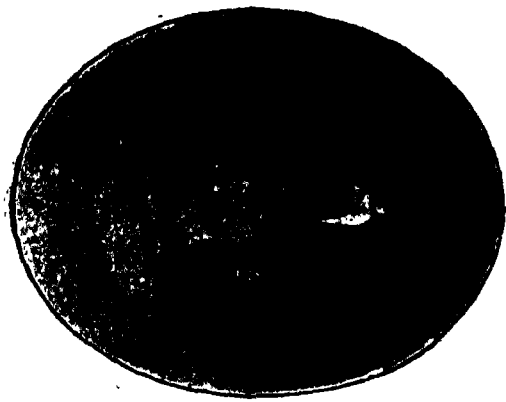
सेठ ठाकुरदास भगवानदास बंबई.

[देखो पृष्ठ ४०९]

की वेदी सिंहासनादिके बनवानेमें करीब २०००) आपने खर्च किये। मंदिरजीको ठीक करानेमें सेठ माणिकचंद प्राय: सूरत आते जाते रहे। जब यह मंदिर बन चुका तब संवत् १९३९ में इसकी जीर्णोद्धार प्रतिष्ठा उक्त सेठोंने बम्बईके दूसरे सेठ माणिकचंद लाभचंद चौकसीके साथ मिलकर बहुत धूमधामसे की जिसमें ८०००) खर्च हुए। भट्टारक १०८ श्री गुणचंद्रजी प्रतिष्ठाकारक थे। दो तीन नवीन प्रतिमाएं भी आई थीं इससे पंचकल्याणक विधान हुआ था। शोलापुरसे दो उपाध्याय विधि कराने आए थे। इस उत्सवमें गुजरातके बहुत लोग एकत्र हुए थे, संख्या १०००के होगी।

क्षुल्लक धर्मदासजी।

इस समयमें प्रसिद्ध **क्षुल्लक धर्मदासजी** भी आए थे। आप बड़े आत्मानुभवी थे, आपने सम्यग्ज्ञानदीपिका आदि कई ग्रंथ बनाकर छपवाए हैं। इनके सहपाठी **भट्टारक वीरसेन** कारंजा व पीतांबरदासजी पारोला आदि हैं। यह तीर्थभक्त भी थे, शिखरजीकी सेवामें बहुत लीन रहते थे, बहुतसी धर्मशाला इनके उपदेशसे बनीं, **राजा पालगंज उस समय पार्श्वनाथसिंह** थे, जो क्षुल्लकजीका बहुत सन्मान करते थे। राजाके मकानके पास प्राचीन दि० जैन मंदिर है जिसमें बहुत प्राचीन श्री पार्श्वनाथजीकी पद्मासन मूर्ति अतिवीतराग ध्यानाकार है। यह मंदिर जीर्ण होगया था। आपने राजाको उपदेश देकर दुरस्त करवाया और फिर जीर्णोद्धार प्रतिष्ठा की जिसका शिलालेख वहाँ पत्थरमें खुदा हैं। उसकी नकल यह है—

श्रीमत् श्रीसम्मेद शिखर मंदिर जैन दि० तस्य जीर्णोद्धार प्रतिष्ठा करापितं गादि पालगंज राजासाहब श्री श्री पार्श्वनाथसिंहजी प्रतिष्ठाचार्य श्री धर्मदासजी......वदी २ संवत १९३९ मंदिर पालगंजमें अयं सत्य: ।

एक दफे राजाको कुछ द्रव्यकी जरूरत हुई । आपने देशमें घूमकर ७५०००) **जमा करके राजाको कर्ज दिलाए।** जब शिखरजीके पहाड़ पर **वाडेम** नामके अंग्रेजने **सूअरका कारखाना** किया था उसके उठानेमें आप प्रयत्नशील थे। कलकत्तेके राय बद्रीदासजीसे आपका पत्र व्यवहार रहता था । आपने ही बद्रीदासजीको दृढ़ किया कि इस हिंसाके कामको बन्द करानेका प्रयत्न करो । उस समय दिगम्बर श्वेताम्बरमें पूरा २ मेल था । आपके पत्रकी नकल ' **जैन बोधक** ' अंक ४१ माह जनवरी १८८९ में छपी है जिसके कुछ वाक्य दिये जाते हैं—

पत्र मिती भादवा वदी ८ संवत १९४५

" चिठी आपकी श्री शिखरजीसे आई जिसका जवाब आपके पास भेजा था । चिठी १ खानदेशसे आई । श्री शिखरजीका आपकूं बहुत फिकर है सो ऐसा ही चाहिजे । **आपन मजकूं बी सबसैं पहले वाकफ कर्या था जबसैं मैं इस कामकी पुरी २ तदवीर में हूं।** धर्मप्रसादसैं सब अच्छा होवैगा । आपकी चिठी पाते ही मैंने लाट साहबसे जुबानी सब हाल कहे पीछै अरजी दीनी । उन्होंने उसी वक्त नागपुरके कमीसनरके नाम हुकम जाहारी किया शिखरजीमें जाकर दर्याप्त करो और जबतक दूसरा हुकम न हो **चरबीका काम** बंद रहे ।..........बहुत

शहरसे चिठी आई । आपने सर्वको खबर दिई आपकी तारीफ कहांताई लिखें । ”

सेठ माणिकचंदने अंकलेश्वर निवासी धर्मचंदजीको खास पत्र देकर सूरत बुलाया था यह वही धर्मचंद है जिन्होंने सं० १९३४ में अंकलेश्वरकी त्रिलोक पूजा विधानके समय सभामें श्रीयुत त्यागी महाचंद्र कृत भजन गाया था और जिसकी नकल सेठ माणिकचंदको भेजी थी। धर्मचंद नृत्य व गानमें बहुत चतुर थे। सूरतकी इस प्रतिष्ठामें इन्होंने अपने भजनोंसे खूब भक्ति दरशाई जिससे नरनारियोंका चित्त धर्मप्रेमसे भर गया। एक दिन धर्मचंदने सेठ माणिकचंदजीसे एकान्तमें कहा कि मैं एक छोटेसे ग्राममें पड़ा हुआ हिंसाका धन्धा- कर रहा हूं, आप मेरे लिये कुछ काम बताओ जिससे मैं इस हिंसासे बचूं । सेठ माणिकचंदजीने इस धर्मात्माकी बातको अपने हृदयमें घर लिया और उनसे कहा कि तुम कोई चिन्ता न करो, हम विचार करेंगे । इस उत्सवमें मंदिरजीको ८०००) की उपज बोलीमें हुई, उसको सेठ माणिकचंदने जमा कर बम्बईमें एक मकान खरीद इसको अब २००००)के करीब तक पहुंचा दिया है ।

इस वक्त प्रेमचंद और फुलकुमरी ९ वर्ष और मगनमती ३ वर्षकी थीं। इन तीनोंको ऐसे मनोहर वस्त्राभूषणोंसे अलंकृत किया गया था कि जो हज़ारों जैन नरनारी सूरतमें आए थे वे इनको देखकर मोहित हो जाते थे । सबोंके गलेमें मोतियोंके हार व हीरके कंठे बहुत ही शोभाको विस्तार रहे थे । जो सेठ हीराचंदकी पूर्व स्थि- तिको जानते थे वे इन बच्चोंको देखकर सेठ हीराचंदके उद्योगशील

और सदाचारी पुत्रोंके पुण्य और पुरुषार्थकी खूब ही सराहना करते थे ।

सुरतकी प्रतिष्ठासे इन तीन पुरुषार्थी पुरुषोंका यश और भी विस्तृत हो गया ।

श्री गोमट्टस्वामीजी-की यात्रा सं.१९४० ।

सं० १९४० के जाड़ेके दिन आए । बम्बईमें एक दिगम्बर जैन गुजराती प्रसिद्ध धनाढ्य सेठ सौभागशाह मेघराज रहते थे । इनकी भी धर्ममें बड़ी प्रीति थी तथा इनके भाई सुरत गद्दीके चंद्रकीर्ति नामके भट्टारक थे, जिनका वर्णन अध्याय दूसरेमें आया है । इन्होंने एक दिन बम्बई मंदिरमें वर्णन किया कि हमारी इच्छा दक्षिणकी ओर श्री **जैनबिद्री** और **मूलबिद्री**की यात्रा करनेकी है, जिनभाइयोंकी इच्छा हो साथ चलें । सेठ माणिकचंदजी तुर्त तयार होगए । इनके उद्यत होते ही १२९ मनुष्योंका संघ यात्राके लिये जुड़ गया । सेठ पानाचंद और माणिकचंद और रूपाबाई आदि सर्व कुटुम्ब लड़के बच्चे यात्राको रवाना हुए । घरमें केवल नवलचंद सकुटुम्ब रहे ताकि व्यापारका काम बन्द न पड़े । इस यात्रामें इन प्रसिद्ध मोतीके जौहरियोंने बहुत रुपया खर्च करना विचारा । कई महाशयोंको यात्रा करानेमें भली भांति मदद भी की । सेठ माणिकचंद बड़े परोपकारी थे । सबको आराम पहुंचाकर आप आराम करते थे । रास्तेमें सबके टिकट, माल असबाबका प्रबन्ध, ठहरनेके लिये स्थानकी तलाश, हिसाबका रखना, वहांवालोंसे वार्तालाप करना यह सब काम बहुतही खटपटी निरालसी सेठ माणिकचंदके जिम्मे था ।

सर्व संघ सकुशल श्री जैन बद्री पहुंचा। मैसूर राज्यमें श्रवण बेल्गोला नामका नगर मैसूर स्टेशनसे ५५ मील व फ्रेंचरांक स्टेशनसे ३० मीलके अनुमान है। वर्तमानमें लोग बम्बईसे हुबली होकर आरसीकेरी स्टे-शनसे जाते हैं यहांसे भी ३० मील है। यहाँ **गोमट्टस्वामी**की वृहत मूर्ति है जो ९ मील दूरसे अपने भव्य दर्शन प्रदान करती है। उस समयकी कुछ व्यवस्था जो थी वह यहाँ " जैनबोधक " अंक ४ पुस्तक १ दिसम्बर सन् १८८५ के अनुसार लिखी जाती है जिस यात्राका वर्णन उस पत्रके सम्पादक सेठ हीराचंदने स्वयं सम्वत १९४१ में यात्रा करके लिखा है—" बेल्गोला ग्राममें ८ दि० जिनमंदिर हैं जिनमें पट्टाचार्यका मंदिर दुरुस्त है शेष नहीं। मंदिरोंमें घास बढ़ गई है, मंडपमें पक्षियोंके घर हैं जिससे दुर्गंध आती है। यहाँ दो पहाड़ एक दूसरेके सन्मुख हैं, एक बड़ा जिसको **धोडपेटा** दूसरा छोटा जिसको **चिकपेटा** कहते हैं। बड़ेपर ८ व छोटेपर १४ दि० जैन मंदिर है। व्यवस्था पट्टाचार्य्यके आधीन है। कई मंदिरोंके दरवाजे नहीं है जिससे पशु पक्षी उपसर्ग करते हैं। यहाँसे १ मील दूर **जिननाथपुर** एक ग्राम है, यहाँ दो प्राचीन मंदिर हैं। एक प्रतिमा नहीं है, दूसरेमें श्री शांतिनाथ-स्वामीकी बहुत प्राचीन प्रतिमा है जिसकी पीठपर लिखा है कि यह मंदिर **कोल्हापुरके भीमसेन सेनापतिने बनवाया।** इस मंदिरका कुछ भाग गिर गया है सो गांवका पटेल जैनी न होनेपर भी मंदिरकी दुरुस्तीका प्रयत्न करता है। सेठ हीराचंद नेमचंद लिखते हैं कि हमारे साथवालोंने १००) व बेल्गुल्गांववालोंने २००) इस प्रकार ३००) इसकी दुरुस्तीके लिये ब्रह्मसूरि शास्त्रीको दिये तथा

मंदिरोंमें दरवाजे लगानेको भी रुपये पट्टाचार्य्यको दिये हैं । इस संबंधमें जब सेठ हीराचंद यात्रासे लौट आए तब पट्टाचार्य्यजीने सेठजीको **हिंदी भाषामें** पत्र भेजा उसकी नकल " जैनबोधक " में है उसका कुछ सारांश यहां दिया जाता है ।

"......आपने श्री गोमट्टस्वामीके पहाड़ ऊपर और चिकपेटा ऊपर दरवाजे दुरुस्त करने वास्ते रुपये दे गए थे जिसमेंसे चिकपेटा ऊपर शांतिनाथ महाराजके मंदिरके दरवाजे तयार हो चुके हैं बाकीके तयार करनेके लिये लोहाके सिलापट्टी सब लाए हैं......गोमट्टस्वामीके पहाड़ ऊपर बड़े दरवाजेको खिड़की तयार करके बिठाई है........ जिननाथपुरके मंदिरके दुरुस्तीका काम ब्रह्मसूरि शास्त्री मूलबिद्रीसे यहाँ आवेंगे तब उनके विचारोंसे शुरू करेंगे......काम पूरा करके आपको लिखेंगे चंद्रप्रभ काव्य व्याख्यान सहित **छापनेको दिई है**........तयार होनेसे आपके वास्ते एक प्रति भेज देवेंगे........आशीर्वाद

सही **भट्टारकजीकी द्राविड लिपिमें।**

हिन्दीको भारतकी राष्ट्रीय भाषा होनेका दावा।

इस पत्रकी कुछ नकल यहाँ इसलिये प्रगट की गई है कि हमारे पाठकोंको मालूम हो कि कनड़ी देशमें भी हिन्दी लिखने व पढ़नेका रिवाज है जिससे भारतकी यदि कोई भाषा व लिपि **राष्ट्रीय** होसक्ती है तो यह **हिन्दी भाषा** ही है । दूसरे यह कि पट्टाचार्यजी ग्रंथोंके मुद्रणमें विरोधी न होकर सहकारी थे ।

गोमट्टस्वामीका बड़ा पहाड़ एक ही पत्थरका है ऊपर चढ़नेपर १ बड़ा दरवाजा आता है उसके भीतर जाते ही एक दम खुली,

निर्मल, शांतस्वरूप, बहुत विस्तीर्ण, मनोहर **बाहुबलि स्वामीकी** नग्न मूर्त्ति नज़र आती है। मूर्तिके दर्शनसे अंतःकरणमें एक प्रकारका आश्चर्य युक्त आनंद होता है। १६हाथ चौड़ी और ४०हाथ ऊंची ऐसी उत्कृष्ट ध्यानारूढ़ तेजस्वरूप मूर्तिकी तरफ रातदिन नेत्र लगाके बैठे तौभी तृप्ति नहीं हो सकती। बाहुबलिस्वामी प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेवके पुत्र थे, इन्होंने दीर्घकाल तपश्चरण किया था जिससे चरणमें वल्मीक लगे हैं उनमेंसे सर्प निकलके पांवसे खेल रहे हैं। शरीरके ऊपर वेल चढी हैं ऐसा हुबेहुब भाव पत्थरमें मनोहर खुदा हुआ देखनेमें आता है। गोमट्टस्वामीके बाएं हाथमें बालबोध अक्षर खुदे हैं–

" चामुण्डराजे करवियलें
गंगरजे सुतालय करवियलें"

इस ही अभिप्रायके सीधे हाथमें कानड़ी और द्राविड़ लिपिमें अक्षर खुदे है। **चामुण्डराय** विक्रम संवत् ६००के अनुमान हुए है+। उन्होंने स्वयं यह अक्षर लिखवाए है ऐसा ब्रह्मसुरि शास्त्री कहते हैं।

वाई तरफ जो कनडी अक्षर हैं उनका तात्पर्य है—

" नयकीर्ति सिद्धान्त चक्रवर्तीका शिष्य बसदी सेठीने कोट बंधायके चौवीस तीर्थंकरोंकी प्रतिमाएं स्थापित कीं।" यह प्रतिमाएं श्री बाहुबलि स्वामीकी मूर्तिके पीछे प्रदक्षिणामें विराजित हैं। गोमट्टस्वामीकी बाई तरफकी इमारतमें एक तेलिया पत्थरपर लिखा है–

+नोट–वर्तमानमें चामुंडरायके होनेका संवत १०५० के लगभग माना जाता है। देखो "प्रशस्ति गोमट्टसार।

शके १२०२ प्रमाथी संवत्सरे कार्तिक सुदी १० सोमवार में संबुदेव गोमट्टस्वामीके वास्ते गदियानेकी दूध दररोज़ देऊंगा।

तथा गोमट्टस्वामीके सीधे हाथकी तरफ इमारतमें कूष्मांडिनी देवीकी मूर्ति है जिसके नीचे लेखका भावार्थ है--

"नयकीर्ति सिद्धान्त चक्रवतीका शिष्य बालचंद्रदेव उनका शिष्य कीर्तिसेठीका पुत्र बम्मसेठीने इस यक्ष देवीकी प्रतिष्ठा की।"

कई स्थानोंमें पत्थरके खुदे हुए प्रतिमाके समीप वत्स सहित गौ, हस्ती, सूर्य्य, चंद्र हैं, इसका हेतु ब्रह्मसूरि शास्त्री कहते हैं की दान देते समय ये चार साक्षी रखके दान देना ऐसा शास्त्राधार है जिससे यहाँ बताए हैं। चामुंडराजाके पहले **कृष्णराजा** हुआ है उसके समयका शिलालेख चिक्कपेटा याने छोटे पहाड़ पर है। अक्षर धवल महाधवलके लिपिके हैं। इसका वर्णन वृहत् हरिवंशमें । **मैसूरका राजा कृष्णराजकी माता देवी रमर्णी जन धर्मी** थी जिसने चिकपेटाके ऊपर श्रीआदिनाथके जीर्ण मंदिरको फिरसे बनवाया। इस ही मंदिरमें श्री **भद्रबाहुका** चरित्र **चंद्रगुप्त** राजाके समयका पत्थरमें खुदा हुआ है। चिकपेटाके ऊपर श्री भद्रबाहुके पादुका लंबे एक बालिस्त ८ अंगुल हैं। वहाँ बालबोध अक्षरमें लिखा है-

"भद्रबाहु स्वामी पादुका जिनचंद्र पणमिदं"

और एक यंत्र निकला है।

	५	
२४	श्री	२
	४	

श्रवणबेलगुल गांवमें एक तालाब है जिसको मैसूरके पहले **खजांची अण्णाप्पा सेठी जैनने बंधवाया था।** लम्बा फुट ३०० चौड़ा फुट ४०० है। पूर्व बाजूके दर्वाजेपर जैन प्रतिमा पत्थरमें खुदी हुई है।

बेलगुल गांवके बड़े मंदिरको हालीवीड़का राजा **नरसिंह** बल्लालका मंत्री हुलम्पा **भंडारीने** शाका १२०० के अनुमान बनवाया था । वहाँ कनड़ीमें शिलालेख है उसका भाव है— "नयकीर्ति मुनिका शिष्य भानुकीर्तिको शक १२०० बहुधान्य नाम संवत्सरे चैत्र सुद्ध १ रविवारके दिन सवणपुर नामका गांव (बेलगुलसे एक कोस पर है) जागीर दिया। दूसरा शिलालेख है जिसमें शाका १२८० कीर्ग संवत्सर भाद्रपद शुद्ध १ है। आगे नहीं पढ़ा गया। यहाँके अनंतनाथके मंदिरको मूलसंघ देशीयगण कुंदकुंदाचार्यान्वय चारुकीर्ति पंडिताचार्यके वक्त **मंगा** स्त्रीने बनवाया है। शाके १७५२में खरनाम संवत्सरमें मैसुरके **राजा कृष्णराजने** श्री बाहुबलि स्वामीकी सेवार्थ चारुकीर्ति पट्टाचार्य्यको ५ **गांव इनाममें** दिये हैं जो अब तक जागीरमें मौजूद हैं।

इन दोनों पर्वतोंपर १४४ शिलालेख हैं जिनकी नकल व. इंग्रेजीका उल्था राइस साहबने अपनी पुस्तकमें छपाया है जिसका नाम है "Inscriptions at Sravanbelgola" जो बंगलोरके सर्कारी प्रेससे मिलती है। यहाँ पर मुनियोंका सदा निवास रहा है। बहुतसे लेखोंमें उनकी पट्टावली व समाधिमरणकी बात है। भद्रबाहु श्रुतकेवलीकी समाधि यहीं हुई। उस समय मौर्यवंशी राजा चंद्रगुप्त मुनि अवस्थामें मौजूद थे। उन्होंने ही अंततक सेवा की थी।

बड़े सेठ माणिकचंदकी दया और सीढ़ियोंका प्रबन्ध।

ऐसे रमणीक अतिशय क्षेत्रके दर्शन प्राप्त कर सेठ माणिकचंदके संघको बहुत ही आनन्द प्राप्त हुआ। पर्वत पर चढ़ते हुए सेठजीने देखा कि वृद्ध पुरुष व स्त्रियोंको बहुत ही कष्ट हो रहा है, पत्थर चिकना ढालू है बारबार पैर फिसलता है। सेठजीका शरीर भी छोटा व भारी था। इनको भी पर्वत चढ़ते हुए बहुत कष्ट हुआ। यह चढ़ते २ विचारने लगे कि यदि इस पर्वतपर सीढ़ियां बनजावें तो सदाके लिये यात्रियोंका कष्ट दूर हो जावे। अबतक लाखों हजारों ही यात्री हो गए होंगे किसीके दिलमें यह भाव पैदा नहीं हुआ। पाठकगण, इससे समझ लेंगे कि किस कदर भारी परोपकारबुद्धि सेठ माणिकचंदमें थी। आप ऊपर गए, संघसहित परमानंददायक श्री बाहुबलि स्वामीके दर्शन करके अपने जन्मको कृतार्थ मानते हुए। पानाचंद भी बहुत ही प्रसन्न हुए। सर्वने वहां बड़ी भक्तिसे चरणोंका प्रक्षाल किया फिर अष्ट द्रव्यसे खूब भाव लगाकर पूजन करके महान पुण्य उपार्जन किया। दर्शन करते २ किसीका भी मन नहीं भरा।

सीढ़ियोंके चंदेमें १०००)

दूसरे दिन छोटे पर्वतोंके मंदिरोंके दर्शन किये। श्री भद्रबाहुस्वामीके चरणोंको स्पर्शकर महान आल्हाद प्राप्त करते हुए। सेठ माणिकचंदने अपने भाईसे सलाहकर अपने संघको एकत्रकर निश्चय किया कि बड़े पहाड़पर २००० सीढ़ियां बनवादेनी चाहिये। ५०००) से अधिककी एक पट्टी की जिसमें आपने १०००)की रकम भरी। रुपया एकत्रकर पट्टाचार्यजीके सुपुर्द किया कि इससे सीढ़ियां बनवा दी जावें। यह काम सेठ माणिकचंद-

ने इतने महत्वका किया कि आजतक इन सीढ़ियोंके द्वारा यात्रियोंको आराम पहुँच रहा है व आगामी पहुंचेगा।

वहांसे संघने श्री मूलबिद्री जानेका विचार किया और गाड़ियोंके द्वारा पैदल प्रस्थान किया।

मूलबिद्रीके रास्ते व मूलबिद्रीका कुछ हाल ऊपर लिखित जैन बोधकके अनुसार यहां कुछ दिया जाता है:—

बैलगाड़ी द्वारा मूलबिद्रीकी यात्रा।

श्रवणबेलगोलासे १ कोस **वसतीहेली** गाँवमें एक जिन मंदिर है जिसकी प्रतिष्ठा **नयकीर्ति सिद्धान्त चक्रवर्तीके** हाथसे हुई है। यहाँसे १२ मील **चंद्रायण पट्टण** गांव आता है। यहां जैनके २ घर हैं पर मंदिरजी नहीं है। यहाँसे ८ मील **शांतग्राम** है जिसको **हालीवीड़ी राजा बल्लालकी स्त्री शांतलादेवीने बसाया था।** यहाँ शांतिनाथजीका मंदिर है, ४ जैन घर हैं। यहाँसे ८ मील **हासन** शहर हैं, २ जिन मंदिर हैं, यहाँसे २० मील **हालीवीड** है यहां ३ जिन मंदिर है **श्री आदिनाथजीके** मंदिरके बाहर प्रतिमा के नीचे एक लेख है जिसका भाव यह है:—

" मूल संघ देशीय गच्छ गण पुस्तक कुंदकुंदान्वय, इंगलेश्वर ग्राममें **माघनंदि** भट्टारकके शिष्य दोय **श्री नेमिचंद्र** भट्टारक देव और श्रीमंत् **अभयचंद्र** सैद्धांतिक चक्रवर्ती० जिसमें पहले हैं सो **बालचंद्र** पंडितदेवके शिक्षागुरु और दूसरे विद्यागुरु थे। बालचंद्रने कहा था कि शाका शालिवाहन ११९७ भाव संवत्सर भाद्रपद शुक्ल १२ बुधवार मध्याह्न कालमें अपना अंत होगा। एक मास तक

अनशन लिया पर्यंकासनसे समाधिस्थ हुए। तथा सार चतुष्टयका व्याख्यान नेमिचंद्र बांचते हैं और उनके शिष्य बालचंद्र सुनते हैं। दूसरी तरफ अभयचंद्र बांचते है और बालचंद्र सुनते हैं ऐसे चित्र हैं और लेख है। चित्र केवल नग्न हैं।

शांतिनाथ मंदिरमें मुनि प्रतिमाके नीचे लेख है—

" कुलभूषण सैद्धांतिक शिष्य माघनंदिके शिष्य शुभनदिके शिष्य चारुकीर्ति पंडितदेव शाके १२०२ प्रमाधिनाम संवत्सरे कार्तिक बदी ९ शनिवार बालचंद्रके शिष्य अभयचंद्र समाधिस्थ हुए। "

यहाँ दूसरी मुनि प्रतिमा है। उसके नीचे लेख है—

" शाके १२२२ शार्वरी संवत्सरे चैत्र वदी ३ गुरुवार रामचंद्र मलधारी समाधिस्थ हुए। यह बालचंद्र पंडित देवके शिष्य थे। मुनि प्रतिमाके बाजूमें पीछी कमंडल है।

पार्श्वनाथ मंदिरमें एक फूटा हुआ शिला लेख है जिसपर शक १३२२ है। आगे नहीं बंचा। यहाँ एक दूसरा शिला लेख है जिसपर शाका १५७० ईश्वर नाम संवत्सरे फाल्गुण शुद्ध ९ गुरुवार है। इस मंदिरमें स्तंभ है जिसपर लिंगायत लोगोंने शिवलिंग स्थापन किया था उसको जैनियोंने निकाल डाला, दोनोंमें झगड़ा हुआ जिसका फैसला वेलूरके कृष्णापा नाईक आयनवरू कलिकाल अष्टम चक्रवर्ती व्यंकटादि नायकने करके समाधान किया।

यहाँसे १० मील वेलूर गाँव है। यहाँ जिनमंदिर नहीं है पर एक बड़ा विष्णु मंदिर है, उसके शिलालेखसे प्रगट होता है कि यह पहले जैन मंदिर था फिर विष्णु मंदिर किया गया है। वह लेख इस प्रकार है:—

" श्रीमद्विशुद्धबोधाय शांतायामलकीर्तये ।
स्याद्वाद सत्यवाक्याय, जिनेन्द्राय नमो नमः ॥ १ ॥
जयतु जयतु शश्वत् शासनं जैनमेतत् ।
सकलविपुलधर्मं श्रीलतावद्धमूलं ॥
सुदृढमिह धरित्र्यां यावदेषा धरित्री ।
वसतिवसतिरुच्चैरर्हतस्थानलक्ष्म्याः ॥ २ ॥ "

इसमें एक छोटीसी पाषाणकी चौवीसी मूर्ति फूटी पड़ी हैं। इस गांवमें संस्कृत शाला हैं। ६० छात्र पढ़ते हैं। कई न्याय भी सीखते हैं।

यहाँसे २२ मील गिरा विजसली नामकी पहाड़ोंकी झाड़ीमें एक खेड़ा गांव है जहाँ इलायची व काली मिर्चे बहुत होती है। ९६० तोलेका एक मन, इस तौलसे एक एकड भूमिमें २५ मन इलायची होती है। १ मनका दाम ५३) है।

यहाँसे १५ मील जंगलमें एक चौकी है। वहाँसे १६ मील **निड़गल** गांव है। यहां श्री शांतिनाथजीका मंदिर है। यहाँसे **वेणूर** १९ मील है, यहां ८ जिन मंदिर हैं। सर्कारसे २६८) साल ईनाम मंदिरोंकी सेवार्थ मिलते है। यहां **श्री गौमट्टस्वामीकी** मूर्ति है। श्रवण बेलगोलाकी मूर्तिसे आधे आकार होगी जिसके दक्षिणभागमें लेख है उससे प्रगट होता हैं कि शाका १५५९में तिम्म राजाने प्रतिष्ठा कराई। प्रतिमाजीके पगका तला २॥ हाथ लम्बा है। यहाँ उपाध्याय जैन ब्राह्मण हैं जिनको इन्द्र कहते हैं। उनके ८ व जैनियोंके अनुमान ४० घर हैं। इनमें रोटी व्यवहार है पर बेटी व्यवहार नहीं हैं। यहाँसे **मूलबिद्री** १२ मील है। यहां १८

जिन मंदिर हैं। सर्कारसे इन मंदिरोंके लिये १०००) वार्षिक अनुमान मिलता है। यहीं **रत्नोंके बिम्ब** व **धवल, जयधवल** व **महाधवल** नामके ग्रंथ हैं जिनकी रक्षाके लिये एक कमिटी है उसके मेम्बरोंके नाम हैं:—

१—कोंडे पद्मराज शेट्टी

२—राजा कुंजम शेट्टी

३—गुम्मण सेट्टी

४—नेमिराज उपाध्ये

इन चारोंके सामने इन रत्न बिम्बों व धवलादि ग्रंथोंका दर्शन प्राप्त होता है। यह गाँव बंगलोर जिलेमें हैं जहाँ जैनियोंके २००० के अनुमान घर हैं। यहाँ **मृत पुरुषकी मिलकियत भानजेको मिलती है ऐसा ही सर्कारी कायदा भी है** जिससे जैनी बहुत दरिद्री हुए व नष्ट हुए। यह रिवाज इसके १००० वर्षके अनुमानसे है जिसको **भूताल पांड्य** राजाने शुरू किया था। अब इसको सब नापसन्द करते हैं। यह रिवाज जैन उपाध्योंमें नहीं है। यह देश तौलव कहाता है। यहाँ उपाध्यायके घर १९ व जैनियोंके करीब २९ घर हैं। यहाँसे १० मील **कारकल** है। यहाँ १४ जिन मंदिर हैं। नेमिनाथ स्वामीके मंदिरमें जो शिलालेख है उसमें शाका १३७९ ईश्वर नाम संवत्सर कार्तिक मासमें भैरवरायाने बनवाया। शांतिनाथ मंदिरमें लेख है सो उसे समस्त गुरुने शक १२७६ भाव संवत्सरमें फाल्गुण शुद्ध ९ बुधवारको बनवाया। चंद्रनाथ मंदिरको शालि० शक १९१४ विनय नाम संवत्सर भाद्रपद शुद्ध ३ रविवार बरमण्णा शेठीने बनवाया। यहाँ भी वेणूरके समान श्री **गोमट-**

स्वामीकी बड़ी प्रतिमा पहाड़ पर है जिसपर लेख है उससे प्रगट है कि शाका १३५३में फाल्गुण सुदी १२ सोमवारको चंद्रवंसी भैरवेन्द्रके पुत्र श्री वीर पांड्य राजाने प्रतिष्ठा कराई। यहाँ चतुर्मुख मंदिरमें बड़ा शिलालेख है। यहाँसे लोग जहाजमें जानेको १८ मील गाडी पर चल मंगलोर बंदर पर आते है। यहाँ भी एक जिन मंदिर है। २ घर जैन व १ उपाध्यायका है। यहाँसे जहाज पर बैठके २ दिनमें बम्बई पहुँचते हैं। टिकट ११) लगता है।

सेठ माणिकचंद संघसहित इसी मार्गसे यात्रा करके जहाज़ द्वारा बम्बई लौट आए। इन्होंने जैनबिद्रीके भंडारमें भी अच्छी रकम दी व रास्तेके मंदिरोंमें भी दान किया।

धवलादि ग्रन्थोंके उद्धारका विचार।

मूड़बिद्रीके रत्नबिम्ब व धवलादि प्राचीन ग्रंथोंके दर्शन करते वक्त अच्छी रकम भेट धरी जिसे देख-कर वहाँके पंच और भट्टारकजी बहुत प्रसन्न हुए। सेठ माणिकचंदजीने दर्शन करते समय यह ज़रूर ध्यानमें लिया कि यह प्राचीन ग्रंथ जिन ताड़पत्रों पर है वे बहुत जीर्ण हो गए हैं। वहाँके लोगोंको सेठजीने कहा कि इनकी दूसरी प्रति करानी चाहिये। तब वहाँके लोगोंने कहा कि ये तो इसी प्रकार बहुत दिनोंसे हैं, हम तो दर्शन करके व कराके कृतार्थ होते हैं, हम गृहस्थी तो बांच ही नहीं सके, भट्टारकजी इस प्राचीन लिपिको पढ़ नहीं सके, हां; जैनबिद्रीमें ब्रह्मसूरि शास्त्री है वे ही इसको पढ़ना जानते हैं।

इस तरह बड़े आनन्दसे सेठजी यात्रा करके निर्विघ्न घर लौटे। रूपाबाईजीको इस यात्रासे बड़ा ही आनन्द हुआ। पुत्र प्रेमचंदजी

बड़े भावसे दर्शन करता था। चतुरमती फूलकुमरी और मगनमती कन्याओंको हरएक यात्रामें साथ रखती थी और दर्शन पूजन कराके बहुत आनन्द मानती थी। पानाचंदजीको भी इस यात्रासे बहुत धर्म लाभ हुआ।

यात्रासे लोटकर सेठजीके चित्तमें उन प्राचीन ग्रंथोंके उद्धारकी बात जमी रही और यह विचार करके कि यह काम किस तरह सम्पादन हो। आपने शोलापुरके सेठ हीराचंद नेमचंदको याद किया क्योंकि इनकी विद्वता व बुद्धिमानी सेठ माणिकचंदके चित्तमें उल्लिखित हो गई थी। अपनी यात्राका समाचार सेठ हीराचंदको लिखा और प्रेरणा की कि आप स्वयं यात्रा करके उन ग्रन्थोंको देखें और उनके उद्धारका उपाय करैं। सेठ हीराचंदने पत्र पाकर उत्तर दिया कि हम अबके अर्थात् संवत् १९४१ के जाड़ेमें श्रीमूलबिद्रीकी यात्राको यथा संभव अवश्य जावेंगे।

प्रेमचंद, फुलकुमरी और मगनमतीको शिक्षा।

अब सेठजीने प्रेमचंद और फुलकुमरीको ६ वर्षसे अधिक जान इनके पढ़ानेको एक अच्छी गुजराती शालामें भेजा तथा घर पर भी एक अध्यापक नियत किया तथा धर्मकी शिक्षा मुख्य जबानी इन बालकोंको माता रूपाबाई दिया करती थी व सेठ माणिकचंदजी भी देते थे, तथा मगनमतीको तो यह बहुत चाहते थे, २॥ वर्षकी उमरसे सेठजी इसको अपने साथ

नोट—गुजराती संवत दीवालीसे जब कि मारवाड़ी संवत चैत्र सुदी १ से शुरू होता है इससे मारवाडी सं० की अपेक्षा सं० १९८० है।
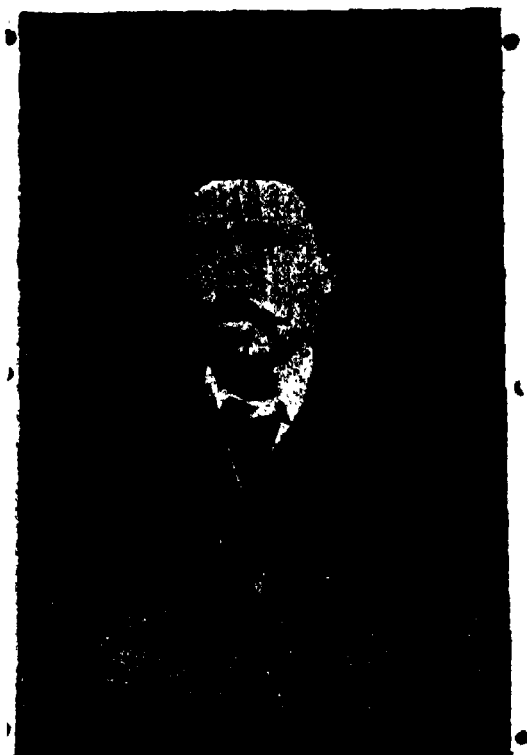
सेठजी युवावस्थामें ३० वर्षके निकट.

J. V. P. Surat.

(देखो पृष्ठ १८७)

भोजनके समय लेकर बैठते थे, फुरसतके समय सिखाते थे, धर्मकी बातें बताते थे और पास ही शयन कराते थे। जब यह शाला जाने योग्य हुई तब इसको भी भेजा।

इस समय भारतमें लार्ड रिपनके पीछे लार्ड डफरिन वाइसराय थे। इनके समयमें अमीर काबुलसे जो कई वर्षोंसे झगड़ा चलता था सो शांत हो गया, सरकारसे गाढ़ी मित्रता हो गई और प्रति वर्ष एक लाख २० हज़ार पाउंड अमीर काबुलसे सर्कारको मिला करे, ऐसा ठहराव हो गया। तथा ब्रह्माका मुल्क जो अब तक स्व-तंत्र था सो सन् १८८५में भारतमें मिला लिया गया, इससे ब्रह्मा और भारतमें व्यापारकी वृद्धि होने लगी।

सेठ हीराचंद नेमचंदकी जैनबिद्री मूलबिद्रीकी यात्रा।

सेठ माणिकचंदकी सूचनाके अनुसार सेठ हीराचंदजी जैन-बिद्री और मूलबिद्रीकी यात्राको शोलापुरसे मगसर सुदी ६, सं० १९४१ को रवाना हुए और गुज० पोष वदी ११ को लौट आए। यह शोलापुरसे रायचूर आरकोनम होते हुए बेंगलोर शहर पहुंचे। वहाँ एक जिन मंदिर नया देखा परंतु उसमें प्रतिमाएं सब पुरानी देखीं सिर्फ मूल नायक कायोत्सर्ग पीतलके बिम्बको सं० १९३९का श्रवणवेल गोलाके पारशनाथ शास्त्री द्वारा प्रतिष्ठित पाया। यहाँ प्रतिमाओंके इधर उधर दो भिन्न सिंहासनों पर पद्मावती देवीको विराजित पाया पर क्षेत्रपालकी स्थापना कहीं नहीं देखी। यहाँ २० जैन घर हैं मंडीमें जैन जिणप्पा मंदिरकी व यात्रियोंकी अच्छी सम्हाल रखते हैं। इनके पास कनड़ी भाषामें द्वादशानुप्रेक्षा छपी हुई देखकर

सेठ हीराचंदको बहुत हर्ष हुआ कि इधर ग्रन्थोंके छपनेका रिवाज है । पूछनेसे मालूम भी हुआ कि इधर कोई विरोध नहीं करता है । इस समय सेठ हीराचंदजीके दिलमें यह पक्का इरादा हो गया कि यात्रासे लौट कर जिस तरह बने ग्रंथोंके मुद्रण करके प्रचार करनेका कार्य्य हाथमें लेना चाहिये । यहाँसे मैसूर गए । वहाँ एक धनवान व्यापारी मोदीखाने तिमाय्याके मकानमें उतरे थे। इनके यहाँ जिन चैत्यालय है तथा इनके ४ पुत्र हैं १ शांतराजय्या, २ अनंत राजय्या, ३ ब्रह्मसूरिअय्या (इन्होंने मैट्रिकुलेशन तक इंग्रेजी अध्ययन किया था), ४ पद्मनाभय्या । यहाँ सेठजीने ग्रंथ भंडार देखा उसमें पुरुदेव चम्पू, जीवंधर चम्पू, गद्यचिंतामणि आदि ग्रंथ देखे। यहाँ **नाग कुमार** और **राजण्णा** दो जैन संस्कृतके विद्वानोंसे मिले । यहाँ अप्पाऊ पिले फोटोग्राफरसे १२) रु० में सेठजीने श्रवण बेल्गोलाके दोनों पहाड़ोंके गोमट्टस्वामी तथा चारुकीर्ति पट्टाचार्य्यके ऐसे ४ फोटो लिये । यहाँसे शारंगपट्टण होते हुए गाडी द्वारा श्रवण बेलगोला आए ।

श्रवण बेल्गोलामें पहुंचकर इन्होंने विद्वान **शास्त्री ब्रह्मसूरिजीसे** बहुत प्रीति उत्पन्न की। उन्हींके साथ वहाँकी यात्रा भी की तथा वहाँके भट्टारक पट्टचार्य्यजीसे भी बहुत स्नेह बढ़ाया । मनमें यह विचारा कि जो ब्रह्मसूरि शास्त्री हमारे साथ मूलबिद्री चलें तो उन धवलादि ग्रन्थोंका महत्त्व प्रगट होवे और उनके जीर्णोद्धारका उपाय किया जावे । सेठजीने अपने संघसे पट्टी करके वहाँके मंदिरादिकी मरम्मतके लिये जो रुपया दिया इससे इनका प्रभाव बेलगोलाके जैनियों पर अच्छा पड़ा । ब्रह्मसूरिजीने अपना शास्त्र भंडार भी दिखाया

जिसकी सूची ' जैन बोधक ' अंक २९ मास जनवरी सन् १८८८में मुद्रित है इसमें निम्न अपूर्व ग्रंथ हैं—

१—केवलज्ञान होरी जैन ज्योतिष ग्रंथ श्लोक संख्या १०००० संस्कृत चंद्रसेनकृत

२—क्रिया निघंट १००० बौधमती व्याकरण

३—कारक निघंट ,, ,,

४—न्याय विनिश्चय अलंकार ३००००, बृहद् अनंताचार्य कृत

५—त्रिविक्रम वृत्ति ४००० प्राकृत व्याकरण त्रिविक्रमदेवकृत

६—माघनंद संहिता मूल टिप्पण ५००० माघनंदि

७—पुरुदेव चंपू ३००० हरिचंद कविकृत

८—प्रायश्चित्त समुच्चय टीका ३०००

९—मूलाचार टीका ८००० कल्याणकीर्ति

१०—लोक विभागी ३०००

११—शास्त्रसार समुच्चयव्याख्या २००० माघनंदि व्याख्या प्रभाचंद्र कृत ।

ये ग्रंथ प्रकाशित होने योग्य है—

ब्रह्मसूरि शास्त्रीको अनेक ऐसे काम थे जिससे वे सेठजीके साथ मूलबिद्री नहीं जा सक्ते थे परंतु सेठ हीराचन्दने प्रेम व आग्रहसे तथा धवलादि ग्रन्थोंके पढ़नेकी उत्कंठासे अपने सर्व परिवार सहित चलनेकी तयारी की । उस समय सेठजीके साथ लाला रिषभदास आगरा, बाबा दुलीचंदजी, तोड़ूमलजी उजैन, कस्तूरचंदजी और भगतजी, पन्नालाल, वेणाचंद कालुजवाले, मोतीचंद फलटनवाले, नेमचंद म्हसवड़वाले आदि कई भाई थे । रास्तेमें सबके साथ धर्म चर्चा करते हुए मूलबिद्री पहुंचे । यहाँ श्री पार्श्वनाथ स्वामीके मंदिरजीमें जब सर्व संघके

सामने धवलादि ग्रंथ जो सिद्धान्त ग्रन्थोंके नामसे प्रसिद्ध हैं दर्शनार्थ वहाँके पट्टाचार्य और पंचोंने निकाले उस समय सर्व संघको बड़ा आनन्द हुआ। ब्रह्मसूरी शास्त्रीका मूलबिद्रीमें बहुत सन्मान था। पुराने ताड़पत्र पर लिखे हुए कुछ पत्रोंका संग्रह भीतर भंडारसे पंच लोग निकाल कर लाते थे और उसीको दूरसे दर्शन कराकर भेट चढ़वाकर लोगोंको बिदाकर देते थे। जब ब्रह्मसूरिजीने इन पत्रोंको पढ़ा तो इनमें कुछ और ही वर्णन पाया। धवलादि ग्रंथोंका कुछ भी अंश न था क्योंकि सूरिजी वयोवृद्ध विद्वान थे। इनको मालूम था कि उनमें गुणस्थान मार्गणा स्थान आदि सम्बन्धी सूक्ष्म चर्चा है तथा श्री गोमट्टसार इन्हींके कुछ अंशको लेकर श्री नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्तीने लिखा है तब सूरिजीको बड़ा आश्चर्य हुआ और पट्टाचार्यजीसे कहा कि यह तो सिद्धान्त ग्रन्थ नहीं है. आप भीतरसे और ग्रंथ निकलवाइये, उनमें श्री धवलादिको ढूंढा जावे। पंचलोग कुछ लज्जित हुए, भीतरसे और जीर्ण ताड पत्रों पर लिखे हुए ग्रन्थ लाए। उन सबको देखकर सूरी शास्त्रीने धवल और जयधवल ग्रंथोंको छांटकर अलग किया और उन्हें अति विनयसे विराजमान कर सुरि शास्त्रीने बहुत ही मिष्ट ध्वनिसे मंगलाचरण पढ़के उसका अर्थ किया तथा कुछ और भी सुनाया।

धवलादि ग्रंथोंका पढ़ाजाना।

उस समय सेठजीने पंचोंसे निवेदन किया कि यदि आप लोग शास्त्रीजीसे इस ग्रंथको दोतीन दिन तक सुनैं तो आपको और हमें सबको विशेष लाभ होवे। उधर बाबा दुलीचंदजीने भी यही इच्छा प्रगटकी। उस समय थोड़ासा

ग्रंथका वर्णन सुननेसे जो आनन्द सर्वको हुआ था उसको विचारते हुए उन लोगोंसे नाहीं न होसकी और वे इस बात पर राजी होगए। दूसरे व तीसरे दिन भी सर्व संघने शास्त्रीजीके मुखसे श्री धवल और जयधवलके इधर उधरके कई भाग सुनके बहुत आनन्द प्राप्त किया। सेठ हीराचंद लिखते हैं कि इन पुस्तकोंकी लिपि जूनी कनड़ी है तथा सुनते समय हमने कुछ श्लोक लिख भी लिये थे। इस तरह सेठजीने अपनी खातरी करके कि यही धवल जयधवल हैं तथा अति जीर्ण होगए हैं इनकी नकल होनी चाहिये इस विचारको अपने मनमें रक्खा और ब्रह्मसूरी शास्त्रीसे सम्मति मिलाते रहे कि इनकी प्रति आप कर देवें तो बहुत अच्छा है क्योंकि उस लिपिको उस प्रान्तमें भी पढ़नेवाले सिवाय वृद्धसूरि शास्त्रीजीके और कोई नहीं था। सूरि शास्त्रीने कहा कि यह काम बहुत काल लेवेगा तथा यहाँके भाइयोंको भी समझाना होगा। यह काम कई वर्षोंका है। मुझे व एक दोको और कई वर्षों तक ठहरना हो तब ही इनकी नकल होसक्ती है क्योंकि इनमें क्रमसे ६०००० और ७२००० श्लोक हैं।

धवलजयधवलकी प्रति-लिपिका विचार।

सेठ हीराचंद मंगलोर बंदरसे जब बम्बई आए तब एक दिन ठहरे थे और सेठ माणिकचंदसे मिल-कर सब हाल कहा। दोनोंने परस्पर बात की कि किसी उपायसे इन धवलादि ग्रन्थोंकी प्रतिलिपि हो और [illegible] भी होकर हम सबको उनका लाभ मिले तो एक बहुत आवश्यक काम हो जावे। हीराचंदजी बहुत गंभीर थे। सेठजीसे कहा कि हम कोई न कोई उपाय करेंगे, आप चिंता न करें।

सेठ हीराचंद शोलापुर लौटकर जैन जातिकी सेवामें विशेष दत्तचित्त हुए। उन दिनों हूमडोंमें कन्या-विक्रय बालविवाह व कन्या बड़ी वर छोटेकी लग्न व वृद्धविवाह इन **तीन कुरीतियोंका बहुत रिवाज था।** शोलापुर जिलेमें

कुरीति निवारण चर्चा।

आकलूज निवासी वीसा हूमड सेठ गंगाराम नत्थूराम प्रसिद्ध **नाथारंगजीवाले** भी बहुत परोपकारी व जातिकी कुरीतियों-को देखकर उनके लिये दुःखित थे व इनके मिटानेके लिये बहुत प्रयत्न शील थे। शोलापुरमें सेठ हीराचंदको उद्योगशील जानकर गंगारामजीने चैत्र सुदी २ बुधवार शाके १८०७ को एक पत्र लिखा कि ऊपरकी तीन कुरीतियोंके मिटानेका यत्न करें। उनके कुछ शब्द यहाँ दिये जाते हैं।

" येणें प्रमाणें तीन रीति चालू आहेत. त्या आपले धर्म विरुद्ध आहेत व त्यां पासून आपलें लोकांत फार नीचत्त्व आलें आहे व पुढे कांहीं दीवसांनीं याचे परिणाम फार वाईट होणार आहेत. या साठीं कांहीं या वहिवाटी सुधारण्या विषयीं प्रयत्न करण्याचें माझे मनांत फार दिवसां पासून पालन घोळत आहे. व मी गांवो-गांवच्या लोकांचे मत गरीब व श्रीमंत यांचे घेत असतों. तरी या कामीं कोणाचें विरुद्ध मत फारसें नाहीं. मात्र खऱ्या अंतःकरणानें झटणारा मनुष्य असला म्हणजे त्याचे प्रयत्नानें या वाईट चाली हळूहळू निघून जातील या विषयीं तुमचा अभिप्राय काय आहे तो कळवाल तर बरें होईल. "

भाव यह है—यह तीन रीति धर्म विरुद्ध हैं। इनसे लोग नीच होते जाते हैं। कुछ दिनोंमें और भी खराब दशा होजाय

गी। इसके सुधारमें प्रयत्न करनेकी मेरे मनमें बहुत दिनोंसे है। मैंने गांव गांवमें जाके गरीब व श्रीमंतोंके मत लिये तो कोई मुझसे विरुद्ध मत नहीं धरते, मात्र अंतःकरणसे उद्योग करनेवाला मनुष्य चाहिये तो यो कुरितियां धीरे २ निकल जांयगी। आपका क्या अभिप्राय है सो लिखें।

इस पत्रको देखकर सेठ हीराचंदजीने शोलापुर जिलेके ग्रामोंके भाईयोंके अभिप्राय मंगानेको

'जैनबोधक 'का उदय। पत्र भेजने प्रारंभ किये। कुछ दिनोंबाद **'जैन बोधक'** नामक एक मासिक पत्रकी पहली जिल्द छपवाकर सेप्टेम्बर सन् १८८५ का अंक प्रसिद्ध किया और खास २ जैनियोंको जिनका आपको परिचय था भेजा। दिगम्बर जैनियोंमें इस समय तक केवल १ वर्ष पहले सबसे प्रथम एक ही मासिक पत्र और निकला था जिसको ज्योतिषरत्न **पंडित जियालाल जैन चौधरी** ने सन् १८८१ में निकाला था इसका नाम **"जैन प्रकाश हिंदुस्तान"** रक्खा था। यह हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओंमें निकला था परंतु अधिक दिन चल नहीं सका था। जैन बोधकने समाजके जाग्रत करनेमें बहुत उपकार किया है। इसको १८९८ तक स्वयं हीराचंदने फिर पं० कल्लापा भरमापा निटवेने सन् १९११ तक चलाया। फिर पांच वर्ष बंद रहा और अब इस वर्ष यह फिर शोलापुरसे जीवराज गौतमचंद दोशी द्वारा संपादित होकर निकलने लगा है। इस पत्रके पहले अंकमें सम्पादकने पत्र निकलनेके मुख्य उद्देश्य प्रगट किये हैं उनका सार इस भांति है:—

(१) अजैनोंको बताना कि जैन मत नास्तिक नहीं है।

(२) धार्मिक विद्याकी वृद्धि कराना।

(३) जैन विद्वानोंके कितने विषयोंमें भिन्न मतोंको मिलाकर एक मत करना।

(४) शंकाओंको प्रगट कर विद्वानोंका समाधान प्रकाशित करना।

(५) यात्रा सम्बन्धी हाल प्रगट करना।

(६) तीर्थक्षेत्रों आदिका हिसाब मंगाकर प्रगट करना।

(७) देश भिन्न होनेसे जो रीति भिन्न पड़ गई है उनको शास्त्रके अनुसार कराके परस्पर संबंध दृढ कराना।

(८) विवाहादि कार्य शास्त्राधारसे चलवानेका प्रयत्न करना।

(९) विद्या व नीति मार्गकी वृद्धिकी प्रेरणा करना।

इसका पहला अंक सेठ माणिकचंदजीके पास भी भेजा गया था पर उसको किसी औरने लेलिया था—सेठजीके देखनेमें नहीं आया। एक दिन मंदिरजीमें सेठजीको किसीने एक छापी हुई पुस्तक देदी, उसको देखकर आपको बहुत ही हर्ष हुआ कि जैनियोंमें भी पत्र निकलना शुरू हुआ। आप यकायक सब बांच गए। **सम्पादक** अपने मित्र **सेठ हीराचंदजीको** समझकर इनको इस बातसे बहुत **खेद** हुआ कि सेठ हीराचंद नेमचंदने मुझे सीधे पत्र क्यों नहीं भेजा? अभी तक सेठ हीराचंदके साथ सेठ माणिकचंदका दिल खोलकर पत्र व्यवहार व मेल नहीं हुआ था। अतएव बहुत सन्मानके साथ सेठ माणिकचंदने अपनी दूकानके नामसे **एक पत्र** लिखा। पाठकोंको उचित है कि इस पत्रको खूब ध्यानसे पढ़े। इससे उनको

पता चल जायगा कि १६ वर्षकी अवस्थामें सेठ माणिकचंदजीके धर्म व जातिकी उन्नतिके सम्बन्धमें कैसे गंभीर व उदार विचार थे।

सेठ माणिकचन्दजीके पत्रकी नकल।

" स्वस्ति श्री शोलापुर महाशुभसुथाने पूज्याराध्य दोशी हिराचंद नेमचंद तथा शा० मोतीचंद खेमचंद तथा शेठसरवे जोग मुंबई बंदरथी लि० शा० हीराचंद गुमानजी तथा चिरंजीव भाई पानाचंद तथा माणेकचंद तथा नवलचंद शेठसरवेना घणू करीने धर्मस्नेह वांचजो. जत अत्रे सर्वे राजाखुशी छे. आपनी राजी खुशीना कागल लखज्यो. बीजूं हमो एहवुं सांभल्युं छे के आपने आपना जैन धरमने विशे तथा आपनी हुंबडनी नात विशे घणी मेहनत लेवा मांडी छे ते सांभली हमो घणा खुशी थया छइये. वली तमोए मासिक चोपानियूं काढयूं छे ते पण घणूं सारूं उत्तम पगलूं छे, वास्ते मेहरबानी करीने ए मासिक चोपान्यूं हमोने मोकली आपज्यो, अने तेनो जे लवाजम होय ते अगाउथी हमारा पासेथी मंगावी लेजो अने जे दिनथी पेहलो अंक सुरू होय ते दिनथी मोकलज्यो. वली आप सर्व पुन्यशाळी छो अने सरवे वाते संपूर्ण छो. वास्ते करीने आपणे एक फंड एहवुं काढवूं जे ते फंडमाथी खर्च करीने बे आदमी सारा ज्ञानी अने गुणवान परीक्षा करीने राखवां. तेमने सरवे मुल्कमां मोकलवा. अने ते गामोमा उपदेस करे अने नातनी वातोमा सुधारो करे अने ते सर्वे गामोमाथी जे कोई ए फंडमा नाणू आपवा धारे तेना पासेथी उघरावी एक मोहोटूं फंड बधे तो खर्च वधारीने सर्वे देशावरमा एहवां उपदेश करतां माणसो राखी तहानां रिपोट दर महिने मंगावबा अने तहां शूं शूं बिगाड़ा छे ते सुधारवा अने धरममा केटलोक मिथ्यात्वनो

भाग पेशी गयो छे ते सुधारवो. तथा नातमां केटलाक वांधा तथा तड पड़ेला छे ते भेगा करवा तथा दापानो रिवाज काढी नाखवो अने बाललग्न थवा नई देवूं जेमके पांच वरसनी कन्या अने पांच वरसनो वर येहवा रीतना लग्नो नहाणपणमा वेवाह करी मुके छे ते पछी आगल जता घणां बिगाड़ा थाय छे. वली वृद्ध उमरनाने पइसाना लोभथी कन्या आपे छे ने ते विचारी कन्याने बाल रंडापो आवे छे अने पछे आपना धर्म विरुद्ध चाले छे. वास्ते खरो सुधारो ए करवानो छे. वली गुजरातमां रडवा कूटवानो पण घणो बिगाड़ो छे. ते विशे पण सुधारो करवो. वली जे गाममां आपणा जैन धरमी भाईनी वस्ती वधारे होय तहां जैन पाठशाला कढाववी अने तेनो लवाजम सरवेना माथे नाखवो एहवा प्रकारना सुधारा करवा माटे एक मंडली नेमवी अने तेनू फंड चालू करवूं एहवा कामोनो आरंभ तमोएज करवा मांडयो छे ते हमो घणा खुशी छईये अने अमारा लायक ए काममा कांई काम बतावशो तो बनशे तेटली मेहनत करीशूं. येज कामकाज लखज्यो. जोइतूं करतूं मंगावज्यो. हमारूं ठेकाणुं मुंबइमा मंमादेवी आगल जवेरी माणेकचंद पानाचंदने पोचे ए प्रमाणे सरनामूं करज्यो संवत् १९४१ जेष्ठ बीजा वद ९ सोमे

लि० माणेकचंदना जुहार वांचज्यो.

हमारे हिन्दीके पाठकगण ऊपरके पत्रका भावार्थ समझ गए होंगे तथापि जो जरूरी बातैं हैं उनका भाव नीचे दिया जाता है:—

"आपने मासिक पुस्तक निकाली है यह बहुत ही उत्तम प्रयत्न शुरु किया है। आप एक फंड ऐसा निकालें

कि जिससे दो बहुत अच्छे ज्ञानी गुणवान मनुष्य परीक्षा करके रक्खे जांय और उनको सर्व मुल्कमें भेजा जावे और वे ग्रामोंमें उपदेश करें और जातिकी बातोंमें सुधार करें और इस फंडमें यदि और लोग पैसा दें तो फंडको बढ़ाकर उसमेंसे सर्व देशावरोंमें उपदेश करनेके लिये मनुष्य रक्खे जाय और उनके कार्यकी मासिक रिपोर्ट मंगाई जावे । वहाँ जो २ बिगाड़ हो उसे सुधराया जावे तथा धर्ममें मिथ्यात्वका भाग बहुत घुस गया है उसको दूर करना चाहिये । ज्ञातियोंमें तड़ पड़ गए हैं उनको मिलाना चाहिये । **कन्या विक्रय**का रिवाज दूर करना चाहिये और **बाललग्न** नहीं होने देना चाहिये । तथा गुजरातमें **रोने पीटनेके रिवाजमें** सुधारा करना चाहिये । बड़े २ ग्रामोंमें **जैन पाठशालाएं** स्थापित करानी चाहिये । इन कामोंके लिये एक सभा कायम करें । उसका फंड चालू करें इन कामोंका आरंभ आपने जो करना शुरू किया है इससे हमें बहुत ही खुशी है तथा हमारे योग्य कोई सेवा आप बतावेंगे तो हम यथाशक्ति मिहनत करेंगे"

अपने अंत:करणसे जाति व धर्मकी सेवामें अपनी शक्तिको योग देनेकी स्वीकारता बतानेवाली यह चिट्ठी थी इसीलिये सम्पादक **जैन बोधक**ने अपने अंक २ अश्विन शाका १८०७ व अक्टोवर १८८५ सफा १७–१८ में प्रगट कर दी थी ।

सेठ माणिकचंदजीके पत्रको पाकर हीराचंदजी जाति सुधारके लिये और भी उत्साहसे काम करने लगे ।

सेठ हीराचंदका जात्युन्नतिका प्रयत्न ।

तथा विद्वान उपदेशक नहीं मिल सके इसी लिये उक्त सेठजीके उपायको अभी काममें लेनेके पहले दिलमें ही रखते हुए परन्तु

संस्कृत व धार्मिक विद्याकी उन्नतिकी योजना करने लगे। स्वाध्यायके प्रचारार्थ ग्रन्थ भी मुद्रण कराने लगे ।

सोलापुरमें संस्कृत पाठशाला ।

शोलापुरमें संस्कृत पाठशाला तो आपने शाके १८०५ पौष मासमें ही चालू कर दी थी, उसमें एक मारवाड़ी गृहस्थ शिक्षक नियत किये गए । इन्होंने १० मासमें कुछ छात्रोंको सारस्वत व्याकरण, अमरकोष, रूपावली, समासचक्र सिखाया । उनके स्वदेश जाने पर शिक्षक न मिलनेसे ४ मास शाला बंद रही थी फिर अक्कलकोटके रा० रा० भीमाचार्यको नियत करके गु० फागुन वदी १० शाके १८०६ से फिर शाला चालू कराई तब १० छात्र भरती हुए । श्रावण सुदी ६ शा. १८०७ में १९ हो गए इन्हींमें **पासू गोपाल शास्त्री** भी थे जो उस समय अमरकोश १ कांड, रघुवंश २ सर्ग व एकीभावस्तोत्र पूर्ण कर चुके थे तथा हरीभाई देवकरणवाले **सेठ वालचंद रामचंद** अमरकोश १ कांड आधा पढ़ चुके थे । इस पाठशालाकी उक्त सेठने इतनी उन्नति की कि शाके १८०८ श्रावण वदी ११ को इसका दूसरा वार्षिक उत्सव किया । उस समय २३ छात्रकी परीक्षा लेके इनाम दिया गया था उस समय पासु गोपाल रघुवंश ३ सर्ग, किरातार्जुनीय १ सर्ग, स्वयंभू श्लोक १५, संस्कृत प्रथम पुस्तक पाठ ९ पढ़ चुके थे । इस वक्त पाठशालाके लिये ६०००) के अनुमान ध्रौव्य फंड भी जमा कर लिया जिसमें सबसे अधिक रकम अपने कुटुम्बसे प्रदान की । इसका वर्णन जैन बोधक सप्टेम्बर सन १८८६में मुद्रित है ।

कुरीति निवारणमें यहाँ तक सफलता प्राप्त की कि नवम्बर १८८५ के अंक २ रेमें १४ महाशयोंकी प्रतिज्ञा प्रगट की कि हम ६० वर्ष पीछे लग्न न करेंगे। इनमें कोठारी केवलचंद परमचंद व जोतीचंद भाईचंद बारामती, गुलाबचंद खेमचंद फटलन, नानचंद लक्ष्मीचंद वाटरकर आदि हैं। तथा अगस्त १८८६ के अंकमें ५९ महाशयोंकी प्रतिज्ञाएं प्रगट की कि हम द्वितीय लग्न इतनी उम्रसे आगे नहीं करेंगे। ३५ व ४० वर्षसे आगे लग्न न करेंगे ऐसी प्रतिज्ञा लेनेवाले इनमें ४ महाशय हैं जिनमें २ आकलुजके हैं, ४२ व ४५ वर्षसे आगे न करेंगे ऐसे प्रणकर्ता ४ हैं।

कुरीति निवारण आन्दोलनमें सफलता।

ग्रन्थ प्रकाशनका काम भी शुरू करके **काव्य प्रकाशिका** व **सुभाषित** छपवाए जिसकी मांग **ब्रह्मसूरि शास्त्रीने** अपने पत्र वैशाख शुद्ध १२ शाके १८०७ में की है। उस पत्रकी कुछ नकल यह है।

ग्रंथ प्रकाशन कार्य और ब्रह्मसूरी शास्त्रीका पत्र।

,, आपका पत्र आया....चिकपेटाके मंदिरकूं कवाड दो तयार होके धर दिया. बाकी कवाटका काम चलते है। तथा जिननाथपुर मंदरका काम चार महिना वायदा करके पांचशे पचास रुपयेकूं गुत्ता दिये हैं और काव्यप्रकाशिका तथा सुभाषित छपाये सो पुस्तक दोनोकूं जल्दी भेज देना। हमारे पास बहुत ग्रंथ अपूर्व हैं। प्रत्यंतर अभावसे नष्ट होता है। यह सब ग्रंथ प्रत्यंतर करनेका तरतूद जरूर आप कर देना। बड़े पहाडऊपर शिडी

(पायरी) करनेका काम कुछ हुवा नहीं है । वैशाख शुद्ध १२ शाके १८०७ मुकाम श्रवण बेळगुळ ब्रह्मसूरि शास्त्री.

इस पत्रसे यह भी पता लगेगा कि शास्त्रीजी अपने भंडारके ग्रंथोंके प्रकाशनके लिये बड़े उत्सुक थे तथा जो मरम्मत व सीढ़ी आदिके कामके लिये सेठ हीराचंद व माणिकचंदजी अपनी यात्रामें कह आए थे उनकी पूर्तिका उनको कितना बड़ा रूयाल था । उस समय नागपुर गादीके **भट्टारक विशालकीर्ति** बड़े प्रसिद्ध थे, विद्वान भी थे । आपने एक पत्र सेठ हीराचंदको भाद्र वद ३ शाके १८०७ को लिखा है जो जैनबोधक अंक ५ जनवरी १८८६ में छपा है इसका कुछ अंश प्रगट किया जाता है ।

" जैन बोधक देखके हर्ष हुआ । इससे जैन मतकी प्रसिद्धि करनेमें सुलभता होगी। जैन मतके पूजा पाठादिक व पुराणस्तोत्र पाठादिक लेखकोंकी अज्ञानतासे अशुद्ध पाई जाती हैं उनको शुद्ध कराकर प्रगट करो । **जैन धर्मी स्वतंत्र छापाखाना** रक्खो । उसकी वर्गणी करो हम भी शामिल होंगे। जैनियोंके सिवाय दूसरोंको न वेचें । जो पुस्तक छपे वे पहले विद्वान मंडलीसे शुद्ध करा ली जावें । "

सन् १८८७में उक्त भट्टारकने शोलापुरमें चातुर्मास किया था। दोनो वक्त शास्त्रका व्याख्यान करते थे । एक दफे सभामें यह प्रश्न हुआ कि **रात्रिको अभिषेक व अष्ट द्रव्यसे पूजा करनी या नहीं** आपने समाधान दिया कि—

रात्रि अभिषेक किंवा अष्ट द्रव्योंसे पूजा करना **योग्य नहीं**। त्रिकाल पूजा करनेके अर्थ यह है कि रात्रीको पूजा न करना। सवेरे अभिषेक और अष्ट द्रव्यसे पूजा करनी, दुपहरको पुष्पोंसे पूजन करना ओर संध्याको

दीप धूपसे पूजा करना ऐसा त्रिकाल पूजाका अर्थ है ।

भट्टारक विशालकीर्तिके पुस्तक भंडारकी सूची जैन बोधक अंक २७-२८ नवम्बर व दिस०

भट्टारक विशालकीर्ति। सं. १८८७में मुद्रित हैं। इनमें अपूर्व ग्रंथ ये हैं। युक्त्यनुशासन सटीक, २ अष्टसहस्री सुनहरी स्याहीकी लिखी हुई, ३ यति प्रायश्चित्त, ४ क्रियाकलाप सामायककी संस्कृत टीका, ५ आचारसार वृत्ति वसुनंदी सिद्धांतिकृत, ६ श्वेताम्बर पराजय ग्रंथ, ७ परमत सार ग्रंथ, ८ पचखान भाषा, ९ रमल शास्त्र संस्कृत, १० वैद्यसार ग्रन्थ सटीक, ११ एकाक्षरी निघंट, १२ चंडकृत व्याकरण प्राकृत ।

गु० संवत १९४३ के जाड़ेमें फिर सेठ माणिकचंदजीके चित्तमें तीर्थ यात्रा करनेकी उमंग हुई ।

यात्रा श्री सेत्रुंजयादि। इस समय भी सिवाय नवलचंदजी और उनकी पत्नीके सर्व ही सेठजीका परिवार पानाचंदजी तथा रूपाबाई आदि श्री केशरियाजी गिरनारजी सेत्रुंजयजी आदिकी यात्राको रवाना हुए। साथमें करीब २०० मनुष्योंका संघ था। प्रथम ही श्री शेत्रुंजयजी पहुंचे। उस समय यहाँ पालीतानामें नीचे एक पुरानी धर्मशाला थी जो अब भी वर्तमान नए मंदिरजीके पीछे है तथा नये मन्दिरजीके सामने एक छोटेसे मकानमें श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी एक छोटी प्रतिमा विराजमान थी। पहाड़पर दो मंदिर जुने थे जो अब भी हैं। एक छोटेको श्वेताम्बरियोंने छीन लिया है। बड़ा मंदिर कहते हैं कि किसी धनाढ्य भैसा साहुने बनवाया था। इसमें मूल नायक श्री शांतिनाथ

स्वामी हैं, संवत १९८६ है। इस पर्वतसे दि० जैन शास्त्रानुसार गत चतुर्थ कालमें श्री युधिष्ठिर भीमसेन और अर्जुन ऐसे तीन पांडव और ८ कोड मुनि मोक्ष पधारे हैं। सेठजी संघ सहित पहुंचे तो वहाँ ठहरनेकी बहुत तकलीफ मिली क्योंकि पुरानी धर्मशालाको राज्यने रोक रक्खा था वहाँ कोई प्रबन्ध ठीक नहीं पाया जिससे चित्तमें बहुत उदासी हुई। उस समय वहाँ कोई मुनीम भी नहीं था; केवल पुजारी व नौकर थे, सो भी बहुत ही अव्यवस्थित। सेठजीने श्वेताम्बर समाजके बड़े २ मंदिर व रमणीक धर्मशालाएं देखकर और अपनी स्थितिका मिलानकर बहुत ही खेद माना और दिगम्बरियोंके आलस्यकी अतिशय निन्दा की।

यहाँ पहले **भवानीप्रसाद** नामका एक दिगम्बरी चालाक मुनीम था सो संवत १९४१ तक काम करता रहा था। उस समय राजा पालीताना और श्वेताम्बरियोंमें बहुत झगड़ा चलता था। राजा और भवानीप्रसादका मेल था। इस अवसरको देखकर यह चाहता था कि शहरमें एक बड़ा मंदिर बनवानेको राजासे जगह लेलूं। सो उद्योग करके राजासे इसने वह जगह जहाँपर अब नया मंदिर है लेली। राजाने बिना किसी लिखा पढ़ीके देदी। यहाँ कुछ मकान बने हुए थे। यह राजाको मुकदमेमें मदद करता था। भावनगरके दिगम्बर जैन पंचोंके हाथमें यहाँका प्रबन्ध था। वहाँ दिगम्बरी व श्वेताम्बरी-में मेल था। श्वेताम्बरियोंने मुनीम भवानीप्रसादकी ऐसी शिकायतें की जिससे भावनगरके लोग भवानीप्रसादसे नाराज़ हो गए। भवानी-प्रसादने जमीन लेकर भावनगरवालोंसे रुपया मांगा कि मंदिरका काम शुरु हो परन्तु उन्होंने मूनीमको रुपया नहीं भेजा तब इसने

सेठजी करीब ४० वर्षकी अवस्थामें.

J. V. P. Surat.

(देखो पृष्ठ २४०

लाचार हो २१००) राजासे उधार लिये और मंदिरका काम चालु किया, इतनेहीमें राजा पूनेमें गुजर गया तब भवानीप्रसादको श्वेताम्बरियोंने बहुत दिक किया एक रात्रिको भाटोंने इसे इतना पीटा कि यह विचारा अपनेको असहाय देखकर मंदिरकी कुंजियां आदि अपने नीचे जो एक श्वेताम्बरी पुजारी था उसे सौंपकर चल दिया। राजाके मरनेके बाद रियासतसे २१००) का व्याज सहित तकाजा होने लगा तथा जो जमीन राजाने दी थी पर लिखा पढ़ी नहीं की थी उसके दाम मांगे जाने लगे। रियासतने २१००) के बदले उस पुरानी धर्मशालाको कब्जेमें कर लिया और उसमें एक मुसलमानको रख दिया था। ऐसे ही अवसर पर सेठजी पहुंचे थे सो इनको यहांकी व्यवस्था देखकर बहुत खेद हुआ। यात्रा करके सेठजी संघसहित भावनगर भी गए। वहाँके पंचोंको श्री सेत्रुंजयकी अव्यवस्थाके कारण बहुत धिक्कारा। वहाँके दि० लोग ऐसी गफलतमें थे कि भवानीप्रसादके स्थान पर किसी श्वेताम्बरी जैनको मुनीम रखनेका विचार कर रहे थे। सेठ माणिकचंदजीने उनको मना किया और यही ज़ोर दिया कि किसी धर्मात्मा दिगम्बर जैनी ही को मुनीम रखना चाहिये जिससे तीर्थकी सुव्यवस्था हो।

भावनगरवालोंके पास पालीताना तीर्थके १८०००) रु. जमा थे पर उसको उपयोगमें न लगाकर केवल पैसा जमा करना ही जानते थे। वहाँ वालोंने सेठजीको कहा कि आप ही किसीको बनाइये।

धर्मचंदजी पालीताना के मुनीम।

इतनेहीमें इनको सजोत निवासी धर्मचंद हरजीवनदासकी याद पड़ गई जिसने सेठजीको त्यागी महाचंद्रजीका भजन भेजा था व जिसने सूरतकी प्रतिष्ठा समय कहा था कि मुझे

अनाजके व्यापारसे छुड़ाकर किसी अच्छे काममें लगा दो। सेठजीको अपनी बातका बहुत खयाल रहता था। आपने तुर्त कहा कि आप लोग सजोत पत्र देकर धर्मचंदजीको बुला लेवें, वह बहुत धर्मात्मा और सच्चा आदमी है। सेठजी तो संघको लेकर श्री गिरनार आदिकी यात्रा करते हुए केशरियाजी गए। वहाँ भावसे यात्रा करके खूब दान पुण्य करते हुए बम्बई लौट आए। उधर भावनगरके पंचोंने तुर्त धर्मचंदको पत्र लिखा। धर्मचंद पत्र पाते ही गद्गद् हो गया। ग्रामकी छोटीसी दूकानमें काम करते हुए दुःखी रहता था। इसकी स्त्री भी मालमता बेचनेमें चतुर थी। प्रायः गुजरातकी स्त्रियाँ छोटे२ दूकानदारोंको व्यापारमें मदद दिया करती हैं। **धर्मचंदने** दूकान स्त्रीको सौंपी और आप तुर्त भावनगर आ गया। वहाँ वालोंने भी इसको जिनेन्द्र भक्त व धर्मात्मा देखकर इसे **मुनीम** नियत कर पालीताने भेजा। यह १ मास रहे पर स्त्रीके विना भोजन बनानेका कष्ट रहता था सो छुट्टी लेकर **घोघा** बन्दरसे जहाज़ पर सूरत आए। यहाँके दिगम्बर जैन पंचोंको पालीतानामें नया मंदिर बननेकी आवश्यक्ता व वहाँकी दुर्व्यवस्था वर्णन की। यहाँसे अंकलेश्वर जा सजोतकी दूकानको उठा मालमता बेंच स्त्री सहित धर्मचंदजी पालीताना पहुंचे और जहाँ प्रतिमा विराजमान थी उसीके एक तरफ यह स्त्री सहित रहने लगे और सर्व काम सम्हाल कर सेवा पूजामें दत्तचित हो गए। सेठ माणिकचंदको बारबार पत्र लिखा कि आप एक दफे यहां आकर व्यवस्था ठीक करावें।

पालीतानाके लिये सेठ नवलचंदका प्रयत्न ।

सेठ माणिकचंदने सं० १९४४में नवलचंद सेठको भेजा। सेठजी सपत्नीक आए और यात्रा करके बहुत आनन्दित हुए। धर्मचंदजी भजन भाव व पूजामें बहुत निपुण थे। नवलचंदजीका मन अपनेमें मोहित कर लिया। यह वहाँ धर्म सेवन करते हुए एक मास ठहरे। इस बीचमें इन्होंने सर्व व्यवस्था ठीक कराई। **घोघा** बन्दरमें **त्रिभुवन बावा** नामके एक खटपटी दलाल थे। वह भी इनके साथ रहे। इन्होंने राज्यसे पुरानी धर्मशालाको छुड़ाया। २१००)का व्याज जोड़के रु. ३२४८)राजाको भावनगरमें जो १८०००)तीर्थके जमा थे उसमेंसे दिये। राज्य नये मंदिरवाली ज़मीनका रुपया मांगता था और इसी लिये वहाँ भी कुछ काम नहीं करने देता था अतएव सेठ नवलचंदने १०-) गजके भावमें फैसला करके रु० १४०००) उस १८०००) मेंसे देकर ज़मीनको अपने कबजेमें किया और मंदिर बनानेका काम शुरू किया जाय इस विचारमें दृढ़ हुए।

पालीतानामें नये मन्दिरका प्रबन्ध ।

बम्बई आकर भाइयोंसे सब हाल कहा। सेठ माणिकचंदजी नवलचंदकी कारवाई पर बहुत प्रसन्न हुए और भावनगरवालोंको लिखा कि आप पांच आदमी चंदेके लिये बाहर निकलें तथा मंदिरका काम शुरु करा दें। जो रुपया खर्चको चाहिये वह हमारी दूकानसे मंगाते रहें, चंदा आने पर वसूल हो जायगा। अब इस शुभ कार्यमें देर न करें। भावनगर व घोघावालोंने इस बातको स्वीकार किया। सेठ माणिकचंदजीसे १०००) मंगाकर काम शुरु कराया

और भावनगरके **सेठ नरोत्तम भीखाभाई** व घोघेके **त्रिभुवन बावा** आदि ५ महाशय पहले शोलापुर आए, क्योंकि जैसे अब शोलापुर दान करनेमें प्रसिद्ध है ऐसे पहले भी था। वहाँसे तार करके बम्बईसे सेठ माणिकचंदजीको बुलाया। सेठजीको धर्मकार्य्यों- में बिल्कुल आलस्य न था। आप फौरन गए और वहाँके पंचोंको सर्व हाल समझा करके ३५००) रु० का चंदा कराया। उस समय **सेठ हरीभाई देवकरणने** मंदिर बनने पर **प्रतिष्ठा** कराना स्वीकार किया। इनके साथमें **सेठ रावजी कस्तूरचंद** हो गए और यह ठहरा कि प्रतिष्ठाके समय जो खर्च पड़े उसके दो भाग हरीभाई देवकरण और १ भाग रावजी कस्तूरचंद खर्च करें तथा उस समय तीर्थके भंडारमें ११०००) दोनों देवें। सेठ माणिकचंद- जी इस बातको पक्की कराके अपनेको बहुत ही पुण्यवान मानते हुए। आप बम्बई लौट आए और उन लोगोंको और स्थानोंमें चंदा करने भेजा। मुनीम धर्मचंदजी धीरे २ सर्व व्यवस्था सुधारने लगे और बड़े ही भावसे नए मंदिरजीको तय्यार कराने लगे।

तीर्थके हिसाबका मुद्रण।

सेठ माणिकचन्दजीकी खास प्रेरणासे मुनीम धर्मचन्दजी प्रति वर्ष आमद खर्चका हिसाब बनाकर भावनगर और बम्बई भेजने लगे। जैनबोधक अंक ३०-३१ मास फेब्रुआरी-मार्च सन् १८८८ में सं० १९४३ और १९४४ का हिसाब मुद्रित है—

हिसाब सं० १९४४ कार्तिक सुदी १ से फाल्गुण वदी ३० तक।

			खर्च
१५।=)।	शिलक	१३२।।।)।	इमारत खाते
५८२=)।।।	भंडार उत्पन्न	१०।।≡)।	शुभ खाते
३०=)	शुभ खाते	।)	जीवदया
१४।।।-)	जीवदया खाते	८१)	भावनगर
।।-)	फुटकल	२२।)।।	फुटकल
-)।।	केशर वास्ते	३०)	गोटी जंवर
२०)।।	भावनगरसे	१२)	रजपूत उका
२।।)	गोठी जंवर खाते	२)	रजपूत नवू
		।।।-)	चांदवा बांधनेको लोहेके सिकचे कराये
६६५।।≡)		२९३)।।।	
		३७२।।=)।	शिलक
		६६५।।≡)	

बालकोंकी शिक्षा।

श्री सेत्रुंजयकी यात्रासे लौटकर सेठजीने प्रेमचंद व अपनी दोनों पुत्रियोंकी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। फुलकुमरीके साथ मगनमतीजीको भी गुजराती शालामें भेजने लगे। फुलकुमरीकी अपेक्षा इसकी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण थी, पढ़नेमें इसका मन भी अच्छा लगता था। शालासे सीख कर आवे उसे घर पर देखे। घर पर जो शिक्षक आता था वह भी बहुत भावसे तीनोंको शिक्षा देता था।

सेठ माणिकचंद बहुत मिलनसार थे। समाचार पत्र देखते रहते थे। सं० १९४३ व सन् १८८७के फेब्रुआरी मासकी १६ तारीखको महारानी क्वीन विक्टोरियाकी जुबिली भारतवर्षमें बड़े धूमधामसे मनाई गई। उस दिन कोई भी मुसल्मानादि गौवध न करे ऐसी अर्जियाँ बम्बईके गवर्नरसाहबके पास भेजी गई। जैनियोंकी तरफसे अर्जी भिजवानेमें सेठ माणिकचंदने बहुत प्रयत्न किया। इनका फल यह हुआ कि उस दिन किसीने भी गौवध न किया। मुसल्मानोंने इस बातको अच्छी तरह मान लिया ऐसा जानकर ता० २३ फेब्रुआरीको नामदार गर्वनरने प्रशंसाजनक यह प्रस्ताव प्रसिद्ध किया कि हिन्दू और पारसियोंकी इच्छानुसार मुसल्मान लोगोंने श्रीमती महारानी क्वीन विक्टोरियाके सन्मानार्थ जुबिलीके दिन जो गोवध न किया यह बहुत आनंदकी बात है। बम्बईके सर्व लोग परस्पर एकता रखते हैं यह तारीफकी बात है।

जुबिलीपर बम्बईमें गौवध बन्द।

बम्बईमें **बहिरामजी** दीनसाजी पांडे नामके गृहस्थ थे जो स्वतः मांसाहारके त्यागी थे तथा अन्य पारसियोंसे मांसाहार छुड़ाते थे। सेठ माणिकचंदकी इनसे मुलाकात थी। इस गृहस्थने अगस्त १८८६में एक मांसाहाररहित भोजन दिया जिसमें २०० पारसी शरीक हुए। इनमें बहुतसे मांसाहारके त्यागी भी कुछ प्रयत्न करनेवाले थे। भोजनके पीछे सभा भी हुई थी उसमें सेठ माणिकचंदजी भी गए थे। बहिरामजीने अपने भाषणमें

पारसियोंमें मांसाहारकी बन्दी।

कहा कि धान्य, वनस्पति और फलोंसे कैसे २ उत्तम भोज्य बनते हैं इसीके दिखानेके लिये यह भोज्य दिया गया है। ऐसे भोजनसे क्षुधा भी तृप्त होती है व आवश्यक शक्ति भी पैदा होती है। मनुष्य अपने खानेके लिये गरीब पशुओंको मारे यह नेचरके नियमके विरुद्ध है। घोड़ा ऐसा शक्तिशाली प्राणी वनस्पति खाकर रहता है तब मनुष्योंको इसकी क्या जरूरत है? कलकत्तेमें जैसी मांसाहार वर्जक मंडली है वैसी यहाँ भी होना चाहिये तथा कहा कि थोड़े दिन बाद पारसी स्त्रियोंके लिये भी ऐसा भोजन मैं दूँगा। तथा सभामें रुस्तमजी होरमसजी मास्टरको पेश किया जो ३० वर्षसे मांस नहीं खाते और सब तरह तन्दुरस्त थे। अंतमें मांसाहार न करनेसे क्या २ फायदे होते हैं ऐसी इंग्रेजीकी पुस्तकें बांटी गईं। सेठजी भी इस पुस्तकको लाए। सेठजी अपने पास जहाँ कहीं सफरमें जाते १०-१५ ऐसी पुस्तकें रखते थे और रेलमें समझदार लोगोंको जिन पर शंका होती थी कि यह मांस खाते हैं बांटते रहते थे और जबानी भी बात करके उनसे इससे घृणा पैदा कराते थे। वास्तवमें भारतसे मांसाहार मिटानेका उपाय शाकाहारका जीमन मांसाहारियोंको खिलाना व पुस्तक बांटना है इसीसे विलायतमें बड़ी सफलता हुई है।

कांग्रेस प्रारंभ। इसी वर्ष सन् १८८७के प्रारंभमें कलकत्तेमें प्रथम ही कांग्रेस अर्थात् भारतकी राष्ट्रीय सभाका अधिवेशन प्रारंभ हुआ जिसमें बाहरसे ३५० प्रतिनिधि पधारे। राजसम्बन्धी क्या २ सुधार करने इसपर विवेचन होकर प्रस्ताव पास हुए।

जुबिलीबागका निवास और ताराचंदका जन्म ।

सेठ माणिकचंदका कुटुम्ब पहले जब सूरतसे बम्बई आया तब एक किराएके मकानमें ही जौहरी बाज़ारमें रहता था। जब सं० १९२७ में दूकान खोली तब वह भी एक किराएके मकानमें ही थी पर द्रव्यकी वृद्धि होनेपर सं० १९३५में मोती बाजारमें एक बड़ा मकान ४ खनपर खरीद किया, जबसे उसीमें दूकान रक्खी व वहीं रहने भी लगे। तथा आज भी सेठ माणिकचंद पानाचंदका फर्म उसी मकानमें है। शहरकी घनी वस्तीसे कुछ दूर खुले स्थानपर तारदेव मुहल्लेमें एक **जुबिलीबाग** नामका स्थान था। इसको सं० १९३८ में करीब २९०००) में खरीद किया था। अब इसमें बहुतसी दूकानें हैं भीतर कमरे हैं बीचमें बंगला है आगे बगीचा है। इसीमें श्राविकाश्रम है। कई वर्ष बाद उस बागकी इमारतके ठीक होनेपर हवाकी स्वच्छताके कारण सर्व कुटुम्ब इस बागमें रहने लगा। सेठ नवलचंदकी स्त्री प्रसन्नकुमारीके कुछ वर्ष पहले एक पुत्रीका जन्म हुआ था पर उसका जीवन अल्पकाल ही रहा और वह चल बसी।

सं० १९४९ मिती कार्तिक सुदी २ का दिन सेठ नवलचंद और उनकी पत्नीको बड़ा ही आनन्दवर्धक हुआ क्योंकि उस दिन इनको एक पुत्रका लाभ हुआ। पुत्रके जन्मसे तीनों भाइयोंको बड़ा ही हर्ष हुआ। मंदिरजीमें पूजा कराई गई, यथोचित दान पुण्य किया गया सम्बन्धियोंको तृप्त किया गया, और पुत्रका नाम ताराचंद रक्खा। पुत्रकी रक्षाका सेठ नवलचंदने पूरा २ यत्न किया,

माता भी बड़े यत्नसे रहकर पालन करने लगी। इन सेठोंके यहां सं० १९३६से ही गाड़ी घोड़ा था। इससे जुबिलीबागसे शहर आनेजानेमें इनको कोई कठिनता नहीं थी। तथा जुबिलीबागका स्थान ट्राम्वेके पास ही है। ट्रामके द्वारा कुछ ही मिनटमें चाहे जहां जा सक्ते थे।

ज़मीनका व्यापार।

सेठ माणिकचंदजीका ध्यान चारों तरफ रहता था। व्यापारके अवसर भी देखा करते थे। पाठकोंको मालूम ही है कि इनका खास व्यापार विलायतसे शुरू हो गया था। ३ वर्ष तक इनका विलायतका व्यापार ऐसा चला कि उसमें इन्होंने दुगने तिगने भी किये और बहुत रुपया कमाया पर आगे चलकर इतनी उपज नहीं रही। इसका कारण यह हुआ कि जब इन्होंने व्यापार शुरू किया था तबतो यह और साकरचंद लालभाई दो ही व्यापारी विलायतको मोती भेजने वाले थे। अब कई हो गए तथा विलायत वाले भी ऑफर बहुत खींच कर देने लगे। जो नए भेजने वाले थे वे थोड़ेसे ही नफेमें माल वेचने लगे। अतएव ३ वर्ष बाद मालमें सवाए व कभी २०) व १९) सैकड़ेसे अधिक लाभ नहीं होता था जिसमें फ्रामजी सन्सका कमीशन व खरचा बहुत पड़ जाता था। संवत १९४९ में सेठ माणिकचंदजीने हीरेके एक प्रसिद्ध मुलाकाती व्यापारी **सेठ अबदुल हुसेनके** साझेमें ज़मीनको खरीदने और बेचनेका व्यापार शुरु किया। इसमें भी इन्होंने कई लाख रुपया पैदा किया व बहुतसे मकान व ज़मीन अपने उपयोग व भाड़ा पैदा करनेके लिये अलग रख ली। दो तीन वर्ष तक इसका व्यापार भी खूब चला।

सेठ पानाचंदकी द्वितीय स्त्रीकी मृत्यु ।

पाठकोंको मालूम है कि सेठ पानाचंदकी द्वितीय स्त्री नवीबाई भी कर्म संयोगसे सदा बीमार और अशक्त रहा करती थी । रुपाबाईजी बड़ी शांतिसे सर्व बरदास्त करती थी । किसीसे कभी लड़ने झगड़नेका अवसर नहीं आने देती थी । श्री सत्रुंजयकी यात्रासे लौट कर यह बहुत बीमार हो गई और थोड़े दिन दुःख सह कर शरीरको त्याग गई। इसके द्वारा सेठ पानाचंदजीको सन्तति रत्नका लाभ नहीं हुआ । सेठ पानाचंदजीको यद्यपि धनागम व प्रतिष्ठा लाभकी वृद्धिका सम्बन्ध खूब हुआ था पर इनको स्त्री व पुत्रके द्वारा अबतक मनको सन्तोष प्राप्त नहीं हुआ था । वास्तवमें यह संसार ऐसा असार है कि इसमें कोई भी प्राणी इतने भारी पुण्यके उदयको नहीं रखता है जो सब तरह निराकुल और सुखी रहे । इसीसे योगीजन सांसारिक सुखकी आशाको छोड़कर आत्मिक आनन्दके लाभको ही श्रेष्ठ लाभ मान उसीके लिये प्रयत्नशील रहते हैं ।

सेठ माणिकचंदके पगमें अमिट चोट ।

सेठ माणिकचंदजी भी अब इसी जुबलीबागके बंगलेमें रहते थे । प्रतिदिन रोटी खाके दूकान जाते थे । शामको लौट आते थे । धर्मसाधनार्थ श्री जिन मंदिरजी कभी पैदल कभी गाड़ी पर जाते थे । इस समय फुलकुमरीकी उम्र १३ व मगनमतीकी ११ वर्षकी थी । पहली ४ व दूसरी २ चौपड़ी गुजराती तक पढ़ीं थीं । सेठ माणिकचंदजीको **ट्राइसिकिल** पर चढ़ना सीखनेका शौक हुआ । आप रोज़

शामको सीखते थे। एक दिन आप ठोकर खाकर इस तरह गिरे कि टांगकी हड्डीमें ऐसी भारी चोट आई कि जिससे जन्म पर्यंत टांग सीधी न हुई। पैरका सांधा उत्तर गया। अब उनका दौड़ कर चलना सदाके लिये बन्द हो गया। बहुतसे पारसी हड्डी ठीक करनेवालोंकी दवा की पर आराम नहीं हुआ। कुछ दिन तक जाना आना कम करना पड़ा। सेठजीको चोट लगी देखकर **चतुरबाईको** बहुत दुःख हुआ। यह बाई जरा सुकुमार अंगी और अशक्तिके कारण कभी कभी कठोर मन हो जाती थी व चिढ़ जाती थी। इस समयमें इसने घरके कामकाजके कारण दोनों छोकरियोंका पढ़ना शालामें बन्द करा दिया। यद्यपि सेठजीकी टांगमें हड्डीकी चोट आनेसे अशक्ति होगई थी तो भी आपका साहस किसी भी काममें कम नहीं हुआ था। अब आपको चलते वक्त एक लकड़ी रखनी पड़ती थी। लकड़ीके सहारे आप और मनुष्यों-की तरह रास्तेमें चलते थे व विना लकडी भी थोड़े बहुत कदम चल सक्ते थे। इन दिनों प्रक्षाल पूजनमें अंतराय आगया था पर दर्शन व स्वाध्याय आप बराबर करते थे। दूकानपर जाकर व्यापार करनेमें कोई त्रुटि नहीं थी। वास्तवमें विचार किया जाय तो इस कर्म ग्रसित प्राणीको कोई न कोई विघ्न आही जाता है जिससे यह अपनी शक्तियोंको इच्छानुसार वर्तन करनेमें लाचारीसे असमर्थ हो जाता है। ऐसी दशामें भी जन्मभर आपने मिहनत की। प्रतिदिन शामको दो दो मील पैदल विहार किया है। कभी आलस्य प्रमादको अपनेमें नहीं आने दिया।

सूरतमें चन्दावाड़ी धर्मशालाका निर्मापण।

एक दिन सेठ माणिकचंदने भाई पानाचंद और नवलचंदसे सम्मति की कि सूरतमें यात्रियोंके आरामका व अपनी बिरादरीके जमीन आदि उत्सव करनेका कोई स्थान नहीं है अतएव श्रीचंद्रप्रभुजीके मंदिरके पासके स्थानको लेकर एक सुन्दर धर्मशाला बनवा दीजाय तो बहुत अच्छा है। भाइयोंने पसन्द किया और इस कार्यमें २००००) खर्च करनेका निश्चय किया। सेठ माणिकचंद सूरत आए और नकसा वगैरह ठीक करके काम लगा गए। यह धर्मशाला संवत् १९४८में बनकर तय्यार होगई। यह बहुत सुन्दर कमरोंसे शोभायमान है, हरतरहका आराम है। जीमनके लिये बड़ा स्थान है। इसका नाम भाइयोंने श्री चंद्रप्रभुके नामसे चन्दावाड़ी रक्खा। तथा इसके खर्चको चलानेके लिये इसके आधीन बम्बईके पहले भोईवाड़ेमें एक मकान ले लिया और इस वाड़ी व मकानको संवत १९५६में एक ट्रष्ट कमेटीके आधीन करके उसका ट्रष्ट कर दिया। इससे परदेशी जैन यात्रियोंको ठहरनेमें बहुत आराम मिलता है। पालीतानामें पाठकोंको मालूम ही है कि धर्मचंद मुनीमके द्वारा मंदिर निर्माणका काम चल रहा था परंतु इससे ही सेटजीको संतोष नहीं हुआ वे हरमासके कामका ब्यौरा मंगाते थे और जब कभी आवश्यका होती फौरन चले जाते थे।

सं. १९४८ तक आप ७ या ८ वार पालीताना गए।

पालीतानामें दौरे और मदद।

इनके साथ इनकी पुत्री मगनमती सदा जाती थी। सेठजी इसको अपने पुत्रके समान मानते थे। हरतरहकी शिक्षा देते थे। मगनमतीका भी मन सदा पिता ही के साथ भरता था लड़कईसे साथ २ भोजन करने व बैठनेकी आदत पड़ गई थी। पालीतानामें काम देखते देखते कभी दोपहर होजाती थी पर मगनमती पिताके विना भोजन नहीं करती थी उन्हीके साथ आप भी काम देखा करती, जब सेठजी खाते तब ही जीमती। कई २ घंटे तक कभी २ इसे अपनी भूख दाबनी पड़ती थी। सं. १९४८ तक मंदिरके बननेमें बहुतसा रुपया बाहरसे आकर लगा तो भी सेठजीको धीरे २ करके १००००) पालीताना क्षेत्रके नाम लिख कर भेजना पड़ा।

पालीतानामें धर्मशालाके लिये जमीन।

पालीतानामें एक बड़ी धर्मशालाकी आवश्यक्ता है ऐसा सेठजीके मनमें खटका करता था। नदीके तट भैरोंपुरा अब वसता है पहले वहां जंगल था जब कभी सेठजी उधरसे जाते मुनीमजीको कहते थे कि देखो यह जमीन आगे चलके बहुत कीमती होजायगी इससे इसे मौका लगे तब जरूर खरीद लेना ज्यों २ ढीलकी गई दाम बढ़ गए आखिर ।।।) गज पर २७००)में जमीन खरीद ली। रुपया जो कम पड़ा सो सेठोंकी दुकानसे मंगाया गया। यद्यपि मंदिरजी सं. १९४८ में तय्यार हो चुका था पर इसकी प्रतिष्ठाका महूर्त संवत् १९५१ में बना था।

कभी २ सेठजीको अपने पुत्र न होनेका ख्याल आजाता था।

सेठजीको पुत्रकी आशा ।

यद्यपि मगनमतीके जन्मके पीछे एक पुत्रका जन्म हुआ पर वह ९ मास पीछे ही मर गया अब फिर चतुरमतीको गर्भ रहा था और सेठजीकी आशाके अनुसार इस वार भी पुत्रका जन्म हुआ। सेठजीने कोई खास उत्सव नहीं किया। वह पुत्र धीरे २ बढ़ने लगा।

रत्नाकर पैलेसकी स्थापनामें करीब १॥ लाखका खर्च ।

चंदावाड़ीको स्थापित करके बम्बई आने पर परस्पर भाइयोंमें सम्मति हुई कि अपने सर्व कुटुम्बको एक साथ उत्तम वायुके स्थान पर रहने योग्य एक मनोहर बंगला ऐसा निर्मापण करना चाहिये जिसमें एक चैत्यालय भी स्थापित किया जाय जिससे धर्म साधनमें किसीको कभी अंतराय न पड़े इसमें एक लाख डेढ़ लाख रुपयेके अनुमान खर्च करना विचार किया गया। सेठ माणिकचंदने शास्त्रोंमें स्वर्गीय महलों व चक्रवर्ती राजा आदिके महलोंका वर्णन पढ़ा था। चित्तमें उमंग हुई कि **इन्द्र महल** समान महल समुद्र तट पर बहुत ही रमणीक पाषाण और ईंटका बनवाया जाय। बम्बईमें **चौपाटी** समुद्रके तट पर एक ऐसा स्थान है जहां पर शहरके सर्व ही भले नर नारी शामके वक्त सैर करने जाया करते हैं। सेठजीने ऐसी जमीन इसके लिये तजवीज की जिसके एक ओर बी० बी० सी० आई रेल्वे जाती है और दूसरी ओर समुद्र तट परकी बड़ी सड़क है इस जमीनको २४०००) रु० में खरीदा

और इस विस्तार पूर्ण जगहमें ऐसा महल बनानेका नक्शा तय्यार किया कि जिसमें सड़ककी तरफ आगेको बागीचा हो, भीतर गाड़ी घोड़ा बांधने व सहीसोंके रहनेकी जगह हो। आगेको नीचे और ऊपर बड़े २ हॉल हों जिनमें पांच पांच सौ आदमी बैठ सकें। हॉलके आगे ऊपर व नीचे सुन्दर बरामदा हो। चारों भाइयोंके आरामके लिये अलग २ कमरे हों व और भी पुत्रोंके लिये कमरे हों व कोई बाहरके महमान आवें उनके भी ठहरनेका स्थान हो। हरएक कमरेमें स्नान घर, पानी रखनेकी जगह हो, रोशनी व हवा खूब आ सके तथा इसीसे लगा हुआ एक हॉलमें चैत्यालय हो जिसके आगे भी १५० आदमीके बैठनेकी जगह हो और इस चैत्यालयके ऊपर कोई मकान न हो तीसरे खनमें भी कमरे हों और सबके ऊपर एक ऊंची टावर (Tower) हो जो दूरसे दीखे और जिस-पर खड़े होकर दूर तक समुद्र और नगरका दृश्य दिखलाई पड़े। रसोईका स्थान एक कोने पर रक्खा कि किसी तरह धुआं किसी बैठने व सोनेके कमरेमें न जा सके। मलविसर्जनका स्थान और भी दूर रक्खा गया कि उसकी दुर्गंध कहीं भी नहीं आ सके। ऐसे महल बनानेका नकशा बनवाया और सर्व भाइयोंने उसे पसन्द किया। इस समय प्रेमचन्द भी १४ वर्षके हो गए थे स्कूलमें बहुत मन लगाकर इंग्रेजी पढ़ते थे। मैट्रिकुलेशनमें एक ही वर्ष पहुंचनेको भी रहा था। प्रेमचन्दको नकशा पसन्द कराया। रूपाबाई माता भी बड़ी चतुर थी उसे भी दिखलाया। सबकी राय पड़ने पर सेठ माणिकचंदजीने एक बहुत चतुर मिस्त्रीके सुपुर्द यह काम कर दिया। आप नित्य प्रति घंटा दो घंटा देख चाल रखते थे।

सेठजीका परोपकार व कार्यकुशलता।

इस समय आपकी अवस्था ४० वर्षकी थी। अपनी इस उम्रमें आप अपनेको ज्यों २ पुण्यशाली देखते थे त्यों त्यों अधिक यह धर्ममें तल्लीन होते थे। अनेक गुजरात व दक्षिणके जैनियोंको यह आश्रय देकर कुछ मास अपने ही स्थान पर रखकर उनको भोजनादिकी सहायता करते थे फिर आजीविकामें जोड़ देते थे। आम सभाओंमें जाना समाचारपत्र बांचना, जो नई पुस्तक गुजराती भाषाकी निकले उसको पढ़ना; कुछ समय भी वृथा न खोना, सवेरेसे रात्रि तक नियमित रूपसे हर एक काममें लगे रहना ही सेठ माणिकचन्दके समयका उपयोग था। जिस लक्ष्मीको इन्होंने और इनके भाइयोंने बुद्धिबलसे उपार्जन किया था उसका भलीप्रकार उपयोग करना यही इनकी भावना थी और व्यापारके समय व्यापारमें ऐसी चतुराईसे वर्तते थे कि इनके पास जो ग्राहक आता था वह लौट कर नहीं जाता था। जो दाम यह कह देते थे विश्वासके साथ दे देता था। जाहर लोगोंमें अधिक मिलने जुलनेसे जिस किसीको कुछ जवाहरातकी जरूरत पड़ती थी सेठ माणिकचंदको याद करता था। यह उसकी मरजीके माफिक उसको माल दे देते थे और दाम इतना ठीक लेते थे कि दूसरा कोई भी नहीं दे सक्ता तथा उसे भी विश्वास आता और यदि वह दूसरोंसे बजारमें जांच कराता तो ठीक पाता। अपने मेलके कारण यह बहुत रुपया कमाते थे इसलिये यह बात प्रसिद्ध थी कि जैसे सेठ पानाचन्द माल खरीदनेमें चतुर हैं वैसे सेठ माणिकचन्द माल बेचनेमें प्रवीण हैं।
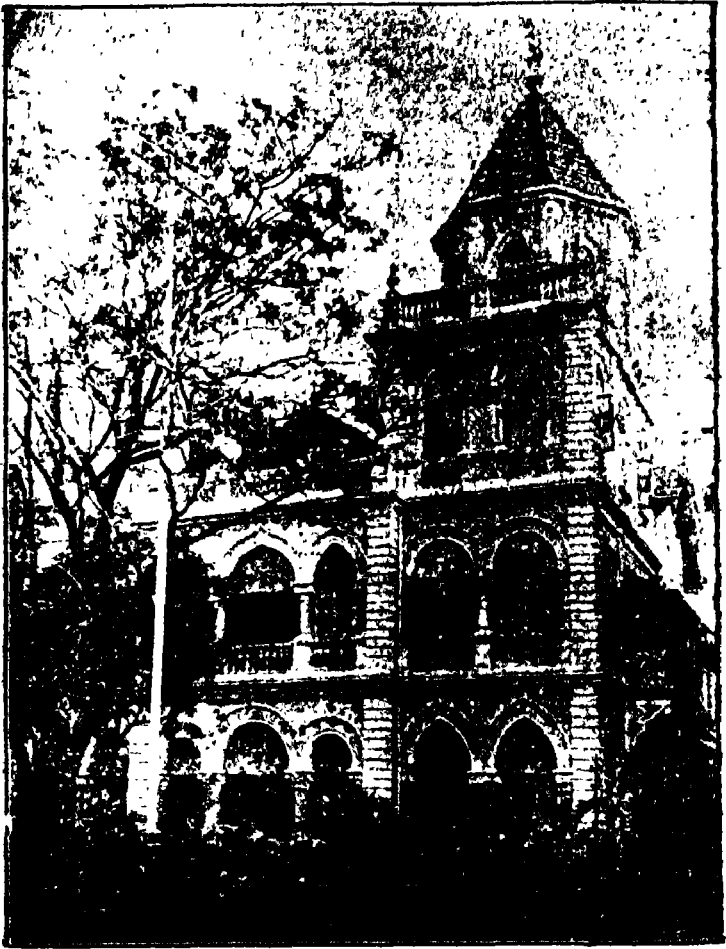
सेठजीका भवन (रत्नाकर पॅलेस)
चौंपाटी–बम्बई.

(देखो पृष्ट २३८) J. V. P. Surat.

शोलापुरमें चतुर्विध दानशाला।

सेठ माणिकचंदजी जब इसतरह लक्ष्मीका उपयोग कर रहे थे तब शोलापुरके दानी सेठोंका मन भी दानमें उत्सुक हो रहा था। उनके मनको उपयोगी कार्योंकी ओर आकर्षित करनेवाले **सेठ हीराचंद नेमचंद** बड़े प्रवीण थे। एक दफे आपने उपदेश दिया कि लक्ष्मीका उपयोग चार प्रकारके दानसे करना चाहिये। गरीबोंको, अनाथ बालक व विधवाओंको अन्न देना **आहारदान** है, रोगियोंकी आर्ति मिटानेके लिये पवित्र देशी औषधि देना **औषधि दान** है, मनुष्य पशु आदि संकटमें पड़ते हुए प्राणियोंका भय मेट कर रक्षा करना, पिंजरापोलमें मदद देना सो **अभयदान** है. धार्मिक व लौकिक विद्याकी वृद्धि करनेमें सहायता करना सो **विद्यादान** है। इससे धनपात्रोंको कुछ अलग धन एकत्र कर उसके व्याजका उपयोग चारों दानोंमें सदा हुआ करे ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये। शोलापुरकी मंडलीके ध्यानमें यह बात आगई और ता: १२ नवम्बर सन् १८९१ को नीचे प्रमाण रु. ३८११६) का फंड करके उसका व्याज ।।) सैकड़ा उत्पन्न करके चारों दानोंमें खर्च हो ऐसा प्रस्ताव होकर चतुर्विध दानशालाका कार्य्य प्रारंभ होगया। फल्टनके एक जैन वैद्य बलवंत नेमाजीको वैद्य नियत किया गया। यह कार्य अबतक जारी है और इस फंडके निमित्तसे बहुतसे गरीब छात्र शोलापुर पाठशालामें पढ़ते हुए भोजन पाते रहे हैं। पशुशालाको मदत होती रही है। विद्यादानार्थ पाठशालाको मदत दी गई है। उसका रुपया मुख्य२ सेठोंके यहां जमा है। इसकी प्रबन्धार्थ एक कमेटी है पर उसका ट्रष्ट रजिष्टरी अब

तक नहीं हुआ है जिसकी बहुत आवश्यकता है ऐसी ध्रौव्य संस्था चारों दानोंके लिये हरएक नगरमें होना चाहिये । दानार्थ लक्ष्मी खरची हुई ही स्व और परका उपकार करती है:—

नाम चंदा देनेवाले दातारोंके ।

७५०१) सेठ हरीभाई देवकरण	६१०१) सेठ हरीचंद परमचंद
५७०१) ,, वस्ता खुशाल	४२०१) ,, मोतीचंद परमचंद
२५०१) ,, सखाराम खुशाल	१५०१) ,, रायचंद खुशाल
१३०१) ,, रामचंद साकला	१२०१) ,, सीखाराम नेमचंद
११०१) ,, मोतीचंद खेमचंद	१००१) ,, नानचंद खेमचंद
१००१) ,, पदमसी निहालचंद	१००१) ,, जोतीचंद नेमचंद
१००१) ,, गौतम नेमचंद	१००१) ,, पदमसी कस्तूर
१००१) ,, मलूकचंद गणेश	१००१) ,, रामचन्द गोवनजी

रु. ३८११६)

यह संस्था थोड़े ही दिनोंमें बड़ी उपयोगी हो गई । जैन बोधक अगस्त सन् १८९२ में कार्तिकसे ज्येष्ठ तक ८ मासके सदावर्त बटनेका हिसाब यह है कि ३७२ जैन व २९८५ अजैनोंको व्यवहारके पदार्थ दिये गए । इन ३३५७ में ११७२ प्राणी बिलकुल अशक्त थे । तथा औषधालय में ८०४ रोगीने दवा ली जिनमें ४१९ अच्छे हुए ।

अध्याय आठवाँ ।

संयोग और वियोग ।

फूलकुमरी और मगनमतीकी सगाई ।

सेठ माणिकचंद जब २ सूरत जाते थे इनकी दोनों पुत्रियोंके लिये मांगपर मांग आती थी और निकट सम्बन्धी बार २ टोंकते थे कि इनका लग्न करना चाहिये अतएव सेठजी जब चंदावाड़ी धर्मशालाको खोलने सं. १९४८में सूरत गए थे तब फूलकुमरी और मगनमती दोनोंकी सगाई सूरतमें ही पक्की कर ली थी। सूरतमें एक विसा हुमड़ **त्रिभुवनदास ब्रिजलाल** रहते थे जो मध्यमस्थितिके गृहस्थ थे । इनके पुत्रका नाम मगनलाल था यह साधारण पढ़ा हुआ व किसी कुआचरणमें नहीं था तथा अपने पिताके साथ व्यापारमें लगा हुआ था। फूलकुमरीकी सगाई इसीके साथ पक्की हुई । इन दोनों बहनोंमें फूलकुमरी बहुत भोली व सीधी थी परंतु मगनमतीका रूपदर्शनीय था । इसके सम्बन्धको अच्छे २ चाहते थे। सूरतमें एक धनाढ्य व्यापारी तासवाला वेणीलाल केशुरदासकी कोठी प्रख्यात है। इनके दो पुत्र थे नेमचंद और जयचंद दोनों साथ २ रहते थे। किसीको कोई सन्तान न थी। तब नेमचंद ईडरसे खेमचंद नामके लड़केको दत्तक लाए। इसी खेमचंद नेमचंदके साथ मगनमतीकी सगाई पक्की हुई। इस लड़केको साधारण लिखना बांचना आता था। स्वभाव मर्यादाशील, मिलनसार प्रेमालु और धैर्यवान था। स्वरूपमें भी सुन्दर था पर धार्मिक शिक्षा व आचरणकी आदत न डाले जानेसे इसका मन

सांसारिक बातोंमें विशेष था। अपने सांसारिक मित्रोंके साथ पैसा खर्च करनेमें हाथ खुला था। बड़े आदमीका दत्तक पुत्र प्रायः ऐसा ही होता है। उसको पैसे खर्चते हुए दर्द नहीं मालूम होता जब इसकी सगाई हुई तब इसकी अवस्था १९ वर्षकी थी।

दोनों पुत्रीयोंकी लग्न। सु. सं० १९४० में सेठ माणिकचन्दजी सर्व कुटुम्ब सहित सूरत गए और इन दोनों कन्याओंका विवाह लगातार एक साथ ही किया। इन विवाहमें सेठजीने बहुत रुपया खर्च किया तो भी वह १००००)से अधिक न होगा। तासवालेने भी बड़ी धूमधाम की गई। चंदाबाड़ीमें ही सेठ माणिकचंदजीने समारंभ किया। दोनोंकी बरात् व बिदाका जुलूस बहुत सामानसे निकला। वर और बधूकी सवारी हाथीपर हुई। नगरमें गाजे बाजोंकी भरमार ऐसी हुई कि नगरभर इनके देखनेके लिये उमड़ आया। सूरतमें बिरादरीके कई जीमन दिये। बहुतसे सम्बन्धी व मित्र बाहरसे बुलाए गये थे उनकी खातिर की गई। नगरके प्रतिष्ठित पुरुषोंको दावत दी गई और नौकर चाकर मुनीम व सम्बन्धियोंको बहुत कीमती पौशाकें दी गईं। इस समय फूलकुमरी १५ तथा मगनमतीकी १३ वर्षकी आयु थी।

पुत्रकी आशासे निराशता। श्रीमती चतुरबाईकी गोदमें जो छोटा पुत्र था सो सूरतमें लग्नके समयपर ही यकायक बीमार होकर १। बर्षकी उम्रमें चल बसा। सेठजीको इस तरह पुत्रकी फिर निराशता हो गई। वास्तवमें संसार इसीका नाम है एक तरफ हर्ष होता है तो दूसरी तरफ शोक हो जाता है। थोड़े दिन पीछे चतुरबाईको

फिर गर्भ रहा। तब सेठजीने खास दासियां नियत कीं कि वे गर्भकी सम्हाल व रक्षा करें।

सेठ नवलचंदके द्वितीय पुत्रका जन्म।

सेठ नवलचंदका प्रथम पुत्र ताराचंद इससमय ४ वर्षका था। इसका शरीर स्वास्थ्ययुक्त था। माता बड़ी ही यत्न रखती थी। पिता भी हरसमय सम्हाल करते थे। प्रसन्नबाईको फिर भी गर्भ रहा। संवत १९४२ आसोज वदी ३० के दिन शुभ महूर्तमें जुबिली बागके बंगलेमें बाईने द्वितीय पुत्रको जन्म दिया। यह बालक बहुत ही सुन्दर शरीर व सौम्य वदन था। माता देखकर गद्गद् बदन हो गई। सेठोंको भी बड़ा हर्ष हुआ। विधि सहित सर्व उत्सव किया। दान धर्म खूब किया और पुत्रका नाम **रतनचंद** रक्खा। पानाचंद और माणिकचंदके कोई पुत्र न था इससे स्वाभाविक है कि इनके व इनकी पत्नियोंके दिलोंमें कोई ईर्षाभाव उत्पन्न हो। परंतु ये भाई ऐसे सरल प्रकृति व धर्मात्मा थे कि इनको अंतःकरणसे हर्ष हुआ। पानाचंद व्यापारकी धुनमें अधिक रहते थे। माणिकचंद और चतुरबाईका चित्त मगनमती पुत्री के कारण भरा हुआ था। ये इसे पुत्रकी भांति चाहते थे।

श्रीयुत पंडित गोपालदासजी।

आगरा निवासी पंडित गोपालदासजी संवत् १९४९ के आषाढ मासमें बम्बई रहनेके लिये आए। पंडितजीका जन्म संवत् १९२३में वरैया जातिधारी लक्ष्मणदास पिता और लक्ष्मीमती माताके द्वारा हुआ था। पिताका देहात सं. १९३० में हो गया। माताने बहुत कष्टसे इनको मैट्रिकुलेशन तक

इंग्रेजी पढ़ायी। गणितमें यह बहुत चतुर थे। २० वर्षकी उम्रमें हाईस्कूल छोड़कर अनाजकी दूकान पर लाभ न देखकर अजमेरमें जा सं० १९४४में रेलवे आडिट आफिसमें नौकरी की। पत्नीका सम्बन्ध १४ वर्षकी उम्रमें हुआ था। यहाँ पंडित मोहनलालजीके पास दो वर्षमें गोम्मटसारका अभ्यास किया। सं० १९४६में दर्शन और स्वाध्याय प्रतिदिन करनेका नियम किया। इस नौकरीसे काम चलता न देख आगरा आकर १ वर्ष व्यापार किया इतनेमें अजमेरके सेठ मूलचंदजीने आपको अजमेर बुलाकर अपनी दूकानपर क्लार्क नियत किया। सेठ माणिकचंदकी दक्षिण यात्राका हाल सेठ मूलचंदजीके कानोंतक पहुंच चुका था तथा जैन बोधक पत्रमें जो सेठ हीराचंदजीने अपनी यात्राका हाल छापा था उसको भी पढ़कर सेठ मूलचंदजीको बहुतोंने सुनाया। विचार करते २ आप संवत १९४८में दक्षिणकी यात्राको तैयार होकर पं० गोपालदासजीको साथ ले बम्बई आए। यहांसे आप जैनबिद्री मूलबिद्रीको गए। मूलबिद्रीमें आपने श्री धवल जयधवलादि ग्रंथोंको जीर्ण दशामें देखकर उनकी प्रति करानेके लिये ब्रह्मसूरि शास्त्रीको आग्रह पूर्वक कहा था। शास्त्रीने २००के अनुमान श्लोक लिखे ऐसी सूचना भी सेठ साहबको बादमें की थी। उक्त सेठ साहबको विद्याका कुछ प्रेम था। शोलापुरमें आपने जैन पाठशालाकी परीक्षा ले ५०) का इनाम दिया। आपने प्रसिद्ध जैपुरके विद्वान पंडित सदासुखजी की वृद्धावस्थामें अच्छी वैय्यावृत्त्य की थी तथा उनका समाधिमरण भी अजमेरमें ही हुआ ऐसा सुनते हैं। गोपालदासजी यात्रासे लौटकर कुछ दिन अजमेर ठहरे पर आजीविका यथेष्ट न

देखकर सं. १९४९ के आषाढ़ मासमें बम्बई आए। इनको व्याख्यान देने व शास्त्र वांचनेका अच्छा अभ्यास था। बम्बईके जैन मंदिरमें भादोंके दिनोंमें श्री दशलक्षणजी व सूत्रजीके अर्थ आपने बहुत अच्छी तरहसे वर्णन किये। उस समय सेठ माणिकचंदजीने खूब ध्यानसे सुने। माणिकचंदजीको विद्यावृद्धि, सर्व मुल्कमें जैन धर्मके प्रचार, कुरीतिके नाशका कितना बड़ा ख्याल था सो पाठकोंको उसी पत्रसे निश्चय हो गया होगा जो उन्होंने सेठ हीराचंदजीको भेजा था व जिसकी नकल इसके पहले अध्यायमें दी गई है पर बम्बईमें कोई सहाई न मिलनेसे माणिकचंदजी कुछ उद्योग न कर सके थे। अब २६ वर्षके नौजवान गोपालदासको अपने ऐसे विचारोंके धारी, परोपकारी और तीव्र बुद्धि देखकर इनको बड़ाही हर्ष हुआ। सेठजीने इनको अपने पास बुलाकर इनसे बहुत प्रेम जताया। रोज इनसे वार्तालाप करने लगे तथा सेठजीकी सहायतासे आप जवाहरातका व्यापार करने लगे और सुखसे बम्बई हीमें रहने लगे।

मुम्बई दि० जैन सभाकी स्थापना।

सेठ माणिकचंदकी इच्छानुसार गोपालदासजीने अपने उपदेशोंसे बम्बईके भाइयोंको सभाके अनेक लाभ दिखाए। उस समय लोग सभा होना किश्चान पादरियोंकी नकल करना समझते थे। सर्व भाइयोंकी मरजीसे मिती मागसिर सुदी १४ संवत १९४९ को मुम्बई दि० जैन सभा स्थापित हो गई जिसके मंत्रीका कार्य सेठ माणिकचंदजी और उपमंत्रीका पद पंडित गोपालदासजीको दिया गया। यह सभा प्रति सुदी १४ को होती थी जिसमें नाना प्रकारके व्याख्यान होते थे। इस सभाके प्रतापसे

बम्बईवालोंने धर्मरक्षाके अबतक अच्छे२ प्रशंनीय कार्य किये हैं। तीर्थोंका सुधार व परीक्षालय द्वारा भारतकी पाठशालाओंकी परीक्षा लेना व संस्कृत विद्याकी उन्नति आदि कार्योंमें बहुत बड़ा काम किया है। सेठ माणिकचंदजी बड़े ही नियमित काम करनेवाले थे। प्रति सुदी १४ को नियमसे सभाको बुलाते और व्याख्यान कराते थे।

रत्नाकर पैलेसमें श्री चंद्रप्रभु चैत्यालयकी स्थापना।

सं० १९४९ में चौपाटीका **रत्नाकर पैलेस** भी बनकर तय्यार हो गया, जो भवनवासी देवोंके भवनको हंसता था। पैलेसकी ऊंची टावर दूरसे दिखलाई पड़ती था। समुद्रकी मनोहर ठंडी वायु हर वक्त इस महलकी वैय्यावृत्यमें ऐसी लीन थी कि इसे बिलकुल स्वच्छ रखती थी। महलमें फर्शसे पत्थर जड़ा हुआ था। भीतों पर चित्रकारी व रंग साजीका काम किया गया था। शीशेके कपाट रत्नाकर पैलेसके नामको सुशोभित करते थे। हरएक कमरेमें मनोहर पलंग, कुरसी, टेबुल, अलमारी, लम्प, झाड आदि फरनीचर सजाया गया था। बीचके बड़े हालमें बैठकखाना था जिसमें संगमर्मरकी टेबुलें पड़ी थीं। चारों ओर कई कुरसियां पड़ी थीं तथा टेबुलपर 'बम्बई समाचार' आदि पत्र रहते थे। हॉलके चारों ओर भीतके सहारे आराम कुरसियां मनोहर गद्देदार कुछ बैठने लायक और कुछ लेटने लायक थीं, कई बड़े २ दर्पण लगाए गए थे, कई बड़ी २ तसवीरें व कहीं २ पर बड़े सुन्दर खिलौने सजाए गए थे। सारा महल एक दर्शनीय प्रदर्शनी बन गयी थी। चैत्यालय भी बहुत ही

उत्तम कांचकी भीतोंका अनेक चित्र सहित बनवाया गया। कांचोंमें नारकियोंके दुःखोंके चित्र व कौन २ पापसे कौन २ दुःख होता है ऐसा नकशा दिया गया था। वेदी चांदीकी सुन्दर रची गई। तीन तरफ भीतोंमें ऐसे कांच जड़े गये थे जिससे एक मंदिरके अनेक मंदिर मालूम होते थे। स्फटिकमणिकी मूल नायक श्री चंद्रप्रभुकी प्रतिमा चांदीके सिंहासन पर अतिशय वीतरागता व ध्यानको प्रगट करनेवाली पौन हाथ ऊंची सुशोभित हुई उनके सिवाय और भी कई छोटे २ स्फटिकके बिम्ब विराजमान किये गये। एक धातुका चौवीसी पट्ट भी विराजमान किया गया। चैत्यालयकी ऐसी मनोहर शोभा थी कि दर्शकको सैकड़ों ध्यानाकार प्रतिबिम्बोंके दर्शन उन कांचोंके निमित्तसे होते थे। इस महलकी तैयारी होकर चैत्यालयकी बड़ी धूमसे व भक्ति व पूजा सहित प्रतिष्ठा की गई। सर्व कुटुम्ब एक साथ एक ही पैलेसमें रहकर धर्म कर्म साधन करने लगा। सेठ मांणिकचंदजी वड़े प्रेमसे नित्य प्रक्षाल व पूजन करने लगे। स्वाध्यायके लिये कपाटोंमें लिखित व मुद्रित ग्रंथ भी रक्खे तथा एक कपाट ऐसा भी रक्खा कि जो उस समय तक ग्रंथ छपे थे उनकी कई २ प्रतियां भेटमें देने व न्योछावर लेकर देनेको रक्खी गई जिससे स्वाध्यायका प्रचार हो।

सेठ माणिकचंदजीका यह कायदा था कि स्वाध्याय करते समय व बड़े हॉलमें बैठते हुए जो कोई दर्शनके लिये आते उनसे धर्मकी बात पूछकर स्वाध्यायका उपदेश देते, तथा पुस्तक लेनेको कहते थे। रात्रिको व्यालु करके व समुद्र तटपर घूमनेके बाद तथा चैत्यालयमें दर्शन करके सेठजी सदर जीनेके सामने ही बड़ी कुरसीपर बैठ

जाते थे। और दर्शन करने आनेवालोंको चाहे धनाढ्य हों चाहे गरीब बड़े प्रेमसे कुरसीपर बिठाकर उनका दुःख सुख पूछते थे। उनको धर्मोन्नति व आत्मोन्नतिकी प्रेरणा करते थे।

इस महल और चैत्यालयकी ऐसी प्रख्याति हुई कि बम्बईके लोग इसे एक देखने योग्य वस्तुओंमें गिनने लगे और देशी परदेशी जैनी अजैनी सब बिना रोकटोकके बंगलेमें घूमकर देखने लगे। गुजरात व दक्षिणमें परदेका रिवाज नहीं है केवल ड्योढ़ी पर एक जमादार रहता था जो आते जाते लोगोंको देख लेता था। रात्रिको बंगलेमें रोशनी ऐसी होती थी मानो दिन ही मौजूद है। चैत्यालयमें शामको प्रेमचंद मोतीचंद बड़ी भक्तिसे आरती पढ़ते और करते थे। रूपाबाई अपने पुत्रके भक्तिभरे शब्द सुनकर प्रफुल्लित होती थी। बम्बईके जैनी अब चौपाटीकी तरफ शामको प्रायः सर्व ही आने लगे और चैत्यालयके दर्शन नित्य प्रति करने लगे। तथा सेठजीसे उपदेश पाकर व वार्तालाप करके परस्पर लाभ लेते देते हुए।

तारामतीका जन्म।

चतुरबाईको गर्भ था जिसकी सम्हाल सेठ माणिकचंदजीने बहुत की थी। उसके संतानका जन्म उसी बंगलेमें हो जहाँ गर्भ रहा है ऐसा भाव करके गुज० कार्तिक मास सं० १९५० तक चतुरबाईजीका जाना चौपाटीके बंगलेमें नहीं हुआ था जुबिली बागके बंगलेमें ही मिती कार्तिक वदी १ को सेठजीकी पुत्रकी आशाको इसी तरह रखते हुए एक कन्याको जन्म दिया। यह कन्या भी सुन्दरमुख थी। शरीर बड़ा नर्म था। इसकी रक्षा पूरी २ की गई। सेठजीने साधारण रीतिसे जन्मोत्सव किया तथा इसका नाम **तारामती**

रक्खा। प्रसूतिका समय चले जानेके बाद कन्याको लेकर श्रीमती चतुरबाई चौपाटीके बंगलेमें चली गई और स्वर्गपुरीके समान वहां निवास करने लगीं। यद्यपि मगनमतीकी लग्न हो गई थी पर इसका चित्त पिताजीके पास ही बहुत प्रसन्न रहता था। इस नए बंगलेमें वह सूरतसे आकर महीने दो दो महीने ठहर जाती थी और समुद्र व चौपाटीकी बहारसे संसारिक आनन्द मनाती थी।

सेठ पानाचंदजीकी तृतीय लग्न।

सेठ पानाचंदजीकी अवस्था सं० १९५०के प्रारंभ में ४९ वर्षकी थी। यद्यपि इनकी आंतरिक इच्छा विवाह करनेकी नहीं थी पर कोई संतानका लाभ न होनेसे कुटुम्बी जन इनको विवाहका बहुत ज़ोर दे रहे थे। इन्होंने भी स्वीकार कर लिया। इनका शरीर अभी भी भले प्रकार दृढ़ व उद्योग पूर्ण था। परतापगढ़ राज्य जिला मालवामें हूमड़ जातिके एक साधारण स्थितिके धारी सेठ शंकरलाल नंदलालजी थे जिनकी पत्नीका नाम चिमनाबाई था इनके एक कन्या रुक्मीबाई थी जो सीधे मिजाजकी व घरके कामकाज में चतुर व दृढ़ शरीर थी, स्वास्थ्य भी अच्छा था। स्वरूप भी ठीक था। इसीके साथ सेठ पानाचंदजीका विवाह परतापगढ़में हो गया। विवाहमें कोई विशेष धूमधाम नहीं की गई। इसकी अवस्था अनुमान १६ वर्षके थी। सेठ पानाचंद तुर्त कन्या विदा कराके बम्बई लाए और चौपाटी बंगलेमें संसारिक सुखमें भ्रमरके समान लिप्त हो गए। इनको यह आशा थी कि पुत्रका लाभ हो क्योंकि पुत्र विना एक गृहस्थी पुरुषकी शोभा नहीं है।

सेठ प्रेमचंदजीको व्यापारकी शिक्षा।

इधर प्रेमचंद मोतीचंद स्कूलमें मैट्रिकुलेशन तक शिक्षा पाचुके थे। इनकी द्वितीय भाषा संस्कृत थी। अवस्था १६ वर्षकी हो गई थी। रूपाबाईजीने अब ज्यादा स्कूलमें पढ़ाना ठीक न समझा और व्यापारमें झुकाना ही उचित जानकर प्रेमचंदकी आगे पढ़नेकी इच्छा होने पर भी स्कूलसे उठाकर दूकानपर भेजना व मोती पुराना सिखाना शुरू किया। प्रेमचंदका मन बहुत सीधा था तथा अपनी पूज्य माताका परम भक्त था। माताकी आज्ञाका उल्लंघन पाप समझता था। सहर्ष माताकी इच्छानुसार व्यापार सीखने लगा। सेठ माणिकचंदका इसपर बड़ा हेत था क्योंकि प्रेमचंदका मन धार्मिक व परोपकारके कार्योंमें अच्छा लगता था। सभामें जाने आने व व्याख्यान सुननेका अच्छा शौक था। कभी २ स्थानीय सभामें कुछ कहनेका भी अभ्यास करने लगा। जैन बोधक मराठी पत्र व मराठीमें छपी जैन पुस्तकोंको अच्छी तरह बांचता था। लौकिक पत्रोंको भी देखता था। जैन जातिकी उन्नति हो इस बातपर पूरा लक्ष्य था।

सेठ चुन्नीलाल झवेरचंद व्यापारमें शामिल।

सेठ माणिकचंद पानाचंदका भानजा सेठ चुन्नीलाल झवेरचंद बराबर इन्हींके साथ रहते व दूकानपर काममें मदद दिया करते थे। चौपाटी बंगलेमें यह भी अपनी पत्नी जड़ावबाईके साथ एक कमरेमें सुखसे रहने लगे। इनको व्यापारमें बहुत ध्यान देते हुए व अपने काममें पूर्ण सहकारी जानकर सेठोंने इनका कुछ भाग अपने फर्ममें नियत कर

लिया और अपने बराबर इनकी प्रतिष्ठा बाजारमें हो ऐसा अवसर इनको दे दिया। चुन्नीलालजी अपने तीनों मामाकी इच्छानुसार व्यापारमें खूब परिश्रम करने लगे।

जैनियोंमें विलायत जानेकी चर्चा।

सन् १८९२ के अप्रेल मासमें बम्बईके जैन युनियन क्लबमें एक जैनीने "**प्रवाससे फायदे**" इस विषयपर एक निबंध इंग्रेजीमें पढ़ा था फिर गुजराती भाषामें कई भाषण हुए थे कि मद्यमांस पदार्थ त्याग करके यदि जैनी समुद्र यात्रा करें तो कोई हर्जकी बात नहीं है।

अमेरिका प्रदर्शनीमें जैन विद्वान भेजनेकी चर्चा।

सन् १८९३में **चिकागो**में एक बड़ी भारी प्रदर्शनी अमेरिकावालोंने संगठित की थी तथा भारतके हरएक धर्मवालेको अपने२ धर्मके सिद्धान्तोंको कहनेके लिये बुलाया था। धर्म सम्बन्धी व्यवस्था करनेके विभागके अधिकारी **जान हेनरी बेरोज** थे। इस समय श्वेताम्बरी साधु **आत्मारामजी** महाराजका नाम बहुत दूर दूर तक प्रसिद्ध था। उनके पास उक्त अमेरिकनका एक पत्र आया जिसकी नकल यह है:—

"**पूज्य महाराज।**

इस धर्म समाजमें आप खुद जातसे आय सकोगे? आपका दर्शन होनेसे हमको बहुत आनन्द होगा जिस जैनधर्मकी अटल ध्वजा आप उड़ाय रहे हो उस धर्मका वर्णन और उपदेशका प्रकाश हरकोई आदमीके दिलपर सुगमतासे पड़े ऐसा एक व्याख्यान लिखके यहां भेजनेकी आप कृपा करोगे? जो आप

इतना काम करोगे तो हम बहुत खुश हो जायगें और समाजके हेतुओंमें कितनेएक दरजे फायदा होगा। मेरे दूसरे रिपोर्टकी कितनीएक नकलों मैं आपके तरफ भेज देता हों ।

आशा है के आपके तरफसे ज्यादा खुलाशा जल्दी मिलेगा ।

चिकागो यूनाइटेड स्टेट्स। ता० ३–४–९३	आपका सेवक **जॉन हेनरी बेरोज** सभापति (जैन बोधक जून १८९३)

इस पत्रको पानेके पहले भी पत्र आया था उसके अनुसार आत्मारामजीने बम्बईके जैनियोंको लिखा था कि अपने जैनमतकी तरफसे दो आदमी वहाँ भेजना बहुत ज़रूरी है । एक संस्कृत और मागधी भाषाके जानकार **पंडित अमीचंदजी** और दूसरे **वीरचंद राघवजी बी. ए** । तब ता० २५ मार्च सन् १८९३ को बम्बई जैन एसोसियेशन आफ इन्डियाने सेठ तलकचंद माणिकचंदके सभापतित्वमें एक सभा की । उसमें सेठ माणिकचंद आदि कई दिगम्बरी भी गए थे । एसोसियेशनने भेजना निश्चय करके खर्चेके प्रबन्धके लिये एक कमेटी नियत कर दी जो अहमदाबाद, भावनगर और सूरतके महाजनोंकी सलाहसे सब बंदोबस्त करै ।

दिगम्बर जैनियोंकी सभामें विलायत जानेका विचार ।

ता० २ अप्रैलको सेठ हीराचंद नेमचंदजीके (जो सभाके कायमके उपसभापति थे ।) सभापतित्त्वमें दिगम्बर जैनियोंकी सभा हुई । उपमंत्री पंडित गोपालदासजीने पेश किया कि दिगम्बरियोंकी तरफसे एक या दो भाइयोंको चिकागो भेजना चाहिये । इस समय सेठ हीराचंदजीने बम्बईमें भी दुकान कर ली थी और अधिकतर यहीं रहते थे तथा अप्रैल १८९३से जैन बो-

चक भी निर्णयसागर प्रेस बम्बईमें छपने लगा था । पं० धन्नालाल आदि सभासदोंने आदमी भेजनेकी आवश्यक्ता बताई । सभामें एक मंदरदासजी थे । उन्होंने कहा कि ऐसी क्या जरूरत है ? यदि नहीं भेजे तो क्या नहीं चलेगा ? तब सेठ हीराचंद सभापतिने समझाया कि दिगम्बर मतका अस्तित्व बतानेको व जैनमत नास्तिक नहीं है किंतु यही सांचा आस्तिक है आदमी भेजना ही चाहिये । दूसरी आवश्यक्ता यह है कि इस भारतमें हिंसा और प्राणीवध बहुत होता है तथा यहां जो वाइसराय आदि हाकिम आते हैं सो लंडनकी पार्लियामेन्टके हुकमके अनुसार सब कानून चलाते हैं । इसमें ७०० सभासद हैं जिनमें कई मांसाहार व मद्यपानके त्यागी हैं । सन् १८३२में वहां सिर्फ ७ आदमी मद्यके त्यागी थे सो सन् १८९२ में फक्त यूनाइटेड किंगडममें ७० लाख आदमी मद्यके त्यागी हो गए । मांसाहारकी सौगन्ध करनेवाले हालमें ३५०० आदमी हैं । इतना तो जैनियोंके प्रयत्न विना हुआ है । अब जो जैनीलोग वहाँ उपदेशक भेजेंगे तो कितने ही मद्य व मांसके त्यागी बन जायगे । जैन धर्मका व्यवहार चारित्र हिंसा मेटना व मद्य मांस छोड़ना छुड़ाना है सो अपना जैनी उपदेशक पार्लियामेन्टके निष्पक्षपाती व कोमल हृदयी सभासदोंको जीव हिंसासे भारतमें हिंसा बंद होनेका कानून होजायगा । यह वात असाध्य नहीं है पर कष्ट साध्य है । तब मंदरदासजीने कहा कि **रसोई पानीका आगबोटमें कैसे बनेगा** इसपर सेठ **गुरुमुखरायजी**ने कहा कि **श्रीपाल राजा** धवलसेठके साथ **जहाजमें** बैठकर कई महिने तक समुद्रमें फिरा था सो वहां रसोई पानी सब कुछ उसका

होता था कि नहीं ? **जहाजमें स्पर्शास्पर्शका कुछ दोष नहीं है ।**

इसके पीछे गोपालदासजीने कहा कि श्रीपालराजाका प्रमाण भी है और अभी उस वक्तमें बहुतसे जैनी भाई बम्बईसे कोडियाल बंदर और मूलबिद्रीसे बम्बईको आगबोटमें बैठके आते हैं सो वहां रसोई पानी बनाके खाते हैं । गये साल सेठ मूलचन्दजी और दूसरे

पं० गोपालदासजी-का विचार समुद्रयात्रामें ।

२०० आदमी जैनबिद्री मूलबिद्रीकी यात्राको गये थे उनके साथ मैं भी था और **पंडित लक्ष्मीचंदजी** लश्करवाले भी थे सो हम सब मंगलोर बंदरसे आगबोटमें बैठके गोवा बंदरको दो दिनमें आए थे । आगबोटमें अपना अलग चुला बनाके रसोई हुई थी, सो सेठ **मूलचंदजी** और मैं और दूसरे भी कितनेक जैनी भाईयोंने उस आगबोटमें बैठके रसोई जीमना, पानी पीना सब किया था तो अमेरिका और इंग्लैंड जाते वक्त आगबोटमें अपना अलग चूल्हा बनाके और अलग पानी रखके शुद्धता पूर्वक रसोई करके जीम लेगा तो धर्मकी अथवा जातिकी भी कुछ हरकत दीखती नहीं है सो सब भाइयोंके दिलमें पसन्द होवे तो नीचे लिखी हुई चार बातोंकी अनुकूलता मिलनेसे आदमी भेजदेना ऐसा इस सभाकी अभिप्राय बड़े २ शहरको भेजदेना ।

चार बातोंकी तफसील—

१—अंग्रेजी और संस्कृत पढ़ा हुआ एक जैनी मिले तो बहुत उत्तम, नहीं मिले तो एक संस्कृतका विद्वान और एक इंग्रेजीका
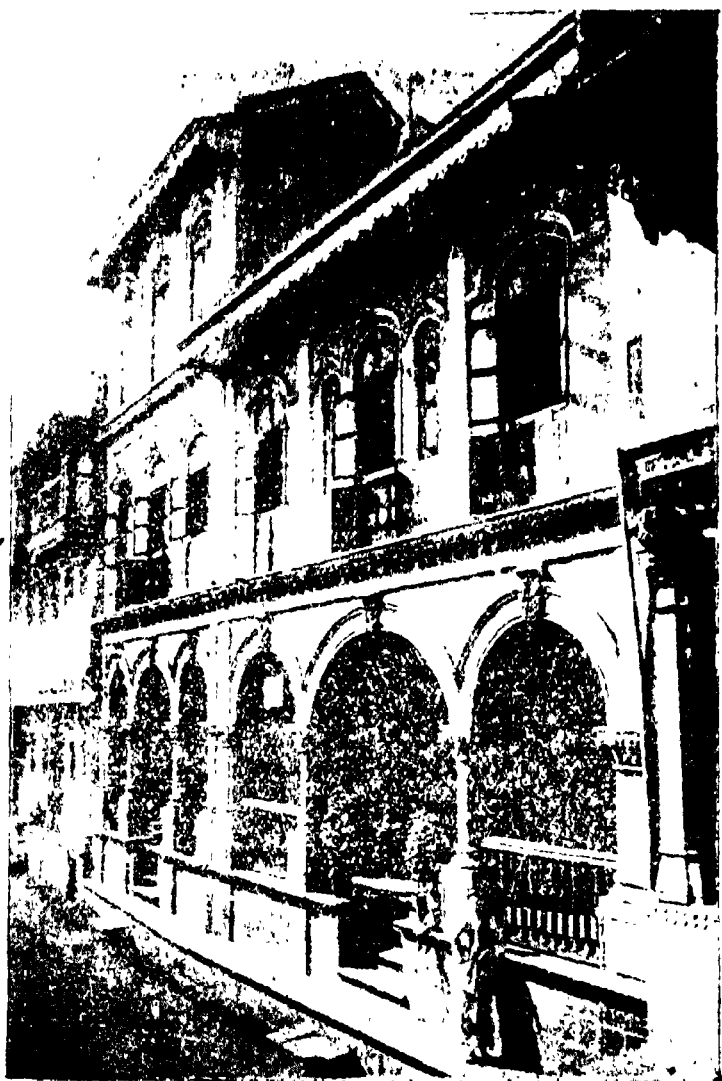
चंदाबाड़ी धर्मशाला सूरत.

(देखो पृष्ठ २३६) J. V. P. Surat.

विद्वान ऐसे दो और तीसरा एक नौकर ऐसे तीन आदमीका संयोग मिलाना।

२-उनके खर्चके वास्ते बन्दोबस्त होना।

३-भोजनकी शुद्धता होनी।

४-जातिकी आज्ञा होनी।

सबने उस अभिप्रायमें हां प्रगट की तब गोपालदासजीने जानेके योग्य विद्वानोंके नाम कहे-पंडित पन्नालाल झरगदलाल, भूरामलजी जेपुर बी. ए., भाई मेहरचंदजी सुनपत। बाद सभा विसर्जन हुई। (जै० बो० अप्रैल १८९३) ये चिट्ठियाँ भेजी गई जिनपर **ब्रह्मसूरी शास्त्री**ने जो अभिप्राय भेजा उसका सारांश यह है:-

चिकागो जानेमें यदि मकारत्रय, जीवदया, तथा पंच नमस्कार रूप मूल गृहस्थधर्मका लोप नहीं होवे तो ब्रह्मसूरि शास्त्रीका कुछ हानि नहीं है। इस बाबतमें प्रमादवशासे समुद्रयात्रामें विचार। अतीचार लगै तोभी उसको प्रायश्चित कहा है। प्रायश्चित्त ग्रंथ अकलंक स्वामीकृत, इंद्र-नंदि आचार्यकृत, श्री नंदिगुरु प्रायश्चित्त और भी दोय तीन ग्रंथ हैं उनमें मकारत्रय मूलगुणको प्रायश्चित्त कहा है। **विदेशगमनको और समुद्रयान करनेके वास्ते कहीं भी प्रायश्चित नहीं कहा है।** महापुराणमें ऐसा लिखा है कि जिस २ उपायसे मार्ग प्रभावना होय वह उपाय मत प्रकाशके वास्ते अवश्य करना। **समंतभद्र स्वामी**ने मत प्रभावनाके वास्ते अनेक देशोंमें संचार किया था। सो चिकागो अमेरिका खंडमें जाकरके अपने जैनधर्मका प्रसंग करके स्थापन करना बहुत उत्तम है। इसमें शास्त्रको तथा

आचारको विरोध नहीं है ऐसा हमको दिखता है। दर्शनसे भ्रष्ट हुआ सो भ्रष्ट होता है । चारित्रसे भ्रष्ट हुआ सो पुनः स्थितिकरण हो सकता है इसके वास्ते **समयभूषणके श्लोकः**—

मनः शुद्धं भवेद्यस्य स शुद्ध इतिपठ्यते ।
विना तेन कृतस्नानोप्ययं नैव विशुद्ध्यति ॥ १ ॥
कार्याकार्यविचारज्ञः सर्वभाषाविशारदः ।
सर्वसास्त्रार्थवित्साधुर्धर्मस्य प्रतिपादकः ॥ २ ॥
सगुणो निर्गुणोवापि श्रावको मन्यते सदा ।
नावज्ञा क्रियते तस्य तन्मूला धर्मवर्तिना ॥ ३ ॥
येन येन हि कृत्येन धर्मवृद्धिः प्रजायते ।
तत्तत्कुर्वन् यतिर्मान्यो भवेदत्र न संशयः ॥ ४ ॥
सम्यग्दर्शनशुद्धाना तपसाल्पेन जायते ।
कर्मक्षयस्ततो नूनं तदेव प्रतिपालयेत् ॥ ५ ॥
सम्यक्त्मूलं सर्वं स्याज्ज्ञानं चारित्रमेव वा ।
विना तेनापरं नैव कुर्यातां मोक्षसाधनं ॥ ६ ॥

दिगम्बर जैन समाज इस तरह सम्मतिके वादविवाद हो में पड़ गई और चिकागो भेजनेका कुछ प्रबन्ध नहीं किया। उधर श्वेताम्बर-समाजने सब प्रबन्ध करके **श्रीयुत वीरचंद राघवजी बी. ए** को ताः ४ अगस्त १८९३ के दिन जहाज़में बिठाके चिकागो भेज दिया। आत्मारामजी महाराजने एक निबंध हिन्दीमें तयार करके वीरचंदजीको दे दिया कि इसका तर्जुमा करके सभामें सुना देवें ।

वीरचंद राघवजीका चिकागो गमन।

सेट माणिकचंदजीको बड़ा भारी उत्साह था कि कोई दिग-

म्बरी जैन विद्वान चिकागो जावें और सत्य जैनधर्मका सिद्धान्त प्रतिपादन करें । पर उद्योग करनेपर भी न कोई जानेवाला वीर ही तय्यार हुआ और न समाजने रुपयेका प्रबन्ध किया, इससे सेठजीको बहुत हताश होना पड़ा ।

चौगले बेलगांवको छात्रवृत्ति ।

इंग्रेजी विद्याकी जैनियोंमें उन्नति हो और साथमें व जैनधर्मको भी जानें इस प्रकारकी उत्तेजना देनेमें सेठ माणिकचंद और सेठ हीराचंद नेमचंदका पूरा ध्यान रहता था । सेठ हीराचंदके बम्बई रहनेसे माणिकचंदको धार्मिक व परोपकारके कार्योंमें अच्छी र सम्मति मिलने लगी और असमर्थ जैन परदेशी छात्रोंको मासिक छात्र वृत्तियाँ देना प्रारंभ की ।

पाठकगण जानते ही होंगे कि दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाके मुख्य संचालक व दक्षिणके जैनियोंमें जागृति फैलाने वाले **श्रीयुत अण्णाप्पा फडयाप्पा चौगले बी. ए. एल एल. बी. वकील** बेलगांव हैं। यह पूना दक्षिण कालेजमें पहला वर्ष बी. ए. पास कर चुके थे । इनको सर्कारसे १९) मासिक छात्रवृत्ति मिलती थी, पर इनके अधिक बीमार होनेके कारण वह मिलना बंद हो गई थी, स्थिति गरीब थी, विना मदद आगे पढ़ना बंद होता था । सेठ माणिकचंदजीके पास इनका पत्र आनेसे एक वर्षके लिये आपने और हीराचंदजीने ६) छः छः रु. मासिक छात्रवृत्ति देनी चालू कर दी और धर्मग्रंथ देखनेकी प्रेरणा की । इस सहायताका फल यह हुआ कि कुछ दिनों बाद इसने संस्कृतमें एक जिनस्तुति बनाके सेठोंके पास भेजी जिसका नाम **तापापहार स्तोत्र** है सो यहां दिया जाता है—

श्रीतापापहारस्तोत्रम् ।

स्वात्मस्थितं तं परमात्मसंज्ञं सर्वं गतं कालकलामतीतम् ।
विश्वेश्वरं विश्वविकाशहेतुं वंदे विभुं वंद्यमगम्यतत्वम् ॥ १ ॥
तापापहारे कुशलो जनानां मदापहारेऽपि मदाश्रितानाम् ।
त्रिलोकनिःश्रेयसदत्तदृष्टिस्तापात्स नः पातु जिनो वरेण्यः ॥ २ ॥
इंद्रादिदेवा भुवनैकनाथं स्तोतुं प्रवृत्ता अपि यं न शक्ताः ।
तस्यानुरूपं स्तवनं विधातुं शक्तः कथं स्यामहमल्पबुद्धिः ॥ ३ ॥
रत्नाकरस्थान् पृथुरत्नराशीन्व्योम्नि स्थितान्तारकसंचयान्वा ।
गणान् गुणानां भवतश्च देव व्यजोगणन् के मनुजास्त्रिलोक्याम् ॥ ४ ॥
तथाऽपि विश्वेश यथाक्षमं त्वां स्तवीमि भक्त्या भवतापशान्त्यै ।
अल्पश्रुतोऽस्मीति न वीतराग तन्मय्युपेक्षा भवता विधेया ॥ ५ ॥
आस्तामचेयो जिन संस्तवस्ते नामापि ते तापमपाकरोति ।
दूरे वसत्येव शशी तथापि प्रीणाति खिन्नं समुखोऽस्य रश्मिः ॥ ६ ॥
दुर्व्याधिसर्पा भवकाननस्थाः सहस्रशः सन्ति निसर्गदुष्टाः ।
तान्वारयेदस्तसमस्तशंको मर्त्योऽप्ययमाशास्त्वयि बद्धभक्तिः ॥ ७ ॥
कुष्ठाभिभूतश्च्युतजीवनेच्छो यष्टिं विना संचरितुं त्वशक्तः ।
त्वत्पादपद्मद्वयदत्तमौलिः सद्यो भवेत्कांचनतुल्यकान्तिः ॥ ८ ॥
भो भो भवाब्धौ मनुजाः पतन्तो श्रयध्वमेतां जिनभक्तिनौकाम् ।
सुखं तयात्येष्यथ यूयमेनं भीमं विपन्नक्रकुलाकुलोर्मिम् ॥९॥
किं भूषणैः कुंडलकंकणाद्यैर्मनोज्ञवेषैश्च विनाशशीलैः ।
यः स्थैर्ययुक्तां जिनभक्तिमालां धत्ते स धीरो गतबंधनः स्यात् ॥१०॥
त्वद्भक्तिमालावृतदेहबंधं बाह्यः कथं मामरिरुच्छिनत्ति ।
मच्चित्तवासे त्वयि संहतारावंतर्द्विषामप्यवसानमेव ॥ ११ ॥

गंगेति गंगेति जना वदन्ति का वाऽस्ति गंगा तव भक्तितोऽन्या ।
तस्यां कथं भक्तिसुरापगायां मग्नस्य मे क्लेशततिर्न गच्छेत् ॥ १२ ॥
तापापहाराय महौषधानि तंत्राणि मंत्राणि च योजयन्ति ।
जानन्ति ये नैव तव प्रभावं तंत्रादिमंत्रादिगुरुस्त्वमेव ॥ १३ ॥
ध्यानाश्रुतानां मुनिपुंगवानां प्रकाशयंस्त्वं गिरिगह्वराणि ।
त्रैलोक्यदीपोऽसि न वायुवश्यो विकीर्णनीगंधगभस्तिजालः ॥ १४ ॥
संयम्य वृत्तिं सकलेंद्रियाणामन्विष्य च त्वां हृदये मुनींद्राः ।
त्वामेव लब्ध्वा गालितात्मसंज्ञा जयन्ति जन्मोत्तमोग्रदुःखम् ॥ १५ ॥
चित्रं प्रभो यत्सुरसुंदरीणां लीलाकटाक्षैश्चतुरैर्मनस्ते ।
नाऽभूद्विलोलं त्वथवा सुमेरोः शृंगं चलं जातु बलात्त वायोः ॥१६॥
किमत्र चित्रं यदि नाम कामः प्रहर्तुकामः सपदि प्रणष्टः ।
न दह्यते दीपविनाशनार्थं समुत्पतन् किं सहसा पतंगः ॥ १७ ॥
जिनेंद्रचंद्रेण विनातिघोरं जगत्तमो नैव विनाशमेति ।
उच्चारमात्रेण यदीयनाम्नो घोराणि दुःखानि जना जयन्ति ॥ १८ ॥
कृत्स्नैरवेद्यो जिन विश्ववेत्ता सर्वैरदृश्योऽप्यसि विश्वदृश्वा ।
गुरुर्गुरूणामगुरुर्गुरो सन्ननीश्वरस्त्वं जगदीश्वरोऽसि ॥ १९ ॥
अदृश्यमप्यर्थितमर्थयुक्तैरचिंत्यमर्हन्ननुचिंतये त्वाम् ।
आवंद्यमानं सुरवृंदवंद्यं वंदे जिनेंद्रं जितरागमोहम् ॥ २० ॥
विश्वेश्वरं मन्मथधूमकेतुं योगीश्वरं नित्यमसंख्यमेकम् ।
गुरुं लघुं स्थूलमथापि सूक्ष्मं त्वां सर्वरूपं प्रवदन्ति संतः ॥ २१ ॥
अशोकभामंडलपुष्पवृष्टिश्वेतातपत्रत्रयचामरौघाः ।
दिव्यध्वनिश्चासनदुंदुभी च प्रदर्शयन्त्येव तवेश्वरत्वम् ॥ २२ ॥
समीहितार्थप्रतिपत्तिहेतुं त्वां ज्ञानराशिं विमलं वरेण्यम् ।

शक्राधिदेवं सदयं शरण्यं शक्रादिदेवाः शरणं व्रजन्ति ॥ २३

यथोचितं भक्तिविराजमानैर्यक्षैरसंख्यैरनुगम्यमानः ।
त्वत्पापशाखानलदिव्यदीप्त्या विभ्राजमानं कुरुते किरीटम् ॥ २४ ॥

यमोऽपि मत्तं महिषं प्ररूढः पत्नीसमेतो भृतधर्मदंडः ।
बद्धांजलिस्तिष्ठति देव नम्रः क्रूरः प्रकृत्याऽपि हि पूजयंस्त्वाम् ॥२५॥

प्रासाश्च शेषाः प्रतिहारभूमिं नाथा दिशामादरपालिताज्ञाः ।
कल्पद्रुपुष्पाणि तवांध्रियुग्मे किरन्ति भक्तिप्रणतोत्तमांगाः ॥ २६ ॥

गंभीरमंद्रध्वनिपूरिताशाः प्रशस्तवाचो धृतदिव्यवीणाः ।
गंधर्वपुंगास्तव कीर्तिमच्छां गायन्त्यहो भक्तिविशुद्धदेहाः ॥ २७ ॥

ध्यायन्ति ये पूज्यमनन्तवीर्यं नाथं त्रिसंध्यं करुणापयोधिम् ।
असंशयं ते क्षतकर्मबंधाः कल्याणभाजो मनुजा भवन्ति ॥ २८ ॥

तस्मात्प्रमादानवधूय जन्तोः संरक्षणार्थं भवदुःखसंघात् ।
लोकस्य निष्कारणबंधुमेतं श्रीशान्तिनाथं भज शान्तिहेतुम् ॥ २९ ॥

स्तोत्रैर्मंत्रैः कठिनतपसा चाथ भक्त्याप्रणत्या
यः स्मृत्या स विशदहृदयः सेवते देवदेवम् ।
पुण्यात्मानं कथमिव नतं संश्रयंते नृवर्यम्
लक्ष्मीर्विद्याऽभिमतफलदातापशान्तिश्च मुक्तिः ॥ ३० ॥

या चौगुलेत्युपाह्वेन अण्णप्पा नामधारिणा ॥
जिनभक्त्यावनम्रेण वेणुग्रामनिवासिना ॥
स्तुतिस्तापापहाराख्या जिनस्य रचिता तु सा ।
तनोतु विदुषो हर्षं पिकस्येवाम्रमंजरी ॥ युग्मम् ॥

इति सर्वं शुभम् ।

" करकृतमपराधं क्षंतुमर्हंतु संतः ॥ "

इति महाराष्ट्रदेशे पुण्यपत्तनवर्तिनि दक्षिणविद्यालय आंगलविद्यादि संस्कृतकाव्यालंकारव्याकरणाद्यधीयानेन वेणुग्रामनिवासिना चौगुलेत्युपनाम्ना अण्णाप्पाभिधानेन विरचितं श्रीतापापहारस्तोत्रम्।

बाबू अजितप्रसादजी का विलायत जानेके लिये निवेदन।

सेठ माणिकचंदजीकी इंग्रेजी पढ़नेवालोंको छात्रवृत्ति दिये जानेकी खबर दूर दूर फैल गई थी। लखनऊ निवासी बाबू **अजितप्रसाद एम. ए.** एल. एल बी. वकील, सम्पादक, इंग्रेजी जैन 'गजट'से हमारे पाठक अच्छी तरह परिचित हैं। आपने सेठजीको पत्र दिया कि मैं सिविल सर्विस पास करनेके लिये विलायत जाना चाहता हूं। मैंने इसी वर्ष (सन् १८९३) बी० ए० पास किया है, उम्र १९ की है। हररोज़ स्वाध्याय करता हूं। दर्शन भी करने जाता रहता हूं। मुझे विलायत जानेको रुपया कर्ज चाहिये। उस समय इनके पिता कमसरियटमें क्लर्क थे। इतनी शक्ति नहीं थी जो द्रव्यका प्रबन्ध कर सकें। दि० जैन समाजमें विलायत भेजनेमें भिन्न २ सम्मति होनेके कारण सेठजीने स्वयं मदद नहीं दी किन्तु जैन बोधक अगस्त १८९३में इनका पत्र प्रगट कराकर अन्योंको प्रेरणा करवा दी कि सहायता करें, पर इसका कोई भी प्रबन्ध नहीं हुआ। वास्तवमें बहुतसे छात्र धनकी मददके विना अपनी इच्छानुसार विद्या सम्पादन करनेसे वञ्चित रह जाते हैं।

सेठ माणिकचंदजीका महासभा मथुरामें प्रथम गमन ।

भारतवर्षीय दि० जैन महासभा नामकी सभा **पंडित चुन्नीलाल** मुरादाबाद व अन्य परोपकारियोंके उद्योगसे सन् १८९१में व संवत् १९५७में मथुरा जंबूस्वामीजीके मेले पर संगठित हुई थी इसके सभापति श्रीमन् सेठ **लछमनदासजी** सी० एम० आई, मथुरा व उपसभापति रायबहादुर सेठ मूलचंदजी सोनी, अजमेर व लाला उग्रसेनजी सहारनपुरवाले आदि थे। संवत १९५०के वार्षिक अधिवेशनके लिये मुम्बई स्थानीय सभाने २१ प्रतिनिधि चुने थे पर मेलेके समय जो सदा कार्तिक वदी २से ८ तक होता है निम्नलिखित चार महाशय पधारे ।

(१) सेठ माणिकचंदजी (२) सेठ गुरुमुखरायजी (३) सेठ हीराचंद नेमचंदजी (४) और पंडित गोपालदासजी बरैया । इस वर्ष मेलेमें १०, १५ हजार आदमियोंकी भीड़ थी। मथुराके चौरासी स्थानपर शहरसे २ मील एक बड़ा भारी जिन मंदिर है। यहां अंतिम केवली **श्री जंबूस्वामीजी** महाराजके मोक्ष जानेके चरण चिन्ह स्थापित हैं तथा श्रीअजितनाथजीकी बहुत विशाल वीतरागता प्रदर्शक मूर्ति है। इस वर्ष आगरा, अलीगढ़, हाथरस आदि १३ नगरोंसे श्रीजीकी वेदियां जलेब सहित आई थीं। कार्तिक वदी ७के दिन सेठ लक्ष्मणदासजीके डेरेपर नियमावलीका विचार हुआ। रात्रिको मंदिरजीमें **शास्त्र छपने न छपनेकी चर्चा** चल पड़ी थी। सेठ हीराचंद नेमचंदने पुस्तक छपनेकी **पुष्टि** व

पंडित प्यारेलाल, छेदालालजीने विरोधमें व्याख्यान दिये थे तथा लोगोंको प्रेरित किया था कि कोई मुद्रित पुस्तक न खरीदे।

रायबहादुर सेठ मूलचन्दजीका उपदेश।

अष्टमीके दिन रायबहादुर सेठ मूलचंदजीके डेरेमें सर्व प्रतिनिधि जमा हुए। मूलचंदजीने कहा कि एकताके अभावसे सभा होना कठिन है। विद्यावृद्धिके लिये ग्राम २ में पाठशाला खोलो, कालेजके लिये रुपया आना कठिन है। इससे महासभा व कालेजकी बातें सब छोड़ो। मद्यमांस छुड़ानेका उपदेश दो। ऐसे बड़े मेलेमें हजारों आदमी आते हैं, पंडित लोगोंकी चर्चा वे सुन नहीं सक्ते। ऐसे मेलेमें सब लोग समझें ऐसा साधारण धर्मका उपदेश खड़े होकर देना चाहिये। रात्रिको शास्त्रसभाके पीछे सेठ मूलचंदजीने **खड़े होकर** धर्मके विषयमें व्याख्यान दिया तथा सेठ लछमणदासके डेरेपर नियमावली पर विचार हुआ।

खड़े होकर उपदेश देनेमें लाला रूपचंदजीकी राय।

उस समय लाला रूपचंदजी (सहारनपुर)ने भी कहा कि यहां तो कुछ सुननेको मिलता नहीं सो कोई ऐसा उपाय सोचो कि जिससे मेलेके सब लोग शास्त्रजीको सुन सकें। सबको सुनानेके वास्ते खड़ा रहके बांचे तौभी कुछ हर्ज नहीं हैं परंतु सबको उपदेशका लाभ मिलना चाहिये। अंतमें नियमावली पसंद हो गई। दूसरे दिन रातको सभा हुई। नियमावली स्वीकृत हुई, कार्याध्यक्ष नियत हुये। सभाके मंत्री पंडित प्यारेलालजी अलीगढ़, मूलचंद वकील मथुरा, व भैरोप्रसादजी इलाहाबाद नियत हुए।

सेठ हीराचंद और सेठ माणिकचंदजीकी वार्तालाप।

अपने डेरेपर आकर सेठ हीराचंद और सेठ माणिकचंदजी बातें करने लगे कि अभी जैनियोंमें सभाका शौक बहुत कम है तथा अज्ञानता बहुत है। इसका कारण यही है कि हमारे भाई शास्त्र स्वाध्याय नहीं करते। इसके न होनेमें एक अंतराय सुलभतासे ग्रंथोंको नहीं प्राप्त करना है। यदि ग्रंथ मुद्रित हो जावें तो हरएक भाई इच्छानुसार लेकर पढ़ सक्ता है। देखो अपने मंदिरोंमें प्रायः पोथियोंमें भक्तामरजी, सूत्रजी, व पूजा पाठ अशुद्ध लिखे मिलते हैं। लोग अशुद्ध ही पाठकर जाते हैं। अर्थ पर तो कुछ ध्यान देते नहीं, पर छापनेमें यह फायदा है कि एक प्रति शुद्ध करली गई तो उससे हजारों प्रति शुद्ध तय्यार हो सक्ती हैं, देखो मैं आपको (पुस्तक हाथमें देकर) यह **भक्तामर-स्तोत्र** दिखाता हूं इसमें गुजराती भाषामें अर्थ व पद्य देकर आमोद निवासी **सेठ हरजीवन रायचंद शाहने** छपवाया है। इससे हमारे गुजराती भाई स्तोत्रका शुद्ध पाठ भी कर सकेंगे व अर्थका भी बोध होगा कितना बड़ा लाभ है। गुजराती अर्थ सहित यह पहली ही पुस्तक है जो गुजरातके दिगम्बर जैनीने छपवाई है। सेठ माणिकचंदने उस पुस्तकको इधर उधर पढ़ा। बड़े ही प्रसन्न हुए और उसका पता ठिकाना अपनी नोटबुकमें लिख लिया। आगे चलके सेठ हीराचंदजीने कहा कि अब ग्रंथोंका मुद्रण बंद नहीं हो सक्ता। आप जानते ही हैं कि मैंने **क्रियाकोश, नेमदूत काव्य, रत्नकरंड श्रावकाचार, संस्कृत पूजापाठ, भजन-सद्बोध मालिका** आदि कई ग्रंथ प्रसिद्ध कर दिये हैं

व अपने पत्रद्वारा भी ग्रंथोंका भाव प्रगट कर रहा हूँ। सोनपतवाले पंडित मथुरादासजीके भाई मेहरचंदजीने **सज्जनचित्तवल्लभ** टीका सहित व नाना रामचंद्र नाग जैन ब्राह्मणने निर्वाणकांड, रूपचंद कृत पंच मंगल व त्यागी महाचंद्रकृत समायिक पाठ भाषा छपवाए हैं तथा मदरासमें आपर्ट साहबने **शाकटायन** व्याकरण छपाया है जो १०)में मिलता है तथा बड़ौदाके महाराजने समाधिशतक व नीतिवाक्यामृत, जैन ग्रंथोंको गुजराती व मराठी भाषांतर कराकर छपानेका विचार किया है। षड्दर्शन समुच्चय, द्व्याश्रय महाकाव्य, बुद्धिसागर आदि जैन काव्योंके प्रकाशके लिये बेंगलोरके मैसुर आर्चेलडिकल आफिसमें काम करनेवाले पं० पद्मराजराणाने **काव्यांबुधि प्रकाश** मासिक पुस्तक निकालना प्रारंभ किया है।

सेट माणिकचंदजीने कहा—पंडित प्यारेलालजी कितना ही मना करें परंतु मुद्रित ग्रंथोंका प्रचार अब बन्द नहीं हो सकता और ऐसा विना हुए इस कालमें ज्ञानकी वृद्धि भी नहीं हो सक्ती। इतना वार्तालाप करके दोनों निद्रित हो गए।

बम्बई लौटकर सेट माणिकचंद आनन्दसे अपने कार्य्य व्यवहारमें लीन हो गए। यह अपने बंगलेमें रोज प्रातःकाल अनेक समाचार पत्रोंको पढ़ा करते थे। एक दिन एक अखबारमें वीरचंद राघवजीके पत्रकी नकल वांची जो उन्होंने जैन एसोसियेशन आफ इंडियाको भेजी थी और जिसमें चिकागो व अन्यत्र जैनधर्मके व्याख्यानोंसे क्या २ लाभ हुआ सो लिखा था। यह पत्र जैनबोधक अंक १०९ माह सप्टेम्बर १८९४ में मुद्रित है जिसको उपयोगी जानकर हम उसकी पूरी नकल नीचे प्रगट करते हैं:—

नकल पत्र वीरचंद राघवजी ।

"में अगाउ बे पत्र सवीस्तर लख्या पछी हुं फरीथी सविस्तर लखी शक्यो नथी तेनुं कारण अहिंनी स्थिति संपूर्ण समज्या पछी जाणवामां आवशे. आ देशमां भाषणो आपवानी पण ऋतु होय छे. गरमीना दिवसोमां भाग्येज भाषणो आपवामां आवे छे. अहिं शिशाळाओमां तथा पानखर ऋतुमां बहु भाषणो आपवामां आवे छे. हुं अहीं सप्टेंबरनी शरूआतमां आव्यो ते वखते पानखर ऋतु शरू थई हती, जुदा जुदा धर्मो विषे वादविवाद चलाववा माटे करवामां आवेला मेलावडानी बेठक पण ए वखते शरू थई गई हती. अने ते सप्टेंबरनी आखरे खलास थई गई हती. हिंदुस्तानना धर्म संबंधी ए मेलावडामां सारां भाषणो थवाथी लोकोनी रुचि ए धर्मो उपर वधारे थवा लागी हती. मेलावडामां जुदा जुदा धर्मो संबंधी एटलां बधां भाषणो थवानां हतां के, दरेक प्रतीनिधिने फक्त त्रीस मिनीट बोलवा देवानी परवानगी मळी हती. तेने लीधे ब्राह्मण धर्म, बोद्धधर्म तथा जैनधर्म वच्चे शो फेर छे ते लोकोने यथास्थिति मालम पडयुं न हतुं. लोकोनी मात्र एटली खात्री थई हती के, हिंदुस्तानना धर्मो ख्रीस्ती धर्म करतां वधारे उत्तम छे. आटली असर लोकोनां मन उपर थया पछी एकदम हिंदुस्तान पाछा चालया आववुं ए मने ठीक लाग्युं नहीं. जैनधर्म ए बौद्धधर्म तथा ब्राह्मण धर्म करतां जुदो छे एम समजाववानी मारी फरज हती. अत्यार सुधी अहिंयां केटलाक लोको एम समजता हता के, हिंदुस्तानना लोको तमाम बौद्धधर्मना छे. घणा लोको वळी एम धारता हता के, हिंदुस्तानमां तमाम लोको ब्राह्मण धर्मना छे. जैनधर्म ए शुं तेने

विषे लोकोने जरा पण खबर नहीं हती. आ मेळावडो थयो त्यारे लोकोने मालम पड्यु के "जैन" ए नामनो पण एक धर्म छे. **सर एडवीन आरनोल्ड** नामना एक अंग्रेज गृहस्थे "**लाइट ओफ एशिया**" नामनुं पुस्तक (जेमां गौतम बुधनुं जन्मचरित्र कवीता रूपी आपेलु छे) प्रसिद्ध कर्यु हतुं अने ते आ देशमां बहु फलाव्युं हतुं, तेने लीधे बौद्धधर्म धर्म जगाए जगाए प्रसिद्ध थयो हतो परंतु जैन धर्म संबंधी लोकोपयोगी पुस्तक अंग्रेजी भाषामां छपायलुं नहीं होवाथी ए धर्म संबंधी लोकोने कशी माहीती न हती. आवां कारणोने लीधे मारा मनमां एवो विचार थयो के हुं आ देशमां जैन धर्मने माटे आव्यो अने ए धर्मने माटे माराथी बने तटली उन्नति न थाय त्यां सुधी मारुं अहीं आववुं नकामुं हतुं. आ देशमां लोकोनी ख्रीस्ती धर्म उपरथी श्रद्धा ओछी थती जाय छे त्यारे एवे प्रसंगे मारी फरज छे के, जैन धर्म संबंधी ज्ञान आ देशमां मारे फलाववुं जोइए. मेळावडो खलास थयो एटले **चिकागो शहेरमां जुदी जुदी जगाए भाषणो** आपवानो मारो विचार थयो परंतु ऋतु घणी थंडी हती तथा खुल्ली जगामां भाषणो आपी शकाय नहिं तेवुं होवाथी ते माटे खास बंदोबस्त करवा अहिंना केटलाक उमदा विचारना **पादरीओने** मळ्यो अने तेओए पोताना देवळोमां **मने भाषण करवानी परवानगी** आपी. चिकागोना लोकोने जाहेर रीते मालूम पडयूं के मेळावडो पुरो थया पछी हुं अहीं थोडो वखत रहेवानो छुं तेथी घणा लोको हुं जे मकानमां रहुं छुं त्यां मने मळवा आववा लाग्या. जैन धर्म संबंधी कर्मनुं स्वरूप केवुं छे ते तथा स्वर्ग, नर्क, मोक्ष, देवलोक, आ-

त्मा, पुण्य, पाप वगेरे घणा घणा विषयो उपर मारे ए लोको साथे वातचीत थई. केटलाक लोकोए मने कह्यु के जैन प्रतिनिधि तरीके मारी फरज छे के हिंदुस्ताननी जुदी जुदी फिलसुफी अर्थात षड् दर्शननुं स्वरूप मारे समजाववुं जोईए अने साबित करवुं जोईए के जैन दर्शन सघळा दर्शनोमां उत्तम छे. ए उपरथी जे मकानोमां हुं रहुं छुं त्यां एक वर्ग उघाडवामां आव्यो, तेमां आशरे ५० पुरुषो तथा स्त्रीओ **जैन धर्म अने तेनां तत्व** शुं छे ते संबंधी ज्ञान मेळववा माटे आववा लाग्या. ता. १५ मी मे सुधी में ए प्रमाणे कर्युं. हुं चिकागोना जे भागमां रहुं छुं तेने एंगलवुड कहे छे. त्यांथी आशरे दश माईल उपर बीजुं एक वेस्ट चिकागो नामनुं परुं छे. त्यांना लोकोए पण मने कह्यु के तेओ आटले दूर मारां भाषणो सांभळवा आवी शके नहि तेथी मारे ते जगोए जई भाषणो आपवां जोईए. त्यां एक जाहेर मकान नही हतुं अने मकान भाडे लेवा जईए तो पार विनानो खर्च थई जाय तेथी मो. पोटमेन नामना एक उमदा दिलना ग्रहस्थना घरमां गोठवण करवामां आवी हती. त्यां पण ता. १५ मी मे सुधी में भाषणो आप्यां. एंगलवुडमां युनवर्सलीस्ट चर्च नामनुं एक ख्रीस्ती देवळ छे, त्यां पण में एक भाषण आप्युं. हाइडपार्क नामनुं एक परुं छे, त्यांना **प्रेसबीटेरियन चर्च** नामना देवळमां पण में एक **भाषण** आप्युं. ओल सोल्स चर्च नामना देवळमां छ वखत में भाषणो आप्यां हतां. हाइलपार्क नामना बीजा एक परामां में भाषणो आप्यां. कुक काउनटी नार्मल स्कूल नामनी अत्रे एक प्रख्यात शाळा छे तेना प्रोफेसरो तथा विद्यार्थीओ समक्ष में एक भाषण आप्युं हतुं. इलीनेइस प्रेस

विमेनस क्लब हजूर पण में एक भाषण आप्युं हतुं. कोरीसन चर्चमां एक मत जडन शेरमेनना घरमां त्रण अने इर्वींग क्लबमां एक भाषण आप्युं हतुं. 'धी फर्स्ट सोसायटी ओफ स्पीरिच्युआलीस्ट' नामनी एक मंडलीनी सभामां चार वखत में भाषणो आप्यां हतां. ए सिवाय बीजी घणी जगाए में जाहेर भाषणो आप्यां छे, ए जाहेर भाषण सिवाय मारी स्थापित विद्याशाळामां में वारंवार भाषणो आप्यां ते तो जुदा अने सैंकडो लोको हुं जे मकानमां रहुं छुं त्यां मळवा आवी धर्म संबंधी चर्चा करे ते पण जुदी. आवी रीते अत्यार सुधी मारो तमाम वखत भाषणो आपवामां तथा लोको साथे धर्मनी चर्चा करवामां गयो छे. एक पण दिवसनो रातना १२ वाग्या अगाऊ सुवा पाम्यो नथी. शियाळो खतम थयो छे तेथी भाषणो आपवानी ऋतु पण खतम थई छे. वसंत ऋतु चाले छे अने गरमी पडवा लागी छे तेथी लोको थंडी जगाओमां जवा लाग्या छे, एटले हवे हुं फुरसद लई शक्यो छुं. अत्यार सुधी में चिकागो तथा तेनी आसपासनां परांओमां भाषण आप्यां छे. चिकागो तथा शहेरमां पंदर लाख माणसनी वस्ती छे. तेथी त्यां आटलां भाषणो आपवानी जरुर हती, परंतु युनाईटेड स्टेट्स मोटो देश छे अने बीजां शहेरोमां पण भाषणो आपवाथी जैन धर्मनी कीर्ति जगाए जगाए फेलाशे, एवा हेतुथी हुं बीजा शहेरोमां भाषणो आपवानो इरादो राखुं छुं. सपटेम्बर मास पछी भाषणो आपवानी ऋतु शुरु थशे तेटला वखतमां जुदा जुदा विषयो उपर भाषणो आपवानुं हुं नक्की करी राखीश. ओगस्ट मासनी ता. ५-१२ तथा १९ ना रोजे न्युयार्क पासे आ-

वेळा लीलीडेळ नामना शहेरमां हजारो लोको समक्ष जैन धर्म उपर भाषणो आपवा माटे त्यांना लोकोए मने बोलाव्यो छे. ते वखते हुं त्यां जईश. हिंदुस्ताननां लोको विषे खीस्ती धर्मना मिशनरीओ आ देशमां एटला बधा खोटा विचारो दर्शावे छे के ते विचार दूर करवानी हिंदुस्तानमां जन्मेला देरेक मनुष्यनी फरज छे. दाखला तरीके आ मेळावडामां हाजर रहेला लंडनना एक मीशनरी डाक्टर पेन्टेकोस्टे हिंदुस्ताननां तमाम लोकोनी वर्तणुक उपर मोटो हुमलो कर्यो हतो. जैन धर्म संबंधी ते कशुं बोल्यो नहतो. पण सामान्य रीते हिंदुस्ताननां लोको विरूद्ध तेणे भाषण आप्युं हतुं. बीजे दिवसे जैन धर्म संबंधी भाषण आपवानी मारी वारी हती, तेथी जैन धर्मसंबंधी भाषण आपवा पहेलां में टुंकामां ए मीशनरीने सारी रीते जवाब आप्यो हतो. आ मेळावडानी मुख्य असर ए थई छे के, अहिंना लोको खीस्ती धर्म उपर श्रद्धा ओछी राखवा लाग्या छे अहिंना खीस्ती देवळमां जनारा लोको केटला छे तेनी तपास करतां मालम पडे छे के चिकागोनी वस्तीमांथी **दर बसे माणसे** फक्त एकज माणस रविवारे देवळमां जाय छे. बाकीना माणसो बीलकुल देवळमां जता नथी. परन्तु में खीस्ती देवलमां भाषणो आप्यां हतां त्यारे जे लोको कोईपण दिवसे त्यां आव्या न हता ते मारा भाषणो सांभळवा आव्या हता. जैन धर्मनी खूबीथी **मीसीस चार्ल्स हारवर्ड** नामनी एक बानु एटली बधी खुशी थई छे के तेणीए मांसाहारनो त्याग कर्यो छे. तेणीए तथा तेणीना पतिए चोथुं व्रत आदर्युं छे, अने हुं हिंदुस्तान पहोंचीश त्यार पछी हुं पसन्द करूं तेवा एक जैन छोकराने पुरेपुरी केळवणी आपवाने

श्रीमती मगनबाई और उनके पति
श्रीयुत खेमचंदजी.

(देखो पृष्ठ १४४) J. V. P. Surat.

जेटलो खर्च थाय तेटलो आपवाने तेओए कबुल कर्यु छे. अमेरिकाना केटलाक वर्तमान पत्रोए जैनधर्म विषे पोताना उत्तम मतो जाहेर कर्या छे. त्यानां ' धी आई ' नामना एक पत्रमां गई ता० २२ मी मार्चना अंकमां एवुं लखाण करवामां आव्युं छे के भाषणनो विषय जैनधर्म अने ते धर्म विषे मी० गांधी अहींना मेळावडामां पोताना लोको तरफथी भाषण करवाने आव्या हता. जुदा जुदा देशोमांथी आवेला अनेक विद्वान प्रतिनिधीओए मेळावडामां अने ते खलास थया बाद पूर्व देशना धर्मो विषे जे भाषणो कर्यां हतां, ते तमाम धर्मो करतां बुद्धिवान अमेरिकन लोकोनुं वलण जैनधर्म तरफ वधारे सारीरिते ढळ्युं छे "

यह पत्र गुजरातीमें है तोभी हमारे पाठक समझ गए होंगे। इससे यह झलकता है कि वीरचंदने अपने लगातार व्याख्यानोंका ऐसा असर जमाया कि इनके पास ५० के करीब स्त्री पुरुष जैन तत्वज्ञान सीखनेके लिये आने लगे तथा पादरियोंने गिरजाघरमें भाषण देनेकी इजाजत देदी। एक स्त्री और उसके पतिने चौथा व्रत लिया तथा ४ जैन बालक पूर्ण धर्म विद्या पढ़े इसके कुल खर्चेको उठाना मंजुर किया। दूसरे किसी दिन सेठजीने एक चिकागोकी मेमकी चिट्ठीका तर्जुमा एक पत्रमें पढ़ा जिसमें इंग्रेजी भी छपा था। वह पत्र यह है–

"To the Editor of the Pioneer."

The Jain Community was very ably represented by Mr. Veerchand Raghaojee Gandhee B. A. of Bombay, who made an exceedingly

favourable impression and continues to do so in the lecture courses which he is still delivering in verious parts of the country.

Chicago 30, January. Merwin Marie Snell.

भावार्थ ।

सम्पादक " पायोनियर "

वीरचंद गांधी बी. ए. बम्बईने जैन जातिकी तरफसे बहुत योग्यता दिखाई, बहुत बड़ा असर पैदा किया और अब जो देशके भिन्न २ भागोंमें व्याख्यान दे रहे हैं उससे असर बढ़ता जाता है–

चिकागो, ३० जनवरी । द: मरविन मेरी स्नेल

(जैन बोधक जून १८९४)

सेठ हरजीवन रायचन्दसे परिचय ।

एक दिन सेठ माणिकचंदको महासभाके अधिवेशनकी याद पड़ गई । शास्त्रोंके छपने न छपनेकी चर्चा दिलमें आ गई । सेठजीके दिलमें सेठ हीराचंदजीका बहुत बड़ा मान था। प्रेम भी खूब था। हरएक बातमें इनकी सलाह लेते थे । धार्मिक मित्र ही मानते थे इससे सेठ हीराचंदके समान सेठ माणिकचंदजी भी ग्रंथ मुद्रणके पक्षपाती थे । इनको पूर्ण विश्वास था कि विना मुद्रित ग्रंथोंके स्वाध्यायका प्रचार नहीं हो सक्ता। इतने हीमें इन्होंने उस भक्तामरजीको याद किया जो गुजराती अर्थ सहित छपा हुआ मथुरामें देखा था ।

पता इनकी नोटबुकमें लिखा ही था। आपने श्री भक्तामरजीकी बहुतसी प्रतियां मंगाकर अपने घरमें व दूसरे पाठ करनेवालोंको बाँटनेके लिये सेठजीने प्रथम ही एक पत्र सेठ हरजीवन रायचंदको आमोद लिखा जिन्होंने अनुवाद करके प्रकाशित किया था। यह नरसिंहपुरा जातिके एक सुशिक्षित गृहस्थ हैं, जैन शास्त्रोंके मननका अभ्यास है, तत्त्वको समझते हैं, परोपकारी हैं, गुजरातमें माननीय हैं। सेठजीका पत्र पाते ही सेठ हरजीवन रायचंदको बहुत हर्ष हुआ। क्योंकि यह तो इनके कर्ण गोचर हो ही चुका था कि बम्बईमें सेठ माणिकचंद जौहरी एक बड़ा ही धर्मात्मा, परोपकारी व मिलनसार सेठ है। इनके प्रतापसे बहुतसे गुजराती बंधुओंने बम्बईमें धन्दा प्राप्त किया है। सेठ हरजीवन रायचंदने पुस्तकें भेजीं व उत्तरमें एक लम्बा चौड़ा पत्र लिखकर गुजरात देशके अज्ञानकी दशा बतलाई। यह पत्र बांचकर सेठजीको बहुत ही सन्तोष हुआ। सेठजी जैसे पत्थर पहचाननेमें जौहरी थे वैसे मनुष्यकी भी पहचान करनेवाले सच्चे जौहरी थे। ऐसे विद्याप्रेमी, परोपकारी पुरुषोंके लाभको महान लाभ समझते थे। इस पत्रका उत्तर सेठजीने दिया और उपदेश किया कि वे कुरीतियां बन्द करनेमें, व स्वाध्यायके प्रचारमें परिश्रम करें। तथा बालकोंके लिये पाठशाला खोलें। यहींसे इनका सम्बन्ध प्रारंभ हुआ। अब तो वर्षमें दोचार दफे परस्पर पत्र व्यवहार होने लगा। धर्म सम्बन्धी पुस्तकोंका गुजरातीमें भाषान्तर करनेको कई दफे सेठजीने लिखा।

सेठ माणिकचंदजीको पालीताना सेत्रुंजयके उद्धारका बहुत बड़ा ध्यान था और ऐसा ही मुनीम धर्मचंदजीको था जो सच्चे दिलसे तीर्थकी उन्नतिमें दत्तचित्त थे। दक्षिण हैदराबाद निवासी सेठ पूरणमल हणुमंतराम पांड्याकी विधवा बाई रामबाई **पालीताना** पधारी थीं। आप धर्मचंदजीके उपदेशसे २०००) के दानका उपयोग नीचे प्रमाणे कार्योंमें करनेको कह गईं:—

एक विधवाका २०००) का दान।

२००) पालीतानाकी नई धर्मशालामें कोठरी नग १ बनाना।

११०८) पहाड़पर शांतिनाथजीके मंदिरके मोटे मंडपमें संगमर्मर पत्थर लगाना।

५००) ग्रामके नये मंदिरजीमें जो गभारा है उसमें चांदीके द्वार जड़े जावें।

२००) सं० १९५१ की प्रतिष्ठाके समय नए मंदिरमें एक प्रतिमा पधराई जावे।

इस खबरको सेठ माणिकचंदने सं० १९५० जेठ वदी १४ सोमवारके दिन लिखकर जैन बोधकमें छपाने भेजी दी जो इस पत्रके अंक १०७ जुलाई १८९४में मुद्रित है। इस पत्रके नीचे सेठजीका यह रिमार्क था—

" एकठां काम करवाने बे हज़ार रुपीया बाई आपी गयां छे तेने संघ तरफथी अने हमारी तरफथी धन्यवाद आपिये छिये। अमे सरवे बंधुजनोने विनंती करिये छीये के एहवा उदार दिलना भाईयोने पईसा सारी टेकाणे वापरवाने हालमां सऊथी उत्तम

टेकाणुं श्री शोलापुरना चतुर्विध दानशालामां मदत करवी. ए टेकाणुं घणुं लाभनुं छे । ”

पाठकोंको इससे मालूम होगा कि विद्यादान आदि ४ प्रकारके दानोंका व उसके होनेवाले कार्य्यका कैसा महत्त्व सेठ माणिकचंदजीके दिलमें था ।

दि० जैन सभा बम्बईके कार्य्य।

बम्बई दि० जैन सभा सेठ माणिकचंदके मंत्रित्व व पंडित गोपालदासके उपमंत्रित्वमें बहुत कायदेसे काम करने लगी । इसका प्रथम वार्षिकोत्सव मगसर सुदी १४ को हुआ । सालमें १९ अंतरंग व १९ उपदेशक सभाएं हुईं । इस समय सभाके आधीन ३ खाते चालू थे ।

खाता	आमद	खर्च	बचत
सभा	२२३॥)	१२४)॥।	९९।≡)।
पाठशाला	३६४॥≡)॥	२६५)॥	९९॥≡)
पुस्तक	३४८॥।=)॥	१९३।-)	१५५॥-)॥
कुल	९३७=)	५८२।=)।	३५४॥≡)॥।

जैन पाठशालामें पं० जीवराम शास्त्री पहले नियत हुए । फिर पं० निवासाचार्य व एक ज्योतिष शास्त्री भी रखा गया । इसका उपयोग स्वयं गोपालदास और पं. धन्नालालजीने भी लिया । सं० १९५१ मगसर सुदी १४ तक पं० गोपालदास शाकटायन, सभासोत, चंद्रप्रभुकाव्य ६ सर्ग, सर्वार्थ सिद्धि पूर्ण, राजवार्त्तिक अध्याय, परीक्षामुख परिच्छेद १॥, अलंकार चिंतामणि प्रथमपरिच्छेद,

कुवलयानंद पौन, गृहगणित स्पष्टाधिकारसे पूर्वतक, जिनेन्द्रव्याकरण थोड़ा, आदिनाथ पुराण पत्रे ९९—इतने विषय अपनी तीव्र बुद्धिके कारण पढ़ चुके थे तथा पं० पन्नालाल शाकटायन पड्लिंग, चंद्रप्रभु काव्य २॥ सर्ग, परिक्षामुख १ परिच्छेद ही कर सके थे। पुस्तक खातेसे लिखित ग्रंथ गोम्मटसार अष्टशती आदि भंडारमें मंगाये जाते थे। तथा सभाने एक पारितोषिक भंडार भी कायम कर लिया था कि अमुक २ विषयोंमें परीक्षा देकर जो भारतमें कोई जैन विद्यार्थी उतीर्ण हों उनको ईनाम दिया जाय अर्थात् परीक्षालयकी नींव जेठ सुदी १ सं १९५१ को डाली गई थी।

दसहरे आदि तिहवारोंपर बहुतसे रजवाड़ों आदिमें पशुवध होता था उसको रोकनेके लिये कई दयावान

पशु हिंसाबंदीका प्रयत्न जैनी भाई प्रयत्न कर रहे थे। उनमें हमारे और सूरतके लोगोंद्वारा सेठ माणिकचंदजी भी थे। प्रयत्नसे क्या

मानपत्र। नहीं होता? धरमपुरके महाराणाने अपने राज्यमें होनेवाले पशुवधको बंद किया तब

सूरतके लोगोंने राजाको मानपत्र दिया उसका जवाब जो राजाने दिया वह जैन बोधक अंक ११२ दिस० १८९४ में मुद्रित है, जिसका सारांश यह है—

मैं सन् १८९१में राज्यगद्दीपर बैठा तब ही से मैं ऐसे रिवाजसे विरुद्ध था। मैंने बम्बई, सूरत बड़ौदा आदिके विद्वानोंसे ७९ मत शास्त्रीय प्रमाण सहित इस हिंसाके विरुद्ध मंगाए तबसे मैं बंद करना चाहता था सो इस साल बंद करा दिया है

तथा आमरण ताल्लुकेमें भी कर दिया गया तथा मेरे राज्यमें चैत्र सुदी १५ के दिन मनुष्यको बड़ी निर्दयतासे मारते थे व मनुष्यके कपालपर तलवारका जख्म करते थे सो सब बंद करा दिया है आदि।"

इसके बाद नगरसेठ गुलाबदासने महाराणा साहब व कुंवरको हार पहराया।

सेठ पानाचंदको पुत्रीका लाभ।

रूक्मणीबाईको विवाह लानेके बाद ही वह गर्भवती हुई और ९ मास बाद एक कन्याको जन्म दिया। यह पहली संतति थी जो सेठ पानाचंदको प्राप्त हुई सेठ। पानाचंदने सामान्य रूपसे उत्सव किया। माता कन्याको पालने लगी।

पालीताना मंदिरकी प्रतिष्ठा।

पालीताना राज्यमें जिस नये मंदिरको बड़े परिश्रमसे सेठ माणिकचंद और नवलचंदने तय्यार कराया था उसकी प्रतिष्ठाका मुहूर्त माघ शुक्ल ५ सं० १९५१ नियत था। जिसके लिये २ मास पहलेसे खास तयारियां करानेके लिये सेठ माणिकचंदजीने मुनीम धर्मचंदको ताकीद की थी। नई धर्मशालाके ज़मीनमें दो दो सौकी लागतके १० कोठे बनवाए तथा जो २००) दे उसीका नाम लिखा जाय ऐसा प्रस्ताव किया। ठहरनेके लिये श्वेताम्बरी धर्मशालाएं भी ली गई। भावनगर व घोघाके भाई एक मास पहलेसे यहां रहकर सब प्रबन्ध करने लगे। प्रतिष्ठाकार शोलापुरके **सेठ हरीभाई देवकरण और रावजी कस्तूरचंदजीने** १ मास पहलेसे अपनी ओरसे

भोजनशाला खोल दी थी कि किसी जैनी भाईको भोजनपानका कष्ट न हो। बम्बईसे तीनों भाई सर्व कुटुम्ब सहित पालीताना कई दिन पहलेसे आ गए थे। शोलापुरके बहुत महाशय तथा गुजरात देशके व कुछ उत्तर हिन्दुस्थानके यात्री करीब ५०००के जैनीभाई एकत्र हो गए थे। **भट्टारक कनककीर्ति** प्रतिष्ठाकारक थे। श्री शांतिनाथ स्वामीके धातु व पाषाणके मनोहर बड़े २ बिम्ब निर्माण कराए गए थे। मंदिर भी बहुत ही रमणीक स्वर्गपुरी-के मंदिरके समान तय्यार हुआ था। रंगावेजी व पत्थर व चांदी-का काम था। जो यात्री पालीताना गए हैं उनको उस मंदिरकी शोभा याद होगी। इस समय सूरतकी गादीके भट्टारक श्री गुणचंद्रजीको निमंत्रण नहीं किया गया था तोभी आप आगए थे। दोनों भट्टारक अपने २ मान पुष्ट करने व पैसा एकत्र करने-की ही धुनमें थे उपदेश व धर्मचर्चाका ख्याल न था। दोनोंमें बात बातपर तकरार होती थी। ज्ञान कल्याणकका दिन माघ सुदी ४ रात्रिको ७ बजे था परन्तु श्री गुणचंद्रजी भट्टारकने बड़ा ही विघ्न किया और कहा कि मेरे आम्नायवालोंने जितनी प्रतिमा प्रतिष्ठा कराई हैं उनको सूरमंत्र हमदेंगे तथा हमें कितना रुपया दोगे? जबतक यह पक्का न होगा कल्याणक न होने देंगे। सूरमंत्र देनेके समयमें परस्पर मतभेद होनेसे रात्रिके १२ बज गए तब कल्याणक हुए। यहां तब **भाट** लोगोंने झगड़ा किया कि प्रतिमाके आभूषण हमको मिलने चाहिये पर पुलिस व राज्यका उत्तम प्रबन्ध होनेके कारण कोई फिसाद न होकर सर्व शांति रही और सानन्द प्रतिमा माघ सुदी ५ को विराजमान करदी गई। प्रतिष्ठा-

कारकोंने २२००) यहांके ठाकुर साहबको नजरानाके दिये। प्रतिष्ठाकारकोंने अपने प्रणके अनुसार रु० ११०००) श्रीजिन-मंदिरजीके भंडारमें भी दिया और सर्व खर्चा। उठाया सेठ पाना-चन्द माणिकचन्द और नवलचन्दजीने भी रु० २१००) भंडारमें दिये। तीनों भाइयोंने इस प्रतिष्टाको निर्विघ्न पूरी करनेमें पूर्ण परिश्रम उठाया।

पालीताना धर्मशालाका प्रबन्ध।

मंदिर प्रतिष्ठाके बाद सेठ माणिकचंदको चिंता हुई कि धर्मशालाका काम पूरा होना चाहिये। उसके लिये आपने अनुमान पत्र १२०००) रु० का बांधा जिसमें २५००) का एक बंगला तथा कुछ कमरे ४००) रु० व कुछ २००) रु० वाले बनने तजवीज किये। यात्रामें आए हुए लोगोंसे बहुत कुछ भरवाए, ४००) आपने दिये और १२०००) का प्रबन्ध कराके काम जारी करनेकी सूचना मुनीम धर्मचंदको की। जो १००००) का कर्ज़ सेठोंने मंदिर निर्माणके लिये दिया था सो इस प्रतिष्ठाकी आमदसे वसूल हो गया।

रूपाबाईकी १२३४ उपवासकी तपस्या।

सेठ प्रेमचंदकी माता अपनी वैधव्य अवस्थामें व्रत उपवास करनेमें बहुत ही दक्ष थीं। हर समय धर्मध्यानमें अपना काल बिताना यही इसे इष्ट था। सं० १९५१ में बाईने १२३४ **बारहसौ चौंतीस उपवासके** करनेका नियम धारण किया।

१२३४ व्रतोंका हिसाब इस भांति है:—

अहिंसा महाव्रतके भेद	१४	सत्य महाव्रतके	भेद	८
अचौर्य व्रतके	,,	८	ब्रह्मचर्य्य व्रतके	,,	२०
परिग्रहत्याग महाव्रतके ,,		२४	रात्रिभोजन त्यागव्रतके ,,		१
मनवचनकाय गुप्ति		३	ईर्या समिति	,,	१
भाषा समिति	,,	१०	एषणा समिति	,,	४६
आदान निक्षेपण स०		१	प्रतिष्ठापना समिति		१

१३७

१३७को मन वचन कायसे गुणे ४११ हुए,
कृत कारित अनुमोदनासे गुणे १२३३ हुए
इसमें अनिच्छा रात्रिभोजन त्याग भेद १

कुल १२३४ हुए ।
(जैनबोधक मार्च—अप्रेल १८९२)

इस तरह १२३४ उपवास पूर्ण करनेपर यह व्रत पूर्ण होता है। इन उपवासोंको जब पूर्ण कर ले तब उद्यापन करे ।

एक वर्षमें जितने कर सके करे । लगातार करनेका अभिप्राय नहीं है । सो रूपाबाईने इस कठिन प्रतिज्ञाको धारण किया ।

सेठ माणिकचंदका परिग्रहप्रमाण व्रत ।

सेठ माणिकचंदजी गृहस्थके व्रतोंके पालनमें भी बड़े सावधान थे । अन्यायका धन लेना, असत्य बोलना, कुशील आचरणसे इनको पूर्ण घृणा थी । जब यह पालीतानाकी प्रतिष्ठामें गए तब इनको परिग्रहका प्रमाण नहीं था । प्रतिष्ठा होनेके बाद रात्रिको एकान्तमें सेठजी और धर्मचंदजी अपने २

दुखसुख, धर्म कर्मकी वार्तालाप मित्रके समान कर रहे थे। तब धर्मचंदजीने कहा कि आपके पूर्वकृत पुण्यके उदयसे लक्ष्मीका लाभ हुआ है, पर लक्ष्मी तृष्णाको बढ़ानेवाली है। इसकी तृष्णाने बहुतोंको नरकादि नीच गतिमें पहुंचाया है। यह जितनी आती है उतनी ही अधिक होनेकी वांछा पैदा करती है। किसीको आयुका भरोसा नहीं है। इससे इस तृष्णाको स्वाधीन रखनेका उपाय **परिग्रहप्रमाणव्रत** है सो आपको है या नहीं? सेठजीने जब 'न' कहीं तब धर्मचंदजीने फिर कहा कि आप प्रमाण क्यों नहीं कर लेते कि इतनी लक्ष्मी मेरे भागमें जब हो जावेगी तब मैं नवीन उपार्जन छोड़ दूंगा। आप प्रमाण चाहे जितनेका करें पर प्रमाण होना आवश्यकीय है। सेठजी भी इस बातको अच्छी तरह समझते थे पर धनसंग्रहका लोभ नहीं मिटा था। इससे नियम नहीं ले सके थे। इन्होंने कहा—भाई धर्मचंद, जब मैं बम्बई पहुंचू तब तुम मुझे पत्र लिखना पर यह तो बताओ क्या तुम्हारे नियम है? धर्मचंदने कहा कि मुझे अभी तक प्रमाण नहीं है पर आगामीके लिये करनेका विचार हैं। मैं शीघ्र ही प्रमाण करके उसकी नकल आपको भेजूंगा।

सेठ माणिकचन्द बम्बई पहुंचे ही थे कि भाई धर्मचंदजीका पत्र पहुंचा जिसमें परिग्रहप्रमाणकी सर्व विगत लिखी गई थी उस समय सेठजीकी दूकानपर सेठ रामचंद नाथारंगजी भी मौजूद थे इन्होंने भी इस पत्रको पढ़ा और धर्मचंदकी बहुत प्रशंसा की। सेठजीने वह पत्र अपनी जेबमें रख लिया। रात्रिको चौपाटी जाकर सेठजीने व्यालु करके समुद्र तटपर घूमकर अपना पक्का विचार कर लिया कि

आज रात्रिको हम भी परिग्रहका प्रमाण कर लेवेंगे। आयु कायका कोई भरोसा नहीं है। लक्ष्मीकी तृष्णा तो जन्म भर नहीं छूट सक्ती। रात्रिको आरतीके पीछे श्री चंद्रप्रभु भगवानकी स्तुति व विनय कर सेठजी चैत्यालयमें बैठे और अपनी नोट बुकमें परिग्रहकी संख्या लिख ली। तथा यह प्रणकर लिया कि अमुक धन मेरे भागका दूकानमें हो जायगा तब मैं अपना सम्बन्ध छोड़कर **धर्म व जातिकी सेवामें लीन** हूंगा और जवाहरातके कामसे पेन्शन ले लूंगा। सेठजी बहुत विचारशील थे। प्रमाण इतनी रकमका किया कि जो न तो बहुत कम था और न बहुत असम्भव था। परिग्रह प्रमाण करके अपनी इच्छाकी सीमा बांधकर सेठजीने गृहस्थ श्रावकका एक स्तुत्य कृत्य पूर्ण किया।

वीरचंद राघवजीका अमेरिकासे लौटना।

वीरचंद राघवजी गांधी बी. ए. चिकागोकी धर्म सभामें शामिल होकर फिर अमेरिका इंग्लैंड, फ्रान्स और जर्मनीमें फिर ता. ८ जून १९९९ बम्बई आए। उनको जहाज़ परसे लेनेको दो तीन सौ प्रतिष्ठित पुरुष जैसे सेठ तलकचंद माणिकचंद, सेठ वीरचंद दीपचंद, गोकुलभाई मूलचंद आदि गए थे। उनमें हमारे प्रसिद्ध सेठ माणिकचंद भी थे। बड़े सत्कारसे अंग्रेजी बाजेके साथ फूलोंके हार पहराते हुए ६०, ७० गाडी सहित मारकेटसे जौहरी बाजार होते हुए उनके मकान भायखलेपर उन्हे पहुंचाया। अमेरिकामें क्या किया इस बातके जाननेकी लोगोंको अति उत्कंठा थी। वीरचंदजीका एक व्याख्यान भायखलेपर सेठ प्रेमचंद रायचंदके बंगलेमें हुआ वहां अति भीड़ थी। दूसरा लालबाग व तीसरा

मांगरोल सभामें हुआ। हमारे सेठजी सबमें गए थे। वीरचंद राघवजीने कहा कि चिकागोमें उन्होंने सम्यग्दर्शन, पुनर्जन्म, कर्म सिद्धान्त, ईश्वर सृष्टि कर्ता नहीं ऐसे बहुतसे व्याख्यान व बोस्टन शहरमें दो मास ठहर कर ८० व्याख्यान दिये। आपने कहा कि हालमें अमेरिकावालोंका विश्वास क्रिश्चियन धर्मपर नहीं है। वे जो बात युक्ति व प्रमाणसे सिद्ध होती है उसको ग्रहण करते हैं। यदि जैनी अपने धर्मके उपदेशका क्रम जारी रखे तो हज़ारों आदमियोंका जैनी होना संभव है। आपने वहां गांधी फिलाज़ाफिकल सोसायटी कायम की है। उपदेशके फलसे कईयोंने मांसाहार त्यागा। कई एकान्तमें ध्यान करने लगे। कई णमोकार मंत्र जपने लगे। इन्होंने खानेपीनेमें अपने धर्मको बिलकुल हानि नहीं पहुंचाई। आगबोटमें १००) ज्यादा करके अलग चूल्हा रक्खा गया था। इन्होंने आगबोटके क्यापटेन और इंग्लैंड अमेरिकाके विश्वासपात्र आदमियोंके सार्टीफिकट भी दिखलाए कि खानपानमें अशुद्धता नहीं की। तौभी बम्बईके मोहनलाल महाराज श्वे० यतिने तकरार की कि इनका प्रायश्चित होना चाहिये। महाराज आत्मारामजी इसकी आवश्यक्ता नहीं मानते थे। तौ भी तकरार मिटानेके लिये इनको आज्ञा की कि वे श्रीजिनेन्द्रदेवका अभिषेक व पूजा करें, एक नौकार मंत्रकी माला जपें व योगशास्त्रके एक अध्यायका पाठ करें, इतना **प्रायश्चित्त** दिया। वीरचंदजी २२ मास इस यात्रामें रहे थे।

धवलजयधवलके उद्धारकेलिये चंदा। संवत १९५२ में सेठ माणिकचंदजीने हीराचंद नेमचंदजीसे पूछा कि आपके जैन बोधकसे मालूम हुआ कि रायबहादुर सेठ मूलचंदजी अजमेरके प्रयत्नसे श्री धवलादि ग्रंथोंकी नकल होनी शुरू होगई है तथा २०० श्लोक पहले लिखे भी गए थे सो क्या वह काम जारी है या बन्द हो गया। तब सेठ हीराचंदने कहा कि वह काम यों बन्द होगया है कि सेठजी उस प्रतिको अजमेरके लिये चाहते थे सो वहांवालोंने इनकार किया इससे वह काम योंही रह गया। तब सेठ माणिकचंदने कहा कि यदि वे ग्रंथ सड़ जायंगे तो फिर कहांसे आएंगे ? दूसरे आप कहते थे कि वे जिस लिपिमें हैं उसे सिवाय ब्रह्मसूरि शास्त्रीके दूसरा कोई जानता नहीं है तथा शास्त्रीजीकी उम्र ५५ वर्षकी है। यदि यह कालवश होगए तो नकल भी न हो सकेगी। इससे यदि वहांवाले दूसरे स्थानपर ग्रन्थ देना नहीं चाहते तो अभी यही प्रबन्ध कीजिये कि उसकी वहां दो नकलें हो जांय एक कनड़ी लिपिमें व एक बालबोध हिन्दी लिपिमें, इतना काम बहुत शीघ्र होना चाहिये। तब सेठ हीराचंदने कहा कि इसके लिये तो वे लोग अवश्य कबूल कर लेंगे पर हमें ब्रह्मसूरि शास्त्रीके साथ दो प्रवीण लेखक और रखने पड़ेंगे जो कनड़ी व बालबोधमें लिख सकें। इस सबके लिये कमसे कम १००००) का प्रबन्ध होना चाहिये सो कैसे हो, तब सेठ माणिकचंदने कहा कि १००) सौ सौ रुपयेके १०० भागकर लिये जावें पहले दस दस रुपये करके १०००)तहसील कर काम शुरू किया जावे। जब काम

चलने लगे तब फिर २५) पचीस २ वसूल किये जावें। इस तरह काम पूरा किया जावे। हीराचंदजीके दिलमें यह बात जम गई, उसी समय ब्रह्मसूरि शास्त्रीको यह सब हकीकत लिखी। वहाँसे उत्तर आया कि इसमें कोई हर्ज नहीं है। मूडबिद्रीवाले खुशीसे स्वीकार करेंगे तथा मैं पूर्ण परिश्रम करके प्रति लिपिका प्रबन्ध कर दूंगा। फिर सेठ हीराचंदजीने जैन बोधक अंक १२९. मास मई १८९६ में यह बात प्रकाशित की और सौ सहायक मांगे। इस अपीलको देखते ही सेठ माणिकचंद पानाचंदजीने १०१) का एक भाग लेना स्वीकार किया। उन्हींका अनुकरण धरमचंद अमरचंद, शोभागचंद मेघराज, माणिकचंद लाभचंद, सेठ जवारमल मूलचंद, गुरुमुखराय सुखानंद आदि १२ बम्बईके व गांधी हरीभाई देवकरण आदि १९ शोलापुरके व अन्य फलटन, दहीगांव, इंडी आलंद व सेठ हरसुखराय फूलचंद आदि ११ कलकत्ताके सब मिलाकर अक्टूबर १८९६ तक सब १४२२९) की स्वीकारना हो गई। लाला रूपचंद सहारनपुरने **जैन गजट** पत्रमें मालूम कर १००) की सहायताका पत्र जुलाई मासमें पंडित गोपालदासजीको बम्बई भेजा। सेठ हीराचंदजीने जबानी पक्की बात करनेके लिये ब्रह्मसूरि शास्त्रीको शोलापुर बुलाया। वे मार्गसिर सुदी ४ को आए तब सेठ माणिकचंदजीको बुलानेके लिये तार दिया। तार पाते ही सेठ माणिकचंद गांधी रामचंद नाथाके साथ सुदी ६ को शोलापुर पहुंचे। शोलापुरकी मंडलीके सामने ब्रह्मसूरि शास्त्रीको १२५) मासिक व आने जानेका खर्च देनेका ठहराव हुआ तथा शास्त्रीजीने पौष मासमें मूलबिद्री जाकर प्रति

लिखना कबूल किया। इनके पास **गजपति उपाध्याय** भी लिखनेके लिये नियत किये गए। दोनों महाशयोंने मूलबिद्री जाकर मिती फागुण सुदी ७ बुधवारको पुस्तकोंके लिखनेका काम शुरू कर दिया। फिर शाके १८२७ चैत्र सुद १० को ब्रह्मसूरि शास्त्री-का पत्र शोलापुरवालोंके नाम आया कि जयधवलके १५ पत्रे अर्थात् १५०० श्लोक लिखे गए। इतनेमें मंगलाचरण, मार्गणास्थल और गुणस्थानकी चर्चाका निरूपण है। पुष्पदंत आचार्यने प्राकृत भाषामें सूत्र बनाए उसके ऊपर गुणधर महाराजने ललितपद न्यायसे संस्कृत और प्राकृतमें टीका बनाई है।

सेठ माणिकचंद हीराचंद ऐसे धर्मात्मा पुरुषोंके उद्योगसे रुपया भी एकत्र हो गया तथा कई वर्ष तक **ब्रह्मसूरि शास्त्री** जीते रहे पर वे ग्रंथोंकी लिपिको पूर्ण किये विना ही **कालके वश** हो स्वर्ग पधारे। तबसे **गजपति उपाध्याय**ने धवल व जयधवलकी दोनों प्रति लिखकर पूर्ण कर ली है। तथा इस वर्ष तीसरे **महाधवल** ग्रंथकी प्रति करानेका काम सेठ हीराचंदजी मूलबिद्री जाकर प्रारंभ करा आए हैं। तथा इस बातकी कोशिश चल रही है कि इन ग्रंथोंकी कई प्रतियां होकर भिन्न २ स्थानोंमें रहें जिससे पठनपाठन हुआ करे व एक स्थलमें विघ्न आनेपर भी प्रतियोंकी अनुपलब्धि न हो पर मूलबिद्रीके पट्टाचार्य और भाई अभी तक वृथा ममत्व करके ऐसा करनेपर राजी नहीं हुए हैं।

श्री धवल ग्रंथके जीर्ण ताड़पत्रके पत्रे ५९२ है सो कनड़ी प्रति जो अब हुई इसके २८०० व बालबोध लिपिके १३२३ पत्रे हुए है। इसमें ७३००० श्लोक हैं।

स्याद्वादवारिधि. न्यायवाचस्पति वादिगजकेसरी स्वर्गीय
पंडित गोपालदासजी बरैया.

J.V.P. Surat. (देखो पृष्ठ २४३)

इसका मंगलाचरणका प्रथम श्लोक यह है—

गाथा—सिद्धमणंत मणिंदिय मणुवममप्पुत्थ सोक्खमणवज्जं ।
केवल पहोह णिज्जियदुण्णय तिमिरं जिणं णमह ॥

भावार्थ—स्वकार्य सिद्ध करने वाले, अतीन्द्रिय अनुपम व स्तुत्य सुखको प्राप्त करनेवाले तथा केवलज्ञानरूपी सूर्यसे मिथ्यातमके अंधकारको हरनेवाले जिनेन्द्रको नमस्कार हो ।

श्रीजयधवल ग्रन्थके कनड़ी जीर्णपत्रे ५१८ हैं उसकी कनड़ी कापी जो अब हुई उसमें ११०० व हिन्दी कापीमें ७५० पत्र हैं इसके श्लोक ६०००० हैं। इसके प्रारम्भमें १ श्लोक मंगलाचरणका यह है—

गाथा—तित्थयरा चउवीस वि केवल णाणेण दिट्ठ सव्वट्ठा ।
पसियंतु सिवसरोवा तिहुवण सिर सेहरा मज्झं ॥

भावार्थ—केवलज्ञानसे सर्व पदार्थोंको देखनेवाले, मुक्ति पानेवाले व तीन भवनके शिरोमणि ऐसे २४ तीर्थंकर मेरेपर प्रसन्न होइ ।

रुक्मणीबाईके साथ लग्न होते ही ९ मास बाद सेठ पानाचंदको सबसे प्रथम जिस पुत्रीरत्नका भी लाभ हुआ था वह कुछ मास जी कर संसारसे चलबसी थी। अब सं. १९५२में फिर सेठ पानाचंदको एक पुत्रीका लाभ हुआ ।

सेठ पानाचंदजीको द्वि० पुत्रीका लाभ ।

इसका शरीर शुरूसे ही दृढ़, सौम्य व गठीला था । यथायोग्य जन्मोत्सव करके इसका नाम **लीलावती** रक्खा गया । माताने इसके शरीर रक्षणमें खूब प्रयत्न किया ।

मगनबाईजीका विवाह सूरतमें जिस कुम्टुबमें हुआ था वे यद्यपि प्रतिष्ठित और धनाढ्य थे पर एक बहुत साधारण बुद्धि और संकुचित हृदयके थे। सास व पति दोनों यही चाहते थे कि यह रात्रि दिन घरका काम काज किया करे, सीना परोना करे, अनाज फटके दले। मगनबाईजीको पुस्तक बांचने व कुछ धर्म ग्रंथ देखनेका शौक था परन्तु सास व पतिके भयसे इनका धर्म व अन्य पुस्तकोंका देखना, लिखना, पढ़ना बिलकुल बन्द हो गया था केवल प्रतिदिन चंद्रप्रभु स्वामीके मंदिरके दर्शन करना व जाप देना इतनी ही धर्म क्रिया होती थी। यह मंदिर उनके घरके निकट ही है। यदि कदाचित् भूलमें कभी कोई पुस्तक हाथमें लेती व सास ससुर देख लेते तो बहुत ही क्रोधित होते थे। साधारण संसारिक प्राणीकी तरह रहते हुए इस कन्याका चित्त भीतरसे प्रफुल्लित नहीं रहता था। जो अपने पिताकी सुहबतमें बैठती, उनकी बातें सुनती, अनेक समाचार पत्र व पुस्तकें बांचती व धर्म ग्रंथकी भी स्वाध्याय करती उसका मन केवल घरके धन्धोंमें कैसे ठीक रह सक्ता था? इससे मगनबाईजी थोड़े दिन यहाँ रहकर पिता द्वारा बम्बई बुला ली जाती थी। वहां चित्त प्रसन्न रहता पर पतिसे इसको प्रेम, यह पतिमें अनुरक्त व उसकी भक्त सो बम्बई ज्यादा न ठहरकर सूरत चली आती। खेमचंद और मगनबाईको सं० १९५२में एक पुत्रीका लाभ हुआ। खेमचंदकी माता व पिताको पौत्रीके लाभसे बहुत हर्ष हुआ। मगनबाईजी चंद्रमुखी समान सुन्दर पुत्रीको प्राप्त कर प्रेमसे पालने लगीं

मगनबाईजीको पुत्रीका जन्म।

और अब अधिक सूरतमें ही रहने लगीं। धीरे २ धार्मिक रुचि घट गई, संसारिक रुचि बढ़ गई। पुस्तक देखनेकी भी याद न रही सो कायदेकी बात है। जिस विषयका संस्कार अधिक रहता है वही पक्का हो जाता है और वह पिछले असरको धो डालता है।

पं० गोपालदासका व्याख्यान व वीरचंद राघवजीका परिचय।

ता० १७ मई सन् १८९६को जैन यूनियन क्लब बम्बईमें पंडित गोपालदासजीका "अष्टकर्म" पर व्याख्यान हुआ। इसमें सेठ माणिकचंद-जी आदि दिगम्बरी, वीरचंद राघवजी, फतेहचंद कपूरचंद **लालन**, हीरजीभाई आदि श्वेताम्बरी भाई मौजूद थे। व्याख्यान बहुत ही युक्ति पूर्ण और विद्वता-पूर्ण हुआ। वीरचंद राघवजी व हीरजीने व्याख्यानकी प्रशंसामें धन्यवाद प्रगट किया। सभाके पीछे राघवजी और पं० गोपालदासका परस्पर वार्तालाप होनेसे दोनों विद्वानोंको बहुत आनन्द हुआ।

वीरचंदजीका पुनः विदेश गमन।

श्वेताम्बर जैनसमाजने **वीरचंद राघवजीके** कार्यको इस कदर सराहना दी कि उनके चितमें फिर अमेरिका जानेका विचार हुआ और सन् १८९६में ही अपने स्त्री बच्चों सहित पं० फतेहचंद कपूरचंद **लालनके साथ अमेरिका रवाना हो गए**। खेद तो इस बातका है कि ऐसा फल देखकर भी किसी दिगम्बर जैन विद्वानको भेजनेका प्रबन्ध दिगम्बर जैन समाजने नहीं किया और न कोई दिगम्बर जैन ग्रेजुएट

ही तय्यार मिला कि वह जावे। हरएक काम साहस और पूर्ण प्रयत्नसे होते हैं। जहां प्रमाद है वहां कार्यसिद्धि कोसों दूर है।

पं० लालनका पत्र। सेठ हीराचंद नेमचंद व सेठ माणिकचंद्र जैनियोंमें ऐसे प्रख्यात हो गए थे कि हरएक मुख्य कामके लिये सेठ हीराचंदको लोग इनकी याद करते थे। पं० लालनने चिकागोसे सेठ हीराचंदको ता. ३ फर्वरी १८९७ को एक पत्रद्वारा श्री ज्ञानार्णव और आप्तमीमांसाकी बचनिका व दूसरे अध्यात्मज्ञानके ग्रंथ मंगवाए और लिखा कि यहां बहुतसे अमेरिकनोंने मांसाहारका त्याग कर दिया है।

बम्बई दि० जैन परीक्षालय। सेठ माणिकचंदजीके मंत्रित्व और पं० गोपालदासजीके उपमंत्रित्वमें बम्बई सभा बहुत कुछ जैनसमाजके उद्धारार्थ प्रयत्न करने लगी। पाठकोंने वह गुजराती पत्र वांचा ही होगा जो सेठ माणिकचंदने जेठ दूजा वदी ९ संवत् १९४१को सेठ हीराचंदको लिखा था कि एक मंडल ऐसा स्थापित हो जो सम्पूर्ण मुल्कोंमें जैन धर्मज्ञानको फैलावे, कुरीति मिटवावे आदि। उसी अपने अंतरंग भावकी पूर्ति सेठ माणिकचंदजी, पं० गोपालदासजी आदिकी सहायतासे धीरर करने लगे। वास्तवमें विचार कब होता है और कार्य्य कब होता है। जहाँ विचार पक्का होता है वहाँ कालान्तरमें यदि कोई अनिवार्य्य विघ्न न आवे तो वह पूरा होता ही है। बम्बई सभामें पारितोषिक खाता पहले ही खोल दिया था। जैन बोधक अंक १३४ मास अकटूबर १८९९ में भारत-

वर्षके १७ शहरोंकी पाठशालाओंके १४६ छात्रोंने रत्नकरंड, द्रव्य-संग्रह, प्रमेयरत्नमाला, चंद्रप्रभुकाव्य आदिमें परीक्षा दी, १०९ पास हुए और ११७) का इनाम बांटा गया । उस समय बम्बई, जैपुर, खुरई, शोलापुर, हिसार, सिरसावा, अलीगढ़, दिहली, मुरादाबाद, कामा, प्रयाग, शिवनी, शेरकोट, वर्धा, अवागढ़, रोहतककी पाठशालाएँ शामिल हुई थी । अधिकसे अधिक विषय धर्ममें तत्वार्थसूत्र, व्याकरणमें कातंत्र, काव्यमें धर्मशर्माभ्युदय, न्यायमें प्रमेयरत्नमाला थे । आज भी वही परीक्षालय सेठ रावजी सखाराम दोशी शोलापुरके प्रयत्नसे नियमित रूपसे चल रहा है । यद्यपि पाठशालाओंकी संख्या बहुत नहीं बढ़ी—२०-२५ ही शामिल होतीं हैं पर पठन विषय बढ़ गया है । अब गोम्मटसार, राजवार्तिक, अष्टसहस्री, प्रमेयकमलमार्तंड, शाकटायन, जैनेन्द्र, यशस्तिलक आदिमें छात्र परीक्षा देते हैं ।

जैनधर्मपुस्तक प्रचार ।

स्वाध्यायका प्रचार बढ़ानेके लिये सेठ माणिकचंदने चौपाटीपर एक पुस्तकालय खोल दिया था । जितनी जहां कहीं भी पुस्तकें छपती थीं उनकी बहुतसी प्रतियां मंगा लेते थे और उन्हे चौपाटी दर्शनार्थ आनेवाले भाइयोंको न्योछावर लेकर व बहुतोंको योंही देते थे । पाठशालाओंमें अर्धमूल्यपर व कहीं भेट भी भेजते थे । सबेरे रात्रिको आप अपना कुछ समय व उपयोग इस काममें भी लगाते थे । जैन बोधक अंक १३४ माह अक्टूबर सन् १८९६ में आपने नोटिस भी छपवा दिया था कि तत्त्वार्थसूत्रकी बालबोधनी टीका हमारे यहाँसे मंगाई जावे ।

एक जैन भगिनीका लेख।

जैन बोधक सन् १८८९ से निकला है परंतु उसमें जैन स्त्री शिक्षा सम्बन्धी लेख अंक १३५-१३६ नवम्बर- दिसम्बर १८९६ के पहले नहीं देखनेमें आया। इस अंकमें एक बड़ा जोशदार लेख आदिराज देवेंद्र उपाध्यायने मुद्रित कराया था। इसको पढ़कर एक **गुमनाम जैन भगिनीने** अंक १३८ फेब्रुआरी १८९७ में एक **मराठी लेख** प्रगट करके बहुत हृदयविदारक दशा स्त्रीशिक्षाके अभावकी बतलाई है कि लोग ऐसा कहते हैं कि दूसरेके घर जानेवाली कन्याकी इतनी कौन परवाह करे? यदि कोई पति अपनी अर्द्धांगिनीको सिखाने लगता है तो चारों तरफ उसकी निंदा होती है। पूर्वके समान आर्यिका आदिका सम्बन्ध भी नहीं मिलता। इस जैन बहनने प्रार्थना की है कि अपनी कन्या व बहनोंको पढ़ाना चाहिये। उनके लिये छात्रवृत्ति व इनाम नियत करना चाहिये। यह जैन भगिनी कौन है? कैसी आवश्यक्ता इसने स्त्री शिक्षाकी बताई है? ऐसा विचार इस लेखको पढ़ते ही सेठ माणिकचंदजीका हुआ और अबतक आपको स्त्री शिक्षाका बहुत तुच्छ ख्याल था पर इस लेखने आपको इधर भी आकर्षित कर दिया और यह स्त्री शिक्षाकी भी भावना करने लगे। जैन बोधक जून १८९७में यह पढ़कर कि फलटनके शा. मोतीचंद मलुकचंद कालुसकरने कोल्हापुरकी एक जैन कृष्णाबाईको ५) मासिककी छात्रवृत्ति देना स्वीकार की है व कोल्हापुरकी ४ विद्यार्थिनी रत्नकरंड श्रावकाचारका अभ्यास करती हैं, सेठ मणिकचंदको बड़ी ही खुशी हुई और यह सोचने लगे कि यह सब उस जैन भगिनीके लेखका असर है।

जर्मनीके अफसरका ब्रह्मसुरि शास्त्रीसे सम्बन्ध।

सेठ माणिकचंजीने जैन बोधक अगष्ट १८९७में यह पढ़कर कि एक जर्मन स्ट्रासबर्गकी युनिवर्सिटीके संस्कृत प्रोफेसर अर्नस्ट लेनमानने एक पत्र भेजा है उसमें लिखा है कि ब्रह्मसुरि शास्त्रीसे कुछ ग्रंथ मिले पर मुझे भगवती आराधनासार और आराधना कथाकोष चाहिये तथा पत्रके ऊपर यह गाथा लिखी थी–

जिण पवयणं पांवद्धं जम्बू दीवम्मि चेव सव्वम्मि।
कित्ति जसं व अचिरा पावेज्जउ सयल प्रढवीए॥

अर्थ–जैसे भारतमें जिन प्रवचनकी प्रसिद्धि है ऐसी इसकी कीर्ति सर्व लोकमें फैले।

यह वाक्य पढ़कर सेठजीको आश्चर्य हुआ। ब्रह्मसुरि शास्त्रीने जर्मनवालोंको ग्रंथ दिये तथा इस गाथाके अर्थने अपने सेठजीको उत्साहित किया कि अपने जैन ग्रंथोंका प्रचार यदि यूरुपमें हो तो बड़ा लाभ हो।

सेठ नवलचंदजीकी सम्मेद शिखरकी यात्रा और सीढ़ीका काम।

सं० १९५३में सेठ नवलचंदजीने अपने भाइयोंसे राय करके स्वतः श्री सम्मेदशिखरजीकी यात्रा करनेका निश्चय किया–स्व कुटुम्ब सहित यात्राको पधारे अपने भानजे चुन्नीलाल झवेरचंदको भी कुटुम्ब सहित साथमें लिया। यह सम्मेदाचल पर्वत हजारीबाग (बिहार प्रान्त)में जैनियोंका महा पवित्र तीर्थ है। खास कर दिगम्बर जैन समाजको यह इसीसे विशेष मान्य है कि इस भरतक्षेत्रमें २४ तीर्थंकर जो हरएक दुःखमा सुखमा कालमें होते

हैं वे सब यहींसे मोक्ष जाया करते हैं—अनन्ते २४ तीर्थंकर हो गए व आगामी होंगे । उनकी व अनन्त मुनीश्वरोंकी मोक्ष इस पर्वतसे हुई है इस कारण यह सर्व पर्वत पूज्यनीय है । इसकी दि० जैनियोंमें बड़ी भारी महिमा है । इस वर्तमान दुःखमा सुखमा का-लमें हुंडावसर्पिणी कालके निमित्त २४ मेंसे श्रीऋषभदेव कैलाश, श्रीवासपूज्य मंदारगिरी, श्री नेमनाथ गिरनार व श्री महावीर स्वामी पावापुरसे मोक्ष पधारे तौ भी इनकी कूट श्री शिखरजी पर नियत है । जो भाव सहित दर्शन करते हैं उनको दुर्गति नहीं प्राप्त होती। सर्व पहुंचे । सबसे पुरानी कोठी जो उपरैली है जिसको बीस पंथी भी कहते हैं उसमें ठहरे ।

सेठ नवलचंदजी भी सेठ माणिकचंदजीकी तरह प्रबन्ध कार्य करने व क-रानेमें कुशल थे । आप स्नानकर धोई हुई सफेद धोती और चद्दरा ओढ़कर अष्ट द्रव्य लेकर व कलस झारी रकाबी उन्ना आदि लेकर सर्व साथियोंके साथ श्री शिखरजीकी यात्राको चले। सीतानालेमें जाकर सामिग्रीको धोकर तय्यार हुए, और कलसमें प्रक्षालके लिये जल भरा । सीता-नालेसे श्री कुंथुनाथकी टोंकको आते हुए पहाड़का चढ़ाव कुछ विकट मालूम हुआ । देखा कि जो वृद्ध स्त्री व पुरुष हैं व बालक हैं उनको इस चढ़ाईके चढ़नेमें बहुत कष्ट हो रहा है। पर भक्तिवश सब जा रहे हैं। सेठ नवलचंदजी भी चढ़ तो गए पर इनके मनमें यह विचार आया कि यदि यहां सीढ़ियां बन जावें तो सबको बहुत सुभीता होवै । आपने सर्व कुटोंपर चरण पादुकाओंकी प्रक्षाल करते हुए अष्ट द्रव्य चढ़ाते हुए, प्रदिक्षणा देते हुये बड़े भावसे नमस्कारपूर्वक भक्ति की । बीचमें जलमंदिरजी आता है उसमें तीन स्थानों पर प्रति-

बिम्ब थे, बीचमें श्वेतांबरी तथा दो बगलके कोठोंमें दिगम्बरी प्रतिमाओंकी बड़े भावसे प्रक्षाल पूजन की। शाम पड़ते २ यात्रा करके नीचे आए। महान आनंद माना।

सीढ़ी बनवानेमें १००१)

रात्रिको चुन्नीलालजीने भी आवश्यक समझा तब वहां एक सभा बुलाकर ४००० सीढ़ियोंके बनवानेका निश्चय करके यात्रियोंसे चन्दा किया उसमें सबसे पहले १००१) अपनी तरफसे दिये। कुल चन्दा ६०१४) का किया गया और उपरैली कोठीके मुनीम बाबू हरलालजीको सीढ़ी बनवानेका काम सुपुर्द किया गया।

सेठ नवलचन्द सुकुशल अन्य यात्राओंको करके सर्व संघसहित बम्बई लौट आए।

पालीतानाकी दि०जैन धर्मशालाकी पूर्ति।

मुनीम धर्मचंदजीने बहुत परिश्रम करके संवत १९५४ तक पालीतानाकी धर्मशाला नकशे व विचारके अनुसार पुरी करवा दी। इसमें १२०००) का प्रबन्ध सेठ माणिकचन्दजीने किया था पर खर्च रु० १९०००) हुए। ७०००) का कर्ज सेठजीने अपनी दुकानसे दिया। किसी तरह कामको पुरा कराया क्योंकि इनके दिलमें यह चिंता थी कि यात्रियोंको कोई कष्ट न हो। यह रुपया धीरे २ आमदनी आनेपर अदल कर दिया गया। तीर्थ व धर्म प्रेम इसीका नाम है कि जब काम पड़े तब उसको जिस तरह बने निकाल लेना चाहिये।

सेठ पानाचन्दको और पुत्रीका लाभ ।

सेठ पानाचन्दकी पत्नी रुक्मणीबाईकी पुत्री लीलावती अब २॥ वर्षके करीब हो गई थी तब फिर एक पुत्री-का जन्म हुआ । यद्यपि सेठ पानाचन्दकी यह भावना थी कि पुत्रका दर्शन हो तो शुभ है क्योंकि "सेठ माणिकचन्द पानाचन्द" जब फर्मका नाम था तब जो व्यापारी व मित्रवर्ग इनसे मिलते व इनसे व दूसरोंसे इनके पुत्रोंके सम्बन्धमें प्रश्न करते उसे उत्तर देते वक्त एक प्रकारका संकोच भाव चित्तमें आजाता था, परंतु इस सम्बन्धमें मनुष्यका पौरुष सफल होना उसके बिलकुल आधीन नहीं है । इस पुत्रीका नाम सेठजीने **रत्नमती** रक्खा और जन्मके समय यथायोग्य पूजा पाठ व उत्सव कराया । रुक्मणी-बाई इस पुत्रीको भी बहुत भावसे व लाड़ प्यारसे पालने लगी ।

मगनबाईजीको पुत्रीका लाभ

जैसा पहले कहा गया है संवत् १९५२ में मगनबाईजीके एक पुत्रीका जन्म हुआ था । तबसे यह अधिकतर सूरत रहती थी और गृहस्थीमें खूब रचपच रही थी इष्ट वियोगका निमित्त होने-वाला था इससे वह पुत्री जिसे मगनबाईजी गोदमें रखकर और उसका प्रसन्न मुख देख देखकर मनमें हर्षित होती थी—जैसे कोई पक्षी किसी फूलपर आसक्त हो उसको बारबार स्पर्श करै तैसे यह उसके मोहमें लवलीन थी । पर वह जीव बहुत अल्प आयुकर्मको बांधकर आया था । करीब १ वर्षके ही जी कर उस पुत्रीने मगनमतीकी गोदको खाली कर दिया । जैसे किसीके पास १ हजारकी थैली हो और उसे कोई लूटले तब उ-

सको जो दुःख होता है उससे असंख्य गुणा दुःख इस समय मगनबाईजीको हुआ। इसको खानापीना न रुचने लगा। नीचा मुख किये आंसू बहाया करे। पति खेमचंदको भी शोक हुआ था पर उसके संसारिक मित्र अनेक सो उनके संग नगरमें रमते हुए थोड़े दिनोंमें शोक भूल गया। पिता माणिकचंदजीका अपनी पुत्री मगनबाईपर निज पुत्रसे भी अधिक प्रेम रहता था। पुत्रीके इष्ट वियोगसे उन्हें भी कष्ट हुआ पर चित्त थाँभकर एक शिक्षापूर्ण पत्र अपनी पुत्रीको ऐसा लिखा कि जिसके पढ़ते ही इसका चित्त शांत हुआ और पिछली धार्मिक बातें सुनी सुनाई याद हो आई। सेठ माणिकचंदजी अपनी पुत्रीको महीनेमें दो चार पत्र भेजते ही रहते थे—सदा शिक्षा देते रहते थे व किसी२ बातमें सम्मति भी पूछते रहते थे। मगनबाईजीको दो वर्ष बाद फिर गर्भ रहा। खेमचंदको आशा होने लगी कि अब पुत्रका लाभ होगा, पर अपना बिचारा कुछ होता नहीं। संवत् १९५४ में दूसरी पुत्रीका जन्म हुआ। यह भी सुन्दरशरीर सुडौलअंग व मनहारिणी थी। इसे देखकर माताको बहुत सुख हुआ।

इसका नाम **केशरमती** रक्खा गया। मगनबाईजी इस पुत्रीको पाकर बहुत ध्यान व यत्नसे इसकी रक्षा करने लगीं। प्रायः छोटे २ बच्चे माताकी असावधानीसे मर जाते हैं। जो माताएं अशुद्ध व अनिष्टकारी भोजन करतीं, रोगी रहतीं, आलस्य करतीं, समय पर दुग्ध नहीं पिलातीं, गर्मी सर्दी हवाका यथोचित यत्न नहीं करतीं उनकी सन्तानका जीना बहुत कठिन हो जाता है। यह

एक रत्नको हाथसे गमा चुकी थी अतएव अब बहुत ही सावधानीसे केशरकी रक्षा करने लगीं।

सेठ नवलचंदको पुत्रीका लाभ।

श्री शिखरजीकी यात्रासे लौटनेके बाद प्रसन्नबाईजी घरमें सुखसे रहने लगीं। पुत्र ताराचंद इस समय ९ वर्षके थे। शालामें पढ़ते थे। रतनचंद ५ वर्षका था जो अपने सुन्दर शरीर और हंसमुखको प्रगट करता हुआ सर्व कुटुम्बको अपनी रमणक्रियासे आनन्दित करता था। अब मिती श्रावण सुदी १३ सं० १९५४ को प्रसन्नबाईजीको एक पुत्रीका लाभ हुआ। यह भी बहुत सुन्दर मुख गुलाबके फूल समान थी। सेठजीने अब भी यथायोग्य जन्मोत्सव किया और इसका नाम **माणिकमती** रक्खा। माताने जैसे पहली दो सन्तानोंको यत्नसे पाला—किसी तरहका ऐसा निमित्त न आने दिया जिससे अकालमृत्यु हो, उसी तरह अब यह इस पुत्रीको भी बड़ी ही सावधानीसे पालने लगी।

सेठ प्रेमचंदजीकी लग्न।

इस वक्त सं. १९५४ में सेठ प्रेमचंद सब तरहसे व्यापारमें कुशल, धर्ममें लवलीन व सदाचारसे वर्तन करनेवाले हो गए थे। सेठ माणिकचंदजी और माता रूपाबाई इनको बहुत चाहती थी। अब यह २० वर्षके हो गए। माताने बाल अवस्थामें विवाह करनेका बिलकुल भी विचार नहीं किया था क्योंकि रूपाबाई बहुत ही विचारशील थी। भावनगरमें एक सेठ गुलाबचंद अमरचंदजी बागड़िया थे उनकी कन्या **चंचलबाई** थी जो यद्यपि स्वरूपवान थी पर कुछ सुकुमारांगी तथा अशक्त थी इसीके साथ सगाई हुई। बारात

भावनगर बड़ी धूमसे गई। सेठोंने वहां अच्छी रकम खर्च करके बहुत नाम किया। रूपाबाईजीने वहां धर्मकी खूब प्रभावना की इसमें ५०००)से कम खर्च न पड़े होंगे। सेठ प्रेमचंद चंचलबाईको व्याह कर सुखसे रहने लगे।

संवत १९५९ के प्रारंभमें बम्बईमें प्लेगका ज़ोर था। तब सेठ माणिकचंदजी आदि सूरत आए और शेठ माणिकचंद स्वयं यहां कई मास चंदावाड़ी धर्मशालामें ठहरे।

अध्यापक। सेठजी नित्य श्रीचंद्रप्रभुके बड़े मंदिरजीमें सेवा पूजा करते, जाप देते व बैठते उठते थे। एक दिन इन्होंने विचार किया कि यहाँ कोई ऐसा साधन अब नहीं है जिससे बालकोंको कोई दर्शन, व भगवानके नाम भी बतावे तथा कुछ बालक यहाँ सीखने योग्य मालूम पड़ते हैं। आपने लोगों-को कहकर बालकोंको २ घंटेके लिये मंदिरजीमें बुलाया और जबतक आप कई मास तक सूरत रहे नियमित रूपसे बालकोंको हररोज रात्रिको दर्शन, स्तुति, णमोकार मंत्र, निर्वाणकाण्ड भाषा, पंच मंगल आदि सिखा कर उनका बहुत ही उपकार किया और उन बालकोंको इनाममें भी वार २ छोटी २ धार्मिक पुस्तकें, रूमाल आदि देते थे जिससे बालकोंका उत्साह बढ़ता था।

सेठ माणिकचंदजीमें और धनाढ्योंकी भांति समयका दुरुपयोग करने व आलस्यमें पड़े रहनेकी आदत नहीं थी। जैसे चीटी हमेशा काम करती नज़र आती है ऐसेही सेठ माणिकचंद सदा ही कोई न कोई काम करते हुए ही देख पड़ते थे। सूरत ऐसे विलासप्रिय नगरमें दूसरे धनाढ्य जैसे राग रंगमें लगे थे ऐसी रुचि सेठ

माणिकचंदजीकी नहीं थी। इसीसे सेठजीके चित्तमें बालकोंपर दया आई और उनको **स्वयं धर्मशिक्षा देकर** अटूट ज्ञानदान किया। यह उदाहरण इस बातके प्रगट करनेके लिये बश है कि सेठ माणिकचंदको धार्मिक शिक्षाका कितना प्रेम था।

मूलचंद किसनदास कापड़ियाका प्रथम परिचय।

थोड़े दिन बाद कुछ कार्यवशात सेठ माणिकचंदजी सूरत आये थे तब एक दिन सेठजी चंद्रप्रभुके मंदिरजीमें धर्मकार्यसे निवट कर पाटे पर बैठे थे तब एक बालकको दर्शन करते हुए देखकर इनके मनमें आई कि यह कुछ होनहार मालूम होता है, इंग्रेजी पढ़ता मालूम होता है। उसको कुछ उपदेश करना चाहिये। यही वह **मूलचंदजी कापड़िया** थे जो इस समय भारतवर्षमें प्रसिद्ध हैं, "दिगम्बर जैन" मासिकपत्रके सम्पादक हैं, जैनमित्र साप्ताहिक पत्रके प्रकाशक, 'जैनविजय' प्रेसके स्वामी और रात्रिदिन जैन जातिकी सेवामें लीन हैं। उस समय इनकी आयु १७ वर्षकी थी। यह बीसा हूमड़ मंत्रेश्वर गोत्रधारी सूरतनिवासी सेठ किसनदास पूनमचंद कापड़ियाके तृतीय पुत्र हैं।

इंग्रेजी छठी स्टेन्डर्डमें पढ़ते थे पर धर्म साधनमें सिवाय दर्शन करनेके कुछ नहीं जानते थे। जब यह दर्शनकर चुके तब सेठजीने इनको बुलाया। पास बैठाकर पूछा कि तुम कुछ धर्मकी बात जानते हो। जवाब ना का पानेपर फिर सेठजीने यह जानकर कि यह संस्कृतके साथ इंग्रेजी पढ़ते हैं कहा कि धर्मज्ञानके बिना धर्मसेवन नहीं हो सक्ता है—केवल इंग्रेजी पढ़नेसे लाभ न होगा। तुम

मेरी साथ चन्दावाडीमें चलो। मैं एक पुस्तक तुमको दूंगा जिसको तुम हररोज पढ़ना। इस बालकको बड़ा ही हर्ष हुआ जब इसने एक गंभीर मुख धनवान सेठको अपनेसे इस तरह बात करते हुए देखा। सेठजी अपने पास हमेशा ही कुछ धर्मकी व कुछ मांसाहार रोकनेकी पुस्तकें बांटनेके लिये रखते थे। उस समय सेठ हीराचन्द नेमचन्द द्वारा मुद्रित **श्री रत्नकरंडश्रावकाचार** हिन्दी और मराठी अर्थ सहित इनके पास था वही इनके योग्य है ऐसा समझकर उनको चन्दावाडीमें ले जाकर वह पुस्तक दी और प्रतिदिन बांचनेका नियम दिलाया। मूलचंद इस पुस्तकको पाकर बहुत प्रसन्न हुए और खुशी २ अपने घर गए। अब यह सेठसे कभी २ मिलने लगे और धर्मकी बातें मालूम करने लगे। थोड़े दिन बाद सेठजी बम्बई लौट गए।

मगनबाईजीका वैधव्य।

सेठ माणिकचंदजीको सं० १९५२ **भारी शोकोत्पादक** रूपमें आया। श्रीमती मगनबाईजीकी गोदमें जब केशर ११ मासकी खेलती कूदती थी, अपनी मुलकनसे माता पिताको प्रसन्न करती थी तब यकायक एक दिन सवेरेके समय खेमचंदका मगज गर्म हो गया, खून चढ़ गया, पलंगमें लेट गए, माता व स्त्री भी आ गई, पिता भी आए, तरह २ के उपचार होने लगे। पर देखते २ बाधा इतनी बढ़ी कि दो घंटे भी पूरे नहीं हुए थे मगनमती बड़े संकोचमें पुत्रीको लिये हुए बैठी देख रही थी, माता दवाई दरमतमें लगी हुई थी कि यकायक खेमचंदने आंखें फाड़ दीं, देखते २ जीव शरीरसे निकल गया। सारे अंग उपांग आत्मा

बिना अनात्मभूत जड़ हो गए– आकार रहते हुए भी चेतना बिना किसी कामके न रहे। माता वारंवार पुकारती है-"खेमचंद, खेमचंद" पर खेमचंद शब्दको समझनेवाला चेतन ही जब नहीं तब कौन मुखको प्रेरणा करे कि तू हां कह। बेबोल, प्राणरहित, मुर्दा शरीर जानकर माता ज़मीनपर गिर पड़ी। **मगनबाई हाय हाय करती हुई धाड़े मारकर रोने लगी**। केशरके भी रुआई आ गई। इतनेमें जितने और घरमें थे आए। खेमचंद चल बसे इस खबरने सर्वको शोकसागरमें डुबा दिया। इस समय सबसे अधिक नुकसान यौवनवती १९ वर्षकी अति स्वरूपवती, सुशील, पतिप्रेमिनी मगनमतीको हुआ था। उसके दिलको थांभनेवाला, उसके मुखको प्रेमसे निरखनेवाला, उसे स्नेहभावसे प्यार करनेवाला, उसके यौवनरूपी मकरंदका पिपासु भ्रमर, उसके एक मात्र जीवनका आधार, उसके दुःख सुखमें एक अनुपम साथी इस वर्तमान पर्यायसे चल बसा और इसे अपने जन्म-भर एकाकी विधवा अवस्थामें छोड़ गया। वह घर जो थोड़ी देर पहले गार्हस्थ्यमई सुखमें डूबा हुआ था सो बातकी बातमें शोकके अंधकारसे व्याप्त हो गया। यदि किसीका राज्य छिन जाय, धन लूट जाय यहां तक कि उसे वस्त्र रहित कर दिया जाय तो भी दुःख नहीं होता है जितना कि एक जीवनके आधार इष्ट वस्तुके सदाके लिये वियोग हो जानेपर होता है। वास्तवमें यह **संसार असार है**, यह एक माया जाल है, जो इसमें लुभाता है वह सदा त्रास पाता है, जो ज्ञानी होता है और अपनी आत्मीक विभूतिको पहचानता है वह जब अपने शरीरमें ही नहीं लुभाता तब उसके सम्बन्धी अन्य वस्तुओंसे कैसे प्रेम करेगा? ऐसे ज्ञानीके

श्रीमती मगनबाई वैधव्यावस्थामें.

(देखो पृष्ठ १०२) J. V. P. Surat.

लिये किसीका संयोग व वियोग हर्ष या विषादका कारण नहीं है पर ऐसे ज्ञानी जगतमें विरले हैं। अनादि मिथ्यात्वके संस्कारसे जानते हुए भी तुर्त परके लोभमें फंस जाते हैं। खेमचंदके शरीरकी दाहादि क्रिया हुई। मगनमतीने शृंगार उतारा। सौभाग्यके वस्त्र आभूषण डालकर उदासीन कपड़े पहने क्योंकि अब इसका जीवन वीतराग विज्ञान स्वरूप धर्मके साथ ही रमण करनेमें बीतनेवाला था। बम्बई तार दिया गया। समाचार पाते ही सेठ माणिकचन्दको इतना कष्ट हुआ कि जैसा कोई हृदयमें वज्रका आघात करे। इस समयका दुःख सेठजीको अपने जन्ममें और कभी नहीं हुआ था। सेठजी इसे अपने पुत्रके स्थानपर मानते थे। इसकी युवानीमें इसके ऊपर विधवापनेका पत्थर गिरते हुए स्वाभाविक है कि ऐसे दयापूर्ण-मायालु पिताको दुःख हो। माता चतुरबाईजीने जब सुना। उसके रोने कूटने विलखनेका पार नहीं रहा। महान त्रास रूप अवस्थामें डूब गई। इसकी हाय हायने सर्व कुटुम्बको जमा कर दिया। माता रूपाबाई आदि सर्व ही ऐसे दुःखित हुए कि जिसका वर्णन नहीं हो सक्ता। सबके मुख फीके पाला पड़े वृक्षकी तरह हो गए। परिणामोंकी विचित्र गति है। एक जातिके भाव एक अन्तमूहूर्तसे अधिक नहीं रहते। नाना संकल्प विकल्पोंको करते हुए जब सेठजीके चित्तमें शास्त्रोंकी बातें याद आने लगीं—सती सीता, अंजना, द्रोपदी, चन्दना, अनंतमती आदि सतियोंके चरित्र स्मृतिमें आए। जब शंभूकुमार व चंद्रनखाका चरित्र याद आया तब चित्तमें धैर्य हुआ कि संसारमें सर्व ही प्राणी अपने बांधे हुए कर्मोंके वश हैं। यह दुःख कोई नया नहीं है बड़े २ पुण्याधिकारियोंके ऊपर

भी ऐसे संकट आ जाते हैं, आप सम्हले और फिर सर्व कुटुम्बको संसारकी असारता दिखाते हुए सम्हालने लगे।

अब विधवा मगनबाईजीको रह २ कर पतिकी यादके साथ पिताकी संगति याद आने लगी। सेठजी भी यही विचारने लगे कि अब मगनबाईको यहीं अपने पास रखना चाहिये और उसके आत्माका कल्याण हो ऐसा मार्ग उसे बताना चाहिये। यदि वह सूरत रहेगी उसका जीवन बिगड़ जायगा। उसकी सासको धर्मविद्याका प्रेम नहीं है। यह वहां पुस्तक-तक न देख सकेगी। घरके कामकाजमें ही

विधवा मगनबाईको पिताद्वारा विद्याभ्यास।

फंसकर अपना जन्म खराब करेगी जैसा कि प्रायः होता है कि स्वार्थी सास व श्वसुर अपनी विधवा बहूको पढ़ने लिखने व धर्मके तत्व जाननेकी ओर नहीं लगाते। बस उसको एक दासीके समान घरमें रखते हैं। बर्तन मंजवाना, अनाज फटकवाना, लड़कीको खिलाना आदि काम अच्छी तरह लेते हैं तब कहीं सबके पीछे बचा खुचा व रूखा सूखा भोजन खानेको देते हैं अथवा यदि उम्र छोटी हुई व धनाढ्य हुई तो सास श्वसुर उसे गहने कपड़ेसे लादे रखते हैं। वह सीना परोना करती है व खाली बैठे २ बुरे बिचारोंकी सड़क अपने दिलमें बना लेती है। ऐसा विचार कर सेठजी १ महीने पीछे ही मगनबाईजीको बम्बई ले गये। चौपाटीके बंगलेमें जब यह आई तब माता चतुरबाई इसको लिपट गई और धाड़ें मार २ कर रोने लगी।। चतुरबाईका मन सूक्ष्म बातको गृहण करने योग्य न था। कुटुम्बके मोहमें अति लवलीन था। शरीरकी सुकुमालता, पुत्रके जीवित

न रहनेकी चिन्ता, शरीरका अस्वस्थ रहना, ये तीनों ही कारण ऐसे थे कि जिनसे उसका चित्त आकुलताका स्थान बन रहा था। अब चौथा अपनी प्राणप्यारी पुत्रीके पतिवियोगका महान क्लेश जिससे चतुरबाईकी चिन्ता और संकटका ठिकाना न रहा। उसके दिलसे यह सदमेंपर सदमें दूर ही नहीं होते थे। सेठ माणिकचंदजी और स्वयं मगनबाई बहुत समझाती थी पर मोहकी लहरोंने उसे ऐसा विह्वल कर रक्खा था कि उसको बिलकुल धैर्य नहीं होता था। चित्तके शोकसे शरीर और अधिक अस्वस्थ होगया था।

इधर सेठ माणिकचंदजी अपने पुत्र समान मगनबाईकी आत्माको जानते थे। २, ३ मासमें ही एक वयोवृद्ध, अनुभवी, उदासीन एक विद्वान् पंडित माधवजीको मगनबाईको संस्कृत और धर्म पुस्तक पढ़ानेके लिये नियत किया और मगनबाईको सेठने आज्ञा की कि तुम रात्रिदिन विद्या साधनमें ही ध्यान दो इसीसे तेरा भला होगा। तू घरके कामकाजमें भी मत फंसे और न व्रत उपवास कर शरीरको सुखावे, तुझे विद्या आजायगी तो तू स्वपरोपकार करके अपना जन्म सफल करेगी। सेठजीके शब्द ये थे–

"व्हेन, घरनूं कामकाज अने व्रत उपवास बाजुए मुकीने भणो"

सेठजी मगनबाईको बहन कहकर पुकारते थे। सेठजीने चतुरबाईको भी समझा दिया कि तुम मगनबाईसे कुछ घरका काम न लेना, उसे मन लगाकर विद्याभ्यास करने देना। परमोपकारी पिताकी इस आज्ञासे बाईजीका चित्त धीरे २ धर्मसाधन व वैराग्यमें जमता गया। पंडितजी द्वारा धीरे २ बाईने संस्कृत मार्गोपदेशिका व्याकरण, अमरकोश, थोड़ी लघुकौमदी, थोड़ी न्यायदीपिका

पढ़ी तथा दि० जैन परीक्षालयद्वारा प्रवेशिकाकी तीन परीक्षाएं धर्म में पास कीं। इसवक्त लाहौरके बाबू ज्ञानचंदने आत्मानुशासन और मोक्षमार्ग प्रकाशको तथा देवबंदके जैनीलालने बड़े रत्नकरंड-श्रावकाचारको छापकर प्रसिद्ध कर दिया था। सेठजी छपी पुस्तकें रखते हैं यह प्रसिद्ध हो गया था, इससे जो कोई भी पुस्तक छपाता था सो पहले सेठजीके यहाँ भेजता था। सेठजी स्वयं पसंद कर यदि उपयोगी समझते तो उसकी बहुतसे कापियां बांटने व न्योछावर लेकर देनेके लिये मंगा लेते थे। नए छपे हुए ग्रंथोंको वैराग्यउत्पादक जान सेठजीने मगनबाईजीसे बांचनेको कहा। धीरे २ मगनबाईजीने आत्मानुशासन, रत्नकरंड श्रावकाचार, व मोक्ष-मार्गप्रकाशका स्वाध्याय करके अपनी परिणतिमें बहुत फेर कर लिया और स्वाध्यायको बराबर जारी रक्खा।

पं. लालनका उपदेश।

पं. फतहचंद **लालन**को अध्यात्मज्ञानका अभ्यास था और यह सेठ माणिकचंदजीके पास मिलने आया करते थे। मगनबाईजी चौपाटी बंगलेपर सेठजीके पास ही रात्रिको बैठकखानेमें बैठती थीं। जब सेठजी आनेवालोंसे बात करते तब यह भी सुनती और अपने अनुभवको बढ़ाती थी। पं. लालन द्वारा आत्माकी कथनी सु मगनबाईजीको अध्यात्मिक रुचि भी हो गई। युवावस्था हो इसके भाव वैराग्यमें भर गए और यह पिताकी आज्ञामें शास्त्रीसे विद्या अभ्यास करती हुई, स्वाध्यायमें मग्न अर्थात् ज्ञानके सुखमें मगन होकर धीरे पतिवियोगको भूल गई और अपने जीवनको ज्ञान मित्रके साथ

मानने लगी । यह सब पूज्य परोपकारी सेठ माणिकचंदका ही प्रताप था जिससे आज मगनबाईजी दि० **जैन स्त्री समाज**में बहुत ही स्तुत्य काम कर रही हैं और **श्राविकाश्रम** द्वारा अपने समान अनेक बाइयोंको आत्मरुचिवाली और परोपकारिणी बनानेका उपाय कर रही हैं ।

अध्याय नवां।

समाजकी सच्ची सेवा।

सं० १९५६के दुष्काल में ५०००) की मदद।

संवत् १९५६का महा विकट साल आ गया। इस वर्ष चारों ओर भारतमें दुष्काल ही दुष्काल छा गया। गुजरात, काठियावाड़, मेवाड़ भी अन्न और जलके महाकष्टसे पीड़ित हुआ। सेठ माणिकचंदजीका चित्त करुणादानसे द्रवीभूत होयगा। इस निकटवर्ती प्रान्तके अकाल पीड़ितोंकी सहायताके लिये सेठजीने रु० ५०००) दान किया तथा **बड़ौदा**में सेठ फकीरचंद प्रेमचंद जे० पी० ने **एक हिन्दू-बालाश्रम** खोला उसमें भी आपने ३००) दिये। बम्बई दि० जैन सभाके सभासदोंको एकत्र कर आपने बेतुल आदि मध्य प्रदेशके जैनी भाइयोंके आए हुए पत्र सुनाकर प्रगट किया कि एक जैन-अनाथालय भंडार स्थापित होना चाहिये। चूंकि आप स्वयं दातार और अग्रगण्य थे। आपकी सूचनाको बम्बईके भाइयोंने मान्य करके ता० ९ नवम्बर १८९९ को यह भंडार खोला तथा २११४) का चंदा तुर्त हो गया जिसमें आपने १०१) दिये व सबसे अधिक सेठ जीतमल कन्हैयालालने ५०१) व सेठ गुरुमुखराय सुखानंदजीने २२२) प्रदान किये। लाला बैजनाथ हाथरसवालोंने इसमें बहुत मदद दी। सभाकी ओरसे भारतवर्षीय दि० जैन महासभाकी आज्ञानुसार बेतुल शहरमें बाबू गोविन्द लाहनूं हेडमास्टर वर्नाक्युलर स्कूलकी मारफत एक आहारदानशाला खोली गई इसके द्वारा ता० ७-१२-९९

को २५ अनाथ जैनबालक रहने गए। इनको भोजन वस्त्रके सिवाय धार्मिकशिक्षा आदि देनेका भी प्रबन्ध कराया गया। आकलूज व पंढरपुरमें भी ऐसी आहार दानशालाएं खोली गई। बेतुलमें ३० बालक हो गए उनकी रक्षा सभा द्वारा बराबर होती रही। ९ लड़कोंको बेतुलसे नागपुर विद्याभ्यासके लिये भिजवाया गया।

जैन विद्यार्थियोंके कष्ट निवारणार्थ बम्बईमें जैन बोर्डिंगका विचार।

सूरतके एक दिगम्बर जैन छात्र केशवलाल डाह्याभाईने मेट्रिकुलेशनकी परीक्षा पास की थी और कालेजमें भरती होनेके लिये बम्बई आया था उस समय यहां हिन्दुओंका केवल एक ही बोर्डिंग था जिसका नाम **गोकुलदास तेजपाल बोर्डिंग हाउस** था। यह छात्र उसीमें रहनेके लिये गया। उसके कार्य्यकर्ताओंने इसको स्थान नहीं दिया। तथा सुपरिन्टेन्डेन्टकी बातचीतसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह इसी लिये स्थान नहीं देते हैं कि यह केशवलाल जैनी है। इसको बड़ी निराशता हुई, तब इसने यह सब हाल विद्यार्थियोंके पिता सेठ माणिकचंदजीसे कहा। आपको उस वक्त बड़ा भारी खयाल आया कि जैसे यह आज भटकता है व निराश्रय होकर अपमान सहता है ऐसे और भी छात्र भटकते होंगे व उदास होकर वे शिक्षण लेनेसे बन्द रहते होंगे। जैनियोंमें अब इंग्रेजी पढ़नेकी रुचि हुई है तब कालेजमें भी पढ़ने आवें हीगे अतएव परदेशी जैन छात्रोंको आश्रय देनेका कोई उपाय अवश्य करना चाहिये। उस छात्रके तो ठहरनेका सेठजीने तुर्त प्रबन्ध कर दिया और रात्रिको सेठ हीराचंद नेमचंदजीसे सम्मति ली कि क्या करना चाहिये। परम सच्चे मित्र हीराचंदजीने

सम्मति दी कि आपके पास लक्ष्मीकी कृपा है इससे आप एक जैन बोर्डिङ्ग स्थापित करें, दक्षिण व गुजरातके अनेक छात्रोंको बड़ा भारी लाभ पहुंचेगा । बेलगांव निवासी अण्णाप्पा फडयाप्पा चौगुले बी. ए. भी उस वक्त कालेजमें पढ़ते हुए चौपाटीपर सेठजीके बंगलेमें ही रहते थे सो रात्रिको सेठजीके साथ बैठकर बातें करते थे और प्रेरणा करते थे कि आप कोई धर्मका काम करो मुख्य संमति बोर्डिंगकी देते थे जिससे भी सेठजीको इस कार्य करनेपर विशेष रुचि हुई और यह बात सेठजीके दिलमें गड़ गई । वास्तवमें जिस मित्रके ऊपर विश्वास और प्रेम होता है उसकी बात तुर्त ही दिलमें बैठ जाती है फिर आपने दूसरे दिन अपने भाई पानाचंद, नवलचंद और प्रेमचंदसे सलाह ली । अपने पुत्र समान मगनबाईजीको भी बिठाला और सब हकीकत बयान की । प्रेमचंदके विचार बहुत ऊंचे थे और सेठ माणिकचंदकी भांति धर्म व विद्याकी उन्नतिमें पूर्ण लवलीन थे । प्रेमचंद बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि **काकाजी,** आप इस कामको अवश्य करें । सेठ पानाचंदने कहा कि अभी तक हम लोगोंने अपने **पूज्य पिताके स्मरणमें** कोई काम नहीं किया है इससे उन्हींके नामसे बोर्डिंग कायम किया जाय तथा **लाख पौन लाख रुपये** लगाकर बहुत अच्छी इमारत तय्यार की जाय जो देखनेमें व आराममें भी ठीक हो । सेठ नवलचंदजीने भी कुछ विरोध नहीं किया तब स्थानकी सलाह हुई तो जुबिली-बागके पास ही स्थान बनाना निश्चित हुआ क्योंकि वह स्थान शहर व कालिजोंसे बहुत दूर नहीं है और हवा भी अच्छी है । तथा यह भी तय हुआ कि इसी वर्ष इस कामको पूरा करना

चाहिये। दूसरे ही दिनसे सेठजीने स्थानकी तजवीज करना व नकशा बनाकर और पसन्द कराकर होशियार मिस्त्रीके द्वारा काम प्रारंभ करा दिया।

इसी वर्ष भारतवर्षीय दिगम्बर जैन **महासभा**का चतुर्थ अधिवेशन मिती कार्तिक वदी ५ सं०

बम्बईमें दि० जैन प्रां- १९५६से ७ मुताबिक ता: २३ अक्टूबर **तिक सभाका स्थापन।** १८९९से २९ तक श्री जंबूस्वामीकी निर्वाण भूमि चौरासी मथुरामें हुआ। इस समय इस सभाके महामंत्री **मुंशी चम्पतरायजी** डिप्टी मजिस्ट्रेट नहर, कानपुर थे जिन्होंने महासभाका कार्य्य बड़ी ही रुचिसे अपने जीवन पर्यंत किया और अनेक विघ्नोंके आनेपर भी इसे स्थिर रक्खा। महासभाको बाकायदा महासभा बनानेमें स्वर्गवासी बाबू बच्चूलालजी प्रयाग निवासीने अपनी उम्रभर जी तोड़ परिश्रम किया था। उन्हींके उद्योगसे इस महासभाकी रजिष्ट्री सर्कारी एक्ट नं० २१ सन् १८६० ई० के अनुसार हुई। इस वर्ष महासभाने **प्रस्ताव नं०** १ इस विषयका स्वीकृत किया कि "तमाम भारत-वर्षमें प्रान्तिक सभाएं कायम की जावें जो सर्व प्रकारसे इस महास-भाके उद्देश्योंको प्रचलित करनेमें सहायता देवें" तथा इस कार्य्यके करनेका भार बाबू बनारसीदास एम. ए. हेडमास्टर विक्टोरिया कालेज लश्करके सुपुर्द किया गया। यह महासभाके ज्वाइन्ट जनरल सेक्रेटरी कई वर्षोंतक रहे और रातदिन इसकी उन्नतिमें जी तोड़ परिश्रम किया। आपने ही महासभाके दो प्रभावशाली वार्षिक अधि-वेशन सन् १९०४ और १९०५ में क्रमसे **अम्बाला छावनी**

और सहारनपुरमें कराए तथा बहुतसी पुस्तकोंकी मददसे इंग्रेजीमें एक जैन इतिहास सिरीज नं० १ Jain Itihas Series पुस्तक रची जिसके प्रचारसे यह अज्ञान अंधकार कि जैनी नास्तिक हैं या बौद्ध या हिन्दू धर्मकी शाखा हैं या प्राचीन नहीं हैं बिलकुल उड़ गया। जैन इतिहास सोसायटी कायम कर जबतक आप लश्कर रहे बहुत काम किया। सहारनपुरमें वकालत करनेके पीछे व परस्पर महासभाके कार्यकर्ताओंमें मनमिलान न रहनेसे आपने यकायक जैनजाति सम्बन्धी सब काम छोड़ दिया। यह जैन कौमके अभाग्यकी बात है। बाबू बनारसीदासने बम्बई प्रान्तिक सभा स्थापित होनेके लिये बम्बई सभाके मंत्री सेठ माणिकचन्दजीको पत्र लिखा उसके अनुसार मिती कार्तिक सुदी ९ सं० १९५६ को बम्बई सभाकी प्रबन्धकारिणी सभाकी बैठक हुई।

इस सभामें यह निश्चित हुआ कि प्रान्तिक सभा स्थापित हो तथा उसकी नियमावली बनानेका कार्य सेठ माणिकचंद हीराचंद, सेठ रामचंदनाथा, पं० गोपालदासजी और पं० धन्नालालजीके सुपुर्द हुआ और मिती कार्तिक सुदी १४ को उपदेशकसभाकी बैठकमें सेठ हरसुखराय अमोलकचंदके सभापतित्वमें वह नियमावली पास की गई तथा तय हुआ कि प्रान्तके मुख्य २ भाइयोंको भेजकर सभासद बनाए जावें और तब इसका काम शुरू किया जावे। बम्बई सभा सेठ माणिकचंद और पं० गोपालदासजी ऐसे उत्साही संचालकोंके द्वारा बहुत कायदेसे ऐसे २ काम बराबर करती रही जिससे सारे भारतवर्षको लाभ हो। इस वक्त सभाके पास पाठशाला खातेके सिवाय उपदेशकफंडका खाता भी था जिसके द्वारा उपदेशक

भेजकर दौरा कराया जाता था। मिती मगसर सुदी ८से बाबू जुगलकिशोरजी देवबन्द उपदेशक नियत हुए थे जिन्होंने कुछ दिनों तक बहुत स्थानोंमें भ्रमण कर उपकार किया। सरस्वती भंडार खातेसे संस्कृतादि ग्रंथ संग्रह किये जाते थे, पारितोषिक भंडारसे परीक्षालयद्वारा भारतवर्षके विद्यार्थियोंकी परीक्षा लेकर उत्तम छात्रोंको ईनाम दिया जाता था। औषधालय खाता था जिससे दवाई बटती थी।

सेठ माणिकचंदजी व्याख्यानदाता।

सभामें कभी २ सेठ माणिकचन्दजी भी व्याख्यान देते थे। सं० १९५३ में मिती आषाढ़ सुदी १४ की सभामें आपने ४ शिक्षाव्रत पर गुजराती भाषामें सेठ हरसुखराय अमोलकचंदके सभापतित्वमें बहुत गंभीरतासे कहा था।

प्रेमचंद मोतीचंद व्याख्याता।

सेठजीके भतीजे सेठ प्रेमचंद मोतीचंद जौहरीमें बहुत अच्छी योग्यता थी। यह भी हर एक सभामें आते और कभी २ व्याख्यान दिया करते थे। श्रावण सुदी १४ को सेठ माणिकचंदजीके सभापतित्वमें आपने सप्त तत्वोंका वर्णन बहुत योग्यतासे किया जिससे पं० गोपालदास व अन्य सभासदोंको ऐसा निश्चय हुआ कि यह अपने काका माणिकचंदकी भांति परोपकारी व समाजसेवक होगा।

प्रेमचंदजीका द्वितीय विवाह ।

प्रेमचंदजीकी प्रथम स्त्री चंचलबाई बहुत अशक्त तथा बीमार रहती थी। १ वर्ष ही के पीछे ही वह इस शरीरको छोड़ कर चल दी। माता रूपाबाई तथा प्रेमचंदका ऐसा ही भवितव्य था यह जान शांत मन रहे। इस वर्ष माताने प्रेमचंदका द्वितीय विवाह ग्वालियर राज्यके **जावद** निवासी एक बीसाहूमड़की कन्या **चम्पाबाई**जीके साथ किया। यह कन्या स्वरूपवान, सरल स्वभावी, और आज्ञानुसार चलनेवाली थी। इसके लाभसे माता व प्रेमचंदको बहुत सन्तोष हुआ।

फूलकुंवरीको कन्याका लाभ।

सेठ माणिकचंदजीकी प्रथम पुत्री फूलकुंवरीको एक कन्या जन्मी जिसका नाम **कमलावती** रक्खा तथा जन्मोत्सव करके इसकी रक्षाका पूरा यत्न किया। इसके दो वर्ष बाद दूसरी पुत्री हुई जो सिर्फ पांच दिन ही जीवित रहकर मृत्युके वश हो गई इस समय फूलकुंवरीको भी असाध्य बीमारी हो रही थी और एक मास बाद वह भी चल बसी।

सेठ पानाचंदजीको पुत्रका लाभ।

सेठ पानाचंदकी स्त्री रुक्मणीबाई संतानकी रक्षामें बहुत चतुर थी तथा इसके इस समय संतति-वियोग करानेवाले कर्मोंका उदय न था। लीलावती ४ वर्ष और रतनमती २ वर्षकी थी तब भी यह बाई पुनः गर्भवती हुई। इस समय पानाचंदको यद्यपि पुत्रकी निराशासी थी पर पुण्यके उदयसे गुज०

मिती आश्विन वदी १४को बाईने एक पुत्ररत्नको उत्पन्न किया। पुत्रका लाभ देख पानाचंदजीको और विशेश कर माणिकचंदजीको बहुत ही हर्ष हुआ क्योंकि अब तक इन दोनोंके कोई भी पुत्र जीवित नहीं था और बाज़ारमें ये मान्य गिने जाते थे। सेठ माणिकचंदजीने खूब धूमधामसे मंदिरजीमें पूजन कराई, दान बांटा, वस्त्रादि दिये, गाना बजाना हुआ। बड़े भाईके चित्त प्रसन्नताके अर्थ इस जन्मोत्सवको इसतरह किया कि जिससे इसकी बहुत प्रसिद्धि हुई व माता रुक्मणीको बहुत संतोष हुआ। अपनी ५१ वर्षकी आयुमें पुत्रलाभ होनेसे सेठ पानाचंदको अकथनीय आनन्द हुआ। सेठजीने इसकी रक्षाका पूरा २ यत्न किया।

बम्बई सभामें शिखरजी व जैनमित्र।

मिती मार्गशीर्ष वदी १० संवत १९५६ को सेठ माणिकचंदजीने बम्बई सभाकी प्र० कमीटि बुलाई। ८ सभासद एकत्र हुए। सभापति सेठ हरसुखराय अमोलकचंद किये गये, उपमंत्री पं० गोपालदासजीने भारतवर्षीय दि० जैन महासभाका वह प्रस्ताव नं० ३ जो उसने ता० २४-१०-१८९९ को पास किया था, पेश किया। वह प्रस्ताव यह था।

" महासभा प्रस्ताव करती है कि श्री सम्मेद शिखरजीके झगड़ेके विषयमें जो सबकमेटी मेले हाथरसमें स्थापित हुई थी वह अब तोड़ दी जाय और उसका चार्ज बम्बई सभाके सुपुर्द हो। इस कामके खजान्ची सेठ माणिकचंद पानाचंदजी जौहरी, बम्बई निवासी नियत किये जावें। जिन भाइयोंके पास इस विषय सम्बन्धी द्रव्य हो वह उक्त सेठ साहबके पास मय हिसाब किताबके भेज देवें और आगेको भी उन्हींके पास भेजते रहें (एक

नकल इस प्रस्तावकी बजरिये चिट्ठी बम्बई सभाको भेजी जावेगी)

सेठ नवलचंदजी संवत् १९५३ में **शिखरजी** गए थे तब ६०००) का चंदा करके सीतानालेसे कुन्थनाथ स्वामीकी टोंकतक **५००० सीढ़ियां** बनवानेका काम मुनीम हरलालजीके सुपुर्द कर आए थे। सीढ़ियोंका काम चलाया गया। ७०० सिढ़ियां बन गई थीं। इतनेमें श्वेताम्बरी लोगोंको यह बात पसन्द न आई। ये सीढ़ियां सर्व जैन स्त्रीपुरुषोंके आरामके लिये बनवाई गई थीं इस बातका कुछ भी विचार न करके श्वेताम्बरी भाइयोंने ता. १२ जनवरी सन् १८९९ को रात्रिके समय चोरीसे २०५ सीढ़ियां तुड़वा डालीं और इस अनुचित क्रियासे महान कर्मका बंध किया। इसपर फौजदारी मुकदमा हुआ जिससे श्वेताम्बर कोठीके दो भाइयोंको कुछ दिनकी सजा व मुचलके हुए। इस समय हरलालजी मर गए थे। रावजी बीसपंथी कोठीके मुनीम थे। इसीने यह फौजदारी मुकदमा चलाया था। बम्बई सभाने सर्व जैनियोंको सूचनार्थ ४००० विज्ञापन हाथरसके मेलेपर बांटे तथा महासभाको सूचना दी। उसने मुकदमेकी पैरवीके लिये एक कमेटी बनाई थी उसने प्रमादवश कोई यथोचित कार्रवाई न की। उधर श्वेताम्बरियोंने हाईकोर्टमें अपील की जिससे दिगम्बरियोंकी तरफसे ठीक पैरवी न होनेसे असफलता हुई इसीपर महासभाने उक्त प्रस्ताव पास किया था।

सभासदोंने इस प्रस्तावको स्वीकार किया तथा निश्चय किया कि वकीलोंकी राय लेकर दीवानीमें मुकदमा चलाया जाय और एक होशियार आदमी कोशिश करनेके लिये नियत किया जाय। इसी अंतरंग सभामें सभाके कार्योंको विस्ताररूपमें लानेके

लिये पं. गोपालदासजीने एक मासिक पत्रकी आवश्यक्ता बताई। सबके ध्यानमें जंचने पर "**जैन मित्र**" पत्रके निकालनेका निश्चय किया गया। सम्पादक पं. गोपालदासजी बरैया और प्रोप्राइटर सेठ **माणिकचंदजी** नियत हुए। आपने स्वीकार किया तथा पत्रमें यदि घाटा रहे तो दो वर्षके वास्ते अधिकसे अधिक १००) साल सेठ माणिकचंद पानाचंदजी और ५०) साल सेठ नाथारंगजीने देना स्वीकार किया। सेठजीको समाजोद्धारका कितना प्रेम था इसका यह भी एक नमूना है।

जैन बोर्डिंगका महूर्त।

बम्बईमें शीघ्र ही बोर्डिंगका मकान सेठ माणिकचंदजीके प्रयत्नसे तय्यार हो गया जिसका वास्तुविधान (मुहूर्त) मिती मगसर सुदी ६ को बड़ी धूमधामके साथ किया गया। इस बोर्डिंगका नाम सेठ पानाचंद आदि सेठोंने अपने पूज्य पिताके स्मरणके लिये उन्हींके नामसे **सेठ हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंग** रक्खा। बोर्डिंगके लिये २६०४ वार जमीन ली गई थी। इस पर तीन खनकी सुन्दर इमारत छात्रोंके रहनेके लिये बनाई गई जिसकी इमारतकी स्थावर मिलकियत २५०००) की तथा बोर्डिंगके मकानके सामने इसी ज़मीनमें ४००००) की मिलकियतका एक मकान बनाया गया जिसका भाड़ा बोर्डिंगके खर्चेमें लगे तथा ५०००) की खुली जगह गिल्ड स्ट्रीटके नाकेपर रक्खी गई। कुल ७००००) स्थावर मिलकियतमें १२५०) फरनीचर, ४५०) रसोईके वर्तन इस तरह ७१७००) ट्रष्टी फंड खाते रखकर यह रकम चारों सेठोंकी तरफसे नीचे लिखे ट्रष्टियोंको ९ अप्रैल सन्

१९००को सुपुर्द करके ट्रष्टडीड रजिष्टर कराया गया जिसकी इंग्रेजी नकल पाठकोंके ज्ञानहेतु अंतमें दी गई है।

ट्रष्टी—

१ सेठ पानाचंद हीराचंद
२ सेठ माणिकचंद ,,
३ सेठ नवलचंद ,,
४ सेठ प्रेमचंद मोतीचंद
५ सेठ हीराचंद नेमचंद दोशी शोलापुर [बम्बई-
६ सेठ राजा धरमचंद राजा दीनदयाल प्रसिद्ध फोटाग्राफर,

इस बोर्डिङ्गके तीन मंजलोंमें सुपरिन्टेन्डेन्टके रहनेके स्थान व रसोईघरके सिवाय २३ कमरे हैं जिनमें ४७ छात्र रह सक्ते हैं। ट्रष्टडीडमें खास ३ नियम हैं कि—

(१) हीराचंद गुमानजीके वंशमेंसे दो ट्रष्टी हमेशा कमेटीमें रहेंगे यदि वंशमें कोई न रहे तो उनके निकट सम्बन्धियोंमें रहेंगे।

(२) ट्रष्टीकी संख्या कमसे कम छः व अधिक ८ होगी।

(३) ट्रष्ट कमेटी व उसके द्वारा नियत प्रबन्ध कारिणीमें सब मेम्बर दिगम्बर जैन होंगे।

(४) इसमें मेट्रिकुलेशन पास जैन छात्र भरती किये जाते हैं उनमें सबसे पहले संस्कृत द्वितीय भाषा रखनेवाले दिगम्बरी छात्रोंको, फिर अन्यभाषा रखनेवाले दिग० छात्रोंको फिर संस्कृतवाले श्वेताम्बरी छात्रोंको फिर अन्यभाषा वाले श्वे० छात्रोंको स्थान दिया जाता है फीस किसीसे नहीं ली जाती। इंट्रेन्ससे नीचे व चौथे क्लासके
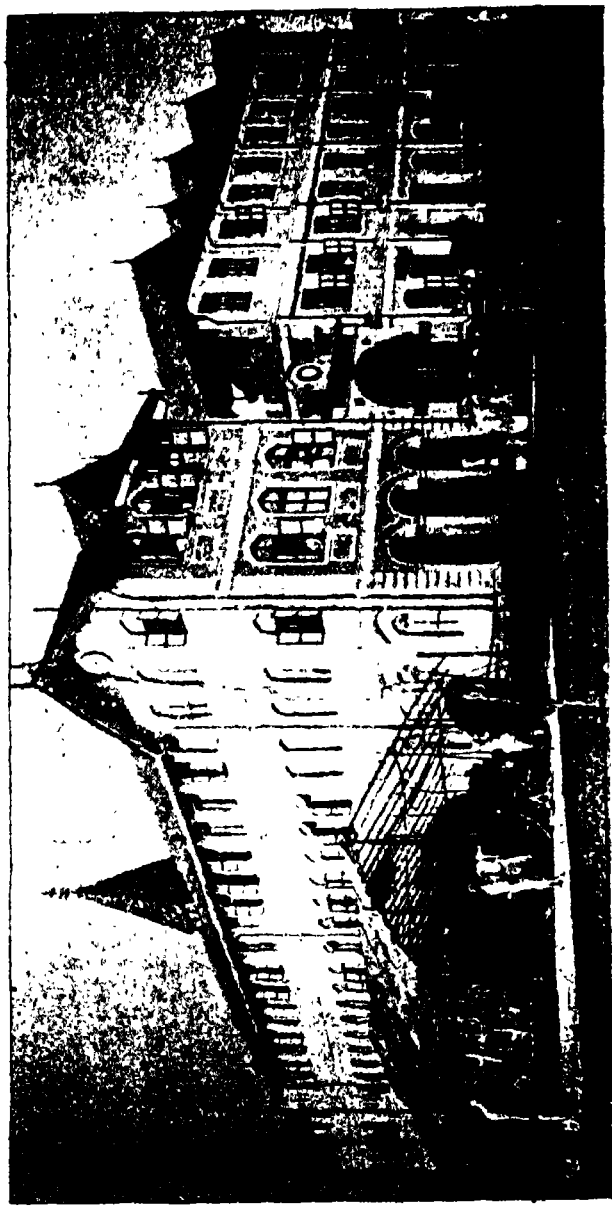
सेठ हीराचन्द गुमानजी बोर्डिंग स्कूल-बम्बई. (देखो पृष्ठ २१९)

Jain Vijaya P. Press,

ऊपरके छात्र मेनेजिंग कमेटीकी रायसे भरती होते हैं।

(५) दिगम्बर जैनधर्मकी शिक्षा सर्वको लेनी होगी व वार्षिक परीक्षा देनी होगी।

(६) नित्य दर्शन पूजाके लिये एक दिगम्बर जैन चैत्यालय रहेगा।

(७) २३ कमरोंमेंसे ४ संस्कृत विद्यार्थियों रहनेके लिये रहेंगे।

(८) जो ४००००)की मिलकियतका मकान है उसका खर्च देकर जो भाड़ा बचेगा उसमेंसे ५) रु. सैकड़ा अमानत खाते जमाकर ३००) रु० साल दिगम्बर जैन मंदिरके खर्चके लिये निकालकर बाकी गरीब छात्रोंको छात्रवृत्ति देनेमें खर्च किया जायगा जिसमें ५०) सैकड़ा बोर्डिंगमें रहनेवाले छात्रोंको, ४०) सैकड़ा परदेशमें पढ़नेवाले छात्रोंको और १०) सैकड़ा जैन धार्मिक शास्त्रोंको मुख्यतासे पढ़नेवालोंको दिया जाय।

ता० १७ जून सन् १९०० को ऊपरके ६ ट्रष्टियोंके सिवाय नीचे लिखे मेम्बर प्रबन्धकारिणीमें और शामिल किये गए-७ पं० गोपालदासजी बरैया, ८ सेठ गुरुमुखराय सुखानंद, ९ गांधी रामचंद नाथा, १० पंडित धन्नालाल काशलीवाल, ११ परीख चुन्नीलाल प्रेमानंद, १२ जौहरी चुन्नीलाल झवेरचंद, १३ अण्णाप्पा फडयाप्पा चौगुले बी. ए. एल. एल. बी.। इनमेंसे ट्रष्टके इस नियमके अनुसार कि सेठोंके वंशमें जो बड़ा ट्रस्टी होगा सो सभापति रहेगा, जौहरी पानाचंद हीराचंद सभापति, खजाञ्ची झवेरी प्रेमचंद मोतीचंद सेक्रेटरी, हीराचंद नेमचंद आ० माजिस्ट्रेट शोलापुर तथा ज्वाइन्ट सेक्रेटरी जौहरी चुन्नीलाल झवेरचंद नियत हुए।

वर्तमानमें ट्रस्टी इसी प्रकार हैं—

१ जौहरी नवलचंद हीराचंद—प्रमुख।

२ सेठ हीराचंद नेमचंद दोशी शोलापुर—मंत्री।

३ जौहरी ताराचंद नवलचंद।

४ मि० लल्लुभाई प्रेमानंद परीख एल. सी. ई.

५ जौहरी ठाकुरदास भगवानदास—उपमंत्री।

तथा मेनेजिंग कमेटीमें उपरके सिवाय नीचे लिखे मेम्बर और हैं—

६ सेठ गुरुमुखराय सुखानंद।

७ पंडित धन्नालालजी।

८ सेठ लल्लुभाई लक्ष्मीचंद चौकसी।

९ ,, रामचंद नाथारंगजी।

१० ,, चुन्नीलाल हेमचंद जरीवाला।

११ ,, लाला प्रभुदयालजी।

१२ ,, अमृतलाल विट्ठलदास धामी।

१३ ,, पानाचंद रामचंद दोशी।

१४ ,, हीरालाल जयचंद दोशी।

इस बोर्डिंगका काम नियमित रूपसे जून १९०० से प्रारंभ किया गया उस समय रा० रा० चौगुले बी० ए० सुप० नियत हुए के दि० ६ और श्वे० ७ ऐसे १३ छात्र भरती हुए। सन् १९०९ की परीक्षाके समय १६ छात्र थे जिनमें केवल ९ दिगम्बरी व ७ श्वे० थे। इनमें संस्कृत द्वितीय भाषा रखनेवाले २ ही थे। पर सन् १९१२ में २४ दि० व १३ श्वे० थे व संस्कृत

भाषावाले २२ छात्र थे। तथा सन् १९१४ में २९ दि० व १३ श्वे० व संस्कृत भाषावाले ३९ थे तथा वर्तमानमें २७ दि० व १४ श्वे० छात्र हैं व संस्कृत भाषावाले ४९ हैं। दिगम्बरियोंकी अब संख्या बढ़नेका कारण उनमें शिक्षाकी ओर अधिक झुकाव है। श्वे० की कमीका कारण एक तो स्थानका अभाव, दूसरे मंदिरपंथी व स्थानकवासियोंके भिन्न २ बोर्डिंग खुल जाना है। जिस समय यह हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंग, खोला गया उस समय बम्बईके हिंदुओंमें सिवाय गोकुलदास तेजपाल बोर्डिंगके और कोई न था।

सन् १९०१ में बोर्डिंगमें रहनेवाले ९ छात्रोंको ४२) मासिक व परदेशमें पढ़नेवालोंको २६) रु० मासिक छात्रवृत्ति दी गई थी। इनमें सुरत निवासी केशवलाल डाह्याभाई नामका वह छात्र भी है जिसके निमित्त यह बोर्डिंग खोला गया। इसे १०) मासिक सहायता दी गई। सन १९१२ की सालमें बोर्डिंगवासी १७ छात्रोंको अधिकसे अधिक १८) मासिक तक कुल रु० २३४१।) सालमें दिया गया। इनमें एक श्वे० छात्र भी शामिल था। तथा परदेशमें पढ़नेवाले १० दिग० छात्रोंको २७०) रू० व अहमदाबाद बो० के छात्रोंको ४८०) ऐसे ७५०) दिये गए।

धार्मिक शिक्षा सन् १९०१ में द्रव्य संग्रह, रत्नकरंड श्रावकाचार तथा न्यायदीपिकामें हुई थी जिनमें क्रमसे ६, १२ व १ छात्र परीक्षामें लिखित प्रश्नों द्वारा बैठे थे, सर्व पास हुए। सन् १९१२ में धर्म शिक्षाके तीन क्लास थे, जिसका क्रम इस भांति था—

[illegible] १ रत्नकरंड श्रावकाचार ७८ [illegible] और तत्वार्थसूत्र

[illegible]

नं० २–तत्वार्थसूत्र ४ से ६ अध्याय और पुरुषार्थसिद्ध्युपाय
९० श्लोक ।

नं० ३–तत्वार्थ सूत्र ७ से १० अ० और द्रव्यसंग्रह पूर्ण।

सन् १९१२ में ३५ इंग्रेजी पढ़नेवालोंमेंसे १८ छात्रोंने परीक्षा दी थी जिसमें १५ पास हुए थे। तथा सन १९१४ में ४२ में से २९ ने परीक्षा दी थी १५ पास हुए। इस बोर्डिंगमें कसरतशाला, रीडिंगरूम, लाइब्रेरी भी है। छात्रोंको इतना आराम व पढ़नेका सुभीता है कि सर्कारी परीक्षाओंमें वहांके छात्रोंका बहुत अच्छा फल रहता है।

धर्म शिक्षा लेकर जो छात्र वहांसे निकल कर जाते हैं उनमेंसे अधिकांश धार्मिक आचार व उसकी उन्नतिके ऊपर अपना स्वभाव रखते हुए देखनेमें आते हैं जिनके कुछ उदाहरण ये हैं–

१–दि० बलवंत बाबाजी बुगटे, मैट्रिकुलेशन पास, पैतृक कृषिकर्म, दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभामें खास भाग।

२–दि० लट्ठे अणाप्पा बाबाजी, एम. ए.; सर्कारी काम, द० म० सभामें खास भाग तथा Jainizm पुस्तक रची है।

३–श्वे० मेहता मकनजी जूठा, बी. ए. बारिष्टरी, श्वे. समाजमें धर्म व जातिकी उन्नतिमें अग्रसर।

४–दि० परीख लल्लुभाई प्रेमानंद, एल. सी. ई., बम्बईमें असिस्टेन्ट कलेक्टर इन्कटैमक्स, अहमदाबाद, रतलाम बोर्डि० व

आविकाश्रम समाईके मंत्री व प्रान्तिक सभाके मुख्य कार्याध्यक्ष।

५–श्वे० बरोड़िआ उमेदचंद दोलतचंद जूनागढ़, बी० ए०, श्वे० जैन कान्फरेन्सके मंत्री।

६–दि० शाह नानचंद पूनाभाई, भरुच, बी०ए०, मास्टर हाईस्कूल बड़ौदा, नित्य धार्मिक क्रियामें लीन व दि० जैन पाठशालाके निरीक्षक।

७–श्वे० उदानी मनीलाल हुकमचंद जेतपुर, एम० ए०, वकील, जाति उन्नतिके कामोंमें तय्यार।

८–,, अंकले यशवंत सांगप्पा बेलगाम, बी० ए०, सर्कारी रेवेन्यूमें चाकरी, धर्ममें बहुत प्रेम है।

यहांसे जो छात्र पढ़के गए हैं वे अच्छे २ पदों पर प्रतिष्ठित हैं पर उनकी धार्मिक प्रसिद्धिका पता नहीं है जैसे—

१–श्वे० परीख परभूलाल वाघजी गोंडल, एल. एल. बी., मुनसफ, गोंडल।

२–,, कोठारी प्रभाशंकर त्रीकमजी एल० एम० एंड० एस०, चीफ मेडिकल आफिसर छतरपुर (बुंदेलखंड)।

३–,, मोदी अमृतलाल बर्द्धमान वांसदा, एम० ए० एल० एल० बी०, नायब दीवान वांसदा स्टेट जिला सूरत।

४–श्वे० नाणावटी चंदुलाल बालाभाई बड़ौधा, बी० ए०, चीन देशमें शांगहाईमें व्यापार।

५—श्वे० शाह त्रिभुवन ओधवजी भावनगर, बी० ए० एल० एल० बी०, सोलीसिटर ।

६—श्वे० शाह सोमचंद करमचंद राजकोट, बी० ए० एल० एल० बी०, चीफ वकील नवानगर काठियावाड़ ।

इत्यादि ऊपर लिखित व्यवस्था दिखानेका प्रयोजन यह है कि बोर्डिंगके आश्रयसे कितना लाभ हुआ है । जब तक स्वतंत्र **जैन कालेज** मुख्य २ प्रान्तोंमें न हों तब तक ऐसे बोर्डिंगोंके होनेसे छात्र ऊंची शिक्षा लेकर लौकिक उन्नति करेंगे तथा धार्मिक शिक्षाके बीजसे अवश्य उनके जीवनमें धर्म शिक्षा-रहित छात्रोंकी अपेक्षा आचरण आदिमें फर्क रहता है ।

यहां पर जो छात्र रहते हैं उनको दिवसमें शामकी व्यालू करने व कंदमूल आदि अभक्ष्य पदार्थ न लेनेका नियम है ।

सन् १९१६ दिसम्बर तक जबसे बोर्डिंग खुला उसका संक्षिप्त नकशा और भी दिया जाता है ।

१६ वर्षका संक्षिप्त नकशा ।

शुरूसे ३११ श्वे० छात्रोंने लाभ लिया
„ २२२ दि० छात्रोंने „
„ १८ ने एल. एल. बी. परीक्षा पासकी
„ १८ „ बी० ए०
कुल २४९८०) छात्रवृत्तियें खर्च किया गया

विद्यार्थी लोनफंड।

इस बोर्डिंगकी कमेटीके आधीन और भी कई फंड हैं जिनका योग्य उपयोग होता है—उनमें एक बहुत उपयोगी फंड विद्यार्थी लोनफंड है। इसमेंसे विद्यार्थियोंको कर्ज दिया जाता है ताकि उनका अभ्यास न छूटे। इसके लिये सेठ माणिकचंदजीने ता: २९--१०--१९०४ को ५००) अपनी पुत्री फूलकौरकी यादगारमें दिये थे। इसमें रुपया आते जाते रहकर सन् १९१२ के अंतमें रु. १०१९ ।।।=)। थे इसमेंसे विलायत इंजीनियरीका अभ्यास करनेको जाते हुए वोरा छोटालाल हरजीवनदासको ३००) दिये गए थे। यह स्था० श्वे० भाई आजकल बड़ौदा कलाभवनके प्रिन्सिपल हैं। तथा ९०) बनारसीदास जलेसरको बी. ए. के अभ्यासके समय दिये गए थे। यह अब वकालत करते हैं। यह सब रुपया पीछे आगया है। सन् १९१२ में ४ छात्रोंको २२३।।=)।। कर्जके दिये गए थे। छात्रोंको थोड़ीसी मदद मिलने पर वे अपना अभ्यास अच्छी तरह आगे चला सकते हैं। ऐसे२ फंड स्थानोंको कायम करके छात्रोंकी सहायता करनी चाहिये।

सेठ माणिकचंदजीका शास्त्र प्रेम।

प्राचीन शास्त्रोंके उद्धारका प्रेम सेठ माणिकचंदमें जितना था इसका एक नमूना तो धवलादि ग्रंथोंकी छत्रावृत्तिसे आगे बता चुके हैं। दूसरा यह है कि जब विद्वानोंसे आपने मालूम किया कि स्वामी समन्तभद्राचार्यने श्री उमास्वामी कृत दशाध्याय तत्वार्थसूत्र पर गन्धहस्ति महाभाष्य नामकी ८४००० श्लोकोंमें वृत्ति बनाई थी तथा अबतक जिसका पता कहीं नहीं

छपता है तब आपने ' जैनमित्र ' अंक २ फर्वरी १९०० में यह नोटिस प्रसिद्ध किया कि जो कोई इस ग्रंथका हमको दर्शन मात्र करा देंगे उन्हें हम बड़ी खुशीसे ५००) रु० इनाम देवेंगे।

सूरतमें ही० गु० जैन पाठशालाकी स्थापना।

अपने पूज्य पिताकी यादगार कायम रखनेके लिये सं० १९५६ में जैन बोर्डिंगके सिवाय दूसरा स्तुत्य काम सेठ माणिकचंदजीने यह किया कि **सूरतमें** एक " हीराचंद गुमानजी जैन पाठशाला " मिती चैत्र सुदी ९ के दिन सवेरे खपाटिया चकलाके श्री चंद्रप्रभुके मंदिरजीमें स्थापित की। इसका महूर्त बड़ी धूमधामसे किया गया जिसका सर्व प्रबन्ध सेठ चुन्नीलाल झवेरचंदने किया। सेठ हरगोविन्ददास देवचंद मोती-रुपावालोंके सभापतित्वमें सभा हुई। बालक और बालिकाओंको इनाम दिया गया तथा तीन शिक्षक नियत करनेका ठहराव हुआ। मिती बैसाख सुदी ३ तक इसमें ३० लड़के व लड़कियां हो गई थीं जो संस्कृत, धर्म शिक्षा व इंग्रेजी आदि पढ़ते थे जिनमें प्रवेशिकाके ग्रंथ पढ़नेवाले ५ छात्र थे। इन्हींमें हमारे उत्साही **मूलचंद किसनदास**जी कापड़िया भी थे, जिनको सेठजीने रत्नकरंड श्रावकाचारकी पुस्तक देकर उत्साहित किया था तथा इन्हींको पाठशालाका प्रथम उपमंत्री और पीछेसे मंत्री भी किया था। यह पाठशाला कई वर्षों तक ठीक चली फिर सुस्त हो गई। छात्रोंने आना बन्द किया पर मूलचंदजीने बराबर विद्याभ्यास जारी किया जिससे आपने शास्त्रीके पास चंद्रप्रभ काव्य तक देख लिया व व्याकरण तथा धर्ममें महासभाके परीक्षालयसे रत्नकरंड श्रावकाचार,

तत्वार्थसूत्र, द्रव्यसंग्रह, कातंत्र पंचसन्धि-पट्लिंग और चंद्रप्रभ काव्य छह सर्गमें परीक्षाएं भी पास कीं और दो परीक्षाओंमें तीन २ रुपये पारितोषक भी प्राप्त किये।

सूरतमें दि० जैन मंदिरका जीर्णोद्धार।

सूरतमें एक अति प्राचीन मंदिर जुना पड़ा हुआ था जिसके भूमिग्रहमें ३ बड़े भव्य प्रतिबिम्ब थे, जिनमें एक जो श्री पार्श्वनाथजीकी है उस पर संवत् १२३५ है और दो पर कुछ भी लेख नहीं है। इस मंदिरका जीर्णोद्धार रु० ७०००) खर्च कर **शेठ चुन्नीलाल झवेरचंदने** कराया तथा इसकी जीर्णोद्धार प्रतिष्ठा मिती वैसाख सुदी ३ के दिन थी। वास्तुविधान, ध्वजारोहणादि कार्यको विधि पूर्वक करानेके लिये नांदणी (कोल्हापुर) के पंडित कलाप्पा भरमाप्पा निटवे आए थे। उत्सव बड़ी धूमधामसे किया गया था।

ललिताबाईका परिचय।

उत्सवमें श्राविकाश्रम बम्बईमें मुख्य आनरेरी संचालिका श्रीमती ललिताबाई अंक्लेश्वरसे आई थीं। यह मुनीम धर्मचंदजी सेत्रुंजयकी मानजी हैं। उस समय यह संस्कृतका अभ्यास कर रही थीं। सेठ माणिकचंदजीको इसके मिलनेसे बहुत हर्ष हुआ तथा मगनबाईजीको तो एक द्वितीय हस्त ही मानों मिल गया। इसकी भी वैधव्य दशा थी। उमर मगनबाईजीके बराबर ही थी। सेठजीने इस बाईको भी विद्याभ्यासमें खूब दत्तचित्त रहनेके लिये प्रेरित कर दिया। इस समय वे भूमिग्रहकी प्रतिमाएं ऊपर वेदी पर विराजमान की गईं। इस मंदिरका नाम श्री शांतिनाथजीका मंदिर प्रसिद्ध हुआ।

चलाई पर चित्तको सन्तोष न हुआ तब आपने एक नोटिस 'जैनमित्र' व 'जैनगजट'में अपने नामसे मुद्रित कराया। यह जैनमित्र अंक १०-११ प्रथम वर्ष सन् १९००में व जैन गजट अंक ४ छठा वर्ष सन् १९०१में मुद्रित है। वह इस भांति है—

५०) रु. इनाम।

" पुराण और शास्त्रोंके देखनेसे मालूम होता है कि पहिले समयमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार जातियें ही थीं। यद्यपि शूद्र जातिके गुणकर्मानुसार खाती, रंगरेज, दरजी, धोबी, कुम्हार, लुहार, आदि जातियें प्राचीनकालसे प्रसिद्धिमें हैं, परंतु ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तथा खासकर जैन वैश्योंमें जुदी २ जातियें अग्रवाल, खंडेलवाल, ओसवाल, जैसवाल, परवार, सैतवाल, बघेरवाल आदि नहीं थी और वर्तमानमें प्रसिद्धि है कि जैन जाति-कुछ समय पहले ८४ विभागोंमें विभक्त (बंटी हुई) थी, जिनमें की २०-२५ **जातियां** वर्तमान समयमें **मौजूद** भी हैं और अग्रवाल, खंडेलवाल आदि कई जातियोंकी उत्पत्तिके इतिहास भी प्रसिद्ध हैं सो इन बातोंके विचारनेसे स्पष्टतया सिद्ध होता है कि हमारी **यह पवित्र जैन जाति** (वैश्य जाति) **एक ही थी** परंतु पीछेसे अनेक कारणोंसे अनेक जातियाँ (टुकड़ा) हो गई और उनमेंसे ५०-६० जातियाँ हम लोगोंके जन्मसे ही नष्ट हो गई और रही सही जातियाँ दिनों दिन नष्ट होती जाती हैं जिसका उपाय अनेक जातिहितैषी महाशय अहो रात्रि सोच रहे हैं परंतु **अभी तक नष्ट होती हुई जैन जातियोंके [illegible]**

कोई भी उपाय दृष्टिगोचर नहीं हुआ। हमारी इच्छा है कि जातिहितैपी भाइयोंको पहिले यह बात जानना चाहिये कि:—

(१) हमारी बहुत बड़ी पवित्र जैन जातिके ८४ टुकड़े क्यों हुए ?

(२) और सिवाय २०--२९ जातियोंके अन्य जातियां शीघ्र ही क्यों नष्ट हो गईं ?

(३) और अब वर्तमानमें कौन २ सी जाति कहां २ पर कितनी २ मौजूद है ?

(४) और उनमेंसे कौन २ सो जाति शीघ्र ही नष्ट होने वाली है ?

(५) और उनके नष्ट होनेके मुख्य २ कारण कौन २से हैं ?

(६) तथा नष्ट होती हुई उन जातियोंकी वृद्धि (उन्नति) करनेके कौन २ उपाय हैं:—

इन ७ **प्रश्नोंका उत्तर** प्रमाण सहित सविस्तर मिले विना जातिहितैपियोंके जात्युन्नति कारक उपाय करने हमारी समझमें तो वृथा ही हैं। इस कारण हम हमारी जातिके परम-हितैषी शोधक विद्वानोंसे **हाथ जोडकर प्रार्थना** करते हैं कि जो महाशय उक्त प्रश्नोंके उत्तररूप एक "**जैनजाति-दर्पण**" नामक इतिहासकी पुस्तक लिखकर भेजेंगे उनको जातिहित साधनेका महान पुण्य और यशकी प्राप्तिके सिवाय उन पुस्तकों-मेंसे ९ **विद्वानोंकी कमेटीद्वारा** जो सबसे अच्छी और प्रमाणीक समझी जायगी उसके रचयिताको ५०) **रु. नकद इनाम** दिये जांयगे। आशा है कि हमारी इस प्रार्थना पर विद्वज्जन

अवश्य ही ध्यान देंगे। जिनको यह पुस्तक बनाना हो वे प्रारंभसे पहले हमको सूचना देकर प्रारंभ करें नहीं तो वह पुस्तक कमेटीमें पेश नहीं हो सकेगी।

जैनियोंका हितैषी—
जौहरी माणिकचंद पानाचंद,,
पोष्ट कालबादेवी, बम्बई।

इस ऊपर लिखित विज्ञापनको पढ़नेसे सेठ माणकचंदजीमें **जातिप्रियता** कितनी चरम सीमाकी थी उसका **साक्षात् पता** लगता है। जैसे आज कल कोई २ विद्वान् जैन जातिकी कमीके कारणोंको ढूंढ रहे हैं व उसकी वृद्धिके उपायोंको सोच रहे हैं ऐसे ही सेठजीको चिन्ता थी।

विज्ञापन देने पर भी अबतक इस जैनजातिदर्पणको किसीने भी नहीं लिखा इसका कारण यही है कि **हमारे जैन विद्वान प्राचीन खोज लगानेमें परिश्रम नहीं उठाते।** अब भी यदि कोई इस पुस्तकका पाठक इस सूचनाके अनुसार पुस्तक तय्यार करे तो वह सेठजीकी स्मृतिमें ही समझी जायगी।

पाठकोंको आगे चलकर मालूम होगा कि जातियोंकी संख्या आदिका ठीक २ पता लगानेके लिये सेठजीने

दि. जैन डाइरेक्टरी अनुमान २००००) खर्च कर दिगम्बर जैन

बनानेका बीज। डाइरेक्टरी तय्यार कराके छपाई है जिसका मूल्य ८) है इसके देखनेसे जातियोंकी कमीका पूरा २ पता चलता है पर जो २ विचार ऊपर दर्शाए गए हैं उन ७ प्रश्नोंके उत्तरमें अभीतक किसीने कलम नहीं उठाई है।

इस सभाके स्थापित होनेका पक्का विचार तो कार्तिक सुदी १४ वि० सं० १९५६ को बम्बईकी सभामें बम्बई प्रान्तिक हो चुका था पर प्रान्तके सभासदोंको नियमानुसार सभाका कार्यारंभ। पालीके अनुसार एकत्र करनेमें करीब १ वर्ष बीत गया। मिती आश्विन सुदी २ सं. १९५७ को इसका एक परोक्ष अधिवेशन होकर २१ सभासदोंकी सम्मतिसे ८ प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

कार्यकारिणी सभा २८ सभासदोंकी नियत हुई उनमेंसे मुख्य सभासद व कार्यकर्ता यह हुए—

सभापति—सेठ माणिकचंद पानाचंदजी।

उपसभापति—राजा दीनदयालजी।

महामंत्री व 'जैनमित्र' के सम्पादक—पंडित गोपालदासजी बरैया।

कोषाध्यक्ष—सेठ गुरुमुखराय सुखानंद।

मंत्री विद्याविभाग-अण्णाप्पा फड्याप्पा चौगुले बी. ए.।

मंत्री उपदेशक विभाग—सेठ नाथारंगजी।

मंत्री तीर्थक्षेत्र-सेठ चुन्नीलाल झवेरचंद जौहरी।

पुस्तकाध्यक्ष-पंडित धन्नालालजी।

शोलापुर, बेलगांव, आमोद, सोजित्रा, आदिके सेठ हीराचंद, कुवेरशा भरमाप्पा हंगले, हरजीवन रायचंद, शाह सावलदास प्रभुदास आदि सभासद हुए। मगसर सुदी १५ सं. १९५७ को बम्बई सभाने अपने उपदेशक भंडार, अनाथालय, 'जैनमित्र' के शिखरकी

सम्बंधी काम प्रान्तिक सभाके ज़िम्मे कर दिये और यह अपना काम ज़ोर शोरसे चलाने लगी।

सेठ माणिकचंदजीकी दानार्थ प्रेरणा।

जैसे सेठ माणिकचंदजी स्वयं दान करते थे वैसे दूसरोंको भी प्रेरित करते थे। बम्बईके **सेठ माणिकचंद लाभचंद चौकसीकी** विधवा पत्नी नवलबाई गु. भादो वदी ११ सं. १९५६ को गुजर गई। इसको धर्म व विद्याकी रुचि थी। सेठ माणिकचंदजी इसको धर्मार्थ खर्च करनेकी सदा प्रेरणा करते रहते थे। मरणके पहले इसने १२०४२) का दान करके यह वसीयत नामा किया कि—

९००१) रु. के ब्याजसे बम्बईमें एक जैन पाठशाला असके पतिके नामसे चले।

२०६९) शुभ खातेमें ट्रष्टियोंकी इच्छानुसार।

६०२) मेंसे १००) चांदीकी प्रतिमा बम्बई मंदिरमें, २९९) सोनेका छत्र सूरतके जूने मंदिरमें, ९१) फलटनके आदिनाथ मंदिरमें छत्र व उपकरण, २०१) कर्मदहन, जिन गुणसंपत्ति, सोलह कारण व दशलक्षणीके उद्यापनमें।

३१५) शिखरजी, गजपंथा, चंपापुर, तारंगा, गिरनार, मांगीतुंगी, पावापुर, कुंथलगिरि, पालीताणा, केशरिया, दहीगांव, सूरतके विद्यानंद स्वामी इन १२ स्थानोंमें २५) पचीस २ रुपये व १५) बम्बईके तेरापंथी मंदिरमें चांदीका छत्र।

२०९) मरण क्रियामें खर्च।

२८९४) सम्बन्धियोंको बांटा जाय।

कुल १२०४२)

सेठ माणिकचंद पानाचंद, सेठ प्रेमचंद धरमचंद, सेठ हीराचंद नेमचंद शोलापुर, शाह भगवनदास कोदरजी तथा शाह लल्लूभाई लक्ष्मीचंद ट्रष्टी नियत हुए।

श्री० चतुरबाईका परलोक गमन।

श्रीमती मगनबाईके पतिके वियोगसे माता चतुरबाईके दिलको बड़ा भारी धक्का लगा। एक तो वह पहले ही बीमार रहती थी अब अधिक बीमार रहने लगी। जब जब यह मगनबाईजीको देखती इसके आंसु भर आते थे। दूसरा दुःख उसके दिलमें पुत्रका जीवित न रहना था। इसको २ पुत्र व ४ पुत्रियोंका लाभ हुआ पर केवल २ लड़कियें ही जीवित रहीं, शेष सन्तानें केवल गर्भका भार देकर ही व कुछ दिन माताकी गोदको भरी हुई करके खाली कर गईं। शरीरकी **अस्वस्थता** और मनकी दुर्बलता दोनोंने इसको ऐसा दबाया कि गु० मिती मगसर सुदी ८ सं० १९५७ रात्रिको इसको भरोसा हो गया कि अब मेरा जीवन नहीं रहेगा, मगनबाईको पास बिठा लिया। मगनबाईको अंतरंगमें बडा खेद हुआ। सेठजी भी आगए और एक दफे प्रेमदृष्टिसे देखकर बोले—तेरे स्मरणार्थ हम २०००)का दान करते हैं। इसकी दान सुची भी आप कहते गये और मगनबाईजी लिखती गईं। इस भांति दान किया—

१०००) बम्बईके हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगके विद्या-

सेठजीकी द्वितीय पत्नी नवीबाई.

J. V. P. Surat. (देखो पृष्ठ ३४२)

सेठजीकी प्रथम पत्नी श्रीमती चतुरबाई.

देखो पृष्ठ (१४३) J. V. P. Surat.

थियोंको जो धर्मकी परीक्षामें प्रथम रहे उसे इसके व्याजसे प्रति वर्ष इनाम देना ।

१००) जीवदयाके लिये ।

१००) बाहरगांवके मंदिरोंमें उपकरण ।

१००) बम्बईमें दशलक्षणी पर्वके १० दिन ४ वर्ष तक २९) की पूरी गरीबोंको बांटना ।

१००) सुगंधदशमी व्रत और फलदशमी व्रतका उद्यापन करना ।

१००) अन्य धर्मकी टीपोंमें देना ।

१००) बम्बईके उपदेशकभंडारमें ।

१००) बम्बई प्रान्तके तीर्थक्षेत्र खातेमें ।

९०) केशरियाजीमें सोनेका छत्र भेजना ।

९०) सम्मेदशिखर भंडार ।

९०) पालीताना ,,

९०) पावागढ़ ,,

२९) गजपंजा ,,

५०) पावापुर ,,

९०) शोलापुरकी चतुर्विधदानशाला ।

२९) गिरनार भंडार

२९) चंपापुर ,,

२९) औषधालय केकड़ी ।

१६) सूरत जैन पाठशालाके बालकोंको इनाम ।

९०) मगनबाईको गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी अहमदाबादका लाइफ मेम्बर बनाना ।

५०) मगनबाईको मगनभाई प्रतापचंद जैन लाइब्रेरी—सूरतके लिये
गु० वर्नाक्युलर सोसायटीका लाइफ मेम्बर बनाना ।

२२१६ कुल जोड ।

इन दो सोसायटियोंका लाइफ मेम्बर बननेसे गुजराती भाषा-की पुस्तकें सब पढ़नेको प्राप्त हो सक्ती हैं । मगनबाई विद्यामती हो इसी आशासे मातापिताने यह कार्य किया ।

इस भांति दानका संकल्प किया । मगनबाई रूपाबाईजी आदि रात्रिभर धर्मका उपदेश व णमोकार मंत्र सुनती रहीं । प्रभात होते ही चतुरबाईका आत्मा शरीरको छोड़कर चल दिया । इस समय बाईकी उम्र करीब ४० वर्षकी ही थी ।

सेठ माणिकचंद और चतुरबाईका परस्पर प्रेम हमेशा ही रहा था इसलिये सेठजीका एक बड़ाभारी सहारा जाता रहा । इस समय छोटी कन्या तारामतीकी अवस्था करीब ७ वर्षके थी । यह गुज-राती शालामें पढ़ने जाती थी ।

सेठ माणिकचंद और भतीजे प्रेमचंद अब धार्मिक व सामाजिक कार्योंमें और भी अधिक भाग लेने लगे ।

४२ ग्रामोंका विरोध मिटाना। गुजरात देशमें **ओरान** प्रान्तके ४२ ग्रामोंके २५० घर हैं । इनमें कई वर्षोंसे विरोध होनेके कारण परस्पर आहार व विवाह सम्बन्ध बंद था । ता० १० जनवरी सन् १९०१ को सेठ माणिकचंद और प्रेमचंद प्रान्तिक सभाके उपदेशक मुन्नालाल राजकुमारको साथ लेकर ओरान आए, उस समय सर्व ग्रामवासी एकत्र हुए ।

उवदेशकसे उपदेश कराया । फिर सेठोंने सर्व भाइयोंको इस तरह युक्तिपूर्वक समझाया कि उनका परस्परका विरोध मिट गया और

सर्व एक हो गए। तब सेठजीने अपने खर्चसे उन सर्व भाइयोंको एक पंक्तिमें बिठाकर **भोजन** कराया। धर्मके वात्सल्य गुणको बढ़ाकर आपने बड़ाभारी उपकार किया।

आकलूजकी प्रतिष्ठा और प्रान्तिक सभाका अधिवेशन।

शोलापुर जिलेमें बार्सी स्टेशनसे २० मील आकलूज ग्राम है। यहां २० घर दि० जैनोंके हैं। प्रसिद्ध दानी व व्यापारी जिनवाणीभक्त **सेठ नाथारंगजी गांधी**का यही जन्म ग्राम है। सेठ नाथारंगजीके ७ पुत्र थे। इस समय सेठ शिवरामके सिवाय सेठ गंगाराम, रामचंद्र, आदि छहों भाई पुत्रादि सहित मौजूद थे। इनकी दूकानें पंढरपुर, बीजापुर, आकलूज तथा बम्बईमें हैं। एक जिन मंदिर पुराना था पर धर्मध्यान ठीक न होनेके कारण दूसरा मंदिर बनवाया था, इसकी जिनबिम्बप्रतिष्ठाका उत्सव मिति माघ सुदी ९ सं० १९५७में १३ तक था। प्रतिष्ठाकारक शोलापुर पाठशालासे तय्यार हुए व वहां प्रथमाध्यापक श्रीमान् पंडित पामू गोपाल शास्त्री थे। इसी अवसरपर बम्बई प्रांतिक सभाको निमंत्रित किया गया था, इस कारण २००० के अनुमान नरनारी एकत्रित थे। बम्बईके जौहरी माणिकचन्द पानाचन्द सर्व कुटुम्ब सहित व पंडित गोपालदासजी आदि पधारे थे। प्रांतिक सभाकी तीन बैठकें हुईं। प्रथम दिन सभापति रा० रा० मोतीचन्द मलूकचन्द कलुनकर फल्टननिवासी हुए। दूसरे दिन माघ सुदी ११ को हमारे चरित्रनायक **सेठ माणिकचंदजी** सभापति हुए। आपने चौथे प्रस्तावपर बहुत जोर देकर कहा कि- **हम जैनियोंको जैन पद्धतिसे विवाह करानेका** रिवाज

डालना चाहिये। प्रस्ताव पांचवां यह पास किया कि **जैन समाजकी स्त्रियोंमें धार्मिक व तदविरुद्ध सांसारिक शिक्षा**का प्रचार किया जाय। ७ वें प्रस्तावमें पं० धन्नालाल उपदेशक विभागके मंत्री और सेठ **प्रेमचन्द मोतीचन्द जौहरी** सरस्वती भंडारके मंत्री नियत हुए। सभामें सेठजीके मित्र पालीतानेके मुनीम **धर्म-चन्दजी** भी पधारे थे। आपने सत्रुंजय तीर्थपर धर्मशालाकी सहायताके लिये लोगोंका ध्यान खींचा। सुदी १२ के दिन तीसरी बैठकमें भी हमारे सेठजी ही सभापति हुए। इस जल्सेमें पंडित गोपालदासने बम्बईमें एक संस्कृत विद्यालयके स्थापित होनेकी आवश्यक्ता बताकर अपील की तो तुर्त १३८५)का चन्दा हो गया, जिसमें १०१) सेठजीने अपने पूज्य पिताके नामसे दिये। इस प्रतिष्ठामें जैनसिद्धांतके महत्वपर पं० गोपालदासजीके पब्लिक व्याख्यान बहुत प्रभावशाली हुए।

प्रांतिक सभाके साथ स्त्रियोंकी प्रथम सभा।

प्रांतिक सभामें स्त्रीशिक्षाका प्रस्ताव पास होनेपर माघ सुदी १२ दुपहरको ६०० स्त्रियोंने एकत्र हो **स्त्रीसभा** की। इसमें अंकलेश्वरकी ललिताबाई, शोलापुरकी रखाबाई, आकलूजकी ज्ञानीबाई, बम्बईकी माता रूपाबाई और **मगनबाई**जीने धर्म, आचरण, मिथ्यात्व और कुरीति निवारणपर व्याख्यान दिये। **मंगनबाई**जीने अनित्यपंचाशतके संस्कृत श्लोक सार्थ सुनाए, जैन कन्याशाला स्थापित करनेकी प्रेरणा की व पढ़नेपर जो दिया। अनेक स्त्रियोंने पढ़ना स्वीकार किया। इसमें अजैन प्रतिष्ठित स्त्रियां भी आई थी जो व्याख्यान सुनकर बहुत प्रसन्न हुई।

पं० गोपालदास और धन्नालालजीको मानपत्र ।

माघ सुदी १३ की रात्रिको सर्व सभाकी ओरसे **सेठ माणिकचन्दजीने** पंडित गोपालदास बरैया और पंडित धन्नालालजी कासलीवाल-को मानपत्र दिया, क्योंकि इन दोनों विद्वानोंके प्रयत्नसे सभामें आगन्तुकोंको बहुत धर्मलाभ हुआ था। शास्त्रस्वाध्यायकी आवश्यक्ता बताए जाने पर २५० भाइयोंने स्वाध्यायका नियम लिया था। सेठ नाथारंगजीने ६ जिवनारें दीं। १३९१) मंदिर भंडार व २०१) संस्कृत विद्यालय बम्बईको दिया तथा ४५० धर्मपरीक्षा, सटीक, ४५० अकलंकस्तोत्र सटीक व ४५० मोतियोंकी जापें सेठ हीराचंद नेमचंदकी रायसे धर्मप्रचार हेतु बांटी।

महारानी विक्टोरियाका वियोग ।

इसी वर्ष ता० २२ जनवरी १९०१ को भारतपर अखंड राज्य करनेवाली महारानी (एम्प्रेस) विक्टोरिया परलोकको सिधार गईं। आपने १८ वर्षकी उम्रमें सन् १८३७ को राज्य ग्रहण करके ६४ वर्ष राज्य किया। इनके पीछे महाराजा सप्तम एडवर्ड सिंहासनारूढ़ हुए।

द० म० जैन सभामें सेठजीको अभिनंदनपत्र ।

दक्षिण महाराष्ट्र प्रांतमें जैनियोंकी संख्या बहुत है जो मराठी कनड़ी भाषाके बोलनेवाले व अधिक खेतीका व्यापार करनेवाले हैं। इस प्रांतकी दशाके सुधार हेतु एक सभा २ वर्षसे स्थापित हुई थी। इसकी तीसरी बैठक माघ सुदी १ ता० २१-१ १९०१से कोल्हा-

पुरके पट्टाचार्य **लक्ष्मीसेन भट्टारकके** सभापतित्वमें श्रीअतिशय क्षेत्र **स्तवनिधिपर** हुई। इसीमें नियमावली ठीक की गई तथा चौगले बी० ए० एल एल० बी० कील जो बम्बई बोर्डिंगके सुप्रिंटेंडेंट रह चुके थे व सेठ माणिकचंदकी छात्रवृत्तिसे विद्या लाभमें उत्तेजित हुए थे, ऑनेररी सेक्रेटरी नियत हुए। कोल्हापुरमें संस्कृत पाठशालाके लिये १०००)का चंदा हुआ तथा यह तय हुआ कि बम्बईके प्रसिद्ध व्यापारी सेठ माणिकचंद पानाचंदजी जौहरीने एक बोर्डिंग स्कूल बांधकर अंग्रेजी व संस्कृत विद्याभिलाषी जैन विद्यार्थियोंके लिये उत्तम प्रकारकी तजवीज की है व विशेष करके दक्षिणके विद्यार्थियोंको अत्यानंदसे उत्तेजन देते हैं इसलिये उनका अत्यंत उपकार मानकर इस सभाकी **ओरसे उन्हें एक आनंद प्रदर्शक पत्र भेजा जाय** तथा इसी भांति इस कार्यमें उत्तेजना देनेके कारणभूत शोलापुरके सेठ हीराचंद नेमचंदको भी एक अभिनंदनपत्र भेजा जाय।

सेठ माणिकचंदका द्वितीय विवाह।

आकलुज बिम्बप्रतिष्ठाके समयपर शोलापुर, फलटन आदिके बहुतसे जैनी पधारे थे। सेठ माणिकचंदजीको मिलकर अनेकोंने ज़ोर दिया कि आपके पुत्र नहीं है, पुत्र विना आप ऐसे प्रसिद्ध सेठकी शोभा नहीं है, तथा यद्यपि आपकी अवस्था करीब ४९ वर्षकी है पर आपका शरीर दृढ़ परिश्रमी और सब तरह बलिष्ट है, आप अवश्य विवाह करा लेवें। सेठजीकी बिलकुल इच्छा नहीं थी कि मैं ऐसा करूं, किन्तु यही भावना थी कि अब हमें धर्मसेवा व परोपकार ही करना है, तौ भी जब भावज

रूपाबाई व सेठ पानाचंदने बहुत ज़ोर दिया तब आपने स्वीकार कर लिया।

फल्टनमें एक बीसा हूमड़ हरीचंद दोदु थे उनकी लड़की नवीबाई उर्फ फूलुबाई हैं, उसीके साथ सेठजीका, चतुरबाईके विवाह मरणके ४ मास पीछे ही, चैत्र मासमें साधारण रीतिसे हो गया। सेठजी पुत्रकी आशासे नवीबाईको लेकर बम्बई आगए। वह पढ़ी लिखी नहीं थीं इसलिये सेठजीने उनको अध्यापिका रखकर लिखना पढ़ाना सिखाया।

रा० ब० सेठ मूलचंदजीका वियोग और सेठ माणिकचंदके चित्तका विचार।

जैन समाजमें इस समय राय बहादुर सेठ मूलचंदजी अति प्रख्यात थे। आप धर्मपालनमें बड़े प्रवीण व शास्त्रके ज्ञाता थे। आपने यद्यपि कोई विद्योन्नतिका महा स्तम्भ नहीं खड़ा किया, पर अजमेरमें पाषाणकी नसियां बनवाकर उसमें सुवर्णकी अयोध्या, ऋषभदेवके कल्याणकोंका दृश्य बनवानेमें व श्रावक मुहल्लेमें मनोहर सुवर्ण व मीनेकी पच्चीकारी सहित मंदिर बनवाने व उसमें सुवर्णमय समोशरण स्थापित करनेमें बहुत द्रव्य लगाया तथा उस मंदिरमें स्थान स्थानपर चर्चा श्लोक, स्तुति, स्तोत्र लिखवाए। आजके दिन अजमेरमें ये दर्शनीय पदार्थ हैं। जैन अजैन सब दर्शनका लाभ लेते हैं। मिती आषाढ़ सुदी २ ता० १८ जून १९०१ को आप भी इस पुद्गलमई शरीरको यहीं छोड़कर चल बसे। आपके मरणके समाचार पाकर सेठ माणिकचंदजी अपनी तरफ देखते हुए। उसी समय इनको

अपने परिग्रहप्रमाण व्रतकी याद आ गई और यह सम्मिलित जायदादका हिसाब विचारने लगे। अपने प्रमाणके अनुमान लक्ष्मीको होती हुई देखकर आपने यह इरादा किया कि अबकी दिवालीपर दूकानका सब हिसाब बनवाकर पक्का निश्चय करके फिर अपना सम्बन्ध कार्य्यसे हटा लूंगा और रात्रि दिन धर्म व जातिसेवामें अपना शेष जीवन बिताऊंगा।

बम्बईमें रथोत्सव और प्रान्तिकसभा-की बैठक।

मिती आसोज सुदी ८ से १२ तक बम्बईमें रथोत्सव हुआ। खुरजे व मेरठसे रथ आये थे। दो जलेब बड़े धूमसे निकलीं थी, जिनमें २०६१।)। की उपज हुई। माणिकचन्द पानाचन्दने १२९) देकर चंवर ढोरनेकी बोली ली थी तथा १००१) देकर एलिचपुरके सेठ लालासा मोतीसाकी तरफसे तानासावजीने श्रीजीकी खवासीकी बोली ली थी। इसमें शोलापुर आदिके अनेक भाई पधारे थे। बम्बई प्रान्तिक सभाकी बैठकमें राजा दीनदयालके पुत्र **राजा धर्मचंद** सभापति हुए। सेठ माणिकचंदजीने स्वागतकारिणी सभाके प्रमुखकी ओरसे भाषण पढ़ा। सभामें मुख्य प्रस्ताव बम्बई संस्कृत विद्यालयके लिये ध्रुवभंडार करनेका हुआ।

संस्कृत जैन विद्यालयकी स्थापना।

आश्विन सुदि ९ के प्रातःकाल हीराचन्द गुमानजी जैन बोर्डिङ्ग स्कूलके मकानमें संस्कृत जैन विद्यालयका शुभ मुहूर्त किया गया। राजा दिनदयालके हाथसे विद्यालय खोला गया। छात्रोंको तीन विद्वानोंके द्वारा धर्मशास्त्र, व्याकरण और न्यायका पाठ दिया गया।

सभामें ७ वाँ प्रस्ताव सेठ माणिकचंदजीने उपस्थित किया कि बालविवाह, वृद्धविवाह और कन्याविक्रयका रिवाज बन्द किया जावे।

इस जल्सेमें एक दिन सेठ प्रेमचंद मोतीचंदने जिनवाणीके उद्धारके लिये बहुत ज़ोरदार भाषण दिया था। सभामें विद्यालयके ध्रुवभंडारके लिये १२०००) के अनुमान चन्दा हो गया। इसमें सेठ माणिकचंद पानाचंदने १००१) दिये थे।

गु० सं० १९५७ के अंतका सर्व हिसाब तय्यार हो गया।

सेठजीका व्यापारसे पृथक् होना।

सेठ माणिकचंदने अपना परिग्रहप्रमाण व्रत पूर्ण होता हुआ जान सेठ पानाचंद और नवलचंद तथा प्रेमचंदको बिठाकर कहा कि हम अब दूकानमें शामिल नहीं रह सक्ते, क्योंकि हमारा नियम अब हमें साथमें व्यापार नहीं करने देता है। भाइयोंको सेठ माणिकचंदके नियमका हाल नहीं मालूम था। सब बड़े आश्चर्य्यमें पड़े कि अति परिश्रमी सेठ माणिकचंद जिनके द्वारा व्यापार दिनपर दिन उन्नतिपर है इस तरह क्यों सम्बन्ध छोड़ते हैं। इनको समझाया भी पर इन्होंने तो अब पेन्शन लेनी विचारी थी। अपनेको समाजसेवाके लिये बलि देना था, परोपकारार्थ तन मन धन लगाकर स्वहित करना था। इसी बातपर जोर दिया कि हमारा भाग अलग कर दिया जाय। तब पानाचंदजीने खूब विचार करके जो ज़मीन व मकानोंकी स्थावर मिलकियत थी, उसको बांट दिया। सेठ माणिकचंदके भागमें प्रसिद्ध जुबिलीबागके सिवाय कई और मकान भी आए। जवाहरातकी कीमत जोड़कर विभाग किया गया।

सेठ माणिकचंदने और भी कहा कि इस धनमेंसे कुछ धर्मादा निकालना चाहिये फिर भाग करना चाहिये।

रु० २ लाखके दानका संकल्प।

इस पर बम्बईमें धर्मशाला आदि बननेके लिये **दो लाख**का धन धर्मादेके लिये निकालकर शेषका भाग हुआ। दूकानका सम्बन्ध अब सेठजीने छोड़ दिया, तौभी आप प्रतिदिन ४ या ५ घंटे दूकानपर बैठते थे। वहांपर धर्म सम्बन्धी पत्रव्यवहार किया करते थे। किसीको यह प्रतीत नहीं होता था कि इन्होंने अपना सम्बन्ध दूकानसे छोड़ दिया है। सेठ माणिकचंदजीने बड़ी दोनों पुत्रियोंके नामपर एक २ मकान खरीद दिये और ताराब्हेनके नामसे रोक रु० जमा किये जिससे इनको अपने जीवनमें कोई कष्ट न हो।

मगनबाईकी निर्लोभता।

मगनबाईकी खास जायदाद कई लक्ष रु० की थी और यही अपनी सास ससुरके पीछे उस सब धनकी स्वामिनी थी, पर पिता माणिकचंदने उसका मन उस धनसे फेर दिया। यही कहा कि तेरे पालनके लिये यहां कुछ कमी नहीं है, यदि जो तू अभी श्वसुरालके धनके लोभमें पड़ेगी तो तू अपने आत्माका हित नहीं कर सकेगी। मगनबाई उसी वक्त इस बातको समझ गई। उस भारी सम्पत्तिसे मोह हटा लिया और बम्बईमें ही एक पुत्रकी भांति सेठ माणिकचंदजीके साथ रहने लगी। कभी२ दो चार दिनको परदेशीकी भांति श्वसुरालमें हो आती थी। यह बड़े सन्तोषसे पुत्री केशरको पालती और धार्मिक विद्याका अभ्यास करती थी।

सेठ पानाचन्दकी शिखरजीकी यात्रा।

इसी संवत् १९५८ में सेठ पानाचन्दजी अपनी पत्नी रुक्मणी-बाई और दो कन्याएँ व छोटे पुत्रके साथ श्री शिखरजीकी यात्रार्थ गए। साथमें सेठ प्रेमचन्द मोतीचन्द जौंहरी और सेठ पाना-चन्दके साले मोतीलाल और जंवरलाल भी थे। बड़े आनन्दसे यात्रा की, पर जब श्री पार्श्वनाथजीकी टोंकपर पहुंचे तब वहां यह मालूम किया कि राय बद्रीदासजी (श्वे०) कलकत्तेवाले यहां प्रतिमाजी विराजमान करना चाहते हैं तथा आमंत्रण पत्रिकाएँ निकाली हैं। आपने चिट्ठीमें सब समाचार माणिकचन्दजीको लिखे और शिखरजीसे शीघ्र ही बम्बई लौट आए।

बम्बईमें खबर होते ही श्रीमान् **लॉर्ड कर्जन**को तार दिया गया कि श्री पार्श्वनाथजीकी टोंकपर जैसे सदासे चरण पादुकाओं-का स्थापन है वैसे ही रहे—प्रतिमा विराजमान न की जावें। तथा जब पानाचन्दजी बम्बई आये तब वहांकी तय्यारीका हाल कहा कि राय बद्रीदास माह सुदी १३को चरणोंके स्थानपर प्रतिमा वि-राजमान करनेवाले हैं। और सेठ माणिकचन्दको जोर दिया कि वे स्वयं जावें और इस बातको रुकवावें। सेठ माणिकचन्द तीर्थरक्षामें पूर्ण लौलीन थे। जबसे महासभाने यह काम बम्बई सभाके आधीन किया तबसे ही रात्रिदिन शिखरजीकी सुव्यवस्थाके ही प्रबन्धमें थे। आपके उद्योगसे सीढ़ी तोड़नेके हर्जेमें श्वेताम्बरियोंपर ५०००) की दीवानीमें नालिश की गई थी जिसके लिये समाजने ६०००) के करीब चन्दा एकत्र किया था सो खर्च करके रु० १८४९) की

डिगरी श्वे० पर जज साहबने दी थी । एक चिन्तासे मुक्त हुए ही थे कि दूसरी यह फिकर हुई ।

शिखरजीकी रक्षार्थ सेठ माणिकचंदका दौरा और उपसर्ग निवारण।

आप उसी दिन चलनेको तय्यार हुए । आपके साथ सेठ पानाचंद रामचंद शोलापुर, सेठ नाथारंगजी गांधी आकलूज, लल्लूभाई प्रेमानंद बोरसद, बालचंद व हीराचंद आदि भाई भी गए । आप नागपुर होते गए और वहांकी पाठशालाके लिये ६९००) का चंदा कराया । वहांकी फूट मेटी व सेठ गुलाबसाव आदि तीन भाई शिखरजीके लिये साथ हुए । शिखरजी पहुंचे । गीरीडी व आराके भाई आए । वहां लाला सुलतानसिंह दिहलीवाले मिले । उन्होंने चरण उखाड़नेकी बात कही व रुकवानेमें पूर्ण मदद देनेका वचन ही न दिया, किन्तु अपने संघसे १०००) जमा कराके दे दिया । कोशिश चल ही रही थी कि लार्ड कर्जनने रांचीके डिप्टी कमिश्नरको जरूरी प्रबन्धके लिये हुक्म दिया । वहांसे चरण उखाड़नेकी मनाईका हुक्म आ गया । उस समय सेठजीने बीसपंथी कोठीके हिसाबादिको संतोषजनक न पाकर वे आरा गए । वहांके पंचोंको समझाया । उन्होंने चैत्र सुदी १ तक सब हिसाब प्रसिद्ध करने व १ साल तक अच्छी कारवाई करनेका वचन दिया । सेठ माणिचंदजी फिर बम्बई आ गए । यहां आने पर खबर आई कि प्रतिष्ठा होनेकी तारीख पर २०० कान्सटेबल, दारोगा व सुप०को भेजा गया जिससे मूर्तिकी प्रतिष्ठा न हो सकी । चरण सदाकी भांति विराजित रहे । सर्कारके इस न्यायसे सेठजी व सर्व दिगम्बर जैन समाजको सन्तोष हुआ । इसी वर्ष सेठ माणिकचंदने

पजीकी बाड़ी नामके स्थानको ३२०००) में खरीद किया, पर यह स्थान पीछेसे धर्मशालाके योग्य न जान कर यों ही रहने दिया।

श्रावक मंडली शोलापुरने सेठ माणिकचंदजीके धार्मिक कृत्यों पर मुग्ध होकर ता० ६ अक्टूबर १९०१ को एक **मानपत्र** अर्पण किया जिसकी नकल इस भांति है—

मानपत्र—

जवेरी शेठ माणेकचंद पानाचंद जोग्य.

प्यारा धर्मबंधु,

जत अमे नीचे सही करनारा सोलापुरना दिगंबर जैन श्रावको आप साहेबनी स्वधर्म विषे अत्यंत प्रीति देखीने आ मानपत्र आपने आपवानी रजा लईये छीये ते कृपा करी स्वीकारशो.

आपणा जैन बंधुओ स्वधर्म संबंधी तेमज राजकाज संबंधी केवलणीमां घणा पछात पड़ेला जोईने तेमने धर्म संबंधी अने राजकाज, वैदकीय, शिल्पशास्त्र वगेरेनी ऊंचा प्रकारनी केळवणी मेळववानुं अतिशय जरूरनुं साधन जे "बोर्डिंग हाऊस" ते मुंबई जेवां म्होटां शहेरमां पोतानां पोणो लाख रुपिया आशरे खर्च करीने आपे बांधी आप्युं तेथी आपनी धर्मकृत्योमां खरी उदारता प्रगट थाय छे.

श्री सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर ज्यां वीस तीर्थंकर अने असंख्यात मुनी मोक्ष पाम्यां छे त्यां जात्राळुना सगवड माटे पगथियां करवानुं काम चाल्युं हतुं. ते आपणा श्वेतांबर भाईओए वगर कारणे उखाडी नांखीने क्लेश वधार्यो; ते काममां आपे आगेवान थई मेहनत लईने सरकारनी अदालतमां जय मेळव्यो. तेथी आपणे ठेकाणे स्वधर्म वात्सल्य गुण तारीफ करवा लायक छे एम स्पष्ट देखाय छे.

जयधवल, महाधवल जेवां प्राचीन ग्रन्थोना जीर्णोद्धार करवामां

पण आप साहेब आगेवान थई सर्वे भाइओनी मददथी काम चलाव्युं छे तेथी ज्ञानवृद्धि माटे आपनी अत्यंत उत्कंठा देखाई आवे छे.

श्री गंधहस्तमहाभाष्य नामना अत्यंत उपयोगी परंतु अदृष्ट थयेला धर्म पुस्तकनी तपास लगावी आपनारने पांचसो रुपियानुं इनाम आपे जाहेर कीधुं तेथी आपना विषे प्रवचनवात्सल्य गुण रहेलो जणाई आवे छे.

तेमज आपणा केटलांक गरीब अने निराश्रीत जैन बंधुओने विद्याभ्यास करवा माटे योग्य पारितोषिक अने स्कालर्शिपो आपीने उत्तेजन आपो छो, तेथी जैनधर्मना यथार्थ दाननो मार्ग आप बतावी आपो छो.

एवीज रीते स्वधर्म संबंधी हरएक काममां आप पोताना तन, मन, धनथा महेनत करीने अमारा जेवा धर्मबंधुओने पण साथे लेई पुण्यनो लाभ आपो छो. एवां तमारा सद्गुणो जोईने अमने घणो संतोष थयो छे. ते संतोषना बे बोल आ मानपत्रमां टांकीने आपने भेट करी छे, ते आप मानपूर्वक अंगिकार करशो एवी अमे उमेद राखिये छीये.

शोलापुर, तारीख ६ अक्टोबर सन् १९०१ } आपना, सद्गुण चाहनारा।

आकलूजकी बिम्बप्रतिष्ठाके समय सरस्वती भंडारके मंत्री सेठ प्रेमचंद मोतीचन्दको किया गया था।

सेठ प्रेमचंदकी सरस्वती भक्ति। जबसे आपने बहुत कुछ उद्योग किया। आपने मई १९०१ के जैनमित्रमें एक प्रभावशाली लेख प्रकाशित करके शास्त्रोंकी रक्षाका उपाय बताया था। इस लेखमें आपके अंतरंग भावको झलकानेवाले कुछ वाक्य यह थे—"हमारे भाइयोंके लक्षों करोडोंका व्यापार

होता है। एक सौ रुपयाके व्यापारमें -) आना इस कार्यमें भी दे दिया करें...."

"धर्मकार्यमें किसीकी अप्रतिष्ठा नहीं होती, जैसे अलीगढ़के सय्यद अहमदखां सिनाई हिन्दने नगर२ से मांगकर कालेज बना दिया कि जिसमें लक्षोंका धन जमा होगया। हालमें अभी २००००)सर्कारने भी दिया है। हम हमारे भाइयोंसे एक लाख रुपया भी एकत्रकर कालेज न बना सकें। भाइयो! विचार देखो! परभवमें सिवाय पुण्यकर्म (धर्म) के दूसरा सुख देनेवाला नहीं है।" यह शरीर जिसको मनुष्य अपना मान रहा है चितापर ही जल जाता है, केवल शुभ या अशुभ जो किया हुआ अर्थात् कमाया हुआ कर्म है वही जीवके साथ जाता है।" "भाइयोंको अपने तनसे धनसे मनसे प्राणी मात्रका भला करनेवाली जिनवाणीका शीघ्र ही जीर्णोद्धार करना चाहिये। बम्बईके गत रथोत्सव व प्रांतिकसभा बम्बईकी तीसरे दिनकी बैठकमें सरस्वती देवीकी रक्षा पर भाषण देते हुए कहा था कि यदि ५००) रु. की सहायता हो तो ईडरके भंडारका उद्धार हो सक्ता है तथा आपने प्रेरणा करके पन्नालाल बाकलीवालको दो मासके लिये ईडर भेजा।

ईडरके संस्कृत-प्राकृत ग्रंथोंकी प्रशस्ति।

इन्होंने जाकर बहुतसे ग्रंथोंकी सूची आदि बनवाई तथा ईडरके पंचोंने कई बंडल संस्कृत ग्रंथ सेठ माणिकचंदजीके पास भेज दिये। सेठजीने एक विद्वान् शास्त्रीको नियत कर उन ग्रंथोंके पत्र ठीक कराकर सुन्दर वेष्टनोंमें बांधे तथा उनके मंगलाचरण व अंतिम प्रशस्ति, ग्रंथके नंबर व हकीकत सहित

रजिष्टरोंमें लिखवा ली और ग्रंथ ईडर भेज दिये। यह रजिष्टर सेठ माणिकचंदके चौपाटीके चैत्यालयमें हैं। विद्वानोंको उससे बहुत हाल मिल सक्ता है। अभी तक ईडरके भंडारका पूर्ण उद्धार नहीं हुआ है।

बाबू बच्चूलालजीका अकाल मरण।

सेठ प्रेमचंद और सेठ माणिकचंद जैन जातिके पत्रोंको बराबर बांचते थे। जैनगजट अंक ८ ता० १ मार्च १९०२ में यह पढ़कर कि महासभाके मुख्य कार्यकर्ता व गज़टके सहाई तथा समाजोद्धारक पूर्ण उद्योगी बाबू बच्चूलालजी प्रयाग निवासी ता० १ मार्चको स्वर्ग पधारे। दोनों सेठोंको बहुत शोक हुआ, पर इस परसे ये और भी धर्मसाधनमें दत्तचित्त हो गए।

सेठ माणिकचन्दका महासभामें गमन और तीर्थक्षेत्र कमेटीका स्थापन।

सम्वत् १९५९ मिती कार्तिक वदी ५से १० मुताबिक ता० २२-१०-१९०२ से २६ तक भा० दि० जैन महासभाका वार्षिक जल्सा चौरासी मथुरामें बड़ी धूमधामसे हुआ। बहुतसे विद्वान व जातिके मुखिया एकत्र हुए थे। बम्बईसे सेठ माणिकचन्दजी, सेठ रामचन्द नाथा, सेठ गुरुमुखराय, पं० धन्नालाल, पं० जवाहरलाल शास्त्री गए थे। उसी समय पं० गोपालदासजी भी आए, थे। ता० २२ अक्टूबरको पं० गोपालदासके पेश करने व सेठ माणिकचन्द, बाबू देवकुमार, मुंशी चम्पतरायके समर्थनसे **भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीकी** स्थापना हुई, जिसके सभासद १५ चुने गए। सेठ माणिकचन्दजी महामंत्री और

सेठजीके ज्येष्ठ भ्राता सेठ पानाचन्द हीराचन्दजी.

(देखो पृष्ठ १०२) J. V. P. Surat.

सेठ चुन्नीलाल झवेरचन्द और लाला रघुनाथदास सरनौ सहायक महामंत्री नियत हुए। जबसे बम्बई प्रान्तिकसभाने यह खाता खोला था और चुन्नीलालजीको तीर्थक्षेत्रका मंत्री नियत किया था तबसे यह तीर्थोंके सुधारमें, हिसाब मंगाने आदिमें पूर्ण प्रयत्नशील थे।

सेठ चुन्नीलालका परिश्रम। सेठ चुन्नीलालजीने भादवा सुदी ९ तक प्रांतिक सभा बम्बईकी रिपोर्टमें अपनी जो रिपोर्ट प्रगट कराई है उससे विदित हुआ कि आपने २८ स्थानोंमें व्यवस्था व हिसाबके फार्म भेजे व पत्र-व्यवहार किया जिससे २१ स्थानोंके फार्म भरकर आए तथा डाह्याभाई शिवलाल इंस्पेक्टरद्वारा तीर्थोंका निरीक्षण भी कराया। आपने अपनी रिपोर्टके अन्तमें ये शब्द दिये हैं:-

इस प्रकार २१ फार्म आए हैं। यद्यपि सबकी हिसाब प्रथा उत्तम नहीं है, दो चारको छोड़ और न हिसाबोंको देख संतोष हो सक्ता है तौभी हम सच्चे दिलसे प्रबन्धकर्ताओं और मुनीमोंको फार्म भेजनेकी मिहरबानीका धन्यवाद देते हैं।

दिहली दर्बार। महाराज सप्तम एडवर्डके राज्यारोहणके उपलक्ष्यमें भारतके वाइसराय **लार्ड कर्जन**ने ता० १ जनवरी सन् १९०३को दिहलीमें एक बड़ा भारी दर्बार किया था, जिसका एम्फी थियेटर दिहलीसे ५ मीलपर बना था जिसमें २५ ब्लोक थे। भारतके राजा महाराजा रईस आदिके सिवाय, नेपाल, फारस, अफगानस्तान आदिके भी प्रतिनिधि आए थे। १२००० से अधिक भीड़ थी। विलायतसे ड्यूक आफ कोनाट भी पधारे थे। लाट साहबने दर्बारमें

महाराज एडवर्डका तार सुनाया जिसके कुछ शब्द ये हैं:—" मेरी यही आन्तरिक अभिलाषा है कि मैं भी माताके सदृश भारतीय प्रजाका सुशासन करके उनका प्रेम और भक्तिका लाभ करूं। मैं भारतके समस्त करद राजाओंको पुनः विश्वास दिलाता हूं कि मैं उनकी स्वाधीनताका सन्मान, अधिकार और स्वत्त्वका आदर करता हूं तथा उनकी उन्नति और भलाई होनेसे प्रसन्न होता हूं "

दर्बारके दिन जैनियोंने भी अपने २ मंदिरमें विशेष पूजा की व बृटिश साम्राज्यकी जय मनाई व दान बांटा। बम्बईमें भी ऐसा हुआ। जैपुरमें भी महासभाके सभासदोंने जल्सा करके महासभाकी ओरसे एक अभिनंदनपत्र लाट साहबको महाराज जैपुरके द्वारा भेजा।

द० म० जैन सभा-द्वारा अभिनंदन पत्र।

दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका पांचवां वार्षिक अधिवेशन ता० २७ और २८ जनवरी सन् १९०३ को क्षेत्र स्तवनिधि पर हुआ। सभापति श्रीमन्त पायप्पा अप्पाजीराव देसाई थे। सभाने एक वर्ष पहले एक दक्षिण महाराष्ट्र विद्यालय खोला था उसमें ११ विद्यार्थी पढ़ते थे उसकी रिपोर्ट सुनाई गई। इस सभाने जैन शिक्षण फंडमें २००००) का फंड कर लिया था। सभामें शिक्षाप्रचारके प्रति कोल्हापुरके महाराजका आभार माना गया तथा **सेठ माणिकचंद पानाचंद जौंहरी बम्बई** और सेठ **हीराचंद नेमचंद शोलापुर**का शिक्षाप्रचारके अर्थ अभिनंदन पूर्वक आभार माना गया। वास्तवमें जो सच्चे दिलसे परोपकारार्थ तन मन धन लगाते हैं वे जगतमें बिना चाहे भी परम कीर्ति लाभ करते हैं।

प्रेमचंदका अचानक स्वर्गवास और स्वहस्तलिखित दान पत्र।

जिस व्यक्तिपर माता रूपाबाईको अवलम्बन था, जो हीराचंद गुमानजीके कुलका सेठ माणिकचंदकी तरह एक रत्नमय दीपक था, जिसके स्वभाव, धार्मिक क्रिया व समाजसेवाको देखकर परोपकारियोंको सन्तोष होता था कि सेठ माणिकचंदके पीछे यही दिगम्बर जैन समाजमें जागृति फैलाएगा, जिसका परिणाम बहुत शांत, विचारशील और उदार था, जो संस्कृत इंग्रेजी व वर्तमान देश चाल व्यवहारसे अच्छी तरह परिचित था, जो जिनवाणीका ज्ञाता अभ्यासी व पूर्ण भक्त था, जिसका अखंड वात्सल्य और प्रेम अपनी जैन जातिसे था वही प्रफुल्लित चमकता हुआ तारा एकायक अपने चहुं ओरके मनुष्योंकी दृष्टिसे इसी संवत १९६९में चैत्र सुदी १४ की रात्रिको लुप्त हो गया!

शरीर पिंजर वैसा ही दीख रहा है पर शरीरमें अनेक चेष्टाओंको करानेका ज़िम्मेदार चैतन्य आत्मा यहांसे चल दिया है। यद्यपि शरीर छोड़ते समय इसकी अवस्था २९ वर्षकी थी पर यह गाफिल नहीं हुआ था। रात्रिको ही अपनी तबियत जब एकाएक बिगड़ी तब आपने अपनी माता, स्त्री तथा काकाओंके सामने अपने ही हाथसे नीचे लिखा **दानपत्र** लिखकर हस्ताक्षर कर दिये—

१—माटुंगा रोडकी जमीन जो अनुमान २००००) की है वह तथा अपनी जिन्दगीके बीमाके ५०००) यह दोनों रकमें हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगकी कमेटीको इस शर्तपर देना कि **"प्रेमचंद मोतीचंद स्कोलरशीप खाता"** खोलकर इस

रकमके व्याजसे गुजराती प्रथम पुस्तकसे इंग्रेजी चौथी क्लास तक विना माबापके निराधार विद्यार्थियोंको स्कालरशिप दी जावे।

२–मेरी माताश्रीके **बारहसौ चौतीस उपवासके** व्रतका उद्यापन ५०००) के खर्चसे करना।

३–अपनगर (ईडरके निकट) के स्टेशनपर " प्रेमचंद मोतीचंद धर्मशाला " नामसे १०००) खर्च करके एक धर्मशाला बनवाना।

४–निम्न लिखित तीर्थोंमेंसे प्रत्येक तीर्थको इकावन इकावन रु. की रकम भेजना–१ श्री सम्मेदशिखर, २ श्री चम्पापुर, ३ श्री पावापुर, श्री गिरनार, ५ श्री केशरियाजी, ६ श्री पावागढ़, ७ श्री गजपंथाजी, ८ श्री मांगीतुंगी ९ श्री पालीताना, १० श्री तारंगाजी, ११ श्री सिद्धवरकुट, १२ श्री सोनागिरजी, १३ श्री कुंथलगिरजी, १४ श्री ईडरका मंदिर, १५ श्री चतुर्विधदानशाला सोलापुर।

इस तरह रु० ३१७६९) का **दानपत्र** अपनी माताको देकर आपने मौन धारण कर लिया, हाथ जोड़ सबसे क्षमा मांगी और शांत मनसे भीतर २ अपने शुद्ध आत्मस्वभावका चिन्तवन करतेर बाहरसे णमोकार मंत्रकी ध्वनि सुनतेर स्वर्ग पधारे। **चंपाबाई** अपनी १९ वर्षकी आयुमें ही वैधव्यताको प्राप्त हो गई! **माता रूपाबाईको** पुत्रके वियोगसे बहुत शोक आया, पर धर्मके ज्ञानके कारण अपने चित्तको थांभ व कर्मका उदय विचार शांत चित्त हो गई। सेठ माणिकचंद बहुत विलाप करने लगे, क्योंकि सेठजीको इसके गुणोंपर अतिशय प्रेम था। पानाचंद और नवलच-

न्दजीको भी बहुत शोक हुआ, क्योंकि यह दूकानके काममें भी बहुत चतुर था। बम्बई बोर्डिंगकी ट्रष्ट कमेटीमें कोषाध्यक्ष और बम्बई प्रांतिक सभाके सरस्वती भंडार खातेका काम आपने अपने जीवन पर्यंत बहुत ही योग्यतासे सम्पादन किया था इससे बम्बईकी जैन समाजको आपके वियोगका बहुत ही ताप हुआ। आपने संस्कृतका अच्छा अभ्यास किया था व मराठी लिखना पढ़ना भी आप अच्छा जानते थे। सेठ हीराचंद नेमचंदकृत मराठी **व्रतकथासंग्रह** और '**महावीरचरित्र**का गुजराती भाषामें बहुत ही उत्तम उल्था किया था और उसे प्रकाशित कराया था। इसने प्रसिद्ध तीर्थोंकी यात्रा भी कर ली थी। यह बहुत ही दयालु, सहनशील, साहसी व विचारशील था। इसके **चित्र**से इस भव्यके गुण स्वयं झलक रहे हैं। हमारी समाजके नव युवक धनाढ्योंको सेठ प्रेमचंदके जीवनचरित्रसे शिक्षा लेनी चाहिये और अपनेको विषय कषायोंसे बचाकर धर्म व नीतिसे परोपकारमें तन मन धन लगाते हुए अपने जीवनको व्यतीत करना चाहिये।

नवीबाईके प्रथम पुत्रका जन्म।

सेठ माणिकचंदजी नवीबाईके साथ अपने गृही कर्मको बिताते थे कि नवीबाईके गर्भ रहा। सेठजीको बहुत संतोष हुआ और मनकी इच्छानुसार नवीबाईने मिती वैशाख सुदी १२ को एक पुत्रका जन्म दिया। पुत्रलाभसे सर्व कुटम्बको हर्ष हुआ। वास्तवमें संसार कैसा विचित्र है कि जिस घरमें १ मास पहले शोक छाया हुआ था उसीमें आज पुत्रजन्मका उत्सव मनाया जाने लगा। नवीबाई पुत्रको बहुत सम्हालसे

पालने लगी। सेठजीने भी दासियां नियत कीं कि इसे कोई कष्ट न हों।

सेठ रावजी नानचंद गांधीने शोलापुरमें जिनबिम्ब पंच कल्याणकोत्सव मिती ज्येष्ठ सुदी ६ से ९ सं० १९६० तक बहुत ही समारोहके साथ पासु गोपाल शास्त्री द्वारा कराया। बाहरसे करीब २००० के भाई आए थे। हमारे सेठ माणिकचंद आदि बम्बईके अनेक सज्जन पधारे थे। सेठ रावजी नानचंदने नया रथ तैयार कराया था सो पंचायतीमें अर्पण किया तथा प्रतिदिन सबका भोजनसे सत्कार किया। प्रांतिक सभाके सदस्योंका बहुत सन्मान किया और ५०१) सभाको भेंट किये। प्रांतिक सभाकी ४ बैठकें हुई। सेठ हरीभाई देवकरणवाले **सेठ बालचंद रामचंद** सभापति हुए। आपने कहा कि इतनी बातोंका प्रबन्ध किया जाय कि– दि० जैन धर्मशास्त्रके ज्ञाता विद्वान् तयार हो, जैन धर्मानुसार लग्न, विवाह, मृत्यु आदि क्रियाएं होवें, व्यर्थव्यय रोका जावे, मृत्यु पीछे रोने कूटनेका रिवाज बंद हो, बाल्यविवाह व कन्याविक्रय रोका जावे व तीर्थक्षेत्रोंकी व्यवस्थाका सुप्रबंध हो। १८ प्रस्ताव पास हुए जिसमें मुख्य ये थे–(१) महाराज सप्तम एडवर्डके राज्यारोहाणोत्सवमें हर्ष (२) सर्कारसे प्रार्थना हो कि विद्याविभाग आरोग्य संबंधी तथा जेलखानेकी रिपोर्टोंमें जैनियोंका अलग खाना हो (३) मृत्युके पीछे छाती कूटनेका रिवाज जोधपुर मारवाड़की तरफसे इस गुजरातमें आया है। मारवाड़के रजवाड़ोंमें जब राजगोतीका

बंबई प्रांतिक सभाका द्वितीय वार्षिकोत्सव और शोलापुरकी बिम्बप्रतिष्ठा।

मरण होता था तो रानियें रोने व छाती कूटनेके लिये महलोंसे बाहर नहीं होती थी। वे सब अपनी दासियोंको बाहर भेजती थीं वे ही रडती पीटती थीं। दासियोंको इस प्रकार करनेमें उनका स्वार्थ सधता था—उनको कपड़ वगैरह मिलते थे।

सेठ चुन्नीलाल झवेरचंदने पेश किया कि जिस २ तीर्थक्षेत्रका हिसाब आया है उन्हें धन्यवाद दिया जाय व जहां २ से हिसाब नहीं आया उसको प्रेरणा की जाय।

वैद्यक शिक्षाकी उत्तेजना।

तीसरे दिन सेठ माणिकचंदजीने प्रगट किया कि शोलापुरके चतुर्विधदानशालाके वैद्यक विभागमें जो छात्र पढ़ेगा उसे प्रथम वर्ष ६) दूसरे वर्ष ७) व तीसरे वर्ष ८) मासिक मिलेगा इस शर्त पर कि इस प्रान्तके किसी पवित्र औषधालयमें २५) महीने पर औषधालयका काम करैं। जिन्होंने जैन पद्धतिसे विवाह कराए थे उनको सभापति द्वारा छपे हुए मनोहर धन्यवाद पत्र दिये गए। प्रान्तिक सभाके फंडमें २१३९) आए तथा बावी निवासी रामचंद्र अभयचंदके निकट ५०००) की एक धर्मादाकी रकम थीं उसके व्याजसे एक विद्यार्थीको वैद्यक पढ़ाई जाय ऐसा ज़ाहर किया गया। इस शिक्षाकी उत्तेजना देनेका अभिप्राय सेठजीका यही था कि हम बम्बईमें औषधालय कायम करैं तब उस वैद्यका उपयोग हो।

सेठ पानाचंदका स्वर्गवास।

जगत्‌में किसी भी प्राणीकी एकसी दशा नहीं रहती इसीसे यह जगत् परिवर्तनशील है। जिसको जीता जागता, काम करता हुआ सबेरे देखते हैं वही शामको चेतन रहित होता है। जब तक

वह आत्मा अपने स्वाधीन स्वभावको नहीं पाता है तब तक इसका जन्म मरण नहीं मिटता है । आयु कर्मका प्रेरा यह जीव शरीरमें अपनी उम्रसे अधिक नहीं रह सक्ता ।

मिती कार्तिक वदी ११ संवत् १९६० की रात्रिको सेठ पानाचंद हीराचंदका शरीर अति अशक्त हो गया। तबियत तो कई दिन पहलेसे खराब थी । यथाविधि औषधि होती थी । इस समय सेठ माणिकचंद, नवलचंद, चुन्नीलाल, रूपाबाई, रुक्मणीबाई, मगनबाई आदि कुटुम्बी पास बैठे हैं, सेठ पानाचंद बराबर होशमें हैं, पंडित वंशीधर जो उस समय संस्कृत विद्यालय बम्बईके छात्र थे अब शोलापुर जैन पाठशालामें शास्त्री हैं, पास बैठे हुए समाधि-मरण आदिके पाठ पढ़ रहे हैं, पानाचंदजी बड़े ध्यानसे सुन रहे हैं। माणिकचंदजीको इस समय यही ध्यान है कि भाईका मन किसी भी तरह आर्त्त रौद्र ध्यानमें नहीं फंसे, धर्म ध्यानमें लीन रहें जिसमें दुर्गतिसे बचकर सुगतिमें जावें इसलिये जब कभी उन्हें मालूम होता कि इनका ध्यान और तरफ हुआ है तब ही सेठ माणिकचंद यह वाक्य कहते—"भाई, पंडितजी कहते हैं उधर तुम्हारा ध्यान है ना? तब वह धीरेसे कहते कि मेरा ध्यान है, बराबर चालू रक्खो। मिलकियतके विभागके समय **धर्मशाला** आदि कार्योंके निमित्त करीब २ लाखके दानका संकल्प हो ही चुका था। इस समय आपने कहा कि भाई, मेरी प्राइवेट मिलकियतमेंसे १५०००) वागड़ देशके हूमड़ छात्रोंमें विद्या प्रचारके लिये खर्च करना तथा १००) तीर्थ क्षेत्रोंमें देना । सेठ माणिकचंदने तुर्त लिख लिया। सेठ माणिकचंदने कहा—भाई, और भी कुछ दान करना

हो सो करो। भाईने कुछ उत्तर न दिया। इतनेमें देखते २ आंखें फिरने लगीं तब पंच नमस्कार मंत्रकी घोषणा प्रारंभ हुई। सामने तीनों सन्तान भी बैठी थीं—लीलावती ७ वर्षकी, रतनबाई ५ वर्षकी व पुत्र ठाकुरभाई ३ वर्षका था—तीनों माताके पास बैठे हैं। सेठ माणिकचंदका सख्त हुक्म था कि कोई रोने न पावे न कोई शोर करे। उस स्थानपर इतनी शांति थीकि यदि कोई मखमलके गद्दे पर भी पग धरे तो उसका शब्द सुन पड़े। वास्तवमें मृत्यु होते समय पूर्ण शांति रहनी चाहिये जिससे मरनेवालेके भावोंमें भी शांति रहे, कोई विकल्प न पैदा हो। उस रात्रिको सेठ पानाचंदने चारो प्रकारके भोजन व औषधि तक लेनेका त्याग कर दिया था। सेठ माणिकचंदके पूर्ण प्रबन्धसे पानाचंदजीका आत्मा धर्म ध्यानमें लीन होता हुआ शांतता पूर्वक इस चर्महाड़के पींजरेसे निकलकर स्वर्गधामको पधारा।

सेठ पानाचंद जवाहरातकी परीक्षामें बम्बईभरमें प्रधान समझे जाते थे। आप बहुत ही शांत, विचारशील, उदार चित्त व निराश्रितको आश्रय देनेवाले थे। परोपकारार्थ मेरा धन खर्च हो यही इनके चित्तमें रहा करता था, क्रोध करना तो जानते ही नहीं थे, मौन रखकर विचारनेकी आदत थी। यह कैसे गंभीर प्रकृतिके व दृढ़ मिज़ाज व शांत पुरुष थे, यह बात उक्त सेठजीके चित्रके दर्शनसे भले प्रकार झलक उठती है। आपने अपने ५४ वर्षमें धर्म अर्थ और काम तीनों पुरुषार्थोंको यथायोग्य पालन करके गृहीके कर्तव्यको सदाचार, सद्‌वर्ताव और नेक नियतीसे अच्छी तरह निबाहा आपके वियोगसे बम्बई भरमें **शोक** छा गया। जौंहरी बाजारमें

कई दिन तक बड़ी उदासी रही । दूसरे दिन प्रातःकाल दग्ध क्रियाके अर्थ जब ले गए तब सैकड़ों मनुष्योंकी भीड़ थी । बिरादरीके सिवाय जौंहरीबाजारके दूकानदार दलाल आदि जिसने सुना फौरन हाज़िर हो गये थे ।

अब रुक्मणीबाई जो कि बहुत धीर प्रकृतिकी थी, यद्यपि इसे विशेष पुस्तकोंका अभ्यास नहीं था तौ भी कुछ अक्षर ज्ञान था, बड़ी शांतिसे अपने तीन संततिरत्नोंका पालनपोषण करने लगी-लीलावतीको शालामें भेजने लगी । इस कुटुम्बमें पार्सियोंकी भांति यही रिवाज़ था कि लड़का हो या लड़की शुरूसे विद्याभ्यासमें लगाकर चतुर बनाना फिर लग्न करना । छोटी उम्रमें सगाई करना बड़ा पाप समझते थे ।

पानाचंदजी भी चल दिये । प्रेमचंद इसके पहले ही न रहे थे।

सेठ हरजीवन रायचंदकी सम्मतिकी कदर।

अब सेठ माणिकचंदको रात्रि दिन यही ध्वनि रहने लगी कि जो कुछ करना है उसमें एक दिन भी ढील नहीं लगाना चाहिये । सेठ प्रेमचंद गुजरातके छात्रोंमें शिक्षा प्रचारके अर्थ जो दान कर गए थे उससे सेठजीने यही सोचा कि **गुजरात**के किसी स्थानपर एक **जैन बोर्डिंग** खोला जावे तो ठीक हो । आपको विश्वास था कि **आमोदके शेठ हरजीवन रायचंद** एक विचारशील, धर्मात्मा और शास्त्रके ज्ञाता गृहस्थ हैं । आपका परिचय सं० १९५० में हुआ था जब श्री भक्तामरजी गुजराती टीका सहित सेठजीने मंगाई थी तबसे पत्रव्यवहार बराबर रहता था । **सूरत**में जब चुन्नीलालने मंदिर प्रतिष्ठा कराई थी

तब भी आपको बुलाया था। आपसे साक्षात् मिलकर बहुत प्रीति प्रगट की थी तथा सूरतके बड़े मंदिरजीमें तब छपे हुए नोटिस बांटकर आम सभा की गई थी। उस समय इन्होंने एकय पर बहुत अच्छा भाषण दिया था। सेठ हरजीवनको भी गुजरातके बालकोंको धर्म विद्याके साथ लौकिक विद्या दी जावे इसकी बड़ी चिन्ता थी तथा यह सेठजीको अपने पत्रोंमें इस त्रुटिको दूर करनेके लिये लिखा करते थे। अब सेठजीने इनको पूछा कि गुजरातमें एक बोर्डिंग स्थापन करनेका हमारा विचार है जिसमें मेट्रिक तक छात्र रहकर पढ़ें, शेष कालेजकी पढ़ाई बम्बई बोर्डिंगमें रहकर करें तथा बड़ौदा, सूरत, अहमदाबाद ये तीन मुख्य नगर हैं इनमेंसे कौनसी जगह तुमको पसंद है, कारण सहित लिखो। तब सेठ हरजीवनने **अहमदाबाद**को पसन्द किया कि यह बड़ा व्यापारी नगर है। सब तरह विद्याका साधन है। जिनके बालक रहेंगे वे बारम्बार आकर देख भी सकेंगे, क्योंकि मालके लिये उनको आना ही पड़ता है तथा यहां कालिज भी है, अच्छा है-मिलें हैं आदि। सेठजीको यह बात बहुत पसन्द आई तब हरजीवन रायचंदको लिखा कि गुजरातके लोग अपने छात्रोंको भेजेंगे या नहीं, क्योंकि वे लोग ऐसा समझते हैं कि धर्मके खातेमें हम अपने लड़कोंको क्यों रक्खें? तब आमोदके यह परोपकारी सज्जनने उत्तर दिया कि इसकी आप चिन्ता न करें तथा एक पत्र आमोदके दिगम्बर जैन पंचानका भिजवाया उसमें पंचोंने हिम्मतके साथ लिखा कि मुहूर्त्तके दिन हम १० विद्यार्थिओंको साथ लेकर आवेंगे, आप निश्चिन्त रहो। तब सेठजीको बहुत ही संतोष हुआ और तुर्त ही **मार्गशीर्ष सुदी ८** को

बोर्डिंगका महूर्त अहमदाबादमें किया जाय ऐसा निश्चित करके गुजरातके भाइयोंको बुलानेके लिये पत्र दे दिये ।

गुजरात दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्कूल—अहमदाबाद ।

सेठ माणिकचंदजीका सदा ही यह कायदा रहा है कि पहले यह किसी नवीन कार्यको शुरू करके उसकी परीक्षा करते थे। जब वह चल जाता था तब उसको सदाके लिये ऐसा पक्का कर देते थे कि वह कभी किसीके तोड़े न टूट सके। बम्बई बोर्डिंगकी स्थापनाके समय इस नीतिको इसलिये नहीं काममें लिया कि बम्बईमें जैनियोंके छात्र अवश्य ही आवेंगे इस बातका सेठको दृढ़ निश्चय था। यहांके काममें संदेह था इसीलिये पहले सेठजीने २ वर्षके निर्वाहके लिये ५०००) बोर्डिंगमें दिये तथा २५ छात्रोंका प्रबन्ध करके एक मकान भाड़ेका लेकर बोर्डिंग खोलनेका महूर्त बड़ी धामधूमसे किया। इसमें ईडर, कलोल, सूरत, सोजित्रा, अंकलेश्वर आदि गुजरातके बहुतसे भाई पधारे थे उनमें मुख्य जयसिंहभाई गुलाबचंद, हरजीवन रायचंद आमोद, मोतीचंद ईडर पधारे थे। बंबईसे पंडित गोपालदास बरैया, लल्लूभाई प्रेमानंददास परीख तथा सेठ माणिकचंदजी आए थे। मगसर सुदी ६ सं० १९६० के प्रातःकाल प्रथम ही मंगल कलशके साथ नगरमें १ वरघोड़ा निकाला गया। फिर स्थानपर आकर श्री जिनवाणीकी पूजा करके एक सभाका अधिवेशन बड़े समारोहके साथ किया गया जिसमें अहमदावादके प्रतिष्ठित भाइयोंको छपे हुए कार्ड द्वारा स्वयं सेठ माणिकचन्द कई भाइयोंके साथ जाकर निमंत्रण कर आए थे वे सब शामिल हुए जैसे—रावबहादुर केशवलाल

हीरालाल, जौंहरी लल्लूभाई रायचंद, रा० ब० लालशंकर उमियाशंकर, रा० ब० हरगोविन्ददास द्वारकादास कांटावाला, प्रोफेसर आनंदशंकर बापूभाई ध्रुव, डॉ० जोसेफ बेंजामिन इत्यादि भाई पधारे थे। सभापतिका आसन रा० रा० दीवान बहादुर अम्बालाल शाकरलाल देशाई एम. ए. एलएल. बी. ने ग्रहण किया था। पं० गोपालदासजीने विद्याभ्यासकी आवश्यक्ता एक प्रभावशाली व्याख्यान देकर बताई तथा लल्लूभाई प्रेमानंददास आदि वक्ताने बोर्डिंगका हेतु समझाया, फिर सभापतिने एक शिक्षा-पूर्ण भाषण देते हुए कहा—"जिस प्रकार यात्रा करनेवालोंमें जिनके पास पर्यटनकी पूरी २ सामग्री रहती है वह आगे और जो साधनहीन होते हैं व पीछे पड़ जाते हैं उसी प्रकार संसार यात्रामें जो जाति विद्या साधनसे हीन है वह अवश्य ही पीछे रह जाती है। इस संस्थाके स्थापन कर्ता उच्च शिक्षा प्राप्त विद्वान् नहीं हैं, परंतु वह "**द्रव्यका सदुपयोग किस तरह करना चाहिये**" इस विषयके सच्चे मर्मज्ञ जौंहरी हैं आदि कहा।" इस समय कहा गया कि जो कोई सहायता करेंगे वह सहर्ष स्वीकार की जायगी। तब **आकलूजके** भाईने १०) मासिक एक वर्षके लिये दिया। ८१ गृहस्थोंकी एक विजिटर्स कमिटी बनी। जो ३) वार्षिक दे वह इसका मेंबर हो सक्ता है। इसमें करमसद, इंडर, नहर, नरसीपुर, सोनासन, बड़ौदा, ओरान बोरसद, अहमदाबाद, सूरत आदिके भाई मेम्बर हुए। बोर्डिंग-का प्रबन्ध बम्बई बोर्डिंगकी मनेजिंग कमेटीके आधीन रहा। मंत्री

लल्लूभाई प्रेमानंददास एल. सी. ई. नियत हुए । शुरूमें ही इसमें ३८ छात्रोंकी भरती हो गई अपने द्रव्यसे पढानेवालोंके लिये २९) प्रति छः माहीके लिये लेने नियत हुए। इसमें पहले दरजेसेलेकर छठे दरजे अंग्रेजीतकके छात्र भरती हुए ।

रूपाबाईका व्रतोद्यापन ।

रूपाबाई संसारके चरित्रोंसे भली प्रकार अनुभव लेती हुई जबसे प्रेमचंद पुत्रका वियोग हुआ तबसे और भी अधिक उदासीन रूपमें धर्म साधनमें लीन हो गई । तप करके जैसे अनंतमती, चंदना आदि सतियोंने अपनी पर्यायोंको सफल किया था ऐसे ही यह बाई करती थी । छोटे २ व्रतोंके साथ इसने १२३४ के उपवासोंका आरंभ संवत १९५१ में किया था सो ९ वर्षमें उनको निर्विघ्न पूर्ण किया तथा जैसे प्रेमचंद सेठ मरते समय ९०००) इस उद्यापनमें खर्च करनेको कह गए थे उसी प्रमाण सेठ माणिकचंद और नवलचंदने रूपाबाईजीकी आज्ञासे पूजनका महा समारंभ रचा । चौपाटीके बंगलेमें ही बड़े हॉलमें सजधजकर मंडप किया गया । जहां कई रोज नित्य पूजन भजन गान हुए। बाहरसे भी खास २ भाइयोंको बुलाया गया था ।

धर्मचंदजीकी स्त्रीका वियोग ।

सेठ माणिकचन्दके परम मित्र भाई धरमचंदजी भी सपत्नीक पालीतानासे बम्बई आ गये थे । यहां कर्मयोगसे इनकी स्त्रीको प्लेगका रोग हो गया और कई दिन बीमार रहकर माह सुदी ४ सं० १९६०को इस पर्यायको छोड़कर चल

दी। उस समय सेठोंने इनको बहुत धैर्य्य बंधाया। माह सुदी ५ के आस पास कई दिनों तक चौपाटीका मंदिर नर—नारियोंसे भरा रहता था। भगवत्‌के गान भजन नृत्य खूब होते थे। जैनी भाईयोंका भोजनादिसे सत्कार, मंदिरोंमें दान आदि करके यह उद्यापन बड़े भावसे करके रूपाबाईको बहुत सन्तोष हुआ। तथा इस व्रतके हर्षमें ५०००) गुजरात दि० जैन बोर्डिंग स्कूलको दिया गया तथा बोर्डिंगमें विद्यार्थी अच्छी तरह रहनेकी रिपोर्ट जानकर सेठ माणिकचन्दने निश्चय किया कि प्रेमचन्दजीका कहा हुआ २५०००) शीघ्र लगा दिया जाय तथा ५०००) बोर्डिंगके मकानके लिये भी निकालनेका विचार दृढ़ किया।

सेठजीकी प्रथम पुत्रीकी मृत्यु।

इसी वर्ष सं० १९६०में सेठ माणिकचन्दकी प्रथम पुत्री फूलकौरका यकायक मरण हो गया। सेठजीको यह भी एक भारी शोकका स्थल आन पहुंचा, पर ज्ञानी और विचारवान सेठने इसे भी थिरतासे सहन किया। फूलकौर कमु (कमला) कन्याको छोड़ गई जिसकी प्रतिपालना और रक्षाका भार मगनबाईजीने अपने हाथमें ले लिया।

स्तवनिधिमें द० म० जैन सभा।

कोल्हापुरसे थोड़ी दूर एक अतिशय क्षेत्र स्तवनिधि है। वहां दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका वार्षिक अधिवेशन माघ सुदी १४ ता. १६ जनवरी सन् १९०३ से १८ तक था। इसमें अध्यक्ष सेठ हीराचंद नेमचंद शोलापुर नियत किये गए थे। सेठ हीराचंदके लिखते ही **सेठ माणिकचंदजी** भी

तुर्त रवाना हुए। शोलापुरसे सेठ बालचंद रामचंद व सेठ रामचंद नाथा आदि कई महाशय पधारे। पहली सभामें कोल्हापुरके एक विद्यार्थीको जिसने प्राचीन जैन ग्रथोंके उद्धार पर भाषण दिया था सेठ माणिकचंदजीने प्रसन्न हो ५) इनाममें उसी समय दे दिया। यह सेठजीके विद्या प्रेमका नमूना है। सभापतिका भाषण बहुत विद्वतापूर्ण हुआ, उसको सुनकर मि० यादवरावजी एम. ए. एलएल. बी. कमिश्नर कोल्हापुर जो अजैन थे बहुत प्रसन्न हुए और उठकर कहा कि–" जैन धर्मके मन्तव्य बहुत उत्तम है। अहिंसा धर्म बहुत ही श्रेष्ठ है आदि।" तीसरे दिन सेठ माणिकचंदजीने इस बातपर व्याख्यान दिया कि चंदेमें स्वीकार किया हुआ मूल द्रव्य "**व्याज देते रहेंगे**" इस मंशासे घरपर नहीं रखना चाहिये, उस द्रव्यसे डरना चाहिये। इस भाषणके असरसे बहुतसा बाकी रूपया लोगोंने अदा करदिया। वास्तवमें यह बात अनुचित है कि जब हम कुछ दान करें तो उस द्रव्यको अपने ही पास जमा रक्खें इससे हमारा ममत्व लगा रहता है अतएव उस द्रव्यको तो अपने यहांसे निकाल कर दे डालना चाहिये। हां, यदि कोई रकम व्याजपर अपने यहां जमा करावे तो फिर जमा करना चाहिये। उसी रकमको विना निकाले लोभ नहीं घटता है।

सभाने प्रसन्न हो सेठ माणिकचंदजी और सेठ हीराचंदजीको निम्न लिखित **मानपत्र** दिया–

सेठजीकी पुत्री फूलकौरबाई.

(देखो पृष्ठ १६२) J. V. P. Sura

दक्षिण महाराष्ट्र जैनसमाजातर्फे मानपत्र.

श्रीयुत माणिकचंद हिराचंद जव्हेरी

मुंबई जैनप्रांतिक सभेचे सभापति यांस.

श्रीमन्माणिक्यचंद्रो जयतु भुवि सदा रश्मिभिः स्वोपकारैः।
जैनाः सर्वे समुद्रा इव बहु मुदिता यांतु वृद्धिं तमेत्य ॥१॥

महाशय !

या प्रांतांत आपण प्रस्तुत वर्षाच्या जैनपरिषदेकरितां आमच्या आमंत्रणास मान देऊन केलेल्या आगमनानें येथील आपल्या धर्मबांधवास अनुग्रहीत केल्याबद्दल त्यांचेतर्फे आह्मीं आज फार आनंदानें आपले मनःपूर्वक आभार मानितों. संसारांत मनुष्यांस सतत भोगाव्या लागणाऱ्या दुःप्रसंगांस अलीकडे आपणांस टक्कर देणें भाग पडले असतांही आपण आपल्या धीर स्वभावास अनुसरून धर्मकृत्यांत आपलें मन स्थिर ठेविलें आणि आमच्या अल्पशा सार्वजनिक चळवळींना उत्तेजन देण्यासाठीं हा त्रासदायक प्रवास स्वीकारिला, हें आह्मांवर आपले उपकार आहेत.

या उपकारास मागें सारणाऱ्या आपल्या अनेक सत्कार्यांचें आणि त्यांचें मूळ आपल्या सच्छीलाचें स्मरण या प्रसंगीं सहजच होतें. धर्मबांधवांविषयीं प्रेम, जात्युन्नतीची उत्कंठ इच्छा, साधें व प्रेमळ आचरण, गरीबांविषयीं सहानुभूति आणि अपार औदार्य या गुणांची केवळ जिवंत मूर्तीच आज आमच्या भाग्योदयानें जैनसमाजांत उदय पावली आहे असें आपल्या सहस्रावधि धर्मबांधवांना वाटत आहे.

दक्षिणेतील गरीब विद्यार्थ्यांस द्रव्यद्वारें साह्य देऊन, प्रसंगीं

त्यांस उपदेश करून आणि त्यांजविषयीं प्रेम बाळगून या प्रांतांतील जैनसमाजांत जी किंचित् विद्यावृद्धि होत आहे त्याचें बरेंच श्रेय आपल्यास आहे. पाऊण लाख रुपये खर्चून आपण जे विद्यालय मुंबईस जैन विद्यार्थ्यांकरितां बांधिलें आहे त्या योगानं चिरकाल आमच्या समाजास फायदा होईल यांत शंका नाहीं

आपल्या दानशूरतेची उदाहरणें देण्याचें कांहीं कारण नाहीं. तथापि इतकें म्हटल्या शिवाय आह्मांस राहवतच नाहीं कीं हिंदुस्थानांतील लक्षावधि जैन लोकांत आपण या गुणानें केवळ अद्वितीय आहां. ज्यांच्या औदार्याची सर्व देशभर पसरलेलीं मनोहर स्मारकें जैनांच्या धार्मिकतेची साक्ष जगास देत आहेत त्या माहात्म्याचा पुण्य श्लोक मालिकेंत आपणांस गणण्यास बिलकूल हरकत नाहीं.

जैन लोकांची सर्व प्रकारें उन्नती व्हावी; त्यांची स्थिती ऊर्जित व्हावी; व्यापारांत, शिक्षणांत व धार्मिकतेंत त्यांना यश मिळत जावे; या चिंतेंत आपण सर्वदा व्यापृत आहां व या उद्देशानें आपण प्रत्येक धार्मिक चळवळीस उत्तेजन देत आहा. याबद्दल आपलें अभिनंदन करून श्री जिनेश्वरकृपेनें या आपल्या सदुद्योगांत आपणांस अखंड सिद्धि मिळो अशी आह्मी प्रार्थना करितों. तसेंच जैनसमाजाच्या उद्धारासाठीं असेंच यत्न पुढेंही चालविण्यास आपल्यांस जिनेश्वर देवोत अशी ही आमची विनवणी आहे.

आपले

श्री क्षेत्रस्तवनिधि
ता० १८ जानेवारी
१९०४ ई०

A. P. Chaugule B. A. LL B.
A. B. Latthe M. A.
&c. &c.

कन्याविक्रयके द्रव्यसे ज्ञातिभोजनमें शरीक न होनेकी प्रतिज्ञा

स्तवनिधि क्षेत्रमें एक दिन कन्याविक्रयकी हानिकारक रीतिपर चर्चा हुई उस समय बताया गया कि अपनी कन्याओंको बेचनेके समान निन्द्यकर्म और नहीं हैं तथा जो लोग ऐसे द्रव्यसे बने हुए ज्ञाति भोजनमें शरीक होते हैं वे भी महा निन्द्य काम करते हैं। यह भोजन उच्छिष्टके समान है। उस समय हमारे सेठजीने इस बातकी **प्रतिज्ञा** की कि हम ऐसे भोजनको नहीं खावेंगे इनके साथ निम्नलिखित भाइयोंने और भी नियम लिये—

१—सेठ हीराचंद रामचंद (हरीभाई देवकरण) शोलापुर
२— ,, हीराचंद नेमचंद ,,
३—शा. वालचन्द जीवराज ,,
४—सेठ रामचन्द नाथारंगजी बम्बई

उदार पुरुषका सन्मान।

सेठ माणिकचंदमें गुणग्राहकताका अच्छा गुण था। आपमें यह आदत थी कि गुणोंको ग्रहण करें—दोषोंकी तरफ ध्यान न देवें। सेठजीने जैनमित्र अंक ८,९ वैशाख, जेठ १९६०, में बम्बई प्रांतिक सभाके सभापतिकी हैसियतसे एक धर्मात्मा सेठकी मृत्युपर अपना शोकोद्गम प्रगट किया है।

लोकबहादुर रावजी कस्तूरचंद शोलापुर।

शोलापुरमें एक धनाढ्य अग्रेसर दानवीररत्न सेठ रावजीभाई कस्तुरचंदजी थे जो मिती चैत्र कृ० १४को अपनी ५६ वर्षकी आयुमें परलोक सिधारे। इस नरने अपने पिताकी सम्पत्तिको मुंबई, शोलापुर, पूना आदि स्थानोंमें व्यापार करके

बहुत वृद्धि-गत किया और अपने जीवनमें निम्नलिखित उल्लेख योग्य धर्मकार्य्य किये ।

(१) सं० १९३३ फागुण सु० २ को रु० ५००००) खर्च कर श्री तारंगाजीमें जिनबिम्ब प्रतिष्ठा कराई ।

(२) सं० १९३४ में सम्मेद शिखरजीकी यात्रामें हजारों खर्च किये ।

(३) सं० १९३८ में श्री केशरियाजीकी यात्रामें संघ सहित जाकर १००००) खर्च किये ।

(४) सं० १९४८ में श्रीगोमट्टस्वामीकी यात्रा बड़ी धूमधामसे की, हजारों रुपये खर्च किये ।

(५) सं० १९४८ में चतुर्विधि दानशालाको बड़े भावसे स्थापन कराया ।

(६) सं० १९५१ में पालीतानामें सेठ हरिभाई देवकरणके साथ बिम्बप्रतिष्ठा कराई उसमें ५००००) पचास हजार रु० खर्च किये ।

(७) सं० १९५७ में बम्बई संस्कृत विद्यालय फंडमें १०००) दिये ।

पालितानाकी प्रतिष्ठाके समय इनका पुत्र रामभाऊ २५ वर्षकी आयुमें परलोक सिधार गया । आपने कुछ भी शोक न करके स्वयं शांति रक्खी व औरोंको धैर्य्य बंधाया। शोलापुरके जैनियोंमें इनकी बहुत बड़ी प्रतिष्ठा थी तथा यह **लोक बहादुर** कहाते थे ।

फल्टनमें सेठ चुन्नीलालका विद्याप्रेम ।

बैशाख वदी २ सं० १९६० को **सेठ चुन्नीलाल**ने फल्टनमें पाठशालाकी स्थापनाके समय एक मनोहर भाषण देकर उसके लाभ बताए व एक बड़ी प्रदान की । इसमें गांधी नाथारंगजीकी तरफसे २५) मासिक ५ वर्ष तक देना स्वीकार किया गया था ।

शिक्षण फंडके लिये सेठजीका भ्रमण ।

सेठ माणिकचंदजीकी परोपकारार्थ सेवा जगतके जीवोंके लिये दृष्टान्त रूप है । द० महाराष्ट्र जैन सभाको उन्नति देनेके लिये उसके शिक्षणफंडकी वसूलीके लिये जैसे आपने स्तवनिधिकी सभामें अपने भाषणसे बहुतसा रुपया एकत्र करा दिया वैसे इसके लिये भ्रमण करना भी स्वीकार किया । ता० २० मई १९०४को सेठ माणिकचंदजी शिक्षण फंडकी वसूलीके लिये आनेवाले थे पर कार्य बाहुल्यके कारण न आ सके पर उसी रोज रा० रा० ए० बी० लट्ठे०, रा० रा० हंजे ऑन० जनरल सेक्रेटरी; रा० रा० बलवंत बाबाजी बुगटे बेलगांव आगए थे और अपने व्याख्यानोंसे तृप्त कर रहे थे । इतनेमें सेठ माणिकचंदजी अपने मित्र सेठ हीराचंदजीके साथ बेलगांव स्टेशनपर ता० १ जूनको पधारे । स्टेशनपर बड़े भारी समारोहके साथ स्वागत किया गया । होसूरमें श्री लक्ष्मीसेन स्वाजीके मठमें स्थान दिया गया । कोल्हापुर आदिसे भी कुछ लोग आए थे । एक दिन माणिकचंदजीके, दूसरे दिन रा० रा० दत्तात्रय आण्णा बुणे शोलापूरके सभापतित्वमें सेठ हीराचंदजीके दो व्याख्यान हुए । जैनधर्मकी **बड़ी महिमा हुई ।**

एक नवयुवकने तुर्त परस्त्रीत्यागका व्रत लिया। फंडके लिये कहा गया तो रा० रा० चिमप्पा अण्णा लेंगड़ेने ५०१) तुर्त रोकड़ा दिये, करीब २०००) की भरती हुई। किसीने नए आंकड़े भरे। रा० रा० व्रवाणेने १००) ग्रंथ स्वाध्यायार्थ बांटनेके लिये देना कबूल किये। वास्तवमें शास्त्रदान बहुत कल्याणकारी है। सर्व मंडलीसे सत्कार प्राप्त कर रुपया एकत्र कर दोनों सेठ, लट्ठे और अन्य लोग कोल्हापुर गये। वहां रा० रा० भैर सेठ, पाटील मजिस्ट्रेट, शास्त्री कल्लाप्पा भरमप्पा निटवे आदिने स्वागत किया। प्रो० बीजापूरकरने सेठजीको बुलाकर पानसुपारी की। यहां उस समय डकन कालेजके प्रोफेसर पाठक श्री लक्ष्मीसेन स्वामीके मठमें ग्रंथ देखने आए थे। यहांसे **किणीसगांव** गए। यहां ८००) रु० जमा हुए, फिर **वड़गांव** गए, वहां २३२) रु० एकत्र किये। किणीसमें गरीब जैन बालक विद्या पढ़े इसके लिये एक शिक्षक रखनेका खर्च सेठ हीराचंदने देना कबूल किया। फिर **कोल्हापुर** आए। रा० रा० आपा दादा गोंदा पाटीलकी अध्यक्षतामें उपदेश हुआ। पाटीलजीने ४००) शिक्षण फंडमें देना कबूल किये।

कोल्हापुर बोर्डिंगकी इमारत बनानेकी स्वीकारता।

यहाँपर हीराचंदजीकी रायसे **सेठ माणिकचंदजीने** विद्यालयके लिये एक सुंदर इमारत तय्यार कराना स्वीकार किया तथा महाराज कोल्हापुरकी जब भेट हुई तब सर्कारने भी यथाशक्य मदद देना कबूल करके चौफाल्याके मालकी जगह इमारतके लिये दान की। इस काममें दीवान साहब, रा० सा० सावंत मामलेदार, बापूसाहब आदिने खूब परिश्रम किया।

कोल्हापुर बोर्डिंगकी इमारतका महूर्त।

सेठजी तुर्त बम्बई आए और भाई नवलचंदकी राय लेकर अनुमान २२०००) इस कोल्हापुर बोर्डिंगकी बहुत सुन्दर इमारत बनानेके लिये खर्च करना निश्चित करके पत्रव्यवहार करके ता० १५ अगस्त १९०४ को नीव डालनेके लिये तजवीज हुई। यह भी तय हुआ कि महाराज कोल्हापुरके हाथसे महूर्त हो। इसी तारीखपर बम्बईसे सेठ माणिकचंदजी, शोलापुरसे सेठ हीराचंदजी व अन्य ग्रामोंसे बहुत आदमी आए थे। शहरके अधिकारी व सभ्य पुरुष सब उपस्थित थे। ठीक २ बजे दोपहरको महाराज छत्रपति थो० एजन्ट सहित आ विराजे, तब मि० लट्ठे एम० ए० ने इंग्रेजीमें एक लम्बा भाषण दिया, जिसमें कहा कि यह द० म० जैन सभा अप्रेल सन् १८९९ में स्थापित हुई है, परंतु सन् १९०२ से एक शिक्षण फंड १२०००) का किया गया और विद्यालय यहां स्थापन किया गया है। फिर इसको बोर्डिङ्गमें बदला गया उसमें अब ३० छात्र हैं जो हाईस्कूलमें पढ़ते हैं तथा फंड अब ४००००) का है इसमें से ६०००)का फंड रोकड़ा आया है जो बम्बईके **प्रसिद्ध सेठ माणिकचंद पानाचंद जौहरीके** यहां जमा है। बाकी रुपयेका लोग ४) सैकड़ेका व्याज देते हैं। बोर्डिङ्गके मकानकी बड़ी जरूरत है जिससे १०० छात्र रह सके, जो धर्मशिक्षा लेते हुए रहें। इसके लिये महाराजने विक्टोरिया मरहठी बोर्डिंगके पास बहुत अच्छा स्थान दिया है जिसपर सुंदर इमारत बनाना सेठ माणिकचंदजीने कबूल किया है। उसकी नीव आज श्रीमन् महाराजके द्वारा

डाली जायगी। तब सेठ माणिकचंदजीने महाराजको विनती की कि नीव रक्खें तब महाराजने **चांदीकी थापीसे चूना रक्खा**। इस तरह सेठ माणिकचंदने कोल्हापुरमें अति सन्मानके साथ बोर्डिंग बनानेका महूर्त किया। इस उत्सवको पूर्ण करके सेठजी जो कि अब परोपकारमें ही अपना जीवन अर्पण कर चुके थे बम्बई होते हुए **अहमदाबाद** आए।

अहमदाबाद बोर्डिंगको ३५०००)का दान।

यहाँ ता० २२ अगस्तको बोर्डिंगका नामकरण संस्कार था। सेठ माणिकचंदजीने हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगकी मेनेजिंग कमेटीमें ता० २७ मार्च १९०४के दिन यह प्रस्ताव पेश किया कि नीचेकी शरतोंसे हम ३५०००) कमिटीके आधीन करते हैं कि गुजरात दि० जैन बोर्डिंग अहमदाबादका नाम फेर कर हमारे स्वर्गीय भतीजे **प्रेमचंद मोतीचंद**का नाम उसमें दिया जावे–

(१) २९०००) कायम फंडके लिये (२) ५०००) बोर्डिंगके मकानके लिये (३) ९०००) प्रेमचंदकी माता रूपाबाईके १२३४के उपवासके उद्यापनके हर्षमें। इस तरह ३९०००)का व्याज बोर्डिंगके छात्रोंके रहने व भोजनादिमें खर्च हो। प्रबन्ध इस कमिटीके हाथमें रहे तथा यह कमिटी अपनी तरफसे एक ऑनरेरी सेक्रेटरी मनेजिंग कमिटीके मेम्बरोंमेंसे नियत करे। यह मंत्री वार्षिक रिपोर्ट बम्बई बोर्डिंगके मंत्रीको भेजे जो यहांकी रिपोर्टके साथ छपकर बाहर प्रगट हो। यह रकम गवर्नमेंट सिक्युरिटीवाले आचरियेमें या अच्छा भाड़ा आवे ऐसे मकानमें रोकना। इस रकमका

व्याज उपरके हेतुके विरुद्ध कभी खर्च न करना तथा इस बोर्डिंगको कभी उखाड़ना नहीं। यदि कदाचित कोई विद्यार्थी न आनेसे बोर्डिंग न चले तो बम्बई बो०के ट्रस्टी अपनी सम्मतिसे इसका उपयोग गुजरातके दिगम्बर जैन धर्म पालनेवालोंके अंदर विद्या प्रचारार्थ खर्च करें। इस प्रस्तावको सहर्ष स्वीकार किया गया।

इसीके अनुसार ता० २२ अगस्त १९०४ को प्रातःकाल अहमदाबाद बोर्डिंगके मकानमें रावबहादुर लालशंकर उमियाशंकरके सभापतित्वमें सभा हुई। उस समय २५०००) देकर नाम बदलनेका महत्व प्रगट किया गया। जयसिंहभाई गुलाबचंद मजि० आमोद, शा० हरजीवन रायचंद व पं० लालन आदिके भाषण हुए। मंत्रीने पुस्तकालयके लिये अपील की तो २२५) रु० आये। एक गुप्त नाम भाईने १०) मासिक छात्रवृत्ति दी। रात्रिको १५००) का चंदा हुआ। गुजरातके बहुत भाई आये थे। इस सभामें रा० रा० लट्ठे एम० ए० भी शरीक हुए थे। इन्होंने इंग्रेजीमें भाषण दिया था। ता० २३ की रात्रिको रा० रा० रामचंद गांधीने बालविवाहके विरुद्ध जोरदार भाषण दिया जिसका श्रोताओंपर अच्छा असर हुआ। माता रूपाबाईको अपने पुत्रका नाम चिरस्मरणीय रहनेकी स्थापनासे बहुत आनन्द हुआ।

बोरसदमें भ्रमण और मानपत्र।

अहमदाबादसे सेठ माणिकचंदजी बोरसद पधारे। वहां ता० २६ अगस्तको सेठ जेठालाल प्रेमानन्दकी ओरसे एक सार्वजनिक पुस्तकालयकी स्थापना सेठजीके कर कमलोंसे बड़ी धूमधामसे हुई। स्थापनकर्ताने १०००) नकद

व २००) की पुस्तकें दी तथा अन्य उपस्थित सज्जनोंने ४००)की मदद दी। सर्व जैन मंडली सेठजीके उपदेश व विद्याप्रेमको देखकर अति प्रसन्न हुई और परम हर्षमें भरकर एक **मानपत्र** प्रदान किया जिसकी नकल इस भांति हैं–

मानपत्र.

झवेरी शेठ माणेकचंद पानाचंदनी पवित्र सेवामां.

प्यारा धर्मबंधु,

आजे अमो बोरसद निवासी दिगम्बर जैनो आप साहेबनी स्वधर्म अने केळवणी प्रत्ये अत्यंत प्रीति देखीने आ मानपत्र आपवानी तक लइये छीये ते स्वीकारी आभारी करशो.

श्री जयधवल, महाधवल जेवा प्राचीन ग्रंथोना जीर्णोद्धार करवामां आपे आगेवानी भाग लई सर्व भाइओनी मददथी काम चलाव्युं छे तेथी आपनी धर्म शास्त्रज्ञान वृद्धिमाटे अत्यंत उत्कंठा जणाई आवे छे. आपे सूरत जेवा पौराणिक शेहेरमां जैनी यात्राळुओनी उतरवानी सगवड माटे ' जैन हॉल ' जेवुं **चन्दावाडी** नामनुं मकान बंधाववा पाछळ रु० २००००) नो खरच करी जैन कोम उपर जे उपकार कर्यो छे ते आपनी जैन भाइओ प्रत्येनी उदार लागणी बतावे छे.

आपणा जैनी भाईओ स्वधर्म अने राजकाज संबंधी, राजकीय, वैद्यकीय, शिल्पशास्त्र अने इंग्रेजी गुजराती साहित्य वीगेरेनी ऊंचा दरज्जानी केळवणी मेळववामां अत्यावश्यक साधन जे बोर्डिंग स्कूल छे ते मुम्बई जेवा मोटा शहेरमां श्वेतांबरी, दिगंबरीनो भिन्न

भाव राख्या विना पोताना आशरे **पोणोलाख** रुपीयाने खरचे आपना स्वर्गवासी पिताश्री शेठ हीराचंद गुमानजीना स्मरणार्थे आप बांधी आपी समस्त जैन कोम उपर जे उपकार कर्यो छे ते प्रशंसनीय छे अने ते आपनी धर्मसहित ऊंचा धोरणनी इंग्रेजी केळवणी आपवानी अपक्षपात लागणी प्रदर्शित करे छे.

तेमज गुजरातमां अमारी दिगम्बरी जैन **कोम**मां केळवणीना बोहोळो फेलावो करवा माटे भोजन, अभ्यास वीगेरे बधी सगवडो पुरी पाडनारी एक बोर्डिंगस्कूल आपना कैलासवासी भत्रिजा शेठ प्रेमचंद मोतीचन्दना नामथी अमदावादमां रु० ४००००) ने खरचे उघाडी तथा कोल्हापुरमां एवीज सगवडवाळी जैन बोर्डिंगनुं मकान पोताने खरचे बंधावी आपी स्वधर्मी भाईओ प्रत्येनी शुद्ध लागणी अने धर्मकृत्यमां भारे उदारता प्रकट करी छे.

मुंबई जेवी अलबेली नगरीमां कोई पण कोमने उपयोगी थई पडे तेवी एक भव्य धर्मशाळा बांधवा पाछळ **दोढ लाख** रुपीआ धर्मादा काढ्या छे ते आपनी गरीबो प्रति दयावृत्तिनी लागणी प्रकट करे छे. छेवटमां आपनी आवी आवी धर्म, दया, स्वधर्मी प्रति उत्तम सेवाने माटे तथा विद्या अने विद्वान् प्रति आपनी सदैव शुभ लागणीओ माटे अमो आपने आ मानपत्र आपतां श्री जगत्कर्ता (!) पासे अंतःकरणपूर्वक प्रार्थना करीए छीए के आप दीर्घायुषी थाओ ने परमात्मा आपने आवां उत्तम कार्यो करवाने सदैव सन्मति आपो,

एवुं इच्छी आ मानपत्र मानपूर्वक स्वीकारी आभारी करशो एवी आशा राखीए छीए. तथास्तु.

बोरसद २९ ओगस्ट १९१४.

आपना सद्गुण चाहनारा—

परी० प्रेमानंद नारणदास
शा० भाइजी पानाचंद
शा० मथुरदास पानाचंद
शा० छगनलाल मूलजी
शा० काळीदास जेशींग बीन किशोरदास
शा० धरमचंद ताराचंद
शा० शीवलाल पानाचंद

कुंथलगिरि क्षेत्रपर सड़कके लिये १००१) का दान।

श्री देशभूषण कुलभूषण मुनि जिनके उपसर्गको बलभद्र श्री रामचंद्रने दूर किया था कुंथलगिरि पर्वतसे मोक्ष पधारे हैं। यह पहाड़ उत्तम मंदिरोंसे शोभित है। दक्षिणमें बारसी टाउन स्टेशनसे १० कोस है। रास्ता बड़ा खराब है। बैलोंको बहुत तकलीफ होती है। पिंपलगांवसे तो बहुत ही खराब है। रास्तेमें सावरगांवकी नदी व पर्वत बहुत कठिन है। गाड़ी छः बैल लगनेपर भी नहीं चलती। यहांसे भूम राज्यके वाकवड़ तक चढ़ उतर बहुत कठिन है। इतनी दूर सड़क बांधनेको १० या १२ हजारका अंदाज किया गया है व सर्कार भूमने चौथाई खर्च देना कबूल किया है

तब **सेठ माणिकचंदजीने** १००१) दिये तथा इसके प्रबन्धके लिये एक कमेटी ७ महाशयोंकी बनी। सेठ माणिकचंद पानाचंद जौंहरी बम्बई, गांधी रामचंद नाथा बम्बई, दोशी हीराचंद नेमचंद शोलापुर, गांधी वालचंद रामचंद शोलापुर, शा. हीराचंद प्रेमचंद परंडा, सेठ नानचंद वालचंद धाराशिव, सेठ रावजी सखाराम भूम। यह सड़क जहां तक मालूम है अब तक बनी नहीं है।

नवीबाईके संयोगसे सेठ माणिकचन्दको १।। वर्षके अनुमान हुआ पुनमचंद नामके एक पुत्ररत्नका लाभ हुआ था इससे सेठजीको बहुत संतोष हुआ था। परंतु आप बोरसदसे बम्बई आए कि पुत्रको बिमार पाया। उसकी औषधिका प्रबन्ध बहुत कुछ किया पर वह जीव उच्च गोत्री होनेपर भी अल्पायु था सो सेठजी और उसकी माताको यकायक शोकसागरमें डुबाकर ता० २८ अगस्तकी संध्याको शरीर छोड़ चल बसा। सेठजीको रंज तो बहुत हुआ पर धैर्य और ज्ञान तथा अनुभवने यही शिक्षा दी कि शोक करना वृथा है। कौन पुत्र और कौन पिता? यह सब माननेका रिस्ता है। **जिसका मेरेसे भला हो वही मेरा पुत्र है**। आप अपने जातिके बालकोंको ही अपना पुत्र जानते थे और जहां तहां उनमें धार्मिक और लौकिक ज्ञानके प्रचारार्थ तन मन धनसे मदद करते रहते थे। आपसे जब कभी कोई पुत्रकी बात करता आप यही उत्तर देते कि मेरे जातीय बालक ही सब मेरे पुत्र हैं। मुझे पुत्रकी कामना नहीं है।

सेठजीको फिर भी पुत्रवियोगका दुःख व १०००) का दान।

उदारचित्त दानी सेठने पुत्रकी स्मृतिके लिये १,०००) का दान इस प्रकार किया–

२०) जैन महाविद्यालय, मथुरा ।
६०) दि० जैन प्रान्तिक सभा, बम्बई ।
४०) पंजाब, अवध, मालवा और नागपुरकी दि० जैन प्रान्तिक सभाओंके सहायतार्थ ।
१००) सेठ प्रेमचंद मोतीचंद दि० जैन बो० स्कूल, अहमदाबाद,
१००) श्री कुंथलगिरिकी सड़कके लिये ।
१००) द० महाराष्ट्र जैन बोर्डिंग, कोल्हापुर ।
९०) सिद्धक्षेत्र गजपंथाजी ।
२९) जैन अनाथालय, हिसार ।
२५) ,, जैपुर ।
१००) पिंजरापोल–सूरत ।
५०) रक्तपित्त औषधालय–बम्बई ।
५०) महाजन अनाथ बालाश्रम–सूरत ।
२९) ,, अहमदाबाद ।
२५) भोजनशाला–सूरत
२३०) फुटकल (इच्छित कार्योंमें)

१,०००) कुल

पाठकोंको इससे शिक्षा लेनी चाहिये कि सेठजी अपने पैसेसे कितने विचारके साथ उपयोगी कामोंमें दान किया करते थे ।

सेठ हरीचंद नाथाका मरण और २५०००) का दान।

सेठ नाथारंगजी गांधीवाले सेठ हरीचंदजी नाथा आकलून (शोलापुर)का आसौज वदी ९ सं० १९६१ के दिन अपनी ६६ वर्षकी आयुमें समाधि मरण हुआ। आपने उस दिन २५०००) का दान विद्यार्थियोंके उत्तेजन व जिनवाणीके प्रचार आदि दानके अर्थ संकल्प करके व अन्य पुण्य दान करके मरणसे दो घंटे पहले सर्व बाह्य अभ्यंतर परिग्रहको त्याग आत्मध्यानमें उपयोग लगा दिया और उसी अवस्थामें आत्मा निकल स्वर्ग धामको पधारा। यह बड़े उदारचित्त थे। उस समय इनसे छोटे छः भाई रामचंद नाथा आदि मौजूद थे। आप बड़े बुद्धिशाली थे। पिताकी स्थिति साधारण थी। जब वे मरे तब यह २२ वर्षके थे। इन्होंने ऐसा व्यापार चलाया कि बड़े व्यापारी हो गए और अपनी दूकानें पंढरपुर, आकलून, बीजापुर, गंटूर, मोरेना, बम्बई ऐसी छः जगहें खोल दीं। यह उदारचित्त भी थे। आकलूनकी प्रतिष्ठामें १८०००) खर्च किये। यह दि० जैन प्रान्तिक सभा बम्बईके उपसभापति थे। सेठ माणिकचंदके हजारों लाखोंका दान इनकी बुद्धिमें अंकित हो रहा था। लक्ष्मीको अपने हाथसे कमाकर जो अपने हाथसे ही उपयोगी कामोंमें लगाते हैं वे ही सच्चे बुद्धिमान व चतुर धर्मात्मा हैं।

लक्ष्मी ठगनी व चंचल हैं। जो इसे संग्रह करते हैं और दान धर्ममें नहीं लगाते हैं उनके तीव्र मोह उपजा करके यह उन्हें ठग लेती है और वे जीव इसके ओ अपने अशुभ भावोंके अनुसार नर्क निगोदमें व निन्द्य पशुगतिमें जा महान कष्ट उठाते हैं परन्तु

जो इसको दासीके समान समझकर मोह नहीं करते सदा इससे अपने आत्माका काम लिया करते हैं वे इसके द्वारा महान पुण्य बांध परभवमें अटूट सम्पदाके स्वामी होते हैं अतएव लक्ष्मीको नित्य दान धर्ममें बहुत विचार पूर्वक खर्च करो, जैसे प्रसिद्ध सेठ माणिकचन्दजी अतिशय आवश्यक कामोंमें लगाकर इसकी सफलता करते रहते थे। उक्त सेठका जीवन भारतवर्षके धनपात्रोंके लिये अतिशय अनुकरणीय है। सेठजी सार्वजनिक संस्थाओंमें भी दान करते रहते थे जैसे बालाश्रम सूरत, अहमदाबाद आदि।

(देखो पृष्ठ १७६) सेठ प्रेमचन्द मोतीचन्द दि० जैन बोर्डिंग स्कूल अहमदाबाद.
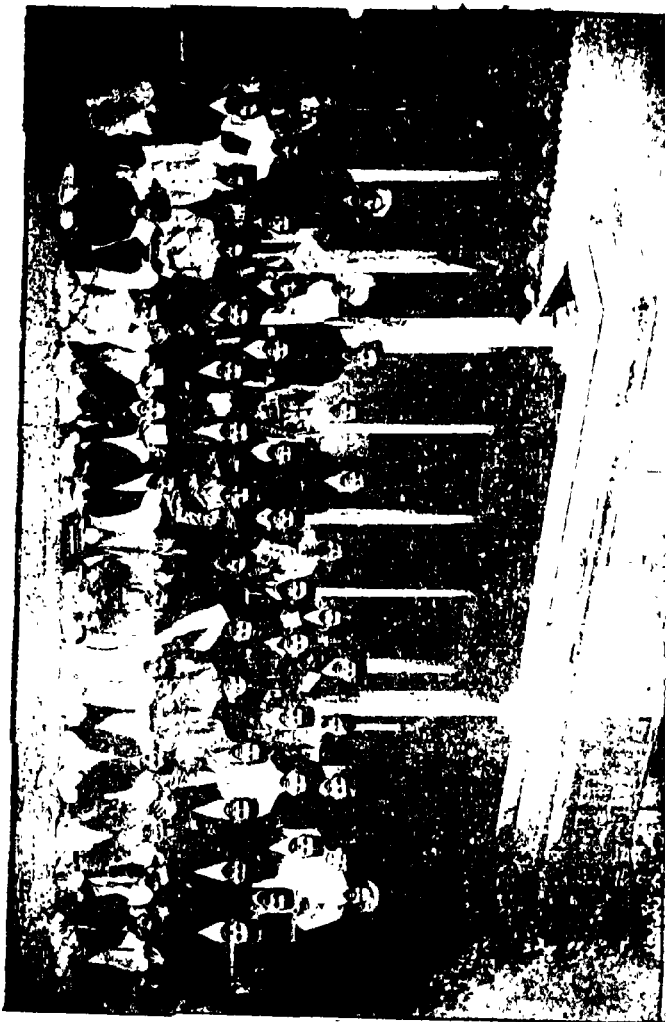
अध्याय दशवां।

महती जातिसेवा प्रथम भाग।

सन् १९०५के प्रारंभ ही से सेठ माणिकचंदके जीवनचरित्रमें नया गुल खिलता है। अब तक सेठजीकी परोपकारताका केन्द्र अपनी और अपनी पत्नी इन दोनोंके जन्मस्थान दक्षिण और गुजरातकी ही तरफ था पर अब क्षेत्र बढ़ते २ सारा भारतवर्ष हो गया। सर्व दिगम्बर जैन जातिका कल्याण पहले आप केवल मनसे ही चाहते थे पर अब वचन और कायसे भी करना प्रारंभ किया, यहां तक कि सारे भारतके भाई आपकी परोपकारताको कभी भूल नहीं सक्के।

अंबालामें महासभाका जल्सा और सेठ माणिकचंदको धन्यवाद।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाके वार्षिक अधिवेशन स्थान चौरासी मथुरा ही में होते थे पर लाला बनारसीदास जॉइन्ट जनरल सेक्रेटरी महासभाके दृढ़ प्रयत्नसे इसका दशवां वार्षिक अधिवेशन अम्बाला छावनीमें ता० २८ दिसम्बर १९०४ से ता० ३० तक बड़े भारी समारोहके साथ हुआ था। पहली बैठकमें लाला सलेखचंद रईस नजीबाबाद सभापति हुए थे तब प्रस्ताव नं० ४ इस तरहका पास हुआ कि " महासभा **सेठ माणिकचंद पानाचंदजी** साहब जौंहरी बम्बईनिवासीको **धन्यवाद** देती है कि उन्होंने पंडित कन्हैयालाल शेरकोट

निवासीको १२०) इनाम देकर इसके लिये उत्साहित किया है कि उसने पीलीभीतके ललित हरी आयुर्वेदीय विद्यालयसे **वैद्यराज** और **वैद्यरत्न**की परीक्षामें उत्तीर्ण पत्र हासिल किया है।"

सेठजी अपनी धनवृद्धिके प्रारंभसे ही परदेशी विद्यार्थियोंको छात्रवृत्तियें दे देकर उत्साहित करते रहते थे। इससे सेकड़ों तीव्र बुद्धि छात्र जो धनकी सहाय विना अपने पढ़नेकी उमंगको दबा कर बैठ रहते सो पढ़कर अपनी विद्याकी उमंगको पूर्ण करते हुए। कन्हैयालालजी शेरकोटकी पाठशालाका तीव्रबुद्धि छात्र था जिसके अध्यापक पं० यमुनादत्त शर्मा थे। इनकी पढ़ाईके फलसे प्रसन्न हो पंडित गोपालदास और बच्चूलालजीकी सिफारिशसे उक्त पंडितजीको एक मानपत्र भा० दि० जैन महासभाने ता० २६ अक्टूबर १८९९ सं० १९५६ को दिया था तथा कन्हैयालाल सं० १९६७ की परीक्षामें प्रवेशिका चतुर्थखंडके पांचों विषयोंमें उत्तीर्ण हुआ था उसको २॥) मासिक छात्रवृत्ति श्रीमान् **सेठ माणिकचंद पानाचंद**की ओरसे दी गई थी।

छात्रवृत्ति देनेका अपूर्व फल।

यही पं० कन्हैयालाल आज कई वर्षोंसे कानपुरके दि० जैन औषधालयमें इतनी योग्यतासे काम कर रहे हैं कि वहांके सर्जन इंग्रेजने उस औषधालयकी प्रशंसा की है। रोगी इनके हाथसे बहुत शीघ्र अच्छे होते हैं। नगरमें इनकी चाह भी खूब हो गई है जिससे वह प्राइवेट मकानोंमें देखनेसे १००) व २००) मासिक कमा लेते हैं।

तीर्थक्षेत्र कमेटीकी दृढ़ता।

ता० २९ दिसम्बर १९०४ को मथुराके सेठ द्वारकादासजी अंबाला पधारे। उनका स्वागत बहुत धूमधामसे हुआ। हाथीपर सवारी नगरमें घूमी। ता० ३० दि० की सभामें द्वारकादासजी सभापति हुए तब प्रस्ताव ५ इस विषयका पास हुआ कि प्रस्ताव नं० १० अष्टम वर्षकी दुरुस्तीमें महासभा तजवीज करती है कि कमेटी जो तीर्थक्षेत्रोंकी निगरानीके वास्ते महासभाके ७ वें वर्षमें नियत हुई थी वह बदस्तूर कायम रहे। उसके कार्यकर्ता भी वे ही रहें तथा महासभा अधिकार देती है कि वह अपनी नियमावली अपने ही मेम्बरोंसे मंजूर कराके कार्रवाई करै। प्र० नं० ६ में महाविद्यालयके लिये एक डेपुटेशन पार्टी बनी जिसने उसी वर्ष मध्यप्रान्तमें घूमकर करीब ६०००) एकत्र किये व धर्मकी प्रभावना की। उस समय भी ६॥ हज़ारका चंदा हुआ जिसमें २०००) लाला नलेखचंद किरोडीमलजी रईस नजीबाबादने दिये। जैनगज़ट जो कई वर्षोंसे साप्ताहिकसे पाक्षिक चल रहा था उसकी संतोषजनक कार्रवाई देख फिर साप्ताहिक करनेके लिये प्रस्ताव नं० ८ पास हुआ व प्र० नं० ७में तय हुआ कि आगामी अधिवेशन **सहारनपुरमें** किया जाय।

अर्जीका जवाब व बम्बई गवर्नरसे भेट।

बम्बई दि० जै० प्रान्तिक सभाके प्रस्तावानुसार सेठ माणिकचंदजीने सभापतिकी हैसियतसे जैनियोंकी संख्या जेलादिमें भिन्न दिखानेके लिये एक मेमोरियल बम्बई गवर्नरकी सेवामें भेजा था जिसका जो जवाब आया वह इस भांति है:—

शिक्षा खाता, बम्बई कौंसिल, ता० १ अगस्ट १९०४

ब नाम–सेठ **माणिकचंद पानाचंदजी**

प्रेसीडंट दि० जैन प्रान्तिक सभा, **बम्बई।**

महाशय! आपके ता० ४ जुलाई १९०३ के पत्रका उत्तर इस प्रकार देनेको मुझे आज्ञा हुई है:–

(अ) आगामी वर्ष जब परिक्षापत्र जांचके लिये आवेंगे तब देशकी शिक्षा सम्बन्धी दशाकी सूचीमें जैनियोंको पृथक् दिखलानेकी बात पर ध्यान रक्खा जायगा।

(ब) जुडीशियल और ऐडनिस्ट्रेटिवकी सूचीके तीसरे खानेमें बौद्ध और जैन एकत्र दिखलाए जाते हैं इसमें रदबदल करनेकी आवश्यक्ता नहीं है।

(क) ज्युडीशियल और ऐडमिनिस्ट्रेटिवकी सूचीके आठवें (जन्मरण सम्बन्धी) खानेमें जनियोंको पृथक् दिखलाना अशक्य है।

२– सेनेटरी (आरोग्यता)के कमिश्नर साहबकी रिपोर्टमें जैनियांके पृथक् विवरण देनेके विषयमें आपको फिर लिखा जावेगा।

आपका सेवक **जै० स्लेडन**; गवर्नमेंट सेक्रेटरी।

(जैनमित्र वर्ष ६ अं० ९)

बम्बई बोर्डिंगमें सभा व सेठजीका यश गान।

सन् १९०४ दिसम्बरमें राष्ट्रीय सभा अर्थात् कांग्रेसका २०वां अधिवेशन बम्बईमें हुआ था। सभापति सर हेनरी काटन हुए थे। प्रदर्शनी भी बड़ी शानके साथ हुई थी। इस निमित्त परदेशी बहुतसे जैनी भी बम्बई पधारे थे। ता० ३१ दिसम्बरकी रात्रिको ७ बजे हीराचंद गुमा-

नजी जैन बोर्डिंगमें श्रीयुत शोलापुर निवासी **सेठ वालचंद रामचंदके** सभापतित्वमें सभा हुई थी। बोर्डिंगके कार्य विवरणको सुनकर इसकी उपयोगिता प्रगट हुई, पं० बंसीधरको धार्मिक विषयमें निपुणताके अर्थ एक सुवर्ण पदक दिया गया और शेष धर्मशिक्षामें उत्तीर्ण बोर्डरोंको इनाम दिया गया। **सेठ माणिकचंद** व **प्रेमचंद**की तीन बार जय कही गई। ३००) उपस्थित मंडलीने लाइब्रेरीमें दिये। सेठ माणिकचंदको अपनी जातीय सेवाका यश मिलते हुए देखकर बहुत संतोष हुआ।

स्तवनिधिपर द० म० जैन सभा। दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका वार्षिक अधिवेशन माघ वदी १४ से माघसुदी २ ताः ३से ६ फर्वरी १९०९ तक स्तवनिधि क्षेत्रपर बड़े समारोहसे हुआ। अध्यक्ष श्रीयुत सेठ नेमीलाल गुलाबसाह नागपुरवाले हुए थे। वरारसे बहुत महाशय आए थे। **सेठ माणिकचंदजी** स्वागत कमिटीके प्रमुख थे सो पहले ही पहुंचे थे। ताः १ को स्टेशनपर सभापतिका स्वागत किया गया। शिक्षणफंडमें ३०००) की उपज हुई। रा० रा० दादा तात्या चिवटे कुरुंदवाड़ने १००) उत्पन्नकी जमीन दी। क्षेत्र भंडारमें २०००) के अनुमान आय हुई सो क्षेत्रमें मरम्मतकी आवश्यक्ता जान **सेठ माणिकचंदजीके** यहां जमा करा दी गई। सभामें ८ वाँ प्रस्ताव इस विषयका रा० रा० लट्टे एम. ए० ने पेश किया कि जैनियोंकी संख्याकी कमीके कारणोंको दूर किया जाय उसके लिये सभा सम्मति देती है कि दुर्व्यसन जन्य रोगोंके फैलाव व बालविवाह आदि कारणोंको रोका जाय। इसका समर्थन

श्रीमान् शेठ माणिकचंदजीने बहुत जोरके साथ किया ।

सेठजीकी पत्नी स्त्री समाजकी अध्यक्षा ।

सेठ माणिकचंदजी सपत्नीक स्तवनिधि पधारे थे । ता० ९ फर्वरीकी रात्रिको स्त्रियोंकी एक महती सभा हुई जिसका अध्यक्ष स्थान सेठजीकी धर्मपत्नी नवीबाईजीको दिया गया था । इसमें १९०० से अधिक स्त्रियां थीं । इस सभामें श्रीमती डाक्टरनी कृष्णाबाईने स्त्रीशिक्षा पर बहुत ही असरकारक भाषण दिया । जैन समाजकी तरफसे एक अंगूठी नज़र की सो डाक्टरनी बाईने विद्याखातेमें दान कर दी । इस अंगूठीका नीलाम सभामें १९०) रु० में हुआ तथा दो इनाम और भी आए थे सो भी १२०) रु० में नीलाम हुए । इस रुपयेसे स्त्री शिक्षाकी उत्तेजना दी जाय ऐसा ठहराव हुआ ।

धर्मादेका द्रव्य ।

महाराष्ट्र सभाके जलसेमें स्वयं शेठ माणिकचंदने १२ वां प्रस्ताव यह पेश किया—" बाहरसे आए हुए व्यापारियोंसे माल बिक्री अथवा गाड़ी पर सैकड़ा पीछे कुछ धर्मादा वसूल करनेकी इस ओर प्रथा है, परंतु यह धर्मादेका द्रव्य नाच तमाशोंके सिवाय किसी उत्तम लाभकारी कार्योंमें कभी नहीं लगाया जाता है इसलिये प्रत्येक स्थानके मुखिया पंच महाशयोंसे प्रेरणा की जाती है कि वे उक्त धर्मादा द्रव्यको किसी सार्वजनिक कार्यमें लगानेका प्रयत्न करें । इसको वर्णन करते हुए सेठजीने समझाया कि व्यापारमें जो हम धर्मादा जमा करते हैं वह हमारी जातीय मिलकियत नहीं है परंतु धर्मके लिये वह पबलिकका पैसा है । अतएव उसको धर्म व

परोपकार कार्यमें खर्च करना चाहिये । उससे खेल तमाशे कराना अधर्म है । उस पैसेको अमानतमें आप रखनेवाला हैं ऐसा समझें और खर्च करता रहे । बहुतसे लोग ऐसे रुपयेको अपनी वहियोंमें जमा करते चले जाते हैं पर उसका उपयोग नहीं करते । जब वह द्रव्य ज्यादा हो जाता है तब परिणाम गिर जाते हैं और वे उनको छिपाकर रहने देते हैं खर्चका नाम भी नहीं लेते । " इस प्रस्तावका समर्थन रा० रा० अणाप्पा भरमापा चिवटे और विष्णुपंत शास्त्रीने किया । प्रस्ताव पास हुआ । इसका लोगोंपर अच्छा प्रभाव पड़ा । आगामी वर्षके लिये **शेठ माणिकचंद पानाचंद बम्बई** कोषाध्यक्ष नियत हुए ।

श्रीमती मगनबाईजी-की तीर्थयात्रा ।

संवत् १९६१ के जाड़ोंमें शोलापुरके सेठ रावजी नानचंद श्री सम्मेदशिखरजीकी यात्राको रवाना हुए । सेठजीने उन्हींके साथ श्रीमती मगनबाईजीको अंकलेश्वरकी विदुषी बाई व मगनबाईकी सहधर्मिणी ललिताबाई व रसोइया आदि १० मनुष्योंके साथ यात्रार्थ भेज दिया । सेठजीने मगनबाईजीको संस्कृत व धार्मिक विद्या पढ़ाकर व अनेक गुजराती व हिन्दी उपयोगी पुस्तकें तथा नित्य समाचारपत्र देखनेकी आज्ञा देकर इस योग्य कर दिया कि मगनबाईजी विना संकोचके यात्राका कुल प्रबन्ध कर सकती, टिकट मंगा सक्ती, असबाव तुलवा सक्ती, व आवश्यक्तानुसार बात कर सक्तीं थीं । गुजरात देशमें इस तरहका परदा नहीं है जैसा कि उत्तर भारतमें है कि स्त्री एक गुड़ियाकी तरह होती है । वह स्वयं यात्रा नहीं कर सक्ती । उसके हाथ

पैर मुंह सब ढका हुआ रहता है। उसको कुछ खबर नहीं। असबाबमें एक स्त्री भी मानी जाती है जिसे उठा कर ले चलना पड़ता है। गुजरातकी स्त्रियां मुंह नहीं ढकतीं—ज़रूरत पड़नेपर कायदेके साथ देखभाल व बातचीत कर सकती हैं। अनपढ़ गुजराती स्त्रियोंकी अपेक्षा मगनबाईजी परदा न रखनेका पूरा लाभ ले सकती थी। वह पढ़ी लिखी ऐसी चतुर थी कि जो बातें पुरुषोंको न मालूम उनका इसे ज्ञान था। चौपाटी बंगलेपर जब सेठजी रात्रिको दीवानखानेमें बैठते तब यह भी दूसरी कुर्सीपर बैठती और जो २ बातें सेठजी लोगोंसे करते उनको सुनती व कभी ज़रूरत होनेपर बीचमें भी बोलती थी। कुछ व्याख्यान देने व परोपकार करनेका भी शौक हो चला था। वृत्ति भी वैराग्य रूपमें थीं; इसीसे सेठजीने मौका दिया कि इसको प्रवासका अनुभव हो और यह जातिसेवाके लिये तय्यार हो। ललिताबाई भी इसीके समान संस्कृत व धार्मिक विद्यामें चतुर थी, परिणति वैराग्य रूप थी। दोनोंका मेल भी था। दोनों एक दूसरेकी रक्षा करें, एक दूसरेका स्थितिकरण करें इसीलिये दोनोंका साथ सेठजीने कर दिया। कई मास यात्रामें विताए। बुन्देलखंडकी यात्राएं भी की। शिखरजीकी यात्रा बड़े भावसे की। फिर लौटते हुए काशी, अयोध्या होती हुई लखनऊ पधारीं।

लखनऊमें बाबू धरमचंद फतहचंद जौंहरीका नाम सेठजीने नोट करा दिया था सो चौकमें आई और बड़े मंदिरजीके निकट स्थानमें उक्त जौंहरियोंने बहुत सन्मानके साथ ठहराया।

चौकका मंदिर बहुत सुन्दर बना है। भीतर संगमर्मरका जड़ाव

व रंगावेजी अच्छी है। पांच वेदियाँ हैं।

बाबू शीतलप्रसादका मूलनायक **श्री नेमिनाथ स्वामीकी**
परिचय। बड़ी ही शांत दो गज ऊंची पद्मासन प्रति-
बिम्ब मध्य वेदीमें विराजित है। दर्शन करते
हुए जी नहीं तृप्त होता है। दूसरी वेदियां क्रमसे श्वेत वर्ण
चंद्रप्रभु, चौवीसी, श्वेतकापाषाण श्री पार्श्वनाथजी व श्री शांतिनाथजी
की ४ हैं। शांतिनाथकी प्रतिबिम्ब प्राचीन है, परम वीतरागता
झलकाती है करीब २। हाथ ऊंची पद्मासन है। दर्शन करते २ जी
नहीं तृप्त होता है ऐसे ही चौथी वेदीमें श्री पार्श्वनाथजीकी बड़ी
ही प्रसन्नमुख आत्मिक आनंद रसको पीती हुई एक भव्य प्रति-
बिम्ब है। इसी वेदीके आगे मगनबाई और ललिताबाई दोनों शुद्ध
धोए वस्त्र पहने सामग्री लिये हुए बहुत ही ललित उच्चारणके साथ
अष्ट द्रव्यसे पूजा कर रही थीं, करीब ९ प्रातःकालका समय था। इन
दोनों स्त्रियोंको नित्य श्री जिनेन्द्रकी पूजा करनेका अभ्यास था।
जिस समय ये पूजा कर रहीं थी, मंदिरजीमें कई श्रावक शास्त्र स्वा-
ध्याय कर रहे थे। यहां पहले कभी किसीने स्त्रियोंको अष्ट द्रव्यसे
पूजा करते हुए नहीं देखाथा सो सब आश्चर्यमें डूब रहे थे और
सोच रहे थे कि ये कौन हैं, किस देशकी स्त्रियां हैं।

उन स्वाध्याय करनेवालोंमें एक **बाबू शीतलप्रसाद**
भी थे जो उस समय मंदिरजीके पासवाले मकानमें अपने बड़े
भाई लाला संतूमलके कुटुम्बके साथ रहते थे। शीतलप्रसादकी उस
समय अवस्था २६ वर्षकी होगी। यह अग्रवाल वंशज गोयल
गोत्रीय लाला मक्खनलालके पुत्रोंमेंसे एक थे। दो सीतलप्रसादसे

बड़े और एक छोटा था। पर उस समय केवल दो बड़े भाई ही मौजूद थे। अनंतलाल जवाहरातका और सबसे बड़े संतलाल टोपी चिकनका काम करते थे। सबसे छोटा भाई पन्नालाल था जो अपनी. १८ वर्षकी आयुमें इस समयके ८ या ९ मास पहले ता० १५ मार्च १९०४को प्लेग रोगसे पीडित हो परलोक सिधारा था। इसीके दो दिन पहले शीतलप्रसादकी स्त्री भी प्लेग रोगसे मरण कर गई थी। यह स्त्री एक वैष्णव अग्रवालकी पुत्री थी पर जिन धर्ममें ऐसी गाढ़ श्रद्धावान थी कि किसी कुदेवादिकको नहीं पूजती थी। माता पिताने कुछ विद्या नहीं पढ़ाई थी। पतिको विद्या पढ़ानेका शोक सो रात्रिको सोनेके पहले आध घंटा अक्षर व पुस्तकज्ञान कराकर सोनेकी आज्ञा मिलती थी। पतिकी कृपासे थोड़े ही दिनोंमें जैन धर्मकी पुस्तक पढ़ने लगी थी। पतिसे गाढ़ प्रेम था। शरीर अस्वस्थ रहा करता था, इसीके चार दिन पहले ता० ९मार्च १९१३को शीतलप्रसाद की माता श्रीमती नारायणदेवी यकायक एकही दिन प्लेगमें बीमार रहकर परलोक सिधार गईं। यह नारायणदेवी साक्षात् देवी ही थीं। इनको आलस्य छू तक नहीं गया था। आप सवेरेसे रात्रि तक परिश्रम करनेमें ही सुख मानती थीं। शीतलप्रसादके पिताका १ वर्ष पहले देहान्त हो गया था। शीतलप्रसाद उस समय सर्कारी रेलवे हिसाबके दफ्तरमें क्लर्क थे। माता इन्हींके साथ थी। इनको बहुत चाहती थीं। नारायणदेवी रसोई क्रियामें बहुत निपुण थीं। स्वादिष्टसे स्वादिष्ट भोजन बनाना जानती थीं। थोड़े खर्चमें स्नेह भरा भोजन बनाकर अपनी आयु पर्यंत छोटे पुत्रोंको खिलाती रहीं। घरमें सफाई रखनेमें चतुर थीं। समय बचनेपर लखनऊके चिकनका

कसीदा काढ़कर महीनेमें ८) व १०)रु. के अनुमान पैदा कर लेती थीं। बड़ा ही सरल मिजाज़ था। ऐसी माता व आज्ञाकारिणी स्त्री व छोटे भाईके समागममें कुछ दिन शीतलप्रसादको स्वर्गके समान सुख मालूम होता था और अपनेको साता होनेका बड़ा गर्व था कि मैं संतोषमें दिन बिता रहा हूं, पर संसारकी दशा क्षणभंगुर है, अंतराय कर्म किसीकी स्थितिको एकसी नहीं रहने देता। लखनऊमें प्लेग प्रकोप हुआ। और ता० ९ से १५ मार्चके भीतर वे ही तीन साथी जिनके उपर शीतलप्रसादके शरीरका वैय्यावृत्त निर्भर था यकायक इस हाडमई देहको छोड़कर चल दिये। इस घटनासे शीतलप्रसादके चित्तको जो आघात पहुंचा वह वर्णनके बाहर था। पर श्री ज्ञानार्णव, स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा आदि शास्त्रके पढ़नेका ऐसा भारी असर चित्तमें था कि शोककी तरङ्ग आती थी और जाती थी पर इतनी बलवती नहीं हुई थी कि आंखोंसे आंसुओंकी धारा बहा निकाले। शीतलप्रसादको रोते न देखकर लोग आश्चर्य करते थे। भा० दि० जैन महासभाके साथ शीतलप्रसादका सम्बन्ध बहुत पुराना हो चुका था। जब बाबू सूर्यभानने जैनगज़ट जारी किया था और उसकी प्रतियें श्री शिखरजीमें बांटी थी उसमेंसे एक प्रति शीतलप्रसादके पिता मक्खनलालको प्राप्त हुई थी जो यात्राको गए थे, उस समय शीतलप्रसाद कलकत्तेमें थे और अपने मंझले बड़े भाई अनंतलालके साथ जवाहरातका व्यापार व दलाली करते थे। पिताने वह जैन गज़ट शीतलप्रसादको दिया उसीको पढ़कर शीतलप्रसादके भीतरकी ज्ञान चिनगारी जग उठी और इसने जैनगजट मंगाना शुरू किया व उसमें लेख भी भेजने शुरू किये।

सबसे पहला लेख ता० २४ मई १८९१ के अंक २३ में छपा है जिसमें पंडितोंसे प्रार्थना की गई है कि—

" ऐ जैनी पंडितो, यह जैनधर्म आप ही के आधीन है । इसकी रक्षा कीजिये, ज्योति फैलाइये, सोतोंको जगाइये और तन मन धनसे परोपकार और शुद्धाचारके लानेकी कोशिस कीजिये कि जिससे आपका यह लोक और परलोक दोनों सुधरें आदि "।

शीतलप्रसादके कुटुम्बकी कलकत्तेकी जैन बिरादरीमें बड़ी मान्यता थी। इसका कारण यह था कि इनके पूज्य पितामह लाला मंगलसैनजी संस्कृत और फारसीके विद्वान् होनेके सिवाय जैन धर्मके अच्छे मरमी थे। यह जैन मंदिरमें सभाका शास्त्र पढ़कर धर्मोपदेश देते थे। गोम्मटसार व समयसारकी चर्चाका अच्छा अभ्यास था। लखनऊके शाहजीकी कोठीमें कोषाध्यक्ष थे। इनको गणितमें लीलावतीका अच्छा ज्ञान था। कभी २ इंग्रेज लोग गणितका प्रश्न हल करनेको इनके पास आते थे। शीतलप्रसादपर इनका बड़ा प्रेम था। कभी यह लखनऊ आते तब १० वर्षके बालकको अपने साथ श्री मंदिरजी ले जाकर जो शास्त्र आप पढ़ते सो बंचवाते थे। जैनगज़ट और महासभाके साथ शीतलप्रसादका यहां तक गाढ़ सम्बन्ध हो गया था कि जब यह कलकत्तेसे लखनऊ सन् १८९८ के अनुमान गए तबसे करीब २ प्रतिवर्ष ही श्री चौरासी मथुराके दर्शन किये और महासभामें शरीक हुए। जैनगज़ट पत्रपर अतिशय प्रेम था। बाबू बच्चूलाल प्रयागके देहान्त होनेपर जैनगजटका मुद्रित होना शीतलप्रसादके द्वारा लखनऊमें अंक १० सप्तम वर्ष ता० १ अप्रैल १९०२ से शुरू हुआ, तब यह पत्र पाक्षिक था। उस समय शीतलप्रसाद

घोष कम्पनीके यहां अमीनाबादमें ९०) मासिकके एकौन्टेन्ट थे। लखनऊमें मिडिल क्लास तक शिक्षा पाकर कलकत्ते व्यापारार्थ गए। वहां कई वर्ष रहे। एक वर्ष सील्स फ्री कालेजमें पढ़कर ता० १९ अप्रैल १८९६ को इन्ट्रेन्स परीक्षाके प्रथम विभागमें उत्तीर्ण पत्र प्राप्त कर लिया था। द्वितीय भाषा शुरूसे हिन्दी और संस्कृत थी। लखनऊमें आकर टामसन सिविल एन्जीनियरिंग कालेज रुड़कीकी फोर्थ ग्रेड एकौन्टेन्टशिप नामकी परीक्षा ११ फर्वरी सन् १९०१में पास की। १॥ वर्ष पीछे फिर अवध रेलवे एकाज़मिनरके दफ्तरमें इस गरजसे भरती हुए कि शीघ्र ८०) मासिक पानेवाले एकौन्टेन्ट हो जावेंगे और तब १५०) तक बढ़कर आगे तरक्की करेंगे। पहले इन्हें स्वाध्यायका शौक न था। जब लखनऊमें इंग्रेजी पढ़ते थे तब नित्य दर्शन व कभी २ प्रक्षाल पूजन व कभी शास्त्र सुनते थे। दर्शन करके जीमना यह नियम ८ वर्षकी उम्रमें लिया था इसीसे धर्मकी लग्न लगी रही। यदि यह नहीं होती तो इंग्रेजी स्कूलकी संगतिमें पढ़कर जैसे और बालक धार्मिक क्रिया छोड़ बैठते हैं वैसे यह भी छोड़ बैठते पर दर्शनके नियमने धर्म मार्गपर कायम रक्खा। स्वाध्यायका अभ्यास कलकत्तेमें बाबू ऋषभदास प्रयाग निवासीको एक दिन पंडित सदासुखजी कृत रत्नकरंड श्रावकाचार पढ़ते हुए सुनकर प्रारंभ हुआ था। जब तक जैनगजट लखनऊमें शीतलप्रसादके द्वारा छपता रहा बाबू देवकुमार आरा निवासी सम्पादक थे। शीतलप्रसादको लेख लिखने व समाचार देखनेका शौक था। बहुतसे लेख स्वयं लिखकर समाचार छांटकर यह दिया करते तथा प्रूफको जांचकर

पत्रको तय्यार कराकर आरा भिजवा देते थे । यह पाक्षिक रूपमें अंक ५ दशम वर्ष ता० १६ जनवरी १९०९ तक निकला। फिर शीतलप्रसादके खास उत्साह व परिश्रमको देखकर व देवकुमारजीकी हार्दिक इच्छा व मददको जानकर महासभाने इसको **साप्ताहिक** करनेका प्रस्ताव अम्बालाके अधिवेशनमें पास किया उसके पीछे ही ता० १ फरवरी १९०९से अंक नं० ६ से साप्ताहिक रूपमें निकलने लगा और इस प्रकार यह पत्र लखनऊमें ता० ११ नवम्बर १९१० तक छपता रहा । जब इसके सम्पादक बाबू जुगलकिशोर देववन्द हुए तब शीतलप्रसादका खास सम्बन्ध जैन गज़टसे छुट गया । शीतलप्रसादके चित्तमें जबसे उनकी स्त्री माता व भाईका एक साथ मरण हुआ, **संसारसे उदासी** छा गई थी । यद्यपि दफ्तर रेलवेमें जाते थे पर मन त्यागके सन्मुख हो रहा था । जब ये दोनों बाइयां पूजन कर चुकी तब शीतलप्रसाद साहस करके उनका नाम ठिकाना आदि पूछने लगे । सेठ माणिकचंदको यह अच्छी तरह जानते थे । जैनमित्र, जैनगज़टमें इनके कार्योंकी महिमाके सिवाय मथुराके मेलेपर प्रत्यक्ष देखा था । यद्यपि उस समय वार्तालाप करनेका कोई अवसर नहीं मिला था यह जानकर कि यह सेठ माणिकचन्दजीकी पुत्री है, बाबू शीतलप्रसादको बड़ा हर्ष हुआ, तब श्रीमती मगनबाईजीने पूछा कि क्या यहां कोई श्राविका पढ़ी हुई हैं ? उस समय लखनऊमें श्रीमती पार्वतीबाईको शास्त्रका कुछ अभ्यास था व धर्मसे लग्न थी, उन्हीका नाम व पता बताया क्योंकि शीतलप्रसादको भोजन करके दफ्तर जाना था अतएव यह फिर मिलेंगे ऐसा कहकर चल

दिये । शामको दफ्तरसे आ भोजन करके खबर मिलवानेपर श्रीमंती मगनबाईजी मिली तब इन्होंने बाबू अजितप्रसाद वकीलका पता पूछा व मिलनेकी इच्छा प्रगट की । सेठजीने सब नोट करा दिया था कि अमुक नगरमें अमुकसे मिलना । शीतलप्रसाद इनको व इनकी पुत्री केशरमतीको एक मनुष्यके साथ बाबू अजितप्रसादजीके मकानपर ले गये । उस समय जिस ढंगसे बाईजीने वातचीत की उससे मालूम होता था कि इनको दुनियांका, सभा सोसायटी आदिका अच्छा अनुभव है । दो दिनतक दो२ घड़ी धर्म चर्चा करनेसे व प्रश्नोत्तर करनेसे दोनों बहनोंको धर्मका अधिक लाभ मालूम हुआ । इनको शीतलप्रसादजीने स्त्रीशिक्षा प्रचारार्थ उत्तेजित किया और प्रेरित किया कि जैनगजटमें मुद्रित करानेको लेख भेजें तो शुद्ध करके छपादिये जावेंगे । बाइयोंने स्वीकार किया ।

उज्जैनकी बिम्बप्रतिष्ठा और सेठजीका समागम।

मालवाके प्रसिद्ध प्राचीन नगरमें नएपुराके मंदिरका जीर्णोद्धार कराकर बिम्बप्रतिष्ठाका पंचकल्याणकोत्सव इन्दौरके सेठ तिलोकचंद कल्याणमलजीने चैत्र सुदी ९ से १२ सं० १९६१ तक कराया था । १६००० के अनुमान जैनी भिन्न२ प्रान्तोंके एकत्रित थे । अजमेरके सेठ नेमीचंदजी, पाटनके विनोदीराम बालचंद, लश्करके राजा फूलचंद आए थे । बम्बइसे सेठ माणिकचंदजी सकुटुम्ब व श्रीमती मगनबाई सहित पधारे थे । साथमें पालीतानाके मुनीम धरमचंद हरजीवनदास व अंक्लेश्वरकी ललिताबाई भी थी । प्रतिष्ठाकारक पंडित बापूलालजी रतलाम और पं० नरसिंहदासजी थे । त्यागी दौलतरामजी, अनंरात-

मजी, जानकीलालजी, शीलचंदजी, मुन्नालालजी आदि भी आए थे। दौलतरामजी गोम्मट्टसारके ज्ञाता, विद्वान व वैराग्य संयुक्त थे। इस उत्सवमें लखनऊसे शीतलप्रसाद भी आए थे। जबसे इनकी पत्नीका देहान्त हुआ था तबसे धार्मिक कार्योंमें विशेष मन था सो रलवे दफ्तरसे छूटी लेकर इस महान उत्सवको देखने व उपदेश करने चले आए थे। शीतलप्रसादको सभामें व्याख्यान देनेका बहुत शौक था। कलकत्तेमें मासिक व पाक्षिक सभामें व लखनऊकी सभाओंमें व महासभाके अधिवेशनोंमें भी व्याख्यान दे चुके थे। इस उत्सवमें सभा होना बड़ा कठिन था। कोई खास प्रबन्ध नहीं था। **सेठ माणिकचंदजी**को भी सभाका बहुत शौक था। चैत्र सुदी १२ की रात्रिको आपने ठान लिया कि सभा अवश्य कराएंगे। आप एक छोटेसे मंडपमें गए। वहां स्वयं खड़े होकर बिछौना बिछवाया, बुलावा दिलवाया और प्रथम ही १०-२० आदमियोंको लेकर बैठ गए, इतनेमें सभा जुड़ गई। उस समय सेठ माणिकचन्दके उत्साह व परिश्रमको देखकर बड़ा आनन्द होता था। इसी रात्रिको हकीम कल्याणरायजी, शीतलप्रसादजी, पन्नालालजी गोधा, चिरंजीलाल अनाथाश्रम हिसार, और माणिकचंद विद्यार्थीके व्याख्यान हुए। सेठ माणिकचन्दजी और पं० धन्नालालजीके उद्योगसे मालवा प्रांतिक सभाकी नियमावली संशोधित हुई, कार्यकर्त्ता नियत हुए व १९००)का चंदा सभाके खर्चके लिये हो गया। मेलेमें आए हुए १५० लडकोंकी परीक्षा ली गई। परीक्षकोंमें पं० धन्नालाल, पं० लक्ष्मीचन्द वागीदोरा, लाला भगवानदास तथा शीतलप्रसादजी आदि कई भाई थे। तथा श्रीमती श्रृंगारबाई (जो

श्रीमान् जैन धर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी गृहस्थावस्थामें.

J. V. P. Surat. (देखो पृष्ठ १९३).

गोमट्टसारको अच्छा समझती थीं तथा जिनका चारित्र बहुत उज्वल था), मगनबाई, ललिताबाई, हंगामीबाई आदि विदुषी स्त्री मंडलीने ९९ कन्याओंकी परीक्षा ली । सर्व बालक बालिकाओंको यथोचित इनाम दिया गया । एक दिन सेठ माणिकचन्दजी दुपहरको अपने बड़े डेरेमें बैठ हुए थे, वहांपर सेठ अमरचंदजी शीतलप्रसादजी व धर्मचन्दजी थे । शीतलप्रसादजी उस समय सेठ माणिकचन्दजीसे खुले दिलसे बात नहीं कर सकते थे, केवल माणिकचन्दजीको बड़ धर्मात्मा सेठ जानकर उनकी बातें सुननेको दूर बैठे थे । मगनबाईजी भी थी, जो सेठ अमरचन्द बड़नगरवालोंसे कुछ धर्मचर्चाके प्रश्न कर रही थीं (यह अमरचन्दजी अब गृहवास छोड़कर उदासीनाश्रममें शांतताके साथ धर्मसेवन कर रहे हैं)। उस समय बागड़ देशके ५०–६० भाई सेठजीके सामने आकर बैठ गए। ये हूमड़ जातिके थे। ये लोग बड़े ही दीन वचनोंसे कहने लगे कि हमारे बागड़ प्रान्तमें धर्मका विच्छेद हो रहा है, कोई सम्बोधने नहीं आता है और न कोई पाठशाला ही है। आप दया करके वहां पधारें और अपने जाति भाइयोंका उद्धार करें । सेठ माणिकचंदजीने बड़े ही वात्सल्यभावसे उनसे वार्तालाप की, वहांका सब हाल पूछा और उपदेश दिया कि आप लोग कन्याविक्रय न करें, न बालविवाह वृद्धविवाह करें, स्नानादि करनेमें विवेक रक्खें, शास्त्रको पढ़ा करें व बालकोंके पढ़ानेके लिये पाठशालाएँ खुलवावें, उसके लिये थोड़ी बहुत मदद हम भी देवेंगे इत्यादि आश्वासन दिया और यह भी कहा कि हम शीघ्र ही कोई उपदेशक आपके प्रान्तमें भेजेंगे। इतने बड़े धनाढ्य सेठकी इतने प्रेमके साथ

साधारण वस्त्र पहने हुए व ठीक २ बात करना न जाननेवाले बागड़के भाइयोंसे बात करते हुए देखकर शीतलप्रसादके चित्तपर सेठजीकी सादगी, निगर्वता, जातिप्रेम, व धर्मोन्नतिके उत्साहका बड़ा भारी असर पड़ा।

मगनबाईजीका प्रथम लेख।

जैनगजट अंक २२ ता० १-६-०५में सबसे पहले श्रीमती मगनबाईद्वारा लिखित "स्त्रीशीक्षा" पर एक छोटासा लेख मुद्रित है। इसमें दिखलाया है कि "मालवा बुंदेलखंड आदि प्रांतोंमें मैंने यात्रार्थ पर्यटन करते बड़ी ही आश्चर्योत्पादक किम्वदन्ती सुनी। उस देशमें हमारी जैन स्त्रियें बतलाती हैं कि पढ़नेसे स्त्रियां विधवा होती हैं, दोष लगता है....।" इन वाक्योंसे पाठकोंको उस समयका हाल मालूम होगा कि जब लोगोंका स्त्रीशिक्षासे बहुत कम प्रेम था तथा विधवा होनेका भय बहुत घुसा हुआ था, परंतु अब १०-११ वर्षमें यह भय बिलकुल मिट गया है। जैसा शीतलप्रसादजीसे प्रण किया था उसीके अनुसार मगनबाईजीने यह पहला लेख भेजा व आगामी भी भेजती रही थीं।

अहमदाबादमें बोर्डिंग के लिये नया मकान।

सेठ माणिकचंदजीको यह बात पसन्द न थी कि उनकी स्थापित की हुई कोई भी संस्था अधूरी स्थितिमें रहे, इसीलिये वे रात्रि दिन फिकरमें रहते थे कि अहमदाबाद बोर्डिंगको किरायेके मकानसे निकालकर अच्छे अपने खास बोर्डिंगमें रखना चाहिये। इसके लिये आप बीचमें अहमदाबाद आये और सेठ हरजीवन रायचंद आमोद वालोंको

साथ ले एक दलालके साथ बहुतसी जगहोंको देखने गए । साथ वालोंने जो जगह पसंद की सो सेठजीके ध्यानमें न आई । हाल जहां बोर्डिंग है उस जगहको सेठजीने अपनी दीर्घ दृष्टिसे स्वयं पसन्द की तब और भी सहमत हो गये । इस जगह मकान भी बना हुआ था । कुल जमीन ४०४४ वर्ग गज थी । बोर्डिंग फंडमेंसे १६०००) देकर यह मकान खरीद लिया गया । आज यह ५००००) की मिलकियतका हो गया है । सेठजी कितने अनुभवी थे इस बातका इसीसे अच्छा पता लगता है ।

सेठजीका दया दान। सेठ माणिकचंदजीका चित्त जैसे जैन जातिके उद्धारमें लीन था ऐसे ही सर्व मनुष्यसमाजकी तथा पशु पक्षीकी भी रक्षाका पूर्ण ध्यान था । जूनागढ़ निवासी एक दयालु ब्राह्मण **लाभशंकर लक्ष्मीदास** हैं, उन्होंने अपने जीवनका उद्देश्य जीवदया प्रचार बना लिया है । लंडनमें जो जीवदयाकी सभा सुसायटियें हैं उनसे इनका खास सम्बन्ध है । वहांके इस विषयके समाचारपत्र भी आप मंगाते रहते हैं व वहांकी छपी पुस्तकोंको वितरण कर मांसाहारका त्याग कराने व पशुरक्षा करानेका यत्न करते रहते हैं । सेठ माणिकचंदजीसे आपकी पूर्ण मुलकात थी । सेठजी लाभशंकरकी सम्मतिसे अपना बहुतसा रुपया जीवदयाप्रचारमें खर्च करते रहते व इंग्रेजी पुस्तकोंको सदा ही बांटते रहते थे । लंडनमें **ह्यूमेनीटेरियम लीग**की एक जीवदया सम्बन्धी संस्था है इसका मासिक पत्र भी मंगाते थे तथा इस समय उस संस्थाको ३१ पाउन्ड याने ४६५) रु० भेजकर सहायता पहुंचाई

थी । वास्तवमें जो महापुरुष होते हैं उनका उपयोग जीवमात्रके हितमें प्रवर्तन करता है । आपने थोड़े दिन पहले कालेज व स्कूलोंके बड़े मुसल्मान विद्यार्थियोंसे इंग्रेजी पुस्तक देकर अहिंसापर उनके विचारानुसार निबंध लिखवाकर जो उत्तम रहे थे उनको इनाम दिया था। सेठजी जानते थे कि पुस्तक बांचते व लिखते २ मनुष्यके विचारोंमें फर्क पड़ता है । विचारोंके पलटनेसे ही पशुहिंसा व मांसाहार त्यागका कर्तव्य हो सकता है ।

द० म० जैन सभाकी ओर आपका बहुत प्रेम था । उस प्रान्तमें शिक्षाका प्रचार हो इसलिये जो

सेठजीका चंदेके लिये भ्रमण ।

शिक्षण फंड हुआ था उसकी वसूलीके लिये उक्त सेठजी श्रुतपंचमी अर्थात् जेठ सुदी ५ के करीब **नांदणी** गांवमें गए और भट्टारकजीके मठमें ठहरे थे । वहां क्या देखा कि श्रुतपंचमीके धार्मिक उत्सवके लिये भी आतिशबाज़ी और रोशनीकी तय्यारी हो रही है तथा प्रति वर्षके समान वेश्यानृत्य भी होनेवाला है। इसपर सेठजीको बड़ा आश्चर्य हुआ । आपने भट्टारकसे इन सब कुप्रथाओंको बंद करनेके लिये निवेदन किया । भट्टारक भी समझ गए और इनकी बन्दीका आज्ञापत्र जारी कर दिया ।

यहां सेठजीको एक **माणेकभाई** नामके मुसल्मानसे भेट हुई, जिसके कुटुम्बमें कोई मांस नहीं खाता

१ दयाप्रेमी मुसल्मान-का समागम ।

तथा जिसके उपदेशसे नांदणीके सब मुसल्मानोंने मांस खाना छोड़ दिया था । सेठजीको ऐसे व्यक्तिसे मिलनेसे बहुत आनन्द हुआ । आपने उसको जीवदया प्रचारार्थ और भी दृढ़ कर दिया ।

बंबई सेठजीकी सरस्वती भक्ति।

ईडरके भंडारसे करीब ४०० ग्रंथ सेठजीके यहां आए हुए थे जो संस्कृत व प्राकृतके प्राचीन थे। आते ही इन्होंने एक विद्वान् इसलिये नियत कर दिया कि जो ग्रंथोंका सूचीपत्र बनावे। उसमें इतने विषय लिखे जानेका निश्चय किया—नाम ग्रंथ, आचार्य्य, लेखक, भाषा, पत्र व श्लोक संख्या, प्रति लिखनेका समय आदि मंगलाचरण, अन्त्य प्रशस्ति और सहजलभ्य इतिहास। इसके तीन रजिस्टर सेठजीके चौपाटीके बंगलेपर मौजूद हैं, विद्वान देखकर लाभ उठा सकते हैं।

सेठजी द्वारा स्याद्वाद पाठशाला काशीकी स्थापना।

सेठ माणिकचंदजीको, जबसे व्यापारसे निवृत्त हुए रात्रि दिन धर्म व जातिसेवाका ही ध्यान था। धर्मके निमित्त पगसे रुक २ कर चलनेपर भी रेलकी व बैलगाड़ी तककी यात्रा करनेमें कभी कष्ट व प्रमाद नहीं होता था, सबेरेसे १२ बजे रात्रि तक यही विचार रहा करते थे। जेठ सुदी १० सं० १९६२ ता० १२ जून १९०५ को काशीमें दिगम्बर जैन जातिकी ओरसे संस्कृत धार्मिक विद्याकी उन्नतिके अर्थ श्रीयुत पं० पन्नालाल बाकलीवाल, बाबा भागीरथजी और पं० गणेशप्रसादजीके उद्योगसे पाठशाला खुलनेका महूर्त्त था। उसका उद्घाटन सेठ माणिकचंदजी करें ऐसी प्रेरणा होनेपर सेठजी बम्बईसे तुर्त ही **काशी** पधारे और भैदागिनी धर्मशालामें ठहरे। शहरवालोंने आपका बहुत सन्मान किया। पाठशालाका महूर्त भैदागिनी जैन मंदिरमें सबेरे ८ बजे हुआ। उस समय बाहरके

खास २ भाई आए थे। आरासे बाबू देवकुमार ऑनरेरी मजिस्ट्रेट व किरोड़ीचंदजी रईस, लखनऊसे बाबू अजितप्रसाद एम० ए० एल० एल० बी० वकील और बाबू शीतलप्रसाद, देहलीके लाला मोतीलाल, बरुवासागरके लाला मूलचंद रईस, झांसीके लाला गबदूमलजी, आगरेसे लाला घनशामदासजी आये थे। सभामें शहरके दिग० व श्वे० भाइयोंके सिवाय श्वेताम्बर यशोविजय पाठशालाके अध्यक्ष यति धर्मविजयजी, इन्द्रविजयजी व बौद्धोंके महाबोधि सोसायटीके आसि० सेक्रेटरी भी आये थे। बाबू नानकचंदजी बी० ए० हेड मास्टर सागरके पेश करने और बाबू देवकुमारके समर्थनसे सेठ **माणिकचंदजीने** अपनी अयोग्यता प्रगट करते हुए सभापतिका आसन लेकर णमोकार मंत्र पढ़कर पाठशालाका पर्दा हटाया और अध्यापकोंको पाठ पढ़ानेकी आज्ञा दी। पाठ हो जानेपर पं० गणेशप्रसादजीने व्याख्यान दिया कि **काशी** ही संस्कृत व धार्मिक विद्या प्राप्तिका स्थान है। इसका अनुमोदन अजितप्रसादजी और नानकचंदजीने किया। फिर यति धर्मविजयजीने पाठशालाकी चिरस्थायिता चाहते हुए सेठजी भक्त, शूर और दानी हैं ऐसा सिद्ध किया। बाबू शीतलप्रसादजीने नियमावली व प्रबन्धकारिणी सभाके नाम सुनाए। बाबा भागीरथजीने मूल फंड स्थापनकी प्रार्थना की। बौद्ध साधुने इंग्रेजीमें हर्ष प्रगट किया। बाबू शीतलप्रसादजीने सर्वको धन्यवाद दिया। बाबू देवकुमारजीने शोलापुरसे आया हुआ बम्बई दिगम्बर जैन **प्रान्तिक सभाका सहानुभूति सूचक तार** सुनाया। इन्हीं दिनोंमें सेठ मोतीचंद प्रेमचंद शोलापुरकी तरफसे बिम्बप्रतिष्ठाका उत्सव था तथा बम्बई प्रा० सभाका नैमित्तिक अधिवेशन जेठ सुदी ७ और ८ को

को था। गांधी रामचंद नाथा सभापति थे। इसमें **सेठ चुन्नीलाल झवेरचंद** भी बम्बईसे शामिल हुए थे। इन्होंने तीर्थक्षेत्रों के प्रबन्धके उपाय प्रचारमें लाए जावें ऐसा प्रस्ताव किया। तबसे प्रांतिक सभाने तीर्थक्षेत्र सुधार खाता कायम किया सेठ चुन्नीलाल तीर्थोंके सुधारमें बराबर दत्तचित्त रहे। शिखरजी बीसपंथी कोठीका प्रबन्ध ठीक करानेके सिवाय व इसीके कुछ दिन पहले ता० २६ मई १९०५को आप पावापुरीजी गये। वहां मुनीम राघवजीने भंडारके छत्रचमरादि गिरो रख डाले थे। इनके जाते ही वह भागा। सेठजीने पावापुरीका प्रबन्ध तीर्थक्षेत्र कमेटीके हाथमें लिया। तल्कचंद ईश्वरदास और पुजारी हीरामनको काम सौंपा। शोलापुरके तारको सुनकर सबको बड़ा हर्ष हुआ। पश्चात् सभापति साहबको पुष्पमालादिसे सन्मानित करके सभाका कार्य समाप्त किया।

सेठजीकी २५) मासिककी मदद।

इस पाठशालाके लिये उक्त तीनों संस्थापकोंने १००) मासिकका प्रबन्ध बाहरसे कर लिया था तथा काशीमें ता० १४ मई १९०५की सभामें ३०) मासिक काशीके भाइयोंने व २०) बाबू देवकुमारजीने देना स्वीकार किया था। सेठ माणिकचंदजीने २५) मासिक सहायता देना स्वीकार किया सो अपने जीवन पर्यंत बराबर दिया तथा बादमें भी उनके जुबलीबागके ट्रस्टियोंने देना प्रारंभ किया है। उस समय १९ महाशयोंकी प्रब० कमेटी बनी थी। सभापति सेठजी व मंत्री बाबू देवकुमारजी, उपमंत्री बा० जैनेन्द्रकिशोर आरा व कोषाध्यक्ष बाबू छेदीलालजी नियत हुए थे। बाबू देवकुमारजी अपने बुजुर्गोंकी बनवाई हुई

हुई गंगातटपर श्रीसुपार्श्वनाथस्वामीके मंदिरके नीचेकी बड़ी धर्मशाला पाठशालाके लिये नियत कर दी। यह स्थान काशी भरमें बड़ा ही रमणीक है। नौकामें जानेवालोंकी दृष्टि इस बड़ी इमारतको देख चकाचौंध खाजाती है। महूर्तके दिन ५ छात्र भरती हुए, ३ सुयोग्य विद्वान् अध्यापक नियत किये गए।

यह पाठशाला अब स्याद्वाद महाविद्यालयके नामसे प्रसिद्ध है। इसने समाजमें संस्कृत विद्याकी रुचि पैदा करा दी है। ३१ जुलाई १९१५ तक ४० विद्वान् यहांसे शास्त्रीय विशारद आदिकी सर्कारी व बम्बई परीक्षालयकी परीक्षाओंको पास करके गए हैं जो समाजका काम कर रहे हैं। जैसे—

१ न्यायाचार्य पं० गणेशप्रसादजी–अधिष्ठाता जैन पाठशाला, सागर
२ ,, पं० माणिकचंदजी–अध्यापक जैन सिद्धांत विद्यालय, मोरेना।
३ पंडित बद्रीप्रसाद अध्यापक, जैन पाठशाला, कचनेर।
४ पं० वृजलाल ,, जैन महाविद्यालय, मथुरा।
५ पं० सिद्धामल ,, जैन पाठशाला, ललितपुर।
६ पं० कुमारैय्या ,, जैन पाठशाला कारकल (दक्षिण)
७ पं० उमरावसिंह ,, स्याद्वाद महाविद्यालय-काशी।
८ वर्णी नेमिसागर धर्म प्रचारक, दक्षिण प्रान्त।

सेठ माणिकचंदजीको इस संस्थासे इतना प्रेम था कि जैसा आगे मालूम होगा। आपने स्वयं २०००) देकर २००००) के करीब चिरस्थायी फंड करा दिया व ६०) मासिककी मदद **जौंहरी महाजन कांटा बम्बई**से सदाके लिये करा दी।

सेठ माणिकचंदजीकी ज्येष्ठ भगिनी मंछाबाईके एक पुत्र सेठ चुन्नीलाल झवेरचंद थे और दूसरी एक कन्या धोली बहन थी। इसके और सेठ भगवानदास कोदरजीके एक परोपकारी साहसी पुत्र **ठाकुरदास** उत्पन्न हुआ था। यह पढ़नेमें शौकीन था। १२ वर्ष तक सूरतमें रहकर शालामें अभ्यास किया, फिर बम्बई जाकर अपने मामा चुन्नीलालके साथ रहने लगा और संस्कृत द्वि० भाषा सहित इंग्रेजीका अभ्यास करते हुए मैट्रिक पास किया और प्रिवियम तक शिक्षा ली। सं० १९५९ से जौंहरी माणिकचंद पानाचंदजीकी दुकानमें बैठने लगे। यह जिस काममें लगाया जाता था दिलसे करता था ऐसा देखकर सेठ माणिकचंदजीने इसके लिये दिगम्बर जैन डाइरेक्टरीका काम नियत किया। दि० जैनियोंकी कहां२ वस्ती कुल भारतमें है, किस२ जातिके हैं, कहां२ मंदिर व पाठशाला हैं इत्यादि व्यवस्थाके जाने विना कुछ समाजका सुधार नहीं हो सक्ता। इस कामको आवश्यक जानकर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाने अपने हाथमें लिया था पर द्रव्य व उत्साहके अभावसे यह काम कुछ चला नहीं। सेठजीके चित्तमें इसकी बड़ी भारी आवश्यक्ता प्रगट हुई थी। ठाकुरदासजीने फार्म छपवा कर सर्व स्थानोंमें भेजे पर बहुत ही कम भर कर आए। तब सेठजीकी सम्मतिसे प्रवीण मनुष्य भेजे विना फार्म भरकर नहीं आसक्ते ऐसा निश्चयकर **जैनमित्र** वर्ष ६ अं० ९ में यह नोटिस दिया कि दौरा करानेके लिये जैनी भाई चाहिये।

सेठ ठाकुरदास भगवानदास और दिगम्बर जैन डाइरेक्टरी।

ठाकुरदासके **लगातार परिश्रमसे** और सेठ माणिकचंद पानाचंदके करीब २००००) के खर्चसे यह डाइरेक्टरी छपकर सन् १९१४में १४३१ सफोंकी पुस्तक तय्यार हो गई है जो ८) में बम्बई या सूरतसे प्राप्त होती है।

कोल्हापुर जैन बोर्डिंगकी नई इमारतका वास्तुविधान।

सेठ माणिकचंदजी काशीसे लौटकर आए कि उनको कोल्हापुर जानेकी फिकर पड़ी। वहांकी इमारतके लिये आपने २२०००) का निश्चय किया था तथा उत्तम कारीगर भेजकर अपने पसन्द किये हुए नकशेसे इमारत बंधवाई थी। पत्रव्यवहार करके निश्चय किया गया कि नई इमारत खोलनेकी क्रिया भी कोल्हापुर महाराजके करकमलोंसे ही कराई जाय। इसके लिये ता. ९ अगस्त १९०९ नियत हुई। इस समारंभके लिये इमारतके आगे एक सुशोभित शामियाना लगाया गया था। बम्बईसे सेठ माणिकचंद, परोपकारी सेठ रामचंद्र गांधी व नवयुवक होनहार ठाकुरदास भगवानदासको लेकर पहुंचे। शोलापुरसे सेठजीके मित्र सेठ हीराचंद नेमचंद, बालचंद रामचंद तथा अन्य आसपासके कई नगरोंसे बहुत जैन मंडली उपस्थित हुई। सबेरे ७॥ बजे सब सभा जुड़ गई। राज्यके सरदार आने लगे। ठीक ९ बजे **श्रीमन्महाराज छत्रपति सरकार शाहु महाराज** कर्नल फेरिसके साथ दरबारमें पधारे। प्रथम ही कोल्हापुर विद्यालयके मंत्री रा. रा. अण्णाप्पा बाबाजी लठ्ठे एम० ए० ने इंग्रेजीमें भाषण दिया जिसमें महाराज साहबकी कृपाकी अतिशय सराहनाकी कि जिन्होंने सभाके शिक्षणफंडमें २०००) **नकद, ३००)**

वार्षिक व प्रत्येक कक्षामें **एक फ्रीशिप** तथा बोर्डिंग बांधनेको **जमीन** प्रदान की तथा सेठ माणिकचंद पानाचंद जौंहरीके कुटुम्बकी प्रशंसा की और प्रगट किया कि आज यह इमारत उनके पूज्य पिताके नामसे प्रसिद्ध होगी अर्थात् " **सेठ हीराचंद गुमानजी** विद्या मंदिर " तथा इसके खोलनेके लिये महाराजसे प्रार्थना की तब महाराजकी तरफसे दीवान साहब रा० ब० सबनीसने भाषण देते हुए कहा कि—

" प्राचीन कालमें जैन लोग अत्यन्त उन्नतिमें प्राप्त थे । उस समय उनके महत्व भोगनेके व सुधार करनेके
जैन समाजपर अजैन बहुतसे प्रमाण हैं । जैन शास्त्रकारोंने ज्ञान-
विद्वानकी सम्मति। भंडारको बड़ा करके महत सहायता की । " अहिंसा परमो धर्मः " के तत्त्वको उन्होंने बहुत ही उत्तम रीतिसे पाला । अब भी ये उसी उन्नतिको पहुंचे । इसके लिये अब इन्होंने आलस्य छोड़ा । सेठ माणिकचंद और उनके बंधुओंने जो शिक्षणकी सुगमताके लिये यह भव्य इमारत तय्यार करा दी है उसको खोलते हुए मुझे बड़ा ही आनंद आता है " । फिर महाराज साहबने इमारतको खोला । सेठ माणिकचंदजीने हारतुरोंसे महाराजको सन्मानित किया । सभा सानन्द विसर्जन हुई । तब महाराज और कर्नल फेरिसने इमारतको अच्छी तरह देखकर यही कहा कि बहुत अच्छी इमारत तय्यार कराई गई है । उस समय मकानका फोटो भी लिया गया ।

दोपहरको द० म० जैन सभाका नैमित्तिक अधिवेशन शोला-

द० म० जैन सभाका नैमित्तिक अधिवेशन

पूरके प्रख्यात सेठ वालचंद रामचंदके सभापतित्वमें हुआ। शिक्षा खातेमें २०००) की आमद हुई। सेठजीको अभिनंदन देने वाले तार व पत्र दोनों भट्टारक, लल्लुभाई प्रेमानंद व गुरुमुखराय सुखानंद आदिके आए थे सो अध्यक्षने सुनाए। सभाके आश्रयमें बेलगांवमें एक संस्कृत पाठशाला भी स्थापित हुई तथा शास्त्री रक्खा गया।

रु० २५०००)के दान की व्यवस्था।

सेठ नाथारंगजीवाले सेठ पन्नालालजी मरते समय २१०००) दान कर गए थे, उसकी व्यवस्थाके लिये ट्रस्ट कमेटी नियत हुई जिसमें **सेठ माणिकचंदजी** व सेठ हीराचंद नेमचंद भी ट्रष्टी नियत हुए। तय हुआ कि इसके व्याजसे ४०) सैकड़ा धर्मशिक्षामें, २२॥) सैकड़ा इंग्रेजी शिक्षामें, २२॥) रु. सैकड़ा प्राचीन जैन ग्रंथोद्धारमें व शेष जैन अनाथोंकी मददमें खर्च हो। इस फंडसे पंचाध्यायी, परीक्षामुख, प्रमेयकमलमार्तंड, अष्टसहस्री आदि कई उपयोगी ग्रंथ मुद्रित हुए हैं व बहुतसे छात्रोंको सहायता मिल चुकी है।

हीराबाग धर्मशाला (बम्बई)में १२५०००) का दान।

सेठ माणिकचंदने कोल्हापुरसे लौटकर वर्षाकाल शांतिसे व्यतीत करते हुए भादों मासके दशलक्षणी पर्वमें बम्बईमें धर्मजागृति फैलाई तथा बड़ी भारी फिकर यह हुई कि धर्मशाला शीघ्र बन जानी चाहिये। आपने कावसजी पटेल तालावके पास कांदावाड़ीके नाकेपर एक बहुत ही मौकेकी जगह तजवीज की जो शहरके बिलकुल बीचमें

ट्राम गाड़ीके सामने व जैन मंदिरके पास है । इसीपर प्रवीण कारीगरोंके द्वारा बड़ी ही सुन्दर धर्मशाला बनवाई, जिसके तीन खन किये । आगेको एक महा सुन्दर **लेक्चर हॉल** याने व्याख्यान भवन बनवाया जिसके ऊपर गैलेरी रक्खी व सामने प्लेटफार्म बनवाया । इस धर्मशालामें करीब १७०६ चौरस गज़ ज़मीन है, तीन तरफ रास्ता है, पूर्व और उत्तरकी तरफ ब्लाकोंके नीचे दूकानें हैं । पूर्व तरफके ब्लाकके दक्षिण भागमें एक आफिस रूम है, उसके पूर्वमें लेक्चर हाल है । उत्तर तरफ ब्लाक सी के मंझला ऊपरके भागमें यात्रियोंके ठहरने, रसोई व पाखानेकी जगह है । इसके दक्षिणमें खुला चौक है । फिर दक्षिणमें ब्लाक बी है । इसके ३ मंझले हैं । हरएकमें रहने, रसोई व पाखाने नलका प्रबन्ध है । इसके तीसरे खनको ट्रष्ट डीडके अनुसार केवल दिगम्बर जैन यात्रियोंके उपयोगके लिये रक्खा गया है । आफिस रूमके ऊपर एक बड़ा कमरा किसी प्रतिष्ठित कुटुम्बके लिये है । सी ब्लाकमें १० कोठरी, ६ रसोईघर, बीमें १२ कोठरी ६ रसोई घर हैं । इनमेंसे दो कोठरी दवाखानेके लिये हैं । सब मिलके दवाखाना सिवाय २६ रूम और १२ रसोईघर हैं, जिनमें ४०० आदमी ठहर सक्ते हैं । मकानके नीचे २१ दुकानें हैं, जिनका किराया आता है । इस महान धर्मशालाके निर्मापणमें एक लाख पचीस हजार (१२५०००) की रकम उदार सेठोंने लगाकर ऐसी आराम देनेवाली जगह बना दी है कि बम्बईमें इसके समान दूसरी कोई हिन्दुओंकी धर्मशाला नहीं है । सेठोंने अपने पूज्य पिताके नामसे इसे प्रसिद्ध किया है, जिससे इसे **सेठ हीराचंद गुमानजी धर्मशाला** या '**हीराबाग**' कहते हैं ।

इसके खोलनेकी क्रिया ता. ९ दिसम्बर १९०५को ४ बजे दिनके की गई। शहरके प्रतिष्ठित जन निमंत्रित किये गए थे। न्यायमूर्ति चंदावर्कर, डॉ० सर भालचंद्र, आनरेबल गोकुलदास कहानदास पारेख, मजि० करसनदास छबीलदास, सर करीमभाई इब्राहीम आदि मंडली उपस्थित थी। प्रथम ही **शेठ माणिकचंदजीने** कहा "बम्बईमें हिंदू व जैन यात्रियोंके अधिक आनेके कारण उनको ठहरनेकी बहुत तकलीफ होती थी उसको दूर करनेके लिये ऐसी धर्मशाला बांधनेकी इच्छा हमारे बड़े भाई पानाचंदको थी पर खेद है उनके सामने हम तय्यार न कर सके। अब इस इमारतको मगसर सुदी १ सं० १९६१ में शुरू करके मगसर सुदी १२ सं० १९६२ के दिन हम इसे पूर्ण कर सके हैं। इसके खोलनेके लिये हम **सर हरकिशनदास नरोत्तमदास नाइट**से प्रार्थना करते हैं।" तब अध्यक्ष सर हरकिशनदासने कहा कि "**इस धर्मशालाके बनानेवाले बहुत ही गरीब स्थितिके थे पर पूर्ण परिश्रमसे संपत्ति मिलाकर** यही कार्य नहीं इसके पहले अनेक कार्य किये हैं। यह धर्मशाला सर्व हिंदुओंके लाभके लिये बंधवाई गई है इससे इनकी उदारता व सर्व जन हितपना अच्छी तरह झलक रहा है।" इत्यादि कहकर धर्मशालाके दीवानखानेका ताला खोला। सभा सानन्द समाप्त हुई।

सेठ माणिकचंदजीका हरएक काम पक्का होता है। आपने ता० १०-६-०७ को इसका ट्रष्ट डीड रजिष्टर करा दिया और जो हीराचंद गुमानजी बो० के ट्रष्टी हैं वे ही इसके नियत किये तथा इसकी एक प्रबन्धकारिणी कमिटी भी रच दी। इसके ट्रष्टमें

नियम है कि जो माहेकी आमदनी हो उसमेंसे टैक्स, चालू रिपेर-बीमा वगैरहका खर्च निकालकर जो बचे उसका इस तरह भाग करना—

३०) रिज़र्व फंडमें (काम पड़नेपर खर्च हो)

४०) औषधालयमें ।

१०) बम्बई प्रान्तिक सभाके प्रबंध खातेमें (जब तक ऑफिस बम्बईमें रहे ।)

२०) दिगम्बर जैन गरीब लोगोंकी मददमें ।

१००)

इसके खास नियम हैं कि यहां मट्टीका तेल न जलाया जावे, कांचके ग्लासमें खोपड़ेका तेल जले । जुआ रमना, मांसभक्षण, मदिरापान, व्यभिचार, जीवहिंसा, नाच तमाशा आदि नहीं हो सकेगा । एक सुपरिन्टेन्डेन्ट नियत है उसके पाससे बर्तन, गद्दे, कुर्सी, टेबुल सब मिलता है ।

	सन् १९१२	सन् १९१४
दिगम्बर जैन	२९९७	३९३७
श्वेताम्बर जैन	८२९	८७३
हिन्दू	७९७९	४९६२
	११००१	९७७२

दवाखाना भी शुरूसे है । सन् १९१२ में २२७२६ बीमारोंकी हाज़री थी, जिनमें नये बीमार ५९८६ इस प्रकार थे (शेष १७७४० पुराने थे ।)

दिगम्बर जैन	१०४४
श्वेतांबर जैन	४७०
ब्राह्मण	१५२१
बनियें	६९१
परचूरण हिन्दू	२२६०
कुल	५९८६

सन् १९१४ में २९५४९ की हाजरी थी जिनमें नये बीमार ६२७२ इस प्रकार थे—

दिगंबरी जैन	१०७०
श्वेतांबरी जैन	६२१
ब्राह्मण	११०८
बनियें	६९०
परचूरण हिन्दू	२७८३
कुल	६२७२

दवाखानमें शोलापुर औषधालयमें पढ़ा हुआ दि० जैन वैद्य भरमण्णा बम्मण्णा उपाध्याय हैं, जो बहुत ही योग्य हैं। दवा करनेमें नामांकित हो गया है।

लेक्चर हालमें सन् १९१२ में ८५ व १९१४ में १२० भाषण हुए। **आफिस रूपमें** हीराबाग धर्मशालाकी आफिसके सिवाय भा० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी व बम्बई प्रान्तिक सभा व जैनमित्रके आफिसोंको भी उदारतासे स्थान दिया गया। ट्रष्टकी नकल पीछे दी हुई है।

हीराबाग धर्मशाला बम्बई.

(देखो पृष्ठ ४१२) J. V. P. Surat.

इस धर्मशालाके न होनेके पहले दिगम्बर जैन यात्रियोंको महान कष्ट होता था, न तो उन्हें हिन्दू लोग जगहकी कमीसे ठहरने देते न श्वेताम्बर लोग ठहरने देते थे। बिचारोंको गलियोंमें मारे मारे फिरना पड़ता था, पर इस धर्मशालाके होनेसे दिगम्बर जैन यात्रियोंके ठहरनेका कष्ट बिलकुल दूर हो गया। हरएक परदेशी जैनी गाड़ी द्वारा व पैदल सीधा धर्मशालामें आकर ठहर जाता है और सब तरहसे आराम पाता है।

मगनबाईजीके उपदेशका असर।

श्रीमती मगनबाईजीने लखनऊमें श्री पार्वतीबाईजीको प्रेरित किया था कि वे प्रति चौदसको स्त्रियोंको उपदेश किया करें। तदनुसार बाईजीने एक **श्राविका तत्त्वबोधिनी** सभा स्थापित की और प्रति चौदसको स्त्रियोंको उपदेश देने लगीं। वास्तवमें सच्चे मनसे दिया हुआ उपदेश अवश्य लाभकारी व असरकारक होता है।

सहारनपुरमें महासभा और सेठजी सभापति

सन् १९०५के बड़े दिनोंमें सहारनपुर जैन समुदायके संचयसे प्रफुल्लित हो गया। ता० २४ दिसम्बरको रथोत्सव हुआ, जिसमें वैष्णव भाई भी श्रीजीकी भेट चढ़ाते थे व न्यामतसिंहके भजन जैनधर्मकी प्रभावना करनेवाले बड़े ही चित्ताकर्षक हुए थे। ता० २५ दिस० को ७। बजे सबेरे स्टेशनपर २५० से अधिक प्रतिष्ठित पुरुष महासभाके होनेवाले सभापति बम्बईनिवासी **सेठ माणिकचंद हीराचंद जौहरी** के स्वागतार्थ एकत्रित हुए। आप सकुटुम्ब श्रीमती मगनबाई व सेठ

हीराचन्द नेमचंद, सेठ माणिकचंद मोतीचंद आनंद और मि० लट्ठे एम. ए. सहित ठीक समयपर गाड़ीसे उतरे। उसी समय स्वागतार्थ निम्न लिखित ऐड्रेस पढ़के सुनाया गया—

नकल स्वागतपत्र ।

श्रीमान् सद्धर्मप्रचारक, सत्तीर्थसमुद्धारक, जातिहितसाधक, जिनबालकधर्मधारकानेकछात्रागारकारक, विद्योन्नतिप्रिय,

दानवीर मुम्बानगर निवासि श्रेष्ठिवर्य्य माणकचन्दजी साहब सभापति भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महा सभाकी सेवामें

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाकी ओरसे स्वागत विषयक अभिनन्दनपत्र ।

(पद्धरि छन्द ।)

श्री मण्डित निर्मलगुण विशाल । शुभ आनन शशि सोहे रसाल ॥
निज अखिल अंशुसे हम अताप । कर दूर प्रगट कीनो प्रताप ॥१॥
पद कमल धरत भू भइ पवित्र । मानों बहु शोभा लइ विचित्र ॥
हम जैनिनके बड़ भाग्य आज । श्रीमान पधारे गुण समाज ॥२॥
मुख चन्द्र बिलोकत हृदय दुःख । विनशौ, शुभ पायो बहुत सुक्ख ॥
विद्यावर्द्धक वृष जैनपाल । आओ स्वागत बर करें हाल ॥३॥
गणजैन करें वाणि विकाश । ताकर जिन वृषको हो प्रकाश ॥
जय जय जय हो श्रीमान धीर । व्यापि चहुं दिशि कीरति गँभीर ॥४॥
हैं जैन जातिमें दानवीर । वृषयाचक जनकी हरैं पीर ॥
आपहिंसे भई इह जाति आज । शोभित, इससे ये सरे काज ॥५॥
विद्या बिन वृष दुःखित निहार । श्रीमान भये अतिही उदार ॥
जहँ तहँ विद्याके धाम खोल । परचारी जिनवाणी अमोल ॥६॥
श्री तीर्थराजके अप्रबन्ध । सब दूर किये कर सुप्रबन्ध ॥
यह आपहिको अखिल प्रसाद । सुख दियो जैनिनको अगाध ॥७॥

चिरकाल रहो जय आप नाम । सब जैनिनको बहु मोद धाम ॥
ये ही विनती जिनराज सूर । हम करैं चरणमें आश पूर ॥८॥

सोरठा ।

परम शर्म दातार । जैनधर्म जयवन्त हो ॥
मिथ्या मतको टार । सम्यग्प्रगट करो सदा ॥१॥

इति शुभम् ।

फिर हाथीपर विराजमान करके गाजे बाजे सहित नगरमें घूमते हुए बंगलेपर आ उपस्थित हुए । इस दिन २ बजेसे जैन यंगमेन्स एसोसियेशनका अधिवेशन हुआ । शेठजी सभापति हुए । गत वर्ष स्वीकार किये हुए तमगे बाँटे गए व आगामीके लिये अनुमान ८० के नवीन प्रण हुए, जैसे एक ५०)का तमगा उसे मिले जो २०० आदमियोंसे मदिरापान छुड़ावे, व ५०) नकद और ९०)का तमगा मि० जैन वैद्य जैपुर उसे देवें जो १००० आदमियोंसे **मांसत्याग** करावे । रायसाहब फूलचंद इंजिनियर लखनऊने १००) मासिक उसे देना स्वीकार किया जो ३ वर्ष तक **जापान**में शिल्प विद्या सीखे । बाबू माणिकचंद खंडवाने बी. ए. पास होनेपर जानेकी इच्छा प्रगट की । इसपर राय फूलचन्दजीको " **जैनभूषण** " का पद दिया गया था । जहां तक मालूम है अभी तक कोई भी जापान नहीं भेजा गया है । रायसाहबको अपना बचन पूरा करना चाहिये । ता. २६ को फिर एसो०का जलसा था । मंडप सभाके लिये अलग बना था, स्त्रीपुरुषोंसे छा रहा था । स्त्रियोंके बीचमें खड़े हो **श्रीमती मगनबाईजीने** स्त्रीशिक्षापर १ घंटा बहुत ही असरकारक भाषण दिया, जिसपर पं० अर्जुनलाल सेठी बी. ए. को महासभाकी ओरसे

१०) का सुवर्ण पदक दिये जानेका हर्ष प्रगट किया । अध्यापिकाओंकी तय्यारीके लिये ४०) मासिक व १४०) नक़दका फंड हो गया । सेठ हीराचंद नेमचंदने जेलमें जैनियोंका खाता जुदा रहे ऐसी प्रार्थना सर्कारसे किये जानेका प्रस्ताव किया । बादशाह एडवर्डको धन्यवादके बाद राजकुमार प्रिन्स आफ वेल्स, जो भारतकी सेर कर रहे थे उनको बधाईका तार लखनऊ दिया गया ।

ता० २७ दिसम्बरको पहले प्रोफेसर जियाराम एम० ए० के सभापतित्वमें अनाथालय हिसारने अपील करके ३०००) का चंदा एकत्र किया, फिर महासभाका कार्य्य हुआ । सभापति सेठजीने अपना हिन्दीमें व्याख्यान खूब समझाके सुनाया । इसमें तीर्थक्षेत्र कमेटीसे शिखरजी आदि तीर्थोंका कैसा सुधारा हुआ है व आगामी होगा इसके लाभ बताए, महाविद्यालयके लिये जैपुर स्थान ठीक बताया और कहा कि यहां पंडित **टोडरमल, जयचंद** आदि बड़े विद्वान् परोपकारी हो गये हैं तथा आज पं० अर्जुनलाल सेठी बी० ए० हैं, जिन्होंने **२००) मासिककी आमद छोड़कर महाविद्यालयकी सेवामें अपना जीवन समर्पण कर दिया है** । एकताको रखने और धर्मप्रचार निमित्त रुपयोंका बृहत् कोष करनेकी प्रेरणा भी की । महामंत्री डिप्टी चम्पतरायने दशम वर्षकी रिपोर्ट व हिसाब सुनाया । मुंशी बाबूलाल एम० ए० एल एल० बी० मुरादाबादने डेपुटेशन पार्टीकी रिपोर्ट पढ़ी । दिगम्बर जैन सभा भावनगर और बाबू देवकुमार आराके सहानुभूति सूचक तार पढ़े गए । ता० २८ की बैठकमें प्रस्ताव हुए । जैन कालेजके लिये १०००) नगद व ३०००) से अधिक वादे हुए । ता०

२९ की बैठकमें जैन कालेजके लिये हज़ारोंका चंदा हो गया। इस सबका जोड़ ३०७५३)* का है। सबसे बड़ी रकम हैं—

१००००) लाला खूबचंद रईस मेरठवाले हाल सहारनपुर।
५०००) चौधरी खूबचंदजी ,,
२०००) बद्रीदास पार्श्वदास ,,
१०००) लाला रूपचंद रईस ,,
१०००) सेठ द्वारकादास रईस, मथुरा।
१०००) सेठ माणिकचंद पानाचंद जौंहरी, बम्बई।
१०००) बाबू अजितप्रसाद खजांची, देहरादून।

यह चंदा महासभाके कार्यकर्ताओंमें फूट होनेके कारण सिवाय एक दो रकमोंके अबतक (सन् १९१६ तक) वसूल नहीं हुआ है। वर्तमान महासभाके कार्य्याध्यक्षोंको उचित है कि इसे वसूल कराके दातारोंको पाप बंधसे मुक्त करें, क्योंकि स्वीकार की हुई रकम न देना महा पाप है।

रात्रिको स्त्रीसभामें **मगनबाईजीने** रत्नकरंड श्रावकाचार बांचा। सेठ हीराचंद नेमचंदका धर्मकी उत्तमत्तापर विद्वतापूर्ण भाषण हुआ।

हकीम कल्याणराय उपदेशकको महासभाकी ओरसे **सुवर्ण-पदक** दिया गया। महासभामें प्रस्ताव नं० ६ महाविद्यालयको मथुरासे सहारनपुर लानेका हुआ। N. W. रेलवेका किराया घट जानेसे २००० मनुष्योंकी भीड़ हो गई थी। इस मौकेपर **सेठ माणिकचंदको** बहुतसे नवयुवकोंसे परिचय हुआ।

---

* यह सूची जैनगज़ट अंक २३ ता० १६ जून १९०६में मुद्रित है

बाबू शीतलप्रसादको सेठ माणिकचन्दसे विशेष परिचय।

बाबू शीतलप्रसाद जो थोड़े ही दिन पहले सेठ माणिकचंदजीसे काशीमें या उज्जैनमें मिले थे, इस अवसरपर भी आए थे और महासभा आदिके कामोंमें बहुत ही खटपट दौड़धूप करते दिखलाई पड़े थे। सेठ माणिकचन्दजी सभापति थे, उनके पास प्रस्तावादिकोंके विचारने व मंडपमें बुलानेके लिये कई दफे जाना हुआ तब सेठजीसे कई दफे बातचीत हुई। आपने **शीतलप्रसाद**जीका सर्व हाल मालूम किया। यह भी जाना कि यह स्त्रीके देहान्त हो जानेके बादसे उदासचित्त हैं। दफ्तरमें भी ता० १९ आगस्त १९०५ को स्तीफा दे दिया है तथा इच्छा धर्म व जातिकी सेवा करनेकी है। तब आपने कहा कि मैं भी अपना सब समय इसी समाजसुधारकी खटपटमें बिताता हूं और यह चाहता हूं कि आप ऐसे धर्मबुद्धि व परिश्रमीका समागम रहे तो मेरेसे बहुत कुछ काम हो सके, सो आप बम्बई आवें, वहीं इच्छानुसार कुछ धन्धा करें व हमें मदद देवें। शीतलप्रसादजीके चित्तमें सेठ माणिकचन्दजीका सरलचित्त, धर्मप्रेम, जातिसुधारका परिश्रम व धर्मात्माओंसे हार्दिक प्रेम आदि गुणोंने ऐसा असर किया कि उन्होंने निश्चय कर लिया कि हम लखनऊ होकर तुर्त ही बम्बई आवेंगे और आपके साथ रह धर्म व समाजकी सेवा करेंगे। शीतलप्रसादजी लखनऊ आए। अपने दो बड़े भाइयोंसे कहा कि हम बम्बई जाना चाहते हैं। इस बातको सुनकर जवाहरातका काम करनेवाले अनन्तलालजीको बहुत दुःख हुआ, क्योंकि विलायतसे जवाहरातके व्यापारके काममें व्यापारियोंके

साथ पत्रव्यवहार करनेका काम सब यही करते थे और जो माल वहां बिकता था उसपर १) सैकड़ा कमीशन लेते थे। जब शीतल-प्रसादने जानेका हठ नहीं छोड़ा तब अनन्तलालने कहा कि हमारे कामका कोई प्रबन्ध कर जाओ, तब अपने मित्र पुत्तनलाल अग्रवाल-को नियत करके शीतलप्रसादजी अपनी आवश्यक पुस्तकोंको लेकर बम्बई आए। जिस दिन सहारनपुरसे घूमते हुए माणिकचंद बम्बई पहुंचे उसी दिन यह भी पहुंचे। सेठजीको इन्हें देखकर बड़ा भारी हर्ष हुआ। सेठजीने अपने चौपाटीके बंगलेपर ही बड़े सन्मान-के साथ रक्खा, तबसे यह वहीं मित्रके समान रहने लगे। अनन्त-लालजीसे कभी २ माल मंगाकर व बाजारका माल लेकर यह घंटा दो घन्टा दलालीमें घूम लेते थे, शेष समय सेठजीके साथ विताते, उन्हींके साथ २ भोजन करके दोपहरको गाड़ीपर दुकान आना, यहां धर्म सम्बन्धी पत्रव्यवहार करना और शामको व्यालूके समय बंगलेपर आना, बाद सामायिक करके शास्त्र स्वाध्याय व सेठजीसे वार्तालाप करना। सेठ माणिकचंदजी अपने धर्ममित्रकी तरह वर्ताव करते थे, किसी प्रकारके सन्मानमें कमी नहीं करते थे।

स्तवनिधिपर सेठजीका गमन

बम्बई पहुंचते ही सेठजीको दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाके वार्षिक अधिवेशन स्तवनिधिपर जानेकी फिक्र पड़ गई। यह अधिवेशन पौष सुदी १४ ता० ९ जनवरी १९०६ से माह वदी १ ता० ११ जनवरी तक होनेवाला था। सेठ माणिकचंदजी अपनी सुपुत्री मगनबाई सहित तथा बाबू शीत-लप्रसाद और सेठ लल्लूभाई लक्ष्मीचंद चौकसीके साथ कोल्हापुर

पधारे । उसी दिन स्टेशनपर मैसूरके श्रीमान् **अनंतराज सेठ** मोतीखनी म्यूनिसिपल कमिश्नर अपने भतीजे वर्द्धमानैया सहित पधारे । आपका स्वागत सेठ माणिकचंदजी आदिने बड़े हावभाव व गाजे बाजेके साथ किया ।

स्तवनिधि क्षेत्रका हाल।

स्तवनिधि क्षेत्र कोल्हापुर शहरसे २८ मील है । यह स्थान छोटी२ पहाड़ी व टीलोंसे तीन ओर घिरा हुआ है । इस क्षेत्रका असल नाम **तपोनिधि** है, क्योंकि यहां जैन मुनि आकर तप किया करते थे । इस पहाड़ीपर एक १० फुट लम्बी ३ फुट चौड़ी गुफा है, जिसमें **श्री वर्द्धमानस्वामी** मुनि बैठकर ध्यान करते थे, उनका इससे ३ वर्ष पहले देहान्त हो गया था। एक बड़ा मंदिरका घेरा है जिसमें ९ छोटे२ जिन मंदिर हैं । प्रथम मंदिरमें श्री पार्श्वनाथजीकी खड़गासन १ गज ऊंची प्रतिबिम्ब अति वीतराग स्वरूप है । इसीमें १ क्षेत्रपालका मंदिर है । इसकी मान्यता बहुत होती है तथा पहाड़पर भी एक क्षेत्रपालका मंदिर है जिसे ब्रह्मदेवका मंदिर कहते हैं । ता. ९ जनवरीको सभाकी प्रथम बैठक हुई । ३००० स्त्रीपुरुष एकत्र थे । सभापति **अनंतराजय्याने** आसन ग्रहण किया, पास ही सेठ माणिकचंदजी विराजे । वार्षिक रिपोर्ट मंजूर होते ही लोगोंने रुपया जमा कराना शुरू किया । रात्रिको तात्या केशव चौपड़े भिलौरी जिला सांगलीनिवासीने भजन व कीर्तनके साथ अच्छा उपदेश दिया व श्रीपालचरित्रका वर्णन किया । दूसरे दिन फिर सभा हुई । सभापतिने कनड़ी भाषामें

अपना व्याख्यान पढ़ा जिसमें कोल्हापुर बोर्डिंग और सेठ माणिक-चंदजीकी बहुत प्रशंसा की। फिर प्रस्ताव हुए कि सभाकी रजिष्टरी की जाय, जिसका काम सेठ माणिकचंदजीके सुपुर्द हुआ। युवराज प्रिन्स और प्रिन्सेस ऑफ वेल्सको भारतवर्षमें पधारनेकी बधाईका, महाराज कोल्हापुर और सेठ माणिकचंदको कोल्हापुर बोर्डिंगकी सहायतार्थ धन्यवादका भी प्रस्ताव हुआ। शिक्षणफंड एकत्र करनेके लिये **डेपुटेशन पार्टी**का प्रस्ताव हुआ, जिसका समर्थन शीतलप्रसादजीने किया। पार्टीमें १० महाशयोंने एक या आधा मास भ्रमण करनेकी स्वीकारता दी। इनमें मुख्य **सेठ माणिकचंदजी** सबसे पहले तय्यार हुए। रात्रिको फिर सभा हुई, उसमें रावसाहब अंकलेने बम्बई यूनिवर्सिटीमें जैन ग्रंथ भरती होनेका प्रस्ताव करते हुए कहा कि मदरास यूनिवर्सिटीमें कनारी भाषामें **मल्लिनाथपुराण** और **पम्प रामायण** ये दो जैन ग्रंथ पढ़ाए जाते हैं। जैन जातिमें सत्य उपदेशका प्रचार त्यागी जन करें। इस प्रस्तावको **त्यागी पार्श्वनाथस्वामीने** पेश किया, जो पहले कनरीके माष्टर थे और १ वर्षसे घर त्यागा था। आपने अपने भ्रमणकी रिपोर्ट बताई कि ४० गांवोंमें दौरा किया जिनमें ३४ मंदिर, ६ धर्मशालाएं, ८७२ पंचम, ३६९ चतुर्थ और ९९ कासार जातिके घर हैं। कुल २१६३ श्रोताओंमेंसे २ने पूर्ण ब्रह्मचर्य, १७ने परस्त्री-त्याग, १६ ने रात्रिभोजन-त्याग, २१ ने दर्शन व ८४ ने और व्रत लिये। वास्तवमें त्यागियोंका यही कर्तव्य है कि जहाँ जावें सदाचार व धर्मवृद्धि युक्त नियम हर्ष पूर्वक उपदेश देकर करावें। आठवां प्रस्ताव **सेठ माणिकचंदजीने** पेश किया कि

व्यापारादिमें जो **धर्मादाका पैसा** लिया जाता है उसको धर्म-मार्गमें लगाया जाय तथा उसमेंसे ।) द० म० जैन सभाको व ।।।) पांजरापोल व अन्य उपयोगी कामोंमें लगाया जावे । आपने एक अच्छा असरकारक भाषण मराठी भाषामें दिया, जिसमें कहा कि–"परिणामोंकी विचित्र गति है जिस समय दान करना चाहे उसी समय दानके पैसेको अलग कर देना चाहिये । सभामें चंदा लिखकर देनेमें ढील नहीं करनी चाहिये । भाइयों ! हमको सभामें विश्वास रखना चाहिये और सभा भी आपहीका विश्वास रखती है । **यदि विश्वास रखकर काम न किया जाय तो जगतमें कोई काम नहीं हो सक्ता;** और तो क्या वह अन्न जिससे हम पेट भरते हैं कदापि पैदा नहीं हो सकता । **किसान लोग पृथ्वीके विश्वासपर सैकड़ों रुपयेका धान्य पृथ्वीमें देते हैं तब ही उसके कारण उससे घना धान्य पैदा करते हैं ।** अतः हमें विश्वास रखकर परस्पर सहायता करना योग्य है और धर्मादेके रुपयेसे कृष्ण सर्पके समान भय करना योग्य है"। इस प्रस्तावके होनेपर निपाणी, ओठे, हलकरणी, वेड, कलमके पंचोंने अपने यहांके धर्मादेका रुपया समाजके फंडोंमें देना स्वीकार किया । वास्तवमें जहां धनाढ्य दातार दान करानेका प्रस्ताव करता है वहां उसका असर अवश्य होता है । ९ वां प्रस्ताव पशुओंपर दयाका तथा १० वां स्वदेशी वस्तु प्रचारका हुआ । इस पर **शीतलप्रसादजीने** भी समर्थन करते हुए कहा कि स्वदेश प्रेम हमको बाधित करता है कि हम देशी वस्तुओंकी उत्पत्तिको बढ़ावें तथा आप कष्ट सहकर भी उनको व्यवहारमें लावें । वर्द्धमानैय्या

मैसूरने भी इसका समर्थन किया । ता० ११ को तृतीय सभा हुई । कार्यकर्ता नियत हुए । अध्यक्ष और कोषाध्यक्ष **शेठ माणिकचंद हीराचंद जौंहरी बम्बई** नियत हुए ।

सेठ माणिकचंद जीको मानपत्र ।

सभापति अनंतराजैय्याने चांदीके कास्केटमें एक मानपत्र श्रीमान् **शेठ माणिकचंदजी**को अर्पित किया तथा प्रशंसामें कहा कि " इनके पूज्य पिता **शेठ हीराचंदजी** वास्तवमें हीरेके तुल्य अद्भुत गुणधारी थे तथा जिनके पुत्र सेठ मोतीचंद मोतीके तुल्य, सेठ पानाचंद पन्नारत्न तुल्य, सेठ माणिकचंद माणिक्य रत्नके समान तथा सेठ नवलचंद नीलरत्नके समान शोभनीय हैं । इनका कुटुम्ब निर्मल रत्नोंका भंडार है जिसमें सेठ माणिकचंदजीका धर्मकी ओर विशेष राग है तथा इनकी धार्मिक प्रीति सर्व सज्जनोंको राग उपजाती है सो माणिक्य रत्नमें राग होना ही उचित है । इस निर्मल कुटुम्बका निवास भी बम्बईके रत्नाकर पैलेसमें अधिक शोभनीक है । "

मानपत्रकी नकल इस भांति है—

दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभेचें
मानपत्र.

श्रीमान् दानवीर शेठ माणिकचंदजी हिराचंदजी
अध्यक्ष, भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा.
मु० श्रीक्षेत्र स्तवनिधि यांचे सेवेसी.

श्रेष्ठि महाशय !

सहारनपुर येथील महासभेच्या अधिवेशनाचें अध्यक्षस्थान

सुशोभित करून व अखिल भारतीय जैन मंडळाचे धन्यवाद संपादन करून आपण येथें आला आहां. अशा प्रसंगीं आपलें अपूर्व औदार्य, अप्रतिम समाजप्रेम, अढळ धर्मतत्परता इत्यादि सद्गुण पाहून आम्हां दाक्षिणात्य जैनसंघांत जो हर्षोद्रेक होत आहे त्याला आपल्यापुढें आम्हीं थोडी वाट करून देत आहों याबद्दल क्षमा करावी अशी विनंती आहे.

जैन समाजांत आपलें स्थान अनभिषिक्त राजाचेंच आहे असें म्हणण्यास आम्हांस बिलकुल शंका नाहीं. आपल्या समाजाविषयीं उत्कंठ प्रीति आपल्या अंतःकरणांत प्रज्वलित आहे; व या प्रीतीला दृश्य फल कोणत्या उपायांनीं मिळेल हें ठरविण्यास आपलें मन रात्रंदिवस उद्युक्त असतें, आपले विचार प्राचीन आचार्यप्रणीत शास्त्राविषयीं अचल भक्तीनें युक्त असल्यामुळें जैन शासनाच्या सनातन तत्वांचें पुनरुज्जीवन करण्यास आपण तत्पर आहां. तसेंच परिस्थितीच्या भेदामुळें ज्या नवीन सुधारणांची समाजास अवश्यकता आहे त्याहि आपण पूर्णपणें जाणत आहां. आणि या सर्व ज्ञानाम कृतींत उतरविण्यास ज्या साधनांची अवश्यकता असते तीं आपल्यांस पूर्णत्वानें लाभलीं आहेत. तात्पर्य कुशाग्र बुद्धी, सदय अंतःकरण, उदार वासना, यथेच्छ संपत्ती, अखंड कीर्ति इत्यादि सद्गुणामुळें व सामग्रीमुळें आज आमच्या समाजांत आपण उच्चतम पदावर स्वभावतःच विराजमान झाला आहां.

आपण समाजहितासाठीं आजवर सहासात लक्ष रुपये खर्चिले आहेत. आणि ते अशा प्रकारें खर्चिले आहेत कीं त्यांचा उपयोग चिरकाल सर्व समाजास उत्तमप्रकारें होत राहील. यामुळें आपले

औदार्य व चातुर्य यांचें मिश्रण 'सोनें व सुगंध' यांच्या मिश्रणाप्रमाणें झालें आहे. याबद्दल आपणा प्रमाणेंच आपले उदार बंधु श्री० शेठ पानाचंद, शेठ नवलचंद वगैरेहि आम्हां सर्वांस पूज्य झाले आहेत.

आपली स्तुती कोणतेहि शब्द योजिले तरी जास्त होणार नाहीं. करितां थोडक्यांत आम्ही जिनेश्वरांच्या चरणाजवळ एवढीच प्रार्थना करितों कीं आपणांस, आपल्या बंधुवर्गास व कुटुंबीयांस अशाच प्रकारें समाजसेवा करण्यास उदंड आयुष्य, आरोग्य आणि वैभव प्राप्त होवो.

आपला–

श्री स्तवनिधि पौष्य १५ शके १८२७ } **अनंतराज शेट्टी मोतीखनी ।**
अध्यक्ष दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभा ।

इस मानपत्रको स्वीकार करते हुए **सेठ माणिकचंदजी**-ने कहा कि " मैंने व मेरे कुटुम्बने जो कुछ भी धर्म कार्य्य किया है वह कुछ आश्चर्यजनक नहीं, केवल अपनी शक्ति अनुसार अपना किंचित् कर्तव्य पालन किया है । जैन जातिके सर्व धनाढ्यों का यही कर्तव्य है कि **इस जैन जातिमें विद्याकी कमी है उसको मिटानेके लिये अपने तन मन धनसे चेष्टा करें** । वास्तवमें यह सेठजीके वाक्य बड़े ही अमूल्य हैं । हरएक धनवानको हृदयमें धरकर सेठजीके समान उदार होना चाहिये ।

रात्रिको स्त्रियोंकी १ बड़ी सभा हुई । २५०० की संख्या थी । **श्रीमती मगनबाईने** अध्यक्षस्थान ग्रहण किया था । इसमें ८ बाइयोंने थोड़ा २ भाषण दिया । डाक्टरनी कृष्णाबाईने

१ घंटा शिक्षाकी जरूरत पर खूब विवेचन किया, फिर अध्यक्षाके भाषणसे सारी सभा प्रसन्न हो गई। वार्षिक छात्रवृत्ति व १९०) का चंदा हुआ।

सेठ माणिकचंदजीको मंदिरकी भी अच्छी भक्ति थी।

स्तवनिधि क्षेत्रमें संगमर्मरका जड़ाव।

आपने स्तवनिधिके सर्व मंदिरोंमें संगमर्मर जड़ानेका काम शुरू करा दिया जिससे स्वच्छता व शोभा दोनों रहें।

सेठ माणिकचंदको हर्ष।

कोल्हापुरसे आकर सेठ माणिकचंदजीने समाचारपत्रमें यह पढ़कर बहुत हर्ष प्रगट किया कि श्वेतांबर जैनी **बाबू पन्नालाल** जो मरते समय **८ लाख रुपया** निकाल गए थे उसमें एक बड़ा मकान बनकर १ जैन हाईस्कूल और दवाखाना ता० ९ जनवरी १९०६ को बम्बई **गवर्नर लार्ड लैमिङ्गटन** के हाथसे खोला गया। खोलते समय लार्ड महोदयने कहा "जैनियोंका इतिहास बना जानने योग्य है। इनका धर्म जीवदयाके सिद्धांतको पालनेवाला है। मैं जैन जातिका बहुत सन्मान रखता हूं। ये लोग उद्योगी तथा उदार दिलके होते हैं। बचोंको मानसिक **शिक्षाके साथ २ धर्मशिक्षा अवश्य देनी योग्य है**, क्योंकि धर्मशिक्षा ही से यह लोक तथा परलोक दोनों सुधरते हैं।

उस समय पन्नालालजीके सुपुत्रोंने २९५००) हाई स्कूलके फंडमें दिये।

हीराबाग धर्मशालाका उपयोग, पानीपतका संघ और बंबईमें रथोत्सव।

हीराबाग धर्मशालाको चालू हुए १।। मास भी नहीं बीता था कि इसमें श्री गिरनारजीकी यात्रा करके आनेवाले तीन बड़े संघ आए। सबसे मुख्य संघ १५० भाई बहनोंका इच्छाराम कम्पनीवाले **लाला बद्रीदास रईस पानीपतके** साथ था। संघके साथ श्री मंदिरजी व कई विद्वान शास्त्री पंडित व कवि मुंशी मंगतरायजी थे। बद्रीदासजीके भाई दरबारीलालजी व पुत्र लक्ष्मीचंदजी सुमेरचंदजी संघकी वैय्यावृतमें लीन थे। दूसरा संघ २००की संख्याका **श्रीमन्त सेठ पूरणसाह** सिवनी छपराके साथमें और तीसरा १५७ की संख्याका दिहलीसे **लाला मोतीलाल** जौंहरी और **जौंहरीमल खजांची**के साथ आया था। हीराबागने सबको स्थान दान कर दिया था। ता० १९ जनवरीको **श्रीमती मगनबाई**ने हीराबागके लेक्चर हॉलमें शिक्षाकी उत्तमतापर स्त्रियोंको भाषण देकर धार्मिक प्रतिज्ञाएं कराई थी। पानीपत वालोंके भाव बम्बईमें रथोत्सव करनेके हुए। इस समय राजा दीनदयाल फोटोग्राफरके पुत्र **राजा ज्ञानचंदजी** बम्बईमें थे। आपके व सेठ माणिकचंदजीके उद्यमसे ता० २१ जनवरीको शोलापुरके मनोज्ञ चित्रित रथमें श्रीजीकी सवारी गाजे बाजे और जुलूसके साथ मुख्य २ बाजारोंमें होती हुई फिर लौटकर हीराबागमें आई। कालबादेवी रोडपर बाजा बजनेकी मनाई थी, पर इस समय वहां भी बाजा बजता गया था। जैनी स्त्रीपुरुष २०००के साथ थे। दर्शकोंकी भीड़का पार न था। बिना किसी

ट्रेषके सर्व कौमें भगवत्के दर्शनसे आनन्दित होती थीं। ता. १६ जनवरीको सेठ माणिकचंदने सर्व मुख्य भाइयोंको लेजाकर **सेठ हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंग**का निरीक्षण कराया तथा वहाँ बोर्डिंगकी ओरसे एक सभा हुई। सभापति **लाला बद्रीदास पानीपत** हुए। पंडित मंगतराय व चोखेलाल खजांचीने बोर्डिंग देखकर हर्ष प्रगट किया। सभापतिने १०) दस दस रुपये मासिककी एक संस्कृत व १ इंग्रेजी विभागमें ऐसी दो छात्रवृतिएं १ वर्षको दी।

स्त्रीशिक्षाके लिये अध्यापिकाओंका प्रबन्ध।

बाबू **शीतलप्रसाद**जीको स्त्रीशिक्षा प्रचारकी बहुत रुचि थी। यह जैनगजटमें इसकी उत्तेजनाके बराबर लेख दिया करते थे। इनको विश्वास था कि बिना स्त्रीशिक्षाके प्रचारके समाज कभी सुधर नहीं सक्ता। लखनऊमें इन्होंने श्रीमती **पार्वतीबाईको** कुछ विद्याका सहारा देकर स्त्रीशिक्षाके प्रचारमें उत्तेजित किया था। फिर जबसे मगनबाईजीका समागम हुआ इनको बारबार लेख लिखने, उनको शुद्ध करने, व्याख्यान देने व स्त्रीशिक्षा-प्रचारमें तन मन धन लगानेकी प्रेरणा की तथा तात्त्विक दृष्टिके लिये श्री अर्थप्रकाशिकाजीका स्वाध्याय कराया। नित्य बंगलेपर रहते हुए शीतलप्रसादजीका मगनबाईजीको यही उपदेश होता था कि अध्यापिकाएं जबतक तयार न होंगीं तबतक कन्याशालाएं खुल नहीं सक्तीं। इससे बम्बईमें एक आश्रम खोला जाय उसमें विधवा व श्राविकाओंको रखकर सिखाया जाय। मगनबाईजीको यह बात पसंद आगई थी, पर जब

सेठ माणिकचंदजीसे मगनबाई वर्णन करती तब सेठजीके ध्यानमें यह बात यकायक नहीं आती थी। एक दिन सवेरे जब मंदिरजीसे स्वाध्याय करके सेठजी दीवानखानेमें बैठे थे तब शीतलप्रसादजीने मगनबाईजीके सामने सेठजीको घन्टाभर खूब समझाके कहा कि आप यदि जैन जातिका उद्धार करना चाहते हों तो जबतक माताएं धर्मात्मा व सुआचरणी नहीं होंगीं, समाजका उद्धार नहीं हो सक्ता; क्योंकि जबतक माताएं अच्छी न होंगी पुत्र योग्य नहीं पैदा हो सक्ते। स्त्रीशिक्षाके लिये अध्यापिकाएं तय्यार करनेका प्रयत्न करना चाहिये। सेठजीने कहा कि बाहरसे कोई आनेवाली नहीं हैं। तब बहुत जोर देकर शीतलप्रसादजीने कहा कि आप इसका उद्यम तो करें। तब सेठजीने अपने एक मकानमें २, ४ कोठरियां खाली कर दीं और मगनबाईजीको आज्ञा दी कि पढ़नेवालियोंको बुलाओ फिर और प्रबन्ध हो। तब मगनबाईजीने ता. १६ फर्वरी १९०६ के जैनगजटमें यह नोटिस प्रसिद्ध किया कि बम्बईमें श्राविकाश्रम खोलनेका प्रबन्ध हुआ है, फार्म मंगाकर श्राविकाएं भर कर भेजें तथा स्वीकारतापर यहाँ आवें। यहां उनके भोजनपान आदि व शिक्षाका कुल प्रबन्ध किया गया है। यह नोटिस वर्तमानमें चलने वाले **श्राविकाश्रम**का बीज भूत है।

स्त्रियोंसे पत्रव्यवहार। मगनबाईजीको यह भी प्रेरणा की गई कि वह पढ़ी लिखी स्त्रियोंसे पत्रव्यवहार करें कि वे अपने २ **बाहरकी पढ़ी लिखी** यहां स्त्रीशिक्षाकी उत्तेजनामें उद्योग करें। इस पत्रव्यवहारके प्रभावसे **श्रीमती गंगादेवी** मुरादाबादने मगनबाईजीको फर्वरी मासमें लिखा कि मैंने मंदिरजीमें ८ से ९ तक स्त्रियोंको

पढ़ाना शुरू किया है, ४ स्त्रियां छहढाला पढ़ती हैं तथा अष्टमी चौदसको उपदेशिका सभा की जायगी । ईडरसे **जानकीबाई** अध्यापिकाने लिखा कि प्रतिमासकी सुदी १४ को 'स्त्री धर्म प्रकाशिनी सभा' नामकी सभा हुआ करेगी तथा रात्रिको ७ से ८ तक श्रीरत्नकरंडश्रावकाचार स्त्रियोंको सुनाना शुरू कर दिया है ।

कपड़ेके मनोहर जूते ।

त. २५ फर्वरी १९०६ को हीराबागमें कविराज घेलाभाईकी अपूर्व स्मरणशक्तिका परिचय पानेके लिये एक सभा हुई थी । उसमें सेठ माणिकचंदजीने एक विलायती जूतोंका बहुत सुन्दर और मजबूत जोड़ा दिखलाया था जो केवल कपड़ेका बना था, पर बनावट, रंग, तथा पालिशमें विलायती चमड़ेके जूतेसे किसी बातमें कम नहीं था । विलायतमें वेर्जाटेरियन सोसायटी है जिसके सभ्य वनस्पति भोजी और मदिरा, मांस, चर्बीसे अत्यन्त परहेज करनेवाले हैं । इसीने सेठजीके पास नमूनेके तौरपर भेजा था । सेठजीने बतलाया कि लंडनमें ५०—६० क्लब मांस वर्जित भोजनके हैं । प्रत्येकमें ४००—५०० मनुष्य भोजन करते हैं । चमड़ेसे भी हिंसा होती है ऐसा समझकर यह जूता तय्यार कराया गया है । हमारे देशवासी भाइयोंको उचित है कि चमड़ेका व्यवहार कम करें ।

ललिताबाईका कार्य्य ।

श्रीमती मगनबाईजीके पत्रव्यवहारसे प्रेरित हो श्रीमती **ललिताबाई** अंकलेश्वरने जैनगजट अंक ११ वर्ष ११ ता० १६ मार्च १९०६ में 'जैन भगिनियों प्रति उत्तेजना' ऐसा लेख प्रगट किया तथा सूचना दी कि वह अपने गांवमें ४ स्त्रियोंको मा-

गोपदेशिका नामकी संस्कृत व्याकरण पढ़ाती हैं।

जबसे सेठजीने बम्बईमें हीराबाग धर्मशाला बनवाई इनकी दान व उदारताकी प्रसिद्धि आम लोगोंमें बहुत हुई। सर्कारके यहां जब ऐसे परोपकारी व जाति व देशहितके काम करनेवालों की खबर पहुंचती है तब वह प्रतिष्ठा देनेका विचार करती है। यद्यपि बहुतसे आदमी प्रतिष्ठा पानेके लिये सिफारिश कराते हैं अथवा अफसरोंके द्वारा करार कराते हैं कि हम अमुक रकम अमुक खातेमें देंगे हमें पदवी दिला दी जाय। सेठ माणिकचंदजीको न प्रतिष्ठाकी इच्छा थी न किसी उपाधिकी, स्वतः ही इनको विलकुल खबर ही नहीं थी। इनके पास सर्कारी पत्र आया जिसकी नकल नीचे हैं कि तुम बम्बई शहरमें **जष्टिश ऑफ दी पीस** अर्थात् **शांतिके न्यायाधीश** नियत हुए। इस पदसे नगरमें मजिष्ट्रेटकासा हक हो जाता है। जिस कागजपर यह दस्तखत कर दें उसे फिर और रजिष्ट्रार या मजिष्ट्रेटसे हस्ताक्षर करानेकी ज़रूरत नहीं है।

सेठ माणिकचंद हीराचंदजीको जे. पी. की पदवी।

नकल पत्र सर्कारी।

Commissioner of the piece for the city of Bombay.

This is to certify that Mr. Manekchand Hirachand was by nomination of Government in the Judicial Department no. 1433 dated the 14th March 1906 appointed under the provisions of section 23 of the Code of Criminal Procidure 1898 to be a Justice of the Peace

within the Limits of the City of Bombay during the pleasure of Government.

By order of His Excellency the Right Honourable the Governor in Council.

Judicial Department
Bombay Castle
30th March 1906.

(Initial)
Chief Secretary
to Government.

भावार्थ-

पीस कमिश्नर बम्बई शहरसे यह प्रमाणपत्र दिया जाता है कि मालेके मुआजिम न्याय विभागके १४वीं मार्च सन १९०६से नियम १४३३ नंबरके सरक्युलरके मुताबिक मि० माणिकचंद हीराचन्दको १८९८के क्रिमिनल प्रोसीजर कोड कलम २३के मुताबिक गवर्नमेंटकी मर्जीमें आवे वहां तक बम्बई शहरकी सरहदमें जस्टिस आफ दी पीस नियुक्त किये गये।

राइट आ० गवर्नर इन कौंसिलके हुक्मसे
सही: गवर्नमेंटके चीफ सेक्रेटरी।
न्याय विभाग बम्बई केसल ३० मार्च १९०६

बम्बईमें संस्कृत विद्यालयके छात्र पंडित **लालाराम**ने इस सन्मान अर्पणके समाचार जानकर संस्कृतमें एक कविता बनाकर सेठजीको भेट की सो इस भांति हैं-

॥ श्री ॥

श्रुत्वार्पितां भूपवरैरुपाधि माणिक्यचान्द्रीं नरभूपमान्याम्।
नद्योदिशोवारिधराः सुरम्याः दिक्स्थायिनोजनजनाः प्रहृष्टाः ॥ १ ॥
माणिक्यरोचिः स्वयमेव रम्या चन्द्रस्य कान्तिः सुखदा सुशुभ्रा।
भास्येव ताभ्यामनिशं ततोऽद्य जैनैर्नृपैर्मान्यतयाधिकस्त्वम् ॥ २ ॥

विद्याप्रदानादिबहुप्रकार–रूपमहैर्थोपकृता हि जैनाः ।
सर्वोपकारं परमद्य वीक्ष्य सम्राडपि त्वां स्मरति प्रहृष्टः ॥ ३ ॥
कीर्तिस्त्वदीया जगति प्रसिद्धा श्रुता न चेत्कजैनसंपराजैः ।
तथापि तां कर्णसुधाप्रदात्रीं कथं न श्रृयात्समनस्कमिन्टो ॥ ४ ॥
वदान्यशृगोजिनधर्मनेमिः विद्यार्थिवर्गैकसहायभूतः ।
चिरायुषं धर्मपरायणं त्व धर्मप्रसादेन लभस्व पुत्रम् ॥ ५ ॥

प्रमुदितो विनीतश्च लालारामश्छात्रः ।

फल्टनके दि० जैन भाइयोंने चैत्र सुदी ११ की खास सभा-द्वारा एक छपाहुआ मानपत्र भेटमें

जे. पी. पदवीके हर्षमें भेजा; रुकडी जिला कोल्हापुरके समस्त

सभाएं । श्रावक और मंडलीने ता. २१ मार्च १९०६ को दस्तखती एक सन्मानपत्र छपा हुआ भेजा तथा ता. १५ जुलाईको हीराचंद गुमानजी बोर्डिंगके छात्रोंने भी इसी हर्षमें मानपत्र अर्पित किया था । इन तीनों मानपत्रकी नकलें इस भांति हैं–

नकल मानपत्र (फल्टन)

दानवीर श्रीयुत सेठ माणिकचन्द हीराचन्द जे० पी० यांचे सेवेशीं:–

सावद्यमुक्तं विमलं चरित्रं विभाति रत्नत्रयरोचि रम्यम् ॥
लोके यदीयं स च दानवीरो माणिक्यचन्द्रो मणिवचकास्ति ॥१॥
केचिन्निवासरहिताः कतिचिच्च रोगैराक्रांतदेहलतिकाः कतिचिद्दरिद्राः
विद्याजडाः कति च केचन धर्महीना यस्याश्रयाजगतिशांतिमवापुरग्याम् ॥२
क्षपाकरस्येव क्षयो न दृष्टो दोषाकरत्वं न च विश्रुतं ते ॥
मित्रोदये नैव रुषं दधासि वले धरित्र्यास्त्वमपूर्वचन्द्रः ॥३॥

मुदं दधानो मिषतां जनानां चन्द्रोज्ज्वलां पुण्यप्रभां तनोषि ॥
धातोश्चदेरर्थमकारि सार्थस्तेनात्र लोके प्रथितोऽसि चन्द्रः ॥४॥

श्रेष्ठिवर्य महाशय !

हल्लीं या शहरांत चालू असलेल्या उत्सवाचे व परिषदेचे अनुरोधानें आपण येथें येण्याची आम्हांवर मेहेरबानी करून आमच्या जैन समाजावर जो अनुग्रह केला आहे, त्या प्रसंगाचा फायदा घेऊन आपल्या समाज विषयक पुण्यशाली सत्कृत्याबद्दलच्या पूज्यताजनित प्रेमाला शब्दरूप देण्याचा यत्न करण्याची आम्हांस उत्कंठा झाली आहे व ती पूर्ण करून घेण्याची आपण परवानगी द्याल अशी उमेद आहे.

भरतखंडांत जैनधर्माची प्रभा वारंवार उज्ज्वल करावयासाठीं ज्या विभूति आमच्यामध्यें जन्म पावल्या आहेत त्याच्या सन्मान मालिकेंत अधिष्ठित करावयासारखे सत्पुरुष आपल्यारूपानें आमच्या कालांत जन्मले आहेत हें आमच्या समाजाच्या पुण्योदयाचेंच लक्षण आहे, असें प्रत्येक जैनास वाटत आहे.

हें उंचस्थान भारतीय जैन समाजाच्या एक मतानें प्राप्त होण्यासारखीं अनेक सत्कृत्यें आपण केलीं आहेत हें सर्व विश्रुत आहेच. आपल्या अनुपम औदार्यामुळें आमच्या समाजांतील बहुतेक मोठ्या संस्था आज पोशिल्या जात आहेत; इतकेंच नव्हे तर मुंबई, कोल्हापुर, अहमदाबाद, आगरा, वगैरे ठिकाणच्या विद्याग्रहासारख्या उत्तम संस्था या आपल्या थोर दानवीर्यापासूनच जन्मल्या आहेत.

मागासलेल्या जैनजातीची उन्नति करणाऱ्या आपल्यासारख्या आमच्या समाजांतील थोड्या विभूतींचे जैनसमाजावर

मोठे उपकार आहेत. या प्रयत्नानें लुल्या पडलेल्या भारतीय जैन-समाजांत चेतना उत्पन्न होऊन त्या योगानें ह्या प्राचीन जैन समाजाचा अभ्युदय होईल अशी आम्हांस खात्री आहे. हें लक्षांत घेऊनच इतर जातींतील पुढारी आपल्या सत्कृत्याचें अभिनंदन करितात, याचें ठळक उदाहरण येथील प्रभु श्रीमान् सरकार हेच होत. त्यांनी केलेल्या आपल्या सत्कारास कारण आपली थोरवी तर आहेच पण ही गोष्ट जैनजातीच्या उन्नती विषयींच्या त्यांच्या कळकळीची एक साक्ष आहे याबद्दल आम्हीं समस्त जैनलोक श्रीमंत सरकारचे ऋणी आहोंत.

मुंबई या सूरत सारख्या मोठ्या व्यापार प्रसिद्ध व जेथें जैन व जैनेतर हिंदू तीर्थवासी यांना उतरल्याशिवाय गत्यन्तरच नाहीं असें म्हटलें तरी चालेल, अशा ठिकाणीं **हिराबाग** धर्मशाळेसारख्या भव्य धर्मशाळा बांधून उतारू लोकाची गैरसोय नाहींशी केली. अशा रीतिनें जैन व जैनेतर समाजावर ही अनेक उपकार केले आहेत ।

ह्या आपल्या दानशौंडित्वाबद्दलच स्पृहणीय प्रख्याती झाली आहे, असें नहीं. आपलें सौजन्य, आपली जैनधर्माविषयीं अपार श्रद्धा, जैनसमाजाच्या उन्नति विषयीं आपले अव्याहत परिश्रम आणि आपल्या समाजांतील अनाथ व गरजू लोकांस मदत करण्याविषयीं आपली निरलस तत्परता इत्यादि अनेक गुणामुळें आपण सर्व समाजास पूज्य व प्रिय झालेले आहां.

मुंबई दिगम्बर जैन प्रांतिक सभा, द० म० जैन परिषद्, भारतवर्षीय दि० जैन महासभा इत्यादि सभांचे अध्यक्ष, मुंबई

शहरातील 'जस्टिस ऑफ दी पीस', तीर्थक्षेत्रप्रबंधकारिणी सभेचे महामंत्री इत्यादि अनेक जबाबदारीची, व समाजोपयोगी कामें अंगावर घेऊन इतर कोणासही न करितां येतील अशा उत्तम तऱ्हेनें व प्रचण्ड स्वार्थत्याग करून आपण तीं बजाविलीं आहेत व त्यामुळें आपण सर्व जैनसमाजास कायमचे आपले ऋणी करीत आहां.

आपल्या अंगच्या सद्गुणांचें वर्णन करणें अशक्य जाणून त्या उद्योगास न लागतां शेवटीं आह्मांस इतकेंच सांगावयाचें आहे कीं आपला कित्ता थोडाबहुत :तरी बळविण्याची आमच्यांतील पुढारी लोकांस आपलें तेजस्वी उदाहरण पाहून इच्छा जाहल्यास समाजानें आपल्या उपकारांविषयीं थोडी तरी कृतज्ञता दर्शविली असें होईल. आपल्या अपार औदार्याचें अनुकरण करण्यासारखी सुस्थिति जरी फारच अपूर्व असली तरी आपला साधेपणा, निरलसपणा, वगैरे गुणांत आपला कित्ता पुढें ठेवण्याचें काम तरी प्रत्येकानें केलें पहिजे.

असा कित्ता आमच्या पुण्योदयानें आम्हांस आज सजीव स्वरूपाचा मिळाला आहे तो असाच आमच्या पुढें चिरकाल राहो, अशी आमची परमेश्वराजवळ प्रार्थना आहे. आपल्यास व आपल्या कुटुम्बास शुभ कर्मजनित सर्व फलें अखण्ड प्राप्त होवोत अशी जैनसमाजाची इच्छा पुनरपि प्रदर्शित करून, हें मानपत्र आपल्यास सादर करावयाची परवानगी घेत आहों.

फलटण. एप्रील १९०७.

आपले कृपाभिलाषी—फलटण दि० जैनसमाज तर्फे—

१. शेठ दोशी माणिकचंद रावजी, २. हीराचंद माणिकचंद दोशी वकील, ३. शा० रामचंद हेमचंद (अध्यक्ष

स्वा० क० फलटण), ४. दोशी रूपचंद लखमीचंद, ५. शा० रामचंद सुरचंद.

नकल मानपत्र (रुकडी)

श्रीमत्सकलगुणगणसंपन्न राजमान्य राजश्री शेट माणिकचंद पानाचंद जव्हेरी मुंबई जस्टिस ऑफ धी पीस ।

यांचे सेवेसी—रुकडीं गांवचे आम्ही समस्त श्रावक व इतरजन आपलें अभिनन्दन करितों कीं—

आपली धर्मसंबंधी व इतर औदार्याची कीर्ति सरकारचे कानावर जाऊन त्यांनीं आपला थोरपणा मनांत आणुन सरकारांनीं आपल्यास 'जस्टिस ऑफ धी पीस' ही बहु मानाची पदवी दिली. असें आम्हांस कळल्यावरून आम्हांस फार आनंद झाला व याजबद्दल आम्ही सर्व जैन व ब्राह्मण वगैरे लोक श्रीजीनाचे मंदिरांत जमून आनंद-प्रदर्शक सभा भरवून आपल्या थोरपणास उचित असा मान मिळाल्या बद्दल आनंद मानला, व सरकारचे आभार मानिले, आणि आपलें असेंच यशस्कर व जनांस सुखकर असें आयुष्य वृद्धिंगत होवो ह्मणुन परामेश्वराची प्रार्थना केली.

हा आनंद आपल्यास कळविण्याकरितां हें अभिनंदनपर पत्र आह्मीं नम्रता पूर्वक आपल्यास लिहून पाठविलें आहे. तें आमचे तर्फे चिरंजीव रा० रा० बाबगोंडा आणा पाटील रुकडीकर हे आपणास अर्पण करितील, त्याचा आपण प्रेमानें स्वीकार करावा अशी विनंति आहे. कृपा लोभ असावा ही विनंति. ता० २१ मार्च १९०१

आपले—रुकडीकर समस्त श्रावक व इतर मंडली

नकल मानपत्र (बम्बई बोर्डिंग)

मेहेरबान सेठजी साहेब,

शेठ माणेकचंद हीराचंद झवेरी जे. पी.

मानवंता अने सुज्ञ शेठजी साहेब,

विशेष अमो शेठ हिराचंद गुमानजी जैन बोर्डींग स्कुलना विद्यार्थीओ आपणी नामदार मायाळु ब्रिटिश सरकार तरफथी आपने जे. पी. नो मानवंतो खेताब एनायत करवामां आव्यो छे तेनी खुशालीना आवेशमां आप साहेबने आ मानपत्र आपवानी रजा लइए छीए.

मनुष्यने धन प्राप्ति थवी ए तो सुलभ छे परंतु ते धननो सदुपयोग करवानी बुद्धि तो कोई विरलाओमांज पूर्वजन्मना सुकर्मना योगे विकाश पामे छे. आप व्यापारी वर्गना होवा छतां विद्या तथा धर्म तरफ आपनी अभिरूची प्रशंसनीय छे.

सरकारी पाठशालाओमां अभ्यास करता जैन विद्यार्थीओने पडती धर्मशिक्षणनी खोट, तेमज परदेशथी अत्रे आवता विद्यार्थीओनी अगवडता दूर करवाने आपना स्वर्गस्थ पिताश्रीनी यादगीरीमां शेठ हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डीन्ग स्कुल स्थापी तेमनुं, आपसाहेबनुं तथा आपना कुटुंबनुं नाम अमर कर्युं छे. आ सिवाय विद्यानी तथा धर्मनी अभिवृद्धिने माटे मुंबई, अमदावाद, कोल्हापुर वीगेरे स्थळोए करेली सखावतो जग जाहेर छे.

आपने जैन तरीके मळेलुं मान आखी जैन कोमने मळ्या

बरोबर छे. नामदार मायाळु ब्रिटिश सरकार के जेना प्रतापी अने न्यायी अमल नीचे आपणे सर्वे सुखशांतिमां रहीए छीए तेनो आपने आ मान आपवा सारु आ प्रसंगे अमे आभार मानीए छीए.

छेवटे अमो सर्वे इच्छीए छीए के आ मानवंत पदवी आप लांबा वखत सुधी भोगववाने तथा धर्म अने विद्यानां अनेक उपयोगी कार्यो करी हजु पण मोटा खेताब मेळववाने अने ए रीते सरकार अने प्रजामां वधारे मान प्राप्त करवाने भाग्यशाळी थाओ. तथास्तु।

तारदेव मुंबई ता० १९ जुलाई १९०६.

ली० आपना आज्ञांकित सेवको—
मोदी नाथालाल छगनलाल बी. ए.
डाक्टर मोहनलाल पोपटलाल बी. ए.
पारेख प्रभुलाल वाघजी बी. ए.
लालाराम जैन पंडीत.
वीगेरे !

शेठ हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डीन्ग स्कुलना विद्यार्थीओ.

शीतलप्रसादजीके जिनेन्द्रमत-दर्पण प्रथम भाग व पुस्तककी प्रयागके माघमेलेमें सेठजीद्वारा पुस्तक वितरण।

शीतलप्रसादजीने जैनधर्मकी प्राचीनता व कुछ उद्देशोंको प्रगट करनेवाली एक पुस्तक **जिनेन्द्रमत-दर्पण** प्रथम भाग रची है उसकी २००० प्रतियां सेठ माणिकचंदजीकी ओरसे मुद्रित होकर प्रयागके माघ मेलेमें बाबू चेतनदासजी बी. ए. द्वारा वितरण की गई थीं ।

सेठ माणिकचंदजीने वैद्यराज व वैद्यरत्न उपाधि प्राप्त पं०

बम्बईमें औषधालय। **कन्हैयालाल जैन**को बुलाकर अपनी सहायतासे एक पवित्र जैन औषधालय खुलवा दिया जिससे अशुद्ध दवाओंसे बचकर जैन व अजैन शुद्ध औषधियें सुगमतासे प्राप्त करें।

बुन्देलखंडमें बोर्डिंग-की आवश्यक्ता। सेठ माणिकचंदजी शीतलप्रसादजीके साथ सम्मति किया ही करते थे। एक दिन आपने कहा कि यह बम्बईमें बुन्देलखंडके जो यात्री आते हैं और इस चौपाटी चैत्यालयका दर्शन करनेके बाद मुझसे मिलकर वातचीत करते हैं तब उधर शिक्षाकी बहुत कमी मालूम होती है तथा ग्रामोंमें रहनेवालोंके लिये पढ़नेका साधन नहीं है, इससे आर्थिक दशा भी अच्छी नहीं है, इस लिये बुदेलखंडके उद्धारके लिये कहीं न कहीं बोर्डिंग खोलनेकी आवश्यक्ता है। दोनोंकी सम्मतिमें **जबलपुर** स्थान ठीक जंचा क्योंकि वह मुख्यनगर है तथा वहां कालेज और स्कूल भी हैं, ट्रेनिंग कालिज भी है। जैनियोंकी स्थिति भी अच्छी है। शीतलप्रसादसे सेठजीने कहा कि वहां बोर्डिंग स्थापित करानेका सिलसिला डालना चाहिये। शीतलप्रसादजी महासभाके महाविद्यालयकी डेपुटेशन पार्टीके साथ कुछ ही मास पहले जबलपुर, सिवनी, छिंदवाड़ा आदिमें दौरा कर चुके थे जिससे वहांके हालातसे परिचित थे। आपने सब स्थानोंके धनाढ्योंका हाल बताया और यह सम्मति दी कि श्री कुंडलपुर (दमोह) का मेला जो चैत्रमें होता है उसमें आप पधारें और वहां मुख्य २ भाइयोंको बुलानेकी प्रेरणा करें। फिर वहांसे जबलपुर चलकर इसका यत्न करें। यह बात निश्चित हो गई

तब शीतलप्रसादजीने जबलपुर, सिवनी, छिन्दवाड़ा, दमोह आदिके भाइयोंको सूचना दी कि **शेठ माणिकचंदजी** श्री कुंडलपुरकी यात्रार्थ आवेंगे, आप लोग मित्रमंडलीसह पधारें।

श्री कुंडलपुरकी यात्रा।

सेठ साहब बाबू शीतलप्रसाद और श्रीयुत नाथूराम प्रेमीके साथ ता० १५ मार्चकी शामको बम्बईसे चलकर ता० १६ को बीनास्टेशनपर आए। यहांसे २ मील दूर एक धर्मशालामें ठहरे। यहांसे शहर बीना-इटावा २ मील था। दर्शनार्थ गए। यहांसे शामको ही चलकर १२ बजे रात्रिको दमोह स्टेशनपर पहुंचे। बाबू गोकुलचंद वकील जिनको पहलेसे खबर की गई थी, १०० भाइयोंको लेकर स्वागतार्थ स्टेशनपर आए थे। बड़ी भक्तिसे नगरमें लाए और धर्मशालामें ठहराया। यहाँ १२५ घर परवारोंके हैं, संख्या ४५० है, जिनमंदिरजी ६ हैं। वर्षाके कारण ता० १७ व १८ को यहीं ठहरे। ता० १७ की रात्रिको मंदिरजीमें सभा हुई। धर्म विषयपर व्याख्यान हुआ। ता० १८ की शामको बैलगाड़ीमें चढ़कर २० मील चल ता० १९ को सवेरे **कुंडलपुर** क्षेत्रमें आए। यह क्षेत्र दमोह स्टेशनसे २० व बांदकपुरसे १५ मील है। कुंडलपुर एक रमणीक और मनोहर गांव है, जो पहाड़की तलहटीमें बसा हुआ है। पहाड़का आकार कुंडलके समान है। पर्वतपर २२ तथा तलहटीमें २१ जिन मंदिर हैं। पर्वतसे सबसे ऊंचा उत्तरकी ओर छः घरियाजीका मंदिर है जिसपर पहुंचनेको नीचेसे ५०० सीढ़ियां ऐसी बनी हैं कि एक बालक भी सुगमतासे चढ़ सक्ता है। पर्वतके मध्य भागमें **श्री वर्द्धमान स्वामीका**

विशाल पत्थरका बना हुआ मंदिर है जिसमें लाखों रुपयोंकी लागत आई होगी। इसमें श्री **वीरभगवान**की एक विशाल और दर्शनीय पद्मासन योग प्रतिमा है जिसकी ऊंचाई ४॥ गज व चौड़ाई ३ गजके अनुमान है। यह प्रतिमा बहुत प्राचीन कालकी है। संवत नहीं है, दर्शन करते मन तृप्त नहीं होता। मंदिरजीके जीर्णोद्धारका एक शिलालेख संवत १७९७का है जो द्वार पर लगा है। पहाड़पर और मंदिरोंमें जानेके मार्गमें भी पत्थर जड़ा हुआ है इससे सर्व मंदिरोंकी वंदना ३ घंटेमें हो जाती है। सेठ साहबके आगमनको जानकर सिवनीसे श्रीमान् **सेठ पूरणशाह** आनरेरी मजिष्ट्रेट, खूबचंदजी, धन्नालालजी, मिट्ठनलालजी, जुगराजसाहजी; छिन्दवाड़ासे सिंहई खेमचंद आनरेरी मजिष्ट्रेट आदि; जबलपुरसे सिंहई गरीबदासजी, भोलानाथजी आदि बहुतसे भाइयोंको लेकर आए थे। कुल संख्या २००० की होगी। मेलेके प्रबन्धक **सेठ बिन्द्रावनजी** दमोह थे। सेठ माणिकचंदजी साहबकी चेष्टा और प्रेरणासे ता० १९, २०, २१ को दिनमें तीर्थकी सभाएं और रात्रिको उपदेशक सभाएं हुईं। दिनकी सभाओंमें क्रमसे सेठ माणिकचंदजी, सेठ बिंद्रावनजी और सवाई सिंहई खेमचन्दजी सभापति हुए। इनमें ८ प्रस्ताव पास हुए। सेठजी सच्चे तीर्थभक्त व सुधारक थे। आपकी पूर्ण प्रेरणासे इस क्षेत्रके प्रबन्धार्थ एक कमिटी ७ सभासदोंकी बनी जिसके सभापति व कोषाध्यक्ष सेठ बिन्द्रावन व मंत्री बाबू चन्नेलालजी हुए। पहला प्रस्ताव यही स्वीकार कराया गया। यहां १९ दिन मेला रहा करता था जिससे लोग आते जाते रहते थे—जमते न थे, इससे दूसरा प्रस्ताव

सेठ माणिकचंदजीने स्वयं किया कि सिर्फ ४ दिन मेला रहे; तीन दिन धर्म, जाति और तीर्थ सुधारके लिये सभाएं हों और चौथे दिन यात्रा निकले। इसका समर्थन स्वयं सेठ बिन्द्रावनजीने किया। इस क्षेत्रपर लोग विना सलाहके नए मंदिर बनवा दिया करते थे जिनके प्रबन्धकी फिक्र प्रबन्धकर्तापर आ जाती थी। इससे यह प्रस्ताव हुआ कि नया मंदिर प्रबन्धकारिणी सभाकी विना आज्ञा न बने। और भी जो कोई काम इस क्षेत्रपर द्रव्य खर्च कर करना हो तो प्र० सभाकी राय ले लेवै। प्रस्ताव नं० ४ **कन्याविक्रयके विरुद्ध** पास हुआ। इसके समर्थनमें स्वयं सेठजीने व्याख्यान दिया तथा कहा कि यदि किसी गरीब लड़की वालेके पास रुपया न हो तो बिरादरी प्रबन्ध कर दे, वह लड़केवालेसे न लेवै। इस प्रस्तावको शीतलप्रसादजीने उपस्थित किया था व नाथुरामजीने भी समर्थन किया था। ५ वां प्रस्ताव था कि वृद्ध व निर्बल गाय बैल पशुओंको कसाईके हाथ न बेचकर **पिंजरापोल** द्वारा रक्षित रक्खा जाय। इसको शीतलप्रसादने पेश किया और सेठ माणिकचन्दजी, जुगराजशाह आदिने जोरके साथ पुष्ट किया। छठा प्र० सभाओंके स्थापित करने, ७वां विदेशी अशुद्ध चीनी (सक्कर) न वर्तने, ८वां जैन पद्धतिसे विवाह करानेपर था। इस समय सेठ **माणिकचंदजीने** प्रगट किया कि विवाह पद्धतिकी पुस्तक छपी हुई हमारे पाससे मंगाली जावै। मेलेमें आए हुए कटनी, जबलपुर आदि पाठशालाके ६९ बालक और १७ बालिकाओंकी परीक्षा **बाबा दौलतराम** और ब्रह्मचारी बालकरामके सामने ली गई। ७५) का इनाम बांटा गया। चैत्र वदी १३ के तीसरे

पहर पालकीपर श्रीजी विराजमान हुए। फूलमालकी बोली १०२५) में सिंहई डालचंद दमोहने ली। सेठजीको संस्कृत विद्याकी उन्नतिके लिये स्याद्वाद पाठशाला काशीका बहुत बड़ा ध्यान था। इसके लिये ३२५) की सहायता स्वीकृत हुई। सेठ साहबसे सर्व ही छोटे बड़े उनके ठहरनेके स्थानपर मिलने आते थे। सेठजी उनको विद्या पढ़ने और कुरीति मेटनेका उपदेश देते थे व बोर्डिंगकी जरूरत है कि नहीं ऐसी सम्मति लेते थे। जबलपुर वालोंकी सम्मति देखकर कि यदि बोर्डिंग होवें तो सर्वसे श्रेष्ठ बात है, आप ता० २३ की दोपहरको चलकर ता० २४ मार्चको **जबलपुर** आए।

जबलपुरमें बोर्डिंगकी खटपट ।

स्टेशन पर भाइयोंकी बहुत भीड़ थी। सिंहई डालचंद नारायणदासजी यहां उदार बुद्धि धर्मात्मा थे। उन्होंने सेठजीको अपनी धर्मशाला लार्डगंजमें ठहराया और बहुत ही प्रेम प्रदर्शित किया। सेठजीने २, ३ दिन शहरके मुख्य २ भाइयोंसे मिलने व उनको बोर्डिंगके लिये तय्यार होनेके लिये भारी चेष्टा की। सेठजीको आलस्य बिलकुल न था। शीतलप्रसादके साथ हरएक प्रतिष्ठित भाईके यहां जा जाकर उसे इस कामके लिये मज़बूत किया। आप शहरके प्रतिष्ठित अजैनोंसे भी मिले जिससे जैनियोंको जिन्हे कभी बोर्डिंग ऐसे काम करनेका ढंग नहीं मालूम है मदद मिले। यहां पर **रायसाहब मुन्नालालजी** पेन्शन याफ्ता बहुत प्रतिष्ठित व परोपकारी पुरुष थे उन्होंने सेठजीके विचारकी पूर्ण सराहना की और हर तरह मदद देनेको

तय्यार हुए। सिंहई गरीबदास जो जबलपुर जैन बिरादरीके मुखिया हैं व अन्य कई साहबोंने कहा कि यहां पर पाठशालाएं कई दफे हो होकर टूट गई हैं किसीको शौक नहीं हैं, तब बोर्डिंग कैसे चलेगा ? सेठजीको अनुभव था। आपने कहा कि आप लोग १ वर्ष तक बोर्डिंगको चलाकर देखें, मुझे तो विश्वास है अवश्य चलेगा और आप लोग सब तरहसे समर्थ हैं।

जबलपुर बोर्डिंगके लिये २४००) का दान।

आपके यहां लाला भोलानाथने अपने परलोक गत पुत्र कस्तुरचंदके स्मरणार्थ २००००) सर्कारको स्कूलके मकानके लिये दे डाले हैं इसी तरह मैं एक वर्षके लिये २००) मासिक अर्थात २४००) बोर्डिंगके लिये देता हूं, आप भी कुछ प्रबन्ध करो। तब सिंहई गरीबदासजीने अपनी पंचायत जोड़ी और वादानुवादके बाद ठहराव किया कि जबतक बोर्डिंग रहे यह पंचायत ९१) मासिक बराबर देती रहे। इसीका मासिक चंदा लिख लिया गया। तब ता० २७ मार्चकी रात्रिको जैनियोंकी आमसभा हुई। सभापति परोपकारी अजैन रायसाहब मुन्नालालजी हुए। एकमत होकर बोर्डिंग, स्थापनका प्रस्ताव पास किया गया। २१ मेम्बरोंकी प्रबन्धकारिणी कमिटी बनी। सभापति उक्त रायसाहब, कोषाध्यक्ष सिंहई डालचंद नारायणदास और मंत्री बाबू दयालचंद अकौन्टेन्ट डिवीजनल-जज नियत हुए। बोर्डिंग खोलनेका महूर्त **बैशाख सुदी ३ सं० १९६३ ता. २६ अपैल १९०६** नियत हुआ।

कुंडलपुरमें सिवनीवालोंका बहुत अग्रह था कि जबलपुर होकर आप यहां अवश्य पधारें। सेठजी ता० २८ मार्चकी रात्रिको सिवनी पहुंचे। स्टेशनपर श्रीमन्त सेठ **पूरणाशाह** आनरेरी मजिस्ट्रेट बहुतसे जैनी व अनेक अजैन प्रतिष्ठित भाइयोंके साथ जे० पी० महाशयके स्वागतार्थ स्टेशनपर आए। गाजेबाजेके साथ अपनी कोठीपर लाकर ठहराया। यहाँ विरादरीमें ३ वर्षसे ऐसी फूट पड़ी हुई थी जिससे सारी विरादरीको महान कष्ट था व धर्मके सर्व कार्य बन्द थे। सेठजीने निश्चय किया कि इसको अवश्य मिटाना चाहिये। ता० २९ के दिन और सारी रात इसीका प्रयत्न किया गया। सेठजीने जजकी तरह हरएक बयान शीतलप्रसादजीसे कलम बंद कराए व गवाहियां लीं–जांच की। जो जिसने कहा उसको अच्छी तरह सुना और ता० ३० को सबेरे अपना फैसलानामा सुना दिया। सर्व बिरादरीने पहले ही फैसला मंजूर करनेकी स्वीकारता दे दी थी। इस फैसलेको सुनकर सर्व विरादरीको हर्ष हुआ, सब गद् गद् वदन हो गए। यहाँ तीन पक्ष थे सो एक हो गए, तब उसी दिन यहांके भाइयोंने सानन्द रथोत्सव किया। श्रीजीके रथको सर्व भाई स्वयं खींचते थे। बाजारमें गाते बजाते बागमें पहुंचे। वहां २ घंटे अभिषेक व पूजा करके लौटकर पंचायती मंदिरजीमें आए। फूलमालकी बोली श्रीमन्त सेठ पूरणशाहने रु. ७५१) में ली थी। रात्रिको धर्मशालामें पुनः सभा हुई, २९०से अधिक मनुष्य जमा थे। सेठजीको **सभापति** किया गया। सर्व बिरादरीने सेठजीको जे० पी० पद

सिवनीमें स्वागत और फूटको मिटाना।

मिलनेके कारण व फूट मेटनेमें भारी परिश्रम करनेके कारण एक निम्न लिखित अभिनन्दनपत्र दिया और बहुतर धन्यवाद प्रगट किया—

नकल मानपत्र (सिवनी)।

सवैया तेईसा ।

पुन्य प्रताप बढ़ो जगमें यश छाप रहो महि मंडल भारी ।
खोल दिये चट शाल अनेक रचे धर्मालय हेतु दुखारी ॥
तीर्थनके उद्धारके कारण जैनसमाज भई आभारी ।
धर्मप्रचारक दानी वीर समान न अन्य भयो अवतारी ॥ १ ॥
सिवनी मध जैनसमाज विषे चिरकाल ते द्रोह बड़ो अतिभारी ।
उपदेशक औ डिपुटेशनके श्रमते न हटी यह फूट हत्यारी ॥
यह अवसर मुंबई सेठ प्रभाव ते मेल भयो क्षण एक मझारी ।
माणिकचन्द प्रदानिक जसटिस आफ दि पीस महा पदधारी ॥ २ ॥
ज्ञान विधान महा गुण खान प्रसिद्ध विशुद्ध चरित्र प्रसारी ।
कीरत बेल बढ़ी जगमें लहके बहु मानन पत्र पुकारी ॥
जैनसमाज एकत्रित सिवनी देत हैं मानहि पत्र पुकारी ।
मानकचन्द प्रदानिक 'जसटिस आफ दी पीस' महा पदधारी ॥ ३ ॥
तीरथ राजके काज रखी तुम लाज कियो पुरुषारथ भाई ।
अकलुज अरु शोलापुर जबलपुर मुम्बपुरी विद्योन्नति जारी ॥
छात्रनकी सुपरिक्षय लये दिये परितोषक तोषक कारी ।
प्रेम कियो हम पै इत आय जयो जग में तुम सेठ उदारी ॥ ४ ॥

ता० ३० मार्च सन् १९०६

द० **जुगराजसाह**—मन्त्री,
प्रबन्धकारिणी सभा, जैन पंचायत, सिवनी ।

फिर मंदिरजीके सुप्रबन्धार्थ एक प्रबन्धकारिणी सभा और दूसरी जात्युन्नतिके लिये--जातिके झगड़े तय करनेके लिये सभा स्थापित हुई। सवाई सि० खेमचंद छिंदवाड़ाके पेश करने और सिंहई जुगराजसाहके समर्थनसे पाठशाला खोलनेका निश्चय किया गया। लोगोंमें बहुत उत्साह था। सभा रात्रिको २ बजे समाप्त हुई। यहांसे सेठजी सीधे बम्बई पधारे।

सेठजीका बम्बई सभा द्वारा हर्ष प्रकाश।

चैत्र सुदी १४ सं० ६३की रात्रिको बम्बई स्थानीय सभाका एक अधिवेशन मि० लल्लूभाई प्रेमानन्द एल. सी. ई. की अध्यक्षतामें हुआ। बम्बईके सभी मुख्य भाई उपस्थित थे। तब शीतलप्रसादजीने सर्कारकी ओरसे जे० पी० का पद मिलनेके उपलक्ष्यमें सभाकी ओरसे सेठजीको अपना पूर्ण हर्ष प्रगट किया तथा यह कहा कि "जिस दिन आपको यह पदवी मिली उस ही दिन आप कुंडलपुरकी यात्रा पधारे। यात्रामें रात्रि दिन जाति व धर्मकी सेवा करनेवाला एक धनवान सेठजीके समान दूसरा देखनेमें नहीं आया। आपने जबलपुर ऐसे कठिन स्थानमें बोर्डिंग स्थापनका निश्चय कराया व सिवनीकी फूट मेटी, ये दोनों बड़े ही भारी काम किये हैं। आपको सर्कारने जो यह पद दिया है आप उसके सर्वथा योग्य हैं। काशी स्याद्वाद पाठशालाके छात्रोंने संस्कृतमें एक अभिनन्दनपत्र पत्रमें भेजा था सो वैद्य कन्हैयालालजीने बांचकर सुनाया, फिर सभापतिने सेठजीके कर-कमलोंमें अर्पित किया।

मगनबाईजीके उद्योगका फल।

स्त्रीशिक्षाके प्रचारार्थ जो श्रीमती मगनबाईजी पत्रव्यवहार कर रहीं थी उसके फलसे शोलापुरके सेठ हीराचन्द नेमचन्द आनरेरी मजिष्ट्रेटकी सुपुत्री श्रीमती कंकुबाई भी स्त्रीसमाजकी सेवामें दत्तचित्त हुई और सप्त तत्त्वपर एक लेख भेजा जो जैनगज़ट अंक १७ ता० १ मई १९०६ में मुद्रित है।

जबलपुरमें बोर्डिंगका महूर्त।

जब सेठजी जबलपुर बोर्डिंगकी बात पक्की करने आए थे उस समय बोर्डिंगके लिये बहुतसे मकानोंको तलास किया। जैन बिरादरीमें **सिंहई सद्दूलालजी** धर्मात्मा व प्रेमी भाई थे। आपने सेठजीको अपना नया बनवाया हुआ मकान दिखलाया। इसमें अभी प्रवेश भी नहीं हुआ था। सेठजीको २५ बालकोंके रहने योग्य साफ सुथरा देखकर पसन्द आ गया। तब सिंहईजीने कहा कि एक वर्षके लिये विना किराए लिये बोर्डिंग-के लिये मैं यह मकान देता हूं, उसीमें महूर्त्त करना निश्चित हो गया था। नरसिंहपुरमें पन्नालाल मास्टर एक धर्मबुद्धि भाई था इसका हाल मुन्नालाल राजकुमार द्वारा मालूम हुआ था सो इसको सेठजीने बुलाकर सुपरिन्टेन्डेन्ट नियत कर दिया तथा मेज, कुर्सी वर्तन आदि सामान मंगानेकी सर्व सूची कर दी थी तथा शीतल-प्रसादजी द्वारा एक नियमावली भी बनाकर दे दी थी। ता: ११ अप्रैलकी सभामें यह नियमावली पास कराली गई थी और महूर्त्तके लिये सर्व प्रबन्ध हो रहा था। कुछ बालक भी बुलाये गए थे।

इतनेमें महूर्तका दिन निकट आनेसे **सेठ माणिकचंदजी** शीतलप्रसादजी और श्रीमती मगनबाईजीके साथ ता: २४ अप्रैलको जबलपुर पधारे और जल्सेका बहुत उत्तम प्रबन्ध कराया। नगरके प्रतिष्ठित भाइयोंको निमंत्रण भेजा व कई जगह आप भी बुलाने गए। **राजा गोकुलदासजी रईस**के हाथसे बोर्डिंग खुले ऐसा निश्चय किया।

मिती बैशाख सुदी ३ अर्थात् अक्षयतृतीयाके दिन ता. २६ अप्रैल० ६ को सबेरे ही श्रीसरस्वती पूजन करके ८ बजे मंगल कलशको लिये हुए सर्व मंडली गाजे बाजेके साथ लार्डगंजकी धर्मशालासे बोर्डिंगके मकानमें पधारी और वहां मंगल कलश पधराया। फिर लार्डगंजकी पाठशालाके मकानमें आए। वहां सर्व जैन अजैन १००० मनुष्य एकत्र हुए। नगरके बड़े२ सभी प्रतिष्ठित पुरुष आए थे। राजा गोकुलदासजीने सभापतिका आसन ग्रहण किया। सभापतिने बोर्डिंगकी आवश्यक्ता बताते हुए सेठ माणिकचंदजीकी उत्तेजना और कष्टकी सराहना की। फिर बाबू दयालचंद मंत्रीने नियमावली, कमेटीके मेम्बर व प्रवेशार्थ आए हुए छात्रोंके ग्रामादि बताए। फिर शीतलप्रसादजीने बोर्डिंगके लाभपर एक मनोहर व्याख्यान दिया। इसका समर्थन व्यवहारी रघुवीरप्रसादजी, पं० काशीप्रसाद चौधरी, पंडित गिरधारीलाल पेन्शनर तथा **रायबहादुर बिहारीलाल खजांची** भार्गव बेंकरने किया। आपने कहा कि भार्गवोंमें ६ बोर्डिंग हैं और सबसे पहले आगरामें खुला था। रायसाहब मुन्नालाल अकौन्टेन्टने सर्वको धन्यवाद दिया। फिर सर्व मंडली बोर्डिंगके मकानको पधारी। राजा साहबने मकानका ताला खोला

तथा मकानकी सुन्दरता व सुपरिन्टेन्डेन्टके ऑफिसको देखकर प्रसन्नता प्रगट की। इस दिन नरसिंहपुर, कंदेली, पिपरिया, मौरसिरके ९ छात्र भरती हुए थे, परन्तु थोड़े ही दिनोंमें २३ छात्र हो गए। २ वर्षांतमें १७ रहे, इनमें ४ संस्कृत, २ हाई स्कूल शेष ११ मिडिल स्कूलकी कक्षाओंमें रहे। धार्मिकशिक्षा सुप० द्वारा नित्य दी जाने लगी और वार्षिक परीक्षा भी होने लगी। यद्यपि सेठजीने केवल २४००) की ही मदद दी थी, पर धर्मके प्रभावसे १ वर्षमें १३९१॥=) १ खर्च होकर रोकड़ १११२।)९ रही। इस तरह यह बोर्डिंग कई वर्ष तक चलता रहा। सेठजी सिंहई नारायणदासको जो कई लाखके धनी थे पर पुत्र नहीं था, बारबार जब वे मिलते थे यही उपदेश करते थे कि आप इस बोर्डिंगको चिरस्थाई कर देवें, द्रव्य इसीमें लगाना सफल है। इस उपदेशके बार२ असरसे सिंहई नारायणदास और उनकी धर्मपत्नीने एक कोठी १५०) मासिककी आमदनीकी दे दी तथा मरते समय २००००) बोर्डिंगका मकान बनानेके लिये बाबू कंछेदीलाल वकील बी. ए. एल एल. बी. आदि ट्रष्टियोंके सुपुर्द कर गए। सिंहईजीके दो स्त्रियें थीं। दोनों विद्या प्रेमणी थी। बाबू कंछेदीलालने बहुत ही इज्जतदार स्थानमें जमीन लेकर बोर्डिंग बनवाया। इसके बनवानेमें ४००००)लगे सो सब सिंहई-जीके स्टेटसे लगे। यह बोर्डिंग एक दर्शनीय मकान बनगया है। ४० से अधिक छात्र रह सक्ते हैं। वर्तमानमें सेक्रेटरी बाबू कंछेदीलालजी ही हैं।

जबलपुरकी स्त्री समाजमें जागृति ।

श्रीमती **मगनबाईजीके** व्याख्यान सुननेके लिये यहांके स्त्री व पुरुष बहुत उत्सुक थे सो ता० २७ अप्रैलके सबेरे पाठशालामें स्त्री व पुरुषकी सम्मिलित सभा हुई थी। हाजरी ५०० थी। फीमेल ट्रेनिंग कालेजकी लेडी सुप्रिन्टेन्डन्ट मिस **रास** भी कालेजमें पढ़नेवाली ३ जैन स्त्रियोंको लेकर ठीक ७ बजे पधारी और सभापतिके आसनको सुशोभित किया। श्रीमती बाईजीने विद्याकी आवश्यक्ता पर १॥ घंटा बहुत ही असरकारक व्याख्यान दिया। फिर भगवंतीबाई, जमनाबाई, गौरीबाई तथा मुन्नीबाईने भी अपने २ व्याख्यान पढ़े। मिस साहबाने मगनबाईजीके कथनको सहराते हुए कन्याशाला होनेपर बहुत ज़ोर दिया। उसी समय स्त्रियां दान करने लगीं। ५) मिस साहबाने भी देने कहे तथा दूसरे दिन एक प्रशंसाजनक पत्रके साथ ५) अपने और १) अन्य छात्रका ऐसे ६) भेज दिये। रात्रि तक मासिक व नकद सब मिलकर १५००) रु० का चंदा हो गया। यह रुपया जबलपुर बोर्डिंग हाउसकी कमेटीके आधीन सेठजीने किया, वह कन्याशाला खुलवावे। रात्रिको भी मगनबाईजीका उपदेश स्त्रियोंमें विनय व शीलव्रतपर हुआ।

छिन्दवाड़ामें सेठजीका भ्रमण।

वैशाख सुदी ६ ता० २९ अप्रैलको श्रीजीकी सवारी बड़े समारोहसे निकली। सिवनीसे सेठ पूरणशाह भी आये थे। रात्रिको सभामें पाठशालाके लिये कहा गया तब निश्चय हुआ कि चिरस्थाई फंडकी जो पट्टी हुई है उसको

जमा खर्च करके पक्का किया जायगा और अध्यापक मिलनेपर काम जारी होगा । सेठ माणिकचंदजीने जबलपुर बोर्डिंगका हाल कहकर सहायताके लिये प्रार्थना की तो उसी समय सेठ पूरणशाहने २५०) प्रदान किये तब औरोंने भी लिखाया ।

दूसरे दिन ता० ३० की शामको मगनबाईजीने स्त्रियोंके कर्तव्यपर व्याख्यान देकर गाली गवानेका त्याग कराया । रात्रिको यहां एक आम सभा **राय मथुराप्रसाद** वकीलके सभापतित्वमें हुई । डिस्ट्रिक्ट जज आदि नगरके प्रतिष्ठित पुरुष आए थे । शीतलप्रसादजीने धर्मविद्याकी आवश्यक्तापर १॥ घंटा व्याख्यान दिया । सभापति साहबने इसकी पुष्टताकी व सेठ माणिकचंदजीने सभापतिको धन्यवाद दिया । दूसरे दिन यहांसे सेठजी सिवनी पधारे । रात्रिको शीतलप्रसादजीने तत्त्वज्ञानके ऊपर व्याख्यान दिया और बोर्डिंगके लिये मददको कहा तो बहुतसे भाइयोंने सहायता दी । कुल चंदा सिवनीका ७८३) और छिन्दवाड़ेका ९३१) हो गया । सेठजी शीतलप्रसादजीके साथ यहांसे गीरीडी (शिखरजी) गए और मगनबाईजी बम्बई आए ।

श्री शिखरजी बीसपंथी उपरैली कोठीका चार्ज ।

सेठजीका ध्यान चारों तरफ था । गीरीडी जानेकी जरूरत यह थी कि शिखरजीकी उपरैली बीसपंथी कोठीका कुल चार्ज रिसीवरके हाथमें—ट्रष्ट कमेटीके हाथमें लिया जावे । शिखरजी बीसपंथी कोठीका प्रबन्ध हरलालजीके मरनेके बाद बहुत खराब था । प्रबन्ध आरावालोंके हाथ था । बम्बई सभाने बारबार चाहा कि आरावाले एक कमेटी

करके प्रबन्ध करें पर कुछ नहीं हुआ । उधर मेनेजर राघवजी और आरावालोंमें तकरार हो गई तब आरावालोंने अपना कब्जा किया, पर ४००००) पुर्लियाके कोर्टमें था उसको लेनेके लिये आरावाले और राघवजीके मुकद्दमा चला जिसमें १९ या २० हजार खर्चे पड़े । अंतमें राघवजीको हुक्म मिला कि आरावालोंके ऊपर असल दावा करो, परंतु द्रव्य न होनेसे राघवजीने ग्वालियरके भट्टारकको मुकद्दमा लड़नेके लिये खड़ा किया । उसने पुरलिया कोर्टमें दरखास्त दी कि रुपै हमें मिलना चाहिये । यह गड़बड़ देखकर सभाकी ओरसे सेठ चुन्नीलाल झवेरचंद व रामचंद नाथा आकलूज आदि मधुवन गए तो मालूम किया कि आरावालोंने भट्टारकजीको २००००) देनेका लालच देकर अपने कब्जेमें कर लिया है तब बम्बईवाले मधुवन गए । कोठीके हिसाबकी बहियां आदि मगीं सो मिली नहीं । कहा गया कि आरा गई हैं । ३ मनके ३२९ चांदीके उपकरण भी आरा गए हैं, उस समय देखा गया तो मंदिरोंमें घीके स्थानमें तेलके दीपक जलते थे । गरीब भिक्षुकोंके नामका पैसा कोठीके नौकर खा जाते थे । ऐसी दुर्व्यवस्था देख वे तुर्त ग्वालियरके भट्टारक और आरेवालोंसे मिले । ११ मनुष्योंकी कमेटी बनाई । नियमावली भी बनी तथा उसकी रजिष्ट्री करानेका निश्चय किया गया, परंतु आरावालोंने बहाने कर दिये । इतनेमें सुना कि भट्टारकजी व आरेवाले छपरेमें कुछ सलाह कर रहे हैं । इस गड़बड़ीसे विश्वास उठ जानेपर बम्बईवालोंने पुर्लिया कोर्टमें ४००००)के रक्षणार्थ अर्जी दे दी कि यह दिगम्बर जैन सम्प्रदायद्वारा नियमित कमेटीको मिलना चाहिये, इतनेमें आरावालोंने भट्टारकजीसे मिलकर

एक इकरारनामा रजिष्टरी कराया जिसमें भट्टारकजीको १२०००) नकद और ६००) वार्षिक कोठीसे देना निश्चय किया तथा उसमें यह भी लिखा था कि भट्टारकजी, उनके चेले व अन्य किसी दि० जैनीको हमसे पूछनेका अधिकार नहीं है तथा उसी समय ३१००) नकद कोठीके भंडारसे दे भी दिये तथा पुरलिया कोर्टमें दरखास्त दे दी कि ९०००)भट्टारकजीको, शेष आरावाले प्रबन्धकर्ता शिखरचंदको मिलना चाहिये। ऐसी २ कार्रवाइयोंसे तीर्थक्षेत्र कमेटीको निश्चय हो गया कि विना कोर्ट द्वारा हस्तक्षेप किये कोठीका प्रबन्ध सुधर नहीं सक्ता और न भंडार ही रक्षित रह सक्ता है। तब सेठ माणिकचंदजीने मुकदमा नं० १ सन् १९०३ दायर कर दिया। उस पर कोर्टने तुर्त एक रिसीवर **साकरचंद देवचंद** जैनी बोरसदनिवासीको नियत करके प्रबन्ध उसके हाथसे कराया। इसपर आरावाले घबड़ाए और नागपुरमें आकर सेठ गुलाबशाहजी-के द्वारा बम्बईवालोंसे सुलहकर ली, तब केवल छपरावाले बाबू गुलाबचंदजी तथा ग्वालियरके भट्टारक ही मुद्दालय रहे। बम्बई वालोंने स्वयं छपरा जाकर समझानेका प्रयत्न किया, पर कुछ सफलता नहीं हुई। अंतमें रांचीके जुडिशल कमिशन मि० डबल्. एच. विन्सेन्टने ता० २९ जून १९०५ को फैसला दिया कि पुराने सब प्रबन्धकर्ता हटा कर नए नियत हों। ता: २२ दिसम्बरको कुछ नियम नियत करके ७ ट्रुष्टी तय कर दिये, जिसकी अंग्रेजी नकलका उल्था नीचे प्रकार है—

उपरैली कोठीके प्रबन्धके नियम।

१—मंदिरकी कुल जायदाद नीचे लिखे सात ट्रुष्टियोंकी कमेटीके

आधीन रहेगी और मंदिर तथा तत्सम्बन्धी सर्व मकानादिकी कार्रवाई यह कमेटी करेगी ।

१—बाबू देवकुमार, आरा.

२—सेठ शिवनारायण, हजारीबाग.

३—सेठ माणिकचंद हीराचंद, बम्बई.

४—सेठ हीराचंद नेमचंद, सोलापुर

५—बाबू नन्दकिशोरलाल, आरा.

६—सेठ चुन्नीलाल प्रेमानंद, बोरसद.

७—सेठ नेमीसाह, नागपुर.

२—ट्रष्टियोंका यह कर्तव्य होगा कि वह इस बातको देखें कि मंदिरका लहना यथोचित रीति और विचारपूर्वक वसूल होता है, सर्व खर्च सावधानी (होशियारी) से किया जाता है, तथा जो कुछ खर्च किया जाता है वह धार्मिक कार्य्य तथा सर्वसाधारणके परोपकारके अर्थ ही है ।

३—इस कमेटीको अधिकार रहेगा कि वह ट्रष्टके उचित प्रबन्धके लिये बहुत ही सन्तोषप्रद और आवश्यक रीतियां काम करनेके लिये परस्पर तय करले और ऐसे नियम अपने सभाके जल्सेके स्थान, समय और कार्य्य प्रणालीके बनावे कि जो आवश्यक मालूम हों—जब सब मेम्बरोंकी किसी प्रस्ताव पर राय न मिले तो वह प्रस्ताव बहु—सम्मतिसे स्वीकृत हो जायगा, परन्तु उसके विरोधकोंको अधिकार रहेगा कि वह इस कोर्टमें कोई भी प्रार्थना उस प्रस्तावके विरुद्धमें कर सक्ते हैं ।

४—जमा खर्चका हिसाब प्रतिवर्ष किसी सुयोग्य परीक्षक (auditor) द्वारा जांचा जायगा और इस कोर्टमें भेजा जायगा और आवश्यकतानुसार ऐसी रीतिसे छपाकर प्रसिद्ध किया जायगा

जैसा कि यह कोर्ट कहेगी और कमेटीकी इच्छा होगी। यह कमेटीकी इच्छापर छोड़ा जाता है कि वह अपना हिसाब तीर्थक्षेत्र कमेटी तथा अन्य किसी योग्य व्यक्तिसे जंचवाए—इस विषयमें कमिटीके ऊपर भार देनेकी आवश्यकता नहीं है।

५—यदि कमेटीका कोई मेम्बर कालग्रस्त होवे व साथमें काम चलानेके अयोग्य हो तो शेष ट्रष्टियोंका यह कर्तव्य है कि इस बातकी रिपोर्ट कोर्टको करैं उस समय कोर्ट जैसी आज्ञा उचित समझेगी देगी अथवा यदि आवश्यक होगी तो नया ट्रष्टी नियत कर देगी।

कमेटीको इतना अधिकार दिया जाता है कि किसी ट्रष्टीका स्थान खाली होनेपर वह नया ट्रष्टीका नाम पेश करैं कोर्टको अधिकार है कि वह इस नामको स्वीकार करे व नाहीं कर दे।

६—इस कोर्टको यह अधिकार रहेगा कि वह किसी ट्रष्टीको विशेष कारणोंके आजाने पर उसको उचित सूचना देने तथा उसकी अच्छी तरह जांच किये जानेके पश्चात् उस ट्रष्टीको अधिक काम करनेको अयोग्य समझकर कमेटीसे जुदा करदे--कोर्टको यह भी अधिकार है कि वह अपनी आज्ञा तथा कार्यप्रणालीके किसी अंशको न्युनाधिक (कमती बढ़ती) करे और बदल देवे तथा यह भी अधिकार है कि नं. ३ पैरा (वाक्य) के अनुसार प्रार्थना पाने पर कमेटीद्वारा स्वीकृत विषयोंको बदल सके व काट देवे।

यही विश्वास रखना चाहिये और यह आशा रहनी चाहिये कि कोर्ट कोई ऐसे ही खास मामलोंके सिवाय कार्य्यके बीचमें दखल नहीं देवेगी।

इस प्रबन्धक नियमावलीका उद्देश्य यही है कि मंदिरका प्रबन्ध एक योग्य और विश्वास योग्य कमेटीद्वारा होवै और कोर्टको जितना कम मौका दखल देनेका दिया जावै उतना ही अच्छा है।

कोर्टने बीचमें दखल देनेकी अपनी शक्ति इसीलिये रक्खी है कि अनावश्यक गड़बड़ न होने पावें। और किसी ट्रष्टीकी ओरसे (कारण वशात् कोई आवश्यक्ता होने पर) कोई अयोग्य बर्ताव न हो।

७—कमिटी जब चाहे इस कोर्टसे किसी मामलेमें सलाह तथा शिक्षा ले सक्ती है।

ता० २२ दिसम्बर १९०५.

डबल्यू० एच० विन्सेन्ट—ऑफिशियल जुडिशल कमिशनर।

इस आज्ञाके अनुसार तीर्थक्षेत्र कमेटीके महामंत्री सेठजी सिवनीसे सीधे गीरीड़ी आए, और और ट्रष्टियोंको भी बुलाया था सो हज़ारीबागसे सेठ शिवनारायण, आरासे बाबू देवकुमारजी और नंदकिशोरलाल तथा बोरसदसे चुन्नीलाल प्रेमानंद आए। सेठजीने शीतलप्रसादजीके द्वारा एक नियमावलीका मसौदा तय्यार कर रक्खा था। गीरीड़ीकी बीसपंथी धर्मशालामें मिती ज्येष्ठ वदी १ सं० १९६३ ता० ९ मई १९०६ को २॥ बजे दिनके ५ ट्रष्टियोंकी कमेटी हुई। सेठ शिवनारायणजी सभापति हुए। नियमावली पास की गई तथा मंत्री परीख चुन्नीलाल प्रेमानंद नियत हुए। इनहीको कोठीका चार्ज देना तय हुआ। सभापति बाबू देवकुमारजी, कोषाध्यक्ष सेठ माणिकचंदजी और निरीक्षक बाबू नंदकिशोरलाल आरा नियत हुए। यह भी नियम हुआ कि किसीको नया मंदिर व धर्मशाला बनवानी हो व नई प्रतिमा विराजमान करनी हो तो कमेटीसे आज्ञा लेवें। खर्चका वार्षिक-बजट ९०००) का पास हुआ।

इस प्रस्तावके अनुसार सेठ चुन्नीलालने रिसीवरसे सर्व सामानका

चार्ज ता० १० मईको लिया और **डाह्याभाई शिव-लालको** कोठीका मैनेजर नियत किया। ज्येष्ठ वदी १ तक सरवाया १०४५६६८।)॥ का था। इस समय ११८९३-) आसामियोंसे, २५९७३।-) यात्रियोंसे, ४९१९३॥।=) छोटा नागपुर बैंकमें, ३१००) भट्टारक सत्येन्द्रभूषणके पास व ३८३३॥=) की रोकड़ थी। तथा २ सामान पाया इसका हाल रिपोर्ट नं० १ छपी १९०७ में, जो उपरैली कोठीसे प्राप्त होगी, दिया हुआ है।

ऊपरके कथनसे मालूम करेंगे कि बीसपंथी कोठीके उद्धारमें सेठ माणिकचंदजीको कितना परिश्रम करना पड़ा है, तथा वृथाके ममत्वसे कितना धर्मका द्रव्य बर्बाद होता है। इस कोठीके उद्धारके मुकद्दमेमें १००००)के अनुमान खर्च हुआ जो शिखरजीके भंडारको ही सहना पड़ा। ऊपरके फैसलेकी हाईकोर्टमें अपील की गई थी जिससे ४ ट्रस्टी और बढ़ाए गए थे। सेठ माणिकचंदजीने चार्ज आते ही उद्योग करके पुराने मध्यके मंदिरजीका जीर्णोद्धार कराया जिसमें २००००) भंडारका खर्च किया तथा धर्मशाला आदि सब ठीक कराई। अब बीसपंथी कोठीका प्रबन्ध पहलेसे बहुत अच्छा हो गया है, यात्रियोंको हर तरहका आराम है।

किसी भी मंदिर या तीर्थके भंडारमें बहुत द्रव्य एकत्र न रखके उसको उपयोगी कामोंमें लगाते रहना चाहिये। स्थान दुरुस्तीके सिवाय शास्त्रभंडार बढ़ाने, शास्त्र लिखना कर बांटने, जिस तीर्थ या मंदिरके निर्वाह या जीर्णोद्धारके लिये द्रव्यकी जरूरत हो वहां मदद करने, तीर्थपर संस्कृत धार्मिक विद्याका अभ्यास करानेमें द्रव्यको लगाते रहना चाहिये। जो भंडारसे खर्च होता रहता है तो प्रबन्ध भी

अच्छा होता रहता है, केवल जमा ही करते जाना यह नीति अच्छी नहीं है। पाठकोंको यहांपर यह भी विचारना है कि सेठजी ५९ वर्षके करीब थे। एक पैर जमीनपर जमता न था, लकड़ीके सहारे चलते थे तौभी आलस्य बिलकुल न था। तीव्र गर्मीके दिनोंमें भी आप धर्मकार्यके प्रबन्धके लिये बम्बईसे इतनी दूर आए थे।

सूरतमें मानपत्र और ५०००)का दान।

बम्बई लौटकर चौपाटीके दीवानखानेमें एक रोज़ सेठजी, श्रीमती मगनबाई और शीतलप्रसादजी बैठे हुए थे। स्त्रीशिक्षाकी वात चली तब यह प्रश्न उठा कि सूरत नगरमें कोई जैन कन्याओंके लिये पढ़नेका साधन रूप कन्याशाला नहीं है सो यह बड़े अचंभेकी बात है। तब सेठजीने कहा कि वहांकी मंडलीका शिक्षाकी तरफ बहुत कम ध्यान है, तौभी मैं प्रयत्न करूंगा कि वहां कन्याशाला होवे और यह मैं अपनी स्वर्ग प्राप्त पुत्री **फुलकुंवर**के नामसे खुलवाऊंगा। कई दिन पीछे ही आप शीतलप्रसादजीको लेकर सूरत पधारे। जे. पी. का पद मिलनेके पीछे आप पहेल पहल ही सूरत पधारे थे इसलिये यहांके दिगम्बरियोंने परस्पर सम्मति करके निश्चय किया कि अपने नगरके वतनीको जो प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है उसका हमें मान करके एक मानपत्र अर्पण करना चाहिये।

ता० २९ मई १९०६ की रात्रिको नवापुराकी फूलवाड़ीमें सभा भरी। उस समय सेठ मूलचंद किसनदासजी कापड़िया आदि कई वक्ताओंके व्याख्यान हुए। शीतलप्रसादजीने बालक व बालि-

कार्योंकी शिक्षापर अत्यन्त जोर दिया व सेठजी धर्मकार्योंमें कितने निरालसी व अपने आरामको बलि देनेवाले व रात्रिके ६ घंटे सिवाय सदा जागृत रह काम करनेवाले हैं ऐसा वर्णन किया। सेठ कालीदास बखतचंदने सूरतकी सर्व दिगम्बर जैन समाजकी तरफसे निम्नलिखित मानपत्र चंदनके कास्केटमें अर्पित किया:—

नकल मानपत्र (सूरत)

श्रीमान दानवीर शेठ माणिकचंद हीराचंद झवेरी जे० पी० मुंबाई.

महेरबान साहेब,

आपनां व्यवहारिक तथा धार्मिक कामोनी योग्य कदर बुझीने नामदार कृपाळु ब्रीटीश सरकार तरफथी आपने 'जस्टीस ऑफ धी पीस' (सुलेहना अमलदार) नी मानवंती पदवी आपवामां आवेली छे के जे पदवी हमारा धारवा प्रमाणे आखा हिंदुस्ताननां दिगंबरी जैनोमां कोईने नथी ते माटे अत्रेनी आपणी जैन दिगंबरी पांचे गोठ तरफथी अमारा खरा अंतःकरणथी आ मानपत्र आपवानी रजा लइए छीए.

आपे अत्रेना आपणा दांडीआ गच्छना देरासरनो जीर्णोद्धार कराव्यो छे तथा सार्वजनिकने माटे चंदावाडी नामनी मोटी अने सुंदर धर्मशाळा बनावी छे तथा जैन पाठशाळा आपना तरफथी चाले छे.

मुंबई, कोल्हापुर, अमदावाद वीगेरे ठेकाणे आपे बोर्डिंग हाउसो खोलीने ए बतावी आप्युं छे के हालना समयमां जैन श्रीमंतोए

पोताना पैसानो बहु भाग विद्योन्नतिना काममांज वापरवो योग्य छे.

मुंबईमां खास करीने दिगंबरी यात्रालुओने उतरवानुं महान कष्ट दूर करवाने अने समस्त हिंदुओना आश्रयने माटे आपे स्वर्गपुरी समान हीराबाग नामनी धर्मशाळा सवा लाख रुपीआ खरचीने बनावी छे.

आपनी योग्यता जोईने आप मुंबई प्रांतिक सभा, दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभा अने स्याद्वाद पाठशाळानी प्रबंधकारिणी सभाना प्रमुख तथा भारतवर्षीय दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमिटिना महामंत्री निमायला छो.

आप धर्मोपदेशनी वृद्धि करवा माटे आपना तन मन अने धनथी हमेशां निमग्न रहो छो तेमज जैनीओना दरेक मेळामां आप आगेवान भाग लईने सरवे ठेकाणे एक संप करीने विद्यानो फेलावो करो छो.

आपनी आवी उदारता जोईने भारतवर्षीय दिगंबर जैन महा सभाए आपने गया डिसेंबर मासना सहारनपुरना अधिवेशनमां प्रमुख नीमीने उचित पात्रनो उचित सत्कार कर्यो हतो.

आपे आ सिवाय बीजां अनेक धर्म वृद्धिना कार्यो करेलां छे जेनी प्रशंसा करवाने हमो शक्तिवान नथी तोपण उपरना वाक्योमां हमारां खरा हर्षने प्रकट करीए छीए.

हमो नामदार कृपाळु ब्रिटिश सरकारनो हमारा खरा अंतःकरणथी आपने आ पदवी आपेली छे ते माटे उपकार मानीए छीए के सरकारे आपना सारा गुणोनी योग्य कदर बुझी छे.

छेवटे हमो हमारा अंतःकरणथी एवुं इच्छीए छीए के आप आ पदवी लांबो वखत भोगवी एथी वधारे सारी पदवीओ मेळववाने तथा भारतवर्षनी सर्वे जैन जातिनो तथा बीजा भाईओनो उपकार करवाने भाग्यशाळी थाओ.

सूरत ता. २९ मे सने १९०६

ली०

कालीदास वखतचंद

सुरतना जैन दिगंबरी पांच गोठना शेठ

उस समय सेठजीने अपनी तुच्छता प्रगट करते हुए कहा कि नवापुरामें मेरी पुत्री फुलकुंवरके नामसे कन्याशाला खुले उसके लिये मैं ५०००) रु० अलग करता हूं। उस समय सभाने आपको बहुत २ धन्यवाद दिया।

बम्बई बोर्डिंगमें सभा व सेठजीको मानपत्र।

ता० १९ जुलाई १९०५ को हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगके छात्रोंने कार्ड बंटवाकर एक भव्य मिलावड़ा सेठ माणिकचंदजीके सम्मानार्थ महेश्री लखमशी हीरजी बी० ए० एलएल० बी० के सभापतित्वमें किया और कई व्याख्यानोंमें छात्रोंने व सभापतिने वे अपूर्व लाभ वर्णन किये जो सेठजी द्वारा स्थापित बोर्डिंगसे दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानकवासी सर्व ही जैन छात्रोंको मिलते हैं और एक बहुत सुन्दर छपा हुआ मानपत्र चांदीके कास्केटमें अर्पण किया गया जिसकी नकल पृष्ठ ४४२ पर दी गई है।

हीराबागमें सभा और स्याद्वाद पाठशाला काशीके लिये १५०००)का संकला।

अजमेरके प्रसिद्ध सेठ नेमीचंदजी साहब बम्बई पधारे। आपकी बम्बईमें बहुत ऊंची और प्रतिष्ठित दुकान 'जवारमल मूलचंद' के नामसे है। आपको शास्त्रोंका ज्ञान है तथा धार्मिक नित्य नियमोंके पालनेमें इतने सावधान हैं कि यदि शरीर अस्वस्थ न हो तो आप प्रतिदिन श्री जिनेन्द्रकी अष्ट द्रव्यसे पूजा करके व स्वाध्याय करके भोजन करते हैं। यदि परदेशमें भी जावें और ९, १० भी बज जावें तौ भी वहां मंदिरजीमें पूजन स्वाध्याय करके भोजन करते हैं तथा आप हर एकको जो मिले उससे स्वाध्याय करनेके लिये पूछते हैं। व्याख्यान देनेका भी आपको अभ्यास है। हीराबाग धर्मशालाके लेक्चर हॉलमें ता० १९ जुलाईकी रात्रिको नोटिस बांटकर परोपकारी मि० ए० बी. लट्ठे एम० ए० के सभापतित्वमें सभा की गई, उसमें सेठ नेमीचंदजी सोनीने 'विद्योन्नति'पर एक अति प्रभावशाली व्याख्यान दिया तथा संस्कृत विद्याकी जैनियोंमें आवश्यक्ता बताई और जो स्याद्वाद पाठशाला ता० ११ जून १९०५ को काशीमें स्थापित हुई थी उसकी अति प्रशंसा की व काशी ही पंडितोंके पैदा करनेका स्थान है ऐसा कहा और सेठ माणिकचंदजीको इसके स्थापनके लिये धन्यवाद दिया तथा कहा कि उसको चिरस्थाई कर देना चाहिये जिसमें वह सदाको चलती रहे। आपके व्याख्यानके कुछ वाक्य उपयोगी जानकर नीचे दिये जाते हैं—

"यहां तक हम बे खबर हैं कि हम लोग अपने बालकोंको धर्मविद्या तकका ज्ञान नहींकराते हैं इसी कारण देखनेमें आता है कि लोग न माव

सहित जिनेन्द्रका दर्शन पूजन करते हैं न शास्त्रस्वाध्यायमें मन लगाते हैं। लौकिक विद्याकी भी प्राप्ति नहीं करते, जिसमें कोई यंत्र आदि निर्मापण कर व व्यापारको विदेशोंमें बढ़ाकर लक्षोंका धन एकत्र करें व सर्कारी बड़े २ ओहदे प्राप्त करें जिसमें १०००) व ८००) मासिककी प्राप्ति हो। दान भी हम लोग यथोचित नहीं करते। मेले, प्रतिष्ठाओंमें व अपने पुत्रपुत्रियोंके विवाहोंमें लाखों हज़ारों खर्च करना ठीक समझते हैं किन्तु आवश्यकीय आहार व विद्यादानमें नहीं। हमारी जैन जातिमें पुराने विद्वान धीरे २ अस्त होते जाते हैं, परंतु हम नए विद्वानोंके उत्पन्न करनेका दिल लगाकर कुछ प्रयत्न नहीं करते। काशीमें यद्यपि स्याद्वाद पाठशाला नियत हो गई है तथापि विना ध्रौव्य फंडके बालूकी भीतिके। समान है यदि एक मेला करनेकी भांति कोई भाई इस पाठशालाको चिरस्थाई कर दे तो कितनी धर्मकी उन्नति हो। लोग पुनर्विवाह करनेके पक्षको पकड़नेको दौड़ते हैं, पर यह पक्ष नहीं करते कि हम अपनी कन्याओंका विवाह १२ वर्षसे कम उम्रमें न करेंगे, न हम लोग अपनी कन्याओंको पढ़ाते हैं! अफसोसकी बात है, क्या हम लोग श्री आदिनाथ भगवानसे भी बढ़ गए? क्या उनको मालूम नहीं कि श्री आदिनाथजीने अपनी पुत्री ब्राह्मी और सुन्दरीको अपने आप पढ़ाया था। सद्विद्या पढ़नेसे कदापि हानि नहीं हो सक्ती।"

सेठ माणिकचंदजीने सेठ साहबके व्याख्यानकी बहुत प्रशंसा की तथा निवेदन किया कि यदि हमारे सेठजी चाहें तो आज यह चिरस्थाई हो जावे। सभा सानन्द समाप्त हुई। रात्रिको ही सेठजीने

शीतलप्रसादजीके साथ सम्मति की कि यदि एक २ हजार रुपया लोग देवें तो यह पाठशाला सहजमें चिरस्थाई हो जावे । राय ठहरी कि कल सेठजीके पास चलना चाहिये और कहना चाहिये कि एक हजार आप देवें तथा १०००) मैं लिखनेको तय्यार हूं। दूसरे दिन दोपहरको शीतलप्रसादजीके साथ सेठ माणिकचंदजी सेठजीकी दूकानपर गए और कहा कि मैं एक हजार देता हूं आप भी एक हजार देवें। तब सेठ नेमीचंदजीने कहा कि जबतक आप १५ नाम हजार २ वाले न लिखवा लेंगे तबतक मैं रुपया न दूंगा। सेठजीने स्वीकार किया तथा तय हुआ कि पाठशालामें इस सम्बन्धी एक पाटिया टांगा जावे जिसमें ऐसे दातारोंके नाम सुनहरी अक्षरोंमें लिखे जावें। उसी समय एक कागजपर मसौदा लिखा गया तथा शर्त १५०००) की डाली गई कि यदि ये न भरें तो यह चंदा रद्द होगा । प्रथम ही सेठ नेमीचंदने **जवारमल मूलचंद** (अपनी दूकान)के नामसे १०००) लिखे, फिर दूसरा नाम अपने पूज्य पिता का सेठजीने लिखा, उसी दिनसे सेठजीको फिकर हुई कि शीघ्र १५०००) पूरे करने चाहिये।

बम्बईके प्रसिद्ध कोठीवालोंके पास कई वार जाकर व काशी, कलकत्ते, भातकुलीमें घूमकर सेठजीने ता. ३१ दिसम्बर १९०६के लगभग १५ नाम पूरे करलिये। वह नामावली इस भांति है:—

१—सेठ जवारमल मूलचंद, बम्बई	१०००)
२—सेठ हीराचंद गुमानजी ,,	१०००)
३—सेठ तिलोकचंद हुकमचंद ,,	१०००)

४—सेठ गांधी बालचंद उगरचंद ,, १०००)

५—सेठ हरमुखराय अमोलकचंद ,, १०००)

६—गांधी रावजी साकलचंद ,, १०००)

७--सवाई सिंहई रिखभसाह गुलाबसाह, नागपुर १०००)

८—बाबू देवकुमारजी, आरा १०००)

९—लाला रूपचंद रईस, सहारनपुर १०००)

१०—लाला कुंजीलाल बनारसीदास, बनारस १०००)

११—लाला छेदीलालजी ,, १०००)

१२—लाला हनूमानदास बाबूनंदनजी ,, १०००)

१३—लाला खड़गसैन उदयराज ,, १०००)

१४—बाबू धन्नूलाल एटर्नी, कलकत्ता १०००)

१५--जौंहरी माणिकचंद हीराचंद जे. पी० बम्बई १०००)

१५०००)

यह फंड बढ़ता रहा यहां तक कि ता. ३१ जुलाई १९१५ तककी रिपोर्टमें रु. २३५००) का हो गया था।

सेठजीका स्वर्गवास हो गया नहीं तो वे इसे ॥) सैकड़ेके ब्याजसे ६००) मासिक खर्चके योग्य १। लाखका फंड कर देते, परंतु उनके जीवनचरित्रको पढ़कर उदारचित्त धनाढ्योंका कर्तव्य है कि इसके फंडको शीघ्र पूरा करा देवें ताकि यह संस्था अमर रहकर सेठ माणिकचंदजीकी स्मृतिको कायम रखनेके सिवाय सेठ नेमीचंदजीकी इच्छानुसार संस्कृत विद्वानोंको उत्पन्न करती रहे।

सेठ माणिकचंदजीने एक दिन शीतलप्रसादजीसे कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटीका मैं महामंत्री हूं तथा वह कमेटी स्वतंत्रतासे काम करनेको महासभा द्वारा स्थापित हुई है पर उसका कोई दफ्तर कायदेसे नहीं है। उसका काम शिथिलताके साथ बम्बई प्रान्तिक सभाके द्वारा ही

हीराबागमें तीर्थक्षेत्र कमेटीका दफ्तर होना।

चलता है। उसीके द्वारा बीसपंथी कोठी शिखरजीका मुकद्दमा किया गया जिसमें करीब ८०००) का कर्जा बम्बई प्रान्तिक सभाका है। पं० गोपालदास बरैया महामंत्री प्रान्तिक सभाके हिसाबको इसी कारण न पास करते हैं न प्रसिद्ध करते हैं। वे कहते हैं कि इस रुपयेको चुकाना चाहिये; सो यदि तुम थोड़ा परिश्रम लो और दफ्तरकी सार सम्हाल रक्खो तो दफ्तर हीराबागमें खोला जाय और मैनेजर नियत करके कायदेके साथ सब काम तीर्थोंके उद्धारका कराया जाय तथा इस रकमका भी जमा खर्च होकर बम्बई प्रान्तिक सभाका हिसाब पास हो तथा हमारी दूकान पर जो तीर्थोंके लेनदेनके बहुतसे खाते हैं वे भी सब यहीं बदल दिये जावें। शीतलप्रसादने सेठजीकी सम्मतिको बहुत ही पसंद की और यथासंभव मदद देनेके लिये कहा, तब सेठ माणिकचंदजीने हीरा-बागके दफ्तरवाले हॉलमें कायदेके साथ ता: **१ अगस्त १९०६** को दफ्तर खोलनेका महूर्त्त किया तथा बाबू बुधमल पाटनी जो संस्कृत और इंग्रेजीके जानकार धर्मात्मा भाई थे मैनेजर नियत किया तथा सर्व सभासदों, तीर्थक्षेत्रके प्रबन्धकर्ताओं व अन्य महाशयोंको

जैनगजट, जैनमित्र तथा जिनविजयमें सूचना प्रगट कर दी कि दफ्तर खुला है इस लिये तीर्थक्षेत्र सम्बन्धी सर्व पत्र व्यवहार व रुपया आदि नीचे लिखे पते पर भजना चाहिये—माणिकचंद हीरा- जे. पी., महामंत्री, भा० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग धर्मशाला, गिरगांव—बम्बई ।

बागड़ प्रान्तका दौरा व सेठजीके वचनकी सत्यता ।

उज्जैनकी बिम्बप्रतिष्ठामें सेठ माणिकचंदजीसे बागड प्रान्तके बहुतसे जैनी भाई मिले थे और निवेदन किया था कि हमारे प्रान्तमें उपदेश करावें, घोर अंधकार है । तबसे सेठजीको ध्यान था कि किसीको भिजवाया जाय । इन दिनोंमें महा सभामें कोई योग्य उपदेशक न था तब मालवा प्रान्तिक सभाके उपदेशक विभागके मंत्री लाला हज़ारीलाल नीमचसे सेठजीका पत्र व्यवहार चल रहाथा कि आप अपने यहांके उपदेशकको अवश्य भेजें । मंत्री महाशयने स्वीकार करके मिती आसौज सुदी ११ सं. १९६३से पं० कस्तूर- चंदजी उपदेशकको दाहोद, लेमडी, जालह, रामपुरसे उदयपुर स्टे- शन तक ९० ग्रामोंमें घूमनेका प्रोग्राम देकर भेज दिया जिसकी सूचना जैन गज़ट अंक ५१ ता० १ नवम्बर ०६में मुद्रित करा दीं । वास्तवमें जो बड़े पुरुष होते हैं उनको अपने वचनोंका बड़ा भारी ध्यान रहता है । उपदेशकजी दौरे पर रवाना होगए हैं ऐसा जानकर तुर्त सेठजीने १००) उपदेशक भंडारकी सहायतार्थ नीमच भेज दिये ।

अमदाबाद बोर्डिंगमें सभा।

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्कूलका वार्षिक अधिवेशन ता० ३० सितम्बर १९०६ को बड़े समारोहके साथ हुआ। इसमें सेठ माणिकचंदजी शीतलप्रसादजीके साथ गए। ५०० गृहस्थ बाहरसे आए थे। सभापतिका आसन मि० चिनूभाई माधवलालने ग्रहण किया। आपने शिक्षा सम्बन्धी मनोहर भाषण दिया था। मियागांवके भगवानदास हरजीवनदासने १०००) व धनजीशाह मोतीचंद करमसदने १५१) मदद दी। आमोदवाले सेठ हरजीवन रायचंद भी आए थे। सेठजीको गुजरातके भाइयोंकी स्थिति देखकर बहुत दया आती थी और इसके सुधारनेके लिये इनकी समझमें एक **गुजराती मासिकपत्र** निकालनेकी खास आवश्यकता दीखती थी, जिसके लिये सम्पादकी करने योग्य आपने सेठ हरजीवन रायचन्दको तजबीज किया था। हरएक वार्षिक सभामें सेठजी इनको प्रेरणा करते थे। इस वर्ष विशेष ज़ोर देकर कहा। साथमें यह भी कह दिया कि आप एक योग्य सवैतनिक कारकूनको रखकर उससे काम लेवें जिसका वतन मैं अपनी तरफसे देनेको तय्यार हूं। इस बातको सुनकर हरजीवन रायचंदने सेठजीके आश्चर्यकारक जाति प्रेमकी अति प्रशंसा की और यह कहा कि मैं यथाशक्ति इस कामके करनेका यत्न करूंगा। पत्रका नाम **दिगम्बर जैन** रखना तजबीज हुआ। यद्यपि सेठ हरजीवन रायचंद इस कामके योग्य थे पर ग्राममें रहने और बहुधन्धी होनेके कारण समय न निकाल सके और वह दिगम्बर जैन एक वर्ष तक फिर भी न निकला!

सेठ हरजीवन रायचंद लिखते हैं कि सेठजीको अपने धनवान-पनेका जरा भी मान न था। भोजन और शयन भी गुजरातके आनेवाले सर्व भाइयोंके साथ एक पंक्तिमें ही करते थे, किसी भी तरहका अपमान भाव अथवा मोटापन या जुदाईकी ज़रा भी भावना किसीके मनमें नहीं आने देते थे। बोर्डिंगके कायदा कानूनकी चर्चा बहुत ही शांतिपूर्वक तथा न्यायसे करते थे। हरएक ग्रामके मुख्य गृहस्थीकी मुलाकात लेकर वहांकी वस्ती, शिक्षा, मंदिरकी स्थिति आदि संबंधी बहुतसा हाल मालूम कर उनको योग्य सम्मति व मदद देते थे। शीतलप्रसादजीने इस वर्ष सेठजीमें यह बात प्रत्यक्ष देखी और इनके सादे मिज़ाज़, सादे खानपान, रहनसहनको व सबके साथ मिलनसारी देखकर बड़ा ही हर्ष माना।

सेठजीका सरल स्वभाव।

तीर्थक्षेत्र कमेटीके दफ्तरके खुलते ही व मुकद्दमेंकी रकमका जमाखर्च होते ही बम्बई प्रान्तिक सभाका हिसाब व रिपोर्ट तय्यार हो गई तब परोपकारी सभासदोंने श्री गजपंथाजी पर अधिवेशन करना निश्चय किया। इसके प्रबन्धार्थ हीराबागमें एक सभा हुई जिसके सभापति **सेठ माणिकचंदजी** हुए। अधिवेशनके खर्चके लिये ११००) का बजट हुआ व २५ महाशयोंकी स्वागत कमिटी बनी। सभापति सेठ चुन्नीलाल झवेरचंद, मंत्री दोशी पानाचंद रामचंद, सहायक मंत्री लल्लुभाई प्रेमानंददास तथा पंडित लालाराम, और कोषाध्यक्ष सेठ सुखानंदजी हुए।

श्री गजपंथाजी पर बम्बई प्रान्तिक सभा

वर्षातके मौसममें सेठजी बम्बई ही में ठहरे और तीर्थक्षेत्र कमेटीके दफ्तरमें अपने दिनका बहुतसा समय देने लगे। भादो मासमें आपने शीतलप्रसादजीके द्वारा गुजराती दि० जैन मंदिरमें सबेरे दशाध्याय सूत्रजीके अर्थ बँचवाये तथा रात्रिको शास्त्रीद्वारा अनेक प्रकारका उपदेश कराया।

बम्बईमें सेठजीका सम्मान सर्व ही करते थे। श्वेताम्बरी विद्वद् मंडली भी बड़े आदरसे देखती थी।

मांगरोल जैन सभामें सेठजी सभापति।

यहां श्वेताम्बर जैनियोंकी एक मांगरोल जैन सभा है उसका एक अधिवेशन ता. १० सितम्बर०६के रोज हुआ और सेठ माणिकचंद हीराचंद जे. पी. को सभापतिका आसन दिया। इस सभामें अहमदाबाद निवासी मि० नगीनदास पुरूषोत्तमदास संघवीने 'आहार-शुद्धि' पर एक मनोहर व्याख्यान दिया था।

सेठ माणिकचंदजीकी दूसरी सुसराल फल्टनमें थी इसलिये फल्टन जानेका बहुत अवसर पड़ता था।

फल्टन सरकारसे मित्रता व कन्याविक्रय निषेध।

वहांके राजासे भी आपकी मित्रता ही सी थी। सेठजी मकान बनानेके काममें ऐसे अनुभवी थे कि अच्छे इंजीनियर जिस बातको नहीं सोच सक्ते वह इनके ध्यानमें आती थी। सेठजीने बोर्डिंग व हीराबाग धर्मशालाके सिवाय बम्बईमें कई बड़े २ आलीशान मकान अपनी बुद्धिसे बनवाए थे जो आज तक मौजूद हैं। चौपाटीका रत्नाकर पेलेस समुद्रकी सुन्दर पवन लेनेके लिये बम्बईमें एक अनुपम महल है। महाराज फल्टन एक दफे

इसी बंगलेमें ठहरे थे। आपको बहुत ही आराम मिला तब हीसे मित्रता हो गई थी। मकान बनवानेके काममें सर्कार फलटन आपसे सम्मति लेती थी व आपके द्वारा बम्बईसे सामान भी मंगवाती थी। इसी वर्षके भादो मासमें सेठजीका गमन फलटन हुआ तब वहां एक जैनियोंकी सभामें आपने कन्याविक्रय बंद करनेका ठहराव पास कराया। इसको अमलमें लानेके लिये फलटनके दो तीन मुखियोंने वचन दिया। इसकी खटपट करनेके लिये सेठजीने रु० २५) सभाको भेट भी किये।

सेठजी बरार प्रा० सभाके भ्रमण।

बरार और मध्य प्रदेश दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा भी कई वर्षसे धीरे २ कुछ २ सुधार बरारकी ओर कर रही थी जिसके मुख्य कार्यकर्ता रा. रा. सभापति और जयकुमार देवीदास चौरे बी. ए. बी. एल. वकील अकोला थे। इसका चौथा वार्षिकोत्सव मिती कार्तिक वदी ५-६ ता० ६ व ७ नवम्बर १९०६ को **भातकुली** अतिशय क्षेत्रमें होनेवाला था। यह क्षेत्र अमरावती नगरके पश्चिम १० मीलके अनुमान है। रास्ता बहुत टूटा फूटा खराब है। बैल गाड़ी ३ घंटेमें जाती है। यहां चतुर्थ कालकी अति मनोज्ञ **श्री आदिनाथ स्वामी**की पद्मासन दिगंबर जैन मूर्ति है। आसपास इसकी बहुत महिमा है। इसके लिये सेठ माणिकचंदजीकी सभापति होनेकी स्वीकारता ले ली गई थी। बम्बईसे सेठ माणिकचंदजी अपनी सुपुत्री मगनबाईजीके साथ तथा शोलापूरके सेठ हीराचद नेमचन्दके पुत्र बालचंद तथा बाबू शीतलप्रसादके साथ अमरावती गए। वहांके भाइयोंने

स्टेशनपर बहुत ही सत्कारके साथ स्वागत किया। वहांसे भातकुली गए। अमरावतीसे देशभक्त **गणेश कृष्ण खापर्डे** बी० ए० एल० एल० बी० व डाक्टर मुंजे व रा० रा० दुरानी वकील भी सभाद्वारा निमंत्रित हो भातकुली पधारे और सेठजीके निकट ही ठहरे। खापर्डे महाशय बड़े ही निरभिमानी व परोपकारी हैं। जैनियोंको उपदेश करनेके लिये आपने इतनी दूर आनेका महान कष्ट उठाया था। अधिवेशनमें शरीक होनेके लिये नागपुरसे गुलाबसाहजी, एलिचपुरसे सेठ नत्थूसाह, अंजनगांवसे सिंहई एसुसिंहई सोनासिंहई, पारोलासे सेठ पीताम्बरदास आदि ५००० स्त्री पुरुष एकत्र हुए थे।

कार्तिक वदी ५ वीर सं० २४३३ ता० ६ नवम्बर १९०६ को सभाका प्रथम अधिवेशन हुआ। माननीय खापर्डे आदि सर्व उपस्थित हुए। सभा खचाखच मनुष्योंसे भरी हुई थी। सेठजीने सभापतिका आसन एक भारी आनन्द ध्वनिके मध्य ग्रहण करके अपना छपा हुआ भाषण स्वयं खड़े हो बड़ी ही गंभीरता और शांतिसे पढ़ा। इसमेंकी कुछ उपयोगी बातें यहां दी जाती हैं—"जैन जाति घोर निद्रामें सोई पड़ी है उसके उठानेका प्रयत्न सभा ही है। बम्बई प्रान्तिक सभाने इसीके द्वारा बहुत कुछ उन्नतिमें कदम बढ़ाया है तथा इस बरार सभाके मुख्य संस्थापक सेठ गुलाबसिंहजीने ५००००) अलग निकालकर एक कमिटीके आधीन कर दिया है जिसके व्याजसे ६२॥ टका तीर्थोंके सुधार व ३७॥ टका विद्योत्तेजनमें खर्च हो ऐसा नियम किया है। नागपुरमें जैन पाठशाला है तथा बोर्डिंग भी खुला है। सभाको शिक्षाकी ओर विशेष ध्यान देना चाहिये। जैसे विना जड़के वृक्ष नहीं ठहर सक्ते ऐसे विना शिक्षा-

के समाजकी उन्नति नहीं हो सक्ती है। इसमें सर्वसे पूर्व बालकों-को धर्म ही की शिक्षा देनी चाहिये जिससे उनको यह विदित हो जाय कि उनको बाल्यावस्थामें **ब्रह्मचर्य** पाल विद्याभ्यास करना योग्य है। उच्च शिल्प और व्यापारकी योग्यता प्राप्त करानेके लिये हमको बड़े २ नगरोंमें जैन बोर्डिंग खोलने योग्य है। जब छात्र उच्च शिल्पादि जान लें तब उनसे कारखाने खुलवावें व व्यापारमें सहायता देवें। जबतक हमारे नित्य कामकी वस्तुएं जैसे कपड़ा, दियासिलाई, छाता आदिक यहां न बनेंगे तबतक हमारे धनकी उन्नति नहीं हो सक्ती। स्त्री शिक्षाकी आवश्यक्ता बताते हुए कहा कि बालकका मन एक प्रकारकी पृथ्वी है जिसमें माता ही उत्तम बीज डालकर कृषकका कार्य कर सकती है। स्त्रीशिक्षाके उत्तेजनार्थ हमको अपने शास्त्रोंमेंसे प्राचीन पढ़ी हुई गृहस्थ स्त्रियोंके जीवनचरित्र जमाकर पुस्तकाकार प्रगट करना चाहिये। व्यर्थव्यय व कुरीतिको दूर करनेकी प्रेरणा करके तीर्थक्षेत्रोंके विषयमें कहा कि नये मंदिर बनानेकी अपेक्षा प्राचीनका जीर्णोद्धार करना चाहिये तथा प्रबन्धकर्ताओंको उचित है कि वार्षिक हिसाब प्रगट किया करें। प्राचीन जैन ग्रंथोंके उद्धार, अनाथोंकी रक्षा पर कहके अहिं-साके प्रचारपर विशेष जोर दिया। मांसाहार निषेधक पुस्तकें बांटना चाहिये। आपने कहा कि इंग्रेजीमें good news for the afflicted नामकी पुस्तक है जिसमें मांसाहार विरुद्ध प्रमाण और दृष्टान्त है उसका उर्दूमें उल्था करानेके लिये अलीगढ़ कालिजके मुसल्मान छात्रोंको इनाम नियत किया था। ११ ने तर्जुमा लिखा जिसमें सर्वोत्तम २ को ७५) का इनाम दिया गया था। सर्वोत्तम उल्था एक बी० ए० का था जिससे प्रगट होता था कि उसने

मांस खाना त्यागा होगा। उसके उर्दू तर्जुमेको इसलामिया हाईस्कूल बम्बईके सेक्रेटरीको दिखाया। उनके अनुरोधसे १००० उर्दू नकलें छपवाई। उस सेक्रेटरीने उस उर्दू तर्जुमेको पढ़कर मुझसे कहा कि मेरी तबियत मांस खानेसे हट गई है और मैं धीरे २ छोड़ता जाता हूं। फिर सेठजीने कहा कि एकताके लिये सभाएं स्थापित करना चाहिये। खापर्डे और डा० मुंजेके स्वदेशी वस्तुओंके प्रचारपर बहुत ही असरकारक व्याख्यान हुए। ता० ७ नवम्बरको महिला परिषद् हुई, २५०० स्त्रियां होगी। सौ० गुंजाबाई प्रमुख हुईं। श्रीमती मगनबाईने स्त्रियोंके कर्तव्यपर बहुत ही असरकारक भाषण दिया। सौ० सीताबाई आदिने भी कहा। मगनबाईजीने पढ़ी हुई स्त्रियोंको जैन पुस्तकें बांटी। बहुतसे प्रस्ताव पास हुए उनमें धर्मादेका सदुपयोगके प्रस्तावपर सेठ माणिकचंदजीने बहुत ज़ोर दिया। कारंजा, अमरावती, अंजनगांव आदिकी पाठशालाओंके छात्रोंकी परीक्षा बाबू शीतलप्रसाद आदिने ली।

सेठ माणिकचंदजीके पास मिलने प्रायः हरएक गांवके मुखिया लोग आते थे। उनको सेठजी शिक्षा प्रचार, कुरीति निवारणके उपदेश देनेमें अपना समय लगाते थे। आपने यहां भी स्याद्वाद पाठशालाके चिरस्थायी करनेके खयालको नहीं भुला था। सेठ गुला-बसाऊजीको समझाकर एक नाम भराया।

मातकुलीसे अमरावती होकर आप अपनी मंडली सहित श्री मुक्तागिरजीकी यात्राको पधारे। उस वक्त ४० मीलका बैलगाड़ीका रास्ता था। एलिचपुर होते हुए तीर्थपर पहुंचे। यह तीर्थ सिद्धक्षेत्र है। यहांसे ३॥ करोड़ मुनि मोक्ष

श्री मुक्तागिरजीकी यात्रा।

। पहाड़पर ४८ दि० जिनमंदिरजी हैं जिनमें प्रतिबिम्ब व
.दुकाएं हैं। इनमें कई बहुत प्राचीन हैं। यह पर्वत बड़ा
ीक है। यहां पहाड़से पानीका झरना बड़ी दूरसे सदा गिरता
६ जिससे अपूर्व शोभा रहती है। तलहटीमें १ मंदिर व धर्मशाला
है। मुनीम बापूजी लक्ष्मण आगरकर मिले। इन्होंने बहुत अच्छी
तरह ठहराया। इस तीर्थकी यात्रासे सबको परमानन्द हुआ। बेतूलके
एक्स्ट्रा अ० कमिश्नर रायबहादुर बाबू हीरालाल बी०ए०के पास
इस तीर्थ सम्बन्धी एक ताम्रपट है उससे राजा श्रेणिक (बिम्बसार)
व उसके पिता उपश्रेणिकका इस पर्वतसे सम्बन्ध मालूम पड़ता है।
यह श्रेणिक २॥ हजार वर्ष हुए श्रीमहावीर स्वामीके उपदेशका
मुख्य श्रोता था। यहां पर निकट ही जो एलिचपुर नगर है वह
एल नामके जैनी राजाके नामसे प्रसिद्ध हुआ है जो संवत् १११५ में
हुआ था (देखो इम्पीरियल गैज़ेटियर आफ इंडिया वाल्यूम १२) इस
पर्वतपर केशरकी वृष्टि कभी २ होती है यह बात सर्व प्रसिद्ध है।
यूरुपियन लोग इस तीर्थके दर्शनको आते हैं। उनका यह श्रद्धान
है कि जो एकवार भी इस पर्वतका दर्शन कर जाता है उसकी तरक्की
होती है और धन भी प्राप्त होता है। ता० २४ नवम्बर १९०९ को
यहां डिप्टी कमिश्नर दोबारा आए थे तब आपने रिमार्क लिखा है—

" I was much struck with the cleanliness of the plain and arrangement made for visitors "
अर्थात् मैं इस क्षेत्रकी निर्मलतासे और यात्रियोंके लिये योग्य प्रबन्धसे बहुत प्रसन्न हुआ।

यहां पर ता० २७—१२—१९०९ को एच० कैम्पल, मिस

केरनेन्डर लूसी बरनट ऐसी इंग्रेजोंकी एक पार्टी आई थी अच्छा रिमार्क किया है—

This charming place due to the chı and munificence of the Jain Community, so n of beauty and interest perched in such commanding surroundings wrought upon us all sorts of spell. One would well believe that the green moss-grown water fall was fashioned, as we were told by our guide, by the fairies. The images of the Gods, their expressive countenances mysterious and brooding, with foreheads that seem to hide within themselves great thoughts withdrawn and unspeakable, the courtyards, the temples and all their beauty, brought great enjoyment to our party.

(Sd). H. CAMPBELL
MISS KIRNANDER
LUCY BURNETT

भावार्थ—हम लोग इस महा रमणीक स्थानको देखकर बहुत ही प्रसन्न हुए। इस स्थानकी इतनी सुन्दरता, जैन समाजकी उदारता और दान परायणताके निमित्तसे ही हुई है। जैन देवोंकी मूर्तियां उनके प्रसन्न मुख तथा मस्तक जो कि मानो अकथनीय गंभीर विचारोंको अपने आपमें धारे मग्न किये हैं। यहांका मैदान, मंदिर और इनकी मनोहरताने हम लोगोंको बहुत ही आनन्द प्रदान किया। इस तीर्थके व्यवस्थापक तानासा राजाजी जितूकर एलिचपुर हैं। सेठजीने वहांकी त्रुटियें मालूम कीं कि कुएकी जरूरत है व

२ मील सड़क बहुत ही खराब है सो एलिचपुर आकर लालासा मोतीसाके वहां ठहरे और इन दो कामोंके लिये कहा तथा हिसाबादि तीर्थक्षेत्र कमेटीके दफ्तरमें बराबर भेजे जानेकी प्रेरणा की।

यहांसे अमरावती आकर नागपुर आए। सेठ गुलाबसाहजीके वहां १ दिन ठहरे। उनको ५००००) का ट्रष्ट रजिष्टरी करनेके लिये मसौदा लिखाया। वहांसे रामटेक यात्रा करने गए।

रामटेककी यात्रा।

नागपुरसे २४ मील रामटेक है। एक छोटी लाइन गई है। यहां श्री शांतिनाथ स्वामीकी दिगम्बर जैन खड्गासन मूर्ति १९ फुट ऊंची अतिशय मनोज्ञ है। चौथे कालकी मालूम होती है। यहांकी यात्रा करके सर्व लोग बम्बई आए।

सेठ माणिकचंदजी की धर्मप्रचारकी चिंता।

जैन जातिमें कितना अज्ञान, व्यर्थ व्यय व कुरीतिका प्रचार है इस बातको अपनी इधर उधरकी यात्रासे व चौपाटीपर दर्शन करने आनेवाले भिन्न २ देशोंके यात्रियोंसे मालूम करके तथा यह भी शिकायत मालूम करके कि कोई उपदेशक आता जाता नहीं है तथा उपदेशकोंका दि० जैन समाजमें अभाव देखकर इसकी पूर्ति कैसे हो इसका उपाय सोचते रहते व शीतलप्रसादजीसे पूछते रहते थे। शीतलप्रसादजीने एक दिन यह सलाह दी कि उपदेशकीय परीक्षा कायम की जावे। उसका पठनक्रम नियत किया जावे तथा इनाम दिया जाय। सेठजीने इस बातको स्वीकार किया, तब शीतलप्रसादजीने एक पठनक्रम व नियमावली बना दी जिसे सेठजीने बाबू सूरजभान वकीलको

कार्रवाईके लिये भेज दी। बाबूजी उस समय भा० दि० जैन महासभाकी ओरसे उपदेशक फंडके मंत्री थे। आपने उसे जैन-गजट वर्ष ११ अंक ४४—४८ में प्रसिद्ध की। इसके तीन विभाग रक्खे-उत्तम, मध्यम, प्रथम।

जो दि० जैन परीक्षालयकी पंडित परीक्षा पास हो वे उत्तम, जो संस्कृत सहित एन्ट्रेन्स तक योग्यता रखते

उपदेशकीय परीक्षा। हों वे मध्यम और जो हिन्दी अच्छी जाने के प्रथम देवें। प्रत्येक परीक्षामें उत्तीर्ण दो

उत्कृष्टको इनाम इस भांति नियत किया—

	नं० १ को	नं० २ को
उत्तमा परीक्षा	१२५)	१००)
मध्यमा ,,	७५)	६०)
प्रथमा ,,	५०)	४०)
		४५०

प्रत्येक परीक्षामें ४ विषय नियत किये—

उत्तमामें—आप्त परीक्षा, आप्त मीमांसा सार्थ पाठ्य पुस्तककी तरह; स्वाध्याय—समयसार आत्मख्याति और मोक्षमार्गप्रकाश। लेख लिखना ८ फुलस्केप सफोंपर और २ घंटे तक व्याख्यान देना।

मध्यमामें—पाठ्य पुस्तक—तत्वार्थसूत्र सार्थ कंठ, द्रव्यसंग्रह सार्थ कंठ, रत्नकरंड श्रावकाचारमें सम्यक्त लक्षणके श्लोक; स्वाध्याय—पद्मपुराण व पद्मनंदि पंचविंशतिका; लेख ८ सफेपर व व्याख्यान १॥ घंटे।

प्रथमार्मे--पाठ्य पुस्तक—रत्नकरंड, तत्त्वार्थसूत्र, द्रव्यसंग्रह तीनों सार्थ कंठ, स्वाध्याय—रत्नकरंड श्रा० सदासुखमीकृत, बड़ा पद्मपुराण और आदिपुराण, लेख ६ सफे, व्याख्यान ।।। घंटा ।

कलकत्तेमें महासभा और कांग्रेसपर सेठजीका गमन।

सन् १९०६ के दिसम्बरमें कलकत्तेमें राष्ट्रीय सभा (कांग्रेस)की बड़ी धूम थी, इसका २२ वां अधिवेशन था और देशभक्त परोपकारी वृद्ध मि० **दादा-भाई नौरोजी** कांग्रेसके सभापति होनेवाले थे। साथमें प्रदर्शनी भी थी। ऐसे मौकेपर कलकत्तेके दिगम्बर जैनी भाइयोंने जैन यंगमेन्स एसो० और भा० दि० जैन महासभाको भी निमंत्रित किया। सेठ माणिकचंदजीका विचार महाराष्ट्र सभाके अधिवेशनमें शरीक होनेके लिये श्री स्तवनिधिक्षेत्रपर जानेका था, क्योंकि आप उसके सभापति थे, पर शीतलप्रसादजीने जोर दिया कि इस सभामें तो आप प्रति वर्ष जाया ही करते हैं। अबके आप कलकत्तेमें चलें और वहांकी प्रदर्शनी व कांग्रेसको देखें तथा महासभामें भी शरीक हों। आपके पधारनेसे महासभाकी बहुत शोभा होगी। तथा लौटते हुए आप काशीमें उस संस्कृत शालाको भी देख आवेंगे जिसे आपने स्थापित किया था व जिसकी चिरस्थायिताके लिये आपको इतना ध्यान है। सेठजीने इस रायको मंजूर किया तथा बम्बईसे अपनी सुपुत्री मगनबाई व निज कुटुम्ब व पुत्रियों सहित शीतलप्रसादजीके साथ कलकत्ते आए। कांग्रेस देखनेके निमित्तसे सेठ हीराचंद नेमचंदके पुत्र बालचंदजी भी कई मित्रोंके साथ एक ही डब्बेमें आए। सेठजी सदा ही अपनी प्रतिष्ठा और आरामके

लखनऊसे सेकन्ड क्लासमें ही यात्रा करते थे और अपने साथवालोंको भी अपने ही डिब्बेमें बिठाते थे। सेठजीका कहना था कि यदि यात्रामें शरीरको कष्ट हुआ तो जिस कामके लिये अपनी यात्रा होती है वह काम अच्छा न होगा। शीतलप्रसादजीको सेठजी सदा ही अपने साथ बड़ी प्रतिष्ठासे बिठाते थे और हर तरह उनके शरीर, प्रकृति, व धर्म साधनकी रक्षा करते थे। अपनी स्त्रीके देहान्त होनेके बाद शीतलप्रसादजी चारित्रमें अपना अभ्यास बढ़ा रहे थे सो जबसे लखनऊ छोड़कर बम्बई रहने लगे थे तबसे बराबर सबेरे और शाम सामायिक करते, अष्टमी व चौदसको उपवास करते थे, रात्रिको जलपानका त्याग था, दर्शनपाठ या स्वाध्यायके बिना भोजन नहीं करते थे। इन सब बातोंकी सम्हाल सेठजी पूरी २ रखते थे। प्रायः अष्टमी चौदस आजानेपर इसी निमित्त ठहर जाते थे। कलकत्तेमें पहुंचते ही **बाबू धन्नूलाल अटार्नी** सभापति स्वागतकारिणीने बहुतसे सभासदोंके साथ सेठजीका बहुत ही सन्मान पूर्वक स्वागत किया और घरकी मनोहर गाड़ियोंपर लेजाकर धर्मशालामें ठहराया। सेठजी जब रेल गाड़ीसे उतरे थे तब देखते क्या हैं कि एक पगड़ी पहने हुए चश्मा लगाए हुए युवकने बहुत ही झुककर सेठजीको प्रणाम किया। सेठजीके चित्तमें इस महाशयकी ऐसी विनयका बहुत ही असर हुआ। यह महाशय वही बाबू धन्नूलालजी थे जिनके चित्तमें सेठजीकी परोपकारता व दानवीरताकी कथा अंकित थी। उसी गुणग्राहकताने एक अटार्नीको इतना नम्रीभूत कर दिया था। महासभाके अध्यक्ष लाला रूपचंदजी सहारनपुर नियत हुए थे। आप ता० २४ दिस-

म्बरको सवेरे पधारे। आपका स्वागत बड़ी धूमसे हुआ। स्टेशनपर बनात बिछाई गई थी, बैंड बाजा बजा था। बाबू धन्नूलालने अभिनंदनपत्र पढ़कर अर्पण किया। १०० गाड़ियोंकी कतारके साथ सवारी नगरमें घूमकर स्थानपर आई। कलकत्तेमें जैनियोंकी बड़ी प्रख्याति हुई। उनके साथ हकीम कल्याणराय उपदेशक भी थे।

कांग्रेसका मंडप १२००० मनुष्योंके बैठने योग्य व ३००० के खड़े होने योग्य बना था। खचाखच भरा हुआ था, इसके जल्से ता० २६, २७, २८, २९ दिस० को हुए। दादाभाई नौरोजीका व्याख्यान बड़ा प्रभावशाली हुआ। अति महत्त्वके प्रस्ताव बंगभंगके विरोध, आफ्रिकामें भारतियोंपर अन्यायका प्रतिवाद, प्रारंभिक शिक्षा मुफ्त और अनिवार्य्य, तथा स्वदेशी आन्दोलनके हुए। कांग्रेसकी प्रदर्शनी २२ एकड़ जमीनमें थी। प्रदर्शनी इतनी भारी थी कि गलियोंकी लम्बाई ३ मील थी। इसको ता० २१ दिस० को स्वयं बड़े लाट लार्ड मिन्टोने खोला था। प्रदर्शनीसे मालूम हुआ कि देशी कारीगरीकी चीजें बनानेके लिये लोगोंका ध्यान बढ़ रहा है। चीनी बनानेकी देशी कल देखनेमें आई। वह बहुत ही योग्य थी। एक ही समय ईख डालकर शक्कर बना ली जाती थी। ता० २४ दिस० को दिनमें और ता० २५ दिस० की रातको जैन यंगमेन्स एसोशियेशनके तथा ता० २५ दिस० के दिनमें व ता० २६ की रातको व ता० २७ के दिन रात्रिमें महासभाके जल्से **लाला रूपचंदजीके** सभापतित्व और बाबू धन्नूलालजीके उपसभापतित्वमें हुए।

बाबू धन्नूलालका स्वागतार्थ व्याख्यान बहुत ही विद्वतापूर्ण,

प्रौढ़ और मनोहर हिन्दी भाषामें था । एसो० में मुख्य दो प्रस्ताव हुए । एक तो मेम्बरोंमें दर्शन स्वाध्यायके प्रचारकी कोशिश की जावे और उसकी रिपोर्ट हर साल प्रगट हो । दूसरे एक ट्रैक्ट कमेटी इंग्रेजी पुस्तकोंके बनाने व संशोधनके लिये बने । महासभामें मुंशी चम्पतरायजीने रिपोर्ट सुनाई, फिर **सेठ माणिकचंदजीने** प्रस्ताव किया कि महासभा **दिगम्बर जैन डाइरेक्टरी** तय्यार करै उसका कुल खर्च मैं दूंगा । महासभाने धन्यवाद सहित स्वीकार किया व बाबू **सूरजभान वकीलको** इसका मंत्री नियत किया । यद्यपि इसका काम सेठ ठाकुरदास भगवानदासने पहले ही शुरू कर दिया था पर घूमनेवाले डाइरेक्टर न मिलने व व्यापारमें संलग्न होनेके लिये वह काम कुछ हुवा न था तथा बाबू सूरजभानसे प्राइवेट बात करनेपर सेठजीको यह मालूम हुआ था कि इनके द्वारा यह काम बहुत जल्द और बहुत अच्छी तरह होगा ।

मगनबाईजीको स्वर्ण पदक ।

श्रीमती **मगनबाईजीको** वह **स्वर्णपदक** जो सहारनपुरमें देना प्रस्तावित हुआ था महासभाकी खास बैठकके समय सभाके सामने बुलाकर दिया गया और इनकी सुकीर्त्ति वर्णन की गई । श्रीमती मगनबाईजीको परदेकी आदत न थी और न उन्हें पुरुषोंकी सभाके सन्मुख आते संकोच था। आपने स्वर्णपदक लेते हुए अपनी मिष्ट ध्वनिसे श्री जिनेन्द्रको नमस्कार करके अपनी लघुता प्रगट करते हुए महासभा द्वारा सन्मानित होने पर अपना अति हर्ष माना और धन्यवाद दिया । सभाओंकी

स्थिरताके लिये तय हुआ कि व्याख्यानोंकी छोटी २ पचीस पुस्तकें प्रकाशित हों। पं० मेवारामजीका व्याख्यान बहुत प्रभावशाली हुआ था। लाला रूपचंदजीने १०००) महासभाके महाविद्यालयमें जो सहारनपुरके चंदेमें लिखा था सो प्रदान कर दिया।

सेठ माणिकचंदजीने कलकत्तेके कई धनाढ्योंसे स्याद्वाद पाठशालाके लिये हज़ार २ की रकम भरानेका उद्योग किया, पर सफलता केवल एक **बाबू धन्नूलाल अटार्नी** पर हुई। आपने एकी दफे कहनेसे स्वीकार कर लिया तथा लाला रूपचंदजीने भी १०००) लिखाए। श्रीमती मगनबाईजीने मंदिरजीमें कई स्त्रीसभाएं करके शिक्षा व धर्मकी जागृतिपर उत्तेजित किया।

इसी अवसरपर सेठजीने शिखरजीकी उपरैली कोठीकी प्रबन्धकारिणी सभाका अधिवेशन भी कलकत्तेमें नियत किया था और सर्व मेम्बरोंको खबर की थी। उसीके अनुसार ता: ३० दिसम्बर १९०६ को बैठक हुई, जिसमें बाबू देवकुमारजी, सेठजी, पं० नंदकिशोरजी, छेदीलालजी, शीतलप्रसादजी, सेठ नेमीसाह नागपुर व चुन्नीलालके द्वारा क्रमसे नियुक्त थे। ५॥ मासका हिसाब व रिपोर्ट पास की गई। बड़े मंदिरजीके जीर्णोद्धारके लिये बम्बईसे मिस्त्री भेजकर रिपोर्ट लेना तय हुआ। आगामी वर्षके लिये बजट पास किया गया। मालूम हुआ कि कोठीके चार्ज लेनेसे अब तक बहुत कुछ प्रबन्ध सुधरा है।

कलकत्तेसे चलकर सेठजी सीधे बनारस आए और भैदागिनी धर्मशालामें ठहरे। यहां आप ३, ४ दिन ठहरे और उदारचित्त धनाढ्य जैनी भाइयोंको समझाकर, स्वयं उनके घर तकमें जाकर पाठशालाके चिरस्थाई फंडमें हजार हजारके

काशीमें सेठजीका आगमन।

नाम भरा लिये । लाला कुंजीलाल, बनारसीदास, और बाबू छेदी-लालजीसे तो कलकत्तेमें ही भरा लिये थे, अब बाबू हनुमानदास, बाबू नंदनजी तथा लाला खड़गसैन उदयराजजीसे भराए । खड़गसैन-जीकी दो विधवा स्त्रियें थीं। इनको समझानेमें मुख्य परिश्रम श्रीमती मगनबाईजीने किया था । यहां तक १४ नाम हो गये थे और सेठ नेमीचंदजीसे १५वें नामकी शर्त थी । एक नाम आपने अपना और भरके १९ नाम पूरे कर दिये और रुपया तहसीलना शुरू करा दिया । **साहस इसीको कहते हैं** । यदि एक और धनाढ्य उनके साथ भ्रमण करनेमें पूरी २ मदद देता, और सेठजी १० व २० शहरोंमें घूम लेते तो १०० नाम भराना कोई बात न थी पर जैन जातिके दुर्भाग्यसे ऐसा न हो सका और वह फंड २३०००) ही पर रुक रहा है ।

ता० ७ जनवरीको स्याद्वाद पाठशालाकी प्रबन्धकारिणी सभामें आप सभापति हुए । कई जरूरी प्रबन्धक कार्रवाइयोंके साथ साथ वार्षिक अधिवेशन आगामी फाल्गुण सुदीमें करना निश्चित किया ।

पंडित शिवकुमार शास्त्री द्वारा परीक्षा ।

जिस पाठशालाके लिये सेठजीको इतना प्रेम था उसकी जांच भी कराना आप जानते थे जिससे खातरी हो कि पाठशालाका काम ठीक होता है या नहीं । आप एक दिन कई विद्यार्थियोंको लेकर काशीके प्रसिद्ध विद्वान् पंडित **शिवकुमार शास्त्री**के यहां पधारे और प्रार्थना की कि आप इनकी परीक्षा लेवें । पंडितवर्य्यने परीक्षा लेकर यह सम्मति प्रदान की—

माघ कृष्ण पंचम्यां मत्स्थाने स्याद्वाद पाठशालायाश्छात्राः स्वपरीक्षादानार्थमुपस्थिताश्च परीक्षादानोत्तरमारकृताभ्यासत्वेन निर्णीताः।

भावार्थ—माघ कृष्ण पंचमीको मेरे स्थानपर स्याद्वाद पाठ-शालाके छात्र आए। परीक्षा ली। अभ्यास अच्छा किया है ऐसा निर्णय हुआ।

विद्याप्रेमी सेठ माणिकचंदजीको सिवाय अपने परोपकार कामके और कोई शौक किसी तरहका न था। जिस शहरमें जाते थे वहां श्री जिनमंदिर व कोई प्राचीन स्थान तो देखते थे, पर अन्य किसी मेले ठेले तमाशे आदिमें जानेकी बिलकुल रुचि न रखते थे। खानपान भी बहुत सादा था। तथा सबेरेसे जब तक कोई काम नहीं कर लेते थे तब तक मध्यान्हका भोजन नहीं रुचता था। सेठजीकी यह मंशा थी कि मैदागिनीके बगलमें स्थान लेकर एक कायदेका मकान स्याद्वाद पाठशाला व बोर्डिंगके लिये बनवा दें। उस स्थानके लिये आपने बहुत प्रयत्न किया। पोष्ट-माष्टर लाला रघुनाथ-दासको कई सौ रुपये उसके लिये भेजे उन्होंने बयाना भी दिया, पर वह सेठजीके मरणकाल तक ठीक न हुई। इस दफे आपने काशीसे **सिंहपुरी व चंद्रपुरी**में भी जाकर दर्शन किये। श्री श्रेयांसनाथका जन्मकल्याणक सिंहपुरी तथा श्री चंद्रप्रभुजीकी चंद्रपुरी है।

आप बनारससे सकुशल बम्बई आए। श्री गजपंथाजीमें बम्बई प्रान्तिक सभा होनेवाली थी उसकी फिकर हो गई। जाति व धर्मकी सेवामें धनाढ्य लोग धनके खर्चनेवाले तो बहुत मिलेंगे

पर धनके दानके साथ शरीर व वचनसे भी दिन-रात मिहनत करनेवाले बहुत कम दीख पड़ेंगे। इसी अद्भुत गुणके कारण जैन जनता सेठजीको बात बातपर याद करती है तथा अब इनके स्थानको पूर्ण करनेवाला कोई दीखता नहीं है।

ग्यारहवां अध्याय।

महती जातिसेवा द्वितीय भाग।

सेठ माणिकचंदजी कलकत्तेके प्रवाससे लौटकर बम्बईमें अपनी नित्य क्रियामें लवलीन हो गए। इस अव-

सेठ माणिकचंदजीकी दिनचर्या।

स्थामें भी जब सेठजी बम्बई रहते तब चौपाटी चैत्यालयमें स्वयं श्री जिनेन्द्रकी स्फटिक-मणिकी मूर्तियोंका अभिषेक करते थे, णमोकार मंत्रकी जाप दे शास्त्र स्वध्याय करके जो मुद्रित पुस्तकें चैत्यालयमें रक्खीं थीं उनको देखते थे तथा बाहरसे बहुतसे स्थानोंकी मांग आती थी उनके लिये पुस्तकोंके छांटनेका काम ठाकुरदास भगवान-दासके सुपुर्द था। ठाकुरभाई स्वयं करते व और छोटे लड़कोंसे कराते थे, जो बहुधा चारों भाइयोंके कुटुम्बमें कोई न कोई बंगलेमें रहते थे। तथापि सेठजी उनकी जांच रखते व कभी आवश्यक होनेपर स्वयं भी पुस्तकोंको छांटकर अलग २ बिना बंधा बंडल रख लेते थे और उन्हें फिर दुकान जाते हुए ले जाकर भिजवा देते थे। प्राय: जैन पाठशालाओं और खास २ स्वाध्यायके लिये प्रार्थनारूप मांगनेवालोंको आधे मूल्यमें व भेट रूप भी भिजवाते थे। कई हज़ार रुपया इस काममें अटका रखा था। सेठजीके जीवन तक बाहर भेजनेका जितना काम होता था उतना अब नहीं होता है, तथापि अब भी चौपाटीपर पुस्तकालय है जिसमें सर्व प्रकारकी संस्कृत प्राकृत भाषाकी पुस्तकें रहती हैं। मंदिरजीसे निकलकर जब तक रसोईका

समय होवे तब तक आप गाड़ीपर बैठकर कभी बोर्डिंग, कभी कोई मकान, कभी किसीसे मिलनेके कायमें चले जाते थे । वहांसे आकर रसोई जीमकर सर्वके साथ दूकान जाते थे । रास्तेमें हीराबाग धर्मशालामें उतर जाते थे । जबतक गाड़ी औरोंको जौंहरी बाज़ार पहुंचाकर न लौट आती तबतक आप शीतलप्रसादजीके साथ धर्मशालामें घूमकर सर्व जांच करते, दफ्तरमें आकर सुप० धर्मशालासे हाल मालूम करते, रोज़के फार्मको देखते कि जिसमें यात्रियोंकी आमद लिखी जाती है, फिर तीर्थक्षेत्र कमेटीके मैनेजरके पास बैठकर जरूरी पत्र पढ़ क्या जवाब देना सो समझाकर जब गाड़ी आती तब दूकानपर जाते थे। वहांपर तीर्थक्षेत्रोंके सिवाय और अनेक तरहके धार्मिक सामाजिक पत्रोंको पढ़कर उनका उत्तर लिखते व लिखाते थे । अब सेठजीका सम्बन्ध सम्पूर्ण भारतवर्षसे होगया था । महासभाके सम्बन्धमें भी बहुत लिखा पढ़ी होती थी। सेठजीके सामने ही सेठ नवलचन्द, चुन्नीलाल, ठाकुरभाई व्यापारका काम करते थे । कोई २ माल खरीदते समय सेठजीसे सलाह लेते थे तथा जो ग्राहकगण फुटकल मोती लेने आते वे सेठजीकी सलाहसे लेते और जो दाम यह कहते उसे विना दुलखे दे देते थे। सेठजी बड़े न्यायशील व परोपकारी थे। वे विना कोई अपेक्षा रक्खे ऐसे दाम कहते कि उससे कम कहीं बाज़ारमें उसे न मिल सके जिससे उसका मन भी प्रसन्न रहे और दूकानवालोंको भी योग्य लाभ हो । तीर्थक्षेत्र कमेटीके लिखे हुए पत्र दूकानपर आते उनको शुद्ध करके हस्ताक्षर करके भेज देते थे । कोई २ आवश्यक तीर्थक्षेत्रके पत्र दूकानपर ही लिखते लिखाते थे । अपना उपयोग सर्व जैन जातिके सुधारे सम्बन्धी भावोंमें उलझाए रखकर शामके

पहले २ जब गाड़ी आती तब उसीमें सबके साथ बैठकर चौपाटी जाते और शामसे पहले २ व्यालू करके पैदल समुद्र तटपर टहलने जाते थे। वहांसे आकर चैत्यालयके दर्शन व जाप कर व कभी स्वाध्याय कर दीवानखानेमें ऐसी जगह बैठते थे जो जीनेके सामने है जिससे हरएक दरवाजेसे आता जाता सेठजीको दिखता था और सेठजी उनको देखते थे। इस मनोहर चौपाटी चैत्यालयके दर्शनको बहुत मनुष्य आते थे, उन सबको सेठजी यदि वे स्वयं न आएं तो बुलाकर कुर्सियोंपर बिठाते थे, उनके धर्मकी, सुख दुःखकी बात पूछते थे व यदि कोई धार्मिक काम हुआ तो उनमें यथाशक्ति मदद देनेको तय्यार रहते थे। रात्रिके १० व १०॥ तक इस तरह बिताकर रात्रिको दुग्धपान करके शयनालयमें जाते थे। सबेरे अति ही सबेरे उठकर फिर नित्य क्रियामें लग जाते थे। आपकी यह इच्छा थी कि जहां २ मुख्य प्रान्तिक कालेज हैं और उनके आसपास दि० जैनी हैं वहां एक २ बोर्डिंग अवश्य स्थापित हो जावे जिससे इंग्रेजी पढ़े छात्र धर्मज्ञान व धार्मिक चारित्रसे विमुख न हों। सेठजीको यह भी विश्वास था कि यदि कोई ग्रेजुएट धर्मको जान जायगा तो वह अपने हितके सिवाय अपने लेख व वचनोंसे बहुतोंका हित कर सकेगा। **जबलपुर** बोर्डिंगके स्थापनके बाद व उसको चलते हुए देखकर आपने यह संकल्प किया कि **लाहौर, अलाहाबाद** तथा **आगरा**में भी बोर्डिंग होना चाहिये। शीतलप्रसादजी सेठजीके साथ ही दूकानपर बैठते थे और कभी २ घंटा दो घंटेके लिये बाजार चले जाते थे। शीतलप्रसादजीको मालूम था कि इन बोर्डिंगोंके स्थापन करानेके लिये किन २ से पत्रव्यवहार

किया जाय। लाहौरके निमित्त पहले बाबू चंदूलाल ओवरसियरसे, फिर बाबू रामलालजीसे, आगराके निमित्त लाला गोपीनाथजी बजाज और बाबू देवीप्रसादजीसे; प्रयागके लिये बाबू ऋषभदास, बच्चूलाल शिवचरणलाल आदिसे पत्रव्यवहार होने लगा। शिखरजीकी बीसपंथी कोठी सम्बन्धी पत्रव्यवहार प्रायः सेठजी ही को करना पड़ता था। मैनेजर डाह्याभाई शिवलाल हरएक काममें सेठजीकी सम्मति मांगता व आज्ञा लेता था और सेठजी तुर्त जवाब देकर उसका समाधान करते थे।

सिद्धक्षेत्र श्री गजपंथाजीपर मिती माघ सुदी १३ सं० १९६३ से १५ तारीख २७-२८-२९

गजपंथाजीपर बम्बई प्रा० सभाका अधिवेशन। जनवरीको बम्बई प्रान्तिक सभाका चतुर्थ वार्षिक उत्सव होनेवाला था। इस उत्सवका सब प्रबन्ध बंट चुका था। मंडप तथा केम्पका प्रबन्ध **सेठ माणिकचंदजीके** सुपुर्द किया गया था इससे शीघ्रही सेठजीको वहां जानेकी फिकर पड़ी। श्री गजपंथ पर्वत बम्बई प्रान्तके नासिक स्टेशनसे १० मील व नासिक शहरसे ५ मील है, पासमें मसरूल ग्राम है। यह दिगम्बर जैनियोंका प्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र है। यहांसे सात बलभद्र और आठ कोड़ मुनीश्वरोंने मोक्ष प्राप्त की है।

पर्वत ४०० फुट ऊंचा है। सीढ़ियां ३२५ बनी हैं। ऊपर दो प्राचीन गुफाओंमें खुदे जिन मंदिर हैं जिनमें पर्वतमें उकेरी अति प्राचीन दि० जैन प्रतिबिम्ब हैं। दो चरणपादुकाएं हैं। एक बड़ी मूर्ति पार्श्वनाथ स्वामीकी कुछ २ खंडित है। ऊपर व नीचे जलके

कुंड हैं। नीचे क्षेमेंद्रकीर्ति भट्टारककी समाधि है। गांव महसरूलमें एक सुन्दर शिखरबंद मंदिरजी है जिसे उक्त भट्टारककी प्रेरणासे शोलापुरके प्रसिद्ध सेठ **रावजीके** पिता **नानचंद** फतहचंदजीने सं० १९४२में बनवाया था व सं० १९४३में प्रतिष्ठा कराई थी। मंदिरजीके चारों तरफ कोट है। इसके भीतर दो धर्मशालाएं हैं, जिसमें ३०० मनुष्य ठहर सक्ते हैं। उत्तम धर्मशालाओंके बननेकी जरूरत है। यहांका हवा पानी बहुत ही अच्छा है। बम्बईके जैनी बीमार होनेपर यहीं आते हैं और अच्छे भले चंगे होकर लौट जाते हैं। इस अधिवेशनके सभापति श्रीमान् **राजा ज्ञानचंदजी** फोटोग्राफर हैदराबाद व बम्बई नियत हुए थे। ता० २६के ७॥ बजे सवेरे **दानवीर सेठ माणिकचंदजी**, पं० पन्नालालजी, बाबू शीतलप्रसादजी आदि अनेक सज्जनोंके साथ राजासाहब नासिक स्टेशनपर पधारे। दिगम्बर जैन प्रान्तिकसभाके पट्टे लगाए हुए वालन्टियरोंने गाजे बाजेके साथ स्वागत किया। सेठ दीपचंद वीरचंदके बंगलेमें आराम करके सवारी शहरमें घूमते निकाली गई, जगह २ ध्वजा पताकाएं टंगी थीं। इस जल्सेमें पं० गोपालदासजी, सेठ सुखानन्दजी, सेठ रावजी नानचंद शोलापुर आदि बहुतसे महाशय शरीक थे। देशभक्त पाटनकर और खरे प्रतिदिन सभामें उपस्थित होते थे। ता० २७ को प्रथम बैठक हुई। सेठ चुन्नीलाल झवेरचंदजीने स्वागतार्थ भाषण पढ़ा, फिर सेठ माणिकचंदजीके पेश करने व सेठ रावजी नानचंद और सेठ नेमीलाल नागपुरके समर्थनसे राजा ज्ञानचंदजी सभापति हुए। आपने अपना भाषण पढ़ा, इसी तरह दूसरी बैठक ता० २८ की रात्रिको, तीसरी ता० २९ को हुई। यहां उल्लेख योग्य प्रस्ताव जो सभामें पास हुए वह ये थेः—

(१) अमीर काबूलको धन्यवादका तार भेजा गया जो उन्होंने अपने वास्ते दिहलीके मुसल्मानोंको गाय वधसे मना किया (२) **सेठ माणिकचंद हीराचंद जष्टिस आफ दी पीस हुए** इस लिये सभाने हर्ष प्रगट किया (३) स्वदेशी वस्तु प्रचार तथा वाणिज्यवृद्धिका प्रस्ताव पंडित गोपालदासने पेश किया, जिसका समर्थन देशभक्त मि० एन० पी. पाटणकर बी० ए० एलएल० बी० ने एक प्रभावशाली व्याख्यान देकर किया (४) सखाराम वेणीचंद फलटणको सेठ बालचंद रामचंद शोलापुरकी ओरसे सुवर्ण **पदक** इस लिये दिया गया कि कन्याके पिताके न चाहनेपर भी इसने जबतक अपना विवाह जैन पद्धतिसे नहीं हुआ विवाहके लिये तय्यार न हुआ, नियत महुर्त भी टाल दिया तब दूसरे महुर्तमें जैन विधिसे ही विवाह कराया (५) वैद्यराज और वैद्यरत्न कन्हैयालालजीको **सुवर्णपदक** प्रदान किया गया (६) सेठ नेमीचंद अजमेरके रायबहादुर होनेपर हर्ष प्रकाश किया गया । आगामी वर्षके कार्याध्यक्षोंमें सेठ **माणिकचंद हीराचंद जे० पी० ही सभापति** रहे । उपदेशक फंडके मंत्री जौंहरी ठाकुरदास भगवानदास व परीक्षालयके सेठ रावजी सखाराम शोलापुर हुए। सेठ हीराचंद नेमचंदकी सुपुत्री कंकुबाई व **श्रीमती मगनबाई**ने स्त्रियोंमें जागृति की। ता० २९ की रात्रिको एक खास आम सभामें कंकुबाईजीने बहुत ही उत्तम व्याख्यान दिया ।

नासिककी पिंजरापोलके लिये चंदा हुआ, जिसमें सेठ माणिकचंदजीने १०१) प्रदान किये। प्रान्तिक सभाके लिये अपील हुई उसमें भी सेठजीने २०१) सबसे पहिले दिये। इस जल्सेमें **सूरतसे** सेठ

मूलचंद किसनदासजी कापड़िया अकेले ही पहुंचे थे और सब कार्योंमें सेठ माणिकचंदजीके साथ रहकर बराबर योग देते थे। आगामी अधिवेशन गुजरातमें पावागढ़ सिद्धक्षेत्रपर करनेका बड़ौदेसे सेठ लालचंद कहानदास द्वारा आया हुआ एक पत्र पढ़ा गया, तब सेठ रावजी भाई सखाराम (सोलापुर) ने कहा कि नहीं, आगामी अधिवेशन दहीगांवमें करना चाहिये, इस पर सेठ मूलचंद किसनदास कापड़ियाने खड़े होकर जोशीली भाषामें कहा कि हमारा गुजरात प्रांत बहुत अंधकारमें है और वहां कभी ऐसा अधिवेशन नहीं हुआ है इसलिये वहांपर ही होना चाहिये आदि, जिससे आगामी अधिवेशन गुजरातमें पावागढ़ तीर्थपर करना ही निश्चित हुआ।

आगरामें बोर्डिंगके लिये सेठजीका दौरा व प्रयत्न।

पहले कहा गया है कि आगरामें जैन बोर्डिंग खोलनेकी प्रेरणा सेठजी पत्रद्वारा कर रहे थे उसीके असरसे दलीपसिंह जैनी डाक्टरने उद्योग करके फर्वरी मासमें लोगोंको एकत्र करके जो पत्र सेठजीके लाला गोपीनाथ बजाज और बाबू देवीप्रसादजीके पास आए थे उनको पेश किये और जैन बोर्डिंगकी बड़ीभारी जरूरत बताई। सर्व साहबोंने बोर्डिंग होना ठीक समझ कर इसका प्रबन्ध शुरू किया, पर वह कुछ चल न सका। तब सेठजीसे पत्र द्वारा प्रार्थना की गई कि यहां २४से ३१ मार्च सन् १९०७तक रथोत्सव है उसमें आप पधारें तो सब प्रबन्ध हो जावे। बार २ पत्रोंके आनेसे सेठजी शीतलप्रसादजीके साथ पंजाब मेलसे रवाना होकर ता० २६ की शामको आगरा पहुंचे। लाला गोपीनाथ आदि अनेक भाई स्वागतार्थ स्टेशनपर

आएथे और बड़ी धूमधामसे सेठजीको लेजाकर गोपीनाथजीने अपने मकानपर ठहराया। रथोत्सवका मेला एक बागमें था जहां स्त्री पुरुषोंकी बहुत भीड़ थी। दूसरे दिन सबेरे सेठजीने आगरा कालेजोंमें पढ़नेवाले जैन छात्रोंको अपने पास बुलाया। ७, ८ छात्र आए और उनसे सर्व हाल पूछा तो मालूम हुआ कि वे धर्मको कुछ भी नहीं जानते, न वे दर्शन स्वाध्याय जाप कभी करते, उनका श्रद्धान मूर्ति पूजासे गिरा हुआ था, करीब २ आर्यसमाजके से ख्याल हो रहे थे; क्योंकि आगरामें आर्य समाजका बहुत जोर है उसके उपदेश पुनः पुनः उनके कानोंमें पड़े थे इसीसे ऐसा असर हुआ था। सेठजीने पूछा, आप लोग जैनधर्मको क्यों नहीं जानते? उत्तर मिला कि लड़कईसे हमारे पिताने हमें कुछ बताया नहीं। हम स्कूलमें इंग्रेजी पढ़ते रहे। कभी अनन्त चौदसको दर्शन कर आते थे। हम तो इतना ही जानते हैं कि हम जैन हैं पर जैनमतका कुछ भी हाल नहीं जानते, क्योंकि न हमें बताया गया और न कोई पुस्तकें पढ़नेको मिलीं यद्यपि हम कुछ २ हिंदी जानते हैं पर ज्यादा हमें उर्दूका ही अभ्यास है। सेठजीको इनकी बातोंको सुनकर दिलमें बहुत दया आई तथा इनको बम्बई बोर्डिंगका हाल व धर्मशिक्षाकी बात कही और मूर्ति पूजा आदि पर शीतलप्रसादजीने समझाया।

आगरामें मानपत्र।

रात्रिको बागमें शास्त्रसभाके पीछे सभा हुई। सेठजीको सभापति नियत करके आगराके जैनी भाइयोंने निम्नलिखित **मानपत्र** दिया:—

अभिनन्दनपत्रमिदम् ।

दोहा—सज्जन गुणी दयालुचित, दानवीर कुलचन्द ।
अहोभाग्य आये यहाँ, श्रेष्ठी माणिकचन्द ॥

श्रीमान् जैनधर्म प्रतिपालक दानवीर सेठ माणिकचन्दजी जैन
जौंहरी जे. पी. (J. P.) बम्बई ।

महोदय ! हम समस्त आगरानिवासी जैनी भाई आज परमहर्षको प्राप्त हुए हैं कि जो आपने इतना महान् कष्ट सहन कर यहां (आगरेमें) प ारनेकी (जैनसमाजकी उन्नतिके लिये) कृपा की है। इससे हम लोग आपके परम धन्यवादी हैं और श्रीमान्‌की दयालुता तथा सज्जनता एवम् धर्मप्रीतिपर दृढ़ताका परिचय तो हम लोगोंको आपके स्थापित किये पुस्तकालय, विद्यालय, औषधालय, धर्मशाला, अनाथालय, जैन बोर्डिङ्ग हाउस व जैनसमाज एवम् अनेक धर्म कार्य्योंसे तथा समस्त तीर्थक्षेत्रोंके सुप्रबन्धसे मिल चुका है। श्रीमान्‌ने हाल ही में अपवित्र वस्तु खांड, केसर आदिके न वर्ते जानेका अपने यहां जो प्रबन्ध किया है एवम् और बहुतसे ऐसे धर्म कार्य्य हैं जिनमें आप कटिबद्ध रहते हैं और जो कि आपकी अपने धर्ममें दृढ़ विश्वासता तथा अपनी जातिसे अटल प्रेमका परिचय देते हैं, आपका यश दसों दिशामें सुगन्धित भरा हुआ व्याप्त और प्रफुल्लित हो रहा है। सो आपकी इन कृपाओंके बदलेमें हमारे पास कोई शब्द नहीं हैं जिसे हम क्षुद्रबुद्धि मनुष्य आपकी प्रशंसा कर सकें। हम आपके इस आगरा नगरीमें साक्षात् दर्शन करके ऐसे प्रफुल्लित और हर्षित एवम् गदगद हुए हैं कि जिह्वाग्रमें कोई स्थान नहीं है कि जिससे एक बात भी आपकी प्रशंसाको मुखसे उच्चारण कर सकें,

किन्तु हमारे हृदय अत्यन्त प्रेमसे उमड़ रहे हैं और आपकी सेवा करनेके लिये चित्त अतिशय उत्कंठित हो रहा है, परन्तु आपको सन्तुष्ट करनेके लिये उपायन्त्रकी अप्राप्तिमें फूल नहीं पंखरी ही सहीकी उक्तिसे यह छोटासा सम्मेलन करके आपके पवित्र कर-कमलोंमें हृदयके उचित उल्लासको अभिनन्दनपत्रका स्वरूप देकर अर्पण करते हैं ।

यद्यपि आप सर्वथा समदृष्टि दयावान और सच्चे सज्जन, निज धर्महितैषी हैं, स्वदम् ही आपकी हमारे जैनी भाइयों तथा अन्य मतियोंपर भी बड़ी कृपा रहती है, तौभी हम लोग अपने हृदयकी दुर्बलतासे सदैव जैनसमाजपर केवल अधिक कृपा कटाक्ष रखनेकी प्रार्थना करते हैं । आशा है, कि आप हम लोगोंकी दृढ़तापर क्षमा करेंगे । और सविनय निवेदन है कि यह मानपत्र जो आपकी सेवामें अर्पण करते हैं इसे आप सादर सहर्ष स्वीकार करके हम लोगोंको अनुगृहीत करेंगे किमधिकम् ।

वीर संवत् २४३३ मिती चैत्र सुदी १३ तारीख २७ मार्च सन् १९०७ ईसवी

आपके कृपाभिलाषी प्रेमी समस्त आगरा निवासी जैन भाइयोंकी ओरसे—
दलीपसिंह
अग्रवाल जैन—उपमन्त्री ।

फिर शीतलप्रसादजीने धार्मिक शिक्षाकी महिमा बताते हुए आगरामें जैन बोर्डिङ्गकी कितनी आवश्यका है इसको दिखाते हुए जो बातचीत दिनमें कालेजके छात्रोंसे हुई थी उसका भाव कहा, जिसको सुन कर सभाके चित्त भर आए । इसका समर्थन डाक्टर दलीपसिंह अग्रवालने किया ।

उसी समय सेठजीने आगरा बोर्डिंगके लिये जमीन खरीदने-
को ४०००) देना कबूल किया, उपस्थित
आगरा बो० के लिये भाईयोंने ९ कमरोंके लिये पांच पांचसौ
४०००) का दान। रुपये स्वीकार किये। लाला गोपीनाथजीने
२ हजारका एक मकान व दो कमरे मंजूर
किये। बहुतोंने मासिक चंदा लिखाया व एक मुष्ट रकम भी लिखी
गई। थोड़ी देरमें २००००) बीस हजारसे अधिकका चंदा हो
गया। इस जलसेमें रायबहादुर घमंडीलालजी मुजफ्फरनगर भी
थे। आपने भी २ कमरे बनवाना स्वीकार किये। प्रबन्धार्थ एक कमेटी
बनी, जिसके मंत्री राय० ब० घमंडीलाल व उपमंत्री डॉ० दलीप-
सिंह हुए। दूसरे दिन अंतरंग कमेटीमें नियमावली पास की गई
तथा तय हुआ कि मोतीकटरेकी धर्मशालामें इसका महूर्त ता०
१ अप्रैल सन् ०७ को कर दिया जाय। कुछ छात्रोंने रहना स्वीकार
किया था, सो सेठजीके सभापतित्वमें सबेरे मोतीकटरेमें सभा हुई।
बहुत भाई पधारे थे। आचार और शिक्षापर बाबू शीतलप्रसाद और
लाला लाडलीदास हेडमाष्टर नार्मल स्कूलने मनोहर व्याख्यान दिये।
सेठजीने बोर्डिंगका एक कमरा खोला और सभा सानन्द समाप्त हुई।
उस समय सभाका फोटो भी लिया गया। सेठजीकी यह रीति
थी कि पहले मामूली स्थानपर बोर्डिंग शुरू करना फिर उसके
लिये मकान तय्यार कराना इसीसे यह मुहूर्त किया गया। पर जिन
छात्रोंने आनेका वादा किया था वे भी न आए, इधर उत्साही
दलीपसिंह आगरासे चले गए जिससे बोर्डिंगकी कार्रवाई वैसी ही
रही। फिर पत्रव्यवहार होता रहा तब आगरावालोंने यही कहा कि

जब तक नया बोर्डिंग न बनेगा तब तक कालेजके छात्र नहीं आ सक्के। तब सेठजीने बाबू देवीप्रसादजीको जमीन लेनेके लिये कहा। बाबूजीने हरि पर्वत थानेके पास एक बड़ीभारी जमीनका टुकड़ा करीब ३६००) में ठीक किया तब सेठजीने ४०००) भेज दिये। जमीन पक्की लेली गई पर मकान बननेका बहुत दिनों तक कोई भी यत्न न हुआ। पीछे फिर सेठजी एक दफे आगरा आए और बहुत जोर देकर मकान बननेका महुर्त कराकर चले गए। फिर भी कुछ कार्रवाई न हुई। एकदफे शीतलप्रसादजीने बहुत समझा बुझाकर कमरोंका पहले आधा रुपया बसूल करवाकर कमरे शुरू करवाए। धीरे२ आठ कमरे तय्यार हो गए, पर सेठजीके जीवन तक यह बोर्डिंग चालू नहीं हुआ था, परन्तु ता० २१ नवम्बर १६ के भैरोंसिंह जैनके पत्रसे विदित हुआ कि बोर्डिंगका काम शुरू हो गया है। आगरेमें लाला गोपीनाथ और सेठ माणिकचंदजीका संयुक्त फोटो भी लिया गया।

श्री सम्मेदशिखरपर बंगले बननेका प्रस्ताव।

आगरासे लौटकर आते ही सेठजीके चित्तको महा दुःखित कर देनेवाला डिप्टी कमिश्नर हजारीबागका नोटिस ता० २६ मार्च १९०७ का मिला जिसमें लिखा था कि पहाड़पर बंगले बननेके लिये जमीन पट्टेपर देनी है इससे दिगम्बरी और श्वेताम्बरी मुखिया हमसे ५ मई सन् ०७ के अनुमान मिलें जिसमें उनके मंदिरोंको हानि न पहुंचे ऐसा विचार किया जाय। यह नोटिस देखते ही सेठजी व अन्य बम्बईके जैनी भाई अचम्भित हो गए। क्योंकि सदासे ही यह पर्वत अति पवित्र

रूपमें सुरक्षित चला आता है। यह पर्वतराज है। दिगम्बर जैनियोंके मन्तव्यानुसार भरतक्षेत्रके अनंते तीर्थंकर इसीकी भूमिसे मोक्ष गए हैं व आगामी जावेंगे तथा उनके मध्य अनंते मुनि सम्पूर्ण पर्वतपर ध्यानकर मोक्ष पधारे हैं। इस वर्तमान हुंडावसर्पिणी कालमें काल दोषसे ४ तीर्थंकर अन्य स्थानोंसे मोक्ष गए हैं। सेठ माणिकचंदजी तीर्थक्षेत्र कमेटीके महामंत्री थे इसलिये इस पर्वतकी रक्षाका सम्पूर्ण बोझ इनके ऊपर आन पड़ा। अब रात्रिदिन सेठजी इस भारी चिन्तामें फंसे। आपने कमेटीकी तरफसे इस नोटिसकी नकल एक पत्र द्वारा सर्व पंचायतियों और सभाओंमें भेजदीं। तथा यह भी लिखा कि विचारवान भाई जो मिलनेको जावें अपने नाम भेजें। ठीक तारीख डाह्याभाई शिवलाल मैनेजर उपरैली कोठीसे मालूम कर लेवें। इसी बीचमें **कानपुरमें** बिम्बप्रतिष्ठा थी जिसमें भा० दि० जैन **महासभाका** नैमित्तिक अधिवेशन था। १५००० जैनी एकत्र थे। इस खबरको पाते ही महासभाने सभाद्वारा प्रस्ताव करके कि हम लोग पहाड़पर ऐसी बस्तीके बिलकुल विरुद्ध हैं, ता० २२ अप्रैल १९०७ को तार किया और यह भी लिखा कि दो मास समय बढ़ाया जावे। और भी पंचायतियोंसे तार व अर्जियें इसके विरुद्ध भेजी गईं।

सेठजीका दौरा अजमेर, उदयपुर, केशरीयाजी।

यहांसे सेठजी ता० १ अप्रैलको चल **अजमेर** आए। राय बहादुर **सेठ नेमीचंदजीने** स्टेशन पर भली प्रकार स्वागत किया। दिन भर यहां ठहरे। सुवर्णकी अयोध्या, कैलाश आदि ऋषभदेवके पंचकल्याणककी रचना देखी। फिर सेठजीने शीतलप्रसादजीके

साथ मेयो कालेज, दयानंद अनाथालय, हिंदू औषधालय तथा जैन औषधालय देखा । दयानंद अनाथालयमें १३ कन्या व १३० बालक देखे । इनको कपड़ा बुनना सीना, दरी व निमार बनाना, कुर्सी टेबुल बनाना व रंगना आदि सिखाया जाता है । यहां कपड़ेके जूते अच्छे बनते हैं जो १।)में आते हैं । दयानंद प्रेस व हाईस्कूल भी हैं । तैयार अनाथ इनमें काम सीखते या पढ़ते हैं । रात्रिको श्री जिन मंदिरजीमें सभा हुई । पं० नरसिंहदासजीने मंगलाचरण किया तब शीतलप्रसादजीने विद्योन्नतिपर भाषण दिया । सेठजीने १०) जैन व १०) हिंदू औषधालयको दिये । ता० २ को चलकर ता० ३ अप्रैलको **उदयपुर** आए । यहां ५ तक ठहरे । स्टेशनपर जैनियोंने बड़ी धूमधामसे स्वागत किया । प्रतिदिन खंडेलवालोंके मंदिरजीमें शीतलप्रसादजीके व्याख्यान होते थे ।

उदयपुर पाठशाला-को ६०००)

यहां सेठजीकी भावज रूपाबाईजीने दो वर्षसे एक जैन पाठशाला खुलवा दी थी, जिसका कुल खर्च बम्बईसे भिजवाती थीं । पाठशालाकी सेठजीने परीक्षा लिवाई । काम ठीक देखकर ता० ३ की सभामें सेठजीने सबको ज़ाहर किया कि रूपाबाईजी प्रेमचन्दके स्मरणार्थ इस पाठशालाके लिये ६०००) प्रदान करती हैं । अब इसके व्याजसे इसका खर्च चलेगा । रुपया हीराचन्द गुमानजी जैन बोर्डिंगकी ट्रस्ट कमेटीके आधीन रहेगा तथा पाठशालाका नाम "**सेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगम्बर जैन पाठशाला उदयपुर**" रहेगा । सबने सानन्द स्वीकार किया । सेठजीकी रायसे पाठशालाका स्थान

बदला गया व इस नामका पाटिया लगाया गया। प्रबन्धार्थ १२ महाशयोंकी १ कमेटी बना दी। सभापति जवारमल मूलचन्दके मुनीम शाह छोगालाल, मंत्री कालूराम और रंगलालजी नियत हुए। तथा एक जैनधर्मवर्धिनी सभा कायम कराई जो प्रति चौदसको हुआ करे। यहां छह जातियोंके २५९ घर व ४ दि० जैन मंदिर और १ नसियां है।

यहांसे चलकर ता० ६ को टांगोंके द्वारा २० मीलपर एक **परसाद** गांवमें आए। यहां ४० घर दि० जैनी थे। १ जैन मंदिर है। शिखर गिर पड़ा था सो फिरसे बन रहा है। मुखिया गौतमचंद बालचंद हैं। सेठजीने सबको जमाकर उपदेश देकर पाठशाला खुलवाने पर राजी किया तथा ५) मासिक मदद देना कबूल की।

ता० ७को सबेरे चलकर **धुलेव** गांव पोष्ट रिखभदेव आए। यहां १०० घर दि० जैनियोंके हैं। मुख्य सेठ बच्छराज छगनलाल हैं। गांवमें ब्राह्मण गोटी यात्रियोंको अपने घर पर ठहरा लेते हैं। सेठजी हेमचंद गौतमचंद गोटीके घरपर ठहरे और ता० ८ की दोपहर तक रहे। यहां पर श्री **ऋषभदेवजी**का एक किलेके समान मंदिर है जिसमें ६-७ फुट ऊंची पद्मासन श्याम वर्ण श्री ऋषभदेवकी दि० जैन मूर्ति चतुर्थ कालकी है। इसके चारों ओर एक धातु पटमें अन्य दिगम्बर मूर्तियां अंकित हैं। इस भव्य मूर्तिका सबेरे जल और दूधसे न्हवन होता है फिर केशर चढ़ाते हैं व पुष्पोंसे प्रायः ढक देते हैं। ७ से १२ तक दर्शन ठीक नहीं होता। पीछे सर्व अंगको शुद्ध करते हैं और केशर छुड़ानी पड़ती है जिससे चरणकी अंगुलियां घिस गई हैं। १ बजेके अनुमान फिर

जल और दूध चढ़ता है। पीछे सुवर्ण व रत्नोंकी आंगी व मुकुट पहनाया जाता है, पुष्पादि चढ़ाए जाते हैं। रात्रिको आंगी उतार कर सारे अंगमें गुलाल उड़ाते हैं। आंगीका चढ़ाना सं० १७०२ से शुरू हुआ ऐसा यहांके श्रावकोंसे मालूम हुआ। दिगम्बर जैन यात्री प्रतिमाजीके अभिषेक समय दर्शन व पूजा करते हैं। यहां चारों तरफ मंदिरोंमें दि० जैन बिम्ब हैं जिसके प्रतिष्ठाकारक मूलसंघी व काष्ठासंघी भट्टारक हैं। यद्यपि यह सर्व मंदिर दिगम्बर जैनियोंके रुपयोंके व्ययसे बने हैं पर अब इन सर्वके प्रबन्धका अधिकार उदयपुर राजाके आधीन ८ मेम्बरोंकी एक कमेटी करती है जिसमें उस समय २ वैष्णव व ६ श्वेताम्बर जैनी मेम्बर थे, दि० कोई नहीं था। मुख्य मेम्बर म्हेता मनोरसिंहजी, मगनलाल पूजावत्, महेता बख्तसिंह हाकिम हैं। एक ही वेदीमें एक ओर श्वेताम्बरी दूसरी ओर दिग० पूजन होती है। गांव पविड़ासे धुलेव तक २ मीलका रास्ता बहुत खराब है। सेठजीने बड़े भावसे दर्शन किये तथा देखा कि यहां केवल एक हिन्दी मदरसा है जिसमें २ अध्यापक हैं, अधिकांश दि० जैन छात्र हैं पर धर्म शिक्षाका कोई प्रबन्ध नहीं है। सेठजीने वहांके लोगोंको बुलाकर समझाया कि जैन पाठशालाका प्रबन्ध करें, उन्हें मासिक सहायता भी दी जायगी। पत्रव्यवहारका पता छगनलाल मेहता दुकान सेठ धनराज रतनचंद पोष्ट रिखभदेव जिला मेवाड लिखलिया। यहां ईडरके पंचोंकी बनवाई हुई एक बड़ी **धर्मशाला** है जिसमें ठहरनेका आराम है। दिगम्बर यात्री बहुत आते हैं। यहांसे चलकर **परसाद** गांवमें फिर आए। पाठशालाके लिये उत्तेजन करके

१०) नकद दो मासके लिये दिये । फिर **उदयपुर** आए । तालाबके बीचमें राजा साहबका शिव महल देखा, जिसमें कांचकी नकासीका काम अति प्रशंसनीय है। यहां चितेरा पन्नालाल वल्द गोपाल मेवाड़ा सुतार कांजीकी हाटमें रहता है उसीके हाथका यह काम है। यहांके पहाड़ोंमें संगमर्मर पाषाणकी खान है। यहां चक्कियों द्वारा पत्थरका सिमेंट पिसवाकर राजा साहबके काममें आता है। यह बहुत उत्तम होता है। यदि मशीनमें तय्यार हो तो वह बहुत लाभदायक हो जावे। रात्रिको सभामें बालविवाह कन्याविक्रय आदि पर भाषण हुए। शीतलप्रसादजी और सेठजी दोनोंने बहुत जोर दिया। कई भाइयोंने कन्याका **विवाह १२ वर्षसे कममें न करनेका प्रण लिया**। औरोंने स्वाध्यायादिके नियम लिये। सेठजी यहां हाकिम बखतसिंहजीसे मिले और कहा कि धुलेव मंदिरकी प्रबन्धकारिणी कमेटीमें दिगम्बर जैनी भी मेम्बर होना चाहिये तथा सेठजीने प्रार्थना की कि दो मीलकी सड़क ठीक करा दी जावे। उक्त महाशयने कमेटी द्वारा विचार करना स्वीकार किया।

रतलाम बोर्डिङ्गकी फिक्र।

यहांसे सेठजी **रतलाम** आए और यहांके लोगोंसे मिले व स्कूल आदि देखे। सेठ पानाचंदजीकी इच्छा **बागड़के हूमड़** जातिके बालकोंको शिक्षा प्रदान करनेकी थी। रतलामसे बागड़ करीब है इससे सेठजी रतलाममें एक बोर्डिंग खोलना चाहते थे। १ दिन ठहरकर सुरत आए।

अब तक फुलकौर कन्याशाला नहीं खुली थी। सेठजीने तुर्त एक मकान नवापुरामें ढूंढा और एक वृद्ध शिक्षकको तलाश किया:

जो सर्कारी कन्याशालामें पढ़ा चुका था तथा मईमें महूर्त किया जाय ऐसा निश्चय कर आप बम्बई आ गए।

फल्टनमें बिम्ब प्रतिष्ठा और मानपत्र।

इतने ही में फल्टन स्थानमें मिती चैत्र सुदी ९से बिम्ब प्रतिष्ठा थी तथा बम्बई प्रान्तिक सभा और दक्षिण महा० जैनसभाका नैमित्तिक अधिवेशन था। सभापति सेठ हीराचंद नेमचंदजी नियत हुए थे। यह सेठजीके मित्र थे तथा सेठजी दोनों सभाओंके सभापति थे इसके सिवाय भी फल्टनसे खास सम्बन्ध था इसलिये सेठजी फल्टन जानेका विचार करने लगे। यह प्रतिष्ठा सेठ वस्ताराम तुकारामकी ओरसे हुई थी जो मरते समय १००००) पंचोंके आधीन कर गए थे। सभाका अधिवेशन चैत्र सुदी ११ से शुरू हो गया था पर श्रीमान् सेठजी चैत्र सुदी १२को शीतलप्रसादजीके साथ पहुंचे। आपके स्वागतार्थ वस्तीके बाहर सैकड़ों जैनी पहुंच गए थे। मुख्य २ भाई मिले फिर फल्टनवालोंने फूलोंकी माला गलेमें डाली। सेठजी सेठ हीराचंद नेमचंदके साथ गाड़ीमें बैठे। दि० जैन प्रान्तिक और द० म० जैन सभाके वालन्टियरोंने घोड़ोंको गाड़ीसे हटाकर स्वयं गाड़ी खींचना शुरू किया। सेठजीको यह बात पसंद न आई। आप गाड़ीसे उतरने लगे तब वालन्टियरोंने उतरने न दिया और गाड़ीको स्वयं खींचते हुए धीरे २ बैंड बाजेके साथ ५०० से ऊपर भीड़के मध्यमें सभामंडपमें लाए। उच्चासनपर विराजमान कराके स्वागतकारिणी सभाके सभापति सेठ रामचंद हेमचंद म्हसवड़ने स्वागतका भाषण किया जिसका समर्थन बलवंत बाबाजी बुरटे सम्पादक "जिनविजय" ने किया और कहा कि आज आपने जिस व्यक्तिका इतना आदर किया

है उसका क्या कारण है? आप लोग विचारते होंगे सो इस सभ्य मूर्त्तिके सन्मानमें इसका विद्यानुराग ही कारण है। आपने सबसे अधिक द्रव्य विद्या हीके लिये अर्पण किया है। जैनियोंमें अनेक आपसे भी धनाढ्य पड़े हुए हैं परंतु परोपकारी और शिरोमणि आप ही हैं। सभाके अधिवेशन ता० २७ अप्रैल तक हुए। जन संख्या ३००० से अधिक थी। ता० २६ अप्रैलको शीतलप्रसादने श्री शिखरजीके दुःखको कहकर प्रस्ताव किया कि सभाकी ओरसे बंगले बननेके विरुद्ध तार जाना चाहिये। इसका समर्थन स्वयं सेठजीने किया और कहा कि अपने पूज्य महापर्वतकी सर्वस्व भूमिको रक्षित रखना हमारे भाइयोंका कर्तव्य है। प्रस्ताव पास होकर दोनों सभाओंकी ओरसे तार दिया गया। सभामें चंदेकी अपील होनेपर सेठजीने तीर्थक्षेत्र कमेटीको २०१), संयुक्त सभाको ५१) तथा पींजरापोल फल्टनको ५१) इस तरह ३०३) का दान किया। तथा सेठ हीराचंदने भी १०२) संयुक्त सभा व ११) पिंजरापोलको दिये। कोल्हापुर सर्कारने बन्दर मारनेकी मनाईका हुक्म जारी किया इससे धन्यवाद दिया गया। श्रीयुत नारायण गोविंद कीचक मुंसिफ साहबके सभापतित्वमें सेठजी और सेठ हीराचंद नेमचंदको **मान-पत्र** दिये गए। वास्तवमें इस समय ये ही दोनों वीर जैन समाजका अविद्यारूपी राक्षसकी सेनाको हटानेके लिये **रामलक्ष्मणकी तरह उद्योगशील** हो रहे थे अथवा सारे भारतकी जैन समा-जमें चंद्र और सूर्यकी भांति प्रकाशमान थे। रात्रिदिन परोपकार-तामें तनमन धन व्यय करना इस वीरोंका कर्तव्य था। इस उत्सवमें श्रीमती मगनबाई तथा कंकुबाईने स्त्रियोंमें उपदेश देकर ज्ञानमार्गकी

वृद्धि की। ता० २७ अप्रैलको एक महिला परिषद् बड़ी धूमधामसे हुई। अध्यक्षस्थान श्रीमती कंकुबाईने ग्रहण किया था। कई स्त्रियोंके भाषण हुए। १०० भाषाप्रवेशकी पुस्तकें बांटी गई। स्त्री शिक्षार्थ कुछ चंदा भी हुआ। फल्टनमें एक धनाढय कुटुम्बके भ्राताओंमें जायदाद सम्बन्धी कुछ फूट पड़ी हुई थी। सेठजी और हीराचन्दजीने दो दिन परिश्रम कर इस फूटको मेटकर ऐसा उम्दा **फैसला** कर दिया जिससे सर्वको समाधानी हुई। जष्टिश आफ धी पीसकी उपाधिको सार्थक किया।

बम्बईमें सभा और सेठजी सभापति।

फल्टनसे लौटकर सेठजी बम्बई आए ही थे कि सर्व दिगम्बर जैन संघकी एक सभा ता० ६ मई १९०७ की सोमवारकी रात्रिको दूसरे भोईवाड़ेके मंदिरजीमें हुई। सेठजीको ही सभापतिका आसन ग्रहण कराया गया। पंडित धन्नालालजीने पर्वतराज श्री शिखरजीपर आनेवाले उपसर्गकी बात सविस्तर सुनाई तथा प्रस्ताव किया कि डिप्टी कमिश्नरको तार किया जावे व यहांसे ९ महाशय ता० २९ मईके लिये जावें। मि० मालगावे आदिने पुष्टि की। सर्व सम्मतिसे नीचा लिखा तार भेजा गया—

"Digambar Jain Community of Bombay protest against granting building leases to Europeans etc. on Parasnath Hill as it will cause extreme dissatisfaction to the entire Jain society. The whole hill being sacred nothing should be done there to hurt the religious feelings of the Jains, as carryiug of flesh, wine and

other forbidden things on the hill is totally against Jain views, hence such proposal should entirely be dropped."

भावार्थ—बम्बईका दि० जैन संघ पहाड़पर मकानोंके लिये यूरुपियन आदिको पट्टे जमीन देनेके विरुद्ध है, क्योंकि इससे सर्व जैन जातिको महान असंतोष होगा। पूर्ण पर्वत पवित्र है। मांस मदिरा व अन्य निषेध्य पदार्थ पर्वतपर ले जाना जैनधर्मसे विरुद्ध है, कोई काम जैनियोंके परिणामोंको दुःखी करनेवाला न होना चाहिये इससे इस विचारको बिलकुल छोड़ देना चाहिये। यह सभामें प्रगट हुआ कि डिप्टी कमिश्नरके पास चारों ओरसे तार व अर्जियोंकी वर्षा हो रही है। कलकत्ता, शोलापुर, सुरत, भावनगर, अहमदाबाद, इन्दौर, मद्रास आदि प्रसिद्ध २ स्थानोंसे तार पहुंच गए हैं।

डिप्टी कमिश्नरका दूसरा नोटिस।

इतनेहीमें डिप्टी कमिश्नर हजारीबागका दूसरा नोटिस ता० २९ अप्रैल १९०७का आया कि हम ऐसी कोई बात नहीं कर सक्ते जिससे पर्वतके मालिकको हानि पहुंचे। जैनियोंका सिवाय मंदिरोंके पर्वतपर कोई हक नहीं है। यदि अधिक हक मांगा जायगा तो पट्टे देते हुए कोई भी शर्त जैनियोंके लाभकी नहीं रख सकेंगे। यदि अदालती कार्रवाई न हो तो डि० क० पर्वतपर जैनियोंकी पूजामें हानि न पहुंचे इस बातका पट्टा देते समय स्मरण रखनेकी आशा कर सक्ते हैं। इस नोटिसको पढ़कर सेठजी व अन्य भाई बहुत ही हताश हुए। कमेटीके महामंत्रीकी तरफसे ता० १० मईकी दस्तखती सुचना जैनमित्र ता० १४ मई १९०७ में प्रगट

की जिसमें यह भी बताया कि कलकत्तेके अटार्नी बाबू धन्नूलालने डिप्टी कमिश्नर साहबसे मिलकर समझाना स्वीकार किया है। अन्य जैनी वकील भी ता० २९ को पहुंचे तथा सर्व भाई तन मन धनसे सहायता करनेको तयार हो जावें।

सेठ नवलचंदके पुत्र ताराचंदका विवाह। मई मासहीमें सेठजीके भ्राता सेठ नवलचंदके सुपुत्र ताराचंदका विवाह सूरतमें शाह किसनदास अमीचंदकी पुत्री मानकौरसे बड़ी धूमधामसे हुआ। हाथी पर बरातका वरघोड़ा निकला था। पं० वासू गोपाल शास्त्रीने जैन पद्धतिसे विवाह कराया था। सेठजीका सर्व कुटुम्ब सूरत गया था। जातिके कई जीमनवार हुए थे।

फुलकौर कन्याशालाकी स्थापना। इस समयपर ता० २३ मई सन् ०७ को चंदावाड़ीमें सबेरे ९ बजे सेठ हरीभाई देवकरणके प्रपौत्र सेठ हीराचंदजी शोलापुरनिवासीके सभापतित्वमें एक महती सभा हुई। मूलचंद किसनदास कापड़ियाने कहा कि आज नवापुरामें सेठ माणिकचंद हीराचंदजीकी परलोकवासिनी पुत्री फुलकौरके स्मरणार्थ कन्याशाला खोली जाती है, जिसके लिये उक्त सेठजीने ५०००) एक मुश्त प्रदान किये व दो वर्ष तक जो कमी रहे उसको पूरा करना स्वीकार किया है। इसमें व्यवहारिक शिक्षाके साथ जैनधर्मकी शिक्षा प्रदान की जावेगी। १५ महाशयोंकी एक प्रबन्धकारिणी कमेटी बनाई गई। सेठ चुन्नीलाल झवेरचंद तथा बाबू शीतलप्रसादने बालकोंकी अपेक्षा कन्याओंकी शिक्षाकी

बहुत आवश्यक्ता बताई। उसी समय दातारोंने ९८४) का दान किया, जिसमें सेठ नवलचंदने अपने पुत्रके विवाहोत्सवमें २५०) व सेठ माणिकचंदजीने श्रीमती मगनबाईके नामसे १२५), छोटी पुत्री ताराबाईके नामसे १२५), व फुलकौरकी माताके नामसे १२५) इस तरह ३७५) दान किये। फिर सर्व भाई कुंभ कलश लेकर नवापुरा आए। शालाके मकानमें सरस्वती पूजन होकर २५ कन्याएं भरती हुईं जिनको णमोकार मंत्रके साथ२ पाठारम्भ कराया गया।

डिप्टी कमिश्नरकी मुलाकात।

ता० २५ मईको मधुवनमें सबेरे ७ बजे हजारीबागके डि० क० मि० केरी साहबसे जैनी लोग मिले। कलकत्तेसे बाबू धन्नूलाल आदि, बम्बईसे लाला प्रभुदयाल, पानाचंद रामचंद आदि, फीरोजपुरसे लाला देवीसहाय, जैपुरसे सेठ सर्वसुखदास आदि व श्वे० लोग राय बद्रीदास आदि एक साथ मिले। जैनियोंने बहुत कुछ समझाया पर साहबने यही कहा कि बंगले बनना निश्चित हो गया है। मंदिरोंके पास थोड़ी २ जगह छोड़ दी जायगी। आपलोग कल पहाड़पर सवेरे मिलें। वहां बाबू धन्नूलाल आदि ८ महाशय पहुंचे। साहबने टोंकोंके कुछ पास ही बंगले बनानेकी बात कही। सबके होश दंग हो गए। इन लोगोंने २ मासकी मोहलत मांगी पर साहबने कहा कि अगस्त महीनेमें छोटे लाट यहां आकर देखेंगे तब पट्टे दिये जायंगे। इससे दो मासके भीतर जो जैनियोंको करना हो कर लेवें। इस **भयानक खबर**-की सूचना कमेटीके महामंत्री--सेठजीको की गई। **सेठजी महा दुःखी** हुए। आपने ता० २ जूनको जैनमित्रमें एक सूचना सर्व

जैनियोंके लिये प्रकट की कि डि० क० के पास ४५० से अधिक तार पहुंचे व लोगोंने समझाया भी तब भी विचार नहीं बदला है। ता० २९ जूनके पहलेर भी अर्जियां पंचायतोंसे जावें।

शिखरजीकी रक्षाका ही ध्यान सेठजीके मनमें रात्रिदिन अब शिखरजीकी रक्षाका ही ध्यान था। आपने ता० ९ जूनको

बम्बईमें शिखरजीके निमित्त सभा। हीराबागमें एक आमसभा एकत्र की और खुर्जावाले सेठ रामस्वरूपजीको सभापति नियत किया। बम्बईसे जो डेप्युटेशन गया था उसका हाल दोशी पानाचन्द रामचंदने कहा। बड़े लाट व छोटे लाट व स्टेट सेक्रेटरीको अर्जी भेजनेके लिये और एक डेप्युटेशन जानेके लिये कमेटियां बनीं। इस कमेटीने अर्जी तैय्यार करके तीनों जगह बम्बई सभाकी ओरसे ता. १४ जूनको अर्जी भेजी। सेठजीने जैनमित्रमें प्रगट कराया कि ता: २९ जून तक और भी पंचायतें ऐसी अर्जियां या तार भेजें। ता. १८ जूनको फिर भी हीराबागमें एक सभा हुई उसकी सम्मतिसे भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीकी तरफसे सेठजीने एक तार बड़े लाट महोदयकी सेवामें भेजा, जिसका आशय यही था कि उस पूज्य पर्वतपर मांस मद्य शिकारादि नहीं हो सके इससे छोटे लाट साहबसे सुचना की जावे कि वे इस प्रस्तावको बंद रक्खें।

बम्बईमें स्त्री सभा। आरानिवासी बाबू देवकुमारजी दक्षिणकी यात्रा करके बम्बई आए थे। ता: २० जूनको दूसरे भोईवाड़ेके जिन मंदिरमें बाबू साहबकी धर्मपत्नी गुलाबदेईकी अध्यक्षतामें एक स्त्रीसभा हुई उसमें श्रीमती मगनबाईजीने धर्मशिक्षा और

धर्मपर प्रभावशाली व्याख्यान दिया तथा प्रति मास सभा का निश्चित किया गया।

ट साहेबके आनेकी सूचना।

सेठ माणिकचंदजी हर समय पवित्र पर्वतराजके उपसर्ग दूर करनेकी फिक्रमें ही रहते थे। ता: २८ जूनको खुरजेमें तीर्थक्षेत्र कमेटीका अधिवेशन करना विचार कर सर्व मेम्बरों व खास २ भाइयोंको बुलानेके लिये खास पत्र लिखे तथा पत्रोंमें प्रगट कराया कि छोटे लाट अगस्त मासमें शिखरजी जावेंगे सो सर्व पंचायतोंसे प्रतिनिधि भेजे जाने चाहिये।

जबलपुर बोर्डिङ्गका उत्सव और १०००) का दान।

सेठ माणिकचंदजी बम्बईसे शीतलप्रसादजीको लेकर खुरजे जाने वाले थे इसी बीचमें बाबू देवकुमार आरानिवासीसे भी आपने प्रार्थना की कि आप मेरे साथ चलें। पहले जबलपुर बोर्डिङ्गके वार्षिकोत्सवमें शरीक हों फिर खुरजा चलें। बाबू साहब सकुटुम्ब थे और दक्षिणकी यात्रामें बहुत दिन लगा चुके थे वहां भ्रमणकर मूडबिद्रीके प्राचीन ग्रंथ भंडारकी दुरुस्ती कराई। मूडबिद्री व कारकलमें संस्कृत पाठशालाका ध्रुव फंड कराया आदि अनेक उत्तमोत्तम कार्य किये तथा बम्बईमें भी एक बड़ा सरस्वती भंडार खोलनेके लिये श्रुतपंचमीके दिन सभा द्वारा उद्योग किया था, जिसमें बाबू साहबने ५ वर्षके लिये २५०) वार्षिक तथा सेठ माणिकचंदजीने १२५) वार्षिक स्वीकार किया था। सेठजी श्रीमती मगनबाई ललिताबाई आदिके साथ जबलपुर पधारे। ता०

२९ जून १९०७ को बाबू देवकुमारजीके सभापतित्वमें बो: वार्षिकोत्सवकी सभा हुई । रिपोर्ट सुनकर सर्व भाई कार्य्यसे प्रसन्न हुए और उसी समय २०८९) का चंदा हो गया, जि १०००) सेठजी व १०००) सिंगई नारायणदासजीने दिये विदेशी गरीब छात्रोंको वहीं सहायता देनेके लिये १०००) करीब छात्रवृत्ति फंड हुआ । इसमें भी सेठजीने २५०) और बाबू देवकुमारने ५१) दिये।

जबलपुरमें स्त्री सभाएं ।

बाबू देवकुमारजीके छोटे भाईकी विधवा स्त्री चंदाबाई वैष्णव धर्मसेवी वृन्दावननिवासी माता पिताकी पुत्री होकर भी देव समान धर्मात्मा देवकुमारके कुलके प्रसंगसे व अपने पूज्य पिता बाबू नारायणदास बी. ए. द्वारा दी हुई हिन्दी और संस्कृत विद्याके ज्ञानबलसे जैनधर्मकी परीक्षा कर उसे ही अपने जीवनका दृढतासे आभूषण बनाकर जैन स्त्रीसमाजमें ज्ञानप्रचारकी भावना करनेवाली भी मौजूद थीं । ता० २३, २५, २९ को स्त्रीसभाएं बड़े जोर-शोरके साथ हुई जिसमें ललिताबाई मगनबाई व चंदाबाई तथा अन्य जबलपुरकी बाइयोंके व्याख्यान हुए । कन्याशालाएं यहां चल रही थीं । परीक्षा लेकर पारितोषिक बांटा गया व २८१॥) का नवीन चंदा भी स्त्रीसमाजने दिया । लेडी सुप० ट्रेनिंग कालेज भी ता० २९ जूनको पधारीं थीं ।

जबलपुरमें शिखरजीकी सभा ।

बाबू देवकुमारजीके प्रयत्नसे जबलपुरमें शिखरजीके उपसर्ग निवारणार्थ एक बृहत् सभा हुई । एक कमेटी बनी । सिंगई नारायणदासजीने संस्कृतशाला खोलना स्वीकार किया व एक भोजनालय भी खोला, जिससे असमर्थ दिगम्बर जैनी ३ दिन तक भोजन पा सकें । सेठ माणिकचंदजी

जबलपुरसे सीधे खुरजा आए। स्टेशनपर श्रीमान् पंडित सेठ मेवाराम-जी बहुतसे भाइयोंके साथ उपस्थित थे। सेठजीका बहुत सन्मानसे स्वागत करके एक उम्दा कोठीमें ठहराया। मुख्य २ बहुतसे भाई आए थे। सर्वका रानीवालोंने खान पानादिसे खूब ही सत्कार किया।

शिखरजीके रक्षार्थ १००००)का दान।

ता. २८को राय बहादुर सेठ अमोलकचंदजीके सभापतित्वमें सभा हुई जिसमें शिखरजी रक्षार्थ भारी चंदाके करनेकी बात हुई। यह भी तय हुआ कि रुपया खर्च करके कुछ पहाड़को अपने कब्जेमें कर लिया जाय इसके लिये १८ महाशयोंकी कमेटी बनी और चंदेकी सूची खोली गई। जब सेठजीने सर्वसे निवेदन किया कि आप लोग योग्य रकम कहें तब आध घंटे तक कोईने कुछ न कहा। लाला देवीसहाय फीरोजपुरवाले शिखरजीकी रक्षार्थ बड़े ही प्रयत्नशील थे। आपने सर्वसे पहले ५१००) कहे तथा अपने साथके लाला डालचंदजीकी ओरसे ५५००) कहे। तब सेठ माणिक-चंद पानाचंद बम्बईकी ओरसे सेठजीने १००००) कहे, तब खुरजे वाले सेठ हरसुखराय अमोलकचंदने १५०००) लिखाए। लाला रूपचंद सहारनपुरने ५१००) कहे, लाला सुलतानसिंह दिहलीने ४१००) कहे। लाला ईश्वरीप्रसाद दिहलीने २१००) कहे। बाबू प्यारेलाल वकील दिहलीने १५००) कहे। लाला देवीसहाय सोहनलाल रावलपिंडीने २५००) कहे। इस प्रमाण चंदा शुरू हो गया। वहांसे सेठजी अजमेर गए। वहां रायबहादुर सेठ नेमीचंदजीने भी १५०००) भरे।

सभामें सेठ हुकमचंदजी ईन्दौरसे नहीं आए थे, तब सेठजी इन्दौर गए। वहां रात्रिको बड़े मंदिरजीमें

सेठजी इन्दौरमें।

सभा हुई। शीतलप्रसादजीने सर्व हकीकत सुनाई, तब सेठ हुकमचंदजीने सर्वसे सम्मति करके तुर्त २९०००) का चंदा इन्दौर पंचायतीका कर दिया। वहांसे सेठजी बम्बई लौटे। पत्रद्वारा चंदेका उद्योग किया, तब शोलापुर पंचानने २५०००) व जैपूर पंचानने २१०००) के चंदेकी स्वीकारता भेजी। इसी तरह सेठजीके बार बार पत्रव्यवहारसे बड़ी रकमें और भी स्वीकृत हुई जैसे—

९९२०) पंचान जिला बिजनौर मा० साहु सलेखचंद जुगमंदरलाल, नजीबाबाद
५०००) पंचान गया
२९४१) ,, मऊ छावनी
२१००) राजा ज्ञानचंद, सिकन्द्राबाद
२०१९।-) पंचान, नसीराबाद
२०००) ,, देहरादून
१५००) श्रीमंत सेठ पूरनसाह, सिवनी
११००) पंचान, बड़नगर
११०१) ,, ललितपुर
१०७३) ,, नीमाड़ प्रांत
१०७१) ,, पंढरपुर
१०३१) ,, अलवर
१००१) रा० रा० हरधर भरणप्पा, रायचूर

१००१) राजा फूलचंद, लश्कर
१०००) पंचान, बनारस
१२००) ,, मादरा (गुजरात)
२०००) ,, बांसवाड़ा, जिला उदेपुर
२५००) ,, ईडर
२०००) मित्रसेन जंबूप्रसाद सहारनपुर
२१००) बद्रीदास दरबारीलाल इच्छाराम क० अम्बाला

दो लाख रुपयेका चंदा १०-१५ दिनके भीतर सेठ माणिकचंदने अपनी दानवीरता व उदारताके असरसे करीब **सेठजीके उद्योगसे** **रुपयेका चंदा** कर लिया। जो स्वयं दान करता है वह दूसरोंसे भी दान करा

२ लाखका चंदा। सक्ता है। सेठजीके वचनोंको उल्लंघन करना सहज बात नहीं थी। जिससे जो कहते वह मान लेता था। सेठजी बड़े न्याय चित्त, विचारवान, गंभीर, सहनशील, परिश्रमी तथा धर्म व जातिकी सेवार्थ अपने तनको विदेश भ्रमण आदिके अनेक कष्ट देकर भी न्योछावर करनेवाले थे। यह इन्हींकी दम थी जो बातकी बातमें इतना भारी चंदा हो गया। वृद्ध लोग कहते हैं कि जहां तक हमारा होश है इतना भारी चंदा कभी नहीं हुआ था।

जो तार तीर्थक्षेत्र कमेटीने ता. १८ जूनको बड़े लाट साहबकी सेवामें भेजा था उसका जवाब जी. बी.

बड़े लाटका पत्र। एच. फेल डिप्टी सेक्रेटरी गवर्नमेन्ट आफ इन्डियाने अपने पत्र नं० १७४९ ता. १६ जुलाई १९०७ को सेठजीके पास इस आशयका भेजा कि "छोटे

लाट पूरी जांच करने जांयगे वहां जैनियोंको अपना हाल कहनेका पूरा मौका दिया जायगा, तथा जब तक छोटे लाट जांच न कर लेंगे बंगलोंके लिये पट्टे न दिये जांयगे "-वे कुछ वाक्य ये हैं-(I am to add that no action whatever will be taken towards granting leases on the Hill until the enquiry has been held by His Honor the Lieutenant Governor.)

सेठजीने बातको बढ़ते हुए देखकर बम्बईमें सलाह की कि यदि राजा पालगंज द्वारा बंगलोंकी इन्कारी

सेठजीका परस्पर हो जाय व श्वेताम्बरी लोग मिलकर उद्योग

निबटानेका प्रयत्न। करें तो शायद शीघ्र यह उपसर्ग दूर हो इसलिये आपने मिती आषाढ़ सुदी ४ ता. १४ जुलाईके दिन बम्बईसे अपने भानजे **सेठ चुन्नीलाल झवेरचंद**को लाला प्रभुदयालजी, सेठ पदमचंदजी, मि. चुन्नीलाल बी. ए. सुप० जैन बोर्डिंग बम्बई, आदि भाइयोंके साथ गिरीडी भेजा। आरासे बाबू देवकुमार व बाबू किरोड़ीचंद भी आए। बहुत कुछ चेष्टा की। राय बद्रीदास कलकत्ताकी असम्मतिसे दि० व श्वे० में मेल न हुआ और न राजा ही के द्वारा कोई सफलता हुई।

इस समय वहां वर्षात बडीभारी पडी थी। पालगंज जाने आनेमें वर्षाकी बाधा इन सब लोगोंने सहन की, क्योंकि बराकर नदीको पार करना पड़ता है जो वर्षातमें बहुत बढ़ जाती है। आबोहवाकी खराबीसे करीब २ सर्व पार्टी **बीमार** हो गई। **सेठ चुन्नीलाल झवेरचंदको** कलकत्तेमें टांगमें ऐसा फोड़ा

हो गया जिससे दुःखित हो वे सर्वको छोड़ सीधे बम्बई आए और बीमार हो गए।

ता: १ अगस्तको फिर पहाड़पर कमिश्नर साहब आए। उस वक्त भी तीर्थभक्त बाबू धन्नूलाल अटार्नी कमिश्नरसे मुलाकात। सेठ परमेष्टीदास व बम्बईके लोग आदि मिले। सब लोगोंने इन्कार किया कि हम पर्वतकी पवित्रताकी कुछ भी हानि नहीं सहन कर सक्ते।

बम्बईके सेठ पद्मचंद व प्रभुदयालजी भी बीमार होकर लौटे व कई मासतक बीमार रहे। चुन्नीलाल सुप० का मगज फिर गया। वे बहुत दिनों तक मेड हाउसमें रहे। जब २ जीवोंके तीव्र कर्मका उदय हो आता है तब तक तप, ध्यान, पूजा कैसा भी धर्म कार्य करे उस उदयजनित कर्मका फल भोगना ही पड़ता है। बड़े२ मुनियोंको भी तीव्र कर्मोदयसे उपसर्ग सहना पड़ा है। सेठजी चुन्नीलालको बीमार देख बहुत दुःखित हुए तथा योग्यरीतिसे दवाईमें लग गए। इतनेमें सेठजीको डि. क. हजारीबागसे सूचना मिली कि लाटसाहब ता० २८-२९-३० अगस्तको पहाड़ पर आवेंगे। सेठजीने ४ अगस्तको सर्व जैनियोंको प्रतिनिधि भेजनेके लिये जैनमित्र ता. ११ अगस्त द्वारा सूचना की।

सेठ माणिकचंदजीको भी ता० २८ के लिये कई दिन पहलेसे जाना था पर सेठ चुन्नीलालको ऐसी बीमारीकी दशामें छोड़कर जाना आपने ठीक नहीं समझा और चुन्नीलालजीसे अपने न जानेकी बात कही तब **साहसी तीर्थभक्त** चुन्नीलालने कहा-"**मामा, मारी फिकर करता ना, तमे**

शिखरजी जाओ अने पहाड़नो झगड़ो मटाड़ो "
यह भीरुजके शब्द सुनकर सेठजीने जानेका निश्चय किया। सेठजी शीतलप्रसादजी व मैनेजर कमेटीको लेकर शिखरजी आए और यहां आनेवालोंके आरामका प्रबन्ध करने लगे। सेठ मेवारामजी भी कई दिन पहलेसे आगए थे और खास २ लोगोंको अर्जेन्ट तार देकर बुलाया था। ता० २६ से २७ तक २६०० दि० जैनी भिन्न २ प्रान्तोंके आगए थे। बंगालसे बा. धन्नूलाल अटार्नी, सेठ परमेष्टीदास आदि, पंजाबसे लाला ईश्वरी-प्रसाद, लाला रामलाल फीरोजपुर आदि, युक्तप्रान्तसे बा० जुगमन्धर-दास सहायक महामंत्री महासभा, रायबहादुर नत्थीलाल खुरजा आदि, मालवासे सेठ हुकमचंद, अमोलकचंद आदि, राजपुतानासे रायबहादुर सेठ नेमीचंद व रा० ब० घमंडीलाल आदि, बम्बईसे सेठजी व चौगले बी. ए. एलएल. बी. वकील बेलगामे आदि, मध्य प्रदेशसे सेठ पूरणसाह, सुखलालमल, नेमिलाल आदि, दक्षिणसे अनन्त राजय्या मैसूर, भट्टारक लक्ष्मीसेन, राजा ज्ञानचंदजी आदि।

बम्बईसे सेठजी शिखरजीके लिये रवाना हुए थे कि एक दिन बाद ही मिती श्रावण वदी १ सं० १९६३

सेठ चुन्नीलाल झवेर- (गुज०) तारीख २४ अगस्तको प्रातःकाल **चंदका स्वर्गवास।** श्रीजिनेन्द्रका व शिखरजीका ध्यान करते सेठ चुन्नीलालका आत्मा इस क्षणिक देहको छोड़ स्वर्गधाम पधारा। आपने मरते समय ५०००) धर्मादेके निकाले।

यह बड़े भारी **तीर्थभक्त** थे। इन्होंने तीर्थोंके उद्धारके लिये बहुत कुछ परिश्रम उठाया था। श्री शिखरजी और पावापुरी-

जीके दिगम्बर जैन कारखानोंकी व भंडारकी रक्षा आपके बड़े भारी जातीय परिश्रमका फल है । ३० वर्षकी उमरसे आप बराबर नियमसे स्वाध्याय करते थे । सं० १९४२ से १९५५ तक श्री शिखरजी, गोम्मटस्वामी, गिरनारजी, शत्रुंजा, केशरिया आदिकी अनेक तीर्थयात्रा करके धर्ममें द्रव्य लगाया । श्री गजपंथाजी और शोलापुरके बम्बई प्रांतिक सभाके उत्सवोंका बहुत ही प्रशंसनीय प्रबन्ध सेठ चुन्नीलालने किया था । इनकी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण थी। व्यापारमें भी बहुत कुशल थे । यह सेठ माणिकचन्दके कुटुम्बके हर काममें दाहने हाथ थे । इनके दो पुत्री हुई थीं, जिनमें इनके मरते समय एक पुत्री कीकीब्हेन २१ वर्षकी मौजूद थी ।

सेठ चुन्नीलालकी धर्मपत्नी जड़ावबाईकी धर्ममें विशेष लग्न है । थोड़े दिन हुए इसने २५००) खर्चकर सुरतके शांतिनाथजीके मंदिरजीमें चांदीकी वेदी बनवाई है तथा मांगीतुंगी और पावागढ़में मंदिरोंमें संगमर्मर लगवाया है ।

यह स्वाध्याय पूजन नित्य करती है व धर्मकार्योंमें नित्य थोड़ा बहुत दान करती रहती है । स्त्रीशिक्षाकी उत्तेजनापर भी ध्यान है। सेठ चुन्नीलालने केवल ३९ वर्षकी आयु पाई । इतनी उम्रमें आपने जैन समाजकी जो सेवा बजाई उससे यह समाज आपका सदा कृतज्ञ रहेगा । तीर्थभक्तिमें अपूर्व परिश्रम करने व मरण समय श्री शिखरजी हीका ध्यान करनेसे अवश्य आपको उत्तम गतिका लाभ हुआ होगा

सेठजीको चुन्नीलाल-की मृत्युकी खबर ।

सेठजी मधुवनमें तीर्थरक्षामें अनुरक्त थे कि ता० २६ को तार पाया कि सेठ चुन्नीलालका देहान्त हुआ । सुनते ही आपको यकायक मूर्छा आ गई । जैसे किसीका दाहना हाथ टूटनेसे दुःख होता है ऐसा दुःख सेठजीको हुआ । थोड़ी देरमें सचेत हुए, फिर भी शोकमें बैठ गए । आंखोंसे आंसुओंकी धारा बहने लगी । सेठजीको यह शोक इस कारणसे नहीं हुआ था कि वह इनके भानजे थे, पर शोकका कारण यह था कि तीर्थोंकी रक्षामें व बम्बई प्रान्तिकसभाके कामोंमें जो अपूर्व सहायता प्राप्त होती थी वह बंद हो गई । शीतलप्रसादजी पासमें ही थे । सेठजीको अनेक दृष्टांत देकर संसारकी असारता व शरीरकी क्षणभंगुरता समझाई तथा तीर्थभक्तिमें निश्चल ठटे रहनेकी प्रेरणा की । सेठजी स्वयं भी विचारशील थे । अंतर्मुहूर्त ही क्लेशित परिणामी रहे फिर तुर्त सचेत होकर अपने उसी तीर्थभक्तिके काममें लग गए । किसीसे उस बातका वर्णन न किया, न कोई जान ही सका ।

शिखरजीपर लोर्ड फ्रेज़रका आना ।

शिखरजीमें ता० २६ को बीसपंथी कोठीमें दिनके एक सभा **लाला सुलतानसिंह** दिहलीके सभापतित्वमें हुई जिसमें तीर्थक्षेत्र कमेटीद्वारा तयार किया हुआ मेमोरियल शीतलप्रसादजीने सुनाकर मंजूर कराया और मेम्बरोंके दस्तखतसे पहाड़पर लाट साहबके पास दूसरे दिन भेजा गया । फिर लाट साहबसे मिलनेके लिये प्रतिनिधियोंकी एक नामा-

बली लिखी गई । रात्रिको भी मंदिरजीमें सभा हुई । कुल नाम ६९ चुने गए । ता० २७ को सवेरे लाट साहब आए । दिगम्बरी मंदिरजी व धर्मशालाका निरीक्षण कर पर्वतपर एक बंगलेमें गए तथा ता० २८ को सवेरे प्रतिनिधियोंको मिलना था । लाट साहबने थोड़े ही आदमी बुलाये थे तब ६५ मेंसे २८ नाम छांटे गए । सबेरा होते ही कोई डोलीपर कोई डोली न मिलनेसे पैदल रवाना हो गए । राय ब० घमंडीलाल, लाला ज्ञानचंद, सेठ हुकमचंद, बाबू धन्नूलाल अटार्नी, राय० ब० नत्थीलाल, लाला रामलाल आदि १९ दिग० ठीक समय पर पहुंचे उनको लेकर लाट साहब पार्श्वनाथस्वामीकी टोंकसे कुंथुनाथस्वामीकी टोंक तक आए फिर सीतानाले तक आए । श्वेताम्बरियोंको भी बुलाया था पर इनमेंसे कोई न पहुंच सका । उस दिन सर्व ही दि० यात्री धोए हुए धोती डुपट्टे पहनकर पूजाकी सामग्री लेकर पहाड़ पर बन्दनार्थ गए थे । लाला साहबके दिलमें चारों ओर नग्न सिर यात्रियोंको पूजा करने देखनेसे बडा भारी प्रभाव पड़ा । बहुतोंसे लाट साहबने बात भी की । इसदिन बहुतसे यात्रियोंने उपवास किया । सेठजी पैरमें चोट होने व डोली न मिलनेसे पर्वतपर न जासके । जैनियोंने अच्छी तरह पर्वतकी पवित्रता समझाई । लाट साहब २ बजे बंगलेपर लौटे तब राय बद्रीदास आदि ७-८ श्वे० व कुछ दिगम्बरी मिले । इस अवसर पर श्वेताम्बरी करीब १०० के ही कुल आए थे जब कि दिगम्बरी २५०० के करीब जमा हुए थे । इस समय कोई बात नहीं की । ता० २९ को सवेरे लाट साहब नीचे उतरे । तथा दिगम्बरी मंदिरमें कपड़ेके जुते पहनकर गए । वहांसे आ लक्ष्मीसेन भट्टारक कोल्हापुरसे मिले । उन्होंने

संस्कृत श्लोक कहकर आशीर्वाद दिया । वहांसे मंडपमें आए जिसमें सर्व दिगम्बरी कायदेसे बैठे थे । प्रतिनिधियोंसे परिचित होनेपर लाला मुलतानसिंह रईस देहलीने एड्रेस पढ़ा और मनोहर कास्केटमें भेट किया । यह कलकत्तेमें बाबू धन्नूलालजीकी मार्फत तय्यार हुआ था । इसके उत्तरमें लाट साहबने एक स्पीच दी जिसमें जैनियोंको संतोष नहीं हुआ तथापि आखरी हुक्म बंद रक्खा । लाट साहबके जानेपर तीन बजे बड़ी भारी सभा सेठ पूरणसाहके सभापतित्वमें हुई जिसमें व रातकी सभामें पर्वत रक्षार्थ चंदेकी उत्तेजना दी गई व पर्वत रक्षार्थ एक कमेटी बनाई गई जिसका मुख्य भार बाबू धन्नूलाल और सेठ परमेष्टीदासको दिया गया । लाट साहब चलते वक्त दिगम्बरियोंसे बात करनेको दो प्रतिनिधिके नाम मागे गए थे सो इन्हीं दोनोंके नाम सेठजीने भेज दिये तथा कलकत्तेमें पर्वत रक्षाका दफ्तर हुआ जिसमें मौजीलाल क्लर्क जो बम्बई प्रान्तिक सभामें था उसे नियत कर दिया ।

सेठजी शिखरजीसे चलकर गयाजी होते हुए काशी आए । वहां ता० ३ सितम्बरको प्रथम वार्षिक अधिवेशन था । यद्यपि सेठजीको चुन्नीलालजीके वियोगका बहुत दुःख था परंतु आप स्याद्वाद पाठशालाके सभापति थे, आपने ही यह मिती नियत की थी इससे आपको आना ही हुआ । वास्तवमें सेठजीमें धर्म व जाति प्रेम ऐसा ही था जिससे वह अपने शोकादि कषायके निमित्तसे कभी धार्मिक कामोंको बंद नहीं कर सक्ते थे । इस समय शिखरजीसे लौटते हुए

काशी स्याद्वाद पाठशालाके वार्षिकोत्सवमें सेठजी ।

सेठ चुन्नीलाल जवेरचन्द्र बम्बई.

(देखो पृष्ठ ५२३)

J. V. P. Surat.

लाला जुगमन्धरदास नजीबाबाद आदि अनेक सज्जन काशी आ गए थे। पाठशालाके मकानमें ही सभा हुई। बाबू देवकुमारजीके पेश करने और शीतलप्रसादजीके अनुमोदनसे पंडित रामभाऊ नागपुरने सभापतिके आसनको ग्रहण किया। पं० माणिकचंद, उदयलाल, कुमारैय्या, निद्धामल, मक्खनलाल आदि छात्रोंके व्याख्यान हुए। दो वर्षकी रिपोर्ट सुनकर सर्वको बहुत संतोष हुआ। छात्रवृत्ति फंडकी अपील बा० देवकुमारने की। चिरंजीलालजी हिसारने अनुमोदन किया तब उसी समय करीब ५००) के फंड हो गया जिसमें २००) सेठ माणिकचंदजीने व १००) देवकुमारजीने दिये। फिर अध्यापकोंको भेट व छात्रोंको इनाम दिया गया जिसमें वर्तमानमें समाजमें काम करनेवाले विद्वानोंको उस दिन विद्यार्थीकी अवस्थामें ७) माणिकचंदजी, ६) गणेशप्रसादजी, ३) कुमारैया, ३) व्रजलाल, २) बद्रीप्रसाद आदिको मिले तथा नागपुरके सेठ नेमीसाहने व्याख्यानोंसे प्रसन्न हो माणिकचंदजीको ४), कुमारैय्याको ४), उदयलालको २), मक्खनलालको २), निद्धामलको २) आदि पारितोषिक दिया। काशीसे सेठजी बम्बई आए। और शेष भादों मास व दशलाक्षणी धर्मसेवनमें विताई।

अहमदाबाद बोर्डिंग-का वार्षिकोत्सव।

सेठ प्रे० मो० दि० जैन बोर्डिंगका ४ था वार्षिकोत्सव आसौज सुदी १४ ता० २० अक्टूबर १९०७ को था। उसमें शामिल होनेके लिये सेठजी शीतलप्रसादजीके साथ अहमदाबाद आए। बम्बईसे माता रूपाबाई, लल्लुभाई लक्ष्मीचंद व परोपकारी मंत्री परीख लल्लूभाई प्रेमानंद

एल० सी० ई० आदि आए थे। और सूरतसे मूलचन्द किसनदास कापड़िया भी आए थे। प्रोफेसर आनन्दशंकर बापूभाई ध्रुव एम० ए० एलएल० बी० के प्रमुखत्वमें जल्सा हुआ। गुजरात विभागसे ४०० गृहस्थ आए थे। प्रमुख साहब व चीनूभाई माधोभाई सी० आई० ई० ने विद्यार्थियोंको बहुत बोधदायक उपदेश दिया। बोर्डिंगके सहायतार्थ ११००) के अनुमान द्रव्य आया। इस समय छात्र ३५ थे।

"दिगंबर जैन" मासिकके लिये प्रयत्न।

सेठजीने रात्रिको आमोदवाले हरजीवन रायचंदको 'दिगम्बर जैन' पत्र न निकालनेके कारण बहुत कुछ कहा तब हरजीवनजीने बिलकुल इनकार कर दिया। सेठजी उदास हो गए और विचारने लगे कि किसको सम्पादक किया जाय। इतनेमें शीतलप्रसादजीने सूरतनिवासी **मूलचंद किसनदास** कापड़ियाकी तरफ इशारा करके कहा कि यह नवयुवक उत्साही, धर्मप्रेमी व कुछ शास्त्रका ज्ञाता मालूम होता है, उसे ही सम्पादक बनाना चाहिये।

मूलचन्द किसनदास कापड़ियाको संपादक होनेकी सेठजीकी सूचना।

पहले तो सेठजीके ध्यानमें यह बात नहीं आई चुप हो रहे, तब शीतलप्रसादजीने अपने अनुभवसे कहा कि यह उत्साही हैं। यदि उद्योग करेंगे तो अवश्य पत्रको चला लेंगे। तब सेठजीने मूलचन्दजीको **सम्पादक** होनेको कहा, सुनते ही मूलचंदजी चौंक पड़े और बोले कि मैंने आजतक कभी एक लेख भी नहीं लिखा है। मुझे इसका अनुभव बिलकुल नहीं है। मैं व्यापारमें

फंसा हूं। मैं पत्रकी सम्पादकी कैसे कर सकूंगा? तब सेठजीने समझाया कि तुम साहस करो तथा हरजीवन रायचंदजी सहायता करेंगे। छोटेलाल अंकलेश्वरने भी लेखादिसे मदद देनेका वादा किया फिर भी मूलचंदजीने इनकार किया तब शीतलप्रसादजीने कहा कि साहस करो मासिकपत्र चलाना कोई बात नहीं है हमने तो साप्ताहिक पत्रको लौकिक बहुतसा काम करते हुए भी चलाया है। बारबार कहनेसे मूलचंदजीको अंतरंग ज्ञान शक्तिने गवाही दी कि तू कर सकेगा। मूलचंदजीने उस समय बेमनसे इस बातको स्वीकार कर कहा कि मैं सूरत जाकर इसके लिये यथाशक्ति प्रयास करूंगा। शीतलप्रसादजीने पीठ ठोकी। आज उसी मूलचंदजीने इस **दिगम्बर जैन** पत्रको इस सभाके पीछे ही कार्तिक मार्गशीर्षका सम्मिलित अंक निकालकर व बराबर उन्नत रूप व एक समान समय पर प्रगट करते रहकर इस सीमाको पहुंचा दिया है कि दिगम्बर जैन समाजके सर्व पत्रोंके ग्राहकोंसे अधिक ग्राहक इस पत्रके हैं अर्थात् अनुमान २००० हैं और इसे साधारण सर्व ही देशके जैनी भी रुचिसे लेते हैं। हिन्दी भाषी देशमें भी इसका अच्छा प्रचार है। प्रति वर्ष खास अंक अनेक विद्वानोंके उत्तमोत्तम लेख व अनेक चित्र सहित १५० व २०० सफोंका निकालकर अच्छा सन्मान प्राप्त किया है। जैनियोंके और पत्र हरवर्ष जब घाटा सहन करते हैं तब यह पत्र ही नफा करके उसे धर्मद्रव्य समझ उसे पत्रकी विशेष उन्नति व उपहारकी पुस्तकोंके देनेमें लगाता है। इस बोर्डिंगमें चैत्यालय शुरूसे ही था। यह सेठजीका कायदा रहा है कि जितने छात्र बोर्डिंगमें रहें वे दर्शन अवश्य करें। यदि मंदिरजी निकट

नहीं है तो चैत्यालय अवश्य होना चाहिये। इसी भावसे बम्बई बोर्डिंग व कोल्हापुर बोर्डिंगमें चैत्यालय था वैसा ही यहां हुआ था। इसकी शोभा माता रूपाबाईके द्वारा दिनपर दिन बढ़ती थी। इस वर्ष माताने चांदीका छत्र, कटोरी व जर्मन सिलवरका कलस भेट किया था।

दि० श्वे० की फूट मेटनेको तारंगाजी की यात्रा।

सेठजी यहांसे लल्लूभाई लक्ष्मीचन्द और शीतलप्रसादजीको लेकर श्री **तारंगाजी** सिद्धक्षेत्र रवाना हुए। साथमें बम्बईके श्वे० भाई रायचन्द लल्लुभाई भी थे। यहां आनेका यह कारण था कि तारंगाजीपर एक कुंड है जिसकी मोहरीसे दि० श्वे० दोनों पानी लेते हैं। उस मोहरीको दि० कोठीके आदमी मरम्मत कराना चाहते थे। श्वे० के आदमियोंने झगड़ा करके रोका। फरियाद पुलिसतक गई। इसीको परस्पर निवटानेके लिये आना हुआ था। ता: २१ अक्टूबर ०७ को गुजरातके वड़नगर स्टेशनपर आए। वहां श्वे० सेठ फतहचन्द सांकलचन्दजी अनेक भाइयोंके साथ स्टेशनपर मिलने आए थे। उस दिन उन्हींके यहां ठहरे। उन्हींने ही कच्ची रसोई बनवाई थी जिसको श्वे० व दि० भाइयोंने अलग २ बैठकर एक साथ खाई थी। यहांसे ११ मील गाड़ीपर तलहटी आए। वहां कोई आश्रय स्थान नहीं था। पहाड़पर १ मील चढ़नेसे कोठी व धर्मशाला आती है यहां दि० के २ मंदिर हैं। एक बहुत प्राचीन है जिसमें मूलनायक **श्री संभवनाथ स्वामी**की बहुत मनोज्ञ संवत रहित प्रतिमा है। दूसरा मंदिर भी आदिनाथ स्वामीका

शोलापुरके सेठका बनवाया हुआ है इसीके आसपास ४ बेदियां हैं। श्वे० का एक बड़ा मंदिर ३० लाखकी लागतका कहा जाता है। सेठजीकी खबर पाकर सेठ पूनमचंद सांकलचंद आदि महाशय ईडरके व सुद्रासण, दांता, भाटवास, खेरालु आदिके दि० जैनी व कई श्वे० जैनी भी आए थे। ताः २२ की रात्रिको दोनों सम्प्रदायवालोंकी कमेटी होकर यह तय हुआ कि यह तीर्थ दोनोंका है। जिस आदमीने दि० को रोका उसने भूल की। वह नौकरीसे अलग किया गया तथा दि० कोठीवाले बगिचेके भीतरके रास्तेसे भी कुंडका पानी ले सकते हैं। दि० व श्वे० दोनों ही यात्रियोंके आरामके लिये अपने २ प्रबन्धक कार्यको कर सकते हैं, कोई किसीके काममें बाधा न डाले।

मुनीम द्वारा यह मालूम हुआ कि कोट शिलापर दो दिगंबरी देहरियोंको मरम्मत करनेमें श्वेताम्बरी रोकते हैं तब ताः २२ को सबेरे दि० श्वे० भाई सेठजीके साथ ऊपर गए। सेठजीका पैर एक अशक्त था तौभी आप बड़े साहसके साथ लकड़ीके सहारे पहाड़पर चढ़ चले गए। यह १ मील ऊंची है। १ देहरी छोड़कर दिगम्बरी देहरी मिली जिसको **चांद सूरजकी देहरी** कहते हैं उसके भीतर ही यह लेख था—

"संवत् १६२५ वर्षे पौष वदी ५ शुक्रे श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे आचार्य कुन्दकुन्दान्वय भट्टारक श्री शुभचंद्र स्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुमतिकीर्ति गुरुपदेशात्.......हूंमड ज्ञातीय गांधी नरपति भार्या...................."

इसी देहरीकी मरम्मतमें श्वे० रोकते थे सो यह दि० लेख श्वे०

भाइयोंको अच्छी तरह बंचाकर उनके मनका समाधान किया गया। आगे दूसरी एक दिगम्बरी देहरी है जिसमें बहुत मनोज्ञ दिग० जैन प्रतिमा पद्मासन विराजमान थी। यहां दिग० लोग पत्थर जड़ाना चाहते थे सो श्वे० रोकते थे। इस प्रतिमामें श्वे० मूर्तिके चिन्ह जो कमरमें कंडोरा व आसनमें लंगोटका चिन्ह होता है सो न थे तौभी श्वे० ने हर्ष सहित कबूल नहीं किया। नीचे आकर सेठ फतेहचंद सांकलचंदके सामने तीसरे पहर बात होकर यह तय हुआ—**चांद सूरजकी** देहरीको व उसके जानेके मार्गको दि० लोग दुरुस्त करें हमें कोई उजर नहीं है। पर दूसरी देहरीका झगड़ा बाकी रक्खा और यह कहा कि हम अपने संघ व साधुको दिखाकर निर्णय करेंगे, यद्यपि हमें दिगम्बरी मालूम होती है तबतक न इस पर चक्षु चढ़ेंगे न आंगीकी रचना होगी। पूजा दोनों करें—मरम्मत उस समय तक कोई न करावे।

यह **सिद्धक्षेत्र** इस कारणसे है कि यहांसे वरदत्त सागरदत्त आदि मुनीन्द्र व साढ़े तीन करोड़ मुनि मुक्ति पधारे हैं। सिद्ध-शिला दूसरी ओर है। वहां एक गुफाके पास दो स्थानोंपर पुरानी दिगम्बर जैन मूर्तियां हैं। ऊपर जाकर एक दिगम्बर देहरीमें चारों ओर ४ प्रतिमाएं व उनके चारों ओर चरण हैं। दोमें जीर्णोद्धार सम्वत् १६११ और १९२१ है। दिगम्बरी कारखानेका प्रबन्ध ईडरके पंचोंके आधीन था पर व्यवस्था कायदेसे नहीं होती थी, तब ता: २१ की शामको सब दिगम्बरियोंको समझाकर सेठजीने प्रबन्धकारिणी सभाके लाभ समझाए और तीर्थक्षेत्र कमेटीके आधीन एक प्रबन्धकारिणी कमेटी बना दी जिसके सभापति लल्लुभाई

लक्ष्मीचंद बम्बई, कोषाध्यक्ष मोतीचंद लीलाचंद ईडर व मंत्री वेणीचंद उगरचंद ईडर नियत हुए। नियमावली भी बनाकर देदी गई।

ता: २४ को चलकर दिग० व श्वे० पार्टी सीरपुर गांवमें आई। यहां श्वे० के ६० व ७० घर हैं।

झगडेका फैसला। रात्रिको उपाश्रयमें सभा हुई। शीतलप्रसादजीने एकता, विद्योन्नति, बालविवाह निषेध पर १॥ घंटा व्याख्यान दिया। डाह्याभाई नगीनदास श्वे० ने समर्थन किया। फिर सेठजीने **बालकोंकी छोटी अवस्थामें सगाई न की जावे** इस पर बहुत जोर दिया। यहां ऐसा बुरा कायदा था कि जो जैनी कन्या व पुत्रकी सगाई उसकी ४ वर्षकी उमर तक न करे उसे ५) दंड हो। इससे बहुतेरे जन्मते ही सगाई कर देते हैं। ऐसी खोटी बंदी करनेका कारण मुसल्मानोंका जोर जुल्म हो सक्ता है।

यहां जैनियोंके दो घड़े थे उसके मेटनेका अधिकार सेठजी, शीतलप्रसादजी, सेठ फतहचंद और डाह्याभाईके आधीन किया गया। सबेरे चलकर बड़नगर आए। सेठ फतहचंदके वहां ठहरे। उन्होंने बहुत सन्मान किया तथा सीरपुर गांवका फैसला लिखके दे दिया गया। ता० २६ को सूरत आए। फूलकौर कन्याशालाका निरीक्षण किया। उस समय ७९ कन्याएं थीं जिनमें २३ दिग०, १४ श्वे० व शेष उच्च हिन्दू वर्णकी थीं। एक अध्यापिका व दो अध्यापक पढ़ाते थे। जैन धर्मकी शिक्षाके साथ व्यवहारिक ज्ञान दिया जाता था।

तारंगीजी पर्वतपर पहले **केंगर** नामकी लकड़ी होती थी जो जलती व सड़ती नहीं है।

अग्निमें न जलने-वाली लकडी। ऐसी कुछ लकड़ियां श्वे० मंदिरमें लगी हुई पाई जाती है। अब भी यह लकड़ी यहांसे थोड़ी दूर ब्रह्माकी खेडके पास धूलिया बालरण गांवमें होती है।

यहांसे सेठजी बम्बई आए। मिती कार्तिक सुदी १४ ता० १७ नवम्बर ०७को दूसरे भोईवाडेके मंदिरमें

बम्बईमें शिखरजी-की सभा। शिखरजी सम्बन्धी सभा हुई। सेठ **माणिकचंद**जीके पेश करने व लल्लुभाई परीखके समर्थनसे सेठ सुखानंदजी सभापति हुए। इसमें शीतलप्रसादजीने पर्वतरक्षा कमेटी जो १२ महाशयोंकी शिखरजी पर बनी थी उसकी कार्रवाई सुनाई कि बाबू धन्नूलालजी छोटे लाटको समझानेके लिये दारजिलिंग गए व ता० ६ नवम्बरको फिर छोटे लाट शिखरजी आए तब सेठ परमेष्टीदास धन्नू बाबू आदि कई साहब मिले तब छोटे लाटने बहुत कठोर शब्द कहे कि हम पर्वतपर बंगले बनावेंगे, केवल टोंकके चारों तरफ कुल जमीन छोड़ देंगे। इस बातको सुनकर सभाने अदालती कार्रवाई करनेका प्रस्ताव किया व धन्नूबाबूको धन्यवाद पत्र भेजा जो वह अटार्नी होनेपर भी शिखरजीकी रक्षामें इतने दृढ़ प्रयत्नशील होकर दौड़धूप कर रहे हैं। सेठजीने सभाकी ओरसे खुरजेके सेठ हरसुखराय अमोलकचंदको खुरजेकी सभाकी सफलताके लिये धन्यवाद दिया।

बम्बई बोर्डिंगमें उत्सव।

माता रूपाबाईने सं० १९६० में १२३४ उपवासके उद्यापनमें २५००) बम्बई बोर्डिंग कमेटीको इस लिये सुपुर्द किये थे कि इसके व्याजसे हर वर्ष कार्तिक सुदी १५के दिन बोर्डिंगमें मंडलकी पूजा करके उत्सव किया जावे, उसीके अनुसार इस सं० १९६४ में भी हुआ। रात्रिको सभा हुई। अलवरके पं० महाचंद्रजीका संस्कृत विद्याकी आवश्यक्तापर भाषण हुआ। संस्कृत विद्यालयके परीक्षोत्तीर्ण छात्रोंको पारितोषिक और प्रशंसा पत्र दिये गए।

श्रीमती मगनबाईजीका आम व्याख्यान।

इधर जब सेठजी समग्र भारतवर्षके जैनियोंके महा हितकारी कार्यमें लगे हुए थे उधर इनकी दीर्घदर्शिनी, सुविचारधारणी पुत्री अपनी आत्मोन्नति करने तथा जैन स्त्रीसमाजके उद्धार व अपनी लेखन व व्याख्यानशक्ति बढ़ानेके प्रयत्नमें लगी थीं। अर्थप्रकाशिकाजी अच्छी तरह मनन करके आपने श्री पंचास्तिकायका संस्कृत टीकाके साथ मनन किया तथा बृहत् द्रव्यसंग्रहकी संस्कृत टीका देखी। ऐसे ही संस्कृत ग्रंथोंके देखनेका अभ्यास शीतलप्रसादजीकी संगतिमें होता रहा तथा लेख भी लिखकर इन्होंसे शुद्ध करा लेती थीं। सामायिक व ध्यानका अभ्यास भी सवेरे व शामको अच्छा होने लगा था। बम्बईमें एक हिन्दू यूनियन क्लब है उसकी ओरसे हिम ऋतुमें प्रति शनिवारको अनेक विद्वता पूर्ण व्याख्यान हुआ करते हैं। इस वर्ष वह हेमन्त व्याख्यानमाला सेठजीके मनोहर हीराबागके लेक्चर हॉलमें हुई। ता: ७ नवम्बर ०७को श्रीमती मगनबाईने 'आर्य स्त्रियोंके चरित्र' पर एक बहुत ही प्रभावशाली व्याख्यान दिया था।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाका वार्षिक अधिवेशन इस वर्ष कहां हो इसकी आपको बहुत बड़ी चिंता थी। मुंशी चम्पतरायजी महामंत्रीसे व बाबू देवकुमारजीसे व बाबू जुगमन्धरदास नजीबाबादसे पत्र व्यवहार करके कुंडलपुर क्षेत्र (दमोह) में उसके वार्षिक मेलेपर उत्सव करना इस लिये उचित समझा कि सेठजी इस क्षेत्र पर हो गए थे व बुंदेलखंडके दिगम्बर जैनियोंकी अवनति दशाको जान चुके थे। यहांके जैनियोंमें उन्नतिका पवन भरे, इसी आकांक्षासे निश्चय करके सेठ बिंद्राबनजी दमोहसे लिखा पढ़ी करके समझाया। उक्त सेठजीने महासभाको बुलानेके लिये निमंत्रण पत्र दफ्तर महा सभाको भेज दिया, तब महा सभाके दफ्तरसे इस जलसेकी सफलताके लिये तय्यारी होने लगी। इस समय महासभाके ज्वाइन्ट जनरल सेक्रेटरी बाबू जुगमन्धरदास रईस नजीबाबाद थे जो बहुत दिल लगाकर काम कर रहे थे। महासभाका काम इस समय बहुत जागृति पर था।

सेठजीका वार्षिक उत्सवोंके लिये उद्योग।

सन् १९०७ में सूरतके दिसम्बर मासके अंतिम सप्ताहमें राष्ट्रीय कांग्रेसका अधिवेशन होनेवाला था। इसकी स्वागतकारिणी सभामें सेठ माणिकचंदजी भी मेम्बर थे। गुजराती मिती कार्तिक वदी ४ को सूरतमें स्वागतकारिणी कमिटीकी सभा थी। इसमें सेठजी हरजीवन रायचंद आमोद, लल्लूभाई प्रेमानंद आदिको लेकर गए थे। कां-

सूरतमें कांग्रेस और जैन यंग मेन्स एसोसियेशन।

ग्रेसके लिये सभापति चुननेके लिये बैठक थी । इसी रात्रिको ७॥ बजे चंदावाड़ीमें लल्लुभाई प्रेमानन्द एल० सी० ई० के सभापतित्वमें एक सभा हुई । सेठ हरजीवन रायचंदने विद्योन्नतिपर भाषण दिया तथा "दिगम्बर जैन" पत्र मूलचंद किसनदास कापड़िया द्वारा शुरू होकर उन्नतिमें आवे ऐसी भावना प्रगट की । फिर सेठ माणिकचंदजी जे० पी० ने इसकी पुष्टता की और सभाजनोंका आभार माना और मूलचंदजीको पत्र चलानेमें उत्तेजना दी । सेठजीको मूलचंदजीपर अधिक प्रेम इसी कारणसे था कि यह सेठजी द्वारा स्थापित हीराचंद गुमानजी जैन पाठशाला सूरतका फलरूप एक रत्न था । इन्होंने व्याकरण साथ चंद्रप्रभु काव्य तक अभ्यास कर लिया था ।

सूरतमें जैनियोंकी अच्छी वस्ती है, इसलिये बाबू चेतनदास बी० ए० जनरल सेक्रेटरी, एसोसियेशनने वार्षिक जल्सा सूरतमें करना ठीक समझ कर सेठ माणिकचंदजी बहुत जोर देकर लिखा । सेठजीने मूलचंद किसनदास कापड़ियासे यह बात पत्रद्वारा प्रगट की । मूलचंदजी अभी ताजे ही ताजे जैन जातिके कार्यक्षेत्र–में आए थे । इन्होंने कुछ श्वेतांबरी सभासदोंसे वार्तालाप की और अति उत्साहसे सेठजीको लिख दिया कि सर्व प्रबन्ध हो जायगा । तब सेठजीने चेतनदासजीके साथ मूलचंदजीका पत्रव्यवहार कर दिया। ता० २२ नवम्बर १९०७ को चंदावाड़ीमें सर्व जैनियोंकी एक जाहर सभा नगरसेठ बाबूभाई गुलाबभाईके सभापतित्वमें हुई, जिसमें दि० श्वे० स्थानकवासी जैनियोंमेंसे १५० मेम्बरोंकी एक रिसेप्सन कमेटी नियत हुई, इसके **सभापति** सेठ माणिकचंद हीराचंद

जे० पी० हुए तथा एसोसिएशनके प्रमुख पदको जैपुरनिवासी बाबू गुलाबचंद ढड्ढा एम० ए० ग्रहण करें ऐसा निश्चित हुआ ।

पावागढ़में बम्बई प्रां० सभा। पावागढ़ बड़ौदाके पास सिद्धक्षेत्र है । जहांसे श्रीरामचंद्रके पुत्र लव और कुश और ५ करोड़ मुनि मोक्ष पधारे हैं । यहांपर बम्बई प्रान्तिक सभाका वार्षिक उत्सव मेलेके समय माह सुदी १२ से १५ तक करनेके प्रबंधार्थ ता० ७ दिसम्बर सन् ०७को हीराबागमें एक सभा हुई । सेठजी भी उपस्थित थे । जलसेका खर्च ११००) का तजवीज हुआ व सेठ लालचंद कहानदास स्वागतकारिणी सभाके सभापति नियत हुए । इस जल्सेके लिये सेठ हीराचंद नेमचंद-आनरेरी मजिस्ट्रेट शोलापुर सभापति नियत किये गए थे ।

द० म० जै० सभाका वार्षिक जलसा। इसी तरह दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका अधिवेशन जो प्रति-वर्ष हुआ करता है उसके प्रबन्धार्थ ता० १७-११-०७को चिंचलीमें सभा हुई जिसमें **सेठ माणिकचंदजी** स्वागत कमेटीके अध्यक्ष नियत किये गये ।

जैन यंगमेन्स एसो० सूरतमें। जैन यंगमेन्स एसोसियेशन कि जिसका नाम अब भारत जैन महामंडल है उसका नवमाँ वार्षिकोत्सव सूरतमें ता० २९-३०-३१ दिस०को नगीनचंद इन्स्टीट्यूट हॉलमें हुआ । बाबू चेतनदासजी, बाबू सुलतानसिंह वकील मेरठ, पं० अर्जुनलाल सेठी जैपुर आदि अनेक दिगम्बरी व अहमदाबाद भावनगर आदिसे श्वेताम्बरी स्थानवासी आए थे ।

नैयपुरवाले सेठ गुलाबचंदजी दड्ढाका स्टेशनपर अच्छी तरह स्वागत किया गया । पहली बैठकमें **सेठ माणिकचंदजीने** स्वागत कमेटीके प्रमुखकी हैसियतसे अपना भाषण पढ़ा तथा धार्मिक, औद्योगिक, स्त्रीशिक्षा, बालविवाह, वेश्यानृत्य निषेध, श्री सम्मेदशिखर, तीर्थोंके झगड़े, ऐक्यता आदि विषयोंपर विवेचन किया ।

ऐक्यताके सम्बन्धमें आपने कहा " मैं सर्व जैन प्रतिनिधियोंसे प्रार्थना करता हूं कि तीर्थोंके सम्बन्धमें जो किसी तरहका खराब भाव हो उसको निकाल देवें और परस्परके झगड़ोंको मिटानेके लिये एक सम्मिलित कमेटी बना लेवें । इन्हीं तीर्थोंके लिये कर्मबंध करानेवाले झगड़ोंके कारण हम लोग परस्पर मेल नहीं रख सकते, और इस एकताके अभावमें जैसे सिया और सुन्नी दो भिन्न २ संप्रदायके लोग एक होकर शिक्षा और सुरीतिका प्रचार करते हैं वैसे हम नहीं कर सक्के । "

धार्मिक शिक्षापर कहते हुए आपने कहा कि " धार्मिक शिक्षाके लिये शिक्षकोंकी प्राप्तिके लिये संस्कृत पाठशालाएँ भी खोलनी चाहिए, जिनमें ऐसी पद्धतिकी शिक्षा होनी चाहिये जो हमारे नए जमानेके लोगोंको समझानेमें अत्यन्त उपयोगी होवे । " गुलाबचंदजी दड्ढाने हिंदीमें भाषण दिया । कुल प्रस्ताव १२ पास हुए जिनमें खास ये थे—

१. शोलापुरके सेठ हीराचंद नेमचंद द्वारा अणाप्पा फडयाप्पा चौगले बी० ए० एलएल० बी० को सोनेका एक तमगा इसलिये दिया जाय कि इन्होंने **सर्वार्थसिद्धि** संस्कृत धार्मिक ग्रन्थकी

परीक्षामें सफलता प्राप्त की है। वह तमगा भेट दिया गया तथा अन्य भी विद्वान् धार्मिक शिक्षा लेवें ऐसी प्रेरणा की गई। वास्तवमें जब तक इंग्रेजीके ग्रेजुएट लोग धर्मके ऊँचे तात्विक ग्रंथोंको न जानेंगे तब तक जैन तत्वज्ञानका विस्तार नहीं हो सक्ता।

२. उदेपुर, बड़ौदा, जामनगर, राधनपुर, गोंडल, मोरवी व अक्कलकोटके अधिकारियोंने पशुवध बंद किया या घटाया इससे धन्यवाद दिया जाय।

३. सेठ माणिकचन्द हीराचंदजीने प्रस्ताव किया कि तीर्थक्षेत्रोंके झगड़ोंको मिटानेके लिये ६ दि० और ६ श्वे० सज्जनोंकी कमेटी नियत की जावे।

४. पं० लालनने प्रस्ताव किया कि जैनियोंके तीनों फिरकोंमें एकता रहे। इसका समर्थन सेठ माणिकचन्दजीने भी किया।

५. एक जैन बेंकमें तीर्थ व मंदिरोंके रुपये रोके जांय, इसकी व्यवस्थाके लिये कमेटीमें दि० की ओरसे सेठ माणिकचन्दजी नियत हुए।

६. शिखरजीपर बंगले बंधनेका विरोध सम्बन्धी प्रस्ताव रांदेरके नगरसेठ छोटालाल नवलचन्दने पेश किया, जिसका समर्थन बाबू शीतलप्रसादजीने भी किया।

७. लेजिसलेटिव कौंसिलोंमें जैनियोंका एक २ मेम्बर हो।

सेठ माणिकचंदजी और मूलचन्द किसनदास कापड़ियाके प्रयत्नसे बिना किसी अंतरायके ऐसोसियेशनका काम पूर्ण हो गया।

सुरतमें कांग्रेस गर्म और नर्म दलमें विभक्त हो गई। इससे अधिवेशन होते२ बन्द हो गया। इसमें श्री

सोशल कान्फरन्समें श्रीमती मगनबाई।

शिखरजी सम्बन्धी प्रस्ताव लेना भी स्वीकृत हुआ था तौ भी गर्मदलकी सभामें यह प्रस्ताव पास हुआ कि शिखरजी पर्वतपर बंगले बंधनेका विचार सर्कारको छोड़ देना चाहिये। कांग्रेसके मंडपमें सोशल कान्फरन्सका जलसा हुआ। उसमें **श्रीमती मगनबाई**-जीने स्त्री शिक्षा पर एक प्रभावशाली व्याख्यान दिया था।

इस अवसरको देखकर सेठ माणिकचंदजीके उत्साहसे फुलकौर कन्याशालेकी इनामकी सभा सूरतमें नवापुरामें

फुलकौर कन्याशाला-का उत्सव।

ता० ३१ दिसम्बरको सबेरे ९ बजे इन्दौर-वाले सेठ झुन्नालाल मुन्नालालके सभापतित्वमें हुई। बालिकाओंने गीत गाया। एक वर्षकी रिपोर्ट पढ़ी गई। इस समय ७९ कन्याएं थीं, इनमें ४० जैन थीं। लौकिक परीक्षाका फल ८० टका व धार्मिकका ९४ टका आया था। बाबू शीतलप्रसादजीने स्त्रीशिक्षाके लाभ दिखाए। मेरठके बाबू सुलतानसिंह वकीलने मिशनरी कन्याशालाओंमें जानेसे क्या२ गैरलाभ हैं सो बताए। फिर ओढ़नी, पुस्तकें व मिठाई आदि इनाममें दी गई। सभापतिने प्रशंसा करके ५१) दिये, फिर सर्व मंडली गाने बाजेके साथ कन्याशालाके मकानमें आई। वहांपर सेठजीने अपनी स्वर्गवासिनी पुत्री फुलकौरकी छवि खोल-नेकी क्रिया की। किसी फोटो या तसवीरका होना उसके गुणोंको प्रदर्शित करनेके लिये एक दर्पणके समान है। इस

समय सेठ माणिकचंदजीने १०१) कन्याशालाको भेट किये। जगह २ दानकी वर्षा करना ही सच्चा दानवीरपना है, जिस गुणसे सेठजी भलीभांति सज्जित थे।

आबूजीके मंदिरके उद्धारका प्रयत्न।

अजमेरसे श्री गिरनारजीकी यात्राको जाते हुए रास्तेमें आबूरोड (खरेड़ी) स्टेशन है। यहां श्वेताम्बरियोंकी दो व हिन्दुओंकी १ धर्मशाला है। कुछ परदेशी दिगम्बर जैनी हैं जिन्होंने दो मंजिला एक मंदिर बनवाया है। यहांसे आबू-पहाड़के दिलवाड़ा स्थान तक १८ मील सड़क है। टांगे इक्के बैल गाड़ी जाती हैं। रास्तेमें सिरोही राज्यकी चौकी व कुएं दो दो मीलके फासले पर हैं। दिलवाड़ामें ५ जैन मंदिर ९०० वर्षके पुराने ३७२७२१८८००) रु. की लागतके हैं जिसकी प्राचीन पत्थरकी शिल्पकला दुनियांमें अद्वितीय है। इन्हीं मंदिरोंके मध्यमें एक दिगम्बरी बड़ा प्राचीन मंदिर है, जिसमें २३ बिम्ब हैं। मूलनायक श्री कुंथनाथ स्वामी हैं। इसके सिवाय इन मंदिर समूहके बाहर सरकारी सड़ककी दाहनी ओर दिगम्बरी श्रावकोंका एक बड़ा मंदिर श्री नेमनाथ स्वामीका है इसमें भिन्न २ तीर्थंकरोंके १६ बिम्ब हैं। शिलालेखसे मालूम होता है कि इस जिनालयकी प्रतिष्ठा ईडरके भट्टारक द्वारा वि० सं० १४९४ वैसाख सुदी १३ को हुई थी। इस मंदिरमें प्राय: देव अतिशय हुआ करते हैं, जैसे रात्रिको १२ बजे दीपकोंका उजियाला व बाजोंका बजना। बीचमें कुछ कालसे दिग० ने अपने मंदिरोंकी तरफ बिल्कुल बेपरवाही कर रक्खी थी, श्वे० कारखानेकी तरफसे साधारण सम्हाल रहती थी, पर न पूजनादि

कायदेसे होती न जीर्णोद्धारकी ओर ध्यान दिया गया। जो यात्री वहां जाते उन्हें धर्म साधनमें व ठहरने आदिमें व मंदिरजीकी कुव्य-वस्थाको देखकर बहुत दुःख होता था। यह सब समाचार सेठजीको जबानी व पत्रद्वारा मालूम होते रहते थे, इसलिये इस क्षेत्रका सुप्र-बन्ध किस तरह हो यह ही बड़ी भारी चिंता सेठजीको थी। अजमेरके एक जवाहरातके दलाल पन्नालाल दिगम्बर जैनी थे, जो बहुधा सेठजीको बंबईमें मिला करते थे। एक दफे इनसे आबूजीका वर्णन आगया, तब पन्नालालजीने कहा कि आबूमें मेरे एक मित्र **बाबू पूनमचंद कासलीवाल** एजन्ट साहबके दफतरमें अकॉन्टेन्ट हैं यह बड़े धर्मात्मा हैं। मैं इनको आबूजीकी व्यवस्थाके लिये ज़ोर देकर लिखता हूं। आप कमेटी द्वारा पत्रव्यवहार करें। तब सेठजीको बड़ा हर्ष हुआ। दफतर द्वारा ता० १ नवम्बर १९०७ को पूनमचंदजीको आबू पत्र लिखा तथा दिगंबरी मंदिरोंका प्रबन्ध अपने हाथमें लेनेके लिये पूरा अधिकार दिया। पूनमचन्दजीका दबाव सबपर था। आपने श्वेताम्बरियोंसे मिलकर बहुत समाधानाके साथ प्रबन्धको अपने हाथमें लिया। सेठजीने अपनी तरफसे पूजाका सामान वर्तन और शास्त्र भेजे तथा कमेटीसे १ पूजारीको भिज-वाया। ता० २१ फर्वरी १९०८ से पुजारी और अन्य ८ सेवक नियत किये गये और दोनों मंदिरोंमें शास्त्रानुसार अष्टद्रव्यसे पूजन प्रक्षाल होने लगा। फिर सेठजीने यात्रियोंके आरामके लिये धर्म-शालाके वास्ते लिखा। उस समय अलग जमीन न मिलती हुई देख-कर पूनमचन्दजीने उस बड़े मंदिरजीके हातेमें ही चारों ओर धर्मशाला बनवाना ठीक समझा। तब सेठ माणिकचन्दजीने पुराने बरांडेमें ४

कोठरियां व सामने ४ वरांडा और १ रसोड़ा बनवानेकी परवानगी अपनी ओरसे दी । २, ३ वर्षके भीतर रायबहादुर सेठ नेमीचंद, हरमुखराय अमोलकचंद, विनोदीराम बालचंद, माणेकबाई बम्बई, आदिको उपदेश देकर पूनमचंदजीने १५० मनुष्योंके ठहरने योग्य स्थान बनवा दिया । हालमें पूनमचंदजी कोटामें हैं । प्रबन्ध आप ही करते हैं । सेठ साहबके तन मन धनके योग देनेसे और पूनमचंदजीके पूर्ण परिश्रमसे श्री आबूजीका प्रबन्ध बहुत अच्छा हो गया है । इन दोनोंको इस क्षेत्रका उद्धारक कह सक्ते हैं ।

द० म० जैन सभा व श्राविकाश्रम कोल्हापुर ।

द० महाराष्ट्र जैन सभाका दशवां वार्षिकोत्सव पौष सुदी १४ से वदी २ तक ता: १७ जनवरीसे २० तक श्रीस्तवनिधिक्षेत्रमें बड़े ठाठसे हुआ । इसमें देशभक्त रा० रा० गोपालकृष्ण देवधर एम० ए० व श्रीधर गणेश बी० ए० आदि कई सज्जनोंने भी पधारकर शिक्षा आदिके सम्बन्धमें उपदेश दिया था । इस उत्सवमें सेठ माणिकचंदजी इस कारणसे नहीं जा सके थे कि वे इसी समय शोलापुर गए हुए थे । आप स्वागत कमेटीके प्रमुख थे । आपने बहुत उदासीके साथ तार भेज दिया था । श्रीमती मगनबाई भी नहीं आई थीं, पर उनका भेजा हुआ लेख "श्राविकाश्रमकी आवश्यक्ता" पर ता: १८ की महिला परिषदमें सुनाया गया । महाराष्ट्र सभाने पांचवा प्रस्ताव यह किया कि श्रीमती मगनबाईजीकी प्रेरणानुसार कोल्हापुरमें एक **श्राविकाश्रम** खोला जावे । इसके लिये दानवीर सेठ माणिकचंदजीने १०) व बाबू देवकुमारजी, आरावालोंने भी

१०) मासिक मदद एक २ वर्षको स्वीकार की थी तथा कुछ स्त्रियोंमें भी फंड हो गया था। सभाने १० वें प्रस्तावमें नांदणीके भट्टारकके मठकी व्यवस्थाके लिये एक कमेटी नियत की उसमें **सेठजी**को भी मेम्बर किया तथा छठेमें श्री सम्मेदशिखर रक्षा सम्बन्धी व १९ वें में तीर्थभक्त सेठ चुन्नीलाल झवेरचंदके वियोग पर शोक प्रगट किया गया। इस सभाके नाम बम्बईके गवर्नर सर जार्ज क्लार्कका तार भी आया कि जैनियोंमें शिक्षाके प्रचारकी उत्तेजनामें मैं सहानुभूति प्रदर्शित करता हूं।

"I cordially wish success to your efforts to encourage education among Jains."

ता० २० जनवरीको कोल्हापुर श्राविकाश्रम खोलनेका महूर्त **श्रीमती मगनबाईजी**की अध्यक्षतामें जिनसेन भट्टारकके मठमें किया गया। ? वर्षके लिये भट्टारकजीने स्थान दे दिया था। डा० कृष्णाबाई केलवकर एल० एम० डी० भी हाजिर थीं। मगनबाईजीने अपने सुन्दर भाषणमें—जो उन्होंने मराठीमें कहा था क्योंकि बाईजीको गुजरातीके सिवाय मराठी और हिन्दीमें भी भाषण करनेका अच्छा अभ्यास था—दिखलाया कि केवल कोल्हापुर प्रान्तमें ५००० जैन विधवाएं हैं तथा दक्षिण महाराष्ट्रमें १५००० हैं जो ज्ञान बिना व्यर्थ जीवन बिता रही हैं, इनके ज्ञान सम्पादनार्थ हरएक प्रान्तमें **श्राविकाश्रम** खोलने चाहिये। द० म० सभाको इस कार्यके लिये धन्यवाद है। जो आज यह खोला जाता है। श्रीमतीने ३००) की मदद भी दी व प्रबन्धार्थ कमेटी

बनी जिसमें अध्यक्षा मगनबाईजी हुईं। १२ स्त्रियां दाखल हुईं जिनमें ४ को छात्रवृत्ति दी गई।

सेठजीके अनुकरणसे शोलापुरमें बोर्डिंगका विचार।

शोलापुर जिलेमें हूमड़ोंकी वस्ती ग्रामोंमें अधिक है, जहां उनको विद्या प्राप्तिका साधन नहीं है। सेठ माणिकचंदजी शोलापुरके धनवानोंको एक बोर्डिंगके लिये बार बार प्रेरणा कर रहे थे। उसका फल यह हुआ कि जैसे पहले प्रसिद्ध **नाथारंगजी** आकलूजवालोंके घरानेने २५०००) संस्कृत ग्रंथप्रचार व छात्रवृत्ति आदिके लिये निकाले थे वैसे ही उसी कुटुम्बने सेठजीकी बातपर ध्यान देकर **२५०००) का फंड** बोर्डिंगके लिये अलग किया। ता० १९ जनवरीको शोलापुरमें एक सभा सेठ वालचंद रामचंदके प्रमुखत्वमें हुई, इसमें सेठ माणिकचंदजी बाबू शीतलप्रसादजीके साथ आए थे। आनेवाले फाल्गुण मासमें **"सेठ नाथारंगजी दिगम्बर जैन बोर्डिङ्ग स्कूल"** खोलनेका निश्चय हुआ। फंडके व्याजसे ४० टका संस्कृत विद्याके लिये व ६० टका अंग्रेजी व औद्योगिक शिक्षामें खर्च हो। छात्रोंको धर्मशिक्षाके साथ ये विद्याएं पढ़नी होगीं। गरीबोंको छात्रवृति भी दी जायगी। ६ महाशयोंकी कमेटीमें धर्मात्मा परोपकारी **सेठ माणिकचंदजी जे० पी०** भी नियत किये गए। १३ महाशयोंकी मेनेजिंग कमेटी हुई व नियमावली तय्यार हुई। सेठजीने बोर्डिंगके लिये स्थान पसंद किया व सर्व सामान मंगानेका प्रबन्ध बांध दिया।

कलकत्तेमें लाट साहबका उत्तर।

ता० १ फर्वरीको कलकत्तेमें बाबू धन्नूलाल, सेठ परमेष्टीदास, आदि ४ प्रतिनिधियोंसे लाट साहबने मुलाकात करके बहुत देर तक वादानुवाद किया। अंतमें आपने वादा किया कि हम फिर इस विषयमें विचार करेंगे, ऐसा तार पाकर सेठजीकी चिंतामें कुछ कमी अवश्य हुई।

श्वेताम्बर जैनसभामें समापति।

ता. ६ फर्वरी १९०८को बम्बईके माधोबागमें श्वेताम्बर जैन बीसा श्रीमालियोंकी एक सभा हुई थी जिसमें सभापतिका आसन सेठ माणिकचंदजीको अर्पण किया था। इस सभामें सेठ देवकरण मूलजी संघवीको सौराष्ट्र बीसा श्रीमाली शुभेच्छुक मंडलकी तरफसे मानपत्र इसलिये भेट किया गया था कि आप कपड़ेके व्यापारी व मिलके दलाल हैं। आपको १ लाख रुपयेकी परिग्रहका प्रमाण था। उससे अधिक बढ़े तो धर्ममें लगाऊँगा, सो पुण्ययोगसे आपका धन पूर्ण होने पर अब जो पैदा करते हैं सो अपनी जातिके गरीब अनाथोंको विद्या व आजीविका-दानमें लगाते हैं। आपकी पुत्रीका विवाह इसी दिन था, आपने न वेश्यानृत्य होने दिया न आतशबाजी छुडवाई जैसा कि अभी तक रिवाज उस जातिमें था, किन्तु ६५५) का दान इस भांति किया—२०१) मित्र मंडल सभा, १०१) काठियावाड़ मंडळ, १००) मांगरोल जैन कन्याशाला, १०१) पालीताना बालाश्रम, १०१) निराश्रित जैनी, ५१) उद्योग वृद्धि। इसके सिवाय जूनागढ जिलेके पुस्तकालयोंमें कन्याविक्रय निषेधकी पुस्तकें बांटना स्वीकार

किया । सेठजीने आपकी प्रशंसा करके मानपत्र भेट किया । ऐसे मानपत्रके भेटकी शोभा वास्तवमें ऐसे दानवीर परिग्रह परिमाण व्रत धारी सेठके द्वारा ही उचित थी ।

पावागढ़में बंबई प्रांतिक सभा ।

पावागढ़में मिती माह सुदी १२ से १५ तक बम्बई दि० जैन प्रान्तिक सभाका उत्सव बड़ी धूमधामसे हुआ । गुजरात देशके कई हज़ार जैनी एकत्र हो गए थे । सेठ हीराचंद नेमचंद शोलापुर जो इस सभामें प्रमुख नियत हुए थे सेठ माणिकचंदजी जे० पी०, लल्लूभाई प्रेमानंद व सेठ रावजी सखारामके साथ ता० १३ फर्वरीको सबेरे बड़ौदा स्टेशनपर पधारे । उस समय बड़ौदाके पंचोंने हारतोड़ा व **मानपत्र**से सम्मानित किया । शीतलप्रसादजी यहां १ दिन पहले आ गए थे । फिर यहांसे सब मिलके चांपानेर स्टेशनपर पहुंचे । वहां वालन्टियरोंने गाजे बाजेके साथ सम्मानित किया । यहां कलेवा करके पार्टी गाड़ियों द्वारा पावागढ़ पहुंची । वहां एक जुलूसके साथ स्वागत हुआ । स्वयंसेवकोंने अपने हाथसे गाड़ी खींची । ता० १४ फर्वरीसे सभाकी तीन बैठकें हुईं। प्रथम ही हरजीवन रायचंद आमोदके पुत्र शांतिलालने संस्कृत श्लोकोंमें मंगलाचरण किया । फिर स्वयंसेवकोंने सेठ माणिकचंद और सेठ हीराचंद, दो धार्मिक परोपकारी मित्रोंके गुणानुवाद वर्णन किये। सेठ लालचंद कहानदासने स्वागतकर भाषण दिया। फिर सेठ माणिकचंदजीके प्रस्ताव व जयसिंहभाईके अनुमोदनसे सेठ हीराचंदजी सभापति हुए। आपने अपना विद्वत्तापूर्ण छपा हुआ भाषण सुनाया। फिर लल्लूभाई प्रेमानंददासजीने रिपोर्ट पढ़ी । पहली

बैठकमें पंचमहालके कलेक्टर और शिवराजपुरकी सोनेकी खानके फोरेस्टर कई इंजिनियरोंके साथ आए थे। सभाने बहुत सत्कार किया। कलेक्टर साहब बहादुरने आभार माना। तब लल्लूभाई प्रेमानंदने कहा कि पावागढ़ जैनियोंका अतिशय पवित्र स्थान है। आशा है साहबबहादुर उसे अपवित्र होनेसे बचाये रखनेका स्मरण रक्खेंगे। फिर १४ प्रस्ताव पास हुए। जिनमें मुख्य ये थे—

१—सेठ नाथारंगजीको २५०००) पहले व २५०००) अब शोलापुर बोर्डिंगके लिये निकालनेके अर्थ धन्यवाद। सभापतिने कहा कि उपयोगी विद्यादानमें सेठ माणिकचंदजीसे दूसरा नम्बर इनका है।

२—महासभाके सभापति सेठ द्वारकादासजी, मथुरा जिनका मरण ता० २० जनवरी १९०८ को हुआ व सेठ चुन्नीलाल झवेरचंदके मरणपर शोक।

३—रा० रा० अण्णाप्पा फड्याप्पा चौगले बी० ए०, एलएल०, बी०, बेलगांवको **सर्वार्थसिद्धि** ग्रंथमें परिक्षोतीर्ण होनेपर सेठ नाथारंगजीकी ओरसे एक **स्वर्णपदक** प्रदान किया जाय। इसको **सेठ माणिकचंदजीने** पेश करते हुए कहा कि "मि० चौगले ने अपनी बम्बई बोर्डिंगमें शिक्षा ली है और बहुत थोड़े समयमें यह विद्वान् होकर जाहर कामोंमें भाग लेने लगे हैं। अब यह बेलगांवकी म्यूनिसिपालिटीके सभापति तथा दि० म० जैन सभाके सेक्रेटरी हैं। इन्होंने सबसे कठिन संस्कृतके सर्वार्थसिद्धि ग्रंथमें बहुत ऊंचे नंबरोंमें परीक्षा पास की है जिससे सेठ नाथारंगजीने स्वर्णपदक

दिया है। ऐसे पास होनेवाले गृहस्थोंको शिक्षाके उत्तेजनार्थ ऐसे मेडलोंके देनेकी जरूरता है।"

४—उपदेशकोंके भ्रमणकी आवश्यक्ता—इसको शीतलप्रसादजीने पेश किया व लल्लूभाई प्रेमानंदने समर्थन किया तथा इसी समय अपील करनेपर १२००) का चंदा तुर्त हो गया। इसमें सर्वसे पहले दानवीर सेठ माणिकचंदजीने २०१) व सेठ हीराचंदने १५१) प्रदान किये।

५—ता० १ फर्वरीको कलकत्तेमें जो श्रीयुत छोटे लालने शिखरजी पर्वत सम्बन्धमें पूरा विचार करनेको कहा है, उनको यह प्रान्तिक सभा फिर सूचित करता है कि सम्पूर्ण पर्वत पवित्र है इससे वहां बंगले हरगिज़ न बनाए जावें व इसकी नकल छोटे लाटकी सेवामें भेजी गई।

६—पावागढ़पर एक अंग्रेज कम्पनीने तांबेकी खान जानकर उसके खोदनेकी परवानगी सर्कारसे मांगी थी, इसका विरोध दिगम्बर जैनियोंने किया था तब इसकी जांच करनेको बम्बईके दयालु **गवर्नर सीडनहेम क्लार्क बड़ौदाकेंपके** रेसिडेन्टके साथ ता० २४ जनवरीको ४ बजे पावागढ़ पहाड़पर गए थे। उस समय बड़ौदा, बोरसद, करमसद आदिके बहुतसे दिगम्बर जैनी हाजर थे। सबने योग्य सन्मान किया। फिर दाहौदके वकील जौंहरी कालीदास जसकरण बी० ए० एलएल. बी. ने खान खोदनेसे जैनियोंके मंदिरोंको कैसी भारी हानि होगी व जैनियोंको धर्म सेवनमें क्या बाधाएँ आएंगी सो एड्रेसके रूपमें समझाई। फिर सेठ लालचंद कहानदास प्रबन्धकर्त्ता तीर्थने हार तोडा पान गुलाबादिसे सत्कार किया। तब गवर्नर साहबने आभार मानते हुए कहा कि

तुमको जो २ विघ्न आ सक्ते हों व जिससे तुम्हारा मन दुखता हो उन्हें मैं दूर करूंगा। इस उत्तरसे सर्वको सन्तोष हुआ। ता० २५ को गवर्नर साहब और उनकी पुत्रीने पहाड़के दर्शन किये और प्रसन्नता प्रगट की। ता. २६ को नीचेके मंदिरजीके दर्शन करते हुए २०) की भेट दी थी। इस कारण प्रांतिक सभाने गवर्नर साहबको धनवाद दिया जो उन्होंने जैनियोंका जी न दुखानेका वचन दिया है।

ता० १६ की रात्रिको **महिला परिषद्**का एक बृहत् अधिवेशन हुआ। अध्यक्षस्थान सेठ माणिकचंदकी धर्मपत्नी **श्रीमती नवीबाई**ने ग्रहण किया था। श्रीमती कंकुबाई, ललिताबाई व मगनबाई तीनों विद्यावती बहनोंने अनेक उत्तमोतम विषयों पर व्याख्यान दिये जिससे कई स्त्रियोंने गाली न गाने व रोने कूटनेका त्याग किया। परोपकारिणी मगनबाईजीने पढ़ी हुई स्त्रियोंको श्रावकाचार नामकी पुस्तक भेटमें दी।

ता० १७ फर्वरीको गुजरातके सर्व भाइयोंने सेठ माणिकचंदजीकी सेवामें चंदनके कास्केटमें निम्न लिखित **मानपत्र** अर्पण किया।

नकल मानपत्र (पावागढ़)

झवेरी शेठ माणेकचंद हीराचंद जे. पी. नी पवित्रसेवामां.

प्यारा धर्म बंधु,

आजे अमो श्री गुजरात भागना दिगंबर जैनो आप साहेबनी स्वधर्म अने केलवणी प्रत्ये अत्यंत प्रीति देखीने आ मानपत्र आपवानी तक लइए छीए ते स्वीकारी आभारी करशो.

श्री शिखरजीना पवित्र पहाड उपर ज्यां वीस तीर्थंकर अने असंख्यात मुनि मोक्ष पाम्या छे त्यां यात्रालुओना सुख माटे पगथीआं करवामां आवतां हतां ते आपणा श्वेतांबरी भाईओए वगर कारणे उखेडी नांख्यां; ते काममां तथा वीसपंथी बडी कोठीनो वहीवट सुधारवाना कार्यमां आपे आगेवान थई महेनत लईने बधी कोर्टोमां जय मेळव्यो, जेथी आपनामां स्वधर्म वात्सल्य गुण तारीफ करवा लायक छे एम स्पष्ट देखाय छे. श्री जयधवल जेवां प्राचीन ग्रंथोना जीर्णोद्धार करवामां आपे आगेवानो भाग लई सर्व भाईओनी मददथी काम चलाव्युं छे जेथी आपनी धर्मशास्त्रज्ञान वृद्धि माटे अत्यंत उत्कंठा जणाई आवे छे. आपे सुरत जेवा पौराणिक शहेरमां जैन यात्रालुओनी उतरवानी सगवड माटे जैन होल जेवुं चंदावाडी नामनुं मकान बंधाववा अने वधारवा पाछळ रु. २००००)नो खर्च करी जैन कोम उपकार कर्यो छे ते आपनी जैन भाईओ प्रत्येनी उदार लागणी बतावे छे. आपणा जैनीभाईओने स्वधर्म संबंधी, राजकीय, वैद्यकीय, शिल्पशास्त्र, अने इंग्रेजी गुजराती साहित्य वीगेरेनी उँचा दरज्जानी केळवणी प्राप्त करवामां अत्यावश्यक साधन जे बोर्डिंग स्कुल छे, ते मुंबई जेवा मोटा शेहेरमां श्वेतांबरी, दिगंबरी गो भिन्नभाव राख्या विना पोताना आशरे एक लाख रुपीयाने खरचे आपना स्वर्गवासी पिताश्री सेठ हीराचंद गुमानजीना स्मरणार्थे आपे बांधी आपी समस्त जैन कोम ऊपर जे उपकार कर्यो छे ते प्रशंसनीय छे अने ते आपनी धर्म सहित ऊंचा धोरणनी इंग्रेजी केळवणी आपवानी अपक्षपात लागणी प्रदर्शित करे छे. तेमज गुजरातमां आपणी दिगंबर जैन कोममां केळवणीनो व्होळो फलावो करवा माटे भोजन

अभ्यास वीगेरे बधी सगवडो पुरी पाडनारी एक **बोर्डींग** स्कुल आपना कैलासवासी भत्रिजा शेठ प्रेमचंद मोतीचंदना नामथी **अमदावादमां** २४०००) ना खर्चे बंधावी आपी स्वधर्मी भाईओ प्रत्येनी **शुद्ध** लागणी अने धर्म कृत्यमां भारे उदारता प्रगट करी छे.

मुंबाई जेवी अलबेली नगरीमां कोईपण कोमने उपयोगी थई पडे तेवी भव्य धर्मशाला (**हीराबाग**) बांधवा पाछळ दोढ लाख रुपीआ धर्मादा खरच्या छे, जेमां एक धर्मादा स्वदेशी दवाखानुं पण उघाडयुं छे; ते आपनी गरीबो प्रति दयावृत्तिनी लागणी प्रगट करे छे. वळी हालना राज्यकर्तानी गया वर्षनी वर्षगांठनी खुशालीमां नामदार ब्रिटिश सरकारे जे मान अने मरतबाथो वगर प्रयत्ने 'जस्टीश ओफ धी पीस (जे. पी.)नो मानवंतो खीताब आपने नवाजेश कर्यो छे ते आपणी दिगंबर जैन कोममां आप पहेल वहेला मेळववा भाग्यशाशाली थया छो, अने सरकारे जे आपनी स्वधर्म सेवानी योग्य पीछान करी ते माटे अमो मायाळु सरकारनो आ तके उपकार मानवानी अमारी फरज समजीये छीये.

छेवटमां आपनी आ आवी धर्म, दया, स्वधर्मी प्रति उत्तम सेवाओ माटे तथा विद्या अने विद्वान प्रति आपनी सदैव शुभ लागणीओ माटे अमो प्रार्थना करीये छिये के आप आवा हजारो खीताबो भोगववाने दीर्घायुषी थाओ, अने परमात्मा आपने आपवां उत्तम कार्यो करवाने सदैव सन्मति आपो, एवुं ईच्छी आ मानपत्र आपने अर्पण करीये छीये ते मानपूर्वक स्वीकारी आभारी करशो एवी आशा राखीये छीए. तथास्तु.

चांपानेर (पावागढ)
ता: १७-२-१९०८ } **आपना सद्गुण चाहनारा-**

लालचंद कहानदास, बडोदरा. मोहनलाल विठ्ठलदास धामी, भावनगर.
जेठाभाई गोरदनदास, आमोद. नरसीदास गंगादास, इसणाव.
शीवलाल तुलसीदास, मोरड. गुलाबचंद लालचंद,
गांधी जेचंद नाथजी, दाहोद. प्रेमचंद हरगोवनदास, सुरत.
दलपतभाई केवलदास, बोरसद. हरजीवन रायचंद, आमोद.
नगीनलाल शोभाचंद, दाहोद. अमीचंद वस्ता, ईडर.
वीरचंद त्रीकमदास बडोदरा. भाईजी नाथाभाई, बोरसद.
गांधी जीवाभाई वहालचंद, सोनासण. कोठारी नानचंद पुंजीराम ईडर.
गीरधरलाल फूलचंद . वहेचर भवानदास,
गांधी जीवाभाई उगरचंद, सोनासण. छोटालाल घेलाभाई गांधी, अंकलेश्वर.
हरीभाई मंगलदास. जीवणलाल हलोचंद.
पदमसी फतेचंद, साणोदा. रामचंद नानचंद.
ताराचंद हीराचंद. जमनालाल परभुदास.
जेठालाल गीरधरलाल. रेवचंद वहेचरदास.

वास्तवमें जो निःस्वार्थ बुद्धिसे जगतके उपकारमें अपने तन मन धनका भोग करता है उसका विना चाहे जगत आदर करता है। सेठजीसे कोई कभी अप्रसन्न नहीं होता था। वह छोटे व बड़े सबसे समान व सरल भावसे कपटरहित बात करते थे व अपने बचनोंके बड़े पाबन्द थे। जिस सत्य वचनके

प्रभावसे सेठजीने अपने व्यापारमें उन्नति की उसका हमेशा निबाहनेका उद्योग किया।

श्रीमती मगनबाईके उद्योगका फल।

लखनउ निवासी पार्वतीबाईजीको जबसे श्रीमती मगनबाईजीका समागम हुआ तबसे आपको भी स्त्री समाजकी सेवा करनेका बहुत बड़ा ध्यान हो गया था। जबतक आपके पिता लाला दरबारीलालजी वृद्धावस्थामें सजीवित रहे तबतक बाईजीने उनकी भले प्रकार सेवा की थी। पिताके देहान्त होने पर बाईजीने धीरे २ घरका सम्बन्ध छोड़कर एक बाईके साथ मुख्य २ स्थानोंमें अपने ही खर्चसे भ्रमण करना प्रारंभ किया और उपदेश देकर स्त्रियोंको सुधारा, स्वयं भी शिक्षा दी व कन्याशालाओंके लिये उद्योग किया। लाला जग्गीमलजी देहली ता: ८ मार्च ०८ के जैनगजटमें प्रगट करते हैं कि बाईजीने बागपत, रोहतक तथा मेरठमें दो दफे जाकर स्त्री समाजका बहुत बड़ा उपकार किया है तथा दिहलीमें आपने कई सभाएँ कीं जिसमें एक ता: २१ फर्वरीको बड़े समारोहके साथ की, २०० स्त्रियां हाजिर थीं। इसमें आपने कन्याओंका विवाह जैन पद्धतिके अनुसार करानेपर बहुत जोर दिया। कई स्त्रियोंने इस बातको मानकर प्रतिज्ञा की। मेरठमें आपने कन्याशाला भी स्थापित करा दी है।

इसी तरह जबलपुरमें श्रीमती मगनबाईकी संगतिसे श्रीमती जमनाबाईको भी उपदेशका अभ्यास हुआ। ता: २३ फर्वरी १९०८ को छपाराकी बिम्बप्रतिष्ठाके अवसरपर बाईजीने एक स्त्री सभा की जिसमें १००० स्त्रियां मौजूद थीं। चारों गतिके दुःखोंपर व्याख्यान

दिया । पिंडरईकी कन्याओंकी परीक्षा ले इनाम बंटवाया फिर कन्याशालाके लिये चन्दा करके शाला भी खुलवा दी व जैनी अध्यापिका भी नियत करा दी ।

मिती फाल्गुण सुदी १० गुरुवारको शोलापुरमें " सेठ नाथारंगजी दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्कूल " के

शोलापुरमें बोर्डिंगका मुहूर्त।

स्थापनका मुहूर्त था। बम्बईसे **सेठ माणिकचंदजी** पं० धन्नालालजी और **शीतलप्रसादजी**को लेकर १ दिन पहले पहुंच गए थे । शामकी सभामें शीतलप्रसादजीने " प्रभावना अंग " पर व्याख्यान देकर शिखरजीके रक्षार्थ उद्योग करनेपर जोर दिया, इसका समर्थन पं० धन्नालालजीने किया । और फीरोजाबादमें शिखरजीके निमित्त होनेवाली सभाके लिये प्रतिनिधि चुने गए । सभापति सेठ सखाराम नेमिचंद हुए थे ।

दूसरे दिन ७॥ बजे सवेरे रावबहादुर **केलकर डिप्टी कलेक्टर**के सभापतित्वमें सभा हुई । पहले ही कुंभ स्थापन कर सरस्वतीपूजन की गई । फिर सेठ हीराचंद नेमचंदने सेठ माणिकचंदजीको बोर्डिंगोंका बीजभूत कहकर नियमावली आदि सुनाई । तब सभापतिने बोर्डिंगका द्वार खोला । पं० पासु गोपाल शास्त्रीने छात्रोंको रत्नकरंडश्रावकाचारका पाठ दिया । शीतलप्रसादजीने विद्याके महत्वपर उपदेश दिया। फिर सभापतिने अपने विद्वता पूर्ण भाषणमें कहा कि " हिन्दू लोग **जैन धर्मके कारणसे ही मांससे बचे हुए हैं** । आजकल भारतमें भारी दान देनेकी उत्तम रीति पहले पारसियोंने चलाई, फिर उन्हींका अनुकरण जैनियोंने

किया" उपस्थित मंडलीने बोर्डिंगको १६७९) भेट किये। आजकल यह बोर्डिंग एक नए मकानमें बहुत उन्नतिके साथ चल रहा है। मंत्री सेठ हीराचन्द नेमचन्द बड़े उद्योगी हैं।

फीरोजाबादमें शिखरजीकी सभा।

पर्वतरक्षाकमेटी कलकत्ता श्रीशिखरजीके लिये पूर्ण उद्योग कर रही थी। फीरोजाबादके मेलेका मौका जानकर शिखरजीके लिये खास विचार करनेको खास २ महाशयोंकी एक सभा बुलाई गई। कलकत्तेसे भी बाबू धन्नूलाल और सेठ परमेष्ठीदासजी आए थे। इन्दौरसे सेठ हुकमचंदजी, फीरोजपुरसे लाला देवीसहायजी, शोलापुरसे सेठ हीराचंद व सखाराम नेमचंद आदि अनेक तीर्थभक्त उपस्थित थे।

बम्बईसे सेठ माणिकचंदजीने अपने कुटुम्बको श्रीमती मगनबाईजीके साथ कुंडलपुर (दमोह) में महासभाके उत्सवपर भेज दिया, क्योंकि महासभाका अधिवेशन ता० २८ मार्चसे था और फीरोजाबादमें ता० २४ व २५ मार्चको सभा थी। सेठजीको धर्म कार्य्यके निमित्त शारीरिक कष्टकी बिलकुल भी परवाह नहीं थी। आपने यही निश्चय किया कि फीरोजाबाद होकर कुंडलपुर चले आवेंगे। शीतलप्रसादजीके साथ आप फीरोजाबाद पहुंचे। वहां सेठ मेवारामजी आदि वालोंने सब तरह सर्व भाइयोंका सन्मान किया। पर्वतकी रक्षा तन मन धन लगाकर की जावे, इसमें कोई बात उठा न रक्खी जाय ऐसा निश्चय किया गया। यहांसे सेठजी दमोह स्टेशनको रवाना हो गए।

दमोह जिलेमें कुंडलपुर अतिशयक्षेत्र है, जहां प्रति वर्ष चैत्रमें मेला हुआ करता है । इस वर्ष भा० दि० जैन महासभाका बारहवां अधिवेशन बड़े समारोहके साथ ता० २८ मार्चसे ३१ तक **बाबू देवकुमारजी** जमीनदार आराके

कुंडलपुरकी महासभामें सेठजी ।

सभापतित्वमें हुआ । आजकल ऐसा भारी समारोह किसी जलसेमें नहीं हुआ था । इस मेलेमें १२००० जैन व २८०० अजैन एकत्र हुए थे । दमोहकी स्वागतकारिणी सभाने व उत्साही स्वयंसेवकोंने बहुत ही प्रशंसनीय प्रबन्ध किया था । मंडप भी बहुत बड़ा रचा गया था । प्रायः सर्व प्रान्तोंके प्रतिष्ठित दि० जैनी उपस्थित थे । **सेठ माणिकचंदजी** फीरोजाबादसे शोलापुरवाले व शीतलप्रसादजीके साथ ता० २६ की शामको दमोह आए और उसी समय कुंडलपुरको रवाना हुए। बैठक ता० २८ से शुरू हुई। श्रीमान सेठ मोहनलाल खुरईने स्वागतका भाषण सभापतिकी हैसियतसे पढ़ा । फिर **सेठ माणिकचंदजीके** पेश करने और सेठ पूरणसाह सिवनीके समर्थनसे बाबू देवकुमारने सभापतिके आसनको ग्रहण किया । आपने अपना विद्वत्तापूर्ण भाषण करके इतनी शांतिसे प्रस्ताव सब्जेक्ट कमेटीमें ठीक कराके आमसभामें पास किये कि विघ्न आनेपर भी कोई अंतराय नहीं पड़ा। वेश्यानृत्य, बालविवाह, वृद्धविवाह आदि कुरीति निषेधके प्रस्तावका समर्थन **सेठ माणिकचंदजी** और इनके मित्र धर्मचंदजी मुनीम पालीतानावालोंने किया था । उपयोगी प्रस्तावोंमें एक जाति व धर्मकी सेवा करनेवालोंको पद दिये जानेका हुआ । दूसरा श्री सम्मेदशिखरजी सम्बन्धी हुआ ।

सभामें बाबू देवकुमारजी सभापतिके नाम ए० एच० बी० अंडर सेक्रेटरी गवर्नमेंट बंगालका पत्र ता० २४

लाट साहबका विरुद्ध हुक्म और जैन समाजका जोश।

मार्चका इस आशयका आया था कि बीचकी टेकरी या रास्ता छोड़ दिया जाय तथा इसे भी जैनी लोग अच्छे दाम देकर सदाके लिये खरीद लें या पट्टेपर ले लें। पश्चिमीय पहाड़ यूरुपियन और पूर्वीय देशियोंके बंगलोंके लिये दिया जाय तथा नीमियाघाटसे नई बास्ती तक नई खड़क बने। पत्रके अंतमें लिखा था कि यह भारत सर्कारका हुक्म है, सर्व जैनियोंमें प्रसिद्ध किया जाय तथा और जो कुछ कहना हो वह कोर्ट ऑफ वार्ड्ससे शीघ्र कहा जाय। इस पत्रको सुनते ही सेठ माणिकचंदजी बहुत ही उदास हो गए तथा हजारों आदमी असंतोषसे घबड़ा गए। तब महासभाने प्रस्ताव नं० १४ इस आशयका पास किया कि इस हुक्मसे सर्व जैन जातिके हृदयपर बहुत चोट लगी है। सर्कारने इस कार्रवाईसे व्यर्थ असन्तोष फैलाया है। जो असन्तोष है व होगा उसे महासभा रोक नहीं सक्ती क्योंकि यह पर्वत अनादि कालसे पूज्य और पवित्र है। ऐसा कृत्य किसी मुसल्मान राजाने भी नहीं किया तथा इस प्रस्तावकी नकल इंडिया गवर्नमेन्ट व स्टेट सेक्रेटरी लंडनको भेजी गई तथा जैन जातिसे प्रेरणा की गई कि वह जन धन और सहानुभूतिसे पूर्ण उद्योग करे। पंडित गोपालदास व पं. धन्नालालने इस प्रस्तावका हाल सर्वको समझाकर पास कराया। प्रस्ताव नं. १६ इस विषयका हुआ कि महासभाके भंडारमें जैनी मात्रसे प्रति मास एक पैसा

वसूल किया जावे। प्र० नं० २० में बाबू देवकुमारजी महासभाके सभापति नियत हुए। प्र० नं० २२ में महाविद्यालय सहारनपुरसे काशी बदला गया। श्रीमान् पंडित गोपालदासजीका पुरुषार्थ पर, देशभक्त खापर्डे महाशयका भारतकी दशा पर बहुत प्रभावशाली व्याख्यान हुआ, बुन्देलखंड प्रांतिक सभाकी स्थापना हुई। श्रीमती पार्वतीबाई, कंकुबाई, मगनबाईजी आदि पढ़ी हुई बहनोंने स्त्रियोंको अनेक विषयोंपर उपदेश दिया। **मगनबाईजीने** २००० भाषाप्रवेशकी पुस्तकें स्त्रियोंको बांटी और पढ़नेकी प्रेरणा की। दमोहमें कन्याशालाके लिये २२६) रु० वार्षिकका चंदा कराया। इसी मेलेमें मगनबाईजीको **बेसरबाई** बड़वाहाका परिचय हुआ जिसने स्त्रीसमाजमें विद्याप्रचारार्थ अपनी लक्ष्मीका अच्छा भाग खर्च करना प्रारंभ किया है। यद्यपि इस सभामें कोई भारी चंदा नहीं हो सका तथापि बुंदेलखन्डके भाइयोंपर अपनी उन्नतिको कमर कसनेके लिये बहुत उत्तेजना हुई।

सेठजी भा० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीका जलसा करना चाहते थे पर नियमावलीके अनुकूल एक मेम्बरकी कमी होनेसे जलसा न हो सका।

सेठजीको शीखरजी-की चिन्ता।

कुंडलपुरमें सेठजीके चित्तको श्री सम्मेदशीखरजी सम्बन्धी सर्कारी आज्ञासे बहुत बड़ा कष्ट हुआ। यह सर्कारी हुक्म कैसे टले और परम पवित्र पर्वतकी रक्षा हो इस विचारमें दिन रात लीन हो गए। इस मेलेमें १२००० जैनियोंके भारी क्षोभ और उनके क्लेशित चित्तसे निकले हुए वचनोंको सुनकर

और भी सेठजीको चिन्ता होती थी कि क्या होनेवाला है। कई तो यही कहते थे कि यदि बंगले बनने लगे तो हम पहाड़पर पड़ जांयगे, मार खांयगे, मरेंगे, पर परम पूज्य ध्यानकी भूमिको गृहस्थियोंका प्रपंचघर व पशु हिंसा, मदिरापान, विषयभोग, विलासका स्थान कभी न बनने देंगे। इस समय भारतमें स्वदेशी आन्दोलनकी बड़ी धूम थी। जैनियोंको भी व्याख्यानोंसे व अखबारोंसे यह सब चर्चा मालूम:होती थी। उधर जैसे बंगाल बंगभंगके कारण विक्षिप्त चित्त था और विदेशी माल न व्यवहार कर स्वदेशी कारखाने, विद्यालय खोलनेमें अनुरक्त था ऐसे ही जैनसमाजका चित्त हो गया था। जैन अखबारोंके सिवाय अन्य पत्र भी सर्कारकी इस आज्ञाको बहुत ही अनुचित और जैनियोंके पवित्र धर्म व श्रद्धाके बाधक मानकर सम्पादकीय लेख लिखने लगे। जैनसमाजमें स्वदेशी वस्तु ग्रहण व शिखरजीपर प्राण न्यौछावर करनेके प्रस्ताव होने लगे। सर्व देशीय सभाओंने भी जैनियोंके इस दुःखमें सहानुभूति दर्शाई। विहार प्रान्तिक कानफरेन्स बांकीपुरमें यह प्रस्ताव पास किया "सम्मेदशिखर पर बंगले बनानेकी आज्ञासे जैन प्रजा क्षुब्ध हो उठी है। सरकारको चाहिये कि इस अनुचित कृत्यसे अपना हाथ खींच ले"।

मुगलहाट जिला रंगपुरके भाइयोंने इस शिखरजीके उपसर्गको सुनकर विलायती नमक बेचना बंद कर दिया, जो वर्षमें रु. २०००) का खपता था।

परम पवित्र तीर्थराजकी रक्षाकी चिन्तामें मग्न भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटीके अधिकारी और तीर्थोंकी रक्षाके जिम्मेदार

सेठ माणिकचंदजीके हार्दिक दुःखका अनुभव करना कठिन है। बम्बई आकर ता: ९ अप्रैल ०८ को हीराबागमें एक सभा बुलाई। सेठ हरसुखराय अमोलकचंदजीके मुनीम लाला मिश्रीलालजी सभापति हुए। सर्व जैनियोंने सर्कारी आज्ञाका विरोध करके वादानुवादके बाद यही निश्चय किया कि अब केवल दो ही उपाय शेष हैं—एक मुकद्दमा चलाना दूसरा अपने प्राणोंका विसर्जन करके पर्वतकी रक्षा करना। सभामें दो प्रस्ताव पास हुए—एक शोक प्रकाश करने और दूसरा गवर्नमेन्टकी आज्ञा अस्वीकार करनेके विषयमें। दोनोंकी नकल भारत सर्कारको भेज दी गई।

शिखरजीपर बंगले बननेका विरोध।

ता. ९ अप्रैलको निम्बगांव (पूना)में दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभाका नैमित्तिक अधिवेशन सेठ सखाराम नेमचंद, शोलापुरके सभापतित्वमें हुआ। उसमें शिखरजीपर बंगले बननेका विरोध व स्वदेशी ग्रहण और विदेशी **बहिष्कार**का प्रस्ताव पास हुआ। सेठ माणिकचंदजीने कमेटी द्वारा इस सर्कारी धर्मघातक आज्ञाकी खबर सर्व पंचायतियोंको कर दी। तब जगह२ सभाएं होकर विरोध किया गया। ता. ३० अप्रैलको बम्बई प्रान्तिक कॉनफरेन्सका जलसा धूलियामें राव बहादुर जोशीके सभापतित्वमें हुआ उसमें येवलाके दामोदर बापूने सन् १८५८की घोषणापत्रके विरुद्ध जैनियोंके धर्मघातको होते देख इस सर्कारी आज्ञाका विरोध किया। इसका समर्थन सेठ वालचंद हीराचंद, मालेगांव, मुंशी गुलाम मुहम्मद (नगर), लोकमान्य बाल गंगाधर तिलकने किया। ता. २९ अप्रैलको बम्बईके

लालबागमें श्वेताम्बर जैनियोंकी एक विराट सभामें इस आज्ञाका पूर्ण विरोध किया गया। अहमदनगरकी सर्व देशीय जिला कॉन्फरेन्समें भी इसका विरोध हुआ। सेठजीने गुजराती पंचसे जानकर कि महाराज दर्भंगा १ लाख रुपया लगाकर पहाड़ शिखरजीपर सैनिटेरियम बनाना चाहते हैं, महाराज दर्भंगाको १ अर्जी ता. ४ मईको लिखी, जिसका उत्तर ता. १० मईको आया कि यह बात बिल्कुल असत्य है।

बंगाल सर्कारका दूसरा पत्र।

जैनियोंकी अति क्षुब्ध अवस्था व विरोधको सुनकर छोटे लाट बंगालने ता. १६ मई १९०८को कलकत्तेमें बाबू धन्नूलाल, परमेष्ठीदास, महाराज बहादुरसिंह, व राय मनीलाल, नाहर बहादुरसे की और उसी दिन एक पत्र वी० एकालिन्स प्राइवेट सेक्रेटरीने राय मनीलालके नाम भेजा जिसकी नकल बम्बई सेठजीके पास आई। इसमें भी पहली आज्ञाको दृढ़ करते हुए इतना आश्वासन दिया गया कि जो कुछ प्रतिनिधियोंने सम्पूर्ण पर्वतको खरीदने व पट्टेपर सदाके लिये लेनेको कहा है, उसके सम्बन्धमें कमिश्नरसे रिपोर्ट करके कहा जायगा। जब तक जमींदार व कोर्ट ऑफ वार्डससे जांच न हो मामला योंही रहे। यद्यपि इस पत्रसे कुछ अधिक संतोष न हुआ पर इतना अवश्य प्रगट हुआ कि अभी बंगला बनना रोक दिया गया है तथा सम्पूर्ण पर्वतको पट्टेपर लेनेका प्रयत्न होना चाहिये। सेठजीने कलकत्ते वालोंको लिखा कि खुलासा आज्ञा निकलना चाहिये कि बंगले न बनें तथा पर्वतकी रक्षाका पूर्ण प्रयत्न किया जाय।

बम्बई गवर्नरका आश्वासन पत्र।

बम्बई प्रान्तमें इस विषयका विरोध सीमासे बाहर देखकर बम्बई गवर्नरने प्रसिद्ध प्रतिष्ठित जैनियोंसे इसका कारण पूछा तो सबने यही कहा कि लोग सर्कारकी बंगले बननेकी आज्ञासे घबड़ा गए हैं। तब बम्बई गवर्नरने बंगालसर्कारसे मालूम करके जून मास १९०८में एक पत्र **वीरचंद दीपचंद सी. आई-ई.**को लिखा, सो अखबारोंमें प्रसिद्ध हुआ जिसका यह आशय था कि जब कि आपकी जातिने राजासे कोई ऐसा प्रबन्ध नहीं किया है कि जिससे आप पहाड़ खरीद लेवें या जिससे राजा उसपर बंगले बनवानेका विचार छोड़ देवे। वर्तमानमें जब तक पहाड कोर्ट आफ वॉर्ड-सके आधीन है इस प्रश्नको रोक देना ठीक समझा जाता है (The question should be dropped at any rate so long as the property remains under the Court of Wards at present) इससे आप देखेंगे कि सर्कार जैन जाति-के धार्मिक विचारोंको हानि पहुंचाना नहीं चाहती है। यह मामला जमींदार और जैनजातिका है और आशा होती है कि परस्पर योग्य फैसला जल्द हो जायगा और जैन जाति सदा राजभक्त होगी जिस राज्यके द्वारा उसने उन्नति प्राप्त की है।

इस पत्रको देखकर सेठ माणिकचंदजीको कुछ और भी सन्तोष-की मात्रा हुई पर बंगाल गवर्नमेन्टकी कोई आज्ञा न निकलनेसे पूरा भरोसा नहीं हुआ कि बंगले बनेंगे या नहीं। ता० ११ जुलाईको छोटे लाटने जैनियोंके दि० और श्वे० प्रतिनिधियोंसे फिर कलक-त्तेमें मुलाकात की। इस समय बम्बईसे शीतलप्रसादजी और फिरो-

जपुरसे देवीसहायजी भी आए थे और धन्नूबाबू व परमेष्ठीदासके साथ लाट साहबसे मिलेथे परंतु बातचीतमें कोई निश्चित बात नहीं कही तथा रात्रिमें फिर बुलाया।

पावागढ़में तांबेकी खान खोदनेकी आज्ञा।

पावागढ पर्वतपर तांबेकी खानके मौकेको देखने बम्बईके गवर्नर ता० २४ जनवरीको आए थे तब दिग० जैनियोंने पर्वतरक्षाकी प्रार्थना की थी, उसके उत्तरमें विचारनेको कहा था। तीर्थक्षेत्र कमेटीने भी एक प्रार्थना पत्र भेजा था उसका उत्तर बम्बई गवर्नरके चीफ सेक्रेटरीने नं० ६३३६ ता० २४ जूनमें लिखा कि सेठ माणिकचंद महामंत्री ती० क्षे० कमेटीकी अर्जी ता० २४ मईके उत्तरमें सूचित किया जाता है कि सर्कार पावागढपर खान खोदनेकी इजाजत नहीं देती है (The Government not allowing prospecting or mining operations in the Pawagarh Hill.) सेठजीके आकुलित चित्तको पावागढ़ सिद्धक्षेत्रकी चिंताकी निवृत्ति होनेसे कुछ शांति हुई।

एक भारी शोकमें सेठजी।

परंतु तुरत ही कलकत्तेसे खबर आई कि महासभाके सभापति आरा निवासी **बाबू देवकुमारजी** रुग्ण अवस्थामें कई मास रहकर अंतमें अपने धर्ममित्र ब्रह्मचारी नेमिसागरसे मरणके ६ घंटे पहले समाधिमरण लेकर ता० ५ अगस्त १९०८की रात्रिको ११ बजे **स्वर्गधाम** पधारे। आपकी अवस्था केवल ३२ वर्षकी ही थी। इतनी उम्रमें ही आपने महा-

सभाकी व जैन जातिकी बहुत कुछ सेवा की थी। स्याद्वाद पाठशाला काशीको अपनी धर्मशालामें आश्रय दिया व जीवन पर्यंत उसकी रक्षा की। दक्षिणयात्रामें ग्रंथोंके भंडार ठीक कराए। सरस्वती भवन खोलनेकी फिक्रमें थे, किन्तु यह नियम ले लिया था कि **जब तक भवन न खोलूं** तब तक **ब्रह्मचर्य पालूंगा**। ऐसे होनहार धनाढ्य और एफ० ए० तक संस्कृत इंग्रेजी पढ़े हुए धर्मप्रेमी देवकुमारका स्वर्गारोहण जानकर सेठजी शोकसागरमें डूब गए। बाबू साहबकी सेठ माणिकचंदमें अनन्य भक्ति थी। अन्तमें वे कह गए कि—

" दानवीर सेठ माणिकचंदजी आदिसे मेरा धर्म स्नेह पूर्वक जुहारु कहना और उनसे सरस्वती भंडार शीघ्र स्थापित करनेकी प्रार्थना करना। "

पीछे जब सेठजीने सुना कि वे अपने एक वसीयतनामेंमें १००००) नकद व १ गांव ५०००) वार्षिककी लागतका धर्म कार्योंके लिये दे गए हैं, तब आपको कुछ संतोष हुआ। इस दानकी विगत जैनमित्र अंक २१ ता० २८ आगस्त १९०८में छपी है। इसमें १५००) वार्षिक सरस्वती भवन, ८००) औषधालय शिखरजी और ५००) छात्रवृत्ति धर्मशिक्षार्थ भी हैं।

बम्बईमें सभा। ता० ११ अगस्तको सेठ माणिकचंदजीके सभापतित्वमें सभा होकर बाबू देवकुमारजीकी मृत्युपर शोक प्रगट किया गया। बाबू शीतलप्रसादजीने मरणके थोड़े दिन पहलेकी अपनी मुलाकातका हाल वर्णन किया। जब वह कलकत्ते गए थे कि बाबू साहब एकान्तमें

बड़े कमरेमें लेटे थे, शरीर सूख गया था, अपने पास कुटुम्बीको बैठने नहीं देते थे, धर्मात्मा ब्र० नेमीसागर आदिको बिठाए रखकर धर्मभावकी वृद्धिमें लीन थे।

रांचीमें शिखरजी प्रकरण।

छोटे लाट सर फ्रेज़रने शिखरजी सम्बन्धी वात करनेको रांचीमें जैन प्रतिनिधियोंको बुलाया उस समय बम्बईसे सेठ माणिकचंदजी शीतलप्रसादजीको लेकर रांची गए। ता. १६ सितम्बर १९०८को वार्तालाप हुआ। कुल पर्वतको पट्टापर देनेकी वातें हुई। यहां राजा भी बुलाया गया था। लाट साहबने २ लाख रु० नक़द व १५ हजार रु० वार्षिक मांगे। जैनियोंने अपनी सामर्थ्य न समझकर इनकार किया–मामला तय न होकर योंही रह गया।

माता रूपाबाईको मानपत्र।

सेठ माणिकचंदकी भावज सेठ प्रेमचंद मोतीचंदकी माता रूपाबाई बड़ी ही धर्मात्मा थीं। अपने द्रव्यका निरन्तर सदुपयोग विचारा करती थीं। अहमदावाद बोर्डिंगके चैत्यालयके लिये आपने ४०००) लगाकर एक मनोहर चांदीका समवशरण बनवाया था। उसे स्थापित करानेके लिये आप मिती ज्येष्ठ सुदी २ को अहमदावाद गई थीं। वहां विधिसे पूजन कराई तथा यह ठहराव किया कि प्रति भादों सुदी ५ को श्री सम्मेदशिखरजीकी पूजा ठाठवाटसे हुआ करे जिसके खर्चको एक रकम अलग कर दी कि इसके व्याजसे हर वर्ष पूजा हो। उस समय बोर्डिङ्गके कार्यकर्ता और विद्यार्थियोंने श्रीमती बाईजीको अति

प्रतिष्ठाके साथ अपनी कृतज्ञता प्रगट करनेको एक **मानपत्र** अर्पण किया । वास्तवमें धर्मात्मा स्त्री व पुरुष सर्वके अंतःकरणको प्यारे लगते हैं ।

स्या० महा वि० की प्रबन्धकारिणी सभामें सेठजी।

रांचीसे आते हुए सेठजी काशी आए । आपको तीर्थ भक्तिके साथ २ विद्यावृद्धिके कामोंका भी हर समय ध्यान रहता था । ता. २० सितम्बरको मैदागिनी जैन मंदिरमें सभा हुई । बाबू देवकुमारजीके वियोग पर शोक प्रगट करके बाबू जैनेंद्रकिशोर मंत्री और लक्ष्मीचंद्रजी उपमंत्री नियत हुए । सभासदोंकी संख्या फिरसे ठीक हुई । महाविद्यालय और स्याद्वाद पाठशालाके सम्बन्धका प्रस्ताव हुआ । देशी गणित और **इंग्रेजी पढ़ानेका प्रस्ताव** हुआ । अध्यापकोंका वेतन बढ़ाया गया । पंडित माणिकचंदने प्रमेयकमलमार्तंड और पं० गणेशप्रसादने अष्टसहस्त्रीमें परीक्षा पास की थी । ये दो ग्रंथ जैनियोंमें गंभीर न्याय विषयके हैं । इससे इनको विशेष पारितोषिक देनेका प्रस्ताव हुआ ।

अलाहबादमें जैन बोर्डिङ्गकी कोशिश।

यहांसे सेठजी ता० २२ सितम्बरको **प्रयाग** आए । आप अलाहबादमें बोर्डिङ्ग स्थापित करनेके लिये पत्रव्यवहार तो कर ही रहे थे । बाबू शिवचरणलाल रईसको तार कर दिया था । स्टेशनपर उक्त बाबू साहब कई भाइयोंको लेकर उपस्थित हुए । अति सन्मानसे अपने यहांकी गाड़ियोंपर ले जाकर अपने मकानमें ही ठहराया और बहुत खातिर की । ता० २२ की रात्रिको सेठजीके सन्मानार्थ बाबू साहबके मकानपर

ही सभा हुई। सभापति सेठजीको ही नियत किया। बाबूलालजी प्रयागकी प्रार्थनापर कि शिखरजी व स्याद्वाद पाठशालाका हाल बताया जावे शीतलप्रसादजीने कहा कि हम लोग रांची गए थे। लाट साहब कुल पर्वतका पट्टा देनेको तयार हैं पर वह २ लाख नकद व १५०००) वार्षिक मांगते हैं। जब कि इधरसे अर्जी दी गई कि सदाके लिये झगड़ा मिटानेको हम लोग २॥ लाख नकद और ४०००) वार्षिक देना चाहते हैं अभी मामला तय नहीं हुआ है तथा काशी विद्यालयमें २७ छात्र भली प्रकार संस्कृत अध्ययन कर रहे हैं। इतना कह धार्मिक विद्याकी आवश्यकताको बताते हुए जहां कॉलेज हों वहां जैन बोर्डिङ्गकी जरूरत दिखाई। इसका समर्थन बाबू जुगमन्दरलाल एम० ए० के भाई समन्दरलाल और बाबू बच्चूलालने किया। सेठजीने भी इसकी पुष्टि करके सभाको समाप्त किया। दूसरे दिन जैनधर्मशालामें सभा हुई। बाबू शिवचरणलालजी सभापति हुए। शीतलप्रसादजीने ऐकता और प्रेमपर व्याख्यान दिया। समर्थन पंडित झम्मनलालजी अध्यापक जैन पाठशालाने किया। फिर सेठजीने जैन बोर्डिंगकी आवश्यकतापर कहा। बाबू शिवचरणलालने पुष्टि की और चंदा खर्चका लिखनेको तय्यार हुए पर पूरा होनेकी आशा न देखकर काम बंद रहा। दूसरे दिन सबेरे सेठजी शीतलप्रसादजी और राजकुमारजी आराको लेकर स्वर्गवासी बाबू सुमेरचंदजीकी धर्मपत्नीको बोर्डिंगकी आवश्यकता बताने गए तथा यह सुन रक्खा था कि उक्त बाई २५०००) किसी धर्मकार्यमें लगाना चाहती हैं। इनसे समझाया गया कि यहां बोर्डिंग होनेसे कालेजके छात्र जैन धर्मके श्रद्धानसे च्युत न होंगे, बड़ा भारी उप-

कार होवेगा । बाईजीने विचार कर १५ दिन बाद उत्तर देनेको कहा । सेठजीने गजकुमारजीको अच्छी तरह जंचा दिया जो इस बाईके भ्राता हैं व स्टेटके प्रबन्धकर्ता थे । यहांसे चलकर सेठजी बम्बई आए ।

श्रीमती पार्वतीबाईजीका कार्य्य व तीर्थभक्ति ।

श्रीमती मगनबाईजीकी प्रेरणासे लखनऊ निवासी श्रीमती पार्वतीबाई इधर उधर स्वखर्चसे भ्रमणकर बहुत उपकार कर रहीं थीं । सर्धना जिला मेरटमें स्त्रियोपकारक नामकी सभा स्थापित की जिसकी सभा प्रति चतुर्दशीको होनी निश्चित हुई । वहांकी पाठशालाके प्रबन्धको ठीक किया तथा शिखरजीके रक्षार्थ यहां व मुबारकपुर जाकर रु० ५००) का चंदा कराया । वहांसे सहारनपुर जाकर आश्विन सुदी ८ को किरपीबाईजीके मंदिरजीमें सभा की । स्त्रियोंकी ऋतु सम्बन्धी क्रियापर उपदेश देकर कईने नियम लिया । आश्विन सुदी १० को आप नकूड़ गईं । वहां तीन दिन सभा की । वहां विधवाश्रम कायम करनेको उपदेश देकर रु० १०२) का चंदा कराया । यहांसे मुजफ्फरनगर, खतौली व मेरठ उपदेश देती हुई दिहली पधारीं ।

किष्किंधापुरकी रक्षा ।

श्री किष्किन्धापुर श्री पुष्पदन्त स्वामीका जन्मक्षेत्र है । वहांपर श्री जिनमंदिरजी व उस सम्बन्धी जमीन है । इस जमीनको सर्कार अपने कब्जेमें करना चाहती थी तथा इसके-लिये नोटिस दिया था । इसकी उजरदारी गोरखपुरके भाईयोंने की तथा सेठजीको सूचना की । सेठजीने तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा छोटे

लाटको अर्जी भेजी। इसका अंतिम उत्तर आया कि सरकारने गोरखपुर जिलेके खुखुंदो स्थान पर ६४ एकड़ जमीन जैन मंदिर, धर्मशाला, और बागकी अपनी आधीनताईसे निकाल दी है। ऐसी सूचना नं० २९९७,३६७ ता० १२ नवम्बर १९०८में प्रगट की है। वास्तवमें जो शांति व प्रभावके साथ उद्यम किया जाय उसमे अवश्य सफलता होती है।

बम्बईमें सभा। भादों मास धर्मध्यान सहित पूर्ण होनेपर मिती आसौज सुदी १४ को बम्बईमें सेठ माणिकचंदजीके सभापतित्वमें एक सभा हुई जिसमें सम्मेदशिखर सम्बन्धी हकीकत जो रांचीमें हुई थी सो सब वर्णन की गई। तथा फीरोजपुर छावनीके धर्मात्मा दानी लाला रामलालजी (पिता लाला देवीसहाय) की मृत्यु पर शोक प्रदर्शित किया गया। आपने शिखरजीकी रक्षामें बहुत मिहनत की थी। आप १००) मासिक जैन अनाथाश्रम हिसारको देते थे। मरनेके पहले १४३०४) रु० का दान कर ता० २ अक्टूबर १९०८ को परलोक सिधारे। इसमें १००००) रु० वास्ते धर्मशाला और जैनमंदिर स्टेशन ईसरी शिखरजीके मार्गमें, ५२५) जैन अनाथालय हिसार, २२९) के आटा चावल शिखरजी पर व २२९) हस्तनापुरके दीनोंको, १०१) अयोध्या व १०१) गिरनारके दीनोंको बंट; २५००) रथ बनानेको, ५२९) जैनमंदिर रिवाड़ी, ५१) पं० रिवाडीकी नसियां व ५१) गौशाला फीरोजपुरमें दिये। सेठ साहबने आपके गुणोंकी सराहना करते सभा विसर्जन की।

जैपुरमें श्री० मगनबाई।

जैपुरमें पं० अर्जुनलाल सेठी द्वारा स्थापित जैन शिक्षाप्रचारक समितिका वार्षिक अधिवेशन कार्तिक सुदी १को था। सुदी २ को बम्बईसे श्रीमती मगनबाईजी भी जयपुर पधारीं। आपके कई व्याख्यान हुए। इनके असरसे गुमानीजीके मंदिरमें पद्मावती कन्याशाला समितिकी तरफसे खोली गई तथा विधवाश्रमके लिये जोर दिया जिसमें १०) मासिक विधवा फंडसे व ५) रु० मासिक स्वयं मदद देना कहा।

दहीगांवमें सेठजीका भ्रमण।

सेठ माणिकचंदजीको सदासे ही जातिकी बालविवाह आदि कुरीतियोंके निवारणका खयाल था। दहीगांव एक अतिशय क्षेत्र शोलापुरके तालुके माढसिरसमें दिगसल स्टेशनसे २२ मील दहीगांव है। यहां एक वृहत् श्री महावीरस्वामीका दि० जैन मंदिर विशाल, मानस्तंभ और शिखरोंसे दूर २ तक अपनी प्रभा चमका रहा है। इसकी प्रतिष्ठा सं० १९१२में फलटनके बालब्रह्मचारी सेठ हीराचंद अमोलकके उपदेशसे हुई, जिन्होंने अपने गुरु ब्रह्मचारी महतोसागरके स्मरणमें यह मंदिर निर्माण कराया। यह ब्रह्मचारी बड़े धर्मात्मा तथा त्यागी थे। इनके उपदेशसे दक्षिणमें बहुत सुधार हुआ था। यहां प्रतिवर्ष मगसर वदी २ से ७ तक रथोत्सवका मेला भरता है जिसमें **बीसाहूमड़** भाई अधिक आते हैं। इस वर्ष गांधी नाथारंगजीने कुरीति निवारणका विशेष प्रबन्ध करेंगे ऐसी सूचनाके छपे हुए नोटिस भेजे थे। इसीपरसे **सेठ माणिकचंदजी** सकुटुम्ब शीतलप्रसादजीके साथ मेलेपर पधारे।

आकलुजसे सेठ गंगाराम और उत्साही नवयुवक बापूजी पानाचंद नाथा तथा फल्टनसे बाबू चंदूलाल वकील आदि आए थे। मगसर वदी ६ को ब्र० महतीसागरजीके स्मरणार्थ **महतीसागर धर्मोद्योतनी** नामकी सभा स्थापित हुई। यह प्रतिवर्ष इस क्षेत्रपर होवे और धार्मिक व सामाजिक उन्नति करे। इसका अधिवेशन हुआ। **सेठ माणिकचंदजी सभापति हुए**। शिक्षा प्रचार, कन्याविक्रय निषेध, स्वदेशी वस्तु व्यवहारके प्रस्ताव पास हुए। रात्रिको फिर जलसा हुआ।

शीतलप्रसादजीने सभाके लाभ बताए। फिर क्षेत्रके सुप्रबन्धार्थ ७ महाशयोंकी कमिटी बनी। मंत्री बाबू चंदूलालजी हुए। फिर सेठ वीरचंद कोदरजी फल्टनने कहा कि कल रात्रिको बीसाहुमड़की पंचायतने सेठ माणिकचन्दजीकी सम्मतिके अनुसार नीचे लिखा **पंचायती ठहराव** स्वीकार किया है—

"बीसाहुमड जाति सुधारिणी सभा "ऐसा ठहराव करती है कि कोई भी बीसाहूमड़ अपनी लडकीकी सगाई १० वर्षकी कम अवस्थामें न करे।"

इस पर उपस्थित भाइयोंके दस्तखत हुए हैं। शेष हस्ताक्षर कराये जांयगे। मैं मंत्रीका काम करूंगा। कन्याविक्रय न करेंगे इस पर भी बहुतसे भाइयोंने दस्तखत किये। इस मौकेपर कुरीति निवारण पर एक भाषण जो स्वयं सेठजीने लिखकर छपवाया था पढ़ा।

यहां जैनियोंके ७ घर व संख्या ३० होने पर भी स्वागत व भोजन सत्कारका प्रबन्ध अच्छा था। ८०० जैनी स्त्री पुरुष एकत्र हुए थे।

यहांसे सेठजी फल्टन गए। वहां पाठशाला स्थापित कराई। फिर बम्बई आए।

बम्बईमें दतिया नरेश और मानपत्र।

सेठ माणिकचंदजी कभी मौका चूकने वाले न थे। श्री सोनागिर सिद्धक्षेत्र दतिया रियासतमें है। इस पर्वतसे श्री नंगानंग प्रभृति ५॥ करोड़ मुनि मोक्ष पधारे हैं। बहुतसे मंदिर हैं पर व्यवस्था बराबर नहीं थी। इसकी सेठजीको बड़ी चिन्ता थी। कारणवश महाराज दतिया श्रीमान लोकेन्द्र गोविन्दसिंह बहादुरजू बम्बई पधारे। तब शीतलप्रसादजीके साथ आप बहुतसी सामग्री भेट लेकर गए। मिलकर तीर्थकी उन्नतिके सम्बन्धमें बात की। फिर ता. ३१ अक्टूबर १९०८की रात्रिको हीराबाग लेक्चर हॉलमें एक महती सभा बुलाकर और राजा साहबका स्वागत करके तीर्थक्षेत्र कमेटी और बम्बई निवासी दि० जैनियोंकी तरफसे एक सुन्दर मुद्रित अभिनन्दनपत्र अर्पित किया गया। पं० धन्नालालजी द्वारा सुन कर पंडित रघुनाथ रावजी प्राईवेट सेक्रेटरी महाराजने उत्तर देते हुए कहा कि–महाराजा साहब अपनी प्रसन्नता प्रगट करते हैं और चाहते हैं कि १३ और बीस पंथियोंमें ऐक्य हो, जैन सभाकी वृद्धि हो और दतिया रियासतका क्षेत्र सोनागिरि पर्वत व्यापार प्रधान, विद्याकी पीठ और परोपकारकी मुख्य जगह जल्द हो जावै।

अनुमोदन करते हुए सेठजीने कहा कि धर्मादेकी इकट्ठी की हुई रकम सत्कार्यमें लगाना अपना कर्तव्य है, दूसरे काममें नहीं, इतना ही नहीं, उस पैसेको प्रत्येक गांवके व्यापारी पंचायत द्वारा एकत्र करके सत्कार्यमें लगा सकते हैं। बम्बई आदिमें ऐसी व्यवस्था भी चालू है। (७) हुबलीमें बोर्डिंग स्थापनके लिये एक कमेटी बनी, (८) मैसूर सर्कारने शालाओंमें धार्मिक शिक्षा देनेका जो प्रस्ताव किया है उसपर अभिनंदन (९) कोल्हापुर बोर्डिंगमें अलग जिनमंदिर बांधनेकी स्वीकारता पर **भूपाल अप्पाजी जिरगेको** धन्यवाद। श्रीमती कंकुबाईजीकी अध्यक्षतामें महिला परिषद् हुई जिसमें श्राविकाश्रम कोल्हापुरकी बाइयोंने व श्रीमती **मगनबाईजीने** भाषण किया। मगनबाईजीने कहा कि "जैसे तुम लोग कभी २ अपने पुरुषोंसे गहनोंके वास्ते हठ करती हो ऐसे ही विद्या मांगनेके लिये हठ करो।" सभामें दो कन्याओंने मगनबाईजीकी स्तुति एक ललितपदमें की वह इस प्रकार है—

[चालः—"चंद्रकांत राजाची कन्या सुगुण रूप रमणी."]

धन्य ! धन्य ! तूं सुगुणशालिनी **मगनबाइ** भगिनी ॥
भूषविला स्त्रीसमाज आजी ज्ञानदान करुनी ॥ धृ० ॥
इहलोकीं स्त्रीपुरुषां मोठें भूषण ज्ञान असे ॥
भगिनिजनां तें प्राप्त हो कसें तुज चिंता विलसे ॥
कलिकालाचा दुस्तर फेरा अज्ञाना वितरी ॥
त्यायोगें ज्ञानांध जाहले समाज एकसरी ॥
भरतजननिच्या शुभ दैवानें आंगलप्रभु मिळले ॥
ज्ञानबलें आर्यांतें त्यांनी बुद्धिवंत केलें ॥
आमुचा बनला जैनसंघ तंव प्रागतीक जगतीं ॥
हिरे माणकें तयांत रत्नें चकाकती पुढतीं ॥

ज्ञानार्जनि गृहिसंघ पुढें हो स्त्रीसमाज मागें ॥
उरला देखुनि भगिनीहृदयीं चिंता बहु जागे ॥
'**अनभिषिक्त भूपा**' ची कन्या धर्मशील बाला ॥
स्त्री उन्नति होण्यास स्थापी **श्राविकाश्रमाला**' ॥
त्यां आश्रमिच्या आम्ही बाला ज्ञानार्जन करुनी ॥
सद्धर्म बागोनी जाऊं भावोदधी तरुनी ॥
स्त्रीवर्गावर मगनबाईने केला उपकार ॥
जन्मोजन्मीं न हो ! तयाचा आम्होतें विसर ॥
अनभिषिक्त राजा करवीं हो ! समाजहित कृत्यें ॥
स्त्रीउन्नतिपर कार्य होवो ! भगिनीच्या हस्तें ॥
भो ! **जिनवरा** जगन्मंगला, ठेव सुखी आमुची ॥
राजकन्यका **मगनबाइ** ही पित्यासवें साची ॥ १ ॥

तारंगाजीमें बम्बई प्रा० सभा व सेठजी।

सेठजी बम्बई आकर तुर्त ही **श्री तारंगाजी** पर्वतको रवाना हुए (यहां भी शीतलप्रसादजी शरीरमें रोगके कारण न जा सके) जहां बम्बई प्रांतिक सभाका छठा वार्षिकोत्सव मिती माघ सुदी २ से था। इस जल्सेके नियत किये हुए अध्यक्ष सेठ हीराचंद अमीचंद, शोलापुरनिवासी, श्रीमान् दानवीर सेठ माणिकचंद हीराचंद जे० पी० व अन्योंके साथ माघ सुदी १ प्रातःकाल अहमदाबाद पहुंचे। जैसिंहभाई हरजीवन-दासकी तरफसे वालन्टियरोंने हारतोरे आदिसे सन्मानित किया। दोपहरको खेरालू स्टेशनपर आए। स्टेशनपर २०० भाइयोंके साथ सेठ लल्लुभाई लक्ष्मीचंद अध्यक्ष स्वागत कमेटी उपस्थित थे। स्वागत करके अनेक पताकाओंके साथ गाजते बजाते धर्मशालामें गए। यहां शामको दिगम्बर और श्वेताम्बर भाइयोंकी सभा हुई। जिसमें श्वे०

ने तारंगाजीपर चलनेवाली तकरारको आपसमें निबटानेका वादा किया। रविवारको सवेरे पर्वतपर पहुंचे। पर्वतपर ठहरानेका सुप्रबन्ध था। ४००० आदमियोंके बैठने लायक मंडप था। रात्रिको हमारे सेठजीके सभापतित्वमें उपदेशक सभा हुई जिसमें सेठ मूलचंद किसनदास कापड़िया सम्पादक "दिगम्बर जैन"ने सभाके लाभ बताए। सोमवारसे जलसे शुरू हुए। ६००० जैन एकत्र थे। ठाकुर साहव, पृथ्वीसिंह तखतसिंहजी व सर्कारी अमलदार वर्ग उपस्थित थे। सेठ माणिकचंदजीने सभापतिका प्रस्ताव करते हुए कहा कि हमारे सभापति इंग्रेजी मराठीके विद्वान, धर्मात्मा तथा एक प्रतिष्ठित पुरुष हैं। इनके बड़ोंने इसी तीर्थपर एक शिखरबंद मंदिरकी प्रतिष्ठा कराई है। सभामें १३ प्रस्ताव पास हुए, इनमें मुख्य ये थे (१) शिखरजीके निकालपर सेठ माणिकचंदजी आदिका आभार (२) मुम्बई समाचार, गुजराती व अन्य पंचांगोंमें वीर संवत व दि० जैन त्योंहारकी टीप रहे व इसका प्रबन्ध सेठ माणिकचंदजीके सुपुर्द हुआ। (३) जैनमित्रके सम्पादक शीतलप्रसादजी नियत हुए। तारंगाजीमें सभाके उपदेशक खाते आदिके लिये करीब १५००) के चंदा हो गया। इसमें सभापति और सेठजी प्रत्येकने २०१) दिये। यहां मंदिरजीके ध्वजा दंड चढ़ाई गई जिसमें ५०००) की उपज हुई।

जैन महिलाओंकी एक भारी सभा सेठ हीराचंद अमीचंदकी धर्मपत्नी नवलबाईकी अध्यक्षतामें हुई। इसमें श्रीमती मगनबाईजीने **अहमदाबादमें दिगम्बर जैन श्राविकाश्रम** स्थापित होनेकी आवश्यक्ता बताई और स्वयं १०००) देनेका उत्साह

बताया। तब और स्त्रियोंने भी चंदा दिया जो कुल ४०००)का हो गया। सेठ माणिकचंदजीके पूर्ण उद्योगसे सभाका काम निर्विघ्न हो गया, तब सेठजी बम्बई आये।

कोल्हापुरमें चतुरबाई सभागृहके लिये ४०००) खर्च।

सेठजीका कोल्हापुर जानेका बहुत प्रसंग रहता था। वहां भारी सभा भरनेको कोई सभागृह नहीं था। एक दफे आपके चित्तमें आई कि बन जाना चाहिये। इससे जैनियोंके सिवाय सर्व साधारणको भी लाभ पहुंचेगा। आप इमारत शुरू करानेके लिये न्यूका पत्थर रखनेको मुम्बईसे चलकर ता: ११ मार्चको कोल्हापुर आए और एक भारी सभा करके युवराज राजाराम महाराजके हस्तसे अपनी स्वर्ग प्राप्त धर्मपत्नी चतुरबाईके स्मरणार्थ सभागृह बनानेका पत्थर रखवाया। बहुतसे बाहरके जैनी भी आए थे। इसमें ४०००) खर्चनेका विचार किया।

धर्मादेके प्रस्तावकी अमली कार्रवाई।

इस सभारंभके पीछे सेठजीने कोल्हापुरके जैन व्यापारियोंके धर्मादे पैसेकी सुव्यवस्थाके लिये कहा, तब सबने कबूल करके कुछ भाग जैन बोर्डिंगमें देना स्वीकार किया। शाहपुरकी मंडलीने अपने यहांके धर्मादेको एकत्र कर एक जिन मंदिर बांधनेका प्रस्ताव किया। वास्तवमें यदि जैन व्यापारी वर्ग सच्चे दिलसे अपने २ यहांकी धर्मादेकी रकमोंको जो पैसा वास्तवमें सर्व साधारणके लाभमें ही उपयोग आने लायक है, एकत्र कर एक साथ राय करके खर्च करें तो हर स्थानमें पाठशाला, औषधालय

आदि धर्मके काम सहजमें हो जावें। ऐसा करनेमें सत्यता व नेक नियतीकी जरूरत है। बड़े २ व्यापारी बहुत धर्मादा काढ़ते हैं वे ही देनेसे हिचकते हैं इसीसे योग्य उपयोग नहीं होता। धर्मादा द्रव्य हमारा नहीं हैं यह भाव यदि हो तो बड़ा उपकार हो सक्ता है। दूसरे दिन जैन बोर्डिङ्गके छात्रोंने सेठजीका बहुत सन्मान किया। सेठजी फोरन बम्बई आए। बड़े ही आनन्द व आश्चर्यकी बात है कि सेठजीको यात्रा करने व देश परदेश जानेमें शरीर कष्ट व खर्चेका कुछ भी खयाल नहीं होता था। वास्तवमें जो ऐसे ही

निरालसी दातार होते हैं वे ही कुछ कर जाते हैं।

श्री अंतरीक्षजीमें मारामारी और सेठजीको भारी चिंता।

जैसे गृहारंभादिके कामोंमें नाना चिन्ताएं रहती हैं इसी तरह व्यवहार धर्मके साधनमें भी बहुतसी चिन्ताएं हो जाती हैं। अब सेठजीको धर्म सम्बन्धी ही चिन्ताएं रहा करतीं थीं। श्री शिखरजीकी चिन्तासे कुछ मुक्त हुए थे कि यकायक **अंतरीक्ष पार्श्वनाथके** झगड़ेसे भारी चिंता हो उठी। बरार प्रान्तमें अकोला स्टेशनसे ४० मील सीरपुर गांव है वहां श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथजीकी भव्य दिगम्बर जैन मूर्त्तिसे शोभायमान एक जिन मंदिर है। यह अतिशयकारी प्रतिमा है। व्यापारार्थ आनेवाले श्वेताम्बरी भी दर्शन करने जाने आने लगे थे। बम्बईसे एक संघ यात्राके लिये पन्यास मुनि आनंदसागरजीके साथ वहां गया था। उसने श्वेताम्बरी २ प्रतिमा व १ यंत्र वहां सदाके लिये विराजमान करनेका उद्यम किया तब

वहांके दिगम्बरियोंने मना किया इसपर बोलचाल बढ़ी। श्वे० के साथ तलवार बंदूक आदि थी उससे ७ दिगम्बरी घायल किये गए। पुलिस आई। २० श्वे० व आनन्दसागरजीके ऊपर मुकद्दमा चलाया। इस सम्बन्धी विचारके लिये हीराबागमें फाल्गुन सुदी ८ को दिगम्बरियोंकी एक आम सभा राजा ज्ञानचंदके सभापतित्वमें हुई। सेठ माणिकचंदजी और पं० धन्नालालने सर्व हकीकत वर्णन की। सर्व सभासद इसके लिये योग्य प्रबन्ध करें ऐसी प्रार्थना सेठजीने की। यह मुकद्दमा बहुत दिन चला इसमें सेठजीने तीर्थक्षेत्र कमेटीसे रुपयोंकी बहुत मदद दी।

सेठजीका हुबली बोर्डिंगके लिये भ्रमण।

जातिसेवाके लिये कमर कसे हुए सेठजी शीतलप्रसादजीको लेकर ता० २९ मार्च ०९ को मंबेर बंबईसे **बेलगांव** स्टेशन पहुंचे। उत्तम प्रकारसे स्वागत हुआ। शामको जैन लोगोंकी तरफसे सेठजीके सन्मानार्थ सभा हुई। उसमें शीतलप्रसादजीने विद्योन्नतिपर भाषण देते हुए जैन बोर्डिंगके लाभ वर्णन किये। रा० रा० चौगलेने समर्थन किया व बेलगांवमें भी ऐसे बोर्डिंगकी आवश्यकता बताई। बेलगांवके अजैन वकील रा० रा० छत्रेने शीतलप्रसादजीके व्याख्यानकी प्रशंसा पूर्वक अनुमोदना की। अंतमें सेठ माणिकचंदजीने कहा कि लोगोंकी इच्छा प्रमाण यहां भी बोर्डिंगकी जरूरत है पर यह काम एकदम नहीं हो सकता। स्थापनाके पहले बहुत परिश्रमकी आवश्यकता है।

रात्रिको यहांसे बहुतसे महाशय हुबली सवेरे सेठजीके साथ पधारे। जैन बोर्डिंग खोलनेका मुहूर्त्त चैत्र सुदी ६ ता०

२७ मार्चको होगा ऐसी सूचना पाकर बहुतसे भाई परदेशसे आए थे जैसे मैसूरसे श्रीयुत अनंतराजय्या, वर्धमानैय्या, दावणगिरीसे ब्रह्मप्पा आणा तवनप्पा आदि। ता० २७ को सबेरे कुंभ लेकर बोर्डिङ्गके स्थानपर जाकर सरस्वती पूजन हुई। व बोर्डिङ्गमें प्रवेश होनेवाले छात्रोंको रत्नकरंड श्रावकाचारका पाठ दिया गया। श्री पायसागर स्वामी विदरेने स्थापन विधि की। शामको ५ बजे मंडपमें एक भारी सभा की गई जिसमें नगरके प्रतिष्ठित पुरुष भी आए। अध्यक्ष स्थान धारवाड़ जिलेके कलेक्टर **मि० हडसन** साहबने ग्रहण किया। रा० रा० चौगले बी० ए० एलएल० बी० वकील बेलगामने इंग्रेजीमें द० म० जैन सभा व बोर्डिङ्ग खोलनेका उद्देश्य बताया व साहब बहादुरको प्रार्थना की कि बोर्डिङ्ग खोलें। अध्यक्ष महोदयने 'बोर्डिंग खोला गया' ऐसा जाहर करके कहा कि " जैन लोग प्राचीन कायदेके अनुसार विद्याकी तरफ जो ध्यान दे रहे हैं सो स्तुत्य है। विद्यामें जैन लोग आगे बढ़े ऐसी मेरी उत्कट इच्छा है।" कई भाषण हुए। शीतलप्रसादजीने जैनियोंकी प्राचीन गुरुकुल पद्धतिको समझाया तथा बोर्डिङ्ग उसीका कुछ अनुकरण है ऐसा बताया। बेलगांवके धरणप्पा सेठीने कलेक्टरका आभार माना। बादशाह एडवर्डकी तीन जय बोलकर सभा समाप्त हुई।

सेठजीका १०००) दान हुबली बो०।

रात्रिको पायसागर स्वामी विदरेके सभापतित्वमें सभा हुई तब शीतलप्रसादजीने श्रावकके षट्कर्मपर कहते हुए धर्म शिक्षणकी आवश्यकता कालेजके छात्रोंके लिये बतलाई तथा इस बोर्डिंगरूपी वृक्षको द्रव्यरूपी पानीसे सींचनेको कहा। रा० सा० चौगले व अन्यके समर्थन होनेपर उदारचित्त भाइयोंने इस भांति दान किया।

१०००) दानवीर सेठ माणिकचंदजी।

५०१) तवनप्पा आप्पण्णा लेंगडे, शाहपुर।

५०१) धर्मराव सूबेदार, बेलगांव।

५०१) चंदाप्पा भीमराव देसाई,

कुल रकम फुटकर भी आई।

रात्रिको पायसागर विद्रेके सभापतित्वमें फिर सभा हुई। ऐलक त्यागी पन्नालालजी महाराजके साथ जैनबिद्री जाते हुए पं० वासु गोपाल शास्त्रीका दान पर भाषण हुआ। श्रीयुत यल्लाप्पा मेटगणी कर मास्टरने स्त्री शिक्षा पर कहा। श्रीयुत बुरसेने हुबलीके शिक्षण फंडमें १२००) दिये। सेठजीके प्रयत्नसे बोर्डिङ्गके प्रबन्ध व धर्मादा रकमकी व्यवस्थाके लिये १३ महाशयोंकी स्थानीय कमेटी बनी। सेक्रेटरी श्रीयुत कृष्णराव बुरसे हुए तथा यह ठहराव हुआ कि धर्मादेकी रकम कोषाध्यक्ष जमा करके बोर्डिङ्ग, पाठशाला व जिन मंदिरके लिये खर्च करें।

यहांके परदेशी श्वेताम्बरी लोगोंने एक प्राचीन दिगम्बर मंदिरको ठीक कराकर अपनी प्रतिमाएं विराजमान की हैं जिसमें दिगम्बर प्रतिमा भी हैं। इनकी ओरसे पाठशाला व कन्याशाला चल रही है। सेठजी व शीतलप्रसादजीने परीक्षा ली। फल अच्छा ही रहा। हुबलीसे सीधे बम्बई आए।

कर्नाटक देशमें हिन्दी भाषा।

हुबली कर्णाटक भाषी देश है। सर्व स्त्री पुरुष कनड़ी भाषा बोलते व लिखते हैं। यह भाषा हिन्दीसे गुजराती व मराठीकी अपेक्षा अनमिल है तो भी यह देखनेमें आया कि हिन्दी भाषा भी यहां वाले समझ लेते हैं व हिन्दी बोलनेवाले से हिन्दीमें बात कर लेते हैं। यह दशा देखकर भारतमें जो एक

राष्ट्रीय भाषा करना चाहते हैं उनका अवश्य यह निश्चय होना चाहिये कि **हिन्दी** ही इस सन्मानके योग्य है।

लल्लूभाई परीखके गुणकी कदर।

गुजरातकी दिगम्बर जैन कौम शिक्षामें बहुत पीछे पड़ी हुई थी, इसको विद्याकी ओर उत्तेजना देनेवाले **दानवीर सेठ माणिकचंदजी** थे। बोरसद निवासी मेवाड़ा जातिके परीख **लल्लूभाई प्रेमानंददास** एल० सी० ई० सेठजीके धार्मिक कामोंमें पूर्ण मददगार थे और अब भी हैं। बम्बई प्रान्तिक सभाके सहायक महामंत्रीके सिवाय अहमदाबाद बोर्डिंगके मंत्रित्वका काम बहुत ही दिलसे करते थे। आप इन्कमटैक्स ऑफिसमें अच्छे पदपर थे। सर्कारने इस समय इनको काम चलाऊ **डिप्टी कलेक्टरका** पद दिया तब सेठजीने इनके परिश्रम व उन्नतिका दृष्टान्त और गुजराती बालक लेवें इसलिये वैशाख वदी ३ ता० ८ अप्रैल १९०९ को हीराबागमें एक आम सभा **आनरेबल मि० गोकुलदास कहानदास पारेखके** सभापतित्वमें की। इसमें जैन अजैन बहुतसे विद्वान् व प्रतिष्ठित पुरुष शामिल हुए। **सेठ हीराचंद नेमचंद** शोलापुरने इनके जीवनका हाल कहते हुए वर्णन किया कि सन् १९०३ में यह एल० सी० ई०की परीक्षामें पास हुए तथा अपने परिश्रम और योग्यतासे केवल ५ वर्षमें ही ऐसे ऊंचे पदको प्राप्त हुए हैं। फिर **शेठ माणिकचंदजीने** कहा कि इस उच्च पदपर पहुंचनेका कारण इनकी **प्रमाणिकता** और **सत्यता** है इनको बहुत ही जोखमदारीके काम मिले पर यह आज तक प्रमाणिकपनेसे

चलते आए हैं । **हमारे और बंधुओंको इनका अनुकरण करना चाहिये ।** तब प्रमुखने कहा कि जैन **कौम** व्यापारमें धनी कुशल और बुद्धिशाली होती है ऐसे ही **विद्यामें** भी कुशल होनेका यत्न करना चाहिये । तब लल्लूभाईने कहा कि मैं इस मानके योग्य नहीं हूं । कौमकी सेवा करना हर एकका फर्ज है । **सम्पूर्ण गुजरातमें हमारे दिगम्बर भाइयोंको विद्यामें अग्रसर करनेवाले हमारी कौमके दानवीर सेठ माणिकचंदजी** हैं, और मैं जिस **मान पानेका भाग्यशाली आज हुआ हूं वह दानवीर सेठके प्रतापसे ही है।** मैं सेठजीका अंतःकरणसे आभारी हूं ।

महाराज बड़ौदा और सेठजी ।

ता० २ मईको श्री महाराज सयाजीराव गायकवाड़ बड़ौदाने कोल्हापुर जैन बोर्डिंग और श्राविकाश्रमका निरीक्षण किया । जैन कौमने बहुत सन्मान दिया । प्रोफेसर लट्ठेने बोर्डिंग व श्राविकाश्रमका हाल सुनाया, तब महाराजने अपने भाषणमें स्त्रीशिक्षाकी बड़ी आवश्यकता दिखाई व कहा कि जैनियोंको ज्ञान प्रसारार्थ यत्न चालु रखना चाहिये । मैं अपनी प्रजाको शक्तिके अनुसार जो शिक्षण दे रहा हूं उससे मुझे समाधान नहीं वह और बढ़ना चाहिये। जैसे **सेठ माणिकचंद पानाचंदजीने इस इमारतको बंधवा दिया है** ऐसे ही प्रत्येकको ऐसे कार्योंमें मदद करना चाहिये ।

बम्बईमें त्यागी ऐलक पन्नालालजी महाराज जो केवल एक लंगोटी मात्र परिग्रह रखते हैं, भिक्षावृत्तिसे एक दफे आहार करते हैं, शीत उष्ण पवनकी परीषह सहते हैं, रात्रिको गमन नहीं करते हैं, ध्यान स्वाध्यायमें लीन रहते हैं, पधारे।

बंबईमें त्यागी पन्नालालजीका केशलोंच।

आपके केशोंको अपने ही हाथसे लोंच करनेका समय आ गया, तब बंबईवालोंने रथोत्सव किया व माधोबागमें पूजन व सभाएं हुईं। बाहरसे भी बहुत लोग आए। मिती वैशाख सुदी १९ बुधवार ता. ५ मई १९०९को सवेरे ८ बजे हजारों नरनारियोंके मध्यमें अपने हाथसे अपने मस्तक, डाढ़ी और मूँछके बालोंको आध घंटेमें पद्मासन बैठकर बड़ी शांतिसे उपाड़ डाला। सर्व जन आश्चर्यमें भर गए उस समय सबके मनमें वैराग्य आ गया, बहुतोंने परस्त्री त्याग आदिके नियम लिये। त्यागीजीने थोड़ासा उपदेश केशलोंच करनेके पहले किया था। उसके व इस दृश्यके प्रभावसे उपस्थित मंडली व खासकर सेठ माणिकचंदजीके भाव चढ़ आए। उसी समय **औषधालय**के लिये ८०००) का चंदा हुआ, जिसमें सेठ माणिकचंद पानाचन्दजीने भी ५०१) दिये। सेठजीकी कुटुम्बकी स्त्रियोंने १०१) रु. देकर स्त्रियोंमें ३००) का चंदा कराया। श्रीमती मगनबाईजीकी प्रेरणासे **श्रीमती बेसरबाई बड़वाहा** ने ११००) श्राविकाश्रमके लिये दिये। सेठ माणिकचंदजीने अपने हीराबागके देशी औषधालयका नाम बदलकर **ऐलक पन्नालाल औषधालय** रख दिया और वह रकम इसी काममें खर्च होने लगी। यह दवाखाना बंबईमें बहुत प्रसिद्ध हो गया है। वैद्य एक

जैनी शोलापुरका पढ़ा हुआ बहुत योग्य है। इससे सैकड़ों गरीबोंको लाभ पहुंच रहा है।

वर्षातमें प्राय: सेठजी बम्बई ही में ठहरे और धर्मध्यानमें लीन रहे। इस वर्ष शीतलप्रसादजीने दशलाक्षणीपर्व बोरसद ग्राममें सेठ चुन्नीलाल प्रेमानंद मंत्री उपरैली कोठी शिखरजी बीस पंथी कोठीकी प्रेरणासे विताया था और वहां १० दिन तक शास्त्र-सभामें सूत्रजीके अर्थके साथ २ धर्मोपदेश दिया था।

कोल्हापुरमें सेठजीका गमन।

भादोंके कुछ दिन पीछे ही सेठजी कोल्हापुर गए। वहां ता: ९ सितम्बर ०९ को श्रीमती चतुरबाई हालमें दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाकी प्रबन्ध कारिणी सभाकी बैठक सेठजीके सभापतित्वमें हुई, निश्चय हुआ कि कार्तिक अष्टान्हिकामें कोल्हापुरमें वार्षिक परिषद् की जायव उसके साथ कलाकौशल्य और खेतीकी प्रदर्शनी दिखाई जाय। सभापतिके लिये श्रीयुत ब्रह्मप्पा आण्णा तवनप्पवर नियत हुए। सर्व मेम्बरोंने अनेक कार्य्य बांट लिये। इसी अवसरपर श्री अनंत जिनकी पंचकल्याणक पूजा व नवीन मंदिरकी प्रतिष्ठा करना भी निश्चय हुआ जो सेठ भूपाल जिरगेने बोर्डिंगके छात्रोंके लाभके लिये निर्मापण कराया था। सेठ भूपालने २०००) से अधिक मंदिर निर्मापणमें लगाए व ३०००) की कीमतकी जमीन मंदिर खातेको दी जिससे १००) वार्षिककी उत्पन्न हो।

आश्विन वदी १३ ता० १२ अक्टूबर ०९को हीराबाग धर्मशालामें सभा हुई। सेठ शामलाल चांदवड़ सभापति हीराबागमें सभा व हुए। सेठ माणिकचंदजी व अन्य अनेक सेठजीके अनुकरणमें भाई नासिक जिलेके मौजूद थे। बम्बई २००००)का दान। प्रान्तिक सभाका वार्षिक अधिवेशन श्री मांगीतुंगीमें मिती कार्तिक सुदी १२, १३ और १५ ता० २४–२५ और २६ नवम्बर ०९ को करना निश्चित हुआ था। उसके लिये सभापति हरीभाई देवकरणवाले सेठ हीराचंद रामचंद निश्चित हुए। स्वागतकारिणी कमेटीके सभापति सेठ गुलाबचंदजी हीरालालजी धूलिया व मंत्री सेठ शामलाल चांदवड़ नियत हुए। हमारे सेठजीको उस बातका ख्याल था जो बेलगांवके लोगोंने हुबली बोर्डिंगकी स्थापनाके लिये जाते हुए सेठजीसे कहा था कि यहां बोर्डिंग होना चाहिये। आपने इस कार्यको कराने लायक शाहपुर, बेलगांवनिवासी **धर्मप्पा सूबेदार**को पक्का किया जो कि जवाहरातके व्यापारी थे और बहुधा बम्बई आया जाया करते थे। सेठजीने २००००) बीस हजार रुपयेकी स्वीकारता करा ली। वह भी इस सभामें मौजूद थे। सेठजीने प्रेरणा करके कहा कि सूबेदार साहब कोई हर्षका समाचार प्रगट करना चाहते हैं। तब सूबेदार साहब उठे और प्रगट किया कि बेलगांवमें बोर्डिंगकी बहुत बड़ी जरूरत है अतएव उसके लिये मैं अभी २००००) बीस हजारका संकल्प करता हूं व आवश्यका होनेपर दस पांच हजार और भी लगाऊंगा।" इस समाचारको सुनके सभाको बड़ा आनन्द हुआ।

सर्कारी कौन्सिलोंमें जैन प्रतिनिधि ।

जब भारतमें यह कानून पास हुआ कि हिन्दू और मुसलमानोंके प्रतिनिधियोंके सिवाय (सिक्ख और जैनी ऐसी) आवश्यक जातियोंके भी प्रतिनिधि रहेंगे, तब भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाकी ओरसे **लार्ड मिन्टोकी** सेवामें कलकत्ते जो अर्जी सेठजीने भेजी थी कि जैनियोंकी तरफसे भी प्रतिनिधि लिया जाय, वह अर्जी नीचे प्रगट की जाती है । उसका जवाब ता० ६ अक्टूबरका नं० ३८४३ में आया कि बम्बई जवाबके लिये भेजी गई है तथा बम्बईसे नं० ९४०३ ता० १५ अक्टूवर १९०९ के पत्रमें जो जवाब आया वह यह है कि अल्प संख्यक जातियोंके प्रतिनिधियोंके लिये कुछ जगहें संरक्षित रक्खी गई हैं उनको देते हुए उपयोगी जैन जातिकी मांगका पूरा खयाल किया जायगा। ये दोनों जवाब भी इंग्रेजीके प्रगट किये जाते हैं । क्योंकि अभी तक इनकी असली कार्रवाई नहीं हुई है अतएव जैनियोंको उचित है कि सर्कारको अपने पत्रमें किये हुए वादेकी याद दिलावें तो अवश्य सफलता प्राप्त होगी ।

(1)

To,

His Excellency the Earl of Minto,
P. C., G. C. M. G., G. M. S. I., G. M. I. E.,
Viceroy & Governor General of India,
CALCUTTA.

May it please Your Excellency,

The Humble Memorial of the Bharat Varshiy Digamber Jain Maha Sabha,

Most respectfully showeth :—

That in the matter of popular representation in Council the Government having recognised the principle of the representation of "Important minorities" the Jain Community of India begs leave to approach your Excellency with its humble claim for special recognition as an "Important minority.

2. That the Jain Community does constitute an "Important Minority" and should not be neglected in this matter, has been admitted in the Despatch of the Government of India dated the 1st October 1908.

3. That as regards literary the Jain Community holds the second place throughout India, the first place of honor being held by the Parsees.

4. That in the Departments of Agriculture, Trade and Commerce, also the Jain Community of India is fairly advanced to claim recognition.

5. That the importance of this comparatively speaking small community and its conspicuously humble, peaceful, lawabiding, quiet and no—agitating character must have come to the prominent notice of your Excellency's Government in the recent matter of the Parashnath Hill.

6. That the separated widely in matters of religious belief social custom, and way of living, from the other religious communities of India

which group themselves as "Hindus" as the Jain Community of India is, it has no reasonable hope of success in the matter of obtaining representation in Council if it is left to take its chance with the general "Hindu" community.

7. That the Jain Community of India fervently hopes and feels confident that your Excellency will be most graciously pleased to reserve one seat in your Excellency's Legislative Council for a member of the Jain Community of India.

And Your Excellency's Humble Petitioner as in duty bound will ever pray.

I have the honor to remain, Your Excellency's most obedient servant.

i. e. Maneckchand Hirachand J. P. Bombay.

Offg. President, Bharat Varshiya Digambar Jain Maha Sabha.

Office :—

Khurai, Dist. Saugor C. P.

Dated the 2nd September 1909.

(2)

Copy of the reply from the Home Department received under letter No. 3843 dated 6th. October 1909.

The undersigned is directed to inform Mr. Maneckchand Hirachand that his letter dated the 2nd September 1909 regarding the representation of the Jain Community on the Legis-

lative Council has been transferred to the Government of Bombay for diaposal.

Sd. H. C. STAKE.
Deputy Secretary
to the Government.

(3)

No. 5403 of 1909
General Department.
Bombay castle, 15 the October 1909,

To

Maneckchand Hirachand Esquire offg. president, Bharat Varshiya, Digambar Jain Mahasabha.

Sir,

With reference to your memorial to His Exellency the Viceroy and Governer General of India, dated the 2nd September 1909, praying that a seat in the Imperial Legis Lative council may be reserved for a member of the Jain Community, I am directed to inform you that a Number of seats have been reserved for the representativn of minorities by nomination and that in allotting them the claims of the important Jain Community will receive full consideration.

I have the honour to be,
Sir
Your most obedient servant
Sd/-
for Secretary to Government.

सेठ माणिकचंदजी अहमदाबादमें प्रेमचंद मोतीचंद दि० जैन बोर्डिंगका वार्षिक कोत्सव करने व

अमदाबाद बोर्डिंगका श्राविकाश्रम स्थापन करनेके लिये

सातवां वार्षिकोत्सव। शीतलप्रसादजीके साथ आए। बाहरसे बहुतसे भाई आए थे। आसोज सुदी १० को [illegible]क भारी सभा जुड़ी। नगरके प्रतिष्ठित पुरुष मौजूद [illegible] सेठ माणिकचंदजी हीराचंदजीके प्रस्ताव करने और [illegible]सिंहभाई गुलाबचंदके समर्थनसे ट्रेनिंग कालेजके प्रिन्सपल [illegible] कमलाशंकर प्राणशंकर त्रिवेदी बी. ए. ने सभापतिका आसन [illegible]ण किया। सेक्रेटरी लल्लूभाईने रिपोर्ट पढ़ी फिर श[illegible]जीने बोर्डिंगका कार्य संतोषकारक है ऐसा कहकर शुद्ध [illegible] लाभ व अशुद्ध आहारके अलाभ बताते हुए हड्डीके [illegible] बनी हुई परदेशी शक्करके निषेधपर कहकर धार्मिक शिक्षाकी [illegible]योगिता बताई। सेठ हरजीवन रायचंद अमोदवालेने समर्थन किया फिर सभापतिने अपने भाषणमें कहा कि सेठ माणिकचंदजीका ध्यान शिक्षाप्रचार पर है, इससे मुझे बड़ा आनन्द है, तथा बोर्डिंगकी संस्थासे रीति भांति सुधरती व मनमें एकाग्रता आती है। रात्रिको विजिटर्स कमेटीकी बैठक इसणाववाले सेठ नरसी गंगादासके सभापतित्वमें हुई। पालीतानावाले मुनीम धरमचंदजी हरजीवनने मनोहर कविता पढ़ी। श्राविकाश्रम खोले जानेकी सूचना हरजीवन रायचंदने की। छोटेलाल घेलाभाई अंकलेश्वरने श्राविकाश्रमके लिये प्रबन्धकारिणी कमेटीके नाम सुनाए। सभापति सेठ माणिकचंदजी व मंत्री छोटेलाल घेलाभाई हुए। नारायणदास मोतीलालने ५९०) बोर्डिंगमें दिये। शीतलप्रसादजीने

कहा कि धर्मशिक्षामें बालकोंको विशेष ध्यानकी जरूरत है। सम्पादक दि० जैनने बोर्डिंगके छात्रोंको जैनधर्मकी माहिती और नियम पोथी भेटमें दी।

श्राविकाश्रमकी स्थापना।

आसौज सुदी ११ ता० २५ अक्टूबर १९०९ सोमवारको ७॥ बजे बोर्डिंगके सामने एक मकानमें दिगम्बर जैन श्राविकाश्रमकी स्थापनाका महूर्त बम्बईकी परोपकारिणी सार्वजनिक कार्मोंमें भाग लेनेवाली जमनाबाईजी सक्कईकी अध्यक्षतामें बड़ी धूमधामसे हुआ। तारंगाजीपर पास हुए प्रस्तावके अनुसार अध्यापिका व उपदेशिका तय्यार करनेके लिये यह आश्रम खुला। इसमें धर्मशिक्षाके साथ उद्योग धंधा व लिखना बांचना सिखलाया जावेगा ऐसा विवेचन श्रीमती ललिताबाईने किया। प्रमुखाने आश्रम खोलते हुए कहा कि धर्म और नीतिकी ज्ञाता पवित्र माता बनानेसे ही इस आर्यभूमिमें धर्मिष्ठ और परोपकारी प्रजा रत्न उत्पन्न होंगे। अज्ञान माताकी अज्ञान प्रजा देशको अधम बनावेंगी। श्रीमती जमनाबाईजीने अजैन होनेपर भी ५१) भेट किये। श्रीमती मगनबाईजीने सबका आभार माना। यद्यपि बम्बईमें सेठ माणिकचंदजीने कुछ मकान अलग करके श्राविकाओंको परदेशसे आनेके लिये पत्रोंमें नोटिस सन् १९०६ में ही दिलाया था परन्तु उससे सिवाय एक इन्दौरकी आनंदीबाईजीके और कोई नहीं आ सकी। इस बाईको मगनबाईजीने अपने ही साथ रक्खा व छःढाला आदिका ज्ञान कराया। तब यह सलाह करके कि आश्रम ऐसे स्थानपर हो जहांसे विधवाएं सुगमतासे अपने देश भी जा सकें व

गुजरातका विशेष हित हो, सेठजीने अहमदाबादमें खोलनेका प्रबन्ध करा दिया। अब मगनबाई व ललिताबाई वहीं रहने लगीं और शिक्षादानमें मन वचन कायसे लीन हो गईं। रात्रिकी सभामें ३-०) का फंड आश्रमके लिये हुआ।

यह आश्रम अब बंबई आगया है। इससे बहुत लाभ हुआ है। जिस समय स्थापित हुआ केवल ४ बाइयें ही भरती हुई थीं। पर १ वर्षके भीतर २२ श्राविकाएं हो गईं जिनमें कन्याएं ७, सधवाएं ३ व विधवाएं १२ थीं, जो आमोद, छाणी, बड़ौदा, बमो, शाहपुर, अंकलेश्वर, कलोल, सोजित्रा, जंबूसर आदि ग्रामोंकी निवासिनी थीं। इनमेंसे श्रीमतीव्हेन तवनप्पा तय्यार होकर अब बड़वाया जिला नीमाड़की कन्याशालामें शिक्षा दे रही हैं। प्रभावतीव्हेन शीतलसा शिक्षिकाका अभ्यास अहमदाबाद ट्रेनिंग कालेजमें कर रही हैं।

सेठजीका काठियावाड़में भ्रमण।

श्रीगिरनारजी सिद्धक्षेत्र जूनागढ़ रियासतसे ४ मीलपर बहुत ही मनोज्ञ ऊंचा व रमणीक अनेक प्रकार जंगलोंसे सुशोभित प्रसिद्ध पर्वत है इसको उज्जयंतगिरि भी कहते हैं। यहांसे श्री कृष्णके चचेरे भाई जैनियोंके बाईसवें तीर्थंकर **श्री नेमीनाथ** व वरदत्तादि ७२ करोड़ मुनि मोक्ष पधारे हैं। पर्वत पर व नीचे दिगम्बर जैन मंदिर हैं, जूनागढ़में कारखाना है। यद्यपि इस तीर्थकी बहुत बड़ी सेवा परतापगढ़ जिला मालवाके दिगम्बर जैनियोंने की थी तथापि जबसे बंडी मन्नालालजी प्रबन्धकर्ता हुए, अन्धेर बहुत होने लगा। यात्रियोंको कष्ट—जिसकी

शिकायेतीं चिट्ठियां सेठ माणिकचंदजीके पास बराबर आती रहीं। हिसाब व भंडारका भी कुछ पता नहीं। तीर्थक्षेत्र कमेटीने फार्म वार २ भेजे। सेठ चुन्नीलालने बहुत लिखा पढ़ी की पर फ. हिसाबका भरकर नहीं पहुंचा। वहां सब जगह श्वेतांबर जैन पुजारी रक्खे हुए व मुनीम ब्राह्मण था। कटनीके संघकी ताकीदसे कमेटीने जब दिगम्बर जैन मुनीम भेजा तब उससे फौजदारी होगई। पर सेठजीने मुनीमको बराबर वहीं ठहरने दिया तथा उसको दूर कराकर परतापगढ़वालोंको वार २ लिखा गया कि ऐसी प्रबन्धकारिणी कमिटी बनाओ जिसमें बाहरके भी प्रतिष्ठित पुरुष हों व हिसाब बराबर प्रगट करो। कुछ भी सुनाई न होनेपर सेठजीने अप्रैल १९०९ में मास्टर दीपचंदजी उपदेशकको भेजा। यह १९-२० दिन ठहरे, बहुत समझाया पर सफलता न हुई। पत्रोंके द्वारा बहुत धमकी देनेपर वहांसे शाह जवाहरलाल गुमानजी बम्बई एक नियमावली बनाकर लाये। इसको सहायक महामंत्री लाला प्रभूदयालने ठीक कराई और कहा कि यही छपे व इसी तरह कार्रवाई हो, परंतु ऐसा न हुआ। उन्होंने मनमानी नियमावली छपवा दी व बाहरके मेम्बर प्रबन्धकारिणीसे हटाकर जनरल सभामें कर दिये तथा ८ वर्षका एक हिसाब भी संवत् १९५७से १९६५ तकके जैनगजट ता० ८-९-०९ में प्रगट कर दिया। सेठजीने इन दोनोंको ठीक न समझा और परतापगढ़वालोंको लिखा कि आप गिरनारजी आवें मैं भी आता हूं। वहां हम आप मिलके प्रबन्ध करें। सेठजीने आसौज सुदी १५ ता० २८ अक्टूबर ०९ मिती कायम करके २२ दिन पहले परतापगढ़, भावनगर आदिके भाइयोंको

जानेके लिये सूचना की । इसी कारण अहमदाबादसे सेठजी १ सुदी १२ को शीतलप्रसादजी और धर्मचंदजी हरजीवनके रवाना हुए ।

इन्हीं दिनों राजकोटमें गुजराती साहित्य परिषद थी । अबके परिषदके कार्यकर्ताओंने प्रगट किया था कि प्राचीन ग्रंथों व शिलालेखोंकी प्रदर्शनी भी कि जायगी । सेठजीको भी निमंत्रण आया था । आपने शीतलप्रसादजीसे राय करके अपनी चौपाटीके चैत्यालयमें विराजित प्राचीन लिखित गोमट्टसार, आदिपुराण, अष्टसहस्री, द्विसंधानकाव्य, उत्तरपुराण आदि २९–३० ग्रंथोंको और कुछ माड़वाड़ी दि० जैन मंदिरसे लेकर राजकोट रवाना कर दिये थे । इनमें संवत् १५०० व १२०० तककी लिपिके ग्रंथ थे । तथा भावनगरके दिगम्बर जैन भंडारसे भी सेठजीने ग्रंथ भिजवाए थे । वहांसे एक ग्रंथ अनुमान १३०० संवत्का लिखा आया था । सेठजी ता: २७ अक्टूबर १९०९ को सवेरे राजकोट पहुंचे । जिस सेकन्ड क्लासमें सेठजी गए थे उसीमें इस परिषदके प्रमुख दीवान बहादुर अम्बालाल साकरलाल एम. ए. एलएल. बी. आदि भी थे । राजकोट स्टेशन पर स्वागत कर्ताओंने सेठजीका भी बहुत संन्मान किया और एक अच्छे मकानमें ठहराया । प्रदर्शनीका समय १० बजे तक ही था । इससे सवेरे ही देखनेको प्रदर्शिनीमें आए । एक बड़े कमरेमें चारों ओर शीशेके कपाटोंमें व टेबुलोंमें ग्रन्थ व शिलालेख देखनेमें आए । हरएकका अंतिम पत्रा खुला था ताकि प्रशस्तिको पढ़कर दर्शक उसके कर्ता व लिपिके

राजकोटमें गुजराती साहित्य परिषद

समयका ज्ञान करसके। अनेक प्राचीन ग्रंथ गुजराती भाषाके भी देखनेमें आए परंतु उनकी लिपि हिन्दी ही थी। इससे प्रगट होता है कि पहले हिन्दी अक्षरोंमें ही गुजराती भाषा लिखनेका महत्त्व था। यहां २०० वर्षके पुराने गुजराती भाषाके पर हिन्दी लिपिके दस्तावेज भी मौजूद थे।

गिरनारजीका निरीक्षण।

राजकोट दिन भर ठहरकर रात्रिको चलकर ता: २८ को सवेरे जूनागढ़ आये। कमेटीके लिये यही दिन नियत था। अपनी धर्मशाला बहुत ही मरम्मत तलब व ठहरनेके अयोग्य थी। तब सेठजी एक भाटियेकी धर्मशालामें ठहरे। इन्दौर, अजमेर रतलामादि भी पत्र दिये थे पर सिवाय भावनगरके शा. नारायणदास नरोत्तमदास, शा. हीराचंद गीगाभाई, शा. अमृतलाल विठ्ठलदासके और कोई नहीं आए। सेठजीने इन्हीं उपस्थित छः महाशयोंकी कमेटी नियमानुसार करके रिपोर्ट तय्यार की उसमें बम्बईमें दुरुस्त की हुई नियमावली व छपकर प्रसिद्ध की हुई नियमावलीके फर्क बताए व उस नियमावली तथा बाहरके मेम्बरोंको प्रबन्धकारिणीमें रखनेको लिखा। ८ वर्षका हिसाब योग्य ऑडिटरोंके द्वारा जांचा जावे तथा पूजाके उपकरण, पोथी व कहां २ क्या २ मरम्मतकी जरूरत है सो सर्व रिपोर्ट लिख दी व मुनीम अमृतलालजी उस समय जैनी था उसको सर्व समझाया व वही खाता लिखनेकी रीति बताई तथा कमेटीके भेजे हुए मुनीम भगवानदासको—जो वहां ठहरा हुआ था—सब मेम्बरोंने एक लिखित सूचनापत्र यात्रियोंके दिखानेके लिये दिया कि जब

तक योग्य प्रबन्ध हो और नियमावली दुरुस्त न की जावे तब तक कोई यात्री श्री गिरनारजीके भंडारमें द्रव्य न देवें किन्तु तीर्थक्षेत्र कमेटीके दफ्तरमें भेज कर रसीद मंगा लेवें। सेठजीने बड़े आनन्दके साथ ता. २९को पर्वतकी यात्रा की। श्री नेमनाथ स्वामीके चरणोंके वहां एक दिगम्बर जैन प्रतिमा कोरी हुई परम शांतताको लिये हुए है दर्शन कर शीतलप्रसादजीने उसी समय भक्ति रससे पूर्ण हो एक भजन बनाकर गाया। लौटते हुए सहश्राम्र वनमें आए। यहांसे नीचे जानेको रास्ता बहुत विकट है। यदि और जगहोंकी भांति यहांसे नीचे तककी भी सीढ़ियां बन जावें तो बहुत उपकार हो। ता. ३० को जूनागढ़ लौट कर सर्व देखभाल की। सेठजी कई सर्कारी अफसरोंसे मिले।

शेत्रुंजयकी यात्रा व अभिनंदनपत्र।

यहांसे चलकर ता: ३१ को पालीताना आए। नवीन दि० जैन मंदिरके रमणीक सभामंडपमें रात्रिको एक आम सभा श्वे० नगरसेठके सभापतित्वमें हुई। पहले शीतलप्रसादजीने धर्मोन्नतिपर व्याख्यान दिया फिर नगरसेठने सर्व उपस्थित नगरवासी भाइयोंकी तरफसे सेठजीको सन्मानसूचक अभिनंदनपत्र दिया व पढ़कर सुनाया और सेठजीकी सर्व जैनियोंके साथ इस समान दृष्टिकी बहुत २ प्रशंसाकी कि " वह अपने बम्बई की बोर्डिंगमें दिग० श्वे० स्था० तीनोंके विद्यार्थियोंको रख कर एकसा वर्ताव करते हैं। धर्मचंदजीने भजन गाकर मंडलीको प्रसन्न किया। ता: १ नवम्बरको सेठजीने सबके साथ बड़े आनन्दसे यात्रा की। यद्यपि सेठजी नीचेसे डोली पर गए थे पर ऊपर आदिनाथ मंदिरके बाहर ही डोली छोड़

केवल लकडीके सहारे ऊपर गए, यात्रा की और लौटे—सेठजीका साहस देखकर आश्चर्य होता था।

ता: १ को चलकर फिर सेठजी **अहमदाबाद** आए और अपने श्राविकाश्रमको देखकर उसकी व्यवस्था ठीक कराई तथा इस निमित्त कि कोई बाई सर्कारी स्त्रीशिक्षकशालामें पढ़ने भेजी जावे लक्ष्मीबाई फीमेल ट्रेनिंग कालेज व उसके बोर्डिंगको देखा। इसमें ५० बाइयें हैं। यहां मांसाहार किसीको नहीं दिया जाता है।

वहांसे ता० २ की रात्रिको चलकर ता० ३ को दाहोद आए।

दाहोदमें पाठशालाके लिये फंड व सेठजीको मानपत्र।

यहांवाले बहुत दिनोंसे सेठजीको बुला रहे थे। स्टेशनपर गाजेबाजे सहित बहुत भाई मौजूद थे। यहां १०० घर हूमड़ दि० जैनियोंके व दो जिनमंदिर हैं। मास्टर दहुलालकी अध्यापकी १ में वर्षसे पाठशाला चल रही थी। सेठजीने परीक्षा लिवाई। रात्रिको सभा हुई। शीतलप्रसादजीने धर्मपर व्याख्यान देते हुए। पाठशालाको चिरस्थाई करनेके लिये जोर दिया। तुर्त दानवीर सेठजीने १०१) दिये, बातकी बातमें २५००)का ध्रौव्य व ३५०) का चालू फंड हो गया। दूसरे दिन सबेरे मि० प्लैनकेन यूरुपियन डिप्टी कलेक्टरके सभापतित्वमें छात्रों व छात्राओंको इनाम बांटनेके लिये एक भारी सभा हुई। शीतलप्रसादने धर्मका स्वरूप कहा। सेठजीने बाबू बनारसीदास एम० ए० रचित जैन इतिहास सेरीज़ नं० १ इंग्रेजीमें कलेक्टर साहबको भेट की। पाठकोंको यह मालूम ही

है कि सेठजी यात्राके समय अपने बाहरके एक पैकेटमें बांटनेके लिये जैनधर्म व जीवहिंसा मांसाहार रोकनेवाली पुस्तकें हमेशा रक्खे रहते थे और जहां जिसको जब जो देनेका अवसर होता था हर्षसे देते थे व जबानी भी समझाते थे। बहुतसे इंग्रेज सेकन्ड क्लासमें आपसे पुस्तक प्राप्ति करते थे। सभापतिने इनाम बांटकर अपने भाषणमें कहा कि "विद्यार्थियोंको अन्य शिक्षाके साथ धार्मिक शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिये, **तथा यदि कन्याओंको योग्य सुशिक्षिता माता बनाया जावे तो तीन पीढ़ीमें यह भारत अपनी प्राचीन उन्नतिको प्राप्त कर ले।**"

इसी समय दाहोदके भाइयोंने सेठजीके सन्मानार्थ निम्नलिखित **मानपत्र** अर्पण किया—

नकल मानपत्र (दाहोद)।

मङ्गलाचरण।

तज्जयति परज्योतिः, समं समस्तैरनन्तपर्य्यायैः।
दर्पणतल इव सकलाः, प्रतिफलति पदार्थमालिका यत्र ॥१॥

दोहा।

धन्य दिवस तिथि आजकी, धन संवत्सर वार।
सभ्य कुमुद विकशित किरण, सभा चांदनी सार ॥ १ ॥

परम हर्ष? परम हर्ष!! परम हर्ष!!!

भारतवर्षके विख्यात सूरत नगरमें एक प्रतिष्ठित नररत्न श्रीयुत् सेठ गुमानजीके सुपुत्र हीराचन्दजीके चार पुत्ररत्नों (मोतीचंदजी, पानाचंदजी, माणिकचन्द्रजी, नवलचन्द्रजी) की उत्पत्ति हुई। पश्चात्

मोतीचंद्रजीके पुत्र प्रेमचन्द्रजी, पानाचन्द्रजीके पुत्र रत्नचन्द्रजी, माणिकचन्द्रजीके पुत्री मगनब्हेन, नवलचन्द्रजीके पुत्र ताराचन्द्रजी हुए। स्वकीय नामकरणोंको अपने गुणोंसे विभूषित किया—"यथा नाम तथा गुणः" इस कहावतको चरितार्थ किया। प्रथम ही तो बम्बईमें हीराचन्द्रजी गुमानजीके नाममें बोर्डिंग स्थापित किया, इन्हीं नररत्नोंने हीराबागका वृहद्भुवन यात्रीगणोंके विश्रान्तिके लिये बनाया और आपहीके यत्नसे अहमदाबाद, कोल्हापुर, जबलपुर इत्यादि स्थानोंमें दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्थापित किये हैं, धार्मिक विद्याके प्रचारार्थ उदैपुरमें एक पाठशाला स्थापित की है और स्याद्वाद पाठशाला काशी, तथा अन्यान्य पाठशाला तथा धर्म सम्बन्धी कार्योंमें तन मन धनसे सहायता करते रहते हैं और भारतवर्षीय धर्मसंरक्षिणी दिगम्बर जैन महासभाके वार्षिकोत्सव (जंबूस्वामीके मेले) पर श्रीमान् परम दयालु गुणज्ञ राजा लक्ष्मणदासजी सी० आई० ई० ने भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटीका कार्य सम्पादन करनेके लिये आप ही को महामंत्री नियत किया था, सो आपने सहर्ष स्वीकार करके सपरिश्रम तन मन धन द्वारा स्वकीय धर्म्मनिष्ठासे दिगम्बर जैन तीर्थोंका सच्चा महदुपकार किया। और सम्मेदशिखर, गिरनारजी, शत्रुंजय, अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ, तारंगा, मांगीतुंगी आदि तीर्थक्षेत्रोंपर कितनी विपत्तियां थीं सो सर्व आपकी पूर्ण सहानुभूतिसे सहज ही में दूर हो गई और भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाके अधिवेशन (सहारनपुर) में सभापतिके आसनको सुशोभित करके आपने जैन जातिकी भरसक सेवा की थी। आप ९ वर्षसे दिगम्बर जैन प्रांतिक सभा बम्बईकी तन मन

धनसे सेवा कर रहे हैं। हमारी न्यायशीला भारत गवर्नमेन्टने भी आपको जे० पी० (Justice of the Peace) की पदवीसे विभूषित किया है; और आज श्री वात्सल्यादि गुण मंडित दानवीर महानुभाव माननीयका शुभागमन हुआ है। आपके मुखारविंदके दर्शनसे हम सर्व लोगोंको असीम हर्ष हो रहा है। आपने संपूर्ण जैन जातिपर जितने उपकार किये हैं उनके प्रत्युपकार करनेके लिये हम अशक्य हैं। अत: आपकी सेवामें यह तुच्छ अर्पणपत्रिका समर्पण करते हैं। और आशा रखते हैं कि आप इसे सहर्ष स्वीकार करेंगे और सर्व सभा शुद्धान्त:करणसे कोटिश: धन्यवाद देती हुई परम पूज्य श्री सर्वज्ञदेवसे प्रार्थना करती है कि चारों तरफ जैसी आपकी कीर्त्ति विस्तृत है उसमें दिन दूनी रात्रि चतुर्गुणी वृद्धि होवे और आपको सहकुटुंब चिरायु करें। अलमिति विस्तरेण। ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:।

कार्तिक वदी ७
वीर सं० २४३५ } दाहोद (पंचमहाल) की समस्त पंचानकी तरफसे—

सेठ चुन्नीलाल हंसराज,
गांधी जैचंद नाथजी,
गेबीलाल सुंदरलालजी वगेरे,

रात्रिकी सभामें शीतलप्रसादजीने निश्चय और व्यवहार धर्मपर इसलिये कहा कि यहां कई भाई मनसुख दादा श्वे० के उपदेशसे केवल निश्चयावलंबी हो रहे थे। उनको निश्चय साध्य व व्यवहार परम्पराय साधक है ऐसा बताया। फिर सेठजीके बम्बई बोर्डिङ्गमें रह कर एलएल. बी. पास करनेवाले शा. चंदूलाल मेहता श्वेताम्बरी वकीलने धर्म और स्त्रीशिक्षापर असरकारक

व्याख्यान दिया। यहांसे सेठजी ता. ४ को चलकर सुरत होते हुए ता. ६ नवम्बरको बम्बई आए।

इतनेमें कार्तिककी अष्टान्हिका निकट आगई तब

मांगीतुंगीमें प्रां० सभा व सेठ नवलचंदजी।

सेठजीको विचार हुआ कि इन्हीं दिनों बम्बई प्रान्तिक सभाका अधिवेशन तो मांगीतुंगीपर है और द० म० जैन सभाका कोल्हापुरमें है तथा दोनोंका मैं स्थाई सभापति हूं, दोनोंमें मुझे कहां जाना चाहिये इस विषयमें सेठजीने शीतलप्रसादजीसे सम्मति की, तब यही राय ठहरी कि कोल्हापुरमें प्रदर्शनी व पंच-कल्याणकोत्सव है तथा जिस मंदिरकी प्रतिष्ठा है उसे सेठ भूपाल जिरगेने सेठजीकी प्रेरणासे ही निर्मापण कराया है इससे कोल्हापुर ही जाना ठीक है। तब शीतलप्रसादजीने कहा कि श्री मांगीतुंगी उत्सवकी शोभा आपके विना कुछ न होगी। तब आपने कहा कि हम अपने भाई नवलचंदजी व श्रीमती मगनबाईको मांगीतुंगी भेजेंगे व आप भी मांगीतुंगी जावें जिससे जलसा सफलतासे हो। कोल्हापुरमें आपके न जानेसे कुछ क्षति न पड़ेगी। इसी भांति तय हुआ। सेठजीने नवलचंदजीको बहुत समझाकर मांगीतुंगी जानेको सूरत लिखा और आप कोल्हापुर गए। सेठ नवलचंदजी सूरतसे मूलचन्द किसनदास कापड़ियाको साथ लेकर मांगीतुंगी गये। मांगीतुंगी नासिक जिलेमें २॥ मैल ऊँचा जँगलोंके बीचमें एक पर्वत है, यहाँसे श्रीरामचंद्र हनुमानजी, नील, महानील आदि ९९ करोड़ मुनि मोक्ष पधारे हैं। इस पर्वतके दो भाग हैं। एकको मांगी दूसरेको तुंगी कहते हैं। बहुत ही प्राचीन कालके तीन२ मंदिर हरएक पर हैं, जिनमें दिगम्बर

जैन प्रतिमाएं कोरी हुई हैं। एक जगह पर पद्मासन मूर्तिकी पीठकी पूजा होती है। यह बलिभद्र बलदेव मुनिकी कही जाती है, जो पांचवें स्वर्ग गए हैं। मांगीतुंगी जाते हुए बीचके पर्वतकी मार्गपर एक दग्धस्थान है। कहते हैं कि श्री कृष्णजीके शरीरकी दग्ध क्रिया यहां ही हुई थी। नीचे १ मंदिर सेठ हरीभाई देवकरण शोलापुरवालोंसे सं० १९१७ में प्रतिष्ठित, दूसरा बार्सीवाले एक सेठका है, तीसरा अधूरा पड़ा था जिसको पूरा बनानेमें सेठ पूरणसाह सिवनीने द्रव्यकी मदद की है। सेठ नवलचंदजी एक वर्ष पहले भी यहां हो गए थे तब आपने बार्सीवाले मंदिरमें पत्थर जड़वाया था।

यहां कार्तिक सुदी ११ से १५ ता० २४ नवम्बरसे २८ तक बम्बई दि० जैन प्रान्तिक सभाका सातवां वार्षिकोत्सव था। मनमाड़ स्टेशनसे ३२ मील होने पर भी २००० से अधिक संख्या आ गई थी। शोलापुरसे सेठ हीराचंद रामचंद व कई भाई आए थे। सेठ नवलचंदकी तबियत कुछ अस्वस्थ थी तोभी आप गए और वहां सभाके कार्योंमें मन लगाकर उद्योग किया। सभाके लिये भिन्न मंडप बना था, प्लेटफार्म उंचा था। सुदी १२ को २ बजेसे कारवाई शुरू हुई। शीतलप्रसादजीने मंगलाचरण किया, तब सेठ गुलाबचंद हीरालाल धूलियाने अपना स्वागतका भाषण पढ़ा। सेठ नवलचंद हीराचंदके प्रस्ताव व रतनचंद भुसावलके समर्थनसे सेठ हीराचंद रामचंदने प्रमुखपद ग्रहण करके अपना व्याख्यान सुनाया। दूसरे दिन मूलचंद किसनदास कापड़िया, सम्पादक दि० जैनने गत वर्षकी रिपोर्ट सुनाई, जिसका अच्छा प्रभाव पड़ा। मार्गशीर्ष वदी

१ तक सभाकी बैठकोंमें १५ प्रस्ताव पास हुए जिनमें मुख्य ये थे–
(१) पुत्र पुत्रियोंको धार्मिक व व्यवहारिक शिक्षा दी जावे।
इसको शीतलप्रसादजीने पेश करके बम्बई प्रान्तके जैनियोंकी शिक्षाकी
शोचनीय दशा बताई कि २८०००० पुरुषोंमें केवल ७१४००
पढ़े हुए व २५६०० स्त्रियोंमेंसे १५८४ ही पढ़ी हैं (२
उपदेशकोंकी आवश्यकता है। हरएक भाषाके ज्ञाता तय्यार हों। इसको
मूलचंद किसनदासने पेश किया व सीतलप्रसादजीने समर्थन किया
(३) जैन संस्कार विधिका प्रचार–इसको भी शीतलप्रसादजीने एक
व्याख्यान द्वारा स्पष्ट किया।

(४) दिगम्बर जैन धर्मानुयायी सर्व जातिया परस्पर खानपान
करें। (५) जातीय सभाएं स्थापित हों (६) औद्योगिक
उन्नतिके लिये स्वदेशकी वस्तुएं काममें ली जावें। इसको सेठ रावजी-
भाई नेमचंद शोलापुरने पेश किया व शीतलप्रसादजी, मूल-
चंदजी आदि कई भाइयोंने समर्थन किया। (७) मांगीतुंगी तीर्थ
प्रबन्धकारिणी सभा तीर्थका हिसाब प्रगट करें व हर वर्ष करती रहे
इसको शीतलप्रसादजीने पेश किया और सेठ नवलचंदजीने समर्थन
किया।

श्रीमती मगनबाईजीके प्रयत्नसे स्त्रियोंमें भी उपदेश
अच्छा हुआ। वदी १की रात्रिको भारी महिला परिषद सभापतिकी
धर्मपत्नी जीवूबाईके सभापतित्वमें हुई। मगनबाईजी व कस्तूरीबाईजीके
व्याख्यान हुए। जैन नियमपोथी और गीतावली पढ़ी हुई बहनोंको
बांटी गई। स्त्रीशिक्षा प्रचारार्थ १६५॥=)। का फंड हुआ।

कार्तिक सुदी १४ को प्रायः सर्व स्त्री पुरुष यात्रार्थ पर्वतपर

गए। सेठ नवलचंदजी भी गए। दोनों पहाड़ोंपर अभिषेक पूजा हुई। करीब ६००) की उपज हुई। मांगीसे तुंगी जाते हुए बीचमें एक ऐसी जोखमकी जगह आती है जहां केवल १ आदमी कठिनतासे चल सकता है। इस स्थानपर दोनों ओर पकड़कर जानेके लिये बुद्धिमान् सेठ नवलचंद हीराचंदने ९ वर्ष हुए लोहेके सींकचे व तार लगवा दिये थे, इससे किसीके गिरनेकी जोखम नहीं रही थी। इस पर्वतकी ऐसी महिमा है कि इस दिन एक स्त्री रजस्वला थी तो उसके चारों ओर भ्रमरोंने घेर लिया और ऐसा काटा कि वह बेहोश हो गई और डोलीसे नीचे लाई गई।

सुदी १५ को यहां रथ उठता है, अजैन हजारों आते हैं, अबके ८००० आदमी आए जो पहले पर्वतपर जा बलभद्रकी पीठकी पूजा करते नारियल चढ़ाते फिर नीचे आकर मंदिरोंके दर्शन करते हैं। एक हाथीपर अंबाडी रखकर श्रीजीको विराजमान किया गया था। सभापति प्रतिमाजीका सिंहासन लेके आगे बैठे, पीछे महावतके स्थानपर सेठ गुलाबचंद हीरालाल धूलिया, दो छड़ी लेकर दोनों ओर सेठ पीताम्बरदास पारोला व शा० नेमचंद कस्तूरचंद सूरत तथा दो सुवर्णके चमर लेके दोनों ओर सेठ नवलचंद हीराचंदजी और चिमनलाल जेसिंगभाई अहमदाबाद बैठे। इस सबकी ७००) की बोली हुई। सबेरे दोनों मंदिरोंमें अभिषेकके समय भी ३००) की उपज हुई। १०००० से अधिक जनसमूहके साथ सवारी बागमें गई। वहां अभिषेक हुआ जिसमें ८००) की उपज हुई। इस भीड़में मराठाओंको मदिरा त्यागका उपदेश देनेपर २०० ने नियम लिया।

सेठ खालसा भीखासा मालेगांवने हरएक नियम लेनेवालेको एक २ नारियल दिया।

सभामें अपील करनेका अवसर न आनेपर जब तीर्थका भंडार मगसर वदी १ को लिखा जाने लगा तब सभाके लाभार्थ सेठ नवलचंदजी मूलचंदजी और उपदेशक दीपचंदजीके साथ कई घंटे तक वहां बैठकर सभामें भी लोगोंसे द्रव्य भराते गये। इस उद्योगसे ४०००) जब भंडारमें भरे तब १०००), सभाके खातेमें भी आए। जिसमें सभापतिने २५१) सेठ माणिकचंद पानाचंदने १०१) प्रदान किये। हर वर्ष यहां ५००) की उपज होती थी पर अबके प्रान्तिक सभा व सेठ नवलचंदजीके परिश्रमसे अच्छी उपज हुई।

कोल्हापुरमें द० म०

जैन सभा और सेठजीका १००००)का दान।

ता. २० नवम्बरसे २४ तक दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाकी १२ वीं परिषद् कोल्हापुरमें बड़े आनन्दसे हुई। चारों ओरसे १०००० जैनी स्त्री पुरुष एकत्र हुए। दानवीर सेठ माणिकचंद हीराचंद जे० पी०, सेठ हीराचंद नेमीचंद दोशी, रावजी सखाराम, पंडित दौर्बल्य शास्त्री श्रवण बेलगोला आदि परोपकारी सज्जन भी पधारे थे। पहले दिन सभाके अध्यक्ष श्रीयुत ब्रह्मप्पा मल्लाप्पा तवनप्पवर स्टेशन पर पधारे। स्वागत भले प्रकार किया गया। सभा २॥ बजेसे एक मंडपमें शुरू हुई। स्वागत कमेटीके प्रमुखका भाषण होने पर सभापतिने कनड़ीमें व्याख्यान पढ़ा। फिर बोर्डिंगके स्थानमें नवीन मंदिर बंधवानेवाले श्रीयुत भूपालराव आप्पाजी जिरगेकी आइल पेंटिंग तसवीरके खोलनेकी क्रिया अध्यक्ष द्वारा

की गई। ता; २४ तक ५ बैठकें हुई जिनमें २१ प्रस्ताव पास हुए उनमें उल्लेख योग्य ये हुए:-(१) अहमदाबादमें बॉम्बके हमलेसे बचनेके कारण बड़े लार्ड मिन्टोके लिये आनन्द प्रदर्शन करके तार भेजा गया (२) प्राथमिक शिक्षणका प्रसार हो. (३) नवीन कायदे कौन्सिलमें जैन प्रतिनिधि रखनेका बम्बई सर्कारने जो वचन दिया है इसके लिये सर्कारका आभार माना गया, (४) धर्मशिक्षणके प्रचारकी जरूरत। इसको पेश करते हुए सेठ हीराचंद नेमचंदने कहा कि इस महाराष्ट्र देशमें जब १०० में २५ धर्मको जानते, तब उत्तर हिन्दुस्तानमें १००में ७५ हैं, (५) खेती व व्यापार ये जैनियोंके मुख्य धंदे हैं इस लिये इनमें पाश्चात्य विद्याकी सहायतासे नवीन सुधारणा करनेका प्रयत्न जैन लोगोंको करना चाहिये। इसका समर्थन करते हुए **सेठ माणिकचंद हीराचंद** जे. पी. ने कहा कि कच्छी और माड़वाड़ी लोग अपने देशसे फक्त डोरी और लोटा लेकर आते हैं और इस देशमें आकर थोड़े ही वर्षोंमें धनवान बन जाते हैं। इस उदाहरणको मनमें लेओ। उन लोगोंको अपने घरमें छुटपनमें ही व्यापारी शिक्षण मिलता है इसी तरह तुमलोग भी पद्धतिसे उद्योग करोगे तो संपन्न हो जाओगे।" वास्तवमें सेठजीके वचन बहुत उपयोगी हैं कारण जो बालकोंको बड़े होने तक भी व्यापार करना नहीं सिखाते हैं वे व्यापार करने लायक नहीं बनते हैं। व्यापार करना भी एक शिक्षा है। जैसे और कला चतुराई शिक्षा विना नहीं आती ऐसे ही व्यापार करना नहीं आसक्ता है। (६) उपाध्यायोंको शास्त्रानुसार रीतियां जानकर संस्कार क्रिया आदि व उपदेशादि क्रियाएं

करनी चाहिये। (७) स्त्री शिक्षा प्रचारार्थ श्राविकाश्रम कोल्हापुरको समाज आश्रय देवै इस प्रस्तावके समर्थनमें सौभाग्यवती गोदूबाई उपाध्येने प्लेटफार्मपर आकर भाषण दिया। (८) सभाके कार्योंमें द्रव्यकी सहायता की जावे इसका अनुमोदन सेठ माणिकचंदजीने किया और कहा कि जब तुम सभाको द्रव्य न दोगे उन्नति नहीं हो सकती। तब सभापति महोदयने ५०१) दिये, औरोंने भी दिया। इस वक्त सभामें शाहपुर बेलगांवके धर्मराव आप्पाजी सुबेदारकी बहुत प्रशंसा की गई जिन्होंने बेलगांव बोर्डिंगके लिये २००००) देनेका बचन दिया था। पांचवे दिन सभामें पोलिटिकल एजन्ट व दीवानसाहब रघुनाथ व्यंकाजी सबनिस आदि आए। सभामें धन्यवाद देनेका काम चल रहा था। तब सेठ माणिचंदजीने दीवानसाहबको चार शब्द बोलनेके लिये विनती की। तब दीवान साहबने कहा कि 'कोल्हापुरमें जैनी बहुत हैं पर बहुत सुस्त हैं। अब इस परिषदके अविश्रांत खटपट व सेठ माणिकचंदजीके उदार कृत्यसे, इन लोगोंका लक्ष्य उन्नतिकी तरफ झुका है। हिंसा न करके प्रत्येक उत्तम काम मन बचन कायसे करो ऐसा अपना जैन धर्म कहता है। यह सर्व धर्मापेक्षा विशेष है। **"पृथ्वीके सर्व धर्मोंमें ऐसा कहनेवाला कि हिंसासे निवृत्त हो, यदि कोई धर्म है तो वह एक जैन धर्म ही है।"** इतनेमें महाराज सर्कारकी सवारी सभामें आ पहुंची। सेठ हीराचंद नेमचंदने एक प्रशंसनीय भाषणसे महाराजका स्वागत किया। फिर सेठ माणिकचंदजीने महाराजको पुष्पहारादिसे सन्मानित किया। महाराज विदा हो गए। तब सेठ माणिकचंदजीने

सभापतिको धन्यवाद दिया । आगामी वर्षके लिये श्रीयुत रावोबा आनन्दराव खाडेने अध्यक्ष स्थान स्वीकार किया । इस सभामें इसी साहूकारने इस बोर्डिंगमें एक व्यायामशाला बनवानेको ५०१) दिये व ५०१) शाहपुरके तवनप्पा आण्णा लेंगडेने होनेवाले बेलगांव बोर्डिंग व्यायामशालाके लिये दिये। ता: २४ को पहली जैन महिलापरिषद सौ० फूलबाई भ्र० रावजी नानचंद गांधी शोलापुरकी अध्यक्षतामें हुई । अनेक जैन व अजैन स्त्रियोंने भाषण कहे। ता: २५ की शामको लेडी मूर मेकेन्झीके सन्मानार्थ सभा हुई । लेडी साहबाने अपने भाषणमें स्त्री शिक्षाकी उत्तेजना दी, कहा कि बालकके माता पिता यदि सुशिक्षित होंगे तब ही बालककी मानसिक शक्ति सुदृढ़ रह सकेगी । इस समारंभमें प्रदर्शनी भी सभाने अच्छी सजाई थी जिसके खोलनेका महूर्त्त बम्बई सरकारके मुख्य कौन्सलर सर जान मुर मेकेन्झी द्वारा ता: २९ नवम्बर ०९ को बड़े ठाठके साथ हुई। जैन बोर्डिंगके हातेमें मंदिरकी पंच कल्याण पूजापूर्वक प्रतिष्ठा महोत्सवकी विधि कार्तिक सुदी ५ से १२ तक दौर्बल्य शास्त्री द्वारा पूर्ण की गई । इस उत्सवमें सभाको जैनयोंमें जागृत्ति पैदा करनेका अच्छा मौका मिला । सेठ माणिकचंद और प्रोफेसर लट्ठेके दृढ़ प्रयत्नसे काम निर्विघ्न समाप्त हुआ । इसी वर्ष सेठजीने अपनी जिन्दगीके १००००) बीमेकी रकम प्रसन्न हो द० म० जैन सभाको प्रदान कर दी । फिर सेठजी बम्बई आए ।

इन दिनों ऐलक पन्नालालजी इसी तरफ थे। शोलापुर वालोंकी इच्छानुसार आपने अपना केशलोंच मिती मगसर सुदी १ वीर सं० २४३६ ता: १३ दिसम्बर १९०९ नियत किया था। अत: शोलापुरमें बडी तैय्यारियां हो रहीं थीं। शीतलप्रसादजी मांगीतुंगीजीसे बम्बई

शीतलप्रसादजीके ब्रह्मचारी होनेका कारण।

आकर एक दिन एकांतमें विचारने लगे कि हे आत्मन्! अब तेरी स्थिति कैसी है? तुझे क्या कर्तव्य है? तुझे इस शरीरमें रहते हुए अनुमान ३१ वर्ष हो चुके। तेरा बड़ा भाई अनन्तलाल ८ मास हुए करीब ३८ वर्षकी आयुमें ही यकायक चलबसे। यदि तुमभी थोड़ी ही उम्रमें चल दोगे तो तुमसे कोई भी विशेष लाभ नहीं हुआ। तुम्हारा यह अमूल्य जीवन वृथा ही गया ऐसा होगा। इससे तुम्हें कुछ विशेष काम करना चाहिये। इस समय शीतलप्रसा-जीको अध्यात्मिक ज्ञानका मनन रहता था। जिसका कारण यह था कि चौपाटीके संस्कृत ग्रन्थोंमें श्री कुंदकुंदाचार्य महाराजकृत समयसार ग्रंथकी तात्पर्य्यवृत्ति टीका बहुत सुगम थी। उसे एक दफे स्वयं समझकर दुबारा श्रीमती मगनबाईजीको बंचवाई व बृहद्, द्रव्यसंग्रह और पंचास्तिकायकी संस्कृत टीकाका भी भाषाकी सहा-यतासे मगनबाईजीके साथ स्वाध्याय किया था व गोम्मटसार जीव-कांडकी संस्कृत टीका जो चौपाटीपर थी उसका भी विचार किया था। इससे परिणामोंमें शुद्ध आत्म मननकी कुछ रुचि हुई थी। उस रुचिके ही कारण **अनुभवानंद** नामका लेख जैनमित्रमें निकलने लगा था। सन् १९०९में कर्मयोगसे शीतलप्रसादजीको

ज्वरकी ऐसी बाधा रही कि बम्बईमें बहुत दवाई करनेपर भी वह दूर न हुई इससे यह लखनऊ गए। वहां १९ दिनमें ही ठीक हो गए। उसी बीचमें इनके मंझले भाई जो कलकत्तेमें थे व जिन्होंने अपने उद्योगसे अनुमान एक लक्ष रुपये जवाहरातके काममें पैदा किया था सो लखनऊ आए। शीतलप्रसाद उनसे मिलकर बम्बईको लौटे। रास्तेमें इनकी इच्छा अध्यात्मप्रेमी वीरसेन स्वामीसे कारंजा जाकर मिलनेकी हुई। यह अकेले भुसावलसे कारंजा गये। वहां गंगादास देवीदास चौरे व प्रद्युम्नकुमारसे आत्मिक चर्चा करके बहुत आनन्द पाया। यहां स्वामी न थे। मालूम हुआ कि सिरपुर (अंतरीक्ष) के पास मालेगांवमें हैं। तुर्त वहां गए। तब ही अंतरीक्ष पार्श्वनाथजीके दर्शन किये। वहांसे स्वामी अकोलाकी तरफ चल दिये थे तब यह उसी तरफको आए। वहां मालूम हुआ कि बनारसको रवाना हो गए। तब यह निराश हो अकोलासे बम्बई आए। यहां बंगलेपर जाते ही लखनऊका तार मिला जो यहां पहले ही आ गया था कि अनन्तलालका बोल बंद हो गया जल्द आओ। विश्वास न होनेपर फिर तार किया। जवाब ताकीदीसे बुलानेका आया। फिर यह लखनऊ लौटे। जब यह पहुंचे अनन्तलालका आत्मा वहां न था। वह अन्यत्र जा चुका था शरीर भी स्मशानमें दग्ध हो चुका था।

उदास मन उनकी स्त्री और एक छोटीसी कन्या सजीवित थी। मालूम हुआ कि लकवा यकायक गिरनेसे बोलना बंद हो गया। हाथ कांपता था इससे न तो कुछ बोल सकते और न लिख सकते थे। मनमें इच्छा होती थी कि कुछ जायदादके विषयमें कहें व कुछ

धर्ममें लगावें पर वचन और काय दोनोंकी क्रिया मानसिक भावको प्रगट करनेसे लाचार हो गई थी। अंतमें तडफ़२ कर सिर पटक२ कर बहुत दुःखसे १ दिन ही बीमार रहकर प्राण त्याग दिये थे। धन होनेपर भी एक पैसेका भी दान न कर सके। इस असमय वियोग व **अनित्य संसारकी घटनाने शीतलप्रसादके चित्तमें बहुत बड़ा असर जमा दिया** और इनको अपने आपकी फिकर पड़ने लगी। सबसे बड़े भाई संतलालजी सकुटुम्ब थे। उन्होंने बहुत चाहा कि शीतलप्रसाद सब कारवार सम्हाले और गृह जंजालमें फंसे पर शीतलप्रसादका मन जो ८ दिनमें माता, स्त्री व लघु भ्राताके वियोगसे पहले ही उदास था, अब इस दृश्यके होनेपर कैसे जम सकता था। १९ व २० दिन बाद शीतलप्रसाद बंबई आगए। और अमृतचंद्र महाराजकृत समयसार कलशोंका अर्थ श्रीमती मगनबाईके साथ विचारने लगे। इन श्लोकोंमें अद्भुत रस है। इनका मनन चित्तको बहुत शान्ति देने लगा। इस दिन ये ही सब बातें याद आने लगीं। मनने कहा कि तू न तो गृही है न त्यागी—यह बीचकी अवस्था अच्छी नहीं। एक तरफ होजाना चाहिये, तुर्त ही श्री महावीर स्वामीका जीवन-चरित्र हृदयके सामने आ उपस्थित हुआ कि प्रभुने ३० वर्षकी आयुमें गृहवास छोड़ दिया था इसी लिये कि आत्माके भीतर भरे हुए रत्नत्रय भंडारको प्रकाशमें लाया जाय। तू तो ३१ वर्षका हो चुका। आयुकायका कोई भरोसा नहीं। यह अवसर चुकेगा तो फिर भेद विज्ञान द्वारा आत्मोन्नति करनेका अवसर हाथ आना अति कठिन हो जायगा। ऐसा विचार त्यागकी ओर वृत्ति जमी

फिर श्रावकाचारका स्वरूप ध्यानमें ले व देशकालको विचार यही निश्चय किया कि श्रावककी सातवीं प्रतिमा तकके नियमोंका अभ्यास करना चाहिये और उदासीन ब्रह्मचारी होजाना चाहिये। इस समय ऐलक पन्नालालजी सूरतमें ठहरे हुए थे। शीतलप्रसादजी दूसरे दिन सूरत गये। एकांतमें मिलके अपना हाल कहा व जो २ नियम धारने थे उनको महाराजके सामने लिख लिया—वस्त्र श्वेत व लाल चाहे जैसे उदासीन पहनो, प्रमाणकर द्रव्य रक्खो, तीन काल सामायिक करो, अष्टमी व चतुर्दशीको प्रोषधोपवास करो इत्यादि भोजन पान सम्बन्धी सर्व नियम ठीक कर लिये। उस समय भी शरीर कुछ अस्वस्थ था। ऐलकजीने आज्ञा की कि ब्रह्मचारी होकर शुद्ध भोजन करनेसे तुम्हारा शरीर बिलकुल अच्छा रहेगा। तुम कुछ चिन्ता न करो। शोलापुरके केशलोंचके समय तुम प्रगट रूपसे नियम धार लेना। इस तरह सर्व तरह चित्तकी समाधानी करके शीतलप्रसादजी बम्बई आए और अपना इरादा केवल एक श्रीमती मगनबाईजीसे बताया। बाईजी सदाहीसे शीतलप्रसादके परिणामोंको आत्महितमें स्थिर करती रहती थीं। इस वक्त भी आपने कोई भी अंतरायकी बात नहीं की किन्तु यही कहा कि यदि तुम निर्वाह सको तो इससे बढ़कर दूसरा काम नहीं है। फिर बाईजीने ही उदासीन वस्त्रोंका नया सामान तयार कर दिया। इस बातकी खबर सेठ माणकचंदजीको भी नहीं हुई।

सोलापुरमें उत्सवका दिन निकट आगया। इस उत्सवमें सेठजी नहीं गए थे। मगनबाईजी आदि २ दिन पहले पहुंच गये थे। मिती **मगसर वदी १५ की** रातको मेलमें शीतलप्रसादजी माता रूपाबाईके साथ एक ही डब्बेमें शोलापुर रवाना हुए। इस रात्रिको बहुत भीड़ थी सो बैठे बैठे ही जाना हुआ। करीब तीन बजेके जब रात्रि हुई तब सर्व डब्बेवाले करीब करीब ऊंघ गये या सुस्त हो गए थे तब शीतलप्रशादजी कुछ गाने लगे-चित्तमें कुछ वैराग्यकी तरंगे उठ आई जिससे १२ भावनाओंका १ मजबून सवेरे शोलापुर पहुंचने तक बनाकर पेन्सिलसे नोट बुकमें लिख लिया। वे १२ भावनाएं ये हैं--

सोलापुरमें त्यागी पन्नालालजीका केशलोंच।

बारह भावना।

(१) अनित्य भावना।

है नित्य न कोई वस्तु जान संसारी॥
याके भ्रममें नित फसे रहे व्यवहारी॥
तन धन कुटुम्ब ग्रह क्षेत्र क्षणकमें विनसे॥
भाखो अनित्य यह भाव आत्म चित्त परसे॥ १॥

(२) अशरण भावना।

कोई न शरण त्रैलोक्य माहिं तुम जानो॥
नर नारकदेव तिर्यञ्च, काल गति मानो॥
रे आतम, शरणा गहो पवित्रातमकी।
निर्भय पद लहके तजो फिरन गतिगतिकी॥ २॥

(३) संसार भावना।

चउ गति दुखकारी जीव सुक्ख नहिं पावे।
गयो काल अनन्ता बीत छोर नहिं आवे॥

जिनवरके धर्म बिन मढ़े सुभग न लखावे ॥
सुख समुद्र है जिन धर्म, भव्य नित न्हावे ॥ ३ ॥

(४) एकत्व भावना ।

इकले ही जन्मे मरे कर्म फल भोगे
इकलो रोवे दुःख लहै पापके जोगे ॥
जब मरे छोड़ सब साथ एकलो जावे ॥
एकाकी आतम सत्य सुधी मन ध्यावे ॥ ४ ॥

(५) अन्यत्व भावना ।

है स्वारथके सब सगे पुत्र तिय जननी ॥
बिन टके न पूछे कोय नार मित सजनी ॥
है अन्य अन्य सब जीव–अणु पुद्गलका ॥
पर मोह छोड लेले तू आसरा निजका ॥ ५ ॥

(६) अशुचित्व भावना ।

है देह अपावन जगको अपावन करती ॥
मलसे बनकर नवद्वारोंसे मल स्रवती ॥
जिन कीनी यामे प्रीति ठगे जाते हैं ॥
जिन जाना पावन आप मुक्ति पाते हैं ॥ ६ ॥

(७) आश्रव भावना ।

मन वचन कायका हलन चलन दुखकारी ॥
कर्माश्रव होवे बनें पींजरा भारी ॥
कोई पाप ढेर कोई पुण्य ढेर जोड़े हैं ॥
करे दोनों जो चकचूर स्वफल तोड़े हैं ॥ ७ ॥

(८) संवर भावना ।

संवर सुबीरने संजम शस्त्र उठाया ॥
आश्रव चोरोंका गृह प्रवेश रुकवाया ॥
समिति गुप्ति दश धर्मके ताले लगाये
संतोषसे घरमें बैठ सु आनंद पाये ॥

(९) निर्जरा भावना ।

यह देख कर्म मल ढेर भयंकर भारी ॥
ध्यानाग्नि मूल एकादश तप हितकारी ॥
तू मल्हके ध्यान समाधि अग्नि प्रगटावै ॥
धग धगसे बलें सब कर्म निर्जरा छावै ॥

(१०) लोक भावना ।

है पुरुषाकार अकृत्रिम लोक अनादि ॥
षट् द्रव्य दिखावै रूप करै बरबादी ॥
चित रज नभ धर्म अधर्म काल आबादि ॥
तू सिद्ध लोकको खोज रहित दुख व्याधि ॥ १० ॥

(११) बोधि दुर्लभ भावना ॥

चउ असी लाख कोठोंमें फिर फिर आया ॥
पर रत्नत्रयका पता कही नहिं पाया ॥
अति दुलर्भ है, निज हृदय बकसका खुलना ॥
सम्यक्त तालिसे खुले बोधित्रय मिलना ॥ ११ ॥

(१२) धर्म भावना ।

है धर्म आपका रूप उसे नही जोवै ॥
पर रूपोंमें निज धर्म जान पत खोवै ॥
दश धर्म दो संजम तीन रत्न है तारक ॥
भावो भावो निज धर्म आत्म उद्धारक ॥ १२ ॥

भावना फल ।

बारह भावोंको भाव नित्य संसारी ॥
ज्यों रात मिथ्यातम मिटे प्रभा हो जारी ॥
आतम सूरजका भेद ही ज्ञान उजियाला ॥
जिसके प्रगटेतें पीवै अमृत प्याला ॥ १३ ॥
ज्यों ज्यों स्वतृप्तता बढ़े विषय सुख भूले ॥
चारित्र नाग तिस घरके द्वारपर झूले ॥

चढ़चले सुगम पद धरे मोक्ष वस्तीको ॥
पहुंचे शिव तियको मिले तजे हस्तीको ॥ १४ ॥
यह छन्द अघहन दो चौ त्रय छैमें गाये ॥
बदि पंदरस परथम सांज मगमे उपजाये ॥
मन वचन शुचिकरि जो नरनारी गावे ॥
सुखोदधिमें डूब सब चित्त विकार मिटावे ॥

सवेरे शोलापुर पहुंचे। सेठ हीराचंद नेमचंदके मकानपर ठहरे। यहां श्रीमती कंकुबाईजीको ही पहले यह खबर हुई थी और शोलापुरमें किसीने नहीं जाना।

मगसर वदी १ के दिन शहरके बाहर एक बड़ा भारी मंडप बनाया गया तथा श्री जिनेन्द्रदेवकी प्रतिबिम्ब रथद्वारा लाकर अलग मंडपमें विराजमान की गई थी। ८ बजे सवेरे ही १५००० नर नारी अपने स्थानपर बैठ गए थे। इनके बिठाने व शांत करनेको शोलापुरके सेठोंके पुत्र नवयुवक वालन्टियर होकर चारोंओर खड़े थे। जिससे सब चुप और शांत थे प्रबन्ध बहुत अच्छा था। ऐलकजी महाराज उच्च आसनपर एक पत्थरशिला पर पद्मासन विराजमान हुए। प्रथम भजन हुए, फिर शोलापुर पाठशालाके एक विद्यार्थीने पंडित सदासुखजी कृत सोलह कारण भावनामेंसे शक्तिस्तव नामकी भावनाको मराठीमें बडी ही शांततासे सुनाया। सेठ जीवराज गौतमने केशलोंचकी महिमा सूचक छपा पत्र पढ़ा, जो वितीर्ण किया गया था। सेठ हीराचंद नेमचंदजीने ११ प्रतिमाओंका स्वरूप, केशलोंचकी महिमा और विद्यादानकी सर्वोत्कृष्टता बताई। फिर ऐलक महाराजने मनुष्यजन्मकी दुर्लभता बताते हुए शीलव्रत धारने व दान धर्म करनेका उपदेश दिया। तब बहुतोंने परस्त्री त्याग व्रत लिया व

पर्वोंके दिनोंमें पूर्ण शीलव्रत ग्रहण किया। तब एक भाईने कहा कि आज इस नगरके हिन्दू मुसलमान सबने पशुवध करना बंद किया है तथा धीवरोंने २ दिन तक मछली पकडना बंद रक्खी है। फिर शीतलप्रसादजीने त्यागीजीके व्याख्यानको दुहराते हुए दानार्थ प्रेरणा की तथा प्रगट किया कि सेठ हरीभाई देवकरण शोलापुर श्राविकाश्रमके लिये ७०००) प्रदान करते हैं उसी तरह यहांकी पाठशाला यदि ऐलकजीके नामसे हो जावे तो महाराजकी स्मृति रहे। इसमें आपलोग सहायता कर प्रबन्ध करें।

इसका समर्थन कोल्हापुरके बुगटे महाशयने किया तथा किसीने हजार किसीने ५००) इस तरह बातकी बातमें १२०००)का चंदा दि० जैन पाठशालाके लिये होगया। एक अजैन मिलके मालिकने भी हर्षित हो ५००) रु० दिये। यह दानका प्रवाह रात्रि तक जारी रहा। इस अवसरपर सेठ नाथारंगजी गांधीने जो ५००००) का उपयोगी दान पहले कर चुके थे ९०००) और जैन बोर्डिंग शोलापुरमें अर्पण किये। तथा धाराशिवके शेठ नेमचंद वालचंदने प्राचीन जैन ग्रंथोंके जीर्णोद्धारके लिये ७०००) दान किये। ७५०) अमरावती जैन बोर्डिंगके लिये हुए व ३००) के करीब बोधेगांवके भाइयोंको दिये गए।

शीतलप्रसादजी ब्रह्मचारी हुए।

दानकी अनुमोदना करके **शीतलप्रसादजीने** ऐलक महाराजके सामने अपना **प्रतिज्ञापत्र** रक्खा तथा प्रार्थना की कि मैं **ब्रह्मचर्य्य प्रतिमाके** नियम धारना चाहता हूं। ऐलकजीने आज्ञा दी। तब शीतलप्रसादजी मंडपसे बाहर गए। इधर ऐलकजीने करीब ९॥ के केशलोंच शुरू किया। इसी बीचमें शीतलप्रसादजी, जो

पहिले बाबूके लिबासमें थे अब गेरुए रंगका मुरेठा, धोती, चादर व रूमाल लेकर ऐलकजीके प्लेटफार्म पर आकर बैठ गए।

पौन घंटेमें केशलोंच समाप्त हुआ। सर्व लोग इस दृश्यसे वैराग्यमें भर आए। इसी समय सेठ रावजी नानचंदने ९ लाख रु. के परिग्रहका नियम लिया। शोलापुरमें बड़ी भारी धर्म प्रभावना हुई। उसी दिन स्त्रियोंकी सभामें श्रीमती रखाबाई, कंकुबाई तथा मगनबाईजीके धर्मोपदेशसे ५००) का चंदा पाठशालाके लिये हुआ। शोलापुरमें यह पाठशाला श्रीमान् ऐलकजीके प्रतापसे ५००००) से अधिक फंडको रखनेवाली बहुत उत्तम प्रकारसे चल रही है। ऐलकजीने शोलापुर जिलेमें घूमकर पाठशालाके फंडके लिये द्रव्य एकत्र करानेमें बहुत परिश्रम उठाया।

शोलापुरके लोगोंको शीतलप्रसादजीके ऐसे यकायक परिवर्तनसे आश्चर्यके साथ आनंद भी हुआ।

अब शीतलप्रसादजी नियमित रूपसे सामायिक आदि क्रिया करने लगे, एक दफे शुद्ध भोजन लेकर संतुष्ट रहने लगे। ऐलकजीकी संगतिमें दो दिन ठहरे। फिर आज्ञा लेकर बम्बई आए।

अब यह चौपाटी बंगलेमें न ठहर कर हीराबाग धर्मशालामें ठहरे। सेठ माणिकचंदजी सुनते ही धर्मशालामें आए। और देख कर कायदेसे वन्दना की, हाथ जोड़े और आंखोंमें आंसू लाकर कहने लगे कि आपने मुझे कुछ खबर नहीं की नहीं तो हम बड़ा उत्सव करते। आपने जो यह व्रत ग्रहण किया है सो मुझे बड़ा आनन्द है। आप अच्छी तरह इसे पालिये पर मुझे जो आप

श्रीमान् जैन धर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी ब्रह्मचर्यवस्थामें.

(देखो पृष्ठ ६१५)

सहायता देते थे उसमें कभी कमी न कीजिये मेरा काम सब धर्मका ही काम है। मुझे आपने धार्मिक कामोंमें बहुत मदद दी है पर जब तक मैं जीवित हूं तब तक मुझे आप मदद करेंगे तो मैं कुछ भी धर्म व जातिकी सेवामें अपने मन, बचन, कायको लगा सकूंगा। शीतलप्रसादजीने कहा कि मेरे इन नियमोंके धारनेसे **आपके काममें किसी प्रकारकी बाधा नहीं पड़ेगी।** आप निश्चिन्त हो जैसे धर्मकार्य करते थे वैसे ही करें। मुझसे जहाँतक बनेगा आपकी सहायताको तैय्यार रहूंगा। आपका जो काम है सो मेरा ही है। इस तरह कहनेसे सेठजीको बहुत सन्तोष हुआ।

वास्तवमें जबतक बाह्यमें निवृत्ति मार्गको धारण नहीं किया जाता है तबतक चित्तके संकल्प विकल्प नहीं मिटते। तथा जबतक नियमोंकी प्रतिज्ञा नहीं होती तबतक मन बन्दर व इन्द्रियें काबूमें नहीं आतीं। और जबतक मन और इन्द्रियें स्थिर न हों तबतक ध्यान स्वाध्याय यथेष्ट नहीं हो सकता। और जबतक ध्यान स्वाध्याय नहीं हो तबतक आत्मोन्नति नहीं हो सकती। इस आत्मोन्नतिकी तरफ लक्ष्य धरना यही सर्वसे पवित्र काम मनुष्यके जीवनका है। इसके पथपर चलना और इसके विराधक काम, क्रोध, लोभ, मोह, शत्रुओंको विजय करते जाना यही वीरता व वीर पुरुषका कार्य्य है। आत्माकी उन्नति केवल बातें बनानेसे व अपनेको ज्ञानी व अकर्त्ता मान लेनेसे नहीं होती। ज्ञानपूर्वक रागद्वेषादि विकारोंको जब हटाया

जायगा तब ही आत्मध्यान होगा । आत्मध्यान है सो ही आत्मोन्नतिका सोपान है । कहा है—

तव सुद वद वञ्चेदा झाण रह धुरन्धरो हवे जह्मा ।
तम्हा तत्तिय णिरदो तल्लद्धीए सदा होइ ॥ (द्रव्यसंग्रह)

भावार्थ—जो तप करे, शास्त्र जाने, व्रत धारे सो ही ध्यान रूपी रथकी धुरीको धर सकता है । अतएव ध्यानकी सिद्धिके लिये इन तीनोंमें अर्थात् तप, शास्त्र और व्रतोंमें सदा लीन रहो ।

१२ वां अध्याय।

—:३:३:३:※:६:६:६:—

महती जातिसेवा तृतिय भाग।

श्रीमान् सेठ माणिकचंदजी ऐसे पुरुषोंमें नहीं थे कि जैसे प्राय: वे ज़मीदार लोग होते हैं जो तकियेके सहारे पड़े हुए अपना अमूल्य जीवन बिताते हैं और जिनके गावोंकी बंधी हुई आमदनी चली आती है, अथवा जैसे वे पेन्शन यापता होते हैं जो सर्कारसे माहवारी लेकर घरमें पड़े हुए बच्चोंको खिलाया करते, चौसर सतरंज खेला करते व आलस्यमें पड़े हुए इधर उधर करवट बदला करते हैं। सेठजी एक **कर्मवीर महान् आत्मा थे।** जिनको अपने जागनेके समयसे रात्रिके शयनके समय पर्यंत जातिहित, देशहित, जगतहितका ध्यान था। जिस दिन सेठजी सबेरे कुछ न कुछ जातिसेवा सम्बन्धी विचार, खटपट व दौड़धूप नहीं कर लेते, थे तबतक उनको रोटी खाना अच्छा नहीं मालूम होता था। इस समय सेठजीकी अवस्था अनुमान ५८ वर्षकी थी। पैरमें चोट थी ही, तौभी साहस व उत्साह २५ वर्षके युवानके समान था। ठंडकमें पैर देर तक रहनेसे आपके सांधेमें दर्द हो जाया करता था तौभी कभी उसके पीछे पड़ नहीं रहते थे। **अपने समयको वृथा न खोकर उपयोगमें लगाए रखना सेठजीके जीवन का मुख्य उद्देश्य था।**

सेठजीका पंजाबमें गमन।

बहुत दिनोंसे सेठजी इस चिन्तामें थे कि प्रयाग, लाहौर, और आगरा कालेजोंमें अपने दिगम्बर जैन छात्र बहुतायतसे पढ़ते हैं। ये धर्ममें स्थिर रहें। लाला लाजपतरायके समान जैन कुलमें जन्म लेकर भी जैनधर्मको न जानकर भ्रष्ट न होवें इसीलिये इन तीनों स्थानोंमें आपका उद्योग जारी था। आगरा और प्रयाग तो एक दफै आप दौरा भी कर आए थे, पर लाहौर नहीं गए थे। लाहौरमें बाबू रामलाल सब-डिवीजनल ऑफसरसे बहुत दिनोंसे पत्रव्यवहार चल रहा था। सन् १९०९ दिसम्बरमें लाहौरमें राष्ट्रीय कांग्रेस होना निश्चित हुआ तथा इसी समय जैन यंगमेन्स एसोसियेशनका वार्षिकोत्सव भी निश्चित हुआ। तब बाबू रामलालने सेठजीको लिखा कि यदि ऐसे समयपर आप यहां पधारें तो शायद बोर्डिंगका कुछ प्रबन्ध हो सके। सेठजीने शीतलप्रसादजीको यह बात बयान की। शीतलप्रसादजीने सेठजीको पुष्ट किया कि आप अवश्य चलें। आपके पधारनेसे अवश्य कार्यकी सफलता होगी। शोलापुरसे लौटनेको एक सप्ताह ही बीता था कि शीतलप्रसादजीको लेकर सेठजी लाहौरको रवाना हुए। साथमें प्रोफेसर ए० बी० लट्ठे एम० ए० को भी लिया। ता० २३ दिसम्बरको मेलसे चलकर ता: २४ को **ललितपुर** आए। शीतलप्रसादजीके निमित्तसे एकदम नहीं जा सकते थे। पहले तार कर दिया था सो सेठ मथुरादास टड़ैयाने भले प्रकार स्वागत किया। शहरसे बाहर क्षेत्रपाल स्थानपर ठहरे। यहांका जिन मंदिर बहुत रमणीक है। थोड़े दिन हुए महोबेमें कुछ प्राचीन

प्रतिमाएं मिली थीं जो सर्कारके कब्जेमें थीं। राजाराम बांदाकी प्रेरणासे तीर्थक्षेत्र कमेटी और भारतवर्षीय दि० जैन महासभाने लिखा पढ़ी करके छोटे लाट युक्तप्रान्तकी आज्ञासे उन प्रतिमाओंको प्राप्त किया। उनमेंसे श्रीअभिनन्दननाथकी करीब १२०० के सम्वत् की बहुतही ध्यानाकार २॥ हाथ ऊंची पद्मासन प्रतिमाको सेठ मथुरादासजीने लाकर यहां विराजमान की। शेष बांदामें रहीं। रात्रिको पाठशालाकी परीक्षा ली। यहां इस समय स्याद्वाद पाठशाला काशीसे विशारद परीक्षोत्तीर्ण पं० ब्रजलाल दो माससे अध्यापक थे। सेठ माणिकचंदजीने सेठ मथुरादासजीको बहुत उपदेश किया कि आप यहां एक छात्रालय खोलें, उसमें बुंदेलखंडीय छात्रोंको रखकर संस्कृतादि पढ़वावें। शहरके लड़के विशेष नहीं पढ़ते। उनका विद्वान् बनना कठिन है। शास्त्रसभामें कुछ भाइयोंने स्वाध्यायका नियम लिया।

लाहौर दि० जैन बोर्डिंगका प्रबन्ध

यहांसे ता: २५ को चलकर सीधे ता: २६ को **लाहौर** आए। भावड़ा गलीके दिगम्बर जैन मंदिरके निकट एक मकानमें लाहौरवालोंने बड़े सन्मानके साथ ले जाकर सेठजीको ठहराया। ता: २६ और २७ को एसोसियेशनके अधिवेशन हुए। इनमें एक दिन शीतलप्रसादजीने श्रावक धर्म, प्रोफेसर लट्ठेने जैनधर्मका महत्व और पं० **अर्जुनलाल** सेठी बी० ए०ने कर्म सिद्धान्तपर व्याख्यान दिये। सेठजीने बहुतसे इंग्रेजी पढ़े जैनियोंको स्वाध्यायका उपदेश देकर छःढाला दौलतरामकृत याद करनेको कहा तथा जिसने स्वीकार किया उनको इसकी प्रतियें व जैन

नियमपोथी बांटीं। पहलीका उल्था शीतलप्रसादजीने श्री गजपंथाजीमें अपनी बीमारीकी हालतमें वीर सं० २४३५ मार्गसीर्ष सुदीमें किया था व नियमपोथी श्रीमती मगनबाईजीकी प्रेरणासे रची थी, ताकि जैनियोंमें नियमोंके ग्रहणका प्रचार हो। इन दोनोंको मुफ्त बांटनेके लिये सेठजीने छपवा लिया था। ता: २७ की रात्रिको दिगम्बर जैनियोंकी खास बैठक हुई इसमें **दिगम्बर जैन ग्रेजुएट एसोसियेशन** स्थापित होनेका प्रस्ताव हुआ। श्वेताम्बरी जैनियोंमें ऐसा एक श्वे० जैन ग्रेजुएट एसो० है जिसके द्वारा श्वे० समाजका बहुत कल्याण होता है। अपने दिगम्बर समाजकी सेवामें मुख्यतासे दिग० जैन पढ़े हुए ध्यान देवें इसलिये सेठजीके पूर्ण प्रयत्नसे इसका प्रस्ताव हुआ व प्रोफेसर लट्टे मंत्री नियत हुए। खेद है कि इसकी अबतक कोई अमली कार्रवाई न हुई। इसी समय सेठजीने पंजाबमें बोर्डिंगकी आवश्यक्ता प्रगट की। सर्वने पसन्द किया तथा तय हुआ कि एक वर्षका चंदा लाहौरवाले जमाकर बोर्डिंग चलावें, फिर पंजाबके सर्व स्थानोंसे चंदाका खास प्रबन्ध किया जावे। उसी समय **सेठ माणिकचंदजीने** १ वर्षके लिये २५) मासिक दिया, ऐसा ही २५) मासिक लाला जियालाल खजांची बंगाल बैंकने दिये, यही मैनेजिंग कमेटीके सभापति और कोषाध्यक्ष नियत हुए। उसी समय १४०) मासिकका प्रबन्ध हो गया। मंत्री बाबू रामचंद्र एम० ए० व उपमंत्री बाबू शामचंद बी० ए० बी० एस० सी० मास्टर सेन्ट्रल ट्रेनिंग कॉलेज नियत हुए।

ता० ३१ दिसम्बरको मेनेजिंग कमेटीकी बैठक हुई जिसमें मुख्य दो नियम रक्खे गए—कि सर्व छात्रोंको धार्मिक शिक्षा लेनी

होगी व बोर्डिंगमें चैत्यालय रक्खा जाय ताकि सर्व छात्र नित्य दर्शन करें। छात्रोंको धार्मिक व्याख्यानोंको देनेका काम लाला प्रभूलाल और मुरारीलालजीने लिया। सेठजीने शहरमें घूमकर कई मकान देखकर बोर्डिंगके लिये छांटे और खोलनेके लिये १ मासका समय दिया गया।

अमृतसरमें सेठजीका प्रयास।

यहांसे ता: १ को चलकर अमृतसर आए। लाला उमैदसिंह मुसद्दीलालने ठहरानेका प्रबन्ध किया था। यहां १४ घर दि० जैनियोंके हैं। कई लक्षपति मारवाड़ी हैं जैसे रामलाल, गनपतराय, परन्तु धर्मसे प्रेम नहीं है। एक जैन मंदिर है, उसमें दि० जैन प्रतिमाएं हैं परन्तु लोग दर्शन नहीं करते। अलग मंदिरके लिये चंदा ४५००) हो चुका है पर बना नहीं है। सेठजीने बहुत प्रेरणा की। ता: २ को गुजराती मित्र मंडल लाइब्रेरीके मेम्बरों और स्थानकवासी जैनियोंने सेठजीके सन्मानार्थ सभा की। धर्मोन्नतिपर प्रो० लट्टे और शीतलप्रसादजीने व्याख्यान दिया। यहां स्थानकवासी जैन पाठशालाको सेठजीने १०) की मदद दी व लाइब्रेरीमें पुस्तकें भेजना स्वीकार किया। यहां सेठजीने नानक शाही सुनहरी मंदिर देखा।

दिहलीमें जैन हाईस्कूलकी प्रेरणा।

ता० ३ जनवरीको दिहली आए पहाड़ी पर लाला जग्गीमलजीके कमरेपर ठहरे। यहांकी शालाओंका निरीक्षण कर सेठजीने छात्र व छात्राओंको मिठाई वितरण की। शामको शहरकी कन्याशाला देखी। ५) का इनाम दिया। ता०

४ की रात्रिको पहाड़ी धीरजमें आम सभा हुई, जिसमें प्रो० लट्ठे और शीतलप्रसादजीने धर्मपर व्याख्यान दिया । ता० ५ की रात्रिको शहरमें लाला मगुनचंदके मंदिरजीमें सभा हुई । इसमें उक्त दोनों महाशयोंने मिथ्यात्व, अन्याय और अभक्ष्य त्यागपर उपदेश दिया । बहुतसे भाइयोंने वेश्यानृत्य न करानेका व पर स्त्रीत्यागका नियम लिया । सेठ माणिकचंदजीने विद्योन्नतिपर कहते हुए दिहलीमें जैन हाईस्कूल और बोर्डिङ्गकी आवश्यक्ता बताई ।

आगरा बोर्डिंगका प्रबंध ।

यहांसे चलकर ता: ६ को आगरा आए । ता: ७ को मोती कटरेके बड़े मंदिरजीमें आम सभा हुई । शीतलप्रसादजीने बोर्डिंगकी आवश्यक्ता बताई । इसका समर्थन भा० दि० जैन महासभाके महामंत्री मुंशी चम्पतराय, प्रोफेसर लट्ठे और सेठ माणिकचंदजीने किया । सेठजीने ४०००) भेजकर हरिपर्वतके पास जमीन पहले ही ले दी थी । रायबहादुर घमंडीलालने कहा कि आगामी पौष सुदी ६ को चौधरी मोतीलालके हाथसे मुहूर्त बोर्डिंग मकान बनानेका करा दिया जायगा । कमेटीके उपमंत्री बाबू अमृतलाल बी० ए० नियत हुए । चंदा देनेकी प्रेरणा करके सेठजी यहांसे बम्बई आगए ।

सेठजीको पुत्रका लाभ ।

श्रीमान् सेठजीकी धर्मपत्नी नवीबाईजीको कई मास पहलेसे गर्भ था । सेठजीको निराशा ही थी कि पुत्रका लाभ होना कठिन है । आपकी निराशाका बहुत बड़ा उदाहरण यह है कि एक दिन शीतलप्रसादजीसे आपने कहा कि मैंने अपनी स्त्रीके लिये बहुत कुछ जायदाद अलग करली है, पुत्रका

लाभ तो मुझे होना ही नहीं है। मेरे तो बोर्डिंगके छात्र हैं सो ही मेरे पुत्र हैं। मगनबाई व ताराबाईको बीस २ हजारकी जायदादके मकान दे चुका हूं। ऐसा ही बड़ी कन्याको दिया है। यद्यपि वह मर गई है परन्तु उनकी पुत्री कमला है। अब मुझे कुछ और दान करना है। जुबलीबागमें ११००) मासिकके भाड़े की आमदनी है इसको मैं अपने जीतेजी रजिष्ट्री करके पक्का कर दूं। यह बात होकर आपने किस२ मद्देमें देना सो खूब सोच विचारकरे वकीलसे ट्रष्टका मसौदा ठीक करा शीतलप्रसादजीके साथ रजिष्ट्रारके यहां जा रजिष्टरी करा दिया था। पुण्य योगसे मिती पौष सुदी १ सं० १९६६ व वीर सं० २४३६ ता० १२ जनवरी १९१० के दिन सेठानीने एक पुत्ररत्नको जन्म दिया। सेठजीको कुछ आनन्द तो हुआ पर उसके जीवनकी आशा नहीं इससे कोई विशेष न किया। क्योंकि एक पुत्र थोड़े ही दिन पहले प्राणान्त हो चुका था पर सेठजीका पुण्य तीव्र था कि आपने अपने मरण समय तक इस पुत्रको सजीवित खेलता हुआ देखा। यह पुत्र जीवनचंद अब अपनी माताकी रक्षामें शिक्षा पारहा है।

सेठजीके द्वारा महान् लाभ।

सेठजी मांसाहार रोकनेके लिये अच्छी २ विलायतकी छपी पुस्तकोंको बांटा करते थे। कलकत्तानिवासी बाबू रज्जूलाल जैनी जब यात्रा करते हुए बम्बई आए तब उनको उत्साही व उद्योगी जानकर (Uric acid) यूरिक एसिड नामकी पुस्तक दी थी। उक्त रज्जूलालने वह पुस्तक बेचूलाल चैरिटेबल डिस्पेन्सरीके डाक्टर आशुतोष बनर्जी एल. एम. एस. को पढ़नेको

दी । डाक्टर साहबको अब तक मांस व मत्स्यका त्याग न था, पुस्तक पढ़नेसे ऐसी घृणा हुई कि डाक्टर साहब और उनकी पत्नी दोनोंने मांस मत्स्यका खाना त्याग दिया । इन अभक्ष्योंके छोड़नेसे डाक्टर साहबकी कई बीमारियां जाती रहीं । सेठजीने सुनकर बड़ा आनन्द माना ।

बम्बईमें आम सभा । मिती पौष शुक्ल १४ वीर सं० २४३६ को बम्बई मारवाड़ी मंदिरमें सभा हुई । उसमें दक्षिणकी यात्रासे लौटकर आए हुए अलीगढ़निवासी पंडित श्रीलालजीका व्याख्यान धर्मकी महिमापर हुआ । इसी दिन भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाके वार्षिकोत्सवके लिये जो श्रीसम्मेद शिखरजीपर माघ सुदी १ से ५ तक होनेवाला था, बम्बई दि० जैन पंचायतकी तरफसे **सेठ माणिकचंद हीराचंद** जे. पी, ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी, पं० धन्नालालजी, लाला प्रभुदयालजी आदि प्रतिनिधि चुने गए । माघ कृष्ण २ को हीराबागमें विलसन कॉलेजके संस्कृत प्रोफेसर श्रीयुत हरि महादेव भड़कमकर बी० ए० के सभापतित्वमें सेठजीने सभा करवाई । इसमें पंडित श्रीलालजीने जैनधर्म ही जीवका कल्याणकारी धर्म हो सकता है—ऐसा सिद्ध किया ।

सम्मेद शिखरजीमें महासभा । श्रीमन्त सेठ पूरणसाह सिवनी छपारा मध्यप्रदेशने श्री शिखरजीकी तेरापंथी कोठीमें एक नवीन जिन मंदिर तैयार कराकर उसकी बिम्बप्रतिष्ठा कराई थी । इसकी बड़ी धूम हुई । मेलेमें ३०००० से अधिक मनुष्य आए थे । विद्वद्वर पंडित नरसिंहदासजीके द्वारा बिम्बप्रतिष्ठाका समारम्भ एक बड़े

भारी मंडपमें विधिपूर्वक हुआ। सभी प्रान्तोंके धनवान, विद्वान् व परोपकारी आगए थे। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाका १४ वां वार्षिकोत्सव माघ सुदी १ ता० १० फर्वरी १९१० से प्रारम्भ हुआ। इस जल्सेके लिये श्रीमान् **सेठ हुकमचंदजी** इन्दौरनिवासी सभापति नियत हुए थे सो माघ वदी ३० ता० ९ फर्वरीको गाजेबाजेके साथ अपने पुत्र हीरालालके साथ १ हाथीपर विराजमान हो आए। सर्व भाइयोंने स्वागत करके मनोज्ञ डेरेमें ठहराया। बम्बईसे सेठ माणिकचंदजी, ब्र० शीतलप्रसादजी, मूलचंद किसनदास कापड़िया–सम्पादक दि० जैन भी आए थे। २॥ बजे दिनको जलसा शुरू हुआ। पहले ही श्रीमान् पंडित गोपालदासजीने मंगलाचरण किया। फिर महामंत्री मुंशी चम्पतरायजीने सभापति होनेके लिये सेठ हुकमचंदजीका प्रस्ताव किया। इसका समर्थन श्रीमन्त सेठ मोहनलाल खुरई और श्रीमान् **सेठ माणिकचंद हीराचंद** जे. पी. ने किया। सेठजीने अपना भाषण पढ़कर १००००) महासभाके प्रबन्ध खातेमें दिये। कुल बैठकोंमें १९ प्रस्ताव पास हुए, जिनमें मुख्य ये थे–(१) सर्कारसे प्रार्थना–कि बड़े लाटकी धारा सभामें जैन जातिका प्रतिनिधि नियत किया जावे जैसा कि ता० १९–१०–०९ के पत्रमें आशा दिलाई गई है। व इसका तार भेजा जावे, (२) ११ प्रतिमाधारी ऐलक पन्नालाल और ब्रह्मचारी शीतलप्रसादके साहसपर हर्ष, (३) जैन बैंक खोला जावे, (४) वाइसरायसे प्रार्थना की जाय कि भादों सुदी ५ और १४ को जो दिगम्बरियोंके महान पवित्र दिवस हैं, तमाम भारतमें जाहर छुट्टी मनाई जावे, (५) सभापति–**दानवीर सेठ माणिकचंदजी** व महामंत्री सेठ हुकमचंदजी और कोषाध्यक्ष मुंशी चम्पतरायजी

हुए। इनको महामंत्रीके पदसे १ वर्षको छुट्टी दी गई, (६) श्वेताम्बर दिगम्बरोंके परस्परके तीर्थ सबन्धी झगड़ोंको तय करनेके लिये यदि श्वेताम्बर जैन कान्फ्रेंस पंच नियत करके भेज दे तो महासभा भी अपनी तरफसे पंच नियत कर देगी।

सेठजीको दानवीर जैन कुलभूषणका पद।

वसंत पंचमीके दिनकी बैठकमें प्रस्ताव हुआ कि सेठ माणिकचंद हीराचंद जे. पी० के अद्भुत कार्यकी कदर करके '**दानवीर जैनकुलभूषण**' का पद अर्पण किया जावे व मुंशी चम्पतरायने १४ वर्ष तक जो समाजसेवा की है उसके उपलक्ष्यमें "**जैन जातिभूषण**" का पद दिया जावे। पंडित गोपालदासने आशीर्वाद सूचक शब्द कह कर **नारियल और निम्नलिखित मानपत्र** दोनों परोपकारियोंकी सेवामें भेट किया।

नकल मानपत्र (महासभा)

श्री वीतरागाय नमः।

स्थान श्री सम्मेदशिखरजी, मधुवन
पो० पारसनाथ (हजारीबाग)

श्री वीर निर्वाण संवत् २४३६. मिती माघ शुक्ला ५. १४ फेब्रुवरी १९१०.

सन्मानपत्र।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभाकी तरफसे श्रीमान् दानवीर सेठ **माणिकचंद हीराचंद** जे० पी० जौहरी बम्बईनिवासीकी

श्रीयुत मान्यवर महोदय, सेवामें अर्पित।

आपने इस दिगंबर जैन जाति और पवित्र जैनधर्मकी उन्नति करनेमें जो अपना तन, मन और धन लगाकर असीम परिश्रम उठाया

है तथा अब भी उठा रहे हैं इससे समस्त दिगंबर जैन समूह आपका अंत:करणसे कृतज्ञ है। आपने अपने बुद्धिबल और अटूट परिश्रमके द्वारा न्यायपूर्वक व्यापार करके जो प्रचुर सम्पत्ति उपार्जन की तथा उसमेंसे कई लक्ष रुपयोंसे ममत्व छोड़ उसको मुख्यतया छात्रालयोंके द्वारा विद्यादान और धर्मशालादिके द्वारा अभयदानमें व्यय किया तथा धर्मायतन, तीर्थक्षेत्र और जैन मंदिरोंके रक्षार्थ अकथनीय परिश्रम उठाया तथा द्रव्य खर्च किया इत्यादि अनेक शुभ कृत्य करके आपने शास्त्रोक्त गृहस्थ धर्मका पालन किया है। यह बात सब जन समूहके लिये अनुकरणीय है। आपने लक्ष्मी उपार्जन करके भी कभी अपने धार्मिक नित्य नियमको नहीं छोड़ा तथा स्वयं शास्त्राभ्यासी रहकर अपनी सन्तानको भी प्रसिद्ध सद्विद्या रत्नसे विभूषित कर अपने रत्नस्वामित्वको सार्थक किया है। आपके इन्हीं सद्कृत्योंपर मोहित होकर गवर्नमेंटने जे० पी० (Justice of Peace) की तथा श्री दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाने **दानवीरकी** पदविएं प्रदान की हैं, और यह भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा आपके उपकारकी ओर अपनी भक्ति प्रकट करनेके लिये आपको उन पदविओंसे भी विशेष " **जैन कुलभूषण** " **की** सुपदवीसे सम्मानित कर अपना हार्दिक प्रेम पुष्प अर्पण करती है। आशा है आप इसे स्वीकार कर जैनसमाजको कृतार्थ करेंगे।

द. **हुकमचंद**

सभापति

भारतवर्षीय दि० जैन महासभा।

सेठ माणिकचंदजीने अपनी लघुता प्रगट करते हुए उपरोक्त मानपत्र स्वीकार करके ९०१) महासभाके प्रबन्ध खाते, १०१) जयपुर जैन शिक्षाप्रचारक समिति व १०१) महासभाकी लाइफ मेम्बरीको दिया। डिप्टी चम्पतरायजीने भी अपनी आधीनता बताई और ५००) की छात्रवृत्तियां उन छात्रोंको देनेको कहा जो पंडित गोपालदासजीके पास धर्मशास्त्र पढ़ेंगे। प्रबन्ध खातेमें और भी मदद आई (बाबू किरोड़ीचंदजी आराने एक चित्र द्वारा शास्त्रोंके भंडारोंकी दुर्दशा दिखाई व सरस्वती भवनकी आवश्यक्ता बताई। उसी समय अपील करनेसे ७००) वार्षिक उपजके वादे १० वर्ष तकके लिये हो गए। कई उपदेशक सभाएं हुईं। माह सुदी २ को शिक्षाप्रचारक समिति जयपुरका जल्सा हुआ। उसमें **ब्रह्मचर्याश्रम**की आवश्यक्ता बताई गई। इसके लिये बाबू गेंदनलालजीने १०००) नकद प्रदान कर दिये। इस समय कुल फंड २०००) का हुआ। अनाथालय हिसारको भी ८००) का फंड हुआ। सेठजीने अपनी ओरसे कटनीनिवासी भाई मन्नूलालको एक सोनेका चांद अर्पण किया, क्योंकि महासभाके काममें उसने सभासद आदि बढ़ानेमें बहुत परिश्रम किया था।

जल्सा तीर्थक्षेत्र कमेटी। माह सुदी २ की रात्रिको भारतवर्षीय दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीका बड़ा प्रभावशाली अधिवेशन सेठ हुकमचंदजीके सभापतित्वमें हुआ, जिसमें महामंत्री सेठजीने अपनी रिपोर्ट सुनाई, जिसका बड़ा प्रभाव हुआ। बंडी मन्नालाल गिरनार तीर्थके प्रबन्धक आए थे। सेठ हुकमचंदजीके समझानेसे उन्होंने दूसरी कमेटी ठीक की जिसमें बाहरवाले भी मेम्बर हुए।

रिपोर्टका सारांश कहते हुए **सेठ माणिकचंदजीने** प्रबन्ध खातेमें द्रव्यकी जरूरत बताई तथा १०००) आपने दान किये। तब सेठ हुकमचंदजीने ५०१) दिये इस तरह ३१२२)का चंदा हो गया। सोनागिरजी व तेरापंथी कोठीके लिये कमेटियां बनाई गईं। शिखरजी पर्वत रक्षाके लिए द्रव्य एकत्र करनेको भाई नियत हुए।

भा. दि. जैन महिला परिषद्का स्थापन।

श्रीमती मगनबाई, जानकीबाई, ललिताबाई, पार्वतीबाई, लाजवंतीबाई, चंदाबाई आदि पढ़ी हुई धर्मकी जानकर बहनोंके उद्योगसे छह स्त्रीसभाएं हुईं। अनेक प्रकारके उपदेश हुए। ६०)की मुद्रित पुस्तकें पढ़ी बहनोंको बांटी गईं और स्त्री-शिक्षाके लिये ५५०)के अनुमान फंड हुआ तथा महासभाके समान सारे भारतको जगानेके लिये **भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद् स्थापन हुई**। इसकी प्रबंधकारिणी सभामें **श्रीमती मगनबाईजी मंत्री व पार्वतीबाईजी प्रमुखा** नियत हुईं।

मंदिर प्रतिष्ठामें भंडारके जो २००००)के अनुमान आए सो पर्वतरक्षा फंडमें शामिल होनेको सेठ परमेष्ठीदास कलकत्ताको दिये गए।

उपरैली कोठीमें कलश व ध्वजा-रोपणोत्सव।

सेठजीने उपरैली कोठीके बड़े मंदिरजीके जीर्णोद्धारमें भंडारसे २५०००) खर्चकर एक बड़ा रौनकदार भव्य मंदिर कर दिया था, उसीपर ध्वजा चढ़ानेका कार्य्य वसंत पंचमीके प्रातःकाल हुआ। कलश चढ़ानेकी बोली सेठ सुखलालजी हजारीलाल छिन्दवाड़ाने ५५००)में, ध्वजा चढ़ानेकी सुरतके जयचंद हीराचंद तासवालेकी विधवा कंकु-

बाईने १०००) में ली। सेठजीने मंदिर जीर्णोद्धार करनेवाले मिस्त्री जवेरदास व कोठीके सर्व कर्मचारियोंको मुद्रिका, कंठी, शाल दुशाले आदि इनाममें दिये। उपरैली कोठीके ट्रष्टियोंकी मीटिंग हुई। सभापति बाबू देवकुमारके स्थानमें बाबू गुलाबचंद अनेरेरी मजिष्ट्रेट छपरा तथा मंत्री सेठ हरसुखदास हजारीबाग हुए। कोषाध्यक्ष सेठजी ही रहे। सेठ माणिकचंदजीके ध्यान देनेसे ही उपरैली कोठीके द्रव्यकी केवल रक्षा ही नहीं हुई, किन्तु मंदिर धर्मशाला आदि सुधार होकर द्रव्यका सदुपयोग भी हुआ।

सेठजीका दौरा।

शिखरजीकी यात्रा भले प्रकार करके सेठ माणिकचंदजी, शीतलप्रसादजी, मूलचंद किसनदासजी कापड़िया व श्रीमती मगनबाईजीके साथ ईसरी स्टेशनसे चल ता० १९ फर्वरीको **गयाजी** आए। यहां बुद्ध–गयाका मंदिर देखा। यहां बुद्धकी मूर्ति बैठे आसन दो गज ऊंची है। एक हाथ गोदमें व एक हाथ लटकाए हैं। मंदिरका शिखर १८२ फुट ऊंचा है। इस मंदिरके पीछे पीपल वृक्ष है। कहते हैं यहां बुद्धको ज्ञान हुआ।

काशी स्याद्वाद पाठशालाका वार्षिकोत्सव

यहांसे चलकर शेठजी ता: २० को काशी आए। उसी दिन पाठशालाका वार्षिकोत्सव लाला भगवानदास एम. ए. अग्रवालके सभापतित्वमें हुआ। १८ विद्यार्थियोंको १०० के करीब इनाम दिया गया। विद्याप्रेमी पार्सी जमशेदजी नौरोजी ऊनवाला भी आए थे। सभापति साहबने एक विद्वता पूर्ण भाषणमें कहा कि न्याय (तर्क) विद्या सत्य बात निर्णयके लिये

सेठजी ६० वर्षकी अवस्थामें।

हैं न कि जल्प और वितंडावादके लिये । संस्कृत विद्याके बिना धार्मिक विद्यामें प्रवेश नहीं हो सक्ता । राजभाषा भी संस्कृतवालोंको सीखना चाहिये । सेठ माणिकचंदजीने सभापतिको धन्यवाद देते हुए कहा कि " जैसे हिन्दू कॉलेजमें स्वार्थ त्यागी जीवन अर्पण करनेवाले विद्वान् काम करते हैं ऐसे हमको मिलें तो बहुत उत्तम काम हो । हमारे भाईयोंको ५० वर्ष तक खूब परिश्रम करके धनोत्पत्ति करके फिर शेष जीवन परोपकारमें बिताना चाहिये । " सेठजीने १०१) दिये । बाबू छेदीलालने भी १०१) दिये । सब मिलके ९००) की उपज हुई ।

यहांसे चल ता० २८ को श्री **अयोध्याजी** आए । जहां इस चतुर्थ कालमें श्री ऋषभदेव, अजितनाथ, अभिनन्दननाथ, सुमतिनाथ और अनन्तनाथ स्वामीका जन्म हुआ था । यहां पांचों स्थानोंके दर्शन किये । इस क्षेत्रके सम्बन्धमें ऐसी मान्यता है कि सदा ही भरतक्षेत्रके सर्व ही तीर्थंकर यहां जन्मते और श्री सम्मेद शिखरजीसे मोक्ष प्राप्त करते हैं । हुंडावसर्पिणी कालके दोषसे गत चौथे कालमें फेरफार हुआ । यहां केवल एक पुजारी था । मुनीम नहीं था न प्रबन्धकारिणी कमेटी न रसीदवही न वहीखाते थे । सेठजीने यहां बम्बईसे एक घड़ी भेजनेको कहा ।

यहांसे रात्रिको चल सवेरे ता० २९ को **लखनऊ** आए । स्टेशनपर मुख्य जैनी भाईयोंने भले प्रकार स्वागत किया । यहां दो शास्त्र सभा व दो उपदेशक सभा हुई । सेठजीको निम्नलिखित **मानपत्र** अर्पण हुआ—

नकल मानपत्र (लखनऊ)

ॐ

श्रीमहावीराय नमः ।

दोहा ।

"शीतल" देखत शिथिल भये, सर्व कर्मके फन्द ।
भाग हमारे उदय भये, आये माणिकचन्द ॥ १ ॥

इस समय हम अपने परम पूज्य श्री वीतराग परमेश्वरको नमस्कार करते हुए, अङ्गमें फूले नहीं समाते हैं कि आज कैसा सु-अवसर है, कि जिस महानुभावकी कीर्त्ति हम सब बहुत कालसे श्रवण करके अपने कर्णोंको तृप्त किया करते थे, आज वही शान्ति छवि, अपने चन्द्रसम मुख कमलके दर्शन देकर हमारी नेत्ररूपी कम-लिनीको प्रफुल्लित कर रही है व यों कहिये कि जिस प्रकाशमान चन्द्रमाके देखनेके वास्ते हमारे चित्तचकोर बहुत कालसे तृषित थे, आज वही शुभ चन्द्र स्वच्छ स्फटिक शोभाविराजित श्री श्रेष्ठि "**माणिकचंद**" अपने पूर्ण रूपसे दर्शन देकर अपनी सौम्य चित्तहारी दृष्टिरूपी किरणोंसे हमारे हृदयको शान्ति और आनन्द उत्पन्न कर रहे हैं। महाशय ! हम आपकी प्रशंसा (स्तुति) कर-नेके लिये असमर्थ हैं क्योंकि सम्पूर्ण भारतवर्षमें जैन समाजमें ऐसा कौन जन होगा जिसके मुखसे आपका सुयश, कीर्ति, गुणगान व नाम न लिया गया हो ! जैन समाज व हम सकल लखनऊ निवासी श्रीमानके परम आभारी हैं, कि आपने अपने सुकृत्यसे सञ्चित किये हुए धनको अपनी मान बड़ाईके लिये व्यर्थ व्यय न कर जैन धर्म व जैन जातिके परमोपकारक मार्गमें लगाया। आपने विद्यावृद्धिके

लिये यत्र तत्र जैन बोर्डिङ्गहाउस नियत किये, पाठशालायें स्थापित कराई, यात्रियोंके सुभीतेके लिये तीर्थक्षेत्रोंका सुधार किया, धर्मशालायें निर्माण करवाई, आपको इस पतित पावन जैन धर्म व धर्मात्माओंसे अत्यन्त प्रीति है। आपके इस सुकर्तव्यके लिये हम सम्पूर्ण जन व जैन मतावलम्बी आपको शुद्ध अन्तःकरणसे कोटिशः धन्यवाद देते हैं और ईश्वरसे प्रार्थना करते हैं कि आप जैसे धर्मात्माओंको सदा दीर्घायु बनावे।

भागगयो मनको तिमिर, भयो परम आनन्द।
पुण्य उदय दर्शन भये, **शीतल माणिकचन्द** ॥ ॥

आपका कृपाभिलाषी–

माघ शुक्ला १५ सं. १९६६ **दामोदरदास मंत्री,**
जैनधर्मप्रवर्धिनी सभा, लखनऊ

यहांकी पाठशाला व औषधालयको देखकर सेठजीने प्रसन्नता प्रकट की। तथा इन कार्योंके प्रबन्धार्थ एक नियमावली व प्रबन्धकारिणी सभा बनवा दी तथा अयोध्या, रत्नपुरी और सहेट महेठके प्रबन्धार्थ कमेटी बनानेकी प्रेरणा की। भाईयोंने चैत्रमें होनेवाली रथयात्रामें बनाना स्वीकार किया।

यहां जैनसभाके मंत्री लाला दामोदरदासजी शास्त्रज्ञाता, परोपकारी धर्मात्मा हैं। श्रीमती मगनबाईने कन्याशालाके लिये २०) मासिकका चंदा कराया। मूलचन्द किसनदासजीने वेश्यानृत्य, बाललग्न आदि कुरीति निवारण पर उपदेश दिया। भाईयोंने आगामी प्रबन्ध करना स्वीकार किया। वास्तवमें सेठजी ऐसे परोपकारीकी सुपुत्री ऐसी शिक्षा प्रचारिका जैन स्त्री समाजके सुधारमें दत्तचित्त

थीं कि जहां पधारें वहां अवश्य सुधार होता है। यहांसे ता० २५ को चल २६ फर्वरीको बम्बई आए।

लाहौर बोर्डिङ्गकी स्थापना और सेठजीको हर्ष।

जिस बातको चाहते हो यदि वह हो जावे तो चित्तकी आकुलता मिटती है। और आकुलताके मिटनेसे ही सुखका अनुभव होता है। कई वर्षोंसे सेठजी पंजाबमें बोर्डिंग हाउस स्थापित कराना चाहते थे सो ता० ३० जनवरी १९१० के दिन लाहौरके दिगम्बर जैन पंचाननें अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार बोर्डिंग खोल दिया। उस दिन १० छात्र भरती हुए। सेठजीके पास जब पत्रद्वारा खबर आई, आप बड़े ही आनन्दित हुए। यह बोर्डिंग अभी तक उन्नतिरूपमें चल रहा है। १ वर्षमें ही २२ छात्र हो गए थे अर्थात् लॉ कालेज (कानून) के ९, बी० ए०के २, एफ० ए०के ७, इञ्जीनियरिंग ४, मैट्रकुलेशन २ और मिडिलके दो।

धर्मशिक्षा छःढाला दौलतरामकृत पढ़ाया गया व लिखित उत्तरोंसे परीक्षा ली गई। फल अच्छा रहा। पारितोषिक भी दिया गया। आगे वर्षोंमें द्रव्यसंग्रह, तत्त्वार्थसूत्र तककी पढ़ाई होती रही है। बोर्डिंग जब खुला तब ही **लाला देवीसहाय** फीरोज़पुर छावनी और **लाला लक्ष्मीचंद** इच्छाराम कम्पनीवालोंने देखा और उन्होंने बहुत प्रसन्न होकर २५१) और २००) की क्रमसे सहायता दी।

वर्तमानमें करीब ४०के छात्र हैं। मकान अभी किरायेका ही है पर जमीन बहुत मौकेसे मिल गई है। कोई धर्मात्मा सेठ

माणिकचन्दजीके जीवनका यदि अनुकरण करके बोर्डिंग बना दें तथा खर्च जो कि कठिनतासे चलता है उसके लिये कुछ ध्रौव्य फंड दे दें जिसके ब्याजसे काम चले तो पंजाबमें जैनधर्मका झंडा गड़नेके समान महान पुण्य बंध हो। मंत्री लाला रामलालजी व उपमंत्री बाबू शामचंदजी बी० ए० व सभापति लाला जियालाल खजांची इस संस्थाकी उन्नतिमें दिनरात दत्तचित्त रहते हैं। लाहौरमें १०० जैनी छात्र कॉलिजोंके पढ़नेवाले हैं। स्थान बिना चाहे जहां रहकर धार्मिक ज्ञान व आचरणसे भ्रष्ट हो रहे हैं। यहां पर पहले छात्रोंके खयाल आर्य समाजी थे पर अब सब जैन धर्मके गौरवको समझ गए हैं और अपने अनेकान्त मई तत्वके सामने एकांत तत्वोंको तजने योग्य ही जान रहे हैं। इसका प्रमाण यह है कि इस छात्राश्रमसे लाभ लेकर आजीविका पर लगे हुए परमानंद एम० ए० सियालकोटसे अपने ता० २१ सितम्बर १५ के पत्रमें लाला रामलाल मंत्री बोर्डिंगको लिखते हैं कि मैंने यहां तीन वर्ष रहकर उन अमूल्य जैन धर्मके रत्नोंको जाना है जिनको मैं बिल्कुल भूल रहा था। अब मुझे घमंड है कि मैं जैन धर्ममें पैदा हुआ। मैं छात्राश्रमके उपकारको कभी भी भूल नहीं सक्ता। आपके इंग्रेजीके कुछ वाक्य ये हैं:—

Ram Kaur Lane
SIALKOTE CITY.
21-9-15.

my dear.......................

I have lived for full three years at the Lahore Jain Boarding House. Unless I am to

be ungrateful and thankless, I cannot possibly forget it. I have no hesitation in adding that the institution shall always be near and dear to me. The Jain Boarding House has afforded me an invaluable opportunity for realising what Jems are embedded in the jain religion and how miserably I was neglecting them. I come out of the Boarding House as a Jain, proud of Jainism and its brilliant heritage. I shall always look upon the institution as one which has been a means of providing me with an eyeopener in the matter of religion. May to Jainedra that my interest in Jainism may be ever-increasing.

I am,
Yours very Sincerely,
PARAMANAND (M. A.)

पाठकगण । इससे समझेंगे कि पंजाबमें जैनधर्मकी जड़ इस छात्राश्रमने जमादी है। सेठ माणिकचंदजीकी दीर्घदृष्टिकी प्रशंसा सहस्र मुखसे भी नहीं हो सक्ती । कॉलिजोंके साथ जैन बोर्डिंगका होना ही विद्वान् छात्रोंको जैन धर्मका प्रेमी बना सक्ता है। अन्यथा एकान्त मतके रंगोमें रंग जाना नव युवकोंका बहुत सुगम है। धनवानोंको जिनमंदिरसे भी अधिक पुण्य श्रद्धानको दृढ़ करानेवाले उपायोंके लिये द्रव्य खरचनेमें होता है। ऐसा जान इन पंजाब बोर्डिंगको पक्का कर देना एक अमूल्य धर्मका अंग होगा । क्या सेठ माणिकचंदजीके समान धनवान देहली, पानीपत, फीरोजपुर, अम्बाला

आदिमें नहीं हैं? अवश्य हैं। केवल उदार बुद्धि व परोपकार दृष्टिकी आवश्यक्ता है। जिन सेठ माणिकचंदजीने अनेक बोर्डिंग स्थापित किये तो क्या पंजाबके धनाढ्य मिलकरके भी एक बोर्डिंगको भी पक्का नहीं कर सक्ते?

सेठजीका विद्या प्रेम। सेठ माणिकचंदजी सदा ही गुणग्राही और गुणवानोंका मान करते रहे हैं। सहारनपुर निवासी बाबू जुगमन्दिरलाल एम० ए० हैं। यह पहले अलाहाबादमें थे, जब ही से इंग्रेजी 'जैन गजट'की सम्पादकी करनी शुरू की। फिर आप बैरिष्टरी आदि कई परीक्षाओंको पास करनेके लिये विलायत गये। वहां करीब चार वर्ष रहे। जब शिखरजी पर बंगले बांधनेकी आपत्ति आई तब सेठजीने आपको विलायत लिखा था। आपने अपने ता० ३ अक्टोबर १९०७ के पत्रमें लिखा कि **यह सम्पूर्ण पर्वत पवित्र है। मैंने ४ दफे शिखरजीकी यात्रा की है और कुल पर्वतकी प्रदक्षिणा दी है। यदि उसके कहीं पास भी शराब मांसका संसर्ग होगा तो यह बड़ी आपत्ति होगी।**

कुछ वाक्य यह हैं:—

It will be indeed a sad sight that after so many centuries meat and wine may be sold and taken, and perhaps even prepared in the near vicinity of Sikharji, it is tragic.........I have myself made this round four times my Pilgrimage to Sikharji...........

आपने वहां इंग्रेजोंमें बहुत उद्योग किया और पार्लियामेन्ट तक यह बात पहुंचाई। बाबू साहबको जैन धर्मका प्रेम बाल्यावस्थासे ही था। आप बड़े धार्मिक थे। इसी संस्कारसे आपने विलायतमें भी जैन धर्मका उपदेश जब जिससे अवसर बात करनेको मिला उसको दिया तथा सन् १९०९ में वहां एक जैन लिटरेचर सोसायटी कायम कराई जिसके मंत्री **मि० हर्बर्ट वारन** (नं ८४, शोल गेट रोड, लंडन एस० डबलू०) नियत किये जो बाबूसाहबकी संगतिसे जैनधर्मके पक्के श्रद्धालु हुए। इसमें हमारे सेठजी भी १ पाउन्ड भेजकर मेम्बर हुए। आप ता० ११ मार्च १९१० को जहाज़से बम्बई उतरे, उस समय सेठ माणिकचंदजी डाकपर आपको लेने गए और सन्मान पूर्वक अपने ही चौपाटीके रत्नाकर पैलेसमें उतारा। आपने एकान्तमें उक्त बाबू साहबको लेजाकरके बातचीत की जिससे आपको निश्चय हो गया कि जुगमन्दिरलालजीने अपना खानपान भ्रष्ट नहीं किया है। सेठजीने स्नानादि कराया और अपने साथ चैत्यालयमें ले गए। उस समय बाबू साहबने बड़े भावसे श्री चंद्रप्रभुस्वामीकी ध्यानाकार प्रतिबिम्बके दर्शन किये और नमस्कार किया। फिर थोड़ी देर सामायिक की। उक्त बाबू साहब विलायतमें भी नित्य सामायिक करते थे। यह आपकी नित्यकी क्रिया है। जब सेठजी चौकेमें भोजन करने गए अपने साथ ले गए और एक ही पंक्तिमें बैठ भिन्न २ थालोंमें सेठजी व दूसरोंके साथ बाबू साहबने भोजन किया। सेठजीके इस धार्मिक प्रेमसे बाबू साहबके चित्तपर बहुत बड़ा असर हुआ।

पंडित मेवारामजीका व्याख्यान ।

इसी अवसरपर खुरजेवाले पंडित सेठ मेवारामजी दक्षिणकी यात्रासे लौटकर बम्बई आए थे और इसी तारीखकी रात्रिको आपका व्याख्यान नियत हुआ था । जिसके छपे नोटिस वितरण हो चुके थे । सेठजी रात्रिको हीराबाग लैक्चर हॉलमें उक्त बाबू साहबको ले गए । सभामें जैन अजैन अनेक प्रतिष्ठित भाई थे । प्रथम ही ब्र० शीतलप्रसादजीने मंगलाचरण करके सभाका हेतु कहकर कहा कि आज पंडित मेवारामजी " जगत्कर्ता ईश्वर नहीं है " इस विषयपर भाषण देंगे। सभाको बाबू जुगमन्दिरलालका परिचय कराया और कहा कि आप ४ वर्ष विलायत रह बेरिस्टरी पास करके आज ही बम्बई पधारे हैं । दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचंदजी जे० पी० की प्रार्थनासे एलफिंस्टन हाईस्कूलके संस्कृत प्रोफेसर मगनलाल दलपतराम शास्त्री एम० ए०ने सभापतिका आसन ग्रहण किया। सभापतिके बैठनेपर पंडितजीने अपना व्याख्यान बहुत ही विद्वत्तापूर्ण दिया जिसको सुनकर पंडित लालनने उठकर कहा कि इस अपूर्व विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानको सुनकर मैं इतना मुग्ध हो गया हूं कि जी चाहता है कि पंडितजीका साथ निरंतर करूं । बाबू जुगमन्दिरलालने भी व्याख्याताको धन्यवाद दिया और कहा कि मैं आज इनके युक्तिपूर्ण व्याख्यानको सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ हूं। सभापतिजीने कहा कि आजके व्याख्याता एक बड़े अच्छे पंडित हैं । मेरा जैनधर्मसे जो परिचय हुआ है उससे मैं कह सक्ता हूं कि इसके बहुतसे अंश वैष्णव धर्मसे साम्यता रखते हैं । यदि जैन और वैष्णव धर्मके आचार्य मिलकर एक विश्व धर्म निर्मापण करें तो भारत क्या बल्कि जगत्का उदय हो जाय।

बैरिष्टर जुगमन्दिरलालजीका व्याख्यान।

सेठ हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगकी लिटरेरी सोसायटीकी तरफसे ता: १४ मार्च सन् १९१० को हीराबागमें सेठ गुलाबचंदजी ढड्ढा एम. ए. के सभापतित्वमे एक बृहत् सभाका अधिवेशन हुआ। सभापतिने आसन लेते वक्त यह कहा कि आजके व्याख्याता इतनी डिगरी प्राप्त करनेपर भी अपने धर्ममें दृढ़ रहे हैं। फिर व्याख्याता जुगमन्दिरलालजीने विद्यार्थियोंके कर्तव्यपर अपना विद्वत्ता पूर्ण भाषण कहा। उसमें यह बातें भी कहीं कि भारतवर्षकी प्राचीन कालकी शिक्षामें तीन बातें थीं–**सादगी, सस्तापन और धीमापन**–सादा भोजन, सादा आसन, सादी शय्या रहती थी। गुरुओंको फीस नहीं देती पड़ती थी सुगमतासे गुरुओंके पास विद्यार्थी हर समय प्रश्न कर सक्ता था। एक ही विषय बहुत धैर्यके साथ पढ़ा जाता था। आजकलकी भारतीय शिक्षामें तीनोंका अभाव है। विलायतकी और यहांकी पढ़ाईमें बहुत अंतर है। वहां शारीरिक, मानसिक और आत्मिक तीनों विषयोंमें पूरी २ शिक्षा दी जाती है। विलायत जानेसे जैन धर्म टूट जाता है ऐसा कहना ठीक नहीं है। विलायतमें आप जैन धर्म अच्छी तरहसे पालन कर सक्ते हैं। भक्ष्याभक्ष्यका विचार भी रख सक्ते हैं। **मैं चार वर्ष विलायतमें रहा लेकिन मांसके एक अणुने भी मेरे उदरमें प्रवेश नहीं किया।** वहांपर शाक भोजी सोसायटी बढ़ती जाती है। सेठजी को आपके व्याख्यानको सुनकर बड़ा ही हर्ष हुआ। बम्बईमें बाबू साहब सेठजीके पास ही ठहरे रहे। इस

वक्त सेठजी श्री गोम्मट स्वामी (जैनविद्री) जानेकी तैयारी कर रहे थे क्योंकि वहां श्री बाहुबलि स्वामीकी मूर्तिका मस्तकाभिषेक समारंभके साथ २ **भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाका** नैमित्तिक अधिवेशन था जिसके लिये हमारे सेठजी ही **सभापति** निर्वाचित हुए थे। मस्ताभिषेककी मिती चैत वदी ५ नियत थी तथा महासभाका अधिवेशन चैत्र वदी १ से ४ ता: २६ मार्चसे २९ तक नियत था। सेठजीने बाबू साहबको कहा कि इस समय आप हमारे साथ दक्षिणकी यात्रा करिये और जैनविद्री सरीखे अति प्राचीन स्थलके दर्शन कीजिये, जहांसे श्रीभद्रबाहु श्रुतकेवलीने समाधिमरण प्राप्त किया व जहां श्री बाहुबलि स्वामीकी अति मनोज्ञ ध्यानाकार ५६ फुट ऊँची प्रतिबिम्ब विराजमान है। सेठजीने बाबू साहबके चित्तको ऐसा आकर्षित कर लिया था कि आपने तुर्त ही अपनी स्वीकारता दे दी। अब सेठजी सकुटुम्ब रवाना हुए। साथमें ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी और बाबू जुगमन्दिरलालजी थे। एक ही सेकंड क्लासमें बैठकर मदरास मेलसे सब लोग बेलगाम हुबली होते हुए टिपटूर स्टेशन पहुंचे। वहांपर अनेक जैनी जन स्वागतार्थ खड़े थे। सेठजीको बड़े सम्मानके साथ स्टेशनसे ३० मीलके करीब श्रवणबेलगोला नगरसे एक मील इस तरफ ले जाकर ठहराया। इतनेमें हज़ारों भाई नाना-प्रकारकी पगड़ी व वस्त्र पहरे एक पालकी लेकर आए। सेठ वर्धमानैय्या मैसूरने सेठजीके गलेमें हार क्षेपण किया। दूसरोंने सेठजीपर पुष्पों-

श्री बाहुबली मस्तकाभिषेक और महासभा।

की वर्षा की। पालकीपर बिठाया और गाजेबाजेके साथ नगरमें ले गए। इधर रिवाजके मुवाफिक लोग रास्तेमें नारंगी, नारियल आदि फलोंकी भेट चढ़ाते हुए नमस्कार करते थे। सेठजीकी सवारी शहरमें फिरी। एक स्थानपर फोटो लिया गया। एक खास तंबूमें सेठजीको ठहराया था। इस वक्त सेठ नवलचन्दजी भी सकुटुम्ब पधारे थे।

इस समय अनुमान ४०००० स्त्री पुरुष आगए थे। बाबू अजितप्रसाद वकील, पं० अर्जुनलाल सेठी आदि अनेक जन उत्तर भारतसे आए थे। यहां पंचकल्याणकोत्सव भी हुआ था जिसका प्रारम्भ फाल्गुण सुदी ३से हुआ था।

फाल्गुण सुदी १३को जन्मकल्याणकमें १००८ कलशोंसे दर्शनीय अभिषेक हुआ था। उसी दिन तपकल्याणक, सुदी १४को केवलज्ञानकल्याणक और सुदी १५को मोक्षकल्याणककी अपूर्व रचना हुई थी। इस समय जैनबिद्री महा आनन्दसागरमें निमग्न थी। चहुंओर स्त्री पुरुष दोनों पर्वतोंपर मंदिरोंके दर्शन पूजन करते दिखाई देते थे। **श्री बाहुबलि स्वामी**की शांति मूर्तिकी पूजन करते हुए चरणोंका अभिषेक करते हुए हज़ारों स्त्री पुरुष परमानन्दमें निमग्न दृष्टिगोचर होते थे। स्वागतकारिणी सभाके सभापति अनन्तरानैय्या व मंत्री सेठ वर्धमानैय्या थे।

महासभाकी बैठकें चैत्र वदी १ ता० २१ मार्चकी दुपहरसे प्रारम्भ हुईं। सभामंडप बहुत बड़ा बना था। इसमें भट्टारक और ब्रह्मचारियोंके बैठनेको भिन्न उच्च स्थान नियत था। कांची, मूड़बिद्री, कारकल, कोल्हापुर आदिके भट्टारक ब्रह्मचारी सब

२४ व २५ आर्यिकाएं मेलेमें उपस्थित थीं। सेठजीको डेरेसे गाजे बाजेके साथ मंडपमें ले गए। दौर्बल्य जिनदास शास्त्रीने मंगलाचरण किया। सेठ अनन्तराजैय्याने स्वागतका भाषण कनड़ीमें पढ़ा जिसका हिन्दी उल्था बाबू जुगमन्दिरलालने सुनाया। सभामें दोनों भाषाओंमें हरएक काम होता था। हिन्दीको सिवाय इधरके ग्रामवासियोंके और सब समझते थे उनके लिये कनड़ीकी जरूरत होती थी। आपके भाषणमें यह कहा गया कि "श्री बाहुबलीकी प्रतिबिम्ब बहुत प्राचीन है। राजा रामचंद्र और रावणने भी इनकी पूजन की थी। **चामुंडराय**के पीछे मैसूरके महाराजा यहांके जीर्णोद्धार करानेवाले हुए हैं। यह श्वेत सरोवर मैसूर महाराजसे बनवाया गया है।" जी० के० पद्मराजैय्याके प्रस्ताव व बाबू किरोड़ीचंद आरा व हीराचंद नेमचंदके समर्थनसे सेठजीने श्री महावीर स्वामीकी जयध्वनिके मध्यमें प्रमुखके आसनको ग्रहण किया। और अपना भाषण हिन्दीमें पढ़ा जिसका कनड़ी उल्था वर्णी नेमीसागरजीने सुनाया। सभापतिजीके अंतिम वाक्य थे—

"बिना स्वार्थ त्याग किये कभी जैन समाजकी उन्नति नहीं हो सकती। विद्वानोंको अपना जीवन और धनाढ्योंको लाखों रुपया विद्याप्रचारमें प्रदान करना चाहिये। खास करके जो व्यापारी बहुत समय तक व्यापार करके धन कमा चुके और अपने पुत्रोंको सामर्थ्यवान बना चुके है तथा जो सर्कारी नौकरी करके पेंशन पाते हैं उन्हें अपना **शेष जीवन** जैनधर्म और जैन **जातिकी उन्नति** तथा **आत्मकल्याण**में विताना चाहिये।"

बैठकोंमें १२ प्रस्ताव पास हुए जिनमें मुख्य ये थे:—

(१) मैसूर प्रांतके २००० **सादर जाति**के घरोंको जो

धर्ममें अब शिथिल हैं धर्ममें स्थिर करनेके लिये ११ महाशयोंकी कमेटी बनी। (२) श्रवण बेलगोलामें एक छात्राश्रम खोला जावे व कोल्हापुर, हुबली और मंगलौरके छात्रालयोंकी मदद की जावे। वहांके छात्राश्रमके लिये एक कमेटी बनी। (३) धर्मादेका सदुपयोग हो। (४) मैसूर दिगम्बर जैन प्रांतिक सभा स्थापित की गई। (५) विरासतके कानून ठीक करानेके लिये कमेटी बनी। यही मलावार प्रान्तमें जारी आलिया संतानके कानूनको भी ठीक करे जिससे पुत्र जायदादका मालिक न होकर भानजा होता है नहीं तो माल सरकारमें ज़ब्त हो जाता है। (६) श्री बाहुबलि स्वामीकी मूर्तिकी रक्षाके लिये एक फंड स्थापित हो इसमें महा मस्तकाभिषेक सम्बन्धी आमदनी शामिल हो। इसकी व्यवस्था एक कमेटी करे तथा यही इस तीर्थके सुप्रबन्धको भी करे।

इस कमेटीके अध्यक्ष—पंडिताचार्य भट्टारक श्रवण बेलगोला व मंत्री जी० के० पद्मराजैय्या बेलगोला हुए। ता० २७ मार्चको श्रवण बेलगोला छात्राश्रमके लिये ८७५०) व कोल्हापुर आदि ३ बोर्डिंगके लिये २२००)का चंदा हुआ। इनमें दानवीर सेठ माणिकचंदने दोनों फंडमें ५०१), ५०१) प्रदान किये। ता० २९के दिन श्री बाहुबलि स्वामीकी प्रतिमाजीपर क्रमशः कलसोंके न्हवंनकी बोली हुई। जो पहली बोली ले वह पहला कलश चढ़ावे ऐसा सेठ माणिकचंदजीने ठहराव किया। आज तक यहां कभी ऐसा हुआ नहीं था। सेठजीने इस भव्य मूर्तिके रक्षार्थ एक भारी चंदा हो जाय इस निमित्त सबको राजी करके यह रीति निकाली। यद्यपि यहांके उपाध्याय इस बातसे कुछ विरुद्ध भी रहे, पर सेठजीकी बातको

खंडन करनेका किसीका हौंसला नहीं पड़ता था। १ हजार रुपयेके ऊपरकी बोलिके ७ कलश हुए जो यहां इस बातके जाननेको दिये जाते हैं कि लोगोंमें अभिषेक करनेका कितना उत्साह था।

नं० कलश	
१–जल–सेठ विनोदीराम बालचंद झालरापाटन।	५१०१)
२–दूध–सेठ ओंकारजी कस्तूरचंद ईन्दौर।	३१०१)
३–दही–सेठ नंदराम लक्ष्मणलाल पांड्या बम्बई।	१५०१)
४–घृत–सेठ दौलतराम कुन्दनलाल बूंदीवाला ,,	११०१)
५-इक्षुरस–सेठ जीवनराम लूणकरणजी पांड्या झालरापाटन	१५०१)
६-सर्वौषधि–सेठ ओंकारजी कस्तुरचंद इन्दौर	३००१)
७-ईशानकोण-बाबू रामलाल पन्नालाल धर्मपुरी	११०१)

कुल २०० कलशोंकी बोली हुई–४०१)से लेकर १०)तक २५००२) की बोली हुई। यह सर्व सेठजीके उद्योगका फल था।

इसी दिन सभामें जब कलशोंकी बोलियां हो रहीं थी महाराज मैसूरके **कौन्सलर व डिप्टी कमिश्नर** आदि सभामें पधारे। बाबू अजितप्रसादजीने इंग्रेजीमें मैसूर राज्यका धन्यवाद माना तब कौन्सलर साहबने कहा कि–

"मैसूर गवर्नमेन्टको यह देखकर परम अभिमान होता है कि उसके प्रान्तमें जैनियोंका एक ऐसा उत्कृष्ट तीर्थस्थान है जहां पर जैनी आकर अपना आत्मकल्याण और धर्मोन्नतिका विचार करते हैं। मैसूर महाराजको जैनजाति अति प्रिय है। **मैसूर सरकार यह जानती है कि यह जैन जाति दानवीर, उदार, दयामय और सहनशील है।**

चैत्र वदी ५ ता० ३० मार्चको मस्तकाभिषेकका दिन था। कई सौ रुपया खर्चकर प्रवीण कारीगर द्वारा सीढ़ी ऊपर जानेको बनाई गई थी जिसपर खड़े होकर मस्तक पर धारा डाली जावे। तीन बजेसे अभिषेक प्रारंभ हुआ। जिस जिसका जो कलश था वह नम्बरवार ऊपर जाकर चढ़ाता था। दर्शक लोग चारों ओर खड़े बैठे थे। पहले ही सेठ माणिकचंद पाटनवालोंने जल कलशकी धारा दी। वह धारा प्रभुके मस्तक परसे नीचे पग तक आती हुई महा शोभाको विस्तारती थी। फिर सेठ कस्तूरचंदने दूधका बड़ा बड़ा लेकर धारा छोड़ी। दूधके कई घड़े छोड़ने पर वह प्रतिमा श्वेतवर्ण निर्मल प्रति भासती हुई उस समय दर्शकोंको जो आनन्द आया वह कथनसे बाहर है। प्रतिमाजीका दर्शन कोसोंसे होता था। बस देखनेवाले दूर २ बैठे हुए अभिषेकका आनन्द ले रहे थे—भीड़ बहुत बड़ी थी—सेठ माणिकचंद और नवलचंद दोनों हरएक प्रबन्धमें लवलीन थे कि सानन्द अभिषेक हो जाय। रात्रिके २ बजे तक अभिषेकका कार्य पूर्ण हुआ। यह अभिषेक २१ वर्षके पीछे हुआ था।

दूसरे दिन सेठजीने पर्वतोंपर क्या २ मरम्मत व सुधारकी जरूरत है सो वहांके लोगोंको दिखाई और कहा कि हम मिस्त्री भेजेंगे, आप सर्व ठीक करालेवें व इस फंडसे तीर्थकी उन्नति करें। अब यहांसे सेठजी बम्बई लौट गए। ब्र० शीतलप्रसादजी, बाबू किरोड़ीचंद आदि आरावालोंके संघके साथ मूड़विद्रीकी यात्राको चले गए। वहां श्री जयधवल महा धवलादि ग्रंथोंके दर्शन भी किये व उनकी बालबोध लिपिको पढ़कर भी आनन्द लिया। बाबू जुगमन्दिरलाल
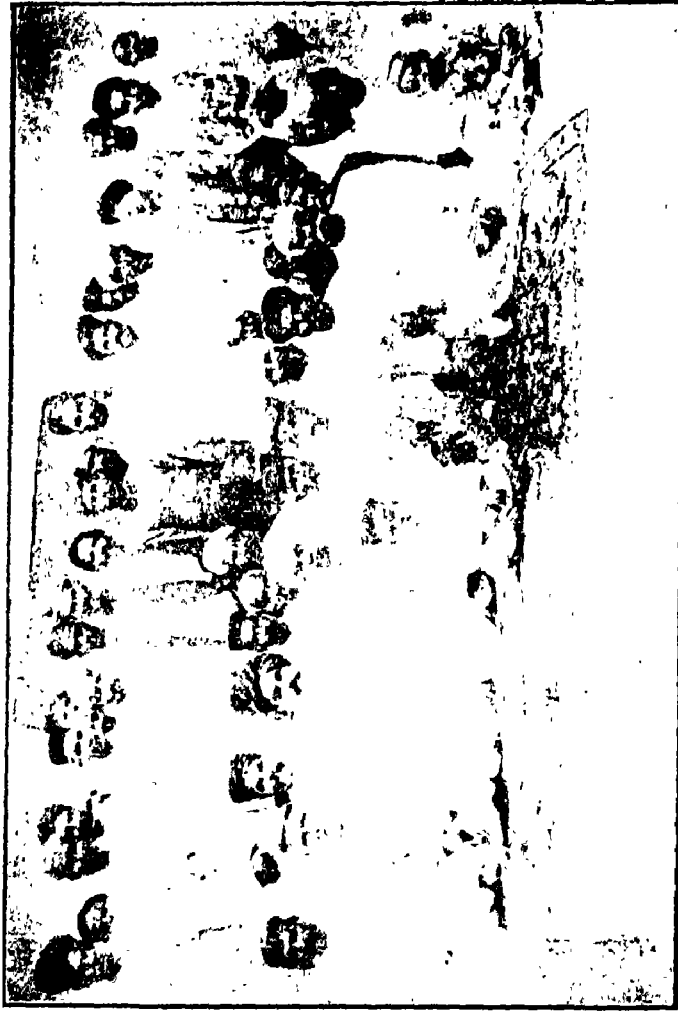
(देखो पृष्ठ ६६१) जैन शिक्षाप्रचारक समिति जयपुरकी तरफसे सेठजीको मानपत्र.

श्री गोमटेशकी पूजासे महा आनन्द लाभ लेकर अपने देश सहारनपुरको रवाना हुए।

भारतवर्षीय दि० जैन महिला परिषद्। यहां श्रीमती कंकुबाई व मगनबाईजी पार्वतीबाईके व आरा निवासिनी चंदाबाईजीके परिश्रमसे स्त्रियोंमें भी बहुत उपदेश हुआ। ता: ३१ मार्चकी रात्रिको महासभाके मंडपमें भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद्की बैठक बड़े ठाटसे हुई। सेठ हीराचंद नेमचंद्की धर्मपत्नी सौ० सखुबाईने अध्यक्षस्थान धारण किया। अनेक प्रकार उपदेश हुए। यहां कन्याशालाकी आवश्यकता बताकर उसके लिये ५००)का चंदा हुआ।

सेठजीकी पुत्री तारामतीका विवाह सूरतमें शा. कीकाभाई किसनदासका पुत्र कीकाभाई (गुलाबशाह) अनुमान २० वर्षका व्यापार कुशल व साधारण सौम्य प्रकृतिका था। उसीके साथ सेठजीने अपनी तृतीय पुत्री तारामतीका शुभ लग्न मिती वैशाख सुदी १० के दिन जैन पद्धति अनुसार कर दिया। इस समय ताराकी उम्र १४ वर्षकी थी। छोटालाल छेलाभाई अंकलेश्वर वालेने जैन विधि कराई थी। इस विवाहमें दोनों ओर वेश्या नृत्य नहीं हुआ। केवल साधारण गीतोंके दो जलसे हुए थे। स्त्रियोंने खोटे गीत बिलकुल नहीं गाए तथा सर्व मिठाई स्वदेशी खांड़की बनी। सेठजीने १०००) रु. के करीब खर्च कर बम्बई प्रसिद्ध चित्रकारसे पापकर्म और उसके फल-नर्कके कष्ट इनको दिखानेवाले चित्र तैयार कराकराके कविता सहित 'नर्कदुःखचित्रादर्श' पुस्तक छपवाली थी। इस अवसर पर सेठजीने

यह पुस्तक तथा एक गीतावली अपनी बिरादरीमें बांटी व खास २ व्यक्तियोंको दी। भाजी बाटनेकी अपेक्षा पुस्तकोंकी भेट बहुत लाभदायक है तथा फूलकुंवर कन्याशालाकी बालिकाओंको इनाम वितरण करनेकी सभा चंदावाड़ीमें बैशाख सुदी १३को सेठ तुलसीदास त्रिभुवनदासके प्रमुखत्वमें करके इनाम बटवाया तथा तारामतीके लग्नके हर्षमें ५००) कन्याशालाको भेट किया। तथा स्याद्वाद पाठशाला आदि संस्थाओंको दस २के हिसाबसे ११०) रु. का दान किया। इस प्रसंग पर सेठ नवलचंद हीराचंदजीके पुत्र रत्नचंदकी सगाई सूरतमें ही पक्की हुई जिसके हर्षमें लघु अभिषेककी पुस्तक वितरण की। पुस्तकोंकी भेट सर्व भेटोंसे श्रेष्ठ भेट है।

जेठसे भादों तक सेठजी शांतिसे बम्बई रहकर यथा साध्य धर्म साधन करते रहे व तीर्थक्षेत्र कमेटीके कार्योंमें विशेष लक्ष्य दिया।

शिखरजीकी फिर चिंता।

शिखरजी पर्वतके पट्टेपर देनेकी स्वीकारता बंगाल गवर्नमेन्टने कर दी थी व ५००००) जमा भी करा दिये थे। डिप्टी कमिश्नर हजारीबागकी आज्ञासे पहाड़की माप आदि होने लगी इसीमें बहुतसा समय बीता। पक्की लिखा पढ़ी हो नहीं पाई थी कि यकायक गवर्नमेन्ट बंगालके सेक्रेटरी डब्लू. आर. गोरलेका पत्र नं० १३८० टी. आर. ता: ६ सितम्बर १९१० का मार्गन एंड कम्पनीके नाम आया जो दिगम्बरियोंकी तरफसे सोलिसिटर नियत थे, जिसका आशय यह था कि श्वेताम्बरी सम्प्रदायके हकको ज्यादा पसन्दगी देकर जो पट्टा ता० २६ नवम्बर १९०८को हुआ था उसे भारत सर्कार न्याय रूप नहीं समझती

इससे वह रद्द हो गया, रुपया ९००००) ४) फी सदी ब्याजसे लौटा दिया जावे।

इस पत्रको सुनकर सेठजीको आश्चर्यके साथ बड़ा शोक हुआ और यही खयाल आया कि यह कार्रवाई अवश्य श्वेताम्बरियोंके खास प्रयत्नका फल है। यद्यपि पट्टा दिगम्बरियोंको मिलनेसे श्वेताम्बर समाजके पर्वत सम्बन्धी हकमें किसी प्रकारकी बाधा नहीं थी और इसीलिये पट्टा तय होते वक्त श्वेताम्बरियोंने परवाह नहीं की और दिगम्बरियोंको लेने दिया पर श्वे० भाइयोंको अपनी हानि न होते हुए भी यह बात न रुची और वे अवश्य इसके रद्द करानेकी चेष्टामें लग गए और अन्तमें वे भारत सर्कार द्वारा कृतकार्य हुए। तब सेठजीने धैर्य प्रकट कर सर्व बड़े २ स्थानोंमें खबर भिजवाई और कमेटीके ओरसे ता० १९ सितम्बरको भारत सर्कारको तार भेजा कि दिगम्बरी लोगोंका पर्वत पर हक श्वेताम्बरियोंसे अधिक है तथा छोटे लाटका फैसला आखरी है अतएव पहला बन्दोबस्त रद्द न किया जाय। ऐसे ही तार कलकत्ता, खुरई, फीरोजपुर, मुजफ्फरनगर, झालरापाटन आदिसे भी गए व बम्बई सभाने भी तार किया था, इस तारका जवाब भारत सर्कारके उपमंत्री बौसन साहबने दिया कि आपकी प्रार्थनाको बंगाल सर्कारके पास कार्रवाईके लिये भेज दिया है। तब दिहलीमें भारतके मुखिया भाइयोंकी एक सभा करनेका निश्चय ता० २६-१०-१० के रोज किया गया इसके लिये सेठजीने सर्व स्थानोंमें सूचनाएं भेज दीं और आप बम्बईसे अहमदाबाद होते हुए रवाना हुए।

शोकसागरमें सेठजी।

अहमदाबादके सेठ प्रेमचन्द मोतीचन्द दिगम्बर जैन बोर्डिंग

अहमदाबाद बोर्डिङ्ग-का वार्षिकोत्सव।

स्कूलका ८ वां वार्षिक उत्सव आसौज सुदी १३ ता० १६ अक्टूबरको सबेरे रमणभाई महिपतराम नीलकंठ बी० ए० एलएल० बी०के सभापतित्वमें हुआ। सेठ माणिकचन्दजी आ गए थे। आप ही ने प्रमुखकी प्रस्तावना की थी। लल्लुभाई लक्ष्मीचन्द चौकसीने रिपोर्ट सुनाई इसमें कहा कि दिगम्बर जैन मुम्बई परीक्षालयमें २२ विद्यार्थियोंने परीक्षा दी थी, २० पास हुए हैं व इस बोर्डिंगकी कमेटी तरफसे प्रगट होनेवाले **"दिगम्बर जैन"** पत्रने बहुत कुछ जागृति जैन समाजमें फैलाई है इससे श्रीयुत मूलचंद किसनदास कापड़िया धन्यवादके पात्र हैं। फिर नानचंद पूंजाभाई बी० ए० व मूलचन्द किसनदासजी आदिने भाषण कहे। प्रमुखने अपने भाषणमें सेठ माणिकचन्दजीको धन्यवाद देते हुए कहा कि ऐसे बोर्डिंगोसे तुर्त फायदा नहीं मालूम होता है लेकिन २५ वर्ष पीछे एक आश्चर्यकारक फायदा आप देख सकेंगे। मैंने इसी मकानमें इंग्रेजी पहली पुस्तक पढ़ी थी जहां मैं अब प्रमुख हुआ हूँ।

श्राविकाश्रमका वार्षिकोत्सव।

दोपहरको अहमदाबाद श्राविकाश्रमका प्रथम वार्षिकोत्सव उक्त प्रमुखकी पत्नी सौभाग्यवती विद्यागौरी बी० ए०के सभापतित्वमें बहुत धूमसे हुआ। रिपोर्टके सुनाने बाद जीवकोरबाई आदिके भाषण हुए। परीक्षामें १५ में १४ पास हुई थीं। उनको इनाम दिया गया। शा० हरजीवन रायचंदने

भक्तामरस्तोत्र बांटे। सेठ माणिकचन्दजीकी तरफसे एक स्त्रीको सोनेके रंगकी १ पेन्सिल भेट की गई। फिर मदद फंडके लिये कहते ही ४८४) रु० भर गए जिसमें हरगोविंददास प्रभुदास करमसदने १०१) व हरजीवन लालचंद बडौधाने १०१) दिये। प्रमुखके भाषणके पीछे श्रीमती मगनबाईने सर्वका आभार माना। रात्रिको सेठजीके सभापतित्वमें सभा हुई जिसमें सेठजीने प्रगट किया कि हमारी भावज रूपाबाईने बोर्डिंगके स्थानमें धर्मशालाके लिये दो कमरे बनवानेकी इच्छा दर्शाई है। सेठजीने यहां बहरे गूंगोंकी शाला देखी कि उन्हे कैसे शिक्षण दिया जाता है।

अजमेरमें सेठजी और सभा।

सेठजी मूलचंद किसनदास कापड़ियाके साथ ता० १८ अक्टूबरको अजमेर पहुंचे। सेठ नेमीचन्दजीने बहुत सत्कार किया। रात्रिको जैनमंदिरमें सभा हुई और १९ प्रतिनिधि दिल्लीके लिये चुने गए।

जैपुरमें प्रवास व सेठजीको मानपत्र।

ता. २० को जैपुर आए। स्टेशनपर १०० भाई हाजिर थे। सेठ बालमुकुन्द बजकी हवेलीमें उतरे। यहां पर ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद चातुर्मासके प्रारंभसे ठहरे हुए थे। ठोलियोंके मंदिरमें तेरहद्वीप विधान पूजा बहुत ठाठसे हो रही थी। रात्रिको भजन व कीर्तन होते थे। ता. २१ की दोपहरको **वर्द्धमान जैन विद्यालयमें** जिसको **पं० अर्जुनलाल सेठीने** अपने खास प्रयत्नसे स्थापित किया था जैन शिक्षा प्रचारक समितिकी तरफसे ठाकुर कुंवर भोजराजसिंहके प्रमुखत्वमें एक **मानपत्र** अर्पण किया गया। **सेठजीने उत्तरमें कहा कि—**

"मैंने कुछ नहीं किया है। मेरे समान औरोंकी भी तारीफ होय तो मैं बहुत खुशी होऊं । जैपुरमें ५००० घरोंमेंसे १८०० रह गए इसका कारण कुरीतियोंका प्रचार मालूम होता है। इस कलंकसे जैपुरको दूर करो ।"

ब्र० शीतलप्रसादजीने मरण पीछे जीमनके खर्चको घटानेको कहा। सेठजीने समितिको १०१) प्रदान किया अन्तमें। सभाका फोटू लिया गया जो अन्यत्र मुद्रित है । रात्रिको ठोलियोंके मंदिरमें बड़ी उपदेशक सभा हुई जिसमें ब्र० शीतलप्रसाद, अर्जुनलाल सेठी व मूलचंदजीके भाषणोंके पीछे सेठजीने विद्यापर बहुत बहुत उत्तेजना दी । ता. २२ को मुख्य भाइयोंकी सभासे २० प्रतिनिधि दिल्लीके लिये चुने गए। ता. २३ को सांगानेरके अद्भुत जिन मंदिरोंके दर्शन किये। दो पहरको ब्र० शीतलप्रसादजीके साथ २५ वर्षसे स्थापित जैन महा पाठशालाका निरीक्षण किया। पाठशालामें एक सभा हुई। सेठजीको मानपत्र दिया गया। **सेठजीने कहा** कि जैपुर जो एक वर्षके लिये भी जीमनोंको बंद करके उस रुपयेको महा पाठशालामें देदे तो एक मोटा फंड हो जावे। आपने १०१) पाठशालामें दिये। फिर समितिके बोर्डिंग व दफ्तरको देखकर इसी रात्रिको चल ता. २४को **दिल्ली** आए।

देहलीमें शिखरजी विषयक सभा।

ता. २६ अक्टूबरको लक्ष्मीनारायणकी धर्मशालामें सभा हुई। २०० भाई हजारीबाग, कलकत्ता, इन्दौर, लखनउ आदि स्थानोंसे आए थे। सब १००० दि. जैनी जमा थे। सेठ माणेकचंदजीके प्रस्ताव व रा० ब० घमंडीलालजीके समर्थनसे **लाला ईश्वरीप्रसादजी** रईस म्यूनिसिपल कमि-

अर व गव० ट्रेज़रर दिल्ली सभापति व बाबू धन्नूलाल अटार्नी उपसभापति हुए। बहुत विचारके बाद सेठ माणिकचंदजीके प्रस्ताव करने व बाबू धन्नूलाल और अर्जुनलाल बी. ए. के समर्थनसे यह प्रस्ताव हुआ कि–

दिगम्बरियोंको पैरवीका कोई समय न दिया जाकर पट्टा रद्द किया गया इससे यह सभा क्षोभ प्रगट करती है तथा पुनः विचारके लिये निवेदन करती है। इसकी नकल तार द्वारा भारत सर्कारको भेजी गई। फिर सेठ हुकमचंदजीके प्रस्ताव व बा० सुलतानसिंह मेरठके समर्थनसे बड़े लाटको मेमोरियल भेजना निश्चय हुआ। इसकी एक सब कमेटी बनी। तीसरा प्रस्ताव डेप्युटेशन भेजे जानेका हुआ। व तीर्थक्षेत्र कमेटीको पत्रव्यवहारकी सत्ता दी गई। यहांसे ता० २७ को चलकर ता० २९को सेठजी बम्बई आ गए।

श्रीमती मगनबाईजी-की यात्रा।

अहमदाबादसे श्राविकाश्रमका प्रचार करनेके लिये श्रीमती मगनबाई और ललिताबाई ता० २६ अक्टूबरको चलकर अजमेर आए। रात्रिको सभा करके मिथ्यात्वका त्याग कराया। ता० २८ मीको **जैपुर** गए। यहां पर कई सभाएं करके स्त्रीशिक्षाका प्रचार किया।

नं० १–ता० २९–१०–१०को पाटोदी मंदिरमें "स्त्रियोंका अज्ञान कैसे मिटे" इस विषयपर।

२–ता० १–११–१०को महावीर स्वामी मंदिरमें "ज्ञानकी महिमा" के ऊपर।

३–ता० २–११–१०को शास्त्र सभाद्वारा नियमादि दिलाए

व सरस्वती कन्याशाला देखी जो समितिके आधीन चलती थी। इसमें अनुभवके साथ ज्ञान दिया जाता था।

ता० ३-११-१०को सांगानेरमें जाकर दर्शन किये व उपदेश दिया।

ता० ४-११को आमेरमें जाकर प्राचीन मंदिरोंके दर्शन किये, पूजन की।

ता० ६को सार्वजनिक खास सभा करके शीलव्रतकी महिमा कही। अनुमान २००ने नियम लिया। ता० ७ को रत्नत्रय धर्म पर व्याख्यान दिया।

ता० १२ को दारोगाजीके मंदिरमें सभा हुई। आश्रमके लिये २३०)का फंड हुआ। समितिके आधीन तीन कन्याशाला व बोर्डिंगके छात्रोंको मिठाई बांटी व इनामके लिये २५) दिये।

इन बाइयोंके उपदेशसे जैपुरकी स्त्रीसमाज **स्त्रिशिक्षा**में जो कुछ बुराई समझती थी उसे दूर कर कन्याओंके पढ़ानेमें रुचि करनेवाली हुई व पढ़नेकी निन्दा त्यागती हुई।

वास्तवमें जैसे सेठजी बालकोंके उद्धारमें कमर कसे हुए थे ऐसे ही उनके यशको विस्तृत करनेवाली उनकी सुपुत्री मगनबाईजी स्त्री समाजके उद्धारमें दृढ़ प्रयत्नशील थीं।

बारामतीमें सेठजी।

इस वर्ष ऐलक पन्नालालजीने अपना चातुर्मास शोलापुरमें किया था। वहांसे त्यागीजी मगसर वदी २ को बारामती पहुंचे। सेठ माणिकचन्दजी बम्बईसे और श्रीमती मगनबाईजी सीधी जैपुरसे यहां आगई थीं। मगसर वदी ४ को त्यागीजीका केशलोंच हुआ। इस अवसरपर सेठ हीराचन्द

नेमचंदने 'दान' पर व्याख्यान दिया, उसी समय ३०००) का फंड बारामती पाठशालाके लिये हुआ। १००००) का पहले था। इसका नाम "ऐलक पन्नालालजी पाठशाला रक्खा गया। अर्जुनलाल सेठी भी आये थे। समितिके लिये ७००) का व अहमदाबाद श्राविकाश्रमके लिये १२५) का चंदा हुआ। यहांसे सेठजी

नातेपूतेमें इनाम बांटा।

नातेपूते गए। वहां मगसर वदी ८ को पाठशालाकी परीक्षा लेकर इनाम बांटा। यहांसे आप दहीगाम आए। २ वर्ष हुए तब ब्र० शीतलप्रसादजीके साथ यहां हो गए थे। उस वक्त हूंमड़ ज्ञाति सुधारक कमेटी नियत हुई थी। उसके मंत्री बापूभाई पानाचंदने २ वर्षकी रिपोर्ट सुनाई जिससे मालूम हुआ कि १० वर्षसे नीचे लड़कीकी सगाई न करना ऐसी प्रतिज्ञा जिन्होंने लीथी उन्होंने अच्छी तरह पाली। जिन्होंने सही नहीं भी की थी उन्होंने पाली। तथा जिन्होंने कन्याविक्रय न करनेकी प्रतिज्ञा ली थी वे भी दृढ़ रहे। सेठजीको इससे बहुत संतोष हुआ। सभामें कितनेक भाईयोंके मुंहसे सेठजीने सुना कि जो ५ वर्ष तक ऐसा ही नियम चला तो कन्याविक्रय आपसे आप बंद हो जायगा। इस अवसरपर सेठजीने मराठीमें कुरीति निवारण पर भाषण भी कहा। सेठजी मराठी, गुजराती, हिंदी तीनों भाषाएं अच्छी तरह बोल लेते थे।

कार्कलमें सेठ नवलचंदजीका दान।

सेठ नवलचंदजी जब गोमटस्वामीके मस्तकाभिषेक पर मूड़विद्रीकी तरफ गए थे तब आप कार्कल भी पधारे। वहां पर संस्कृत पाठशाला तो चल रही थी पर परदेशी छात्रोंके लिये बोर्डिङ्गकी बड़ी आवश्यकता थी। तब उस समय वहां सेठ ओंकारजी कस्तूरचंदजी भी थे। सेठ नवलचंद-

प्रेरणासे ४०१) कस्तूरचंदजीने, २९१) सेठ हीराचंद गुमानजी व ९१) तीर्थभक्त स्वर्गवासी सेठ चुन्नीलालकी धर्मपत्नी जड़ावबाईने दिये थे। वास्तवमें सेठजीका घरानाभर ही उदारचित्त धारी है।

महाराज सीकरको हीराबागमें मानपत्र।

फतहपुर (सीकर) निवासी सेठ गुरुमुखराय सुखानंदकी कोठी बम्बईमें बहुत प्रसिद्ध है। आप दिगम्बर जैन समाजमें अग्रगामी उदारचित्त धर्मप्रेमी सज्जन हैं। किसी कारणवश सीकर महाराज आपसे अति प्रसन्न हुए तब आपसे कहा कि जो कोई हमारे लायक काम हो सो कहो तब दयालुचित्त सेठने अपने स्वार्थको त्यागकर यह अभयदान मांगा कि सीकर, लछमनगढ़, फतहपुर, और रामगढ़में भादों सुदी ५ से १४ तक १० दिन दशलाक्षणी और हर मासकी चौदसको कोई **जीव हिंसा** न हो—कसाईखाने बंद रहें। महाराजने यह स्वीकार करके सेठ सुखानंदजीको पत्र मिती मगसर वदी १३ संवत १९६७ को लिख दिया और राज्यमें घोषणा करनेकी प्रतिज्ञा की। इस दयालुताको देखकर बम्बई दिगम्बर जैन प्रां० सभाने ता० ३ दिसम्बरको हीराबाग लेक्चर हॉलमें श्रीमान् महाराजके सन्मानार्थ सभा की। श्रीयुत् **खेमराज श्रीकृष्णदास** 'वेंकटेश्वर' पत्रके स्वामी, सेठ ओंकारजी कस्तूरचंद आदि ५०० से अधिक भाई सभा भवनमें विराजित थे। श्रीयुत १०८ श्री माधवसिंहजी महाराजकी सवारी मोटर द्वारा ७ बजे रात्रिको पधारी। स्वागतके लिये सेठ माणिकचंदजी आदि कई भाई द्वारपर खड़े थे। उनके साथ पहले आप दफ्तर तीर्थक्षेत्र कमेटीमें आकर बिराजे और सेठ **माणिकचंदजीसे**

धर्मशाला आदिके सम्बन्धमें बहुत वार्त्तालाप की। फिर हॉलमें विराजमान होनेपर मंगलाचरण आदिके पीछे श्रीमान् सेठ **माणिकचंद हीराचंद जे० पी०** और सेठ गुरुमुखराय सुखानन्दजीने दिगम्बर जैन सभाकी ओरसे एक मनोहर कासकेटमें अभिनन्दन पत्र अर्पण किया। इसका उत्तर महाराजकी ओरसे कहा गया कि मैंने जो कुछ किया है इसमें सिर्फ अपना फर्ज अदा किया है।

अलाहाबादमें बोर्डिंग-का निश्चय व सेठजीका गमन।

इस वर्ष अलाहाबादमें बड़े दिनोंमें कांग्रेसका अधिवेशन था तथा प्रदर्शनीकी बड़ी धूम थी। ऐसे अव-सरपर सेठजी भी श्रीमती मगनबाईजीको लेकर प्रयाग आए। ब्र० शीतलप्रसादजी, कुंवर दिग्विजयसिंह, पं० अर्जुनलालजी सेठी, सेठ हुकमचन्दजी, पंडित गणेशप्रसादजी सागर, मुंशी चम्पतरायजी आदि अनेक परदेशी जैनी आए थे। इस वक्त सेठजीके आगमनका उद्देश्य प्रयाग बोर्डिंगका निश्चय करना था। सेठजी और मगनबाईजीने धर्मपत्नी **लाला सुमेर-चंदजीसे** मिलकर अच्छी तरह समझाया कि आप अपनी इस पच्चीस हज़ारकी रकमको अपने पतिके नामसे बोर्डिंग कायम करनेके लिये ही अर्पण करके पुण्य और यशका लाभ लेवैं। ब्र० शीतल-प्रसादजीने भी समझाया कि यह सर्व धर्मका काम है। धार्मिक शिक्षा लेनेसे कॉलेजके छात्रोंका बहुत कल्याण होवेगा। दूसरी तरफ सेठजीने प्रयागके भाईयोंको राज़ी किया कि वे इस काममें मन वचन कायसे मदद देवें। ता० २८ और २९ दिसम्बर १०को

जैनधर्मशालामें दानवीर सेठजीके सभापतित्वमें दो सभाएं हुई जिनमें ब्र० शीतलप्रसादजी और पंडित अर्जुनलाल सेठीके बोर्डिंगकी आवश्यकता पर व्याख्यान हुए। ता० २९की सभामें प्रकट किया गया कि प्रयागनिवासी लाला सुमेरचंदकी धर्मपत्नी "**सुमेरचंद दिगम्बर जैन बोर्डिङ्ग हाउस**" स्थापित करनेके लिये २५०००) पच्चीस हज़ार प्रदान करती हैं। इस बातके सुनते ही सर्व सभाने कोटिशः धन्यवाद दिया। उसी समय १५ महाशयोंकी एक प्रबन्धकारिणी सभा बनाई गई जिसके सभापति दानवीर सेठ माणिकचन्दजी, उपसभापति लाला शिवचरणलालजी, कोषाध्यक्ष लाला मूलचन्दजी, मंत्री बाबू जगमन्दिरलाल, उपमंत्री बाबू बच्चूलाल व धर्मोपदेशक बाबू ऋषभदासजी नियत हुए तथा तय हुआ कि कोई बंगला शीघ्र तलाश कर बोर्डिंग खोलनेका प्रबन्ध किया जायगा। सेठजीने सब बात पक्की कर दी। फिर आप बंगलोंको देखनेके लिये निकले। एक बंगला ठीक भी किया पर उसको खाली होनेसे विलम्ब था।

यहां २ सभाओंमें जैन विद्वानोंके भिन्न २ विषयोंके व्याख्यान हुए तथा सेठजीने प्रदर्शनी और राष्ट्रीय सभाके अधिवेशन भी देखे। जमना तटपर प्रदर्शनीका अद्भुत ठाठ था। यहांपर एक अंग्रेज हवाई विमान लाया था जिसपर लोगोंको बिठाकर आकाशमें दूरतक फिराता था। फिर सुगमतासे उतार लाता था। एक दिन सेठ हुकमचंदजीने १२५) दिये और जहाजपर बैठकर आकाशकी सैर की। प्रयागमें श्रीमती मगनबाईजीने स्त्रियोंको उपदेश दिया व श्राविकाश्रमके लिये १५०) का चंदा किया।

सेठजीका दौरा काशी और जबलपुर।

सेठजी श्रीमती मगनबाईजी और सेठ हरीभाई देवकरणजी-वाले जीवराज बालचंदके साथ काशी ता० १-११-११ को आए। ब्र० शीतल-प्रसादजी भी सेठजीके साथ थे। स्याद्वाद महाविद्यालयका प्रबन्ध संतोषजनक पाया। दिहलीके बाबू नंदकिशोरजी ३ मास पहलेसे आकर प्रबन्धकी देखभाल रखते हुए यहां विद्याध्ययन करते थे। प्रबन्धसे प्रसन्न हो जीवराजने २५०) प्रदान किये तथा सेठ कल्याणमल इन्दौर ने प्रयागसे १००) की सहायताका वचन सेठजीको दिया था।

जबलपुर बोर्डिंगको २००००) नकद और एक बंगला-का दान।

यहांसे सेठजी जबलपुर आए। इस समय सिंघई नारायणदा-सजी बीमार थे। शरीर बहुत अस्वस्थ था। सेठजीने लक्ष्मीका उपयोग बोर्डिङ्गके निमित करनेके लिये उपदेश दिया उसी समय आपने एक बंगला जिसकी आमद करीब १५०)के मासिक है तथा २००००) नकद बोर्डिंग और धर्मशाला बांधनेको निकाल दिये जिसका प्रबन्ध सेठजी व अन्य चार जबलपुरके भाइयोंकी ट्रष्टीमें सौंप दिया। **वार वार उपदेश कभी न कभी अवश्य अपना फल दिखलाता है।** सिंघई नारायणदासजीसे जब कभी सेठजी मिलते थे **लक्ष्मीके सदुप-योगका उपदेश** दिया करते थे।

पावागढ़में बम्बई दि. जैन प्रा० सभा और मगनबाईजीका उद्योग।

पावागढ़ सिद्धक्षेत्रके पर्वतपर कई जिन मंदिर जीर्ण पड़े हुए हैं इनमेंसे एक मंदिरका जीर्णोद्धार सेठ माणिकचंदजीके भानजे सेठ चुन्नीलाल हेमचंद जरीवाले बम्बई और दूसरेका बेड़न निवासी जीवाभाई काशीदासकी विधवा इच्छाबाईने कराया। तथा इसीके साथ बिम्ब प्रतिष्ठाका उत्सव भी किया गया था। माह सुदी ७से ढाईद्वीपका पाठ प्रारंभ हुआ व अंकुरारोपण विधान हुआ। प्रतिष्ठाकारक भट्टारक श्री गुणचंद्रजी थे। इसी अवसर पर बम्बई दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभाका वार्षिक अधिवेशन प्रसिद्ध दानी **नाथारंग**जी गांधीवाले सेठ **रामचंद नाथा**के सभापतित्वमें हुआ। स्वागतकारिणी सभाके सभापति सेठ चुन्नीलाल हेमचंद थे। जलसा बहुत सफलतासे हुआ। श्री शिखरजी सम्बन्धी प्रस्ताव पास हुआ। **पंडित गोपालदासजीको 'स्याद्वादवारिधि'** का पद प्रदान किया गया तथा तीर्थके प्रबन्धके लिये एक कमेटी बनी जिसके सभापति सेठ चुन्नीलाल व कोषाध्यक्ष व मंत्री लालचंद कहानदास भड़ौंचा हुए। इस सभाके अवसर पर सेठ माणिकचंदजी दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाके अधिवेशनपर सांगली गए हुए थे इससे वे जल्सेमें नहीं आ सके थे। उनकी सुपुत्री श्रीमती मगनबाईजी आई थीं जिन्होके उद्योगसे माह सुदी ११ ता० १०-२-११की रात्रिको चुन्नीलाल हेमचंदकी धर्मपत्नी नंदकोरबाईके सभापतित्वमें

सभा हुई। १५०० स्त्रियां थी। श्राविकाश्रमकी बाईयोंने उपदेश दिया। अहमदाबाद श्राविकाश्रमके लिये ३६०) का चंदा हुआ जिसमें प्रमुखाने १००) दिये। दूसरी स्त्रीसभा माह सुदी १२ को प्रतिष्ठा मंडपमें हुई। इसमें १००० स्त्रियां थीं। मगनबाईजीने स्त्री-धर्म और आचारपर व्याख्यान दिया जिसका अच्छा प्रभाव पड़ा। प्रान्तिक सभाके उपदेशक फंडके लिये २५००)रु.का चंदा हुआ। पर्वत पर कलश स्थापनादिकी उपज ३२००)की हुई। बाबू माणिकचंदजी बैनाड़ा प्रान्तिक सभाके महामंत्री और सेठ माणिकचंद पानाचंद जौहरी कोषाध्यक्ष नियत हुए। त्यागी ऐलक पन्नालालजीके पधारनेसे बहुत ही प्रभावना हुई। ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी भी आगए थे। पं० अर्जुनलाल सेठी बी० ए० व सेठ नवलचंद हीराचंदजी भी आए थे। समिति जयपुरके लिये ३००) की उपज हुई। भंडारमें कुल आमद ७०००) हुई। जन संख्या ६००० थी। सेठ मूलचंद किसनदास कापड़िया संपादक "दिगम्बर जैन" ने इस महोत्सवके लिये बहुत परिश्रम उठाया था। सेठ माणिकचंदजीने सांगलीसे सहानुभूति सूचक तार व सभापतिपदसे स्तीफा भेजा। सभाने स्तीफा अस्वीकार किया और सेठजी जैसे इस सभाकी रक्षा अब तक करते रहे हैं वैसे करते रहें ऐसी सर्व सभाने इच्छा प्रकट की।

सांगलीमें द० म० जैन सभा और सेठजी।

बेलगांवके निकट सांगली एक राज है। यहां माघ सुदी ७ ता० ५ फर्वरीसे ११से माघ सुदी १२ ता० १० फर्वरी तक बिम्ब प्रतिष्ठा व रथोत्सव था। तथा इसी अवसर पर दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका तेरहवां वार्षिक अधिवेशन था। इस उत्सवमें हमारे प्रसिद्ध दानवीर सेठ माणिचंदजी पधारे थे। सभापति **सेठ हीराचंद**

अमीचंद शाह शोलापुर हुए थे। इसके साथ सेठ हीराचंद नेमचंदजी भी आए थे। पं० अर्जुनलालजी सेठी भी मौजूद थे। कुल २६ प्रस्ताव पास हुए इसमें मुख्य २ प्रस्ताव ये थे—

(१) बादशाह सातवे एडवर्डकी मृत्यु पर शोक, (२) बादशाह पंचम जोर्जके सिंहासनारूढ़ होने पर अभिनंदन, (३) जीवहिंसा बन्द की जाय। कई रजवाड़ोंने हिंसा कम की है, बादशाह जार्ज भी दयाका विस्तार करें। इस प्रस्तावको **सेठ माणिकचंदजीने** प्रस्तावित किया था (४) सभाके शिक्षण सम्बन्धी फंड वसूल करनेको डेपुटेशन हुआ जिसमें सेठ **माणिकचंद हीराचंदजी** भी सभासद नियत हुए। सांगली सरकार श्रीमंत आपा साहबने विद्याकी ओर बहुत रुचि दिखलाई। सेठ माणिकचंदजीने यहांके छात्रोंको विद्यासम्पादनार्थ उद्यम करके एक **दिगम्बर जैन बोर्डिंग** कायम करानेका प्रबन्ध कराया जिसमें वहांके निवासियोंने **अपना धर्मादा** देना स्वीकार किया। प्रबन्धार्थ स्थानिक कमेटी बनाई जिसके अध्यक्ष श्री बाबाजीराव शांतप्पा औरबाड़े, मंत्री श्रीयुत बालप्पा चंदप्पा धावते हुए। इस बोर्डिंगको खोलना जून मासमें निश्चय हुआ।

सिंघई नारायणदास-जीका परलोक। जबलपुर दि० जैन बोर्डिंगमें अपना द्रव्य सेठ माणिकचन्दजीकी प्रेरणासे लगाकर सिंघई नारायणदासजी फागुण वदी ८ को अपनी दो पत्नियोंको निःसन्तान छोड़ इस शरीरको त्याग गए। इस समाचारसे सेठजीको कुछ शोक हुआ पर धर्मात्मा सेठजी इस बातमें सन्तोष मानते हुए जो थोड़े ही दिन

सेठजीके पुत्र चिरंजीव जीवनचंद.

J. V. P. Surat.

(देखो पृष्ठ ६३२)

पहले सेठजीकी मुलाकातसे उन्होंने २००००) बोर्डिंगका मकान बनाने व एक बंगला खर्च चलानेको अर्पण कर दिया था।

पंजाब दिगम्बर जैन बोर्डिंगका वार्षिकोत्सव।

सेठ माणिकचन्दजीके पत्रव्यवहारकी प्रेरणासे पंजाब दिगम्बर जैन बोर्डिंगका वार्षिकोत्सव ता० २६ फर्वरी ११को हुआ। सेठजीने ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीको भेज दिया था, आप अति दूरीके कारण नहीं जा सके। यह बोर्डिंग १४) मासिकके किराये पर एक मकानमें स्थापित था। इसीके हातेमें दिनको ११ बजेसे लाला रामानंद रईस फीरोज़पुर शहरके सभापतित्वमें वार्षिकोत्सव हुआ। रामलालजी मंत्रीने रिपोर्ट पढ़ी, पीछे लाला कूड़ामल छात्रको एक चांदीका तमगा इनाम दिया गया कि उसने १२२) बोर्डिंगके लिये एकत्र किये व महावीरसिंहको धर्मशास्त्र दिये गये क्योंकि उसने ९९) जमा किये थे। **ब्र० शीतलप्रसादजीने** बोर्डिंगसे धर्मकी स्थिरता व चारित्रकी शुद्धता
महिला ऐसा कहकर **दानकी प्रेरणा** की तब उसी समय
सर्व लेवें, (अधिक चंदा हो गया। मंत्री रामलालजीने बोर्डिंग
गरीकी उत्तेज-
शांततासे सर्व का ...के लिये ५००) देनेका प्रण किया। दो दिन
जीकी कार्यकुशल ...नोंका अच्छा आनन्द रहा। आम सभामें अन्य-
श्रीमती मगनबाईजी ...था। सेठजी जल्सेकी सफलता जानकर हर्षित
२९ तक रथोत्सव

भा० दि० जैन महा सभा मुजफ्फरनगरमें।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महा सभाका, जिसके सेठ माणिकचंदजी सभापति थे, १९वां वार्षिकोत्सव मुजफ्फरनगरमें **रायसाहब द्वारकाप्रसादजी** सब इंजीनियर कलकत्ताके सभापतित्वमें सानन्द हुआ। तथा भारत-जैन महामंडलका भी, जिसका पूर्व नाम जैन यंग मेन्स एसोसिएशन था, वार्षिक जल्सा बाबू जुगमन्दिरलाल जैनी एम. ए. बेरिष्टरके सभापतित्वमें हुआ। सेठजी नहीं आसके। **श्रीमंती मगनबाईजी**, चंदाबाईजी, गंगाबाईजी आदि महिलाएँ परिषदके लिये आई थीं। ब्र० शीतलप्रसादजी, व कुंवर दिग्विजयसिंहजी भी आए थे, जिनके व्याख्यानोंका अच्छा प्रभाव पड़ा। **कुंवर दिग्विजयसिंहजी** पहले क्षत्री ठाकुर आर्यसमाजके अनुयायी थे पर पं० पुत्तूलाल इटावाकी संगतिसे जैन धर्मको श्रेष्ठ जान पहले जैनी हुए। अब वे ब्रह्मचारीकी ७ प्रतिमाके नियम पालते हैं। अपने तीन पुत्र व स्त्री होते हुए भी घरसे स्नेह हटा दिया है।

महिला परिषद्का २ रा जल्सा व मगनबाईका उद्योग।

चैत्र सुदी ३ ता. २ अप्रेल १९१२को महासभाके मंडपमें ही भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महि-
...का, जो शिखरजीमें स्था-
दूसरा अधिवेशन बड़े प्रभाव-
स्त्री संख्या थी। शहरकी
महिलाएं भी आई थी
लाला अजितप्रसाद खज़ाञ्चीकी धर्मपत्नीने,
चित्त हैं, सभापतिका आसन ग्रहण

महासभाके जल्से होते हैं—एक प्रस्ताव करता है दूसरा समर्थन करता है इसी तरह यह परिषद भी हुई। प्रस्ताव नं० १ में नियमावली पास हुई। ता० ३ अप्रेलको दानका स्वरूप श्रीमती चंदाबाईने कहा जिससे प्रमुखा चमेलीबाईने २५०) सरस्वती भवन आरा व २५०) महिला परिषदके स्त्रीशिक्षा फंडमें दिये और स्त्रियोंने ६२६॥≈)॥ भेट किये। ४ अप्रेलको करीब ६० पर-देशी बालिकाओंकी परीक्षा लेकर इनाम दिया गया। पुस्तकें व दस्तकारीकी चीजें श्राविकाश्रमकी बनी हुई दी गईं। मुजफ्फरनगरकी कन्याशालाको ५०) मगनबाईजीने स्त्रीशिक्षा फंडसे दिये। फिर ८ प्रस्ताव और पास हुए जिनमें मुख्य दो (१) श्रीमती जानकीबाई-जी पहले ईडरकी कन्याशाला फिर आराकी शालामें अध्यापिका थी, धर्ममें बहुत दृढ़ व परोपकारिणी थीं, उनकी मृत्यु पर शोक तथा उनके स्मरणमें 'गृहस्थ स्त्री धर्मपर' सर्वोत्तम लेख लिखे उसे ९) ७) व ५) का इनाम दिया जाय, (२) श्रीमती मगनबाई एक मासिक पत्र हिन्दी लिपिमें निकालें। इसी प्रस्तावके अनुसार सेठ माणिकचंदजीकी सम्मतिसे अलग पत्र न निकाल २ पेज जैनमित्रमें महिला परिषदके बढ़ाए गए, (३) अहमदाबाद श्राविकाश्रमका लाभ सर्व लेवें, (४) स्त्री समाज देशकी बनी चीजें पहने व देशी कारी-गरीकी उत्तेजना देवें। इस जलसेकी नियमित कार्रवाई देखकर और शांततासे सर्व कार्यका होना जानकर स्त्रियोंकी व खास कर मगनबाई-जीकी कार्यकुशलता पर सबको आश्चर्य होता था। इसके पहले श्रीमती मगनबाईजी करहलके मेलेमें गई थी वहां ता० २४ मार्चसे २९ तक रथोत्सव था। दो दिन स्त्रियोंको उपदेश करनेसे १०

बाईयोंने अपनी पुत्रियोंके बालविवाह न करनेका नियम लिया। तथा ९) मासिक चंदा कन्याशालाके लिये हुआ था।

सेठ माणिकचंदजीको मगनबाईजी पुत्रके समान थीं। जबसे श्राविकाश्रम अहमदाबादमें खोला गया तबसे बाईजीका बम्बईमें जाना क्वचिद् ही होता था इससे सेठजीको धार्मिक कामोंमें सम्मति करनेका बिलकुल मौका न मिलता था। तथा पूर्व सम्बन्ध भी कुछ ऐसा था कि मगनबाईजीके विना बम्बईनिवास सेठजीको फीका लगता था तब आपने यही विचार किया कि श्राविकाश्रमको बम्बई ही में स्थापित किया जाय। एक त्रुटि अहमदाबादमें यह भी थी कि द्रव्यकी मदद भी नहीं होती थी। बम्बईमें परदेशी बहुत आते हैं इससे द्रव्यकी मदद भी हो सकेगी इत्यादि विचार कर सेठजीने अपने जुबली बागके बीचके बंगलेको, जिसका किराया अनुमान ८०) मासिकके आता था खाली कराया तथा कुछ कोठरियां उसके पीछे खाली कराई और निश्चय कर लिया कि वैशाख सुदी ३ वीर सं० २४३७ अक्षय तृतीयाके दिन आश्रम बम्बईमें खोला जावे।

श्राविकाश्रमका बम्बईमें आना।

तारदेवके सेठ हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगमें छात्रोंके दर्शनार्थ एक कोठरीमें चैत्यालय था पर ट्रष्ट फंडमें मंदिरजीके लिये कुछ रकम निकालनेका नियम था इससे कुछ हज़ार रुपये जमा होनेपर एक छोटासा मंदिर बोर्डिंगके हातेमें बनवाया तथा उसका शिखर बनानेको सेठ गुरुमुखराय

बम्बईमें नवीन मंदिरकी प्रतिष्ठा।

सुखानंदजीने ५००) से ऊपर रुपया दिया। मंदिर तैय्यार होनेपर उसकी प्रतिष्ठा श्रीयुत गजपति उपाध्यायने वैशाख वदी १४ ता० २७ अप्रैल ११से वैशाख सुदी ३ ता० १ मई तक की। पहला रथोत्सव पहले दिन दूसरा अंतिम दिनको हुआ। चैत्र वदी १४ की रात्रिकी सभामें **सेठ माणिकचन्दजीने** यह प्रस्ताव मंजूर कराया कि जो कासार, पंचम, सेतवाल आदि बम्बईमें व्यापार व नौकरीके लिये आते हैं उनको भोजनका कष्ट रेहता है इससे एक जैन रसोईघर खोला जाय। वैशाख सुदी १ की सभामें श्रीयुत गजपति उपाध्यायने श्री जयधवल महाधवल ग्रन्थोंके लिखनेमें जो कष्ट पड़े थे उनका वर्णन किया तथा कहा कि अजमेरवाले सेठ नेमीचन्दजीने जयधवलादि ग्रन्थोंकी एक प्रति लेनेको भट्टारकजीको १००००) देने कहे पर ग्रन्थ न दिये गये। सेठ माणिकचंद और हीराचंद नेमचंदका ही प्रयत्न था जिससे उनकी कनड़ी और हिन्दी भाषामें लिपि मेरे द्वारा हो सकी। सं० १९५३से मैंने नकल शुरू की जब तक पहले कनड़ी फिर बालबोध लिपि पूरी करके मैं यहां आया हूँ। एक **राद्धान्त** ग्रन्थ ३००००) श्लोकोंका और नकल होनेके योग्य है।

अक्षयतृतीयाके सबेरे मंदिरजीकी प्रतिष्ठाका कार्य पूर्ण हुआ उस समय अच्छी उपज हुई।

बम्बईमें श्राविकाश्रमका स्थापन।

प्रतिष्ठाके पीछे ही सब स्त्री पुरुष पास ही जुबली बागके बंगलेमें गए। वहां **सेठ हीराचंद नेमचंदजीके** द्वारा आश्रमका मकान विधि सहित खोला गया। रिपोर्ट सुनी गई व आश्रमके लाभार्थ व्याख्यान हुए। अहमदा-

बादमें यह आश्रम आसौज सुदी ११ ता० २९ अक्टूबर १९०९ को स्थापित हुआ था। १॥ वर्ष तक वहां अपना काम निर्विघ्न चलाकर यह बम्बई आया। अब यह बम्बईमें बहुत उन्नति पर है। श्राविकाओंको धर्मका ज्ञान देनेमें शुरूसे अब तक **श्रीमती ललिताबाई** परिश्रमशील हैं। आश्रमकी ओरसे कई श्राविकाएं पूना कर्वेके विधवाश्रममें उच्च शिक्षा ले रही हैं। एक बाई अहमदाबाद ट्रेनिंग कॉलिजमें शिक्षिकाका कम सीख रही हैं। सेठ माणिकचंदजी दूसरे

सेठजीकी श्राविकाश्रम पर महती कृपा।

तीसरे दिन आश्रममें जाकर घंटा दो घंटा सर्व देखते थे व मगनबाईजीको सुप्रबन्धार्थ सम्मति देते व लेते थे। कुछ दिनोंमें आपने ७०) मासिक करीबके कई कमरे और खाली कराके आश्रमके सुपुर्द किये जिसमें छात्राएं खूब अच्छी हवादार जगहमें रहें तथा वहीं एक कोठरीमें चैत्यालय भी कर दिया कि नित्य धार्मिक क्रियाको दूर न जाना पड़े। कोई २ बाईएं नलका पानी नहीं पीती थीं उनके लिये एक कुआं भी खुदवा दिया व बंगलेके आगे व बगलमें खूब वृक्षोंकी बहार व पानीका फंवारा चलने लगा जिससे श्राविकाओंको वृक्ष स्पर्शित सुन्दर स्वास्थ्ययुक्त पवनका लाभ हो। इस समय आश्रम इसी स्थानपर है। खेद है सेठजी यकायक मृत्युवश हुए नहीं तो वे इसको भी चिरस्थाई कर जाते जैसे उनकी आदत थी कि जो काम अपने हाथसे खोलना उसे सदाके लिये पक्का कर देना, जिसमें दीर्घकाल रहकर वह काम अपना लाभ बता सके।

ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम-का स्थापन।

जिस दिन श्राविकाश्रम बम्बई आया उसी दिन हस्तनापुरमें ऐलक पन्नालालजीके करकमलोंसे यह ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम भी खुला जिसके लिये लाला गेंदनलालजीने अपनी १००) मासिककी नौकरी छोड़ी व जिसमें १०००) नकदके सिवाय अपना जीवन अर्पण किया व १ पुत्रको भी दाखल कराया। लाला भगवानदीनजीने भी अपनी स्त्रीको त्यागकर केवल एक छोटे पुत्र और अपनी बहनके पुत्रको आश्रममें दाखल कराकर आश्रमके लिये अपना सर्वस्व दान किया। बाबा भागीरथजीने इसके लिये बहुत प्रयत्न किया। सेठजी इस बातको जानकर बहुत ही हर्षित हुए। शीतलप्रसादजी इस समय हस्तनापुरमें थे।

पाठकोंको यह बात मालूम ही है कि सेठजी प्रवास करनेमें बिलकुल आलसी न थे। जिसदिन किसी भी धर्म कार्यको जाना होता था तुरत ही चल देते थे। हरएक यात्राका खर्च अपने पाससे ही करते थे।

सितारामें जैन मंदिर स्थापनमें सेठजीका प्रयत्न।

ता: १४ मई को आप **सितारा** गए। वहां जैनियोंके १०० घरका सार जातिके हैं पर वहां जिन मंदिर न होनेसे व जैन धर्म क्या है ऐसा न जाननेसे ये लोग कालिका देवीके मंदिर ही में जाते थे जब कि इनके जो सम्बन्धी कोल्हापुर और पूनामें हैं वे जिन मंदिरजी जाते हैं वे भी अपनेको जैन कहते हैं। सेठजीने मराठीमें उपदेश देकर जैन धर्मका व्यवहारिक ज्ञान कराया व जिनेन्द्रबिम्ब दर्शनका

महत्त्व बताया। तब लोगोंने प्रतिमाजीकी स्थापना होनेपर दर्शन करना कबूल किया। सेठजीने चैत्यालयके लिये सूरत व अन्यत्रसे जिनबिम्ब भेजना स्वीकार किया। धन्य सेठजीका धर्म प्रेम व श्रद्धा!

श्रुत पंचमीमें बेलगांव दि० जैन बोर्डिंगका स्थापन व सेठजीका गमन।

जेष्ठ सुदी ५ अर्थात् श्रुत पंचमी वीर सं. २४३७की बहुत नामांकित हुई कि उस दिन ता० १ जून १९११को एक काम तो यह हुआ कि जिसकी कामनाको हृदयमें रखते हुए आरा निवासी बाबू देवकुमारजी स्वर्गधाम पधारे थे अर्थात् ब्रह्मचारी नेमीसागर और बाबू करोड़ीचंद आराके उद्योगसे बहुतसे ताड़पत्रके ग्रंथ एकत्र करके बड़े ठाठसे **जैन सिद्धान्त भवन**की स्थापना हुई जिसमें ब्र० शीतलप्रसादजी भी शरीक हुए थे तथा सेठजीने सहानुभूति प्रदर्शक तार भेजा था। इसी दिन बेलगाममें श्रीयुत धर्मराव सुबेदारके २००००) रु. के दानका कार्य अर्थात् ९० छात्रोंके लायक एक भाड़ेके मकानमें दिगम्बर जैन बोर्डिंगकी स्थापना—का जल्सा हुआ। हमारे सेटजी व अन्य आसपासके भाई पधारे थे। कुंभोत्सव होकर गाजेबाजेसे स्थानपर जाकर सरस्वती पूजन हुई। फिर सेठ हीराचंद नेमचंद शोलापुर सभापति नियत हुए। फिर ए० बी० लट्ठे आदिके भाषण हुए। नियमावली व १७ मेम्बरोंकी कमेटी ठीक की गई। सभापति ए० पी० चौगले वकील व मंत्री वालप्पा मुनप्पा मिरजी हुए। सुबेदार साहबने कहा कि वह रकम ट्रूष्टियोंके सुपुर्द की गई। १४०१) व्याज प्रति वर्ष आवेगा सो एक वर्षका मैं अभी

देता हूं तथा फरनीचर बर्तन आदि अलगसे खरीद दिया गया है। सर्वने दातारको धन्यवाद दिया। सेठजी मानो बोर्डिंगके भक्त थे। इस बोर्डिंगके खुलनेसे आपको बहुत ही आनन्द हुआ।

सांगली दिगम्बरजैन बोर्डिंगका स्थापन व सेठजीका १०१) का दान।

सांगलीके गत उत्सवके समय सांगलीके भाईयोंने अपनी पंचायती धर्मादेकी रकमसे दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्थापनका विचार परमोपकारी सेठ माणिकचन्दजीके उपदेशसे किया था, उसीके स्थापनका महूर्त जेठ सुदी १२ वीर सं० २४३७ ता० ८ जून १९११को प्रातःकाल बड़े ठाठवाटसे परमोपकारी **दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणकचंदजी जे० पी०** के द्वारा हुआ। कुंभ स्थापन व सरस्वती पूजनके बाद ही सेठजीकी प्रमुखतामें सभा हुई। सेठजीके उपकारमें श्रीयुत वालचंदजीने विस्तार पूर्वक विवेचन किया कि उन्हींके प्रतापसे यहांके धर्मादेकी रकम सार्थक हुई। फिर राज्यमें प्रतिष्ठित **न्यायाधीश रावबहादुर पाटकरने** अजैन होने पर भी कहा कि " कितने समयसे जैनी लोग विद्यामें बहुत पीछे थे परंतु अब सेठजीके महान प्रयाससे शिक्षाके साधन बनते जाते हैं इससे मैं सेठजीका अति आभार मानता हूं "। फिर सभापति सेठजीने कहा कि " आपने जो आज मुझे मान दिया हैं उसके लिये मैं योग्य नहीं हूं कारणकि अपनी मनुष्य जातिका यह कर्तव्य ही है कि दूसरोंका उपकार करना ही चाहिये। और उसीके अनुसार मैं केवल अपना कर्तव्य बजाता हूं इसमें मैं कुछ विशेष नहीं करता हूं। "

फिर बोर्डिंगका मकान सेठजीने खोला। ८ छात्रोंको रत्नकरंड श्रावकाचारका पाठ दिया गया। सेठजीने १०१)का दान दिया उसी समय अनुमान ९००) रुपयेकी आमदनी हो गई।

सेठजीको इस नवीन बोर्डिंगके स्थापनसे और भी आनन्द हुआ। वास्तवमें आत्म समाधि जब परमानन्द प्रदायक है तब उनके मुकाबलेमें शुभोपयोगमें चित्तका आल्हाद होना भी आनन्ददायक और पुण्यवर्धक है। जो केवल इन्द्रियोंके विषयोंसे सुख मानते हैं उन्हें इन शुभ कार्योंसे पैदा होनेवाले स्वाभाविक आनन्दोंकी ओर दृष्टिपात करना चाहिये। जब कि विषय सुखोंमें आत्मिक व शारीरिक शक्तिका क्षीण करना है तब इस स्वाभाविक आनन्दमें दोनों शक्तियोंको बढ़ाना है।

श्री गिरनार क्षेत्रके सुधारके लिये परतापगढ गमन।

सेठजी तीर्थोंके सुधारके भी अनन्य भक्त थे। आप श्री गिरनारजीके सुधारमें लगे हुए थे। श्रीशिखरजी पर सेठ हुकमचंदजीके उद्योगसे प्रबन्धकर्ता बंड़ी मन्नालालजीने नियमावली व योग्य रीतिसे कमेटी करना व योग्य प्रबन्ध करना स्वीकार कर लिया था, परन्तु उसके अनुसार कोई कार्रवाई जब नहीं हुई तब ता० ५-६-१० को तीर्थक्षेत्र कमेटीने अपने सभासदोंसे प्रस्ताव पास करा लिया कि अदालती कार्रवाई की जावे तौ भी पत्र व्यवहार होता रहा कि किसी तरह समझ जावें चूंकि अदालतमें बहुत परेशानी व खर्च पड़ता है। सेठजीने एक दफे यही विचारा कि हम स्वयं परतापगढ़ जाकर निबटारा करें, यदि काम सीधा न हो तब

अदालतसे निबटा जाय। अतएव आप **मूलचन्द किसनदास** कापड़िया सम्पादक "**दिगम्बर जैन**" को लेकर **रतलाम** दोपहरको ता: ३० जून ११को पहुंचे। यहां सेठजी बोर्डिंग खोलना चाहते थे सो घूमकर मकानोंको तलाश किया। फिर लौटकर आनेका निश्चय कर आप सांझको ही चल कर रात्रिको **इन्दौर** पहुंचे। सेठ हुकमचंदजीने भले प्रकार स्वागत किया। ता: १ जुलाईको ६ मंदिरोंके दर्शन करके सेठ हुकमचंद बोर्डिंग देखी। १७ छात्र माष्टर दर्यावसिंह सोंधियाकी सम्हालमें थे। इस छात्राश्रममें प्रति छात्रको ६) मासिक छात्रवृत्ति मिलती थी। हरएक अपने हाथसे रसोई करता था। रात्रिको १०की गाड़ीसे **सेठ हुकमचंदजी** और **लाला हजारीलालजी**को लेकर ता: २ जुलाईको सवेरे **मंदसोर** पहुंचे। वहां रु. १५०००) खर्च कर जो मनीराम गोरधनवालेने नई धर्मशाला बनवाई थी उसमें ठहरे। यहां अच्छा स्वागत हुआ। यहांसे मंदसोरके तीन मुख्य भाईयोंको लेकर २० मील परतापगढ़ दोपहर को १ बजे पहुंचे। **सेठ कस्तूरचंद तलेटी**के यहां ठहरे। बंडी मन्नालालजी आदिसे मिले। रात्रिको ८ बजे कमेटी हुई जिसमें यहांके खास २ भाई बुलाए गए। वादविवादके पीछे जो नियमावली छपी थी उसमें नियम ठीक किये गये और वह नियमावली छपानेके लिये **मूलचन्दजी**को सौंप दी गई। इस नियमावलीके नवीन कार्यकर्ताओंने प्रबन्ध करना स्वीकार किया। सभापति सेठ गुमानजी और बंडी मन्नालालजी, कोषाध्यक्ष और उपसभापति सेठ कस्तूरचंद तलहटी, मंत्री शाह कपूरचंद अमृतलाल खासगीवाले व उपमंत्री शाह गुमानजी जवाहरलाल हुए। नियमावलीमें नियम हुआ कि १०००)

कोषाध्यक्ष रक्खें बाकी सेठ हुकमचन्दजीके पास भेजें । वे अपने, कोषाध्यक्ष और सेठ नेमीचंदजी, ऐसे तीन नामोंसे योग्य स्थानपर जमा करावें । हिसाब प्रतिवर्ष प्रगट करना व कमेटीके दफ्तरमें भेजना निश्चित हुआ । उपमंत्रीको आज्ञा की गई कि एक मासके भीतर शिलक व हिसाब कस्तूरचन्दजीके सुपुर्द किया जाय। बंडी मन्नालालने भी स्वीकार किया ।

यह सब बातें रात्रि ८ से २ बजे तक तय हुई । फिर ३॥ बजे तक गिरनार तीर्थके एक मकानका झगड़ा सुलझानेमें सेठजी लगे, इतनेमें सेठ हुकमचंदजी तांगेपर बैठ मंदसोर आ इन्दौर रवाना हो आए । सेठजीने दूसरे दिन मंदिरोंके दर्शन कर रात्रिको नवीन मंदिरमें सभा की । १००० उपस्थिति थी । सभाने **सेठजीको सभापति** नियत किया। मूलचंदजीने 'अपनी स्थिति और उन्नतिके उपायों'पर अनुमान १० बजे तक भाषण दिया । फिर कुरीति निवारणके लिये अग्रगामी व उद्योगी सेठजीने अपने पहले रात्रिके जागरणकी कुछ परवाह न करके **वीसा हुंमड़की पंचायत जोड़ी** और इस विषयका लिखित प्रस्ताव करानेकी चेष्टा की कि **१० वर्षसे पहले कन्याकी सगाई नहीं करनी** । उस समय सफलता न हुई, आगे प्रतिज्ञा करेंगे ऐसा कबूल किया । ता. ४ को सवेरे ही चलकर मंदसोर होते हुए शामको ५ बजे रतलाम आए ।

रतलाम बोर्डिंगके लिये प्रबन्ध ।

रतलाममें रात्रिको दीवानसाहबसे मिलकर बोर्डिंग खोलनेकी बात कही । दीवान साहबने मदद करना स्वीकार किया । ता. ५ जुलाईको दोपहर तक मकान तलाश किये । शामको महाराज **सर सज्जनसिंहजी बहादूरजीसे**

मिले । राजासाहबने १ घंटा बात की व बोर्डिंग खोलना जानकर सेठजीको धन्यवाद दिया तथा बोर्डिंगके लिये ज़मीन मुफ्त व और भी मदद देनी कबूल की । फिर सूरत निवासी यहांके सर न्यायाधीश मि. मगनलाल आत्माराम काजीसे मिले । इस दिन घूमकर चांदनीचौकमें एक मकान पसन्द किया और आगामी आसौजमें बोर्डिंग खोलनेका निश्चय किया । यहांके हाईस्कूलके हेडमास्टर मि. कान्तीलाल के. नानावटी एम. ए. से मिले । हेडमाष्टर साहबने छात्रोंको फ्री दाखल करनेकी इच्छा दर्शाई । यहां सेठ **गंगाराम गुलाबचंदने** बहुत मदद दी ।

शामको चलकर ८ बजे रात्रिको **दाहोद** आए । ७ जुलाईको सवेरे गाजे बाजेसे अष्टान्हिकाकी पूजन हुई । १० से १२ तक सभा हुई । मूलचँदजीने उन्नति पर भाषण दिया । पाठशाला जो बंद हो गई थी चालू करने, सभा स्थापित करने आदि पर कहा । सेठजीने उपदेश देकर लगभग ४० दशाहूमड़ भाईयोंके हस्ताक्षर एक प्रतिज्ञापत्र पर लिये कि **हम कन्याकी सगाई १० वर्षसे कम** में न करेंगे, औरोंसे कराना स्वीकार किया । यहांसे रात्रिको चलकर सेठजी ता. ८ जुलाई १९११को बम्बई आए ।

मगनबाईजीके असरसे मुरादाबादमें श्राविकाश्रम ।

सेठ माणिकचंदजी जैसे प्रत्येक प्रांतमें बोर्डिंग स्थापनमें लीन थे वैसे ही उनकी एक विद्वान् सत्पुत्रके समान परम यशस्विनी **मगनबाईजी** प्रति प्रान्तमें श्राविकाश्रम स्थापित कराना चाहती थीं । मुज़फ्फरनगरमें श्रीमती मगनबाई और **चंदाबाईजी** आराने (जो प्रसिद्ध बाबू

देवकुमारके छोटे भाई धर्म कुमारकी विधवा स्त्री वैष्णव कुलमें जन्म लेने पर भी जैन धर्मके मर्मसे भले प्रकार विज्ञ हैं) श्रीमती **गंगादेवीको** आश्रमके लिये दृढ़ किया व **चमेलीबाई** देहरादूनसे मिलकर मासिक चंदा करा दिया । मुरादाबादकी स्त्रियोंने भी सहायता करके कुल चंदा ९०) मासिकका हो गया । तब गंगादेवीने आश्रमका महूर्त **आषाढ़ वदी ११ वीर सं० २४३७** को लोहागढ़वाले मंदिरकी धर्मशालामें करके स्वयं पढ़ाना व रहना स्वीकार किया । ८ पुरुषोंकी निरीक्षक व ९ स्त्रियोंकी कार्यकारिणी कमेटी बनी । यह आश्रम अब तक कायम है । इसमें परदेशी सात विधवाएं हैं । ४ यहांसे निकलकर फीरोजपुर, अम्बाला, रोहतक आदि स्थानोंमें काम कर रही हैं । श्रीमती **गंगादेवी** मुकुन्दरामकी पुत्री हैं जो जैनजातिमें कालेज कायम करनेके लिये सबसे पहले पं० चुन्नीलालके साथ दौरा करने गए थे व अच्छे विद्वान् थे । इनके पुत्र लाला संतलाल मुरादाबादके रईस हैं ।

रतलाम बोर्डिङ्गका रतलाम नरेश द्वारा स्थापन ।

सेठ माणिकचंदजीने षोडशकारण भावना व उसके आसपासके दिन सुखशांतिसे बिताए तौ भी शिखरजी पर्वतकी चिंता मनमें सदा ही बनी रहती थी। भादों बाद आपने रतलाम बोर्डिङ्ग खोलनेके लिये विचार किया । वागड़ प्रान्तमें शिक्षाका बहुत ही अभाव है इस बातको आपने पं० कस्तूरचंद उपदेशक द्वारा सं० १९६२ में अच्छी तरह जान लिया था । उनके दौरेकी रिपोर्टसे मालूम हुआ था कि ४२ ग्रामोंमें केवल एक ग्राममें ही जैन पाठशाला है तथा ५७०० जैनियोंमें

सिर्फ १५० पुरुष और ७ स्त्रियां ही स्वाध्याय करनेके योग्य हैं। बस आपने वागड़ प्रान्तको सुशिक्षित बनानेके लिये वागड़के नाके रतलाम नगरमें बोर्डिंग खोलनेका निश्चय करके उसमें नियम रक्खा कि ८ वर्षसे ऊपरके लड़के वागड़ व उसके आसपासके मुख्यतासे हूमड़ भरती हों। मिती आश्विन सुदी १२ गुरुवार ता० ५ अक्टूबर १९११ को मुहूर्त नियत करके बाहरसे बहुत लोगोंको बुलाया। मंदसोर, दाहोद, उज्जैन, इन्दौर आदि स्थानोंके भाई आए। आमोद वाले सेठ हरजीवन रायचंदको आपने खास तौरसे आनेको लिखा सो सेठजीसे ट्रेनमें मिल गये, एक साथ रतलाम पहुंचे। सभाके लिये एक बड़ा मंडप बांधा गया था। सवेरे ही १००० स्त्री पुरुष हाजिर हो गए थे। पहले कुंभ स्थान और सरस्वती पूजन हुई उस समय प्रभावनामें नवीन सामायिकपाठ बांटा गया था। दीवान साहब आदि राज्यकारबारी आनेके बाद ठीक ९ बजे रतलाम नरेश मोटरमें आए। तुर्त कार्रवाई शुरू हुई। मास्टर दीपचंद उपदेशकने मंगलाचरण किया। फिर सेठजीने एक सुन्दर **मानपत्र** बड़े सन्मानसे भेट किया जिसको पंडित कस्तूरचंद उपदेशक मालवा प्रान्तिक सभाने पढ़कर सुनाया।

सेठ मूलचन्द किसनदासजी कापड़ियाने बोर्डिङ्गका हेतु व नियमावली बताई और कहा कि इस बोर्डिंग

२५०००) नकद व के निमित्त सेठ माणकचन्दजीके कुटुम्बियोंके

१२५) मासिककी तरफसे २५०००) नकद व करीब १२५)

मिलकतका दान। मासिककी मिलकत प्रदान की जाती है।

सेठ हरजीवन रायचन्द्र व सेठ कस्तूरचन्दके

भाषण हुए, इन सबका उत्तर देते हुए महाराजने अपने व्याख्यानमें बहुत उपयोगी बातें कहीं "अर्थात् बचपनकी उम्र गीली मिट्टी या हरी लकड़ीके समान होती है। गीली मिट्टीसे जैसी मूर्ति चाहो वैसी बना सकते हैं। हरी लकड़ी जिधर चाहो मोड़ सक्ते हो। सु० सुआचरणी होना चाहिये। शारिरीक उन्नति भी करानी चाहिये। जिस लड़केका शरीर अच्छा और निरोग है उसका दिमाग भी तन्दुरस्त होना चाहिये और वह काम भी अच्छा कर सक्ता है। तब दीवान साहबने प्रगट किया कि **राजा साहब १५०) वार्षिक** आश्रम जब तक कायम रहे तब तक देनेकी कृपा दर्शाते हैं। फिर महाराज साहबने बोर्डिंगका मकान खोला तथा फिरकर देखा। फिर आसन ग्रहण करनेपर सेठ माणिकचन्दजीने नजराना दिया और राजा साहबका बहुत उपकार माना। पुष्पादिके सन्मानके पीछे जलसा १०॥। बजे समाप्त हुआ। दिनको उपदेशक सभा हुई। आसौज सुदी १४को १० महाशयोंकी स्थानीय प्रबन्धकारिणी कमेटी नियत हुई। सभापति सेठ कस्तूरचन्द व सेक्रेटरी मि० कांतीलाल नाणावटी एम. ए. हुए।

रतलामका काम समाप्त करके सर्व मंडली अहमदाबाद आई।

अहमदाबाद बोर्डिंग-का वार्षिकोत्सव।

और आसौज सुदी १५ को सबेरे मि० जीवनलाल व्रजराय देशाई बैरिष्टरके सभापतित्वमें सेठ प्रेमचन्द मोतीचन्द दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्कूलका नवमा वार्षिकोत्सव हुआ। लल्लूभाई लक्ष्मीचंद मंत्रीने रिपार्ट सुनाई। फिर मूलचंद किसनदासजीने परीख लल्लुभाई प्रेमानन्द एल. सी. ई. को मानपत्र

सेठ माणिकचन्द पानाचंद दि० जैन बोर्डिंग हाउस-रतलाम.

अर्पण करनेकी दरख्वास्त की और कहा कि यह ७ वर्षसे इस छात्राश्रमके मंत्री रहे हैं। मेवाड़ा कौममें यह माननीय ओहदेदार हैं। हालमें यह जर्मनीके प्रवाससे लौट कर आए हैं जहा यह व्यापारके लिये गए थे। परीख लल्लूभाई अपने भाई मन्नूलालके साथ ता. १२ अगस्त १९०८ शनिवारको बम्बईसे इजिप्त नामके जहाज़ पर बैठे। उसमें ३९ और भी हिन्दुस्तानी थे। ये अपने साथ पूरी, मिठाई, और फलादि ले गए थे। उन ही को रास्तमें खाते थे। यह जहाज़ अरेबियन समुद्रमें चलता हुआ बुधवार तक पानी ही पानीका दिखाव करता था। झोंकोंसे मस्तक फिरता था व भोजनकी रुचि कम होती थी। ९ दिन बाद गुरुवारकी सांझको ४ बजे जहाज़ **एडन** शहरके पास पहुँचा। यहां २ घंटे ठहरा। फिर **रेड सीमें** जाने लगा। यहां हवा अच्छी थी। सोमवारको १० बजे सवेरे जहाज सुएज़की नहरमें चलने लगा। बंबईसे एडन १६०० मील व एडनसे सुएज़ ११०० मील था। सुएज़से पोर्ट सेड तक १०० मीलकी नहर खोदी हुई है। सुएज़ एक गांव आफ्रिकाके इजिप्त राज्यके आधीन है। देश ऊजड़ मालूम होता था। नहरके दोनों तरफ रेतीके समूह देख पड़ते थे। यहां ३ घंटे ठहर कर जहाज़ ३॥ बजे **पोर्टसेड़में** पहुंचा यहां १२ घंटे तक स्टीमर ठहरा। यह पोर्टसेड इजिप्त राज्यके आधीन है। अरबोंकी वस्ती है जो मांसाहारी हैं। शहर कुछ शोभनीक है। खच्चरोंकी ट्रामगाड़ी है। स्त्रियां परदा करती हैं।

परीख लल्लूभाई प्रेमानंदका मानपत्र।

विलायतकी यात्रा।

धुरका पहनती हैं। ता० २६-८-१० मंगलवारकी सांझको ४ बजे जहाज सुएज़ नहरके उत्तर मुखको छोड़ कर भूमध्यसागरमें चलने लगा। ता० २९-८-१० के दोपहरको मेसीनाकी खाड़ीमें पहुंचा। यहां तटपर ऐसा मालूम होता था कि पहले कोई मोटा शहर होगा। आगे चलकर **एटनाका ज्वालामुखी** पर्वत दीखता था जहांसे धुआं व पदार्थ निकल कर एक तरफ गिरते थे। ता० २८-८-१० को स्टीमर फ्रेंचोंके आधीन **मार्सेल्स** बंदरमें पहुंचा। यह शहर व्यापारी है। कारखाने हैं। फ्रेंच भाषा है, फ्रान्क सिक्केका चलन है जो ॥=) का होता है। यहां पर जहाज़से उतर रेलके द्वारा १० घंटे चलकर दूसरे दिन **पेरिस** आए। रास्तेमें हरएक गांवमें गिरजाघर देख पड़ता था। खेतोंमें क्यारियां कायदेसे थीं। ठंडी पड़ती थी। रेलवेमें सफाई नहीं; चोरी व जेब काटे जानेका भय था। पेरिस एक सुन्दर नगर है। ३० लाखकी वस्ती है। मकानोंकी कतारें सीधी थीं। बड़े रास्ते पर ४ खनसे नीचेके मकान नहीं हैं। शहरमें ज़मीनके नीचे **मोटरोपोलीटन** नामकी बिजलीकी रेलवे चलती है। हरएक पांच२ मिनटमें आती है। व्यापारी शहर है। ये लोग अपने एक भरुचनिवासी देशी मित्रके यहां जीमते व होटलमें ठहरे थे। यहां हरएक बालक बालिकाको ६ वर्षसे १४ वर्ष तक पढ़ाना ही पड़ता है। नीच जातिकी स्त्रियां भी पढ़ना लिखना जानती हैं। फूल बेचनेवाली, व गाड़ीवाला, व कूड़ेको ढोनेवाला भी समाचारपत्र बांचता है। यहां हरएक पुरुषको १९ वा २० वर्षकी उम्रके पीछे २ वर्ष तक लशकरी खातेमें

-आनरेरी नौकरी करनी पड़ती है। ये लोग ५ दिन पेरिसमें रहे।
फिर २४ घंटे रेलमें चलकर जर्मनीके हेम्बर्ग नगरमें ता०
११-९-१०को सवेरे पहुंचे। यहांके लोग प्रेमी व उद्यमी थे।
यह जर्मनीका द्वितीय भारी नगर व दुनियांके व्यापारी नगरोंमें
चौथे नम्बरपर है। यहां व्यापार बहुत भारी है। रंग, व कपड़ोंके
बड़े २ कारखाने हैं। यहां एक्सचैंज आफिसमें ११॥ बजे दिनसे
२॥ तकमें ७००० व्यापारी और दलाल एक होकर सौदा कर
लेते हैं। शेष काम टेलीफोन और पत्रसे होता है। शरदी बहुत
है। ॥।) आनेवाला मार्क सिक्का चलता है। यहांके लोग विवेकी
व साफ मनके हैं। ९ लाखकी बस्ती है। कुछ शौकीन भी हैं।
अरहरकी दाल विना सब वस्तुएं दूध, शाक आदि मुम्बईके समान
मिलता है। घी वैसा मंहगा नहीं मिलता है। ठंडीके सबब हरएक
घरमें अग्निकी अंगीठी जलती है या बिजलीसे हवा गर्म की जाती
है। ये लोग व्यापारके लिये गए थे सो वहां १ मकान भाड़े
लेकर दूकान खोल दी। कुछ दिन व्यापार किया, पर योग्य लाभ
न देखकर लौट आये थे।

बोर्डिंगकी तरफसे लल्लूभाई प्रेमानन्दको प्रमुखके हाथसे
मानपत्र अर्पण किया गया। इसका जवाब देते हुए परीख लल्लू-
भाईने कहा कि "मैं इस मानके लायक नहीं हूं पर इस मान-
के योग्य सेठ माणिकचंदजी हैं, जिनकी सूचना और
सलाहसे मैं कोई भी सेवा कर सका हूं। प्रमुखने अपने भाषणमें कहा कि
विद्यार्थियोंको नौकरीकी आशा न रखके स्वतंत्र व्यापारके योग्य हों
ऐसी शिक्षा लेनी योग्य है। दोपहरकी सभामें भ्राता हरखचंद-

को धर्मशाला बांधनेके लिये धन्यवाद दिया गया। मास्टर दीप-
चन्दजीके उपदेशसे चैत्यालयमें विद्यार्थियोंने हररोज अष्ट द्रव्यसे
पूजनका नियम लिया व ५ वर्ष तक पूजाके द्रव्यका खर्च अहमदा-
बादके महासुखभाई दामोदरदासने देना स्वीकार किया।

प्रस्तावकी पाबन्दी।

श्रीमती मगनबाईजी भी अपने पिताके समान अपने वचनोंकी पाबन्दी व कर्तव्य पालनमें दृढ़ हैं। इसी कारण अपने मुज़फ्फरनगरमें होने वाली महिला परिषदके प्रस्ताव नं० ३ के अनुसार महिला परिषदकी तरफसे २ पेज "जैनमित्र" में वीर संवत् २४३८ के प्रारंभसे बढ़वा दिये और उसमें स्त्रियोंके लेख स्त्रियोपयोगी प्रकट होने लगे।

एक समाजसेवी होनहार रत्नका वियोग।

सेठ माणिकचंदजीको सेठ नाथारंगजीके कुटुम्बके एक होनहार परोपकारी रत्न **बाबूचंद पानाचंदका** वियोग मिती आसौज वदी १९ सं १९६७ के दिन २७ वर्षकी आयुमें ही सुनकर चित्तको बहुत उदासीनता हुई। दहीगांव क्षेत्रमें **वीसाहूमड़ सभा** व महतीसागर उद्योतनी सभा सं० १९६५ में स्थापित कर उसके मंत्रीपनका काम बहुत योग्यतासे किया था। सेठजी इसीके उत्साहके कारण दो दफे दहीगांव गए व शिखरजीमें जब पहाड़पर लाट साहब आए थे तब भी आप सेठजीके साथ गए थे। सेठजीके इस उपाय पर कि १० वर्षसे कमकी कन्याकी सगाई कोई न करे, आपने बहुतसे वीसा हूमड़ोंके दस्तखत लिये थे व दक्षिणके वीसा हूमड़ोंकी

डाइरेक्टरी तैयार की थी। धर्मशिक्षाके असरसे मरते समय

११५००) का दान।

१००००) शोलापुरमें बोर्डिंगकी इमारत बनाने व १०००) जैनियोंमें ज्ञान वृद्धि व ५००) बम्बई प्रान्तके गरीब अनाथ किसानोंके लिये दान किया और शांतिसे णमोकारमंत्र जपते हुए प्राण छोड़ा। वास्तवमें यह दानवीरता दानवीर सेठ माणिकचंदजीके ही संसर्गसे प्रादुर्भूत हुई थी।

मुम्बई श्राविकाश्रम का वार्षिकोत्सव।

मिती कार्तिक सुदी १४ वीर सं० २४३८ ता० ६ नवम्बर १९११ को श्रीमती मगनबाईजीने श्राविका-श्रमका वार्षिकोत्सव गोंडलकी युवराज्ञी श्री राजकुंवरबाईके सभापतित्वमें बड़े समारोहके साथ किया था। ललिताबाईजीने रिपोर्ट सुनाई। आश्रमकी श्राविकाओंने पद व भजन, श्लोक कहे। इनाम बांटा गया। प्रमुखाने कहा—" दया धर्मके कारण जैन धर्म प्रसिद्ध है इससे वह स्त्रियों व विशेषकर विधवाओंके दुःखोंकी तरफ दुर्लक्ष रक्खेगा यह बात संभव नहीं है। उनको शिक्षा देना यही उनके साथ दया करना है। "

स्याद्वादमहाविद्यालयका वार्षिकोत्सव व सेठजीका चित्र उद्घाटन।

मिती कार्तिक सुदी १४ को ही काशी स्याद्वाद महाविद्यालय-का वार्षिकोत्व जैनजातिभूषण डिप्टी **चम्पतरायजी**के सभापतित्वमें बड़े समा-रोहके साथ हुआ। उसमें **दानवीर जैन-कुलभूषण सेठ माणिकचंद हीरा-चंद जे. पी.** का अति मनोहर विशाल चित्रपटका उद्घाटनमहोत्सव उक्त सभापति-

जीने किया उस समय आपने कहा:—

"जैन जातिमें लोग सिंघई, सवाई सिंघई, श्रीमन्त आदिकी पदवियां पानेके लिये केवल रथयात्रा और जातिको जिमानेमें लाखों रुपया खर्च किया करते थे और अब भी करते हैं। जिससे वास्तविक अज्ञानांधकारको मेटनेवाली प्रभावना नहीं हो सकती है। धन्य है जाति शिरोमणि सेठ माणकचंदजीको कि जिसने विद्याकी वृद्धिमें छह लाखके अनुमान द्रव्य खर्चकर चिरकालके लिये ज्ञान वृद्धिका पथ स्थापित कर दिया है। ऐसे शिरोमणिका सन्मान यह जाति करनेसे असमर्थ है। इस विद्यालयके स्थापकों और पोषणकर्ताओंमें आप मुख्य हैं। इसलिये ऐसे महानुभावका चित्र विद्यालयके छात्रोंको उदाहरण बतलानेके लिये अत्यन्त आवश्यक है।"

सेठजीका उदाहरण व धर्मप्रचारका गाढ़ प्रेम।

सेठजीने कई वर्ष पहलेसे उपदेशकोंकी जरूरत देखकर उपदेशकीय परीक्षाका पठनक्रम व नियम ठीक करके उपदेशक भंडार महासभाके मंत्री बाबू सूरजभानके सुपुर्द किया था पर उसमें कोई भी कार्य हुआ न जानकर आपने स्वयं नोटिस निकलवाकर ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीके द्वारा वीर सं. २४३७में परीक्षा लिवाई। मध्यमामें कुंवर दिग्विजयसिंहजीने परीक्षा देकर २२) पारितोषिकके पाए। जघन्यमें हीराचंद सखाराम कोठारी आलंद और पीताम्बरदास बांसाने उत्तीर्णता प्राप्त की। प्रथमको १८) तथा द्वितीयको १०) इनामके मिले। इन तीनोंसे ही धर्मोपदेशका अच्छा उपकार हो रहा है। पीताम्बरदासजी बम्बई प्रान्तिक सभाके उपदेशक हैं और समाधानकारक कार्य कर रहे हैं। अब यह परीक्षा बंद है। यदि "पारि-

तोषिककी उत्तेजना देकर यह परीक्षा जारी रक्खी जावे तो जैनियोंमें जो उपदेशकोंकी भारी कमी हो रही है सो दूर होजावे ।

बादशाह जार्जका भारत आगमन व बम्बईमें सभा ।

भारतमें विलायतके बादशाहोंमें सबसे पहले ही आगमन महाराज पंचम जार्जका ता. ३ दिसम्बर १९११को हुआ तथा ता. १२ दिसम्बरको दिहलीमें एक बड़ा स्मरणीय दर्बार हुआ था । उसमें महाराजने भारतीयोंके लिये हुये आनन्द वचन भी कहे कि " हमारे बड़ोंने तुम्हारे हकोंको कायम रखने तथा तुम्हारी भलाई व सुख शांतिके लिये जो विश्वासपात्र वचन दिये हैं उन्हींको फिरसे ताजा करनेका अवसर मुझे आज मिला है, उसके लिये मैं अपना हर्ष प्रकट करता हूं । " दरबारमें बहुतसे जैनी भाई गए थे, पर हमारे सेठजी नहीं जासके थे । आपने इसी ता. १२ की शामको दूसरे भोईवाड़ेके जिन मंदिरजीमें लाला छज्जूमल अलीगढ़ निवासीके सभापतित्वमें सभा की और महाराजको सुख शांति रहे ऐसा तार भिजवाया । सवेरे यहां व चौपाटीके जिन मंदिरजीमें श्री जिनेन्द्र देवकी पूजा की गई व राज दम्पतिके कल्याणकी भावना भाई गई । इसी दिन भूखोंको अन्न भी बांटा गया ।

पर्वतरक्षार्थ सेठजी कलकत्तेमें ।

श्री सम्मेदशिखरजी पर्वतकी रक्षाके लिये जो पट्टा दिगम्बरियोंको हुआ था उसको रद्द होनेका हुक्म वाईसरायका जबसे आया था तबसे उसकी एक भारी चिंता सेठजीके चित्तमें थी । कलकत्तेमें बाबू धन्नूलाल अटार्नी और सेठ पर्मे-

छीदासजीको प्रेरणा करके आप उद्योग कराते रहे । इन लोगोंने बंगाल सर्कारसे लिखापढ़ी की तथा ता. २८ दिसम्बर १९११के दिन कलकत्तेमें मुख्य २ भाईयोंकी एक कमेटी नियत की। सेठजी सेठ बालचंद रामचंद और बालचन्द्र नेमचन्द्र शोलापुरवालोंके साथ कलकत्ते पहुंचे और ता. २८को विचार किया गया । बाबू धन्नूलालने भरोसा दिया कि बंगाल सर्कारसे बातचीत हो रही है, आप चिंता न करें। सेठजी यहां २ दिन ठहरे और श्वेताम्बरी भाईयोंसे मिलापकी भी चेष्टा की परंतु कोई सफलता न हुई। ता. ३०की रात्रिको कि जब महाराज पंचम जार्ज और महारानी मेरी कलकत्ते पधारे थे, नए दि० जैन मंदिरमें सेठ बालचंद रामचंदके सभापतित्वमें सभा हुई । सेठजीने हरीभाई देवकरणके घरानेकी बहुत प्रशंसा की । इस सभामें बादशाहकी सुख शांतिका प्रस्ताव पास हुआ । ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने " जैन धर्मकी महिमा" पर व्याख्यान दिया ।

सेठजीके शरीरकी स्थिति व रुचि ।

इस वर्ष यद्यपि सेठजी आवश्यक कार्यवश बाहर जाते थे पर पहलेकी अपेक्षा शरीरकी स्थिति बहुत निर्बल हो गई थी जिससे आप बहुधा घंटा दो दो घंटा सवेरे मंदिरजीसे आकर कौचपर लेट जाते थे व रात्रिको भी दीवानखानेमें थोड़ा बैठकर लेट जाया करते थे। परंतु अपने नित्यकर्मको छोड़ा नहीं था । चौपाटी चैत्यालयमें प्रक्षाल पूजा व स्वाध्याय करना तथा हीराबाग धर्मशाला व दूकानपर जाना बिलकुल बंद नहीं किया था।

आपको अपने आधीन धर्मकार्योंके सम्हालकी बहुत बड़ी चिंता थी, अतएव अपने परोपकारी मित्रोंको अपना हाल

लिखा करते थे। आमोदके **सेठ हरजीवन रायचंद**को आपने एक दफे लिखा—

" हवे मारूं शरीर सारूं रहेतुं नथी अने मारी शारीरिक शक्ति घटती जाय छे, तेथी जे खातांओ अने हिलचालो हाल चाले छे तेनो भार हवे तमारा जवाए उपाड़वानी जरूर छे इत्यादि. "

पाठक देखेंगे कि सेठजीको भविष्यके सुप्रबन्धकी कितनी भारी चिन्ता थी।

लेटे लेटे भी आप कभी सुस्त नहीं रहते थे, पुस्तकें पढ़ा करते थे। इन दिनों आपके हाथमें भारत और विलायतके प्रवासकी पुस्तकें गुजराती भाषामें पढ़नेमें आई जिससे कभी २ मनमें तरंग उठती थी कि जो स्थान हमने नहीं देखा है उसे अवश्य देखलेना चाहिये। आपने **ब्रह्मदेश** ही नहीं देखा था। रंगूनसे यद्यपि आपका पत्र व्यवहार था तथा अपने आढ़तियेको आप प्रेरणा करते थे कि बौद्ध लोगोंसे मांसका आहार छुड़ानेका यत्न करें। पुस्तकें भी बटवाते थे तथा वहां एक **फलाहारी होटल** खुलवाना चाहते थे कि जिससे मांसाहारियोंको भोज्य पदार्थ खिलाकर उनकी रुचि स्वादिष्ट और उत्तम मांसवर्जित भोजन पर आकर्षित की जावे। इसके लिये आप लिखापढ़ी कर रहे थे।

अब आपने अपना पक्का विचार जानेका कर लिया था और कलकत्तेकी कमेटी करके आप ता० ३० दिसम्बरको रंगून रवाना हो गए और वहां सैर करके कलकत्ते ता; १५ जनवरीको

ब्रह्मदेशकी यात्रा।

आए। वहांसे श्री शिखरजीकी यात्रा करते हुए आप ता० ३० जनवरीको माह सुदी १ के दिन पीछे बम्बई आए। आपने अपनी यात्राका हाल अपने हाथसे लिखकर "**दिगम्बर-जैन**" पत्र फाल्गुण सं० १९६८ अंक ५ में प्रकाशित कराया है सो नीचे प्रमाण है—

ब्रह्मदेशनो प्रवास.

व्हाला बंधुओ ! गत मासमां अमोए **रंगुन (ब्रह्मदेश)नी मुसाफरी** करी हती, जेमांनी केटलीक जाणवा लायक हकीकत अत्रे प्रकट करवानुं योग्य धारीए छीए, केमके एथी ब्रह्मदेशनी स्थिति अने देखावनुं भान वांचकोने मळी शकशे.

प्रथम हमो ता. २६-१२-११ (**पोस सुद ५**)ने दिने **मुंबईथी** नीकळी ता. २८मीए सांजे **हावरा (कलकत्ता)** स्टेशने पहोंच्या, ज्यांथी हेरीसन रोडपर आवेली **हरकीसनदास बाबूनी दिगंबर जैन धर्मशाळामां** उतर्या, जे पछी ता. ३१-१२-११नी सवारे **रंगुन** जती मेल स्टीमरमां जवाने **रेमघाट** उपर आव्या, के जे घाट एटना गार्डननी सामे चांदपाल घाट नजीक आवेलो छे. त्यां सामे **एलेनकोरा स्टीमर** आवेली हती तेमां जईने अमारी जग्याए बेठा. ए स्टीमरनी **टिकिट** त्रण वर्गनी होय छे, तेमां पहेला वर्गना रु. ९५), बीजा वर्गना रु. ४५), अने त्रीजा **वर्गना रु. १०)** होय छे. अने टिकिट स्टीमरना उपडवाना मुकरर दिवस पहेलां पण मळी शके छे. आवी रीते अठवाडीआमां त्रण स्टीमरो **कलकत्तेथी रंगुन** जाय छे.

हवे स्टीमर क्लाक ७-१० मीनीटे त्यारा उपरथी उपडी.

आ स्टीमर वराळयंत्रथी चाले छे. ए स्टीमरमां छ माळ हता, तेमां अडधो माळ पाणीमां रहे छे, तेमां नीचला त्रण माळना आगळना अडधा भाग सुधीमां सांचा रहे छे, अने वळी अडधा भाग सुधीमां लगेजनो सामान भराय छे; तेमज चोथा माळना थर्ड कलासना (त्रीजा वर्गना), पांचमां माळमां सेकन्ड कलासना अने छठ्ठा माळमां फर्स्ट कलासना पेसेन्जरो बेसे छे. अमो सेकन्ड कलासमां बेठा हता, जेनुं वर्णन नीचे मुजब छे—सेकन्ड कलासना पेसेन्जरो माटे एक केबीन (ओरडी) होय छे, जे ओरडी आशरे आठ चोरस फुट होय छे, तेमां त्रण पेसेन्जरोनी सगवड करेली होय छे, जेमने माटे बीछानुं, खाट, दीवो तथा ओरडी दीठ एक सर्वंट (नोकर) होय छे. फर्स्टकलासमां आथी पण घणी सारी सगवड होय छे, स्टीमरमां अनेक देशोना पेसेन्जरो होय छे, तेथी तेमनी भाषानी माहिति तेमज व्यापार उद्योगने सारो फायदो थाय छे. स्टीमरमां फ्रुट मेवो वगेरे जे कांई जोइए ते पण मळी शके छे, अने त्यां हिंदु होटल पण होय छे, तेथी आपणे जेम घरमां बेठा होईए तेमज लागे छे.

हवे आ स्टीमर ता० ३–१–१२नी सवारे सात वागते रंगुनना बारा उपर आवी अने अमो मीनापुल घाट उपर उतर्या अने त्यांथी मोगलस्ट्रीट नं० १४मां आवेली सुरजमल लल्लुभाई झवेरीनी पेढीमां उतर्या. एज दिने अमो शहेर जोवाने गया, त्यां चव (अपासरा) तेमज रोयल लेक (तळाव) के जे बहुज विशाळ छे, ते जोई त्यांथी सुलेबोद्यफगो (बौद्ध धर्मनुं देवल) जोवाने गया के जे रोयल लेक उपर आवेलुं छे.

आ देवल बौद्धोनुं मोटामां मोटुं देवल (मंदिर) छे, जेमां आशरे १५ फुट उंची आरसपहाणनी **प्रतिमाओ छे.** आ **बौद्धनो** दिवस होवाथी त्यां घणा **कुंगी** (साधु)ओने **स्वाध्याय** करता जोया. आ लोको धर्म उपर घणाज श्रद्धाळु तेमज मायाळु होय छे. तेओना आचरण तेमज देवल अंदरनी रचना जोई अमोने अत्यंत आनन्द थयो. जेम बावन जंजाळी देवल होय छे, तेमज आ देवळ पण हतुं. तेमां एक देवलनुं खर्च रु० १२००००) थएलुं छे. आ देवल जोया पछी अमो **मेमोरीयल गार्डन** तथा केन्टोमेन्ट गार्डनो (बगीचाओ) जोवा गया. आ गार्डनो (बगीचाओ) सारा छे. ए पछी कोलेज, होस्पीटल अने अने **सुलेफयो पेगोडा** (बौद्ध धर्मनुं देवल) जोतां केमीन डाउनमां गया के ज्यां धातुनी प्रतिमाओ सारी बने छे

आ शहेरमां इलेक्ट्रीक (वीजळीक) ट्राम, टेलीफोन (तार) तथा बीजी दरेक व्यवस्था मुंबाईना जेवीज छे. अत्रे हिंदुस्ताननी वस्ती पोणो भाग अने बाकीनी **ब्रह्मी** लोकोनी वस्ती छे. आ शेहेरनी वस्ती आशरे बे लाखनी छे. अत्रे आशरे ५० जैनी व्यापारार्थे रहेला छे अने आपणुं मंदिर पण छे. अहीं मुख्य पेदाश **चोखा**नी छे अने **हीरा**नो व्यापार सारो छे.

अत्रेथी ता. ५-१-१२ने दीने उपडी ट्रेनमां बेसी ता. ६ ठी ए **मांडले** गया अने शा. जमनादास उदेचंदने मुकामे उतर्या अने तेज दिने अमो **राजा थीबोनो मेहेल** जोवा गया. आ मेहेल बहुज पुरातन छे अने एनी बांधणी लाकडानी छे. मेहेलनी आसपास एकेक माइल फरतो कोट छे, जे जोई अमो **मांडला हील** जोवाने गया. आ हील (टेकरी) उपर जवाने पगथीआं

बंधावेलां छे. सौथी उंचे फयो (देवल) छे, ते फयामां आशरे २५ फुट उंची **कायोत्सर्ग प्रतिमा** छे. अत्रेथी शहेरनो देखाव रमणीय नजरे पडे छे. ए पछी नीचे उतरीने अमो मांडलानी पासे **सांजो** गाम छे त्यां ट्राममां बेसीने **फयो** (देवल) जोवाने गया. आ फयानी अंदरनी व्यवस्था घणीज रमणीय छे. ए पछी बीजे दिने **केरोसीन ओइल मील** (ग्यासतेलनो मील) जोवाने लांच (नानी होडी)मां बेसीने गया, के जे मीलमां **रंगुननी खाडी** ओळंगीने जवाय छे. त्यां प्रथम ४० कोस उपर **ग्या-सतेलना कुवा** होय छे, त्यांथी स्टीमरमां भरीने कचरावाळुं ग्यासतेल लावे छे, जेमांथी पछी मीलमां प्रयोगो करीने प्रथम चोख्खुं ग्यासतेल जुदुं पाडे छे, जेमांथी **पेट्रोल** काढे छे अने बाकी रहेला कचरामांथी मीणबत्ती बनावे छे अने तेथी बाकीनो कचरो मीलमां बाळवाना उपयोगमां ले छे. अने तेथी बाकीनो भाग सडक उपर छांटवाना उपयोगमां ले छे आवी रीते दरेक चीज उपयोगमां ले छे. आ मील जोया पछी अमे मांडलेनी पासे **भामो** नामनुं गाम छे ते जोवा गया. ज्यां एक **मोटो घंट** छे के जेना जेवडो मोटो घंट आखी दुनिआमां नथी. मांडलामां हिंदुस्ताननी वस्ती पा भाग अने बाकीनी **ब्रह्मी** लोकोनी मालम पडे छे. आ देशनी हवा बहु सारी छे. आ शहेर ब्रह्मदेशनी राजधानीनुं शहेर छे. अत्रे दरेक जातनुं अनाज पण सारुं पाके छे. तेमज हीरा, पानां अने माणेकनो व्यापार सारो चाले छे, शहेरनी अने बजारनी बांधणी बहुज सारी छे.

ए पछी ता० ८-१-१२ ने दिने **गोकटेक** जवाने नि-

कळ्या. अहीं ट्रेन डुंगर उपर थईने जाय छे. आ डुंगर साडात्रण हजार फुट ऊंचो छे. उपरभागमां **मेमीयो** शहेर छे. त्यांनी हवा बहुज सारी छे. त्यांथी नीचाणमां जतां **गोकटेक** स्टेशन आवे छे. त्यां अमो ता० ९ मीए उतर्या अने तेज दिने **गोकटेकनी खीण** जोवाने गया के जे खीण पुलथी ८७२ फीट नीचाणमां छे. आ खीणमां २५० फुटनुं बोगदुं मालम पडे छे. आ बोगदुं कुदरती छे. त्यां लांबेथी **पाणीनो धोध** जबरो आवे छे. आ पाणीना धोधनुं उंडाण आशरे ५० फुट हशे. बोगदा उपर ३०० फीट ऊंचो डुंगर छे अने तेना उपर ३२५ फुट ऊंचो पुल छे अने ते पुल डुंगरनी ऊंचाईथी ४०० फीटथी वधारे नीचाणमां हशे.

ता० १०मीए आ खीण जोईने पाछा फरी ता० ११मीनी सांजे अमो **रंगुन** पहोंच्या. अत्रे लाकडाना कामनी मील सारी चाले छे, ते जोईने अमो ता० १२-१-१२ ने दिने कलकत्ते जवाने उपड्या अने एलीफंटा स्टीमरमां ता० १५मीए **कलकत्ते** आवी पहोंच्या अने तेज दिने त्यांथी **समेदशिखरजी** जई यात्रा करीने पाछा कलकत्ते आव्या. त्यांथी अमो कालीघाट स्टेशनथी ३ माइल दूर आवेला **टाटा आयर्न कंपनी** (टाटानुं लोखंडनुं कारखानुं) जोवाने गया. अत्रे पासेनी लोखंडनी खाणमांथी माटी लावे छे अने ते माटीने पहेलां **हाइड्रोजन ग्यास** वती गाळे छे अने पछी जेवुं जोईए तेवा आकारनुं लोखंडकाम बनावे छे. हालमां आ मीलमां **१००३० माणसो** काम करे छे, जेमने रहेवाने माटे कंपनी तरफथी मकानो बंधावी आपवामां आवे छे एटले त्यां एक **नानुं गाम** जेवुं थई पडयुं छे. आ कंपनी

हालमां सारुं काम करे छे अने हजु वधु काम चालु छे, जे बे वरसमां पुरुं थवे आ कंपनी घणुंज सारुं बीजनेस करी शकशे एम स्पष्ट जणाय छे.

आ कंपनी जोया पछी बीजेज दिने एटले ता. १७-१-१२ नी सांजे त्यांथी उपडी अमो ता. २०-१-१२ (माघ सुद १) नी सवारे पाछा मुंबाई आवी पहोंच्या.

ता. ४-२-१२. ज्ञाति सेवक—

माणेकचंद हीराचंद जे. पी. मुंबाई.

यद्यपि आप रंगूनमें फलाहार होटल स्थापित करना चाहते थे परंतु व्यवस्थाके लिये कोई प्रबन्धक न मिलनेसे आपने अपने विचारको बंद रक्खा।

बादशाह पंचम जार्ज की सेवामें मानपत्र।

सेठजी बम्बई आए तब यह चर्चा चली कि दिगम्बर, श्वेताम्बर और स्थानकवासी तीनों आम्नायोंके जैनी भाई मिलकर अपनी २ महासभाके मुख्य कार्यकर्ताके हस्ताक्षरसे एक सम्मिलित मानपत्र श्रीमान् महाराज पंचमजार्ज और महाराणी मेरीकी सेवामें अर्पण करें। यह मानपत्र बम्बई कलेक्टरके द्वारा ता० ३० जनवरी १९१२ को महाराजकी सेवामें भेज दिया गया। इसमें सेठजीने भा० दि० जैन महासभाके सभापतिकी हैसियतसे, सेठ कल्याणमल सौभागचंदने जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेन्सकी हैसियतसे और सेठ चांदमलजीने जैन स्थानकवासी कानफरेन्सकी हैसियतसे हस्ताक्षर किये थे।

दक्षिण म० जैन सभाका १४ वां वार्षिकोत्सव और सेठजी।

ता० १ मार्च १२ से ६ मार्च तक बेलगांवमें पंचकल्याणकोत्सवके समय दक्षिण महाराष्ट्र दि० जैन सभाका चौदहवां वार्षिकोत्सव श्रीमान् स्याद्वादवारिधि **पं० गोपालदास न्यायवाचस्पतिके** सभापतित्वमें बड़े समारोहके साथ हुआ। उत्तर हिंदुस्तानके केवल दिग्विजयसिंह आदि अनेक महाशय पधारे थे। श्रीमान् सेठजी साहब भी ता० २ री मार्चको पहुंच गए थे जिनका यथायोग्य सत्कार किया गया था।

कुल प्रस्ताव २१ पास हुए थे जिनमें उल्लेख योग्य ये थे:—

(१) श्रीमान् सेठ माणिकचंद पानाचन्दजीको २५०००) नकद व १५०) मासिक रतलाम बोर्डिंगके लिये देने पर धन्यवाद।

(२) बाललग्न निषेधके प्रस्तावको मराठी, हिन्दी, कनड़ी, गुजराती, संस्कृत व बंगाली ऐसी छः भाषाओंमें विवेचन किया गया। इस समय सभाका फोटो लिया गया था।

(३) डेपुटेशन शिक्षण फंड वसूल करनेको बाहर निकले— इसको सेठ माणिकचंदजीने स्वयं पेश किया था।

(४) बेलगाममें बोर्डिंग खोलनेके सम्बन्धमें सेठ धर्मराव सूबेदारका आभार मानना।

(५) धर्मादे द्रव्यका सदुपयोग।

इस सभामें कोल्हापुर निवासी मि० कलाप्पा सावर्डेकरको चित्रकला सीखनेको इटाली भेजनेके लिये (११९४) का फंड कर दिया गया। इसमें सेठ माणिकचन्दजीने बहुत परिश्रम उठाया।

ता० ४ मार्चको जिलेके कमिश्नर मि. शेपर्ड साहबका स्वागत सभामें हुआ। उस समय साहबने अपने भाषणमें कहा "जैन कौमका वर्तन बहुत सरल, उद्योगी और कर्तव्य दक्षताका होता है, जैनधर्म पृथ्वीके अत्यंत पवित्र और शुद्ध धर्मोमेंसे एक धर्म है। इसके अनुयायी शांतताप्रिय और सुधारणाशील होते हैं, ऐसा मुझे मालूम होता है।"

श्रीमती मगनबाई कंकुबाई आदि परोपकारिणी स्त्रियोंके उद्योगसे ता० ४ और ५ मार्चको भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद्की दो बैठकें सेठ हीराचन्द नेमचन्दकी धर्मपत्नी सौ० सकूबाईके सभापतित्त्वमें हुईं। ४ प्रस्ताव पास हुए। स्त्रीशिक्षा फंडमें २००) नकद आए। ४००० स्त्रियोंको उपदेश मिलनेसे स्त्री समाजमें अच्छी जागृति हुई थी।

बेल्गांवमें मि. ए० पी० चौगले बी० ए० एल एल० बी० ने १००००) खर्च कर एक सुशोभित मंदिरजी बनवाया था उसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा लक्ष्मीसेन भट्टारक कोल्हापुरके द्वारा फाल्गुण सुदी १२ से वदी ३ तक हुई थी।

सेठ माणिकचन्दजी ललितपुरके सेठ मथुरादास टड़ैया और पन्नालालजीको वार वार यह उपदेश किया करते थे कि ललितपुरमें आप ग्रामीण बालकोंको विद्या पढ़ानेके हेतुसे बोर्डिंग खोलें। उपदेशका असर कभी न कभी होता ही है।

ललितपुरमें बोर्डिंग स्थापन।

वीर सं० २४३८ में क्षेत्रपालपर बोर्डिंग सहित संस्कृत एंग्लो पाठशाला खुल गई और १९ छात्र बोर्डिंगमें रहने लगे ।

खामगाम जिला वरारमें नवीन जिन मंदिर व बिम्ब प्रतिष्ठाका उत्सव वैशाख सुदी ३ से १९ तक हुआ था। इसी बीचमें ता: २६ अप्रैल १९११ से ३० अप्रैल तक बंबई दि. जैन प्रान्तिक सभाका नवम वार्षिकोत्सव

खा[illegible]में **सभा** और [illegible]।

रानीव[illegible] [illegible] पदमराज फूलचंद कलकत्तानिवासीके सभापतित्वमें बड़े [illegible] हो गया । सेठ **माणिकचंदजी** भी पधारे थे । कुल १[illegible] प्रस्ताव पास हुए, जिनमें उल्लेख योग्य प्रस्ताव ७ शिखरजी व चंपापुरकी तेरापंथी कोठीके सुधारके विषयमें व नं. १[illegible] वरार प्रांतमें छात्रवृत्ति देनेके लिये था । इस आखरी प्रस्तावका समर्थन हमारे सेठजीने किया था । सेठजीकी प्रेरणासे रा. रा. देवीदास चौरे बी. ए. एल एल. बी. वकील अकोलाने एक बोर्डिङ्ग १६–६–१९१०को **अकोला**में खोल दिया था; की आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी । सेठजीके इशारा करनेसे तुर्त ११००)का चंदा वरार शिक्षाप्रचारक खातेमें होगया तथा सभाके खातोंमें भी ४९०) आए । बाबू करोड़ीचंद आराके उद्योगसे सरस्वती भवन आराके लिये भी ४००) हो गए । भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिने आरा भवनको १९१) नकद व १ प्रति **संस्कृत गोमटसार**की भेट की ।

जब सेठजी ब्रह्मदेशकी यात्रा सहीसलामतीसे जहाज़ व रेल द्वारा पूर्ण करके लौट आए तब आपके भाव

सेठजीके विलायत जानेकी इच्छा।

विलायत यात्राके भी हुए। आपकी इच्छा थी कि लंडनमें एक जैन बोर्डिङ्ग हाउस स्थापित करा दिया जाय जिससे जैनी छात्र व व्यापारी अपने धर्म व खानपान आचारकी रक्षा करते हुए लौकिक लाभ उठा सकें। यह विचार अप्रैल मास १९१२में पक्का भी हो गया यहां तक कि ता: २८ अप्रैल १९१२ के 'प्रगति आणि जिनविजय'में यह प्रसिद्ध भी होगया कि सेठ वालचंद हीराचंद व २-३ गृहस्थों के साथ सेठजी जूनके आरंभमें विलायत जानेवाले हैं। परंतु शरीर-अस्वस्थताके कारण आप जा नहीं सके। विलायत जानेकी उत्कंठा-से आपने कई मास पहलेसे एक माष्टरके द्वारा बंगलेपर इंग्रेजी पढ़ना भी शुरू कर दिया था।

आपका यह विचार कितना पुख्ता था इसके प्रमाणमें पाठकोंको एक कार्डकी नकल बताई जाती है जो सेठजीने ता: ३१ मई १९१२में बाबू सुमतिलाल बनारसको लिखा था।

"Your kind letter of 24th instant to hand and I am very glad to read it. For a long time I am intending of opening a vegetarian or Jain Boarding House at England and still having that intention, I am now thinking over its scheme and will let you know soon in the subject."

अर्थात्—आपका २४ तारीखका पत्र पढ़कर हर्ष हुआ। मैं बहुत दिनोंसे इंग्लैंडमें एक जैन बोर्डिङ्ग खोलनेका इरादा कर

रहा हूं और अब भी वही विचार है। मैं उसका उपाय सोच रहा हूं और आपको शीघ्र इस विषयपर लिखूंगा।

पाठको ! सेठजीका स्वर्गवास थोड़े ही काल पीछे हो गया। यदि उनका जीवन दो चार वर्ष और रहता तो संभव था कि विलायतमें एक जैन बोर्डिंग खुल जाता। अब उनके पीछेके **धनवानोंका कर्तव्य** है कि इस आवश्यकताको पूरी करें।

अलाहाबाद दि० जैन बोर्डिंगका स्थापन।

जिस बोर्डिङ्गके खोलनेके लिये सेठजी बहुत ही उत्सुक थे व जिसके लिये आपने २५०००) का दान कराया था उस बोर्डिंगके खोलनेका मुहूर्त आषाढ़ बदी २ ता० १ जुलाई १९१२ को पार्क रोडपर एक किरायेके बंगलेमें **बाबू शिवचरणलाल** बी० ए० एलएल० बी० रईस-म्युनिसिपल कमिश्नर प्रयागके द्वारा बड़े समारोहसे सरस्वती पूजनके साथ हो गया। बम्बईसे सेठजी स्वयं नहीं आ सके थे पर अपनी सुपुत्री मगनबाईजी व श्रीमती कंकुबाईजीको भिजवा दिया था व ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीको भी काशीसे वहां बुलवाया था। धर्मपत्नी ला० सुमेरचंदजीने सर्व प्रबन्ध योग्य रीतिसे कराया था। मास्टर दीपचंदजी उपदेशक बम्बई प्रान्तिक सभाको सेठजीने यहांकी सुपरिन्टेन्डेन्टीके लिये भेजा था। प्रारंभमें ५ ही छात्र भरती हुए। फिर बढ़ते २ ता० ३१ जुलाई १९१४ तक १५ छात्र बी० ए०, बी० एस० सी०, एम० ए० आदि कॉलेजकी पढ़ाईके अजमेर, सीतापुर, मेरठ, बिजनौर आदिके हो गए। ये सब गोमट्टसारसे लेकर तत्त्वार्थ सूत्र छहढाला तक धर्मशिक्षा लेने लगे। तथा इसके लिये मेयो कॉलेजके

पास ही पीली कोठी नामकी एक हवादार इमारत ९०००) के अनुमानमें खरीद ली गई है तथा इस २५०००) की रकमका ट्रष्टडीड भी हो गया है। मास्टर दीपचंदके उद्योगसे इस बोर्डिंगका काम अब बहुत पक्का हो गया है। बाबू बच्चूलाल मंत्रीका काम बहुत विचारसे करते हैं। स्थापनाके समय सेठजीने अपनी पुत्रीद्वारा ३००) फंडमें दिये, तब सभापति शिवचरणलालने २५०) इस तरह ९६२) का चंदा हो गया। इस बोर्डिंगमें भी बहुत बड़ा लाभ हो रहा है। छात्रोंमें जैनधर्मसे प्रेम बढ़ रहा है। वास्तवमें सेठजीको Will power (आत्मिक दृढ़ता) बड़ी प्रबल थी; यह इसीका ही प्रताप था कि जो वह चाहते थे उस कार्यको कभी न कभी पूरा कराके ही छोड़ते थे।

श्रीमती मगनबाईजीका पंजाब भ्रमण।

पूज्य पिताश्रीकी आज्ञा लेकर परोपकारी सुपुत्रके समान कार्यकुशला श्रीमती मगनबाईजीने श्रीमती कंकुबाई शोलापुर और श्रीमती चंदाबाई आराके साथ ता: २९ मई १९१२ से २ जुलाई तक पंजाबमें भ्रमण करके अपने धर्मोपदेशसे स्त्रियोंमें उत्तेजना दी तथा श्राविकाश्रम बम्बईका प्रचार किया। आपके भ्रमणका संक्षेप हाल यह है:-

ता: १ जूनको **मथुरासे** मेरठ होती हुई **हस्तिनापुरमें** पहुंचकर ता: ३से ८ तक ठहरीं। ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रमका निरीक्षण किया। बाईजीने ५१) व चंदाबाईने ५१) व ३०)के कपड़े, व कंकुबाईजीने ५) आश्रमको भेट किये। बहसूमा ग्राममें दर्शन करके सभा की। यहांसे चलकर **मेरठ** शहरमें आईं। वहां रत्नत्रयपर व्याख्यान देकर

आश्रम बम्बईके लिये ३२९) का चंदा किया। सदरमें भी स्त्रीसमाकी व कन्याओंकी परीक्षा लेकर इनाम बांटा। ता० ११ जूनको **जालंधर** गई। यहां उपदेश होकर २२९) सरस्वती भवन आरा व २४) आश्रमको प्राप्त हुए। कन्या महाविद्यालय देखा। वहां ३०० कन्याएं रहकर पढ़ती हैं। २०००) मासिकका खर्च है। २१ शिक्षिकाएं व शिक्षक हैं। ११ श्रेणियां हैं। ता० १३ जूनको **अमृतसर** जाकर यहां सिक्खोंका मंदिर देखा। ता० १४ जूनको लाहौर गई, बोर्डिंग देखा व स्त्रियोंको श्राविकाचार समझाया। ता: १६ को **देहरादून** आई। यहां धर्मात्मा चमेलीबाईने १००) बम्बई व १००) मुरादाबाद आश्रमको दिये। कुल ३२४) का चन्दा हुआ। तीनों बाइयोंके व्याख्यानोंसे धर्मकी जागृति हुई। यहां १० अजैन बाइयोंने पानी छानकर पीने व रात्रिमें भोजन न करने व मद्य मांस त्यागका नियम किया।

ता. १८ जूनको **हरिद्वार** जाकर कांगड़ी गुरुकुल देखा फिर ता० २०को **मुरादाबाद** आई। वहां श्राविकाश्रमको देखा व जैनधर्म पर उपदेश किया। ता. २४ जूनको **देहली** आई। पहाड़ी धीरज-शाला देखी व शिक्षाप्रचार, सद्विद्या व रत्नत्रयकी दुर्लभतापर तीनों बाइयोंके उपदेश हुए। दूसरे दिन शहरकी शाला देखी व सभामें षट्कर्म व ब्रह्मचर्यपर उपदेश दिया। ता. २६ जूनको प्रयाग आकर बोर्डिंगका मुहूर्त करके ता. २ जुलाईको बम्बई आ गई तथा श्रीमती चंदाबाई देहलीसे वृन्दावन रवाना हुईं। सेठजीने सर्व हाल प्रवासका जानकर इनके कार्यपर सन्तोष प्रकट किया।

श्री शिखरजीकी तेरापंथी कोठीका प्रबन्ध बहुत दिनोंसे

शिखरजीकी तेरापंथी कोठीका व चंपापुर-जीका उद्धार।

खराब था जिसकी लिखित व जबानी शिकायतें सेठजीके पास वर्षोंसे आती थीं। जब लाट साहब शिखरजीपर आए थे तब सेठ हुकमचंद आदिने इसके प्रबन्धार्थ एक कमेटी बना दी थी जिसके मंत्री बाबू धन्नूलालजी व कोषाध्यक्ष सेठ परमेष्ठीदासजी नियत हुए थे। इन्होंने उपाय किया पर काम हाथमें नहीं आया। तब सन् १९१०में शिखरजी पर तीर्थक्षेत्र कमेटीके अधिवेशनके समयपर यह प्रस्ताव कमेटीने पास किया कि वह कमेटी एक माहके भीतर प्रबन्ध हाथमें ले ले नहीं तो अदालती कार्रवाई की जावे। इस कमेटीने फिर भी शिथिलता की। यकायक बाबू छन्नूलाल जौंहरी-प्रबन्धकर्ता तेरापंथी कोठीका देहान्त हो गया। तब सेठजीने उसका प्रबन्ध अति शीघ्र होना उचित समझकर इन्सपेक्टर बाबू बंशीधरको कलकत्ते भेजा। वहांपर यह एक मास ठहरे। तब ता. ३ जुलाई १९१२को कलकत्तके दिगम्बर जैनियोंकी एक पंचायत हुई, जिसमें १९ महाशय कलकत्तेके प्रबन्धार्थ नियत किये। तब बाबू धन्नूलालने वंशीधरजीको लिखित पत्र देकर तेरापंथी कोठी शिखरजी और चंपापुरीका चार्ज लेनेको भेजा। बंशीधरजीने ता. ९ व १० जुलाईको चंपापुरीजीका चार्ज लिया। फिर ७ जुलाईसे २० तक शिखरजीकी कोठीका अधिकार हाथमें लिया, तबसे प्रबन्ध दोनों स्थानोंका ठीक चल रहा है। चंपापुरीजीका प्रबन्ध सेठ हरनारायण भागलपुर तथा तेरापंथी कोठीमें बाबू बंशीधर मैनेजर हैं। हिसाब आदि अब ठीक रहता है। इन दोनों कोठियोंके उद्धारमें सेठजी और उनके सहायक लाला प्रभुदयालजीने बहुत उद्योग किया।

मंदारगिरि क्षेत्रका उद्धार व ५००) की मदद।

भागलपुरसे १६ कोस **मंदार** हिल नामके स्टेशनसे १ मील मंदारगिरि नामका पर्वत है। यहींसे श्री वासपूज्य स्वामीकी मुक्ति हुई है, चरण पादुकाएं हैं कुछ दिनोंसे जैनियोंने जाना आना बंद कर दिया था। बाबू देवकुमारजी आरा-निवासीकी खास प्रेरणासे सेठजीने इस क्षेत्रका सुप्रबन्ध करानेको बाबू वंशीधर इन्सपेक्टरको भेजा। वंशीधर-जीने सेठ हरनारायणजीके दृढ़ प्रयत्नसे इसका प्रबन्ध हाथमें लिया और बालचंद मुनीमको ता० १६ दिसम्बर ११ को नियत कर कोठी कायम कर दी। जबसे इसका प्रबन्ध बराबर चला आरहा है। सेठ हरनारायणजी प्रबन्धकर्ता हैं। बारामतीनिवासी सेठ तलकचंद कस्तूरचंदकी ओरसे पहाड़के मंदिरके जीर्णोद्धारका काम हो रहा है। सेठजीके जीवनमें इस सिद्धक्षेत्रका उद्धार होना भी एक महा पुण्यदायक बात हुई है।

चतुरबाई श्राविका विद्यालय शोलापुर उद्घाटन।

शोलापुर जिलेके दिगम्बर जैनी वास्तवमें उदारचित्त हैं। श्रीमान् सेठ गुलाबचंद रेवचंद गुंजेटी वालोंने अपनी पूज्य माता **चतुरबाई**के स्मरणार्थ ११०००) दान करके श्राविकाओंके लाभार्थ एक श्राविका विद्यालय खोलनेका निश्चय किया व जिसका मुहूर्त श्रावण सुदी ३ गुरुवार ता० १९ अगस्त १९१२ को ठीक करके दानवीर सेठ माणिकचंदजी और उनकी सुपुत्री मगनबाईजीको निमंत्रित किया। श्रीमान् सेठजी अपनी सुपुत्री व श्राविकाश्रमकी

सुपरिन्टेन्डेन्ट बाई यशोदाको साथ लेकर शोलापुर पहुंचे। नियत स्थानमें पं० पामू गोपाल शास्त्रीद्वारा सरस्वती पूजन होकर सभाका कार्य पं० बंशीधरजीके मंगलाचरण पूर्वक प्रारंभ किया। ऊपर लिखित ११०००) के सिवाय सेठ देवचंद हीराचंदकी पत्नी राजूबाईने भी १००००) देना मंजूर किये। इस २१०००) ५ के ट्रष्टि नियत हुए। प्रबन्धकारिणी कमेटीमें मंत्री रावजी सखाराम हुए। सेठ माणिकचंदजीने स्त्रीशिक्षाकी आवश्यकता बताते हुए श्राविका विद्यालयका बोर्ड खोला। उस समय उपस्थित मंडलीने २६५७) की भेट की, जिसमें १०००) झुमाबाई भर्तार गौतमचंद नेमचंदने ५००), नवलबाई भर्तार परमचंद रामचन्द, १०१) सेठ माणिकचन्द हीराचन्द जे. पी., १०१) सेठ हीराचन्द नेमचन्द, १०१) सेठ माणिकचन्द आलंद आदि। श्रीमती श्यामाबाई जैन और राधाबाई हेड मिष्ट्रेस शिक्षिकाएं नियत हुई। इसका काम भी भले प्रकार चल रहा है।

काशी विद्यालयमें सेठजीका गमन

यद्यपि सेठजीका शरीर अस्वस्थ्यतासे थका हुआ रहता था तौभी आपको आवश्यक कामोंके लिये जाने आनेमें जरा भी आलस्य न था। शोलापुरसे लौटकर आए थे कि बनारससे पत्र आने लगे कि यहांपर आकर प्रबन्ध ठीक करें। वहां विद्यालयसे ७ छात्र एकाकर चले गये थे, उनके समझानेका प्रयत्न था। सेठजीकी इच्छा वहां जानेकी बिल्कुल न थी, पर तार व पत्रोंके आनेसे तथा अपनी सभापतिकी जिम्मेदारीको समझ कर आप इच्छा न रहने भी काशी पधारे और ता० २५ अगस्त

१२ को कमेटी करके प्रबन्धमें सब समाधानी की।

वर्धामें दिगंबर जैन बोर्डिंग।

सेठ माणिकचन्दजीकी चलाई हुई बोर्डिंगकी पृथाने बहुतसे स्थानके भाईयोंको इस कामके लिये उत्तेजित कर दिया। उन स्थानोंमें एक मध्य प्रान्तका **वर्धा** स्थान भी है। यहां जैनियोंके ७० घर हैं। आसपास भी जैनी हैं। यहांके भाई प्रति वर्ष रथोत्सव भादों पीछे करते हैं। वीर सं० २४३८में इन्होंने बोर्डिंग खोलनेका निश्चय करके बम्बईसे बोर्डिंगके जन्मदाता सेठ माणिकचन्दजीको निमंत्रित किया। निराल्सी सेठजी अपनी सुपुत्री मगनबाई और श्रीमती कंकुबाईके साथ वर्धा पधारे। आसोज वदी ९को रथोत्सवका समारम्भ होने पर दूसरे दिन ता० २ अक्टूबर १९१२ को सबेरे ८ बजे बोर्डिंग खुलनेका मुहूर्त हुआ। सरस्वती पूजन पं० हीरालाल नागपुरने कराई। फिर सभा हुई। तब सेठजी सभापति नियत हुए। जयकुमार देवीदास चौवरे वकीलने 'विद्यादान' पर मनोहर भाषण दिया। उसके प्रभाव व सेठजीके गुप्त प्रयत्नसे तुर्त १९०००) का चंदा हो गया, जिसमें २१००) सेठ पन्नालाल, २०००) सेठ बकाराम वाड्काजी व १०००) सेठ मानमल पुलगांव इस तरह उदारचित्तोंने दान किया। सेठजीने बोर्डिंग भाड़ेके मकानमें खोला तथा मकान बनवानेका भाईयोंने प्रण किया। ता० ३ को श्रीमती मगनबाई और कंकुबाईजीका 'स्त्रीशिक्षा' पर भाषण होकर १००) बम्बई श्राविकाश्रमके लिये एकत्र होगए। इस बोर्डिंगमें १ वर्षमें ही २४ की संख्या छात्रोंकी होगई, इनमें ५ बोर्डिंगके खर्चसे

रहनेवाले थे। अब इसका काम अच्छी तरहसे चल रहा है। सन् १९१५-१६ की परीक्षामें रत्नकरंड श्रावकाचारमें ८-१० छात्रोंने परीक्षा दी। जिसमें प्रायः सबने अच्छे नम्बर पाये। मगनबाई और कंकुबाईजीने ता० ३की रात्रिको एक सार्वजनिक सभा की "जिसमें स्त्रियोंके कर्तव्य" पर व्याख्यान देकर गाली गाना व होली खेलनेका त्याग कराया। यहां एक महेश्री रईस सेठ जमनालाल हैं जिन्होंने मारवाड़ी विद्यालय व बोर्डिङ्गको चला रक्खा है, ४००००) से ऊपर अपनी रकम प्रदान की है। इनकी धर्मपत्नीने १०१) मदद श्राविकाश्रम बम्बईको दी।

बंबईमें परदेशगमनमें सभा।

ता. १९ अगस्तको बम्बईसे कोल्हापुरनिवासी श्रीयुत कल्लापा बाबाजी सावर्डेकर और श्रीयुत चिंतामणि नागेन्द्र पत्रावली ऐसे दो दि० जैन विद्यार्थी बम्बई जे जे आर्ट स्कूलमें चित्रकलाका पठनक्रम समाप्त करके विशेष शिक्षण लेनेके लिये **सार्डिनी** स्टीमर द्वारा इटाली देशके फ्लोरन्स शहरके लिये रवाना हुए। उस समय हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगके छात्रोंने अभिनन्दन किया व ता. १४ को इनके सन्मानमें १ दावत दी व रात्रिको लल्लूभाई प्रेमानंद परीखके सभापतित्वमें सभा करके सन्मान किया। तब प्रमुखने दोनों छात्रोंको श्री रत्नकरंड श्रावकाचार ग्रंथ भेट किया और कहा कि परदेशमें जिन धर्मपर पूर्ण श्रद्धा रखना। इनके भेजनेमें दक्षिण महाराष्ट्र सभासे बेलगाममें जो फंड हुआ था उसके सिवाय सेठ माणिकचंदजी और सेठ नाथारंगजीने भी छात्रवृत्तियें दीं।

सेठ माणिकचंदजी जैन जातिमें हरएक विद्योन्नतिके काममें अग्रगामी रहते थे। शोलापुरकी मंडलीने आसोज सुदी १०के दिन एक जैन गायन समाज वर्ग स्थापित किया उसका समारंभ दानवीर सेठजीके द्वारा बड़े समारंभसे हुआ था।

गायन वर्ग प्रारंभ।

शोलापुरसे आकर सेठजी **रतलाम** पधारे। अपने स्थापित बोर्डिङ्गका प्रथम वार्षिकोत्सव मिती आसोज सुदी १४ को सबेरे ९ बजे एक भव्य मंडपमें यहांके दीवान रायबहादुर पं० बृजमोहन बी. ए. एल एल. बी. के प्रमुखत्वमें बड़े समारोहके साथ हुआ। सेठजीने सभापतिका प्रस्ताव किया। सेक्रेटरी लल्लुभाई प्रेमानंदने वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी, जिसमें बताया कि अब १९ हूमड़, २ खंडेलवाल, १ बघेरवाल ऐसे २२ छात्र दाहोद गढ़ी, कुशलगढ़ आदिके हैं जो धर्मशिक्षा सिवाय चौथी इंग्रेजी क्लास तक के हैं। पं० कस्तूरचन्दजी व मूलचन्द किसनदासजीके भाषणके पीछे दीवान साहबने अपने भाषणमें बहुतसी उपयोगी बातोंमें यह भी कहा कि जैनियोंमें जीमन वगैरहमें बहुत द्रव्य उड़ाते हैं तथा सुना गया है कि यहांकी ९ जातियोंमें जो ज्योनार होनेवाली है उसमें २ लाख रुपया खर्च हो जायगा, इस रकमको विद्यादानमें खर्चना जरूरी है। बापदादोंके रिवाज़ फेरनेके लिये हिम्मतकी जरूर है। इसका ताजा दृष्टांत यह है कि महाराज रतलामके

रतलाम बोर्डिंगका प्रथम वार्षिकोत्सव।

यहां प्रति वर्ष श्राद्ध होता था जिसमें २०००) ब्राह्मणोंके जिमानेमें खर्च होते थे, महाराजने इस खर्चको बन्द करनेको १५०) मासिकके खर्चमें ब्राह्मणोंके लिये एक बोर्डिंग खोले जानेका हुक्म किया है। व्यापारमें धर्मादा जो कटे सो विद्यामें लगाना चाहिये तथा इस बोर्डिंगके मकानके लिये रजपूत बोर्डिंग जो बंधवानी है उसके लिये भी महाराजा साहब मुफ्त ज़मीन दे सकेंगे।

सेठजीने सभापतिका हार तोरा आदिसे सन्मान किया। यहां विज़िटर कमेटी बनी जिसमें ३० मेम्बर हुए। इनको 'दिगम्बरजैन' पत्र मुफ्त दिया जाना निश्चय हुआ। विद्यार्थियोंकी धार्मिक शिक्षामें परीक्षा लेकर इनाम दिया गया। उद्योगशील सेठजी रतलाममें अपनी लक्ष्मीके सदुपयोग-

अहमदाबाद बोर्डिंगका वार्षिकोत्सव।

को देखकर अहमदाबाद पधारे। कार्तिक वदी २ को सबेरे अनेक परदेशी व शहरके जैन व अजैन प्रतिष्ठित पुरुषोंकी सभामें परीख लल्लूभाईके प्रस्ताव करने व सेठ **माणिकचन्दजी**के समर्थनसे आनेरी मजिस्ट्रेट रायबहादुर जीवनलाल प्राणजीवनदास लाखिया सभापति हुए। लल्लूभाई लक्ष्मीचन्द सेक्रेटरीने रिपोर्ट सुनाई-इसमें कहा कि धर्म शिक्षामें ३१ में २९ पास हुए हैं व श्रीमती रूपाबाईने ३२००) में नवीन धर्मशाला बनवा दी है। फिर स्वयं सेठ माणिकचंदजीने रा० ब० लालशङ्कर उमियाशङ्करकी मृत्युके लिये शोक प्रदर्शक प्रस्ताव पेश किया। पं० कस्तूरचंद आदिके व्याख्यानोंके पीछे प्रमुखने अपने भाषणमें कहा कि सेठ माणिकचन्दजीने अनेक स्थानोंमें बोर्डिङ्ग खोलके तुम्हारी कौमके ऊपर भारी उपकार किया

है । तुम श्रीमानोंको इनका अनुकरण करना चाहिये । " रात्रिको सभामें अंकलेश्वरके वीसा मेवाड़ा दिगम्बर जैन पंचोंको निम्न लिखित जातीय प्रस्ताव करनेके उपलक्ष्यमें धन्यवाद दिया गया।

" कन्याकी उम्र १० वर्ष हुए बिना सगाई या लग्न करना नहीं तथा कन्यासे वरकी उम्र छ वर्ष बड़ी होना चाहिये जो इस प्रस्तावका भंग करे तो दोनों पक्षको ५०१) रु. दंड देना पड़ेगा "

विद्यार्थियोंको इनाम दिया गया व बोर्डिङ्गके लिये करीब ३००) के फंड हुआ ।

भा० दि० जैन महिला परिषद्का तृतीय वार्षिकोत्सव ।

यह बड़े आनन्दकी बात देखनेमें आती थी कि श्रीमती मगनबाईजीने जिस कामको अपने हाथमें लिया उसको वे बराबर नियमित रूपसे करती चली आती थीं । जो भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद सन् १९१०में श्री शिखरजीपर स्थापित हुई थी उसका तीसरा वार्षिकोत्सव श्री जम्बूस्वामीके मेलेपर मथुरामें ता. १ नवम्बरसे ३ तक स्वर्गवासी राजा सेठ लक्ष्मणदासकी धर्मपत्नी चांदबाईके सभापतित्वमें बड़ी सफलतासे हुआ । कायदेके अनुसार प्रमुखाजीका भाषण होनेके पीछे श्रीमती मगनबाईजी संचालिकाने रिपोर्ट सुनाई । ६ प्रस्ताव पास हुए । गंगादेवी मुरादाबाद, व लड़तीबाई इटावा आदिके व्याख्यान हुए । अध्यक्षाने श्राविकाश्रम बम्बईको १०) मासिककी सहायता दी व स्त्री शिक्षा फंडमें १००) का चंदा हुआ ।

सेठजीको हर्षके समाचार ।

सेठजीके पास जबलपुरसे पत्र आया कि जिस बोर्डिंगके बनानेके लिये सिंघई नारायणदासजी २००००) दे गये थे उसके मकान बननेका मुहूर्त आश्विन वदी ९ को दीवान बहादुर सेठ वल्लभदासजीके द्वारा बड़े समारोहके साथ हुआ । शहरके प्रतिष्ठित जन पधारे थे तथा उस समय धर्मपत्नी नारायणदासजीने कई सौ रुपये दान भी किया । जैन मंदिर व संस्थाओंके सिवाय १००) हितकारिणी हाईस्कूल २०) अंजुमन (मुसल्मान) हाईस्कूल व ५० मिशन हाईस्कूलको, भी दिये । सेठजी इस पत्रको पढ़कर बहुत ही आनन्दित हुए क्योंकि जिस बातकी आपकी भावना थी वह बात अपनी सफलताके निकट आने लगी ।

बम्बईमें रथोत्सव तथा प्रान्तिक सभाका १२ वां वार्षिकोत्सव ।

वीर सं० २४३९ मिती पौष कृष्ण ३ से ९ मी तक ता० २६ दिसम्बर १९१२ से १ जनवरी १९१३ तक बम्बईमें रथोत्सवका समारंभ व मुम्बई दि० जैन प्रान्तिक सभाका बारहवां अधिवेशन बड़े समारोहके साथ लखनऊ निवासी बाबू अजितप्रसादजी एम. ए. एलएल. बी. के सभापतित्वमें हुआ । इसके प्रबन्धमें सेठ माणिकचंदजीने खास तौरसे उद्योग किया । इस सभामें श्रीमान् न्यायवाचस्पति पं० गोपालदास, पं० अर्जुनलाल सेठी, कुंवर दिग्विजयसिंह, बाबू जुगमन्दिरलाल एम० ए०, ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी आदि पधारे थे जिससे धर्मोपदेशका अच्छा समागम रहा था । कुल ९ प्रस्ताव

पास हुए । जिनमें मुख्यये थे।(१) ता० २३ दिसम्बर १९१२को जो उपसर्ग दिहलीमें बड़े लाट वाइसरायको हुआ उसपर खेद प्रकाश व उससे रक्षित रहनेपर हर्ष (२) आगामी अधिवेशन पालीताना सिद्धक्षेत्र पर हो। श्रीमान् पंडित गोपालदासजीको **स्याद्वादवारिधिके** पदका अभिनन्दन पत्र व न्यायवाचस्पतिके पदका संस्कृत मानपत्र जो कलकत्तेकी विद्वज्जन समाजसे आया था सो अर्पण किया गया । यहां रथोत्सवकी बोली २५००) की हुई जिसमें सेठ माणिकचन्द पानाचन्दने ख्वासीकी बोली २०१) रु. में ली ।

श्रीमती मगनबाईजीने भी इस मौकेपर ता. २८ और ३१ दिसम्बरको दो स्त्री सभाएं कीं । एकमें श्रीमती नानीबाई गज्जर (अजैन) वनिताविश्रामकी संचालिका और दूसरीमें सेठ सुखानंदकी धर्मपत्नी प्रमुखा हुई । अनेक उत्तम व्याख्यान हुए । श्राविकाश्रम बम्बईको ३६७) का लाभ हुआ इस सभामें प्रान्तिक सभाको कोई फंड नहीं हुआ इसका कारण यह हुआ था कि बाबू अजितप्रसादजीने अपना विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानमें यह बताया था कि जैनियोंको परस्पर खान पनके साथ परस्पर सम्बन्ध भी करना चाहिये ऐसा ही प्राचीन शास्त्रीय नियम था । इस बातको सुनकर यहांके मारवाड़ी लोग भड़क उठे थे । इसीसे धनवानोंको हाथ सकोड़नेका मौका लग गया ।

(देखो पृष्ठ ७२५)

काठमंदिरके प्रवासमें सेठजी.

J. V. P. Surat.

काश्मीरका प्रवास.

(देखो पृष्ठ ७२२)
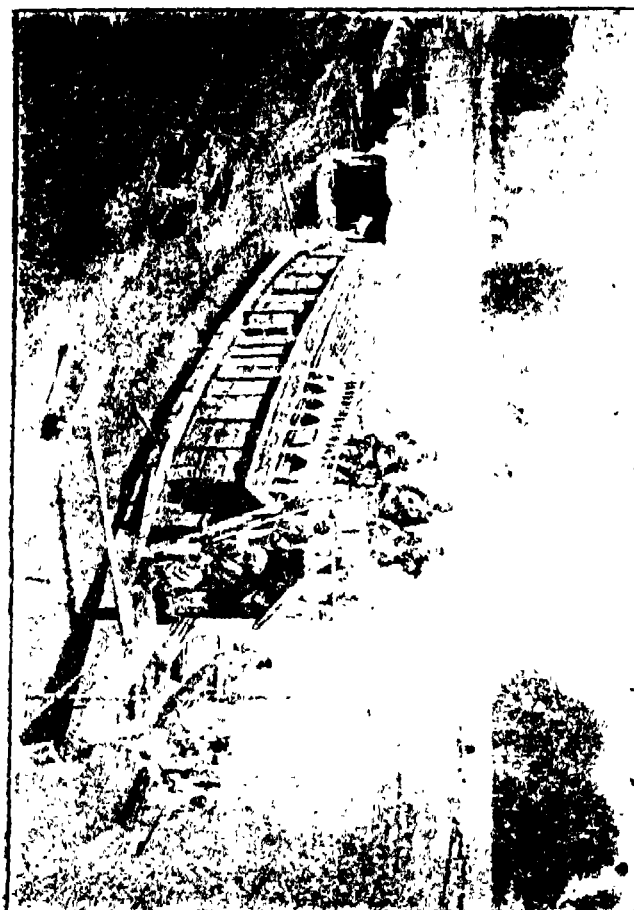
J. V. P. Surat.

सेठ माणिकचंदजीकी चिंतामें वृद्धि और शिखरजीके लिये प्रयत्न।

जबसे वाइसराय लार्ड मिन्टोने श्री शिखरजी पर्वतके पट्टेके बंगाल गवर्नमेन्टके हुक्मको रद्द किया तबसे सेठजीको बहुत बड़ी चिंता थी तथा आप उस पट्टेके पुनः स्थिर करानेके उद्योगमें थे। चूंकि उस पट्टेके लिये ५००००) का बयाना दिया जा चुका था इससे वह रद्द नहीं होना चाहिये था। इसलिये बाबू धन्नूलालजीने ता. १६ मार्च १९११ को अदालती नोटिस भी बंगाल गवर्नमेन्टको दिया था तथा ता. १६ अक्टूबर १९१२को कमेटीके सभासदों द्वारा यह प्रस्ताव भी स्वीकार करा लिया कि गवर्नमेन्टपर मुकद्दमा चलाया जाय।

उधर जो पहाड़का सरवे हुआ था उसमें यह लिखा गया था कि पहाड़के मंदिर और धर्मशालाओंमें सर्व जैनियोंको विना किसीकी इजाज़तके जाने व पूजन करने व ठहरनेका हक है। इस बातकी उजरदारीमें श्वेतांबरी लोगोंने ता: ७ मार्च १९१२ को मुकद्दमा नं० २८८ दायर कर दिया कि दिगम्बरियोंको श्वेतांबरोंकी इजाज़तसे पूजनेका हक है, सो भी उनकी ही आम्नायके अनुसार। इस मुकद्दमेंसे सेठजीको और भी भारी चिंता हो गई। तब लाला प्रभुदयालकी सलाहसे एक मुख्य सभासदोंकी कमेटी कानपुरमें ता० ८ और ९ फर्वरी १९१३ को बुलाई गई, जिसमें सेठजी भी पधारे व कलकत्तेसे धन्नू बाबू व ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी भी आए थे। सहारनपुरसे जम्बूप्रसादजी आदि १४ मेम्बर खास २ कानपुरवालोंने उत्तम स्वागतका प्रबन्ध किया था।

लाला सुलतानसिंह रईस देहलीके सभापतित्वमें प्रस्ताव ३ पास हुए (१) जो शिखरजीकी प्रतिष्ठामें रुपया आया था वह पर्वतरक्षा फंडमें मिलाया जाय (२) मुकद्दमा नं. २८८ चलाया जाय तथा इसका खरचा आधा २ तेरापंथी व बीसपन्थी कोठीसे लिया जाय (३) मुकद्दमेंके प्रबन्धके लिये १९ महाशयोंकी कमेटी बनाई जाय जिसके मंत्री और खजान्ची सेठ हरसुखदास हजारीबाग हों।

यहांसे सेठजी बम्बई आए कि आपको दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाके पंद्रहवें वार्षिक अधिवेशनमें जानेकी फिक्र हुई। यद्यपि सेठजीका शरीर बहुत अस्वस्थ था। अब थोड़ासा भी परिश्रम करने व चलनेसे जिस पगमें चोट थी उसमें दर्द हो उठता था तौभी जाति प्रेम इस कदर था कि आप इधर उधर जाने आनेसे घबड़ाते नहीं थे। दूसरे द० म० सभा पर आपका अधिक प्रेम इसलिये था कि इस सभाके कार्यकर्ता सेठजीकी आज्ञानुसार काम करते व बहुत ही दिलचस्पी दिखलाते थे। अतएव सेठजी कानपुरसे लौटते ही दक्षिणको रवाना हो गए। इस वर्ष सभाका पंद्रहवां वार्षिकोत्सव श्री स्तवनिधि क्षेत्रपर सेठ **रामचंद नाथा**

द० म० जैन सभाका १५वां वार्षिकोत्सव स्तवनिधि।

गांधीके सभापतित्वमें हुआ। हमारे सेठजीने सभापतिके प्रस्तावका अनुमोदन किया। सभामें २१ प्रस्ताव पास हुए जिनमें मुख्य ये थे (१) लार्ड हार्डिंगके उपसर्गसे बचनेपर हर्ष। इसका अनुमोदन सेठजीने किया (२) कोल्हापुर बोर्डिंगकी जमीनपर धर्मशाला व यति

आश्रम बांधनेके लिये श्रीयुत भूपाल आप्पाजी जिरगेने जो २१००) सभाको दिये हैं व मंदिरके खर्चके लिये १००) वार्षिकका उत्पन्न देनेका विचार किया है इसके लिये आभार माना जावे (३) लाहौरके लाला रामचंद एम. ए. सबसे पहले जैनियोंमें सिविल सरविशकी परीक्षामें उत्तीर्ण हुए इस पर आनन्द प्रकाश (४) जैनियोंकी संख्याकी कमीके कारणोंकी जाँच कीजावे (५) सच्चे धर्मोपदेशकोंके भ्रमणका प्रबन्ध कराया जावे (६) **व्यापारमें एकत्रित धर्मादेकी रकम धार्मिक कामोंमें लगाई जावे।** इस प्रस्तावको स्वयं सेठजीने पेश किया। यह सेठजीका खास असली प्रस्ताव था। इसके बदौलत आपने बहुतसा रुपया इधरके लोगोंकी जो यातो खाली जमा रहता व ऐसे वैसे काममें जाता उसे शिक्षा प्रचार आदि उपयोगी कामोंमें खर्च करादिया यहां तक कि सांगलीकी बोर्डिंग इसी रकमसे ही खुल गया। खेती सम्बन्धी वस्तुओंकी प्रदर्शनी भी एकत्र की गई थी जिसको स्वयं सेठजीने अपने हाथसे खोला।

वास्तवमें दक्षिण महाराष्ट्र सभाके कार्य अतिशय श्लाघनीय हुए हैं।

जिस समय यह पंद्रहवी बैठक हुई थी उस समय इस सभा द्वारा कार्योंकी स्थिति निम्न प्रकार थी:—

(१) जैन बोर्डिंग कोल्हापुरमे ६० विद्यार्थी कॉलेज व हाईस्कूलका शिक्षण धर्म शिक्षाके साथ लेते थे। ३२०००) की इमारत विद्यार्थीगृह, चतुरबाई सभागृह, श्री अनंतनाथ मंदिर वगैरह लेकर बंधी हुई थी।

(२) सांगली विद्यार्थीगृहमें १५ छात्र छात्रवृत्ति लेकर सीख रहे थे ।

(३) सुभेदार विद्यार्थीगृह बेलगांवमें २००००) के फंडसे जो स्थापित हुआ था । १८ विद्यार्थी थे ।

(४) हुबली बोर्डिंगमें १८ छात्र थे। इमारतके लिये ६००॰) जमा थे तथा ४०००) की ज़मीन एक गृहस्थने दे रक्खी थी ।

(५) 'जिनविजय' कनड़ीमें मासिक व साप्ताहिक मराठी "प्रगति आणि जिनविजय" ऐसे दो पत्र जारी थे व श्रीयुत चौगड़े कीर्तनके साथ उपदेश करते हुए भ्रमण करते थे ।

(६) स्त्रीशिक्षाके लिये छात्रवृत्तियें देकर अध्यापिकाएं तैयार कराई जा रहीं थीं ।

(७) स्तवनिधि क्षेत्रमें सड़क, तालाब आदि ठीक करानेमें हजारों रुपये खरचे थे।

सेठ माणिकचंदजी एक दक्षिण प्रान्तमें ४ बोर्डिंगोंके द्वारा जैनियोंमें शिक्षाका प्रचार होते हुए देखकर बहुत ही हर्षित थे। आप स्तवनिधिसे लौटते हुए **सांगली** गए । वहांके कामको ठीक होते हुए देखकर आपके चित्तमें वहां इमारत बांधनेकी आ गई क्योंकि सेठजीको मकान बनवानेका व अच्छे हवादार, रोशनीवाले मकानोंमें छात्रोंको रहते हुए देखनेका शौक था । आप अपने समान अपने छात्रोंको भी समझते थे । जैसे आप योग्य महलमें रहते थे ऐसे ही छात्रोंके लिये भी चाहते थे । आप सेठ रामचंद नाथाके

साथ सांगलीके महाराजसे मिले । महाराजने इमारतके लिये ज़मीन देनेका व अन्य प्रकारसे सहायता करनेका वचन दिया । वास्तवमें उद्योग इसको कहते हैं । सेठजी बम्बई आ गए ।

विक्रम संम्वत् १९६९ जेष्ठ मासमें सेठ माणिकचन्दजीने शोलापुर निवासी सेठ वालचन्द हीराचन्द दोशी, सेठ जीवराज गौतमचन्द गांधी और सेठ जीवराज वालचन्द्र गांधीके साथ १ मास तक काश्मीरमें भ्रमण किया । इसका विवरण बहुत कोशिश करने पर हमें नहीं मिल सका परन्तु जो बहुत ही संक्षिप्त हाल जाना गया—नीचे प्रकट करते हैं । बम्बईसे रवाना होकर आगरा पहुंचे और बोर्डिंगकी व्यवस्था ठीक कराई । यहांसे दिल्ली होकर मेरठ पहुंचे और यहांकी बोर्डिंगका निरीक्षण किया । यहांसे हस्तिनापुरके दर्शन करके देहरादून और मसूरी पहाड़ होकर शिमला पहुंचे और यहां मन्दिर स्थापनके लिये प्रेरणा की और दान भी दिया। यहांसे अमृतसर पहुंचे । यहां सोनेका नानकसाई देखा । यहांसे लाहौर जाकर अपनी बोर्डिंगका निरीक्षण किया । यहांसे साम्भरलेक जाकर सैन्धवको देखा । यहांसे जम्बू और रावलपिन्डी होते हुए फिटन व तांगेमें बैठकर काश्मीर पहुंचे । यहां १२ दिन ठहरे । यहां जेलम नदी, बाग, बड़ी मसजिद आदि देखे और केशरके खेत देखकर केशर खरीद की । यहांसे रावलपिन्डी, पेशावर, मुल्तान, करांची, जोधपुरमें जा कर २ या ३ दिन तक ठहरे और जोधपुरसे सीधे श्रावण मासमें बम्बई आ पहुंचे । इस भ्रमणमें दो स्थानपर ग्रुप फोटो लिये गये थे सो अन्यत्र मुद्रित हैं ।

काश्मीरका प्रवास ।

बम्बई गुजराती दि० जैन मंदिर ।

बम्बई नगरमें पुराना गुजराती दिगम्बर जैन मंदिर है । यहां पर माणिकचंद लामचंद नामकी जैन पाठशाला चालू की गई थी । उस मंदिरके मुख्य प्रबन्धक नेमचंदने इसका विरोध किया जिसपर पंचोंमें परस्पर झगड़ा हुआ । मामला अदालत तक पहुंचा । इसमें सेठजीको उलझकर कोशिश करनी पड़ी । इससे मंदिरका छः या ७ हजारका भंडार खर्च हो गया तथा जिन प्रतिपक्षियोंके पास भंडार न था उनका जातीय रुपया खर्च हुआ । अंतमें आपसमें समाधानी हुई । कोर्टने कुछ नियम बनाके पांच ट्रष्टी नियत कर दिये जिनमें सेठ माणिकचंदजी भी एक हुए ।

सेठ पानाचंदजीकी संतान ।

जब सेठ पानाचंदजीका देहान्त हुआ तब आपके अंतिम विवाहसे अर्थात् रुक्मणीबाईसे तीन संतान सजीवित थीं, उनमेंसे लीलावतीका विवाह परोपकारी, विद्याप्रेमी व उद्योगी जौहरी ठाकुरदास भगवानदासके साथ हो गया जिनके संयोगसे वर्तमानमें एक पुत्री है । सं. १९६९में लीलावती १७ वर्षकी थी । इसी समय दूसरी कन्या रतनबाई जो सं० १९६९में १५ वर्षकी थी व पढ़नेमें बहुत ही चतुर थी, जिसने ६ वी श्रेणी तक चंदाराम गर्ल्स हाईस्कूलमें इंग्रेजी शिक्षण प्राप्त किया था सो यकायक बहुत सख्त बीमार होकर सूरतमें जा

एक कन्याका १५०००)का दान।

ता. ३ मार्च १९१३को इस संसारसे चल बसी। इसको शिक्षाका बहुत प्रेम था। मरनेके पहले इसने अपनी इच्छासे ही १५०००) का दान स्त्री शिक्षा-के लिये किया और मातासे कह गई कि इस रकमसे दि० जैन समाजमें स्त्री शिक्षा का प्रचार किया जाय। वास्तवमें दानियोंकी संतान भी दानी होती है। इसके वियोगसे इसकी माता रुक्मणीबाईको तो शोक हुआ ही पर सेठजीको भी भारी दुःख हुआ क्योंकि ऐसी शिक्षित सुशील कन्यासे सेठजी भविष्यमें जैन जातिकी उन्नतिकी बहुत कुछ आशा रखते थे। रुक्मणीबाईको अपनी तीसरी संतान पुत्र ठाकुरभाईको देखकर संतोष हो जाता था। सं० १९६९में यह १३ वर्षका था और नित्य स्कूलमें पढ़ने जाता था। इसका चित्त सरल व कुछ धर्म-परायण है। सेठ पानाचंदकी कीर्तिको यह विस्तृत करेगा ऐसी आशा रुक्मणीबाई व अन्य कुटुम्बी जनोंको है।

श्रीमती मगनबाईजी-का उद्योग।

पिताके समान आलस्य रहित श्रीमती मगनबाईजीने इन्दौर छावनीमें सेठ गेंदनलाल और भूरीबाई द्वारा निर्मापित नवीन जिन मंदिर बिम्ब प्रतिष्ठोत्सव पर जाकर ८ दिन तक कई स्त्री सभाएं करके मिथ्यात्वत्याग, शीलव्रत आदि पर व्याख्यान देकर सैकड़ों स्त्रियोंसे नियम कराए। श्रीमती पार्वतीबाई, गुलाबबाई, हंगामीबाई आदि पढ़ी हुई बहनोंके साथ ज्ञान चर्चा करके बहुत लाभ प्राप्त किया, फिर ता. २८-२-१३ को बम्बई लौट आई।

हम ज्यों २ सेठजीके कृत्योंका विचार करते हैं त्यों २ सेठजीके निरालस्य और शिक्षाप्रेमी स्वभावकी कोमलता देखकर आश्चर्य होता है।

सेठजीका विद्यार्थियोंसे प्रेम और कोल्हापुर गमन।

कोल्हापुर बोर्डिंगके विद्यार्थियोंने एक विद्यार्थी सम्मेलन स्थापित कर रक्खा था जिसका उत्सव ता० २१ अप्रैल १९१२ को बड़े समारोहसे करना विचार कर सांगली, हुबली, शोलापुर व बेलगांव बोर्डिंगोंके छात्रोंको व अन्य गांवोंकी करीब ४०० जैन मंडलीको एकत्रित किया। मि० ए० पी० चौगले, रा० रा० लट्ठे तथा विद्यार्थियोंके **सच्चे पिता सेठ माणिकचंदजीको भी बुलाया था।** ध्वजा पताकाओंसे सुशोभित करके एक मंडप बांधा गया था। सबेरे ही दर्शन पूजादि नित्य कर्मके पीछे सर्वका दूध चायसे सत्कार किया गया। फिर सर्व विद्यार्थियोंका फोटो लिया गया। सेठजीने अखाड़ेका द्वार खोला। कुस्तियोंकी कसरतके साथ २ पटा खेलना, दौड़ना, गेंद फेंकना आदि खेल दिखलाए गए। हरएक खेलमें सर्वोत्तम तीनको इनाम दिये गए। १०॥ बजे प्रोफेसर शिंदेका जादूका खेल हुआ। फिर सर्व मंडलीका विद्यार्थियोंने पक्वान्न मिठाई आदिसे खूब भोजन सत्कार किया। फिर ४ बजे **सभा** प्रारंभ हुई। अजैन विद्वान् भी पधारे थे। सभापतिका आसन **हमारे दानवीर सेठजीको** प्रदान किया गया। गानके बाद श्रीयुत् हाल सेठीने रिपोर्ट सुनाई। उसके भीतर कहा कि द० म० जैन सभाके स्थापनके पहले इस प्रांतमें शिक्षा प्रचारका प्रयत्न रा० रा० चौगले, हंजे, लट्ठे, आवटेने किया था। फिर सभा स्थापित

हुई और **सेठ माणिकचंदजी**का समागम मिला जिससे यह बोर्डिंग व उस सम्बन्धी अनेक सभाएं हुईं। इस बोर्डिंगसे आज तक १५० छात्र पढ़कर चले गए हैं और अब भी ६० पढ़ रहे हैं। फिर छात्रोंके इंग्रेजी व मराठीमें भाषण होनेपर रावसाहब जादवरावने विद्यार्थियोंको उपदेश किया उसमें कहा कि "सत्य बोलो, कर्तव्य कर्म करो तथा अपनी शिक्षामें प्रमाद न करो—यह उपदेश पूर्वके गुरु देते थे, उसीको ग्रहण कर सबको चलना चाहिये। रा० रा० डोंगरे, व लट्ठेके भाषणके पीछे अध्यक्ष सेठजीने कहा कि "यहां विद्यार्थियोंका सम्मेलन देखकर मुझे बहुत ही आनन्द हुआ है। विद्यार्थी अपना २ काम अच्छी तरह करते हैं, यह बात भले प्रकार देखी जाती है। बम्बई बोर्डिंगकी अपेक्षा कोल्हापुर बोर्डिंगकी व्यवस्था अच्छी नजर आती है। इसका कारण रा० रा० लट्ठेका नित्य निरीक्षण है।" फिर रा० रा० डोंगरेने अच्छे निबन्ध लिखनेपर दो छात्रोंको १०) व ५) इनामके दिये। पहलेने १०) बोर्डिंगकी होटलके इमारत फंडमें अर्पण कर दिये।

रात्रिको ८ बजे पूजाका बृहत् समारंभ हुआ। इस तरफ रात्रिको पूजन करनेका खास कर समारंभके अवसरपर बहुत बड़ा रिवाज है। पूजनके पीछे रा. रा. चौगलेके सभापतित्वमें मि. बुगटेने जैनधर्मपर व्याख्यान दिया। दूसरे दिन कोल्हापुर और बेलगांवके विद्यार्थियोंका मैच हुआ, जिसमें कोल्हापुरके विद्यार्थी जीते। सेठ माणिकचंदजी इन छात्रोंकी कार्रवाईको देखकर व अपने तन, मन, धनके उपयोगकी सफलताको जानकर अतिशय आनन्दमें लीन हो गए।

सेठ नवलचंदके तीन संतान हैं। इनमें पुत्र ताराचंदका लग्न

अक्षयतृतीयामें व्यवहारिक कार्य और सेठ नवलचंदजीकी संतान।

सं. १९६३ में सुरतमें हुआ था उससे ताराचंदको १ पुत्रीका लाभ चैत्र वदी १४ सं. १९६५ को हुआ था पर वह वैशाख सुदी ७ को संसारसे कूच कर गई। फिर आषाढ़ सुदी १२ सं. १९६७ को **निर्मला** नामकी कन्याका जन्म हुआ जो अब आनन्दसे बालक्रीड़ामें लवलीन है। इस वीर संवत् २४३९में पुत्री माणिकबाईकी अवस्था १५ वर्षकी हो गई थी। वैशाख सुदी ३ के शुभ दिनमें सेठ नवलचंदजीने अपनी इस पुत्रीका पाणिग्रहण पूना निवासी सेठ जैचंद मानचन्दके सुपुत्र हीरालालके साथ बड़े उत्साहसे जैन विधिके अनुसार बम्बई ऐलक पन्नालाल देशी दवाखानेके जैन वैद्य भरमण्णा बम्मण्णा उपाध्यायसे कराया। यथायोग्य संस्थाओं आदिको दान भी किया गया।

अहमदाबादमें माता रूपाबाई द्वारा १५०००)का औषधालय।

अहमदाबादमें सेठ प्रेमचन्द मोतीचंद दिगम्बर जैन बोर्डिंगके हातेमें थोड़े ही दिन हुए सेठ माणिकचन्दजीकी माबी रूपाबाईजीने एक धर्मशाला बनवा दी थी। एक दिन आपके चित्तमें आई कि विद्यार्थियों व अन्य नगरनिवासियोंको शुद्ध देशी दवाओंका दान हो तो बड़ा उपकार हो। ऐसा विचार कर माताजीने अपने मनका अभिप्राय सेठ माणिकचन्दजीको कहा। सेठजी ऐसे कामोंके लिये सदा ही अग्रगामी रहते थे। आप तुर्त ही अहमदाबाद गए और वहां एक वैद्यको तलाशकर श्रुत पंचमी अर्थात् जेष्ठ सुदी

९ वीर सं. २४३९ व विक्रम सं. १९७० (मारवाड़ी) ता. ९ जून १९१२के दिन प्रसिद्ध वैद्य जटाशंकर लीलाधरके सभापतित्त्वमें सभा करके धर्मार्थ औषधालयकी स्थापना करा दी। माता रूपाबाईने इसके लिये १५०००) हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंग स्कूल बम्बईके ट्रष्ट कमेटीके आधीन कर दिये हैं।

मिती आषाढ़ वदी ४ ता. २२ जून १९१३ को सेठ माणिकचंदजीने सूरतमें फूलकौर कन्याशालाका

फूलकौर कन्याशालामें सेठजी।

दूसरा वार्षिक अधिवेशन सरदार सेठ ईश्वरदास जगजीवनदास ठोरके सभापतित्त्वमें किया। मूलचन्द किसनदासजीने रिपोर्ट सुनाई। बालिकाओंने धर्म सम्बन्धी श्लोक व स्तोत्र सुनानेके पीछे वार्षिक परीक्षाके उपलक्षमें कन्याओंको पुस्तक व वस्त्रादिकका इनाम दिया गया। "पुत्रीने मातानी शिखामण" और "नारी दर्पणमां नीति वाक्यो" पुस्तकें बांटी गईं। इस समय ९२ बालिकाएं थीं जिनमें २४ दिग० व २१ श्वे० जैन थीं। सेठजीने सबका आभार मान व कन्याओंको चतुर देख अपनी लक्ष्मीके सदुपयोगसे परम हर्ष माना।

श्रीमती मगनबाई अपने श्राविकाश्रम द्वारा योग्य कार्य्य होनेमें कमी चूकती नहीं थीं। श्रीमान्

श्राविकाश्रम बम्बईमें सभा।

लॉर्ड हार्डिंग महोदयके वर्षगांठके दिन ता. २० जून १३को श्राविकाश्रममें धर्मपत्नी सेठ हरनारायणदास रामनारायणदासके सभापतित्त्वमें सभा हुई, जिसमें लॉर्ड हार्डिंगकी दीर्घायु होनेका गीत गाया गया मिष्टान्न वितरण हुए तथा शिक्षा विभागसे जो लॉर्ड

और लेडी महोदयके फोटो प्राप्त हुए थे सो बांटे गए। इस समय श्रीमती पार्वतीबाईने ५०) आश्रमको दिये। और भी १००) से ऊपरका फंड हुआ। श्रीमान् सेठ जमनालाल बर्याकी धर्मपत्नीने लार्ड महोदयके फोटोपर व प्रमुखाको हार पहनाया। मगनबाईजीने सबका आभार मान सभा विसर्जन की।

स्त्री शिक्षामें ५०००)

दानवीर सेठजीके भानजे स्वर्गवासी **सेठ चुन्नीलाल झवेरचंदकी** विवाहिता पुत्री कीकीव्हेन उर्फ परसनबाईका मरण ता. २५ जुन १९१३ को हो गया। इस बाईको भी धर्मका अनुराग था सो मरणके पहिले ५०००) स्त्री शिक्षा प्रचार व १००) अन्य धर्म कार्यमें दान किये। इसकी माता जड़ावबाईको इसके वियोगसे बहुत कष्ट हुआ, क्योंकि जड़ावबाईके दो पुत्रियां थीं—एक तो पहले ही चल बसी थी दूसरी अब चल दी। सेठ माणिकचंदजी और मगनबाइजीके समझानेसे जड़ावबाईजीको सन्तोष हुआ और यह अपने जीवनको धर्मकार्यमें लीन करने लगीं।

महावीर ब्रदरहुड स्थापन।

सेठजीको यह जानकर बहुत हर्ष हुआ कि विलायतमें बेरिष्टर जगमन्दिरलालजीके प्रयत्नसे ता. १४-८-१३को **महावीर ब्रदरहुड** स्थापित हुई, जिसके सभापति मि. हर्बर्ट **वारन,** उपसभापति जुगमन्दिरलाल जैनी और मंत्री अलेक्जैन्डर **गॉर्डन** और उपमंत्री उनकी स्त्री **मिस गॉर्डन** हैं जो जैनधर्म धारण करते हैं वे इसके सभासद होते हैं।

सेठ हीराचन्द गुमानजी जैन बोर्डिंग बम्बईमें हीराचन्द गुमानजी बोर्डिंगमें सभा। ता० २ सितम्बर १९१३ को मणीलाल होकमचंद उदाणी एम० ए० एलएल० बी० (जो इसी बोर्डिंगके छात्र थे) के सभापतित्वमें सभा हुई, जिसमें सेठजी भी उपस्थित थे। उस समय ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने जैन समाजोन्नतिके विषयमें व्याख्यान दिया। प्रमुखके विवेचनके पीछे सेठजीने सबको धन्यवाद दे सभा विसर्जन की। इस समय इस बोर्डिंगके छात्र सेठजीको बड़ी ही भक्तिसे देख रहे थे, क्योंकि जिस बम्बई स्थानमें ठहरनेको जगह नहीं मिलती थी वहां अनेकों छात्रोंने इस स्थानमें सुखसे रहकर विद्याका लाभ किया था, इसी उपकारकी स्मृति छात्रोंकी भक्ति सेठजीपर कराती थी।

वर्धा दि० जैन बोर्डिंग व सेठजी। वर्धा दिगम्बर जैन बोर्डिंगका वार्षिकोत्सव मिती आसोज वदी ५ सं० २४३९ ता० २१ सितम्बर १३ को बहुत धूमधामसे हुआ। वहांके भाइयोंके प्रेमसे आकर्षित होकर सेठजी भी पधारे थे। वहांके कार्य्यका निरीक्षण कर आप संतोषित हुए।

रायबहादुरको सन्मान और २५००) का दान। मिती कार्तिक वदी १ ता० १६ अक्टूबर १३ की रात्रिको हीराबाग लेक्चर हॉलमें सेठ कस्तूरचंद इंदौर-निवासीको सर्कारसे रायबहादुरका पद मिलनेके उपलक्षमें सेठ माणिकचंदजीके सभापतित्वमें बम्बईके दिगम्बर जैनोंकी सभा हुई। ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी भी मौजूद थे। चांदीके

कास्केटमें एक सुन्दर मानपत्र सेठ कस्तूरचंदजीको अर्पित किया गया। सेठजीने इस अवसरपर २५००) स्याद्वाद महाविद्यालय बनारसके ध्रुवफंडमें प्रदान किये। हज़ारोंके दानकी प्रथा चलानेमें सेठ माणिकचंदजीकी उदारता ही कारण है।

श्री गजपंथाजी तीर्थके लिये प्रबन्धकारिणी सभा।

गजपंथाजी तीर्थका प्रबन्ध केवल सेठ रावजी नानचंद शोलापुरके ही आधीन था जिससे प्रायः शिकायतें रहा करती थीं। सेठजीने हीराबाग धर्मशालामें ता० २७ अक्टूबर १९१३ को रावजी नानचंद, ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी और बालचंद रामचंद दोशीसे सम्मति करके एक नियमावली व ११ महाशयोंकी सर्व प्रान्तीय प्रबन्धकारिणी कमेटी बनाई, जिसके मंत्री शाह हीराचंद अमीचंद और सभापति सेठ रावजी नानचंद नियत किये। जबसे तीर्थका काम यह कमेटी सन्तोषकारक कर रही है।

सेठजी इन्दौरमें और २ लाखका दान।

इन्दौरके विद्याप्रेमी सेठ तिलोकचंद कल्याणमलने २ लाख रुपया विद्याप्रचारके लिये निकालकर विद्वानोंकी सम्मति ली थी कि किस काममें लगावें तथा इसीलिये कार्तिक सुदी ८ वीर संवत् २४४० ता. ६ नवम्बर १९१३ गुरुवारको आपने खास २ भाइयोंको निमंत्रण कर बुलाया। बम्बई-से सेठजी भी पहुंचे थे। पं० गोपालदासजी, पं० अर्जुनलालजी सेठी, ब्रह्म-चारी शीतलप्रसादजी आदि भी आए थे। बहु सम्मतिसे "**तिलोकचंद जैन हाईस्कूल**" का खोलना निश्चय हुआ व मैनेजिंग

कमेटी बनी। इस सभामें सेठ हुकमचंदजी सभापति हुए थे जिनके नियत होनेके प्रस्तावका समर्थन दानवीर सेठजीने किया था। सेठ माणिकचंदजीकी ओर विशेष लक्ष्य होनेसे उसीके अनुसार ही हाई स्कूल खोलनेका दृढ़ विचार हो गया। यह दान व ऐसा विचार यह सब **सेठजीकी दानवीरताका अनुकरण** है।

सेठजीके कार्योंकी दृढ़ता।

सेठ माणिकचंदजी जिस काममें रुपया लगाते थे उस कामको इतना पक्का कर देते थे कि उस कार्य्यकी नींव कभी भी न बिगड़े। आपने बम्बई, अहमदाबाद, रतलाम बोर्डिंग व हीराबाग धर्मशालाके फंडोंको एक रजिस्टरी हुई ट्रष्ट कमेटीके सुपुर्द कर दिया था कि जिसमें कोई भी उस रकमको सिवाय उस नियत कामके और किसी काममें कोई खर्च न कर सके व यदि कभी किसी ट्रष्टीकी नियत खराब हो तो वह सर्कार द्वारा भी दंडित हो सके।

कोल्हापुर बोर्डिंगकी ट्रष्ट डीड।

कोल्हापुर बोर्डिंगके लिये राजा साहबसे ज़मीन मुफ्त लेनेमें व इमारत बांधनेमें सेठजीने बहुत परिश्रम उठाया था। आपने ता. १४ जुलाई १९१३ के रोज ५ ट्रष्टी नियत कर कोल्हापुर बोर्डिंगकी ट्रष्ट डीड रजिष्टरी कराके बोर्डिंगकी जमीन व इमारतकी अनुमान ५००००) की मिलकियत उनके सुपुर्द कर दी। ५ ट्रष्टी ये हुए-(१) स्वयं सेठजी (२) आप्पा साहब देसाई परगणेतेर दाळ ठाणे हनगंडी (३) चौगले वकील (४) रा. रा. लठ्ठे एम. ए. (५) भूपाळ आप्पाजी जिरगे कोल्हापुर।

ट्रष्ट डीडमें नियत किया कि इस रकमका उपयोग दिगम्बर जैन विद्यार्थियोंके विद्याप्रचार ही में हो तथा जमीनपर विद्यार्थियोंके लाभार्थ व धर्म सम्बन्धी इमारतके सिवाय और कोई इमारत न बने तथा सब छात्रोंको दिगम्बर जैनधर्मका शिक्षण अवश्य लेना पड़ेगा। यह ट्रष्ट डीड सेठ माणिकचंद हीराचंदके हस्ताक्षरसे "प्रगति आणि जिनविजय" पत्र ता. ९ नवम्बर १९१३में प्रगट हो गया है। धन्य है सेठजीकी दूरदर्शिता।

सेठजी द्वारा विद्वान्‌का सन्मान

ता. १९ नवम्बर १९१३को सम्पूर्ण जैनसमाजके सबसे प्रथम I. C. S. कलेक्टरकी परीक्षामें उत्तीर्ण होकर लाहौर निवासी **लाला मनोहरलाल** दिगम्बर जैनके सुपुत्र बाबू **रामलाल** डबल एम.ए. विलायतसे जहाजपर बम्बई बंदरपर पधारे। सेठजी विद्याप्रेमके वश होकर उनके पिता व अन्य महाशयोंके साथ बंदरपर गए। हार तोरासे भले प्रकार स्वागत करके रामचन्द्रजीको गुलालवाड़ीके दिगम्बर जैन मंदिरजीके दर्शन कराकर हीराबाग धर्मशालामें लाकर भले प्रकार ठहराया व सन्मान किया। विद्यार्थियोंसे सेठजीका प्रेम स्वाभाविक होता था।

सेठजीके दानका अनुकरण।

सांगलीनिवासी सेठ देवचंद सांकलचंदने ५०००) मृत्युके पहले धर्मार्थ दिये व यहींके एक जैन व्यापारी रा. रा. बालगौंडा जखगौंडा पाटीलने सांगलीके बोर्डिंगको अपने १०००) की बीमेकी रकम दे डाली तथा शोलापुरके प्रसिद्ध सेठ हरीभाई देवकरण वाले सेठ वालचन्द रामचन्द्रकी माता श्रीमती

बाई रूपाबाजी,-

मातुश्री प्रेमचन्द मोतीचन्दजी.

(देखो पृष्ठ १००) J. V. P. Surat.

मैनाबाई ७२ वर्षकी आयुमें ता० ३ नवम्बर १९१३ को स्वर्गधाम पधारीं। उनकी स्मृतिमें उनके सुपुत्रोंने १९०००) रु० विद्यादानके अर्थ निकाले।

नए वर्ष अर्थात् १९१४ के प्रारंभसे सेठजीका शरीर यद्यपि बाहरसे किसी प्रकारके रोगोंसे पीड़ित नहीं

सेठजीकी शरीर स्थितिमें अशक्तता।

हुआ था पर अंतरगमें आपको बहुत निर्बलता मालूम होती थी—किसी भी बातका बहुत विचार करनेसे आपको चक्कर आ जाया करता था। इस समय आपके चित्तमें बड़ी भारी चिंता श्री सम्मेदशिखर पर्वतरक्षाकी मौजूद थी। लाला प्रभूदयालकी प्रेरणा व तीर्थक्षेत्र कमेटीके परोक्ष प्रस्ताव नं० २ ता० १६–१०–१२ के अनुसार ता. ९ सितम्बर १९१३को हजारीबाग कोर्टमें पर्वतका पट्टा कायम रक्खा जावे या उसका हर्जा २ लाख रुपया मिले। ऐसा मुकद्दमा बाबू भन्नूलाल और सेठ परमेष्ठीदासजीकी ओरसे राजा रणबहादुरसिंह पालगंज और बाबू कृष्णचंद्र घोष मैनेजर कोर्ट ऑफ वार्ड्सपर दायर कर दिया गया। एक मुकद्दमा जो श्वेताम्बरियोंने दिगम्बरियोंको स्वतंत्र पूजनके हक न होनेका किया था, कोर्टमें अटका पड़ा हुआ था। इन्हींकी पैरवी अच्छी तरह हो कि जिसमें परम पूज्य पर्वतकी रक्षा रहे और दिगम्बर जैनियोंकी भक्तिमें कभी कोई अन्तराय न पड़े ऐसी सेठजीको चिन्ता रहती थी और कमेटीके दफ्तरमें आपको पत्रोंके उत्तर देने पड़ते थे। यद्यपि शरीर अशक्त था, पैरोंमें विशेष दर्द होचला था, तौभी आप नियमके अनुसार ही सब काम करते थे। समय पर ही हीराबाग व दूकान

पर जाते व समयपर ही लौटकर आते, सबसे बातचीत करते व समयपर ही रात्रिको शयन करते थे।

स्याद्वाद महा विद्यालय काशीका नवम वार्षिकोत्सव।

इस वर्ष श्री स्याद्वाद महाविद्यालय काशीके संचालकोंने बनारसमें नवम वार्षिकोत्सव ता. २३ से २९-१२-१९१३ तक बड़ी धूमधामसे टौनहालमें मनाया था। सेठ माणिकचंदजी इस संस्थाके सभापति थे। आपको पधारनेके लिये प्रेरणा भी बहुत हुई तथा आना भी चाहते थे पर शरीरकी अशक्तता काशी आनेके लिये गवाही नहीं देती थी इससे आप नहीं आए पर समाजके अच्छे २ व्यक्ति पं. गोपालदासजी, पं. अर्जुनलालजी, जुगमन्दिरलालजी एम. ए., अजितप्रसादजी एम. ए. आदि उपस्थित थे। जर्मनीके प्रोफेसर **हर्मन जैकोबी** भारतमें आए थे। इनका स्वागत भले प्रकार करके सभापति बनाये गये थे। सर्व दिगम्बरियोंकी ओरसे आपको मानपत्र अर्पण किया गया था। ता. २९ दिसम्बरको **मिस ऐनीबिसेन्टने** सभापतिका आसन ग्रहण किया था उस समय भारत जैन महामंडलकी

मगनबाईको जैनमहिलारत्नका पद

ओरसे श्रीमती मगनबाईकी स्त्री शिक्षा प्रचारकी सेवाको ध्यानमें लेकर उनको **जैन-महिला रत्नका** पद प्रदान किया गया और एक मनोहर कविताके साथ भेजा गया। बाई जी जल्सेमें आ नहीं सकी थी।

ता. २६ को सभापति पंडित गोपालदासजी हुए थे। ता. २७ को महामहोपाध्याय डा. सतीशचंद्र विद्याभूषण एम. ए. पी.

एन. डी. प्रन्सिपल संस्कृत कॉलेज कलकत्ता सभापति हुए। तब डा. जैकोबीको मानपत्र दिया गया व भारत जैन महामंडलकी ओरसे "**जैनदर्शनदिवाकर**" की उपाधि डा. जैकोबीको प्रदान की गई। २८ को हर्मन जैकोबी सभापति हुए तब डॉ० सतीशचंद्रको '**सिद्धांतमहोदधि**' का पद दिया गया। ता. २९. को प्रोफेसर डाक्टर ओ० स्ट्रास कलकत्ता सभापति हुए तब हर्मन जैकोबीने अपना व्याख्यान पढ़ा उसमें दिखलाया कि—(Jainism is independent of Budhism, Jainism is even older than Budhism, Budhists Borrowed from Jains the technical term Ashrava.") जैन धर्म बौद्ध धर्मसे स्वतंत्र है, जैन धर्म बौद्धसे भी बहुत पुराना है, बौद्धोंने **आश्रव** का विशेष शब्द जैनियोंसे लिया है। इसी दिन भारत जैन महामंडल की ओरसे सेठ कल्याणमलजी इन्दौरको "**दानवीर**" ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीको '**जैनधर्मभूषण**' व प्रयाग बोर्डिंगके लिये २५०००) दान करनेवाली सुमेरचंदजीकी धर्मपत्नीको '**विद्याप्रेमिणी**' का पद दिया गया। आमद ३०००)की हुई। बाबू देवेन्द्रकुमार, और बाबू नंदकिशोरने बहुत परिश्रम उठाया। तथा बाबू चेतनदास बी. ए. महामंत्री महामंडलने अपने मेम्बरोंको भी बुला लिया था जिससे उसका भी जल्सा साथमें ही हो गया था। सेठजीके पास सर्व रिपोर्ट गई। आपने पढ़कर हर्ष माना कि अपने निमित्तसे खुलनेवाला स्याद्वाद महाविद्यालय प्रसिद्धिमें आ रहा है।

नकल कविता उपाधि जैनमहिलारत्न।

श्री मगनबाई देवि !, जय जयति जिन-पद-सेवि।

तुम धन्य हे सु-प्रयत्न, हो जैन-महिला-रत्न ॥ १ ॥
तुम्हारो सबै स्वच्छन्द, स्वागत करें सानन्द ।
तुम किये बहु शुभ कृत्य, हे चुकीं तुम कृतकृत्य ॥ २ ॥
महिला रहीं जो अज्ञ, तुम्हारी भई सु कृतज्ञ ।
"शिक्षा" प्रचार प्रशस्त, तुम कियो घूमि समस्त ॥ ३ ॥
दै "धर्म"को उपदेश, पूरण कियो उद्देश ।
मृदु मधुर बानी बोलि, शुभ "श्राविकाश्रम" खोलि ॥४॥
"छात्रालयन" खुलवाय, "विधवाश्रमन" बनवाय ।
करि सकै नरन प्रवीन, वह काम तुम करि दीन ॥ ५ ॥
सत् **दानवीर** अमंद, **श्रीसेठ माणिकचंद** ।
जे. पी., कुलालङ्कार, जिन लह्यो शुभ सत्कार ॥ ६ ॥
तिन योग्य तुम सन्तान, कहि सब करै सन्मान ।
यदि पुत्र सों तुम काज, कीन्ह्यो सुता है आज ॥ ७ ॥
"जैनी-महिला-परिषद्"का संस्थापन करने वाली !
करैं कहाँ तक. देवि, प्रशंसा, तुम हो नारि निराली ! ॥८॥
भारत-जैन-महामण्डल यह, आदर सों आराधि ।
"**जैनी-महिलारत्न**" नाम की, अर्पण करै उपाधि ॥९॥
आशा है, निज जनन को, यह सादर उपहार ।
उत्सवके आनन्द महँ, है है अङ्गीकार ॥ १० ॥

कुमार देवेन्द्रप्रसाद जैन-काशी ।

मगनबाईजीकी पुत्रीका विवाह ।

वीर सं० २४४० में मार्गशीर्ष सुदी ३ के दिन श्रीमती मगनबाईजीने अपनी एक मात्र कन्या केशरमती की लग्न सूरतमें जाकर पूना निवासी जेचंद मानचंदके पुत्र चंदूलालके साथ बड़े समारोहके साथ जैन पद्धतिके अनुसार की ।

उस समय सूरतकी फुलकुंवर कन्याशालाकी कन्याओंसे गायन गरबा आदि गवाया व कन्याओंको मिठाई सहित प्याले व अध्यापकोंको भी इनाम दिया। (८९) जैन संस्थाओंमें बांट। केशरमतीको गुजराती, हिन्दीकी शिक्षा होकर अंग्रेजीकी शिक्षा हो रही थी, संस्कृतमें मार्गोपदेशिका चल रही थी। अपनी पुत्रीके पढ़ानेमें माता मगनबाईने कोई कसर नहीं रक्खी थी। तथा इसके वर चंदूलाल भी धर्मप्रेमी व कॉलेजकी पढ़ाई पढ़नेवाले हैं जिनकी द्वितीय भाषा संस्कृत है। अब ये दोनों दम्पति सुखसे बम्बईमें ही निवास करते हैं।

बड़वानीके मेलेमें मगनबाईजी।

श्रीमती मगनबाईजीका चित्त भी समाजसेवा करनेसे कभी उकताता नहीं था। आप पुत्रीके लग्नसे छुट्टी पाकर बम्बई आ श्री बड़वानी सिद्धक्षेत्र-के मेलेमें उपदेशार्थ पधारीं। यह नीमाड़ जिलेमें मऊकी छावनीसे ८० मील एक देशी रियासत है। वहीं श्री **चूलगिरि** पर्वत है जहांसे प्रसिद्ध रावणके पुत्र **इंद्रजीत** और **कुंभकरणने** मुक्ति प्राप्त की है। पर्वतपर ८४ फुट ऊंची श्री ऋषभदेवकी अति प्राचीन दर्शनीय मूर्ति है जिसको **बावन गजाजी** कहते हैं। इसकी बड़ी महिमा है। यहां मालवा प्रान्तिक सभाका वार्षिक जल्सा था। सेठजीको बहुत आग्रह करके बुलाया गया पर सेठजी न आ सके। ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी आए थे। मेला पौष सुदी ८ से १९ तक था। दानवीर सेठ हुकमचंदजी आए थे। माघ सुदी १३, १४, १५ को जल्से हुए। खास बात बावनगजाजीके जीर्णोद्धारके लिये

११४१२) का चंदा हुआ। जिसमें सेठ हुकमचंदजीने २१००) व रोड़मल मेघराज सुसारीने १००१) दिये।

बड़वानी बोर्डिंग स्थापन। कमेटी बनी तथा सुदी १५ को दीवान साहब कुंवर भारतसिंह द्वारा **दिगम्बर जैन बोर्डिंग** खोला गया जिसमें श्रीमती मगनबाईजीने १०१) दिये व श्रीमती मगनबाईके व्याख्यानोंको राज्य वर्गने भी सुना। स्त्रियोंमें आपके जानेसे बहुत जागृति फैली। २०० श्राविकाश्रमके लिये चंदा भी हुआ। बहुतसी स्त्रियोंसे अनेक नियम लिवाये।

पालितानामें प्रांतिक सभाका जल्सा। श्री सेत्रुंजय तीर्थ पालीतानामें बम्बई प्रान्तिक सभाका वार्षिकोत्सव मिती माघ सुदी ३ से ६ तारीख २९ जनवरीसे १ फर्वरी तक था। सेठ माणिकचंदजीको जानेकी बहुत बड़ी आवश्यक्ता थी पर आपने शरीरकी अशक्तताके कारण जाना उचित नहीं समझा पर आपके छोटे भाई सेठ नवलचंदजीको भेज दिया। सभापति श्रीमान् सेठ हुकमचंदजी हुए थे।

४ लाखका दान। आपने अपने व्याख्यानको पढ़ते हुए विद्याप्रचारादि कार्योंके लिये ३ लाखका दान व अपनी धर्मपत्नी कंचनबाईके ओरसे १ लाखका दान किया। १३ प्रस्ताव मामूली पास हुए। सभाके लिये जनरल फंडकी अपीलमें १००१) दानवीर सेठ हुकचंदजीने दिये। कुल फंड करीब १७००) का हुआ। इस समय यात्री ४०००) के अनुमान आया था। सेठ नवलचंदजी और

मूलचन्दजी कापड़ियाने निर्विघ्न मर्वका स्वागत, पूजा व सभाका प्रबन्ध आदि करनेमें खूब परिश्रम लिया।

श्रीमती कंकुबाई, ललिताबाई व कई श्राविकाश्रमकी बाईयोंके पधारनेसे स्त्रियोंमें भी खूब उपदेश हुआ। शरीरकी बीमारीके कारण श्रीमती मगनबाईजीका आगमन नहीं हुआ था।

महिला परिषद्का चौथा वार्षिक उत्सव।

भारत दि० जैन महिला परीषद्की चौथी वार्षिक सभा शोलापुर निवासी सेठ जीवराज गौतमचंदकी धर्मपत्नी रतनबाईके सभापतित्वमें हुआ। २ बैठकें हुई। चार प्रस्ताव पास हुए। श्राविकाश्रमके लिये २५०) का फंड हुआ जिसमें श्रीमती ललिताबाईने स्वयं १०१) दिये। यह बाईजी ऑनररी रूपसे श्राविकाश्रम खुलनेकी मितीसे बराबर काम कर रही हैं। अपनी प्राइवेट कुछ सम्पत्ति है उसमेंसे यह रकम दानमें लगादी है।

शोलापुरमें बोर्डिंगके मकानका खुलना।

शोलापुरमें सेट नाथारंगजी गांधीने २६०००) खर्च करके एक मनोज्ञ मकान बोर्डिंगके लिये बनवाया था तथा सेठ हीराचंद नेमचंद मंत्रीने ऐलक पन्नालालजी जैन पाठशालाके लिये भी एक मकान उसी हातेमें बनवा दिया था। इसीके उद्घाटनकी क्रिया फाल्गुण सुदी २ को इन्दौर निवासी रायबहादुर सेठ कस्तूरचंदजीके सभापतित्त्वमें हुई। शरीर ठीक न रहनेपर भी दानवीर श्रीमान् सेठजी बोर्डिंगके प्रेमवश पं० पन्नालालजी आदिके साथ बम्बईसे पहुंच गए थे। उत्सव सानन्द हुआ तब

प्रमुखने १०००) पाठशाला व ७००) बोर्डिंगके फंडमें दिये व १ वर्षतक दो छात्रोंके लिये मासिक वृत्तियें नियत कीं। सेठजी मकानको देखकर बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि इनको मकान बनवानेका बहुत शौक था तथा इस फंदमें एक अच्छे इंजीनियरसे भी अच्छी सलाह दे सकते थे।

बड़वाहामें बोर्डिंग।

सेठजीको बम्बई लौटकर यह सुनकर और भी हर्ष हुआ कि बड़वाहा जिला नीमाड़में भी श्रीमती भागाबाईने १००००) दानकर अपने पतिके नामसे "**प्यारचन्दशा दिगम्बर जैन बोर्डिङ्ग**" रायबहादुर सेठ तिलोकचन्द कल्याणमलके हाथसे मिती फाल्गुण सुदी २ ता० २६ फर्वरी १४को खुलवा दिया।

धर्मात्मा रूपाबाईजीका परलोक।

बम्बईमें सेठ माणिकचंदजीकी भावज सेठ मोतीचन्द हीराचंदकी धर्मपत्नी श्रीमती रूपाबाईका शरीर वृद्धावस्थाके कारण अशक्त हो गया। खाना पीना कम हो गया। अवस्था भी इस समय ९८ वर्षकी थी। आपने मिती फाल्गुण सुदी ३ सं० १९७०के दिन अपने होशमें णमोकारमंत्रका जाप जपते व श्री चंद्राप्रभु स्वामीका ध्यान करते हुए अपने इस नाशवन्त देहको छोड़कर स्वर्गमें विहार किया। सेठजीके कुटुम्बमें माता रूपाबाईके समान धर्मबुद्धि, वात्सल्यगुणधारी, वैयावृत्यमें सावधान, दान धर्म तप करनेमें लवलीन दूसरी स्त्री नहीं हुई। २२ वर्षकी उम्रमें ही आपको वैधव्य प्राप्त हुआ तबसे बाईजीने अपने धर्मको परम श्रद्धाके साथ आजन्म निवाहा।

आपने अपने जीवनमें उद्यापन सहित जितने व्रत उपवास सहित किये उनकी गिनती इस प्रकार है—

(१) १२३४के उपवास सं० १९५१ से ६० तक।
(२) कवलाहार व्रत।
(३) कर्मदहनके १७५ उपवास।
(४) भक्तामर स्तोत्रके ५१ उपवास।
(५) सहस्रनाम स्तोत्रके १३ उपवास।
(६) तत्वार्थसूत्रके १२ ,,
(७) मुक्तावली व्रत ९ वर्ष तक।
(८) चौवीस तीर्थंकरोंके २४ उपवास।
(९) अष्टान्हिका वृत ८ वर्ष तक।
(१०) रविवार व्रत ९ वर्ष तक।
(११) फलदशमी व्रत १० वर्ष तक।
(१२) चांद्रायण व्रत ६ वर्ष तक।
(१३) निर्वाण तेला ३ दफे।
(१४) फूलव्रत।
(१५) दीपकव्रत।
(१६) फलव्रत।
(१७) द्रव्यव्रत।
(१८) देवव्रत।

इतने व्रतोंके सिवाय आपने श्री **सम्मेदशिखरजी, चंपापुरजी, पावापुरजी व राजगृही आदिकी यात्रा** सं. १९५८ और सं. १९५६ में दान धर्म सहित की।

इस महान् यात्राके सिवाय नीचे लिखीं यात्राएं और भी की।

श्री गोम्मटस्वामीकी यात्रा दो दफे सं. १९४१ और १९६६।

श्री केशरिया, पालीताना, गिरनार सं. १९४३में।

श्री गजपंथाजी सं. १९३६ और १९५६ में।

कुंथलगिरिजीकी दो दफे।

तारंगाजी।

पावागढ़जी।

मक्सीजी आदि।

तथा आपने अपने परिणामोंसे पौना लाखसे अधिकदान अति उपयोगी कामोंमें इस भांति किया—

३५०००) अहमदाबादमें प्रेमचंद मोतीचंद बोर्डिङ्गके लिये।
५०००) १२३४ व्रतके उद्यापनमें।
२५००) बोर्डिंग बम्बईमें कार्तिक सुदी १५को वार्षिक पूजोत्सवार्थ।
६०००) उदयपुरमें दि० जैन पाठशालाके लिये।
१५०००) अहमदाबाद बोर्डिंगमें देशी औषधालयके लिये।
४८००) „ „ में धर्मशालाके लिये।
३३००) „ „ में चांदीके समवशरणके लिये।
११००) „ „ दशलाक्षणीमें पूजनके लिये।
३५००) मुडेटी (गुजरात) में ध्वजादंड उत्सवके लिये।
५५००) मरते समय भिन्न २ धार्मिक कार्योंके लिये।

कुल ८१७००)रुपये।

इनमें छोटे दान नहीं गिने गए हैं। उन सबको जोड़ा जाय तो १ लाखसे अधिक रकम हो जायगी। एक विधवा द्वारा उपयोगी कामोंके दानका किया जाना एक बड़ा भारी उदाहरण अन्य विधवा बहनोंके लिये है।

प्रेमचंद पुत्रके वियोगके पीछे १५ वर्षकी **चंपाबाई** विधवाको आपने नित्य विद्या पढ़ने, शास्त्र स्वाध्याय करने, व्रत उपवासमें लीन रहनेमें उपयुक्त कर दिया और उसकी गोदमें एक सुशील पुत्र **रतनचंद** बिठा दिया जिससे प्रेमचंदका वंश सजीवित रहे और चंपाबाईको कष्ट न हो।

अब चंपाबाई भी रूपाबाईके समान दान धर्ममें लीन हैं, निरंतर रतनचंदके पढ़ानेमें दत्तचित्त हैं, रतनचन्दका विवाह भी कर दिया है और अपनी सुकीर्तिको विस्तारती हुई चौपाटी बंगलेको सुशोभित कर रही है।

माता रूपाबाईका स्मारक।

माता रूपाबाईकी स्मृतिको क़ायम करनेके लिये अहमदाबाद बोर्डिंगमें ता० २८ फर्वरीको एक स्मृति फंड क़ायम हुआ जिसमें छात्रों व सुपरिन्टेन्डेन्टने ७३।=) उसी समय जमा कर लिये। "दिगम्बर जैन" के ग्राहकोंको बाईजीके स्मरणार्थ **श्रीपालचरित्र** भेट किया गया था।

बम्बईमें जैन सभा।

श्रीमन्त सेठ मोहनलालजी, भा० दि० जैन महासभाके सहायक महामंत्री व बुंदेलखंड दि० जैन प्रान्तिक सभाके सभापति यात्रा करते हुए बम्बई पधारे। श्रीमान् सेठ माणिकचंदजीने आपका

बहुत सन्मान किया और मिती चैत्र वदी ६ ता० १८ मार्च १९१४ की रात्रिको हीराबाग धर्मशालामें आपके सभापतित्वमें सभा हुई, जिसमें शामलालजी उपदेशकका 'जीवनके कर्तव्य'पर व्याख्यान हुआ। सेठजीन हार तोरा आदिसे सन्मान करके सभा विसर्जन की।

इन्दौरमें धार्मिक कार्य।

इन्दौरमें रायबहादुर सेठ तिलोकचंद कल्याणमलजीकी माताने तक्कूगंजमें एक नवीन जिन मंदिर निर्माण कराया था जिसकी प्रतिष्ठा पं० बालाबक्स-जीके द्वारा चैत्र सुदी ६ से १२ व ता० ३१ मार्चसे ६ अप्रैल तक बड़े समारोहके साथ हुई। सेठ माणिकचंदजीको बुलाया गया पर आप शरीर अस्वस्थ्यताके कारण तथा इन्दौरमें आवश्यक काम न होनेके कारण नहीं आए थे। सुपुत्री **मगनबाईजी**को भेजा था। मालवा प्रान्तिक सभा नमित्तिक अधिवेशन शोलापुरके परोपकारी सेठ हीराचंद नेमचंदके सभापतित्वमें बड़ी सफलताके साथ हुआ। २०००के अनुमान भाई पधारे थे। पं० गोपालदासजी भी आये थे। तिलोकचंद हाई स्कूल खुलनेका मुहूर्त भी इन्ही दिनोंमें था पर अचानक स्कूलके अधिष्ठाता **पं० अर्जुनलाल सेठी** जयपुर निवासी पर **आपत्ति** आ गई कि उनको **संदेह** पर सर्कारने गिरफ्तार कर लिया और नजरबन्द कर दिया इस कारण वह कार्य तो बन्द रहा। जन संख्या ३००० हो गई थी। माळवा सभाके जनरल फन्डमें ९००) का चंदा हुआ। ११११)के ११ यावज्जीव सभासद हुए। इन्दौरमें **उदासीनाश्रम** खोलना निश्चय होकर सेठ

हुकमचंद, कल्याणमल व कस्तूरचन्द तीनों भाईयोंने दस दस हज़ार याने ३००००) व २०००) फुटकल ऐसे ३२०००) का फन्ड हुआ। मोरेना विद्यालयको सेठ हुकमचन्दने १००००) व रोड़-मल मेघराज सुमारीने १०००) कुल १२०००) का ध्रुव फन्ड हुआ। सेठ कल्याणमलजीकी माताने २५०००) कन्याशालाके लिये दिये जिसका मुहूर्त ता० ६ अप्रैलको हुआ। मुनीम धर्मचंदजीने पालीताना धर्मशालाके लिये कहा-तो तुर्त ही १०००) का चंदा हो गया। श्रीमती मगनबाई, कंकुबाई आदि विद्यावती बहनोंके पधारनेसे बहुतसी स्त्री सभाएं हुई। स्त्री शिक्षा फंडमें ८००) का चंदा हो गया।

एक श्राविकाका वियोग व मगनबाईजीको शोक।

श्राविकाश्रम बम्बईमें जंबूसर जिला भड़ोच निवासिनी श्रीमती **जीवकोरबाई** कई वर्षतक रहकर अर्थ प्रकाशिका आदि ग्रंथोंकी जानकार हो गई थी व उससे बहुत कुछ आशा थी सो बीमार हो गई और वैशाख वदी २ सोमवार ता० १२ अप्रैलको समाधिमरण सहित २५ वर्षकी आयुमें स्वर्गधाम पधारी। मरण पहिले अपनी १५०००) की जायदादमें से ३०००) धर्मार्थ दान कर दिये जिसकी विगत अति उपयोगी जानकर यहां प्रकट की जाती है।

१००१) श्राविकाश्रम बम्बई।
५००) अर्थप्रकाशिका छपानेको।
५००) जंबूसरमें संस्कृत पाठशाला।
१००) धर्म पुस्तकें रखनेकी ४ अलमारीके लिये।

१००) शास्त्रदानके लिये श्रावकवनिता बोधनीका गुजराती भाषांतर " **दिगम्बरजैन** " के ग्राहकोंको देनेके लिये

२०१) पावागढ़ तीर्थमें ।

१००) गरीबोंको औषधिदान ।

१४७) परचूरन भंडार, मंदिर व तीर्थ ।

५०) जैन धर्मकी पुस्तकें मंदिरमें रखनेको ।

५०) ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम हस्तिनापुर ।

५०) श्राविकाश्रम बम्बई, कपड़ा और भोजनके लिये ।

२५) सोजित्रा जैन पाठशाला ।

२५) करमसद ,, ,,

१५) जयपुर शिक्षा प्रचारक समिति ।

१५) बनारस स्याद्वाद महाविद्यालय ।

१५) फुलकोर कन्याशाला, सूरत ।

१५) जैन सिद्धान्त पाठशाला, मोरेना ।

१५) अहमदाबाद दि० जैन बोर्डिंग ।

१५) रतलाम दि० जैन बोर्डिङ्ग ।

१५) वनिताविश्राम, सूरत ।

श्रीमती मगनबाईजीको इस वियोगसे महान् कष्ट हुआ । सेठ माणिकचंदजीको रूपाबाई ऐसी धर्मात्मा भावजके वियोगसे भी शोक हुआ था ।

सेठजीको शोक ।

इतनेमें आपने मालूम किया कि महासभा महामंत्री जैनजातिभूषण मुंशी चम्पतरायजी वैशाख सुदी १२ ता०

१८ मई १९१४ को स्वर्गधाम पधारे। आप महासभाके आजन्म रक्षक रहे थे। इस खबरसे सेठजीका चित्त और भी उदास हो गया।

दिगम्बर जैन डायरेक्टरीका छपकर तैयार होना व १५०००) का व्यय

सेठ माणिकचन्दजीके चित्तमें जो बात बहुत कालसे जमी थी कि दिगम्बर जैनियोंकी संख्या व अवस्थाकी दिखलानेवाली कोई पुस्तक तैयार हो वह कामना इस सन् १९१४में पूर्ण हो गई। बाबू सूरजभानजीने इस विषयमें कार्य प्रारम्भ नहीं किया। तब इसको स्वयं सेठजीने बम्बईमें अपने ही भानजेके भानजे सेठ **ठाकुरदास भगवानदास जौहरीके** अधीन किया। ठाकुरदासने ता. १५ नवम्बर १९०७से इसका कार्य उत्साह पूर्वक करना प्रारंभ किया और ७ वर्षोंके लगाकर परिश्रमसे अब इसकी १ बड़ी पुस्तकको जिसमें १४२३ सफे हैं छपाकर प्रसिद्ध कर दिया जिसका मूल्य ८) रक्खा इस। कार्यमें दौरा करनेवाले डिरेक्टरोंने फार्म भरवाए जिनके छांटनेका काम हीराबाग धर्मशालाके सुपरिन्टेन्ट माणिकचन्द रावजी और भालचन्द्र महादेव द्वारा तथा क्लार्क कुन्दनलाल और गुलाबचन्द लुहाड्या द्वारा हुआ। मुख्य डाइरेक्टरोंने इस तरह प्रांतवार संख्या ली:—

मध्यप्रदेश राजपूताना और मालवा—फतहपुर जिला दमोह निवासी खूबचंद जैन।

संयुक्तप्रांत बंगाल और पंजाब, जुगमन्धरदास जैन बाराबंकी

बम्बई हाता और मैसूर प्रांत बारसीवाले तात्या नेमिनाथ पांगल व अन्य दो कर्मचारी।

कर्नाटक और मद्रासप्रांत कुंभकोणम निवासी एस जयराम । इस पुस्तकमें मुख्य २ शहर व स्थानोंके इतिहास भी दिये हुए हैं।

ऐसी पुस्तककी तैयारीके सेठ माणिकचंद पानाचंद जौहरीके १५०००)से अधिक खर्च पड़े । सेठजी अपनी आंखोंसे तैयार सजिल्द पुस्तकको देखकर अतिशय आनन्दित हुए। और अंतःकरणमें भाई ठाकुरदासके परिश्रमको खूब ही सराहा यह। डायरेक्टरी ८)में दिगंबर जैन पुस्तकालय सूरतसे मिल सक्ती है ।

डालचंद नारायणदास दि० जैन बोर्डिंग जबलपुर ।

जिस बोर्डिंगका मकान बनवानेके लिये सिंहई नारायणदासजी मरनेके समय २००००) देगये थे । उस मकानको बहुत ही उम्दा करीब ५० छात्रोंकेरहने लायक तय्यार करानेमें मंत्री बाबू कंछेदीलाल बी. ए. एल एल. बी. ने बहुत परिश्रम उठाया तथा भवनकी तैयारीमें ४००००) रु. लगे उसको सिंहईजीकी धर्म पत्नियोंने स्वीकार किया । इस भवनके तैयार होनेपर इसके खोलनेका मुहूर्त ता. ३ जुलाई १९१४ को कमिश्नर साहब बहादुरके द्वारा अनेक प्रतिष्ठित महाशयोंके समक्ष किया । इस भवनका नाम डालचन्द नारायणदास दि. जैन स्कूल जबलपुर रक्खा गया तथा १५ मेम्बरोंकी एक ट्रष्ट कमेटी बनगई । सेठ माणिकचन्दजीके हार्दिक उपदेशसे सिंहईजीका द्रव्य एक उपयोगी काममें व्यय हुआ । इस भवन बननेके सिवाय ३५०००) की एक कोठी भी आपकी स्टेटसे बोर्डिंगके आधीन हुई थी। जिसका किराया १५०) मासिक आता है । सेठ माणिकचन्दजी शरीरकी अस्वस्थतासे स्वयं नहीं आएथे पर पत्र द्वारा जानकर बहुतही हर्षित हुए।

(देखो पृष्ठ ७१६) सेठजीका जुबिलीबाग बम्बई.

स्पेशीबैंकका दिवाला और सेठजीके चित्तको धक्का।

श्रीमान् सेठ माणिकचंदजीके चित्तको इस समय एक ऐसा धक्का लग गया था कि जिसके कारण आपका जातीय द्रव्य बहुतसा हानिमें जानेके सिवाय जिन २ संस्थाओंके द्रव्यकी व्यवस्था आपके द्वारा होती थी, उसमेंसे प्राय: सर्वको हानि उठानी पड़ी। उसका कारण यह हुआ कि जिस **स्पेशीबैंक** पर बम्बईवालोंका बहुत बड़ा विश्वास था उसका दिवाला निकल गया। स्पेशीबैंकके शेयर बहुतसे सेठजीने दलालोंके कहनेमें आकर खरीदलिये थे। इस भारी कई लाखकी हानिसे आपके चित्तको इस समय एक बड़ा धक्का लगा था। जिससे श्री शिखरजीकी चिन्ताके सिवाय यह चिंता और भी आपके चित्त-पर बैठ गई। इन्हीके कारण आपका देह और भी भीतर २ अशक्त हो गया, यद्यपि बाहरसे आपको अन्तिम दिनतक कोई बीमारी नहीं आई।

सेठजीका स्वर्गवास और एक सूर्यका लुप्त होना।

मिती श्रावण वदी ९ वीर सं. २४४० व ता. १६ जुलाई १९१४ को सबेरे सदाकी तरह सेठजीने प्रात:काल उठकर श्री जिनेन्द्र चंद्रप्रभु भगवान्-का अभिषेक व पूजन अपने चौपाटीके चैत्यालयमें किया, फिर जाप, पाठ और स्वाध्याय करके प्रतिदिनके समान भोजन करके हीराबाग आए और तीर्थक्षेत्र कमेटीके दफ्तरमें शामको ६ बजे तक काम करते रहे। इसदिन आप बम्बई श्राविकाश्रम व हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगका निरीक्षण करते हुए हीराबाग पहुंचे थे।

वहां बहुतसे पत्र लिखवाए, १ पत्र दि० जैनक्षेत्र आबूजीके प्रबन्ध-कर्ता बाबू पूनमचंद कासलीवालको कोटा रियासतमें भी लिखा जिसकी नकल आपके हस्ताक्षर सहित कमेटीकी कापी बुकमें मौजूद है। शामको भोजनके पीछे आप नियमानुसार समुद्र तटपर कुछ टहल कर लोगोंसे बातें करते रहे व रात्रिको ९॥ बजे तक श्री मगनबाईजीसे अनेक धर्म व जात्युन्नति सम्बन्धी वार्तालाप की। जब वह श्राविकाश्रमको रवाना होगई तब आप चैत्यालयमें गये, दर्शन करके १ घंटे तक सामायिक करते रहे। चैत्यालयसे लौटकर आप शयनालयमें आए और अपनी धर्मपत्नीसे सम्मति ली कि यह चिरंजीव बाबू (जीवनचंद) ४ वर्षका हो गया है। इसे कुछ अक्षर ज्ञान कराना चाहिये। आज गुरुवारका शुभ दिवस है। कल शुक्रवार पड़ जायगा। आप रात्रिको ही करीब ११ बजे पुत्रको अक्षर पढ़ाने और लिखाने लगे, मानों उस बालकको अपने अंतिम समय पर यह शिक्षा देगए कि ज्ञानकी प्राप्तिसे ही तू अपना सच्चा हित समझना। विद्याके प्रेमीने विद्याका संस्कार अपने पुत्रमें कर दिया। इतनेमें आपके उदरमें कुछ दर्द हुआ, आप बाधा निवारणार्थ शौचको गए। लौटकर आये फिर भी शान्ति नहीं हुई। आप फिर गए लौटकर उदरमें अधिक पीड़ा होनेके कारण आप शांत चित्तसे कौच पर लेट गए और अपने भाई नवलचंदजीको बुलाकर कहा कि उदरमें कुछ शूल मालूम होती है। भाईने बाहरी उपचार किया और वैद्य बुलानेको गाड़ी भेजी। इतनेहीमें आप अर्हंत, सिद्ध जपते २ वैद्योंके आनेके पहले ही इस जीर्ण शरीरको छोड़कर स्वर्गधाममें पधार गए। वैद्य आया। उधर भतीजा ताराचंद आया

पर सबने परम प्रकाश रहित जड़पिंजरको ही पाया। वह आत्मा जो इस पर्यायमें सेठ माणिकचन्द कहलाता था नहीं रहा। आपकी शुभ भावना इंग्लैंडमें एक जैन बोर्डिंग स्थापित करनेकी थी। जिसके लिये आपने मरणके दिनको भी बोर्डिंगमें देखते हुए मि. उदाणी एम. ए. से कहा था। यह आपकी भावना पूर्ण नहीं हो सकी।

सेठजीको धार्मिक कार्योंका कितना बड़ा ध्यान था इस सम्बन्धमें आपके लिखे सन् १९-१२-१३ के पत्रकी नकल यहां प्रकट की जाती है जो उन्होंने सेठ रोड़मल मेघराजजी सुसारीको भेजा था।

पत्र नकल सेठ रोड़मल मेघराजजी।

श्रीमान् सेठ रोड़मलजी मेघराजजी सुसारी।

मान्यवर महाशय,

धर्म स्नेहपूर्वक जुहारु। अपरंच आपका पत्र नं० ११४ ता० १४-१२-१३ ई०का मिला। बांचकर हर्ष हुआ कि आप लोगोंने समाजकी उन्नतिका भार अपने ऊपर लिया है। सिर्फ अफसोस इतना ही है कि उस उन्नतिके भारमें मैं आप लोगोंका सहायक नहीं हो सकूंगा। तथापि आशा है कि जब आप सरीखे महानुभाव, उत्साही, उद्यमी, धनाढ्य, समाजसेवाके लिये तन, मन, धनसे कटिबद्ध हो गये हैं, अवश्य ही समाज अपनी उन्नति कर लेगी इसमें शक नहीं। यह भी आशा है कि आप मुझे इसके लिये क्षमा करेंगे।

बावनगजाजीकी मूर्तिका जीर्णोद्धार, तीर्थक्षेत्र बड़वानीजीका सुप्रबन्ध तथा बोर्डिंग हाउसका स्थापन ये तीनों ही कार्य अत्यन्त आवश्यक हैं। मेरी श्रीजीसे यही प्रार्थना है इनके सम्पादनमें आप

महाशयोंको बल प्राप्त हो। इस समय मुझे पूरा विश्वास है कि आप लोग इन तीनों कार्योंको पूरा कर देंगे। इसकी सूचना पानेकी मैं प्रतीक्षा करता रहूंगा।

ता. १९-१२-१३

आपका कृपाकांक्षी,

माणिकचंद हीराचंद।

अंतिम दान।

आपने अपने सर्व स्टेटकी लिखा पढ़ी दो वर्ष पहले ही कर रक्खी थी व करीब ढाई लाखकी मिलकियतका २५००००) का **जुबली बाग** ११००) मासिक किरायेका धर्मार्थ दान कर पहले ही उसकी रजिष्टरी करा दी थी। मरणके पीछे इसका प्रकाश हुआ और जिसने सुना उसने सेठजीकी इस उदारताका धन्यवाद दिया। **सच्चे दानवीरने** अंतसमय तक दानसे अपनी जातिकी महती सेवा करके एक अपूर्व उदाहरण जगतके अनुकरणके लिये स्थापित कर दिया।

अध्याय तेरहवाँ।

दानवीरका स्वर्गवास।

गुजराती आषाढ़ वदी ९ (मारवाड़ी श्रावण वदी ९) वीर सं० २४४० विक्रम संवत् १९७० ता० **श्रावण वदी ९ की** १६ जुलाई १९१४ बृहस्पतिवारकी रात्रि **भयानक रात्रि।** बड़ी भयानक थी कि जब चौपाटीका जीता जागता बंगला महान् दीपकके बुझ जानेसे परम अंधकारमय हो गया। देखते देखते बिना किसीके दिलमें पहलेसे इस बातका खयाल भी आए हुए और बिना किसी महान् कष्टके सेठ माणिकचंदजीका चेतन स्वरूप आत्मा ६२ वर्ष तक औदारिक शरीरकी झोंपड़ीमें रहकर अपने सुकृतमयी जीवनमें महा शुभ कर्मवर्गणाओंका बंधकर तैजस और कार्माण शरीरको लिये हुए किसी वैक्रियक शुभ शरीरमें प्राप्त होकर अपने तन, मन, धनके निःस्वार्थपने दान करनेके महान् फल स्वरूप मनको सातादायक शुभ सामग्रीका लाभ लेता हुआ उस शरीरमें अमररूप या दीर्घकाल स्थायी हो गया। यह नियम है कि जैसा भाव अंत समयमें होता है वैसा ही पर्यायमें जाता है। नर्क और तिर्यंचगतिमें ले जानेवाला रौद्र और आर्तध्यान होता है जो हिंसानंद, मृषानंद, चौर्यानंद, परिग्रहानन्द तथा इष्ट वियोगज, अनिष्ट संयोगज, पीड़ा चिन्तवन, व निदान रूप होता है। तो यह कोई ध्यान सेठ माणिकचन्दजीको न था। परोपकारता, धर्म व जातिकी अवस्था की उन्नति, छात्रोंका

कल्याण, उनको धर्म विद्याका लाभ, श्री शिखरजी पर्वतकी रक्षा व पशुओंकी दया इत्यादिमेंसे कोई न कोई भाव होगा जिसमें सेठजीका मन अटक रहा हो व केवल पंच परमेष्ठी या श्री अरहंतके स्वरूपमें लगा हो यही संभव हो सकता है। यह सब **धर्मध्यान** है। सेठजीको जैन धर्मका पक्का श्रद्धान था। श्रद्धाकी नीवपर जमा हुआ धर्म ध्यान शुभ लेश्यारूप होता है और नियमसे देव पर्यायमें पहुंचाता है। जैन सिद्धान्तानुसार सेठजीकी अंतिम चेष्टा अवश्य इस बातका विश्वास दिलाती है कि दानवीरका आत्मा स्वर्गमें पधार कर उत्तम देव हुआ हो। वास्तवमें ऐसे महान् पुरुष जो परके कल्याण निमित्त अपने आपको बलिदान करते हैं और जगतके अज्ञान और अधर्म मेटनेका उद्यम करते हैं, परम्पराय तीर्थंकर ऐसे महान् पदके अधिकारी होते हैं। सिद्धान्त कहता है कि इस पंचमकालके जन्मे १२३ मनुष्य इस क्षेत्रसे सीधे विदेह क्षेत्रमें जन्म प्राप्त करके उसी भवसे मोक्षको प्राप्त करेंगे। यह पंचमकाल या दुखमाकाल २१००० वर्षका है। इसके तीन २ हजारके ७ भाग किये जावें सो पहले ३००० वर्षके काल विभागमें ६४, दूसरेमें ३२, तीसरेमें १२, चौथेमें ८, पांचवेंमें ४, छठेमें २ तथा अंतिम ७ वें तीन हजारमें एक मनुष्य इस भरतक्षेत्रसे सीधे विदेहमें जन्म ले कर्म काट परमानन्दमई सिद्ध होवेंगे। वर्तमानमें अभी यहां पहला भाग ही वर्त्त रहा है। जब श्री महावीरस्वामी मोक्ष पधारे थे तब चौथे दुःखमा सुखमा कालके तीन वर्ष साढ़े आठ महीने बाकी रहे थे। वीर सं. २४४०में २४३६ वर्ष साढ़े तीन महीने ही पंचमकालको

बीते थे यह ६४ जीव वास्तवमें सेठ माणिकचन्दजी ऐसे धर्मात्मा और परोपकारी तथा जगतके हितमें उद्यमी ही लेसकते हैं। इससे यह भी अनुमान किया जासकता है कि **सेठजीका आत्मा** इस ६४ जीवोंमेंसे एक हो और अब वह विदेह क्षेत्रमें उत्तम मनुष्यकी वज्रऋषभनाराच संहनन (वज्रके समान दृढ़ वेष्टनके जाल, कीले व हड्डीवाली) रूपी देहमें विराजमान हो बालपनेकी क्रीडा कर रही हो। सिवाय उत्तम मनुष्य या देव पर्यायके और किसी भी पर्यायमें सेठजी ऐसे महान् शुभ भाव धारक आत्माका गमन नहीं हो सकता।

सेठजीके सर्व चैतन्यपनेकी चेष्टासे रहित मृतक शरीरको देख देखकर चौपाटी बंगलेके नरनारियोंको शोकने घेर लिया और रात्रिभर सबने महाशोक रुदन व उदासीमें बिताई। सेठजीकी पत्नी-जीवनचन्दकी माता सिर पटक व छाती कूटकर समय समय पर रो उठती थी जिसकी आर्त्तनादको सुनकर कठोर मन भी पिघल जाता था। मगनबाईजी रात्रिको ही तारदेव श्राविकाश्रमसे आई और जिस अपने पूज्य पिताकी शरणको अपना श्वसुर गृहका ममत्व त्यागकर आलम्बन कर रक्खा था उस शरणका इस तरह अकस्मात् निराकरण देख कर महान् आर्त्तध्यानमें मग्न हो गई। वार वार पिताके उस अनबोल कलेवरको, जिसने घंटे पहले अच्छी तरह वर्तालाप की थी अब चेतनता रहित देखकर **मगनबाईजीका चित्त** परम अशरण भावको प्राप्त होगया। धर्मज्ञानके कारण इस बाईको मन कभी आर्त्तध्यानमें व कभी वैराग्यमई धर्मध्यानमें कल्लोलें मार रहा था। **सेठ नवलचंद**को भी अपने जाति प्रसिद्ध नामांकित भाई-

के वियोगसे परम निराधारता प्रकट हुई। रात्रिभर सर्वने उदासीमें बिताई, सवेरा होते ही यह खबर बिजलीकी झड़पके समान बम्बईमें फैल गई, जिसने सुना वही रोता, उदास होता हुआ चौपाटी बंगलेपर आ पहुंचा। बातकी बातमें सैकड़ों जैन और अजैन जमा हो गए। दानवीर सेठ हुकमचन्दजी भी बम्बईमें थे। यह भी तुर्त आए। सेठ सुखानन्दजी भी आए। प्रसिद्ध २ मारवाड़ी व गुजराती कोई भी जैनी ऐसा न था जो इस समय न आया हो। पुण्यात्मा नरके प्रेतको एक बड़ी भारी भीड़के साथ स्मशानमें ले गए और चन्दनादि सुगन्ध वस्तु तथा उत्तम काष्ठमें प्रेतको विराजित कर अग्निसंस्कार किया गया। उस समय सर्व भाइयोंने "**सेठ माणिकचन्दजीकी जय**" ऐसे शब्द किये थे। हरएक सेठजीके साधारण व मिलनसार मिज़ाजको विचार २ कर व इनके कृत्योंको याद करके इनके ऐसे पुरुष जैनियोंमें अब नहीं हैं, यह एक अपूर्व पुरुष थे, अब इनके स्थानको कोई पूर्ति करनेवाला नहीं है, यही परस्पर चर्चा होती थी।

वास्तवमें सेठजीका जीवन एक श्रद्धावान, कर्मवीर, निरालसी, सत्यवादी, स्वावलम्बनधारी जैन गृहस्थीका जीवन था। जिसने अपने तन मनके उपयोगसे अपनी आर्थिक स्थितिको एक साधारण मज़दूरसे लक्षोंके स्वामित्वमें पहुंचा दिया था। बम्बईमें चारों ओर बीसों बंगले और मकान आलीशान सेठजीके हाथसे बनवाए हुए शोभाको दे रहे हैं। **आर्थिक उन्नति** करनेमें सेठजीने अन्याय और असत्यको अपना हथियार नहीं बनाया था। किन्तु सत्य और न्यायसे द्रव्य उपार्जन किया था। यह इसीकी महिमा थी जो

उस धनको दिल खोलकर उत्तम कामोंमें खर्च किया और अपने पीछे महान् भंडार छोड़ गए। आजके दिन भी सेठजी द्वारा स्थापित '**माणिकचन्द पानाचन्द**' नामका फर्म जौहरियोंमें सर्वसे अधिक महत्त्व व नामांकितताको धारण कर रहा है जिसका ताजा प्रमाण यह है कि इसी सन् १९१६ में स्पेशी बेंकके मोतीके स्टाकको एक मुष्ट १९ लाखमें खरीद कर लिया। बम्बईमें और किसी जौहरीकी हिम्मत नहीं हुई जो ऐसे भारी विकट यूरोपियन युद्धके समय इतनी रकमके सौदेको एक साथ कर सके। यह स्थिति **न्यायोपार्जित धन** ही की होती है। जो धन अन्यायसे दूसरोंको कष्ट देकर पैदा किया जाता है वह प्राय: बहुतकाल नहीं टिकता है।

नीतिकारोंने कहा है:—

अन्यायोपार्जितं वित्तं दशवर्षाणि तिष्ठति।
प्राप्ते त्वेकादशे वर्षे समूलं च विनश्यति॥ १॥

अर्थात् अन्यायसे पैदा किया हुआ धन १० वर्ष तक रहता है और ग्यारहवां वर्ष प्राप्त होने पर वह मूल रहित नष्ट हो जाता है। बहुतसी कोठियां कई २ दफे दिवाला निकालकर फिर फिर स्थापित होती हैं। पर सेठ माणिकचंद पानाचंदके फर्मको संवत् १९२७ से आजतक व्यापार करते हुए कभी भी इस कलंकके लगनेका अवसर नहीं प्राप्त हुआ।

सेठ माणिकचन्दजी वास्तवमें सोती हुई दिगम्बर जैन समाजको जागृत करनेके लिये एक महान् पुरुष ही जन्मे थे। उत्साही और उद्योगी सेठजीने जैनियोंको निम्नलिखित उन्नतियोंके मार्गमें डाल कर चिरस्मरणीय उपकार कर दिया है:—

(१) धार्मिक विद्याके साथ २ इंग्रेजी आदि लौकिक विद्याओंका अभ्यास करना और इसीलिये आपके जीवनमें इतने स्थानोंमें छात्राश्रम खुल गए । जैसे—बम्बई, अहमदाबाद, रतलाम, इन्दौर, बड़वाया, बड़वानी, जबलपुर, ललितपुर, वर्धा, अकोला, नागपुर, कटनी, अलाहाबाद, बिजनौर, मेरठ, आगरा, लाहौर, कोल्हापुर, हुबली, सांगली, बेलगांव, मैसूर, कारकल, मंगलोर तथा सारे भारतके जैनछात्रोंको स्कालरशिप देकर उनका पढ़ना आगे जारी करना ।

(२) संस्कृत दिगम्बर जैन साहित्यका प्रचार करना । इसके लिये आपने बम्बई तथा काशीमें संस्कृत विद्यालय खुलवाया व ग्रंथोंके मुद्रणमें पं. पन्नालालजी, नाथूरामजी आदिको सहायता दी व इनके द्वारा पुण्याश्रव कथाकोश आदि ग्रंथोंको प्रकाश कराया व स्वयं पुस्तकालय रख कर अर्ध मूल्यमें व भेट रूप पुस्तकोंका प्रचार किया ।

(३) तीर्थोंका उद्धार व सुप्रबन्ध कराना । सेठजीके प्रयत्नके पूर्व तीर्थोंपर बहुत अन्धेर था । यात्रियोंको बहुत कष्ट होता था । हिसाबादि ठीक नहीं रहता था, सेठजीके प्रभावसे प्राय: सर्व ही तीर्थोंका प्रबन्ध ठीक हो गया व उनकी उन्नति भी हुई । जगह २ धर्मशालाएं बनी । हिसाब वार्षिक प्रकट होने लगा। तीर्थोंके सुधारमें आपके जैसा परिश्रमी विरला ही होगा ।

मुख्यतासे पालीताना, तारंगा, आबू, गिरनार, राज-

गृही, पावापुर, कुन्डलपुर, गुनावा, श्री शिखरजी तथा मन्दारगिरिका उद्धार हुआ। सोनागिरजीके उद्धारके लिये आपने बहुत परिश्रम उठाया। एक मुनीम वहांपर रक्खा जो अब भी मौजूद है पर इसका सुधार आप अपने जीवनमें पूरा न कर सके।

(४) धर्मोपदेशका प्रचार करानेके लिये व जाति सुधारके आन्दोलनके लिये सभाओं व कमेटीयोंके स्थापित करानेमें उद्योग करना। इसीलिये आप बहुतसी सभाओंके सभापति और कोषाध्यक्ष थे।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, बम्बई दि० जैन प्रान्तिक सभा, व द० महाराष्ट्र जैन सभाके सदा तक सभापति रहकर बहुत कुछ उन्नतिका मार्ग शोधा।

(५) कुरीतिनिवारणमें पूर्ण चेष्टित होना—बहुतसा बालविवाह का रुकना आपके उपदेशसे हुआ। हूमड़ जातिके सुधारका आपको बहुत बड़ा ध्यान था। आप यह भी चाहते थे कि हूमड़ जातिके दसा और बीसा दोनों मिल जावें क्योंकि इनमें कोई फर्क नहीं है दोनों ही श्रीजिनेन्द्र देवकी पूजा प्रक्षाल करते व साथ २ खाते पीते हैं और दोनोंके गोत्र एकसे हैं परन्तु इसकी सफलता नहीं हुई। आप इस बातके भी पक्षपाती थे कि वे सर्व दिगम्बर जातियां जो साथ खा पी सकतीं हैं परस्पर सम्बन्ध भी कर सकतीं हैं।

(६) स्त्रीशिक्षाके प्रचारमें पूर्ण उत्साही होना। मगनबाईजी

द्वारा भारतमें स्त्रीशिक्षाकी जागृति फैलना आप ही की अंतरंग इच्छाका प्रभाव था ।

(७) जीवदया प्रचार व मांसाहार त्याग करानेमें पूर्ण खटपट करना । इसके लिये आप पुस्तकें बांटते, इनाम देते, दया प्रचारक संस्थाओंको मदद देते रहते थे। आपने बम्बईमें दो वर्ष तक इस बातकी पूरी २ खटपट की कि जो भैंसे व गाएं दूध देना बन्द करें व फिर दूध देने लायक जब तक न हों तब तक उनको पालनेका एक कारखाना खोलना और उनको कसाइयोंके हाथ बिक्री होनेसे बचाना । आपने जो स्कीम बनाई थी वह व्यापारके ढंग पर थी कि जिन दामोंमें ग्वाले लोग पशुओंको कसाइयोंके हाथ बेचते हैं उन दामोंमें खरीद लेना व गाभिन न होनेपर अच्छे दामोंमें बेचना । इससे नफा भी दिखलाया। इसकी कार्रवाई रेवाशंकर जगजीवन आदिके सम्बंधमें कुछ दिन चली भी, पर सच्चा व ईमानदार कार्यकर्ताके बिना यह काम नहीं हो सका ।

(८) जैन ग्रन्थोंको मुद्रित कराना । आपने अपने पुस्तकालयके साथ २ जैन नियम पोथी, नर्क दुःख चित्रादर्श, छःढाला, दिवालीपूजन, न्यायदीपिका, आदि ग्रन्थ मुद्रित किये थे और उनका बहुत अल्प मूल्यमें प्रचार किया था ।

आपके विचारे हुए काम अपूर्ण व अधूरे जो रह गए हैं उनमें रंगूनमें मांसरहित भोजनालय स्थापित होना, तथा इंग्लैंडमें जैन बोर्डिंगका होना मुख्य है। और सबसे बड़ा काम

जिसको आप कराना चाहते थे वह जयधवल, महाधवल ग्रंथोंका प्रकाश होना है। यद्यपि आपके व सेठ हीराचन्दजीके उद्योगसे इनकी बालबोध लिपियें हो गई हैं पर इनका प्रचार नहीं हुआ था। एक यह काम बड़ा भारी अधूरा रह गया है।

जुबीली बागका दान।

इसके सिवाय आप यह भी चाहते थे कि दिगम्बर जैन धर्मका विद्वत्ता पूर्ण उपदेश सारे भारतमें व विदेशोंमें भी हो। यह कार्य भी होना बाकी है। जिन २ कार्योंसे आपको बहुत प्रेम था उनको सहायता देनेके लिये आपने अपने **जुबलीबाग**का दान कर दिया था और उसकी आमदको नीचे प्रमाण खर्च किये जानेके लिये नियम बांध दिया था।

११००) मासिक किरादेकी आमदनीसे ५०) मासिक मकानकी रक्षाके लिये बचाकर शेषमेंसे—

(१) १४) सैकड़ा हीराचन्द गुमानजीकी सर्व संस्थाओंके निरीक्षणके लिये एक योग्य सुपरिन्टेन्डेन्ट नियत करनेमें।

(२) ७) सैकड़ा—बम्बई प्रान्तिक सभाके परीक्षालयमें।

(३) ७) ,, बम्बई दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी बम्बईके दफ्तर खर्चमें।

(४) १२) सैकड़ा दिगम्बर जैन धर्मके उपदेशके प्रचारमें।

(५) ५०) ,, छात्रवृत्ति देनेमें, जिसमेंसे ३३) सैकड़ा वागड़ प्रान्तवालोंके लिये, ३०) सैकड़ा मध्य प्रान्तवालोंके लिये और ३७) सैकड़ा सर्व प्रकारके छात्रोंके लिये।

(६) १०) सैकड़ा ऊपरके किसी भी खातेमें कमी हो तो पूरी करनेमें ।

१००)

तथा इस ट्रस्ट डीडके ट्रस्टी ५ हैं--(१) सेठ नवलचंद हीराचंद, (२) सेठ ताराचंद नवलचंद, (३) सेठ हीराचंद नेमचंद, शोलापुर (४) सेठ लल्लूभाई प्रेमानंददास, (५) सेठ ठाकुरदास भगवानदास जौहरी मंत्री ।

इसीसे प्रकट है कि आप अपनी धर्म व जातिके कैसे प्रेमी थे । आपके हाथसे **८ व १० लाखका दान** हुआ है । पर जो अति प्रसिद्ध २ काममें आपने दान किया है वह नीचे गिनाया जाता है:—

दानावलि ।

संवत्	नाम काम	रकम दान
१९३९	सूरत मंदिर प्रतिष्ठा	८०००)
१९४०	गोमटस्वामी सीढ़ी बनवाना	१०००)
१९४८	सूरत चंदावाड़ी धर्मशाला	२५०००)
१९५१	पालीताना मंदिर व धर्मशाला	३१००)
१९५५	बम्बई बोर्डिंग	८००००)
१९५६	गुजरात दुष्काल	५०००)
१९५७	बम्बई महा विद्यालय	२०००)
१९५१	कोल्हापुर बोर्डिंग का मकान	२२०००)
१९६१	अहमदाबाद बोर्डिंगके स्थापनेमें	४०००००)
१९६१	बम्बईमें हीराबाग धर्मशाला	१२५०००)

१९६२	काशी स्याद्वाद पाठशाला	२०००)
१९६२	जबलपुर बोर्डिंग	४०००)
१९६२	उदयपुर पाठशाला	६०००)
१९६४	शिखरजी रक्षाफंड	१००००)
१९६४	सूरतमें फुलकौर कन्याशाला	५०००)
१९६४	सं. १९७० तक दि० जैन डायरेक्टरी बनना	१५०००)
१९६५	हुबली बोर्डिंग	१०००)
१९६५	आगरा बोर्डिंगके लिये जमीन	४०००)
१९६५	बम्बई श्राविकाश्रम	२०००)
१९६५	कोल्हापुर चतुरबाई लैक्चरहॉल	४०००)
१९६६	द. महाराष्ट्र जैन सभाको जिन्दगीका वीमा	१००००)
१९६८	रतलाम बोर्डिंग	५५०००)
१९६९	अहमदाबाद देशी दवाखाना	१५०००
१९७०	जुबेलीबागका बृहत् दान	२५००००)
		अनुमान
	जोड़	६९४१००)

सेठजी वास्तवमें दिगम्बर जैन कौममें एक **राजा**के समान थे। आपके स्वर्गवासकी खबर सारे भारतमें पहुंच गई। जगह २ शोक मनाया गया व सभाएँ हुई।

ता० १९ जुलाई रविवारको दिनके १ बजे हीराबाग लेक्चर हॉलमें एक बड़ी भारी सभा हुई **बम्बईमें शोक सभा।** जिसमें दिगम्बरी जैनी भाइयोंके सिवाय श्वेताम्बरी जैनी तथा वैष्णव भी पधारे थे।

सर्व हॉल ऊपरसे नीचे तक खचाखच भर गया था। ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी जो इस समय काशीमें थे सभाके समय तार जानेसे आजके दिन आ गएथे। प्रथम ही पं० खूबचन्दजीने सेठजीके आत्माकी शांतिके लिये श्री शांतनाथ स्वामीकी स्तुति की फिर परीख लल्लूभाई एल० सी० ई० के पेश करने व माणिकचंद बैनाड़ा महामंत्री, बम्बई प्रान्तिक सभाके समर्थनसे **दानवीर सेठ हुकमचंदजी**ने सभापतिका आसन ग्रहण किया।

सेठ हिराचंद नेमचंद शोलापुरने सेठजीके गुण गाए और ये वाक्य भी कहे " सेठजीकी मृत्युसे दि० जैन समाजने एक शांत महान् दानवीर रत्न खोदिया........सेठजी बिल्कुल निरभिमानी, सादे स्वभाव, परमार्थके काममें अतिशय भाग लेनेवाले और अनेक सभा सोसाइटियोंके आधारभूत थे........वे महा पुरुष थे इस लिये अब अपनेको जो उनकी यादगारीमें करनेका है वह यह है कि उनके द्वारा कीं हुई अधूरी योजनाओंको पूर्ण कीं जावें और उनके सद्गुणोंका शक्त्यनुसार अनुकरण किया जावे।

फिर ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने सेठजीकी महिमा वर्णन की जिसमें यह भी कहा कि " स्वर्गीय सेठ साहब अपने जीवनमें एक उच्च और उम्दा जीवनका आदर्श जैन और जैनेतरोंके लिये छोड़ गए हैं। वास्तवमें जैन कौमका पथप्रदर्शक लुप्त हो गया है। उनके गुणका उत्तम लक्षण विद्याकी रुचि है........। "

फिर (श्वे०) पंडित फतहचंद कपूरचंद लालनने कहा "उनके जीवनका उद्देश्य ज्ञान और दया था। और उन्होंने इनको पूर्ण किया है। उनकी मृत्युसे दिगम्बरियोंको ही नहीं परंतु श्वेताम्बर और

सोलापुर व्यायामशालामें. सेठजी.   (११)

स्थानकवासी कौमको भी बड़ा भारी आघात पहुंचा है। उनके हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगसे हरएक जैन लाभ ले सकता है।

फिर जीवदया ज्ञान प्रसारक फंडके मंत्री (श्वे०) मि० लल्लुभाई गुलाबचंदने कहा-"स्वर्गीय सेठ साहबको जीवदयासे बहुत प्रेम था। इस कार्यमें अच्छी सलाह और मदद दिया करते थे........जो हजारों मांसाहारी वनस्पत्याहारी बने हैं, उनके पुण्यमें उनका भी हिस्सा है।"

श्वे० संघपति सेठ रतनचंद तलकचंदने कहा-" धनाढ्य लोग बहुत द्रव्य दान करते हैं परन्तु दानके अंतिमसे अंतिम ढंगकी शुरूआत सेठ माणिकचंदजी हीने की थी। उनका दान शिक्षाके लिये ही होता था"। मि० उदानी एम०ए० ने कहा-" सेठ साहबकी इच्छाएँ बहुत ऊंची थीं। उनका विचार बम्बईमें मांसाहारियोंके सुभीतेके वास्ते एक वेजीटेरियन रसोड़ा और लंडनमें बोर्डिंग स्थापन करनेका था। वे तो गए परन्तु उनकी कमी प्रत्येक जैनको मालूम हुए विना न रहेगी।"

फिर पं० नाथूराम प्रेमीने कहा-"सेठजी साहबने १५ वर्षके भीतर जैन समाजमें एक नया युग खड़ा कर दिया है। वे नित्य शामको भोजन करनेके बाद अपने दीवानखानेमें बैठते थे और उस वक्त उनसे मिलने या सलाह लेने जो कोई भी छोटेसे बड़ा, गरीबसे अमीर तक आता था उसे सन्मान पूर्वक बिठाते, उसका हाल सुनते और उसको योग्य सलाह देते थे। परदेशी जैनियोंसे आप बड़े प्रेमसे बिठाकर उनके देशका, उनके गांवका हाल पूंछते थे कि आपके गांवमें कितने घर जैनियोंके हैं ? पाठशाला स्कूल है या

नहीं ? कितने लड़के लड़की पढ़ने योग्य हैं, फिर आप वहां पाठशाला क्यों नहीं स्थापित करते आदि बातें पूंछते और उन्हें सामाजिक और धार्मिक कार्योंके लिये उत्साहित करते थे ।........सेठजी एक **महात्मा** थे । विद्यार्थियोंके लिये तो आप **कल्पवृक्ष** थे । अंतमें सभापति **सेठ हुकमचंदजीने** जोशदार भाषणमें कहा कि हमारी दिगम्बर जैन कौममें सेठ माणिकचंदजीकी मृत्युसे हुई क्षतिको पूरा करनेको कोई पुरुष नहीं है । हमारी कौमको बड़ा आघात पहुंचा है और उससे हमको बहुत नुकसान हुआ है । सेठ साहबका **स्मारक** अवश्य स्थापित करना चाहिये । " फिर सभापति साहबने उनके कुटुंबियों पर सहानुभूतिसूचक पत्र भेजनेका व स्मारक स्थापनका प्रस्ताव पास कराया । और कहा कि सेठ साहबकी स्मृतिमें मैं नसियां इन्दौरकी धर्मशालामें ५०००) की कोठरियां सेठ माणिकचंदजीके नाममें बनवाऊंगा व २००१) स्मृतिफंडमें यहां प्रदान करता हूं । इस समय ५०१) सेठ गुरुमुखराय सुखानंद, २५१) गुरुमुखराय निहालचंद, २५१) नाथारंगजी गांधी बम्बई, २०१) जौहरी अनूपचंद माणकचंद बम्बई, २०१) खेमचंद मोतीचंद, १०१) हीराचंद नेमचंद शोलापुर, १०१) देवचंद धनजी गुनौटीवाले, १०१) कीकाभाई कसनदास झवेरी, १०१) सूरजमल लल्लूभाई, इस तरह ३८७२) का चंदा उस वक्त हुआ ।

लल्लूभाई प्रेमानंदने आभार मान श्री महावीर स्वामीकी जय बोलकर सभा विसर्जन की ।

बम्बई स्मारक फंडके प्रबन्धके लिये नीचे लिखे ११ महाशयों-

की कमेटी नियत है। इस फंडसे संस्कृत प्राकृत दिगम्बर जैन ग्रंथोंको ही प्रकाशित करना व मूल्य लागत मात्र रखना तय हुआ है। कमेटी कभी कोई देश भाषाका महत्वपूर्ण ग्रंथ भी प्रकाशित कर सकेगी। इसने अब तक ये ग्रंथ प्रकट किये हैं—

१ लघीयस्त्रयादि संग्रह—इसमें भट्टाकलंक देवकृत लघीयस्त्रयादि संग्रह सटीक, आचार्य अनंतकीर्तिकृत लघु सर्वज्ञसिद्धि और बृहत् सर्वज्ञसिद्धि तथा अकलंकदेव कृत स्वरूप संबोधन मूल्य ।≈)

२—सागारधर्मामृत सटीक—पंडित आशाधरकृत ,, ।≋)

३—विक्रांतकौरवीय नाटक—श्री हस्तिमल्लकृत ,, ।≈)

४—पार्श्वनाथ चरित्र—वादिराज सूरिकृत ,, ॥)

५—मैथिली कल्याण नाटक—कवि श्री हस्तिमल्लकृत ,, ।)

६—आराधनासार सटीक—मूल गाथा श्री देवसेनाचार्यकृत और संस्कृत टीका ,, ।)॥

७—जिनदत्त चरित्र—आचार्य गुणभद्र कृत ,, ।)॥

८—प्रद्युम्न चरित्र—आचार्य महासेनकृत ,, ॥)

९—चारित्रसार—श्री चामुंडराय विरचित ,, ।≈)

१०—प्रमाणनिर्णय—श्री वादिराजसूरिकृत ,, ।)

कमेटीके मेम्बर।

१—रायबहादुर सेठ स्वरूपचंद हुकमचंद।

२— ,, तिलोकचंद कल्याणमल।

३— ,, ओंकारजी कस्तूरचंद।

४—सेठ गुरुमुखराय सुखानंद बम्बई

५— ,, हीराचंद नेमचंद आनरेरी मजिष्ट्रेट शोलापुर

६–मि० ठल्लूभाई प्रेमानंद परीख एल० सी० ई०

७–सेठ ठाकुरदास भगवानदास जौहरी

८–ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी

९–पंडित धन्नालालजी

१०–पं० खूबचंदजी

११–पं० नाथूराम प्रेमी (मंत्री)

सम्पादक " दिगम्बर जैन " ने भी एक स्मारक फंड स्थापित किया और अपने ग्राहकोंके द्वारा १३९१।–) एकत्र किया है और उसमें सेठजीके कुटुंबियोंने ५००) की सहायता की है। इससे यह सुन्दर जीवनचरित्र और अन्य उपयोगी दि० जैन साहित्य प्रकट किया जायगा।

सेठजीकी खबर पाते ही बहुतसे नगरोंमें सभाएं हुईं, कहीं बाजार बंद रहे और सैकड़ों सहानुभूति सूचक तार व पत्र आए।

कोष्टक बाबत सभा।

	तारीख सभाकी	स्थान	सभापति।
१.	१९–७–१४	बम्बई	दानवीर रायबहादुर सेठ हुकमचन्दजी इन्दौर।
२.	१९–७–१४	सूरत	सभापतिके स्थानपर सेठजीका फोटू रक्खा गया।

१. करीब ४०००) स्मारक फंड हुआ और ५०००) रुपयेसे इन्दौर बोर्डिङ्गमें सेठजीके नामका एक मकान बनानेकी सभापतिने इच्छा प्रकट की जो बन चुका है।

२. 'दि० जैन' द्वारा स्मारक फंड चालू हुआ उसीवक्त करीब २००) रु. भरे गये।

तारीख सभाकी	स्थान	सभापति।
३. २१–७–१४	अंकलेश्वर	
४. २१–७–१४	बड़ौदा	सेठ लालचन्द कानदासजी
५. २२–७–१४	व्यारा	
६. २२–७–१४	अलाहाबाद	श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद शुक्ल मार्फत निखिल भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलन।
७. १५–८–१४	बेलगांव	एस. एम. अंकले।
८. २६–७–१४	मेरठ	
९. २६–७–१४	अलाहाबाद	लाला होशियारसिंहजी जैन मुजफ्फरनगर।
१०. २१–७–१४	आलन्द	अध्यक्ष माणिकचन्द मोतीचन्दजी।
११. २५–७–१४	झालरापाटन सिटी	
१२. २९–७–१४	रणासण	सेठ पूनमचन्द साकलचन्दजी
१३. १९–७–१४	बोधेगांव	
१४. १९–७–१४	रतलाम	
१५. २०–७–१४	अहमदाबाद	सेठ रूपचन्दजी मुनीम गोर्धन-मिल्स, मन्दसौर।

---

३. ८२।) स्मारक फंडमें भरे गये।

४. ४००) स्मारक फंडमें हुए।

५. २४॥) स्मारक फंडमें हुए।

	तारीख सभाकी	स्थान	सभापति ।
१६.	२०–७–१४	बंबई	स्या. वा. न्या. पं. गोपालदासजी बरैया ।
१७.	२३–७–१४	हस्तिनापुर	अधिष्ठाता ऋषभब्रह्मचर्याश्रम ।
१८.	२३–७–१४	झाबुआ	
१९.	२१–७–१४	कलकत्ता	श्रीमान् बाबू धन्नूलालजी जैन
२०.	२२–७–१४	दिल्ली	सेठ जग्गीमलजी जैन
२१.	२१–७–१४	फतहपुर	मेहता माणिकचन्द्र छगनलालजी
२२.	२८–७–१४	मुलतान	
२३.	२४–७–१४	बड़वानी	बाबू देवीसहायजी स्टेट एका०

इसके सिवाय प्रान्तिज, पावागढ़, पादरा, सोजित्रा, बोरसद, सोनासण, आमोद, बाकरोल, सायमा, शोलापुर, कोल्हापुर, दाहोद, भावनगर, ईडर, मांडवी, करमसद, वेड़च, वलासण, डबका, मक्षिआव, इन्दौर, नांदगांव, महुआ, मधुवन, मालावाड़ा, वसो, खंडवा, रणासण, गोटेगांव, होसूर, राणापुर, बनारस, लाकरोड़ा, जबलपुर, बोधेगांव, मायज, कुशलगढ़, लाहौर, ओरण, सतना, गया, अजमेर, मैसुर, सिवनी, बिजनौर, बड़ौत, ललितपुर, फलटन, भागलपुर, बड़नगर, वर्धा, शाहपुरा, बेलगांव, नासिक, बाराबंकी, मुरवाड़ा इत्यादि अनेक शहरों और गामोंमें शोकसभाएं हुई थीं और कई स्थानोंपर तो एक दिनके लिये व्यापारधन्दा बन्द कर दिया था और मन्दिरोंमें पूजन की गई थी ।

६. सेठजीके अन्तिम ढाई लाखके दानके लिये कुटुम्बियोंको धन्यवाद ।

कोष्टक सहानुभूतिसूचकपत्र जो आये।

संख्या	तारीख	नामावली	स्थान
१.	१७-७-१४	सेठ मूलचंद किसनदास कापड़िया-सं० "दिगम्बर जैन"	सूरत
२.	२१-७-१४	रा० रा० दोशी दलुचंद जैन	कुंभारगांव
३.	२८-७-१४	दिगम्बर जैन पंच	घायज
४.	२४-७-१४	रोड़मलजी मेवराजजी	सुसारी
५.	२६-७-१४	सेठ भीमचन्द्र टोडरमलजी	उदयपुर
६.	२७-७-१४	Ugrasen Jain	मेरठ U .P.
७.	२०-७-१४	रेवचन्द छगनलालजी जैन	रंगून
८.	२८-७-१४	समस्त प्रयागस्थ जैन पंच मा. दीपचन्द परवार सुपरिन्टेन्डेन्ट	अलाहाबाद
९.	२५-७-१४	रामलाल मुरारीलाल जैन	छावनी जालंधर
१०.	२५-७-१४	श्रीमती राधा	छावनी जालंधर
११.	२५-७-१४	दयाचंद गोयलीय, वैरूनीखंदक,	लखनऊ
१२.	२१-७-१४	हीराचन्द्र सखाराम कोठारी	मु० आलंद
१३.	२५-७-१४	बाबू धूलचंद्र धनराजजी महेता	कुशलगढ़
१४.	२२-७-१४	देवीदास शंभुराम जैन	मुलतान सिटी
१५.	२५-७-१४	दिगम्बर जैन सभा	झालरापाटन सिटी
१६.	२७-७-१४	दिगम्बर जैन पंच	मालावाड़ा
१७.	२९-७-१४	पूनमचंद सांकलचंद	रणासण
१८.	३-८-१४	दगडुसा सेवकदास	सामोड़ा
१९.	९-८-१४	घासीराम परवार दि० जैन	पावापुरी

संख्या	तारीख	नामावलि	स्थान
२०.	८–८–१४	गोविन्द नरसिंह सिखेर (अजैन)	कोल्हापुर
२१.	१–८–१४	प्रबन्धकर्त्ता स्या. महाविद्यालय	बनारस सिटी
२२.	१–८–१४	छोटालाल बाबरदास	करमसद
२३.	१–८–१४	श्रीमती लाजवन्तीबाई	सरधना
२४.	१२–८–१४	दशाहूमड़ दिगम्बर जैन पंच	पाटनाकुआ
२५.	१२–८–१४	दिगम्बर जैन पंच	बुहारी
२६.	५–८–१४	किसनदास ईश्वरदास	जलालपुर
२७.	१२–८–१४	बलवन्त बापुराव क्षीरसागर	बोधेगांव
२८.	१२–८–१४	मंत्री जैन सभा	कालका
२९.	८–८–१४	दिगम्बर जैन पंच	हरदा
३०.	८–८–१४	सुरजमल जैन	हरदा
३१.	१९–८–१४	दिगम्बर जैन पंच	बारसी
३२.	१२–८–१४	बाबू सुधारसीलाल जैन	अलीगढ़
३३.	२७–७–१४	भट्टारक सुरेन्द्रकीर्तिजी	सोजित्रा
३४.	२१–७–१४	दिगम्बर जैन पंच	वलासण
३५.	२२–७–१४	नाथालाल सोभागचन्द	ईडर
३६.	२२–७–१४	दिगम्बर जैन पंच	बड़ू
३७.	२२–७–१४	दिगम्बर जैन पंच	महुआ
३८.	२१–९–१४	बालचन्द सखाराम आदि	मोहोल
३९.	२१–७–१४	सौ० काशी	अंकलेश्वर
४०.	२२–७–१४	मैनाबाई जैन पाठशाला	ईडर
४१.	२३–७–१४	नाथीबाई	करमसद

संख्या	तारीख	नामावलि	स्थान
४२.	२२–७–१४	अप्पाराव वकूर	बिरापुर
४३.	२२–७–१४	पं० माणिकचन्द जैन सु. जैन बोर्डिंग	बिजनौर
४४.	२२–७–१४	सेठ हरजीवन रायचन्द	आमोद
४५.	२१–७–१४	ईश्वरलाल ठोलिया	जयपुर
४६.	२१–७–१४	संगप्पा मल्लप्पा अंकले	बेलगांव
४७.	२३–७–१४	वीरचन्द्र कोदरजी	फलटण
४८.	२६–७–१४	रायबहादुर सेठ कस्तूरचन्दजी	इन्दौर
४९.	२३–७–१४	सकल जैन पंच	नांदगांव
५०.	२२–७–१४	ब्रह्मचारी हेमसागरजी	करमसद
५१.	२३–७–१४	बलीभद्र तुकाराम पानगांवकर (अजैन)	पूना
५२.	२४–७–१४	पानाचंद कुबेरदास	वेड़च
५३.	२२–७–१४	बाबू सुन्दरलाल बैनाड़ा	झालरापाटन सिटी
५४.	१८–७–१४	मोहनलाल हेमचन्द्र (श्वे०)	अहमदावाद
५५.	१८–७–१४	छोटालाल घेलाभाई गांधी	अंकलेश्वर
५६.	,,	वीसा मेवाड़ा पंच समस्त	,,
५७.	१८–७–१४	परीख चुन्नीलाल प्रेमानन्ददास	बोरसद
५८.	,,	परीख जेठालाल प्रेमानन्ददास	,,
५९.	१८–७–१४	रतलाम मा. पा. दिगम्बर जैन बोर्डिङ्गके सु. और विद्यार्थीगण	रतलाम
६०.	१९–७–१४	समस्त दिगम्बर जैन पंच	रतलाम

संख्या	तारीख	नामावलि	स्थान
६१.	,,	मैनेजिङ्ग कमेटी मा. पा. दिगम्बर जैन बोर्डिंग	रतलाम
६२.	१८–७–१४	केशवलाल डाह्याभाई बी. ए.	अहमदाबाद
६३.	१८–७–१४	कालीदास जसकरण जवेरी बी. ए. एलएल. बी (श्वे०)	अहमदाबाद
६४.	१८–७–१४	मनसुख रवजीभाई म्हेता मा. रायचंद साहित्य मंदिर	अहमदाबाद
६५.	१८–७–१४	गोरधनदास सुरजराम	सूरत
६६.	१९–७–१४	जैन हितेच्छु मण्डल	करमसद
६७.	,,	सेठ लालचन्द कानदास	बड़ौदा
६८.	,,	दिगम्बर जैन पंच	ब्यारा
६९	१८–७–१४	K. N. and A. S. Framjee की ओरसे गुस्तादजी सोराबजी भरूचा	बम्बई
७०.	२०–७–१४	गुलाबचन्द हीरालाल	धूलिया
७१.	१९–७–१४	माणिकबाई दिगम्बर जैन पाठशाला की ओरसे गांधी पूनमचन्द सांकलचन्द	ईडर
७२.	२०–७–१४	जगमोहनदास वरजीवनदास (अजैन)	पूना
७३.	१२–७–१४	चिमनलाल जयसिंहभाई	अहमदाबाद
७४.	,,	कीकाबाई वखतचन्द	सूरत

संख्या	तारीख	नामावलि	स्थान
७५.	१९–७–१४	रामचन्द्र उदयचन्द्र	लौल
७६.	१२–७–१४	भूखणदास हरजीवनदास	सूरत
७७.	१९–७–१४	सेठ हीराचन्द्र वेणीलाल तासवाला	सुरत
७८.	,,	महेनाजी परमानन्द इच्छाराम (अजैन)	,,
७९.	१६–७–१४	सेठ विनोदीराम बालचन्द्र	झालरापाटन
८०.	१९–८–१४	जयचन्द्रभाई जीवनचन्द्र (श्वे.)	भोयणी
८१.	,,	दिगम्बर जैन पंच	पादरा
८२.	,,	छोटालाल बेचरदास	बोरसद
८३.	१८–७–१४	वोहरा लीलाचन्द हरिचन्द्र	पूना केम्प
८४.	,,	शाह भगवानदास शोभाराम	,,
८५.	१४–७–१४	सेठ भगवान छगन	भावनगर
८६.	२०–७–१४	दोशी तलकचन्द कस्तूरचंद	बारामती
८७.	१९–७–१४	नरोत्तमदास भीखाभाई	भावनगर
८८.	२०–७–१४	गांधी नाथारंगजी	आकलुज
८९.	१९–७–१४	दोशी पदमशी जोयतादास	ईडर
९०.	,,	गांधी हरिभाई देवकरण	शोलापुर
९१.	,,	गांधी रावजीभाई नानचंद	,,
९२.	,,	वालचंद गुलाबचंद वागडया	भावनगर
९३.	,,	तवनप्पा अणप्पा लेंगडे	शाहपुर
९४.	२०–७–१४	दिगम्बर जैन पाठशाला	बड़ौदरा
९५.	,,	लल्लुभाई करमचंद दलाल	बीजापुर

संख्या	तारीख	नामावलि	स्थान
९६.	२१–७–१४	मनसुख अनूपचंद शाह (श्वे.)	अहमदाबाद
९७.	१९–७–१४	दोमाड़ा बाबूभाई देवचंद	टेम्भुरणी
९८.	२०–७–१४	बाबा तवनप्पा कावलकीया	शाहपुर
९९.	२०–७–१४	नरसिंहपुरा दिगम्बर जैन पंच	नरोड़ा
१००.	२०–७–१४	अहमदाबाद प्रे० मो० दि० जैन बोर्डिङ्ग	अहमदाबाद
१०१.	,,	उमेदचंद कंकुचंद	बीजापुर
१०२.	२१–७–१४	गोर्धन हरचंद	मखीआव
१०३.	२३–७–१४	मणीलाल जीवराम	विसनगर
१०४.	२२–७–१४	दोशी अमूलक जयचन्द	देशोत्तर
१०५.	,,	समस्त दिगम्बर जैन पंच	दाहोद
१०६.	२१–७–१४	बाबू नवलकिशोर मा. बार लायब्रेरी	कानपुर
१०७.	२४–७–१४	दिगम्बर जैन पंच	मखीआव
११८.	११–७–१४	डाह्याभाई शिवलाल मैनेजर बीसपंथी कोठी	गिरीडी
१०९.	२२–७–१४	कालिदास सांकलचन्द	उजड़िया
११०.	२२–७–१४	जीवण जेठीराम	दहीवडी
१११.	२०–७–१४	माणिकचन्द मोतीचन्द	भावनगर
११२.	३०–७–१४	गांधी माणिकचन्द	आरा
११३.	२०–७–१४	विचित्रशोध रत्नाकर का.	सागर
११४.	,,	जीवण रावजी	माढ
११५.	१५–७–१४	सन्तुमलजी	लखनऊ

संख्या	तारीख	नामावलि	स्थान
११६.	२२–७–१४	फूलचन्द छगनलाल	मंगरोळ
११७.	२०–७–१४	सामन्तराम सेवाराम	उज्जन
११८.	,,	राय ब० सेठ घमंडीलालजी	मुजफ्फरनगर
११९.	२०–७–१४	भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशिनी संस्थाके संचालक पं. पन्नालालजी बाकलीवाल, पं. श्रीलाल, पं. गजाधरलाल, पं. मुन्नालाल, पं. वृजभूषणलालजी, आदि	बनारस
१२०.	२२–७–१४	पं. फतेहचन्द कपुरचन्द लालन	देवलाली
१२१.	२१–७–१४	माणिकबाई लायब्रेरीके प्रमुख	बोरसद
१२२.	२०–७–१४	बुधमल पाटनी	इन्दौर
१२३.	२०–७–१४	दिगम्बर जैन पंच	शाहपुर
१२४.	१८–७–१४	दिगम्बर जैन पंच काणीसा	खम्भात
१२५.	२१–७–१४	धीया कुन्दनजी कपुरचंद	परतापगढ़
१२६.	१७–७–१४	सुरजमल लल्लुभाईकी कंपनी	रंगुन
१२७.	१८–७–१४	जीवदया ज्ञान प्र० फंड	बम्बई
१२८.	२–८–१४	J. L. Jaini M. A. Bar-at-law. मा० महावीर ब्रदरहुड-लण्डन	Stockport (England)
१२९.	२५–८–१४	पण्डिताचार्य भट्टारक श्री चारुकीर्तिजी महाराज	श्रवणबेल्गुल

संख्या	तारीख	नामावलि	स्थान
१३०.	२–८–१४	मोतीलाल वकील जैन ओर्फनेज मा०	दिल्ली
१३१.	२६–७–१४	बेचरदास भाईदास (अजैन)	राजकोट
१३२.	२४–८–१४	मेहरचन्द पुत्र ला. धवलकिशोर (रईस)	सहारनपुर
१३३.	२५–७–१४	मदनमोहन जैन	झालरापाटन
१३४.	२५–७–१४	दिगम्बर जैन पंच	सायना
१३५.	२४–७–१४	काशीबाई	पाटण
१३६.	२५–७–१४	हीराबाई	सादरा
१३७.	१८–७–१४	श्रीमती चन्दाबाई	आरा
१३८.	,,	श्यामाबाई अनन्त मुरूडो	कोल्हापुर
१३९.	१२–७–१४	दिगम्बर जैन पंच	छोटूरा
१४०.	२ –७–१४	बी० ए० पाटील	सिरोल
१४१.	२२–७–१४	दिगम्बर जैन बोर्डिङ्ग	हुबली
१४२.	१४–७–१४	विजकोरबाई	वलसाड़
१४३.	३१–७–१४	दलपतभाई केवलभाई शाह	,,
१४४.	३१–७–१४	सेठ गुलामहुसेन कासमभाई	जूनागढ़
१४५.	३०–७–१४	रावसाहब गुलाबचन्दजी	छपरा
१४६.	३१–७–१४	पं० गोपालदास बरैया, सभापति दि० जैन सभा	बम्बई
१४७.	२३–७–१४	ला० जग्गीमलजी	दिल्ली
१४८.	२४–७–१४	दीवान ब. अम्बालाल साकरलाल देशाई एम० ए०	अहमदाबाद

संख्या	तारीख	नामावलि	स्थान
१४९.	२०-७-१४	सेठ हरनारायण जैन	भागलपुर
१५०.	२१-७-१४	भगवानदीनजी अधिष्ठाता ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम	हस्तिनापुर
१५१.	२१-७-१४	देवीसहायजी जैन	फिरोजपुर
१५२.	२५-७-१४	पीताम्बरदास उपदेशक	ईडर
१५३.	२३-७-१४	बाबू ऋषभदास वकील	मिरत
१५४.	२४-७-१४	नानचन्द्र पदमसिंह मुनीम	तारंगाजी
१५५.	२१-७-१४	बच्चूलाल जैन	आरा
१५६.	२१-७-१४	मोदी अम्मरशी जेठाभाई	जुनागढ़
१५७.	२३-७-१४	ज्योतिप्रसादजी सं० जैन प्रदीप	देवबन्द
१५८.	२२-७-१४	दि. मालवा प्रा. महा सभा के सभापतिकी ओरसे सेठ वालचन्दजी	इन्दौर
१५९.	२३-७-१४	दिगम्बर जैन.पंच	डबका
१६०.	२२-७-१४	फुलचन्द रूघनाथदास	पेटलाद
१६१.	२३-७-१४	सर्वसुखदास खजांची	जयपुर
१६२.	२५-७-१४	घनश्यामदास लल्लूभाई गुरुकुल क्लार्क (अजैन)	सूरत
१६३.	२३-७-१४	घन्नूलाल अग्रवाल, सभापति दि. जैन पंचायती	कलकत्ता
१६४.	२३-७-१४	भगवानदास झवेरदास	सोजित्रा

संख्या	तारीख	नामावलि	स्थान
१६५.	२५-७-१४	दोशी हिराचंद नीलुचंद	कुंभारगांव
१६६.	२३-७-१४	दिगम्बर जैन सभा	पहाड़ीधीरज
१६७.	,,	चुनीलाल उगरचन्द	फतेहपुर
१६८.	२५-७-१४	दि. जैन पंच	अलुवा
१६९.	२५-७-१४	जयसिंहभाई गुलाबचंद	प्रभासपाटण
१७०.	२५-७-१४	सेठ भीखाभाई बेचरदास	बांच
१७१.	२२-७-१४	दिगंबर जैन पंच	बेडच
१७२.	२७-७-१४	चौथमलजी	मुलतान
१७३.	१७-७-१४	तासवाला वेणीलाल केशुरदास	सुरत
१७४.	१८-७-१४	ए. बी. लठ्ठे एम० ए०	कोल्हापुर
१७५.	१७-७-१४	चुन्नीलाल एम० कापड़िया	बम्बई
१७६.	,,	नगीनदास हरजीवनदास, नानावटी (अजैन)	सुरत
१७७.	१८-७-१४	ताराचंद मगनलाल	वडौदरा
१७८.	२०-७-१४	मोहनलाल कालीदास शाह	मुंबई
१७९.	१८-७-१४	दुलीचंद ओंकारदास	खामगांव
१८०	१७-७-१४	सरदार सेठ ईश्वरदास जगजीवनदास स्टोर (अजैन)	सुरत
१८१.	१९-७-१४	कांतिलाल नाणावटी एम. ए. हेडमास्तर दरबार, स्कूल (अजैन)	रतलाम
१८२.	१९-७-१४	छोटालाल घेलाभाई गांधी	अंकलेश्वर

सेठजी ६० वर्षकी अवस्थामें.

नंबर	तारीख	नामावलि	ग्राम
१८३.	१४-७-१४	सौ० गिरजाबाई	सोलापुर
१८४.	१७-७-१४	प्रभुदास हेमचन्द्र	सूरत
१८५.	१७-७-१४	त्रिभुवनदास त्रिजलाल	"
१८६.	१७-७-१४	नवलचंद सौभागचंद	"
१८७.	१७-७-१४	अमरचंद उर्फ कीकाभाई अभेचंद	"
१८८.	१७-७-१४	प्रेमचंद हरगोवनदास मोतीरूपावाले	"
१८९.	१७-७-१४	दलीचंद गणपत मिस्री (अजैन)	"
१९०.	२०-७-१४	हराम सिपोडिया फोटोग्राफर	बम्बई
१९१.	२०-७-१४	मोतीलाल दिल्लीवाले	मंसूरी
१९२.	२०-८-१४	सं. बन्दे जिनवरम्	सिवणी
१९३.	३०-७-१४	राजवैद्य पं० बाबूलाल जैन	सहडोल
१९४.	२९-७-१४	दि० जैन पंच	राणापुर
१९५.	१-८-१४	बापूलाल काला	इन्दौर
१९६.	३१-७-१३	मेहता हुकमीचन्द मगनलाल	भींडर
१९७.	१-८-१४	चिरंजीलाल बड़जात्या मा० दि. जैन पंचान	वर्धा
१९८.	२८-७-१४	दिगम्बर जैन सभा	मुलतान
१९९.	१८-७-१४	मोहनलाल चुन्नीलाल	पाटण
२००.	२९-७-१४	लक्ष्मीनारायणजी	(गुनावा)

नंबर	तारीख	नामावलि	ग्राम
२०१.	२३-७-१४	नानारावजी पंडेकर मन्त्री शिक्षण प्रसारक संस्था	दुधगांव
२०२.	१८-७-१४	मोतीलाल त्रिकमदास मालवी	बाकरोल
२०३.	२-७-१४	मूलचन्द्र सर्राफ	बरुआसागर
२०४.	१८-७-१४	हरजीवन रायचन्द शाह	आमोद
२०५.	१८-७-१४	J. C. फिलिप्स, प्रबन्धक, किलिक निकशनकी कंपनी	बम्बई
२०६.	१८-७-१४	रूपसी जैन श्राविकाशाला	बम्बई
२०७.	१७-७-१४	मा. गंगाशंकर सु० प्रे० मो० दिगम्बर जैन बोर्डिंग	अहमदाबाद
२०८.	१९-७-१४	समस्त दिगम्बर जैन पंच	सुरत
२०९.	,,	समस्त दि० जैन पंच, घोघा और भावनगर	भावनगर
२१०.	,,	बीसामेवाड़ा जैन पंच समस्त	बोरसद
२११.	१८-७-१४	बी. पी. पाटील	होसुर
२१२.	१८-७-१४	दिगम्बर जैन पंच	बनारस
२१३.	१९-७-१४	दिगम्बर जैन कारखाना	पालीताणा
२१४.	२७-७-१४	देवीसहायजी स्टेट अकांउटन्ट	बड़वानी
२१५.	१७-७-१४	ठाकोरदास नवलचन्द सवजन	सुरत
२१६.	१७-७-१४	हेमचन्द जैन	सुरत
२१७.	७-८-१४	भगवानदास दुलभदास	बम्बई
२१८.	८-८-१४	जयवन्ती गौरा अस्पताल	रायबरली

नंबर	तारीख	नामावलि	ग्राम
२१९.	२८–७–१४	महामन्त्री सेठ मुन्नालालजी	इन्दौर
२२०.	५–८–१४	हीरालाल महामन्त्री	राघोगढ़
२२१.	३–८–१४	श्रीमती........	मेरठ
२२२.	३–८–१४	समस्त जैन पंच	आर्वी
२२३.	११–८–१४	सुखदेव वर्मा, मंत्री, जैन कुमार सभा	मुलतान
२२४.	३–८–१४	सकल जैन पंच	बड़ौदरा
२२५.	२१–७–१४	जुगमन्दिरदास (रईस)	नजीबाबाद
२२६.	१५–७–१४	जगन्नाथप्रसाद शुक्ल (अजैन)	प्रयाग
२२७.	२३–७–१४	Kalidas K. Patel मंत्री आर्यसमाज मन्दिर	बम्बई
२२८.	१–८–१४	S. M. Auklo	देलगांव
२२९.	१९–७–१९	समस्त दि० जैन पंच	बम्बई
२३०.	२०–७–१४	प्राणशंकर लल्लूभाई देशाई	अहमदाबाद
२३१.	२०–७–१४	श्री० जमनाबाई नगीनदास सकई	वालकेश्वर
२३२.	१८–७–१४	श्रीमान् श्रीमन्त सेठ पूरनसाजी	सिवनी
२३३.	१९–७–१४	झवेरी लल्लूभाई रायचन्द	अहमदाबाद

कितनेक शोकजनक पत्र ।

श्रीयुत सेठ नवलचन्दजी हीराचन्द जौहरी, बम्बई,

स्वर्गीय स्वनाम धन्य दानवीर सेठ माणिकचन्दजीके असमय-वियोगका जो असह्य शोक आप पर और आपके परिवारपर आकर पड़ा है वह ऐसा नहीं है कि शब्दोंके द्वारा प्रकट किया जा सके। हमको सूझ नहीं पड़ता कि हम आप लोगोंके शोक सन्तप्त हृदयको किन शब्दोंसे शान्त करें, और आपको धीरज बंधावें।

इस शोकका आपके ही समान प्रत्येक सहृदय जैनी अपने हृदयमें अतिशयताके साथ अनुभव कर रही है। क्योंकि स्वर्गीय सेठजीने अपने कृत्योंसे प्रत्येक व्यक्तिके हृदयमें सदाके लिये स्थान बना लिया है। उन्होंने जैन समाजपर जो २ उपकार किये हैं वे बहुत बड़े और चिरस्थाई हैं। जैन समाज उनके उपकारोंके एक अंशका बदला देनेको भी समर्थ नहीं है। इसलिये उनके वियोगका शोक होना हम लोगोंके लिये भी बिल्कुल स्वाभाविक है। हमें नहीं समझ पड़ता कि हम आपके प्रति सहानुभूति प्रकट करें या अपने शोक प्रति औरोंकी सहानुभूतिकी आशा करें। इसलिये सेठजीके दुःखमें हम और आप समदुःखी हैं। इस समय इस शोकसे मुक्त होनेका इसके सिवा और कोई उपाय नहीं है कि हम संसारके स्वरूपका चिंतवन करें। इसका यह नियम ही है कि जिसका जन्म होता है उसकी मृत्यु भी होती। "मरण:प्रकृति शरीरिणाम्" मृत्यु होना प्राणी मात्रके लिये स्वाभाविक है। इसका विचार करके आप लोग शोकका परित्याग करें और सेठजी जो कीर्तिका मार्ग

बना गये हैं उसपरसे उन्हींके पदचिन्हों परसे आप आपकी संतानके सहित चलें जिससे आपके परिवारमें स्व० सेठजीके ही समान अनेक दानवीर सेठजी पाकर हम लोग भी इस शोकको भूल जावें। श्री जीकी कृपासे सेठजीकी आत्माको शान्ति लाभ हो। और आप लोग भी इस शोकसे मुक्त होनेकी शक्ति प्राप्त करें। किंबहुनलमति विस्तरेण।

हीराबाग—बम्बई।	समस्त दिगम्बर जैन समाजकी ओरसे
ता. १९—७—१४.	**सरूपचंद हुकमचंद** (सभापति)

London, 2nd August 1914.

Dearest Sister **Maganbai,**

My soul is strocked to silence at the loss of my beloved Sethji. He was a friend, leader and colleague and to me almost like a father. Your loss is very great, but our sympathy and loyalty to you and your family, to your little brother and our beloved Sethani will never fail. Now a few things have to be done.

(1) A Committee must be formed of 5 or 3 members to prepare an authoritative life of Sethji. A fund must be set apart for this.

(2) One good memorial must be raised to Sethji. He was the pioneer lover and founder of Jaina Boarding Houses. His unimost ambition was to establish a Jaina Home in England. We should try and open a " Manekchand Jain

Home" in London. For this, dear Maganbai, you should devote your splendid talents and in one or two year's time we can have a big Jaina Home in London. But a beginning can be made with even one lac of Rupeess.—Allow me to assure you of my loyalty and service to you and the family. Consult my friends Br. Sital Pershadji and Seth Hirachand Nemchand of Sholapur on this.

In mourning,
Yours Sincerely,
J. L. Jaini Bar-at-Law.

श्रीमान् सेठ नवलचन्द हीराचंद, आदि सुकुटुम्ब सेठ माणिकचंद पानाचंद प्रति।

समस्त दिगम्बर जैन पंचान् बम्बईकी ओरसे विदित हो कि ता. ३०-७-१४को हीराबागमें एक बृहत सभा हुई। उसमें जो प्रस्ताव स्वीकृत हुआ सो आपकी सेवामें प्रेषित किया जाता है।

"स्वर्गवासी श्रीमान् दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचंद हीराचन्द जे. पी. ने जो अपना अंतिम दान ढाई लक्ष रुपयेका किया है व जिसके लिये जुबली बागका मकान ट्रष्ट कर दिया है और उसकी आमदको परीक्षालय, उपदेश फंड, तीर्थरक्षा व विद्यार्थियोंको छात्रवृत्ति देनेके प्रशंसनीय कार्योंमें खर्च करना निश्चय किया है उसके लिये बम्बईका समस्त दिगम्बर जैन समाज उक्त सेठजी व उनके सर्व कुटुम्बका अतिशय कृतज्ञ है और आशा करता है कि जिस भांति स्वर्गवासी सेठजीका लक्ष अपनी समाज व धर्मकी

उन्नति पर था उसी तरह उनके उदार और माननीय कुटुम्बी जनोंका भी पूरा २ ध्यान इस पवित्र जिन धर्म और समाजकी उन्नतिमें कटिबद्ध रहेगा। "

आपका हितकांक्षी—
गोपालदास बरैया, सभापति।

श्रीमती मगनबाईजी,

श्री० सेठ जै० माणिकचंदजीका स्वर्गवास सुन सारी समाजमें शोकरूपी मेघाच्छादित हो गया। हृदय कम्प होकर वेदना अनुभव होने लगा।

हा! समाजका इन्दु कालरूपी केतुसे दब गया।

इस समय हमारे यहांके सर्व नरनारी शोकातुर हैं—आपके प्रति तथा मातुश्री आदि सर्व कुटुम्बियों प्रति समवेदना प्रकट करते हैं। अन्तमें यह मनोकामना है कि पूज्य सेठजीके पवित्र आत्माको शान्ति मिले और आप लोग भी बारह भावना भावें।

दुःख हृदया—**चंदाबाई**, आरा।

श्रीमती पंडिता मगनबाईजी, मुंबई.

जैन समाजाचे पिते—सूत्रधार—आधारस्तंभ-एक अमूल्य रत्न—असे आपले वडील व आमचे पितृसदृश्य दा० जै० कु० शेट माणिकचंद यांच्या आकस्मिक मरणाची वार्त्ता काल रोजीं येथें पसरली. मी हल्लीं थोडासा शीक (अमांशाच्या विकारानें) असल्या मुळें घरींच असतो. कालरोजीं आमच्या एका मित्रानें सदर बातमी मला घरी येऊन सांगतांच एकदम विद्युत्पात झाल्या सारखें वाटलें! फारच दुःख झालें. माझ्यावर तर त्यांची फारच प्रीती. उपाय नाही. कर्मेच्छेपुढे कोणाचें काय

चालणार ? आपण सुज्ञ आहां. त्यांच्या मरणानें जैन समाजाची किती नुकसानी झाली आहे हें लक्षांत आणून त्यांतल्या त्यांत समाधान पावाल अशी आशा आहे. जैनसमाजाचा एक आधार व चालक नाहीसा झाला. आज जैनसमाज लंगडा-पंगू झाला असे म्हटलें; तरी चालेल. आपले बंधु चि० बाबूस दीर्घकाल आयुरारोग्य प्राप्त होवो व आपल्या वडिलांचा कित्ता बरोबर गिरवो अशी श्रीजिनेश्वरचरणीं प्रार्थना करून हें दुःखवटयांचे पत्र संपवितो. कळावें ही विनंती. ता० १९-७-१४.

आपला एक बंधु—

भरमप्पा पद्मप्पा पाटील, होसूर।

मान्यवर महोदयजी !

यह हृदयविदारक दुःसमाचार पढकर अत्यन्त शोक हुआ है कि जैन जातिके चिरस्थाई सभापति जैनकुलभूषण दानवीर सेठ माणिकचन्द्रजी जे. पी. बम्बईका अकस्मात् स्वर्गवास हो गया है। हाय! बड़ा अनर्थ हुआ। यह समाचार मैंने सभामें सुनाया। सभामें जितने जन उपस्थित थे सब हीके चित्त शोकातुर होने लगे और इस असार संसारकी छिन भंगुर अवस्थापर विचार करने लगे और कहने लगे कि हाय काल! तू बड़ा अन्यायी है। योग्यायोग्यका रंच मात्र भी विचार नहीं करता। अपनी गतिमें अरोक गमन करता रहता है। (विचार पूर्वक) वस्तुका स्वरूप ही ऐसा है। जिसका संयोग है उसका वियोग अवश्य होता है। यथा—

गाथा—

जं किंचिण उप्पण्णे तस्स विणासो हवई णियमेण।
परिणामसरूवेण वि किंचिविसायं अत्थि ॥

ऐसा विचार कर धैर्यका अवलंबन करना उचित है। इस

प्रकार यह जैन सभा कालका शोकातुर होती हुई भी अंतमें श्रीमान् सेठजीके कुटंबी जनोंसे प्रार्थना करती है कि इस संसारके स्वभावको विचार करके संतोषावलंबन करें। दोहे—

काल बड़ा विकराल है सोचे नांही नेक।
अज्ञानी निर्दयी कुटिल राखे अपनी टेक ॥ १ ॥
अरे! दुष्ट पापात्मा करुणा हीन कठोर।
जैन जातिके रत्नको हा! हा! कीन विछोर ॥ २ ॥
हा! हा! दिनेश छिप गयो भयो घोर अँधियार।
हीरा कीसी ज्योति थी सो कित गई सिधार ॥ ३ ॥
हा! हा! माणिक ज्योति सम हा! उड़गनमें चंद।
हमें छोड़ तुम कित गए हे! प्रफुल्लित अँग ॥ ४ ॥
ज्ञानी धनी सुशील वर लीन सो पर उपकार।
तुम विन इत हम सबनको कोन करे उद्धार ॥ ५ ॥
सागरवत गंभीर हृदय कल्पवृक्ष सुख देन।
तुम विन डूबत जातिकी को शुध ले दिन रेन ॥ ६ ॥
जैनोन्नतिकी आशको ले गयो माग अषाढ़।
कृष्णा नवमीके दिना जाति भई अनाथ ॥ ७ ॥
हाय दैव! यह क्या कियो सुनत ही भये अधीर।
हृदय शोक बाढ़ो अबे वहता नयनो नीर ॥ ८ ॥
चाहत हूं उन दर्शको पर नहिं पार बसात।
देख कालकी चालको काँपत है निज गात ॥ ९ ॥
काहे हृदय अधीर हो वस्तु स्वरूप विचार।
मनमें अब धीरज धरों यह संसार असार ॥१०॥
श्री अरहंतसे वीनती करूं जोर युगपान।
श्रीमन्‌जीकी आत्मा बसे शांत सुखधाम ॥११॥
होय कुटंबी जननके हृदयशांतको वास।
जैनजाति जिनधर्मसे नितप्रति प्रेम व्यवहार ॥१२॥

जैनन दीन विलोकिकें करो सनाथ हे नाथ।
यह सुबुद्धि अब दीजिये करे निज पर उद्धार ॥१३॥
जैन सभा कालिकातनी सुनहु वीनती ऐम।
करौं कृपा इम जातिमें जासो बाढ़े प्रेम ॥१४॥
स्वजनन प्रति यह वीनती करहुं हृदय धर धीर।
अथिर चरित संसार लखि धर संतोषि चितवीर ॥१५॥

बनारसीदास जैन,
मन्त्री, जैन सभा, कालका।

सुप्रसिद्ध धार्मिक सिरोमणि श्रीमान् माणिकचन्द्जीकु अकस्मात् स्वर्गवास हूआ कर्के वृत्त पत्रसे मालुम हुवा—इस्से ऐसा धार्मिक सिरोरत्नका वियोग हूये सो हं लोकके सदस साधु लोककुं भी व्याकुलता संपादक है तुम लोककु कहना क्या है, तथापि आप लोक व्याकुलतासे निवृत्त होकर सेठ्टिजीके सदस परोपकार कार्यमें व्यापृत होकर ऐहिकामुष्मिक सुखप्रद धर्म कार्यमें निरत होना चाहिये।

भ० चारुकीर्ति पंडिताचार्य, श्रवण बेलगुल
(सही कर्णाटकी भाषामें)

श्रीयुत मान्यवर सेठ नवलचंदजी हीराचंदजी, जुहारू।

दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचंद हीराचंद जे० पी० के अचानक स्वर्गवाससे आज हमें अतिशय दुःख है। सेठजीके स्वर्गवासके कारण जैन समाजको एक सच्चे मित्र और रक्षककी असह्य हानि उठानी पड़ी है। श्रीमान् सेठजी न केवल आपके ही बंधु थे किन्तु वे लक्ष लक्ष जैन धर्मियोंके भाई थे और उन एकके मरणसे

आज लाखों जैनी अपने अपने भाईके खोजानेके समान दुखी हैं। तौ भी संसारकी स्थितिको देखकर हृदय संतोषित करना पड़ता है। हम आपके दुःखसे सहानुभूति प्रकट करते हैं और निवेदन करते हैं कि आपको भी संसारके स्वरूपका ध्यान मनमें संतोष रखनेके साथ स्वर्गीय सेठजीके पदानुसारी होनेका प्रयत्न करना चाहिये।

शोकाकुल—

सूरजमल जैन, हरदा।

महोदयजी!

आजदिन इस शोकसमाचारको प्रकट करते लेखनी थर्रा रही है। विवश लिखना पड़ता है कि ऐसा विषय कभी न लिखना पड़े। श्रीयुक्त माणिकचन्द हीराचन्द जे. पी. के मृत्युपर बड़ा ही दुःखदायी आघात पहुंचा है। आपके योगसे वैद्य शास्त्रीय हर एक प्रकारकी समुन्नतिकी आशा ही थी इतना ही नहीं आपने हीराबागमें धर्मार्थ औषधालय अपना अमर नामरक्षक नियत कर दिया है। ऐसे रनरत्नके न रहनेसे आजआयुर्वेदके शुभचिन्तक सभी सुजनोंकी बड़ी भारी हानि हुई है। आपकी आत्माको स्वर्गवास हो।

मुझे श्रा. सुदी ४के कमेटीमें इस समाचार पर "**निखिल भारतवर्षीय वैद्यसम्मेलन**" की स्थायी समितिने आपलोगोंसे (सेठजीकी बाई और पुत्र आदि कुटुम्बी) समवेदना प्रकट करनेकी आज्ञा दी है। तदनुसार मैं इस महा घोर दुःखप्रद समाचारको लिये सम दुःखी होते हुए आपलोगोंको वज्र हृदय कर धैय धार-

णके लिये दृढ़ता दिलाता हुआ कहता हूं कि आप भविष्यमें सेठ-जीके आयुर्वेद प्रेमको अटल सिद्धान्तपर रेखायुक्त करते हुए अपने कर्तव्य पथपर आरूढ़ रहेंगे।

भवदीय–

जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, प्रयाग।

व्हाला बहेन गं० स्व० मगनबहेन माणेकचंद.

दिगम्बर जैन कोमना अग्रेसर धुरंधर दानवीर–तमारा पूज्य पिता–भाई माणेकचंद हीराचंदना एकाएक दिलगीरी भरेला मृत्यु समाचारथी हुं घणीज दिलगीर थई छुं.

जैन कोममां अने देशना सार्वजनिक कामोमां पोतानी जात महेनतथी प्रमाणिकपणे वेपारमां सम्पादन कीधेली लाखोनी दोलतनो दिलनी उदार लागणीथी सदुपयोग करनार मर्हुम भाई माणेकचंद हीराचंदना मृत्युथी–खरेखर जैन कोमे तेमज देशनां केटलांक सार्वजनिक खातांओए एक महान दानवीर नरने पोतानी वच्चेथी गुमाव्यो छे

तमारा कुटुम्ब ऊपर आ अणधारेली आवी पडेली आफतमां हुं घणीज दिलगीर थई छुं—दुःख सहन करवा इश्वर शांति आपो......

शुभेच्छक बहेन–

जमनाबाई नगीनदास सक्कई, वालकेश्वर.

शेठजी,

श्रीमान शेठ माणेकचंदजीना अकस्मात देवलोक थयाना समाचार सांभळीने घणोज खेद कुदरती रीते थयो छे. आपना कुटुंबने तो एमनी पूरी खोट लागेज परंतु आखी जैन जनसमाज साथे देशना मोटा भागने तेमनी खोट थई पडी. एवा दानवीर पुरुषो क्यां छे के आ खोट पूरी पडे......

कदमलाल केशवराम नाणावटी, रतलाम.

आत्मस्नेही व्हेन मगनव्हेन,

ना तनदुरस्तीए देवलाली हतो. " जामे जमशेद " पत्रमां जे समाचार वांचवामां आव्या तेथी हृदयना ऊंडा भागमां जे शोक थाय छे तेनो पार नथी. तमारी स्थीतीने त्यांर केवो आघात थयो होवो जोईए. तेओ तमारी साथे जैन कोमना पिता हता, तेमां पण त्रणे सम्प्रदायना अभेद भावे विद्यार्थी, दुःखी जैनोना, अवश्य हता, पण व्हेन, आपणा पुण्यनी अवधि होय छे, आ अवधिनी पर रहेता आत्मामां रही आत्मबळ संपादन करी पितृश्रीने पगले चालवामां तेओश्रीना आत्माने शांति अने आपणनुं कल्याण छे. शासन देवो तमारा कुटुंबने आ असह्य आघातमां रक्षण करो.

तमारो शोकातुर,

वीरवाळ पं० लालन.

मान्यवरा श्रीमती मगनबाईजी।

यह सुन कर कि श्रीमान् दा·वीर जैनकुलभूषण सेठ मानकचन्दजी अकाल मृत्युके ग्रास हो गए अत्यंत शोक हुआ। न जाने इस जातिका कैसा दुर्भाग्य है कि प्रथम तो इसमें नररत्नोंकी उत्पत्ति ही नहीं, यदि एक दो की उत्पत्ति होती है तो उन्हें मृत्यु अपना ग्रास बनालेती है। सेठजीकी इस अकाल मृत्युसे जो दुःख आपको तथा आपके कुटुम्बी जनोंको हुआ है उससे कई गुणा अधिक हम लोगोंको हुआ है जिसका हम शब्दों द्वारा प्रकाश करनेमें असमर्थ हैं। बाईजी, आप स्वयं विदुषी हैं। आप संसारकी अवस्थाको भलीभांति जानतनी हैं, इसमें जो जन्म लेता है वह अवश्य एकदिन विनाशको प्राप्त होता है। इस पृथ्वीपर कितने बल्देव, कामदेव, नारायण, प्रति नारायण हुए परन्तु सबके सब कालके ग्रास हुए, अतएव यह संसार असार व अशरण है, यह जान कर

आप शोकको त्याग करें और धैर्य धारण करें और सर्वज्ञ देवसे प्रार्थना करें कि सेठजीकी आत्माको भव २ में शांति मिले।....

आपके दुःखका साथी—

दयाचन्द गोयलीय, बैरुनी खंदक–लखनऊ।

परम स्नेही परम विवेकी शेठ नवलचंद हीराचंद जोग—

आजे सवारे एकदम ओचिंता शेठ माणेकचंदजीना स्वर्गवास थवाना समाचार तार द्वारा सांभळी अजायबी अने दिलगीरीनो पार रह्यो नथी के ओचिंतुं आ शुं थई गयुं ! कांईपण मांदा वगर आम ओचिंतुं मृत्यु थवाना समाचार सांभळी हैयुं भराई आवे छे ने शुं लखवुं ते समज पडती नथी. आथी दिगंबर जैन कोम उपर तेमां आपना कुटुंब उपर आ फटको जेवो तेवो लाग्यो नथी अने आ घा कदी रुझाय एम नथी. आम ओचिंतुं थवाथी घणी घणी बाबतोना खुलासाओ करवाना आपने रही गया हशे तेम अमारा पण मनना उमेद मनमां रही गया केमके घणी बाबतोना खुलासा अमने करवाना हता. शेठजी! आ गमगीन बनावथी आपना कुटुंब उपर जे कमबखतनुं अने ओचिंतुं दुःख आवी पडयुं छे तेमां अमो अंतःकरणथी भाग लीए छिए. आवतुं 'दिगंबर जैन' आ शोक समाचार सहित बहार पाडवुं पडशे, माटे शेठे जे पोता पाछळ वापरवानी व्यवस्था माटेनुं वील करेलुं छे तेनी नकल अमने बीडी आपशो तथा शेठजीना पुत्रनुं नाम शुं छे अने उमर शुं छे ते जणावशो. महेरबानी करी विगतवार समाचार लखशो तो उपकार थशे. एज कामकाज लखशो.

अत्रे आजे चंदावाडीमां स्नान मंडाया हता. रडवा कुटवानुं बंध राखवामां आव्युं हतुं ने धर्मनां गीतो गवायां हतां....

आपनो आज्ञाकारी—**मूलचंद किसनदास कापड़िया—सूरत.**

गंगास्वरूप व्हेन मगनव्हेन,

आपना पूज्य शिरछत्र पिताना अचानक मृत्युना समाचार वांचीने अमो घणा दिलगीर थया छीए. जैन कोमनी उन्नति माटे तेओश्रीए जे भोग आप्यो छे, तेवो भोग जैन कोमना श्रीमंतोमांथी आज पर्यंत कोईए पण आपेल नथी. तेओश्रीना कार्योथी तेमना देहनोज आपणने वियोग थयेल छे, बाकी तेओ जीवताज छे एम मानवामां अमो भूल करता नथी. तेमना वियोगथी आपने असह्य दुःख थतुं हशे अने थाय तो तेमां नवाई नथी, पण दुष्ट काळ कोईने छोडतो नथी, एम धारीने तेमना जेवा उच्च कार्यो करवा एज आ मनुष्य भवनी सार्थकता छे. तेमना स्मरणार्थे आप बनतुं करशो एवी अमारी नम्र विनंति छे.

मेघजी हीरजी–मुंबाई.

सेठ नवलचंदभाई तथा बहेन मगन बहेन,

पू० श्री माणेकचंदभाईना देह त्यागना अत्यंत दुःखदायक खबर जाणी बहुज दिलगीरी थई. तेओना जेवा सुंदर आत्माओ विरलज होय छे. तेओना जवाथी आपे तो कुटुम्बरत्न गुमाव्युं छे पण अमारा जेवा संबंधीओए एक पवित्र स्नेही गुमावेल छे अने आखी जैन समाजे एक परोपकारी पुरुष गुमाव्यो छे.

तेओना जवाथी आपना कुटुंब उपर एक घणोज कारी घा वाग्यो छे; पण देहनी स्थितिज अनित्य होवाथी आपणे ज्ञान दृष्टिए आ खेद विचारी वदवो घटे छे.

मनसुखलाल रवजीभाई महेता–अमदावाद.

भममां हता! आपना काकी तथा फोको हाल मुंबाईज छे केनी ! शुं मांदगी अने शुं बनाव ! कंई समज पडती नथी. शुं शब्दोमां आपने आ दीलगीरी भरेलो पत्र लखवो ते समज पडती नथी. काळनी गति अति विचित्र छे! आजे शुं छे अने काले शुं थशे तेनी खबर नथी. आ संसार अनित्य छे माटे आवे समये धैर्य धारण करवा सिवाय छुटको तो नथी, पण आथी तमारो जे एक आसरो हतो ते विलय थई गयो छे. शं करीए! भावी बळवान छे. आपने पण केटलाक खुलासा करवाना रही गया हशे ने अमारे पण केटलाक खुलासा करवाना रही गया छे........

मूलचन्द कसनदास कापडिया, सूरत.

गंगास्वरुप मगनबेहेन,

तमने अने महारे रुबरु मळवानो प्रसंग पड्यो नथी पण आपना स्वर्गस्थ पिताना साथे माहरे घणो प्रसंग पड्यो छे अने मारी विद्यार्थी अवस्थामां आपना पिताए जे कोमना हितार्थे कार्यो करलां तेमांना जैन बोर्डीगनो लाभ पण लीधेलो छे एटले हुं तेमना उपकार तळे छुं.

आजना "बोम्बे क्रोनीकल"मां आपना पिताना एकाएक स्वर्गस्थ थयाना समाचार जाणी घणो खेद थयो. मनुष्य कर्माधीन छे ए तमारा जेवां सुज्ञ बेहेनने जणाववा जरूर नथी. आपना पिताना मरणथी आपना कुटुंबने जे भारे खोट पडी छे तेनुं वर्णन करी शकुं तेम नथी एटलुंज नही पण तेमना मरणथी आखी जैन कोम अने मुख्यत्वे करीने दिगम्बर जैन कोम दुःखी थई छे. जे कोमे आपना पिता जेवा नर पेदा करेला ते कोममां बीजा एवाज नर पेदा थशे एमां शंका लाववानी नथी, पण अत्यारे तो आवा सखी दिलोनी खोट जैन कोमने घणी भारे थई छे.

आपना पिताए जैन कोमना त्रणे फिरकाओना हित माटे दि०

जैन बोर्डींग विगेरे योजनाओ करी आपी तेवी योजना करी आपनार विरला नर हालना जमानामां थोडा मळे छे.

आ सिवाय पण आपना पिताए घणीज रीते हिन्दुस्तानमा जैनोनु भलुं करवा अथाग मेहनत करी छे. अने अमारा पालणपुरने पण तेमनाथी बने तेटली मदद आपी छे एटले ते नरने विसरवो घणो मुश्केली भरेलुं छे.

धार्मिक लागणी साथे पाश्चात्य विचारोने उत्तेजन आपवानुं आपना पितानुं कार्य घणुंज स्तुतिपात्र हतुं. आ साथे तमो बेहेने दुःखी विधवाओने मदद करवानुं जे कार्य माथे लीधुं छे तेने माटे धन्यवाद घटे छे.

छेवटे आपना कुंटुंबने माथे पडेल दुःखनी अंदर हुं भाग लेउं छुं अने आपने बधांने विनती करूं छुं के हवे गयाने संभारी खेद नहिं करतां तेमना पगले पगले चालवाथी घणोज फायदो छे एम मानी ते प्रमाणे चालवा आपनो प्रयास चालु राखशो, ते साथे मारी प्रार्थना छे के तेमना आत्माने शांन्ति मळो ।

कालीदास जरकरण झवेरी, अमदावाद.

रां, स्वरुप व्हेन मगनव्हेन,

आपना परमपूज्य पिताजी, आ शाळाना खरा शुभेच्छक अने दरेक सारां अने जैन समाजना हितनां कामना प्रेरक शेठजी माणेकचंद हीराचंदना अचानक अने अकाल स्वर्गवासना समाचार वांचतांज स्वाभाविक खेद थयो हतो. आ शाळा उपर एओना उपकारो अपरिमित हता. एओश्रीनी प्रेरणाथीज स्वर्गस्थ रा. रा. लालशंकरभाईए आ शाळा उपस्थित करवानुं बीडुं झडप्युं हतुं एटले के एओश्री आ शाळाना मूळ उत्पादक हता एम केहेवामां आतशयोक्ति नथी. आ वस्तुस्थितिमां आ दुःखद समाचार जाणवाथी अमने बधांने स्वाभाविक खेद थाय एमां कांई नवाई नथी.

आपनी न्यातनां बाळकोने विद्यादान आपी तेमने जन्म जन्मांतरने माटे सुखी करवाने हिंदुस्थानमां ठेक ठेकाणे एओए बोर्डिंगो स्थाप्यां छे. एओ आपणी समीपथी स्थूल रूपे गया छतां आ संस्थाओना रूपमां एओ जाणुने माटे जनसमाजनी समक्ष रहेवानाज. जे वखते आपने, आपना कुटुंबने, आपनी कोमने अने दुःखी जनसमाजने एमना समीपनी, शुद्ध भावथी भरपुर बोधनी अने हरेक प्रकारनी मददनी जरूर हती ते वखते दैवे एमना अमूल्य आत्माने आपणी पासेथी छुटावी लीधो छे. एओना अकाल स्वर्गवासथी आपने अने आपना कुटुंबने जे मोटी खोट पडी छे ते पूराय तेम नथी. आपना पिताजीए शरू करेलां शुभ कार्योने खीलववाने जोईए तेटलुं मनोबळ अने अनुकुलता ए दयाळु विभू आपने तथा आपना कुटुंबी जनोने हमेशां आपो एवी मारी एमने नम्र प्रार्थना छे. स्वर्गस्थ शेठजीनो आत्मा अखंड शांति भोगवो ए शुभेच्छाथी आ लांबो कागळ अटोपुं छुं.

ली० शुभेच्छक,

प्राणशंकर लल्लुभाई देशाई।

बहेरां मुंगानी शाळा, अमदावाद

मे. शेठजी साहेब, नवलचंद हीराचंद जोग,

आपना जेष्ठ बंधु मे. शेठजी साहेब शेठ माणेकचंद हीराचंदे स्वर्गवास कर्याना एकाएक कमकमाट उपजावे. तेवा दुःखदायक समाचार वर्तमानपत्रोथी ओचींता सांभळीने आ फंडने जे लागणी थई छे ते तदन अवर्णनीय छे. मर्हुम शेठश्री आ फंडना एक खरा शुभेच्छक अने एक सलाहकार होवाथी तेओए करेला स्वर्गवासथी फंडे एक महोटामां महोटो वगदार सलाहकार गुमाव्यो छे अने आखी जैन प्रजा बल्के मुंबई इलाकामां एक महान दानवीर

दयाळु नर गुमावेलो छे ते माटे आ फंड अेटली दिलगीरी दर्शावे वेटली ओछीज छे. ते सद्गत शेठ साहेबे पोताना निखालस अने मलतावडा उत्तम निरभिमानी स्वभाव वडे समग्र प्रजानी प्रीति संपादन करी हती ते जगजाहेर होवाथी ते महान् परोपकारी सज्जनो दुःखदायक वियोग असह्य थई पडे ए देखीतुं छे, पण जे काळे जे मांडयुं होय ते कदी पण मिथ्या थतुं नथी एटले जे बाबतनी लगाम परमात्माना हाथमां छे ते बाबतमां आपणे तद्दन निरुपाय छईए माटे जे सुखदुःख माथे आवी पडे ते शांत पणे सहन करवुं अने मरनारना आत्माने अखंड शांति इच्छवी एज आपणु कर्तव्य छे.

मर्हुम शेठ श्रीना वियोगथी खेदयुक्त थयेला 'श्री जीवदया-
ज्ञान प्रसारक फंड' (मुंबई) तरफथी हुं छुं

आपनो नम्र सेवक,

लल्लुभाई गुलाबचंद झवेरी.

कोष्टक सहानुभूति सूचक तार जो आए ।

नं०	भेजनेवाला	स्थान
१.	दिगंबर जैन पंचान	गोटेगांव (सी. पी.)
२.	आबनीस दीवान कोल्हापुर	कोल्हापुर
३.	महाराजा साहब कोल्हापुर	"
४.	शांतप्पा सेठी	मंगलोर
५.	सभापति, दि० जैन बोर्डिंग	लाहौर
६.	कंछेदीलालजी जैन	जबलपुर
७.	सोहनलाल मा० जैन पंचान	देहली

नं.	भेजनेवाला	स्थान
८.	अनंतराजय्या मा० जैन पंचान	म्हैसुर
९.	भट्टारक श्री जिनसेनजी स्वामी नांदणी	मेंगलोर
१०.	अजितप्रसादजी एम. ए. एलएल. बी.	लखनऊ
११.	रा० ब० दानवीर सेठ कल्याणमलजी	इन्दौर
१२.	सेठ बालचंद रामचंद मा० जैन पंचान	सोलापुर
१३.	महाराजा साहब फलटन	फलटन
१४.	बाबू धन्नूलाल अटर्नी	कलकत्ता
१५.	रा० ब० सेठ नेमीचंदजी ऑ० मजिस्ट्रेट	अजमेर
१६.	धूमसिंह जैन मा०	मुजफ्फरनगर
१७.	मंत्री, जैनाथ लायब्रेरी	आयनी
१८.	विद्यार्थीगण, जैन बोर्डिंग	कोल्हापुर
१९.	मोनीलाल बंशीधर क्लर्क तीर्थक्षेत्र कमेटी	कलकत्ता
२०.	दि० जैन पंचान	प्रान्तिज
२१.	विद्यार्थीगण, सुमेरचंद दि० जैन बोर्डिंग	अलाहाबाद
२२.	दि० जैन पंचान ,	सतना
२३.	हरनारायण जैन	भागलपुर सिटी
२४.	कुमार देवेन्द्रप्रसाद और मा० दीपचंदजी	अलाहाबाद
२५.	सेठ बालचंदजी अजमेरा	इन्दौर
२६.	रिखबचंद केशरीमल	गया
२७.	शाह गोरधन हरचंद	मखिआव
२८.	बाबू सुन्दरलाल जैनाडा	झालरापाटन
२९.	सभापति दि० जैन सभा	अजमेर

नं.	भेजनेवाला	स्थान
३०.	कालूराम पवार मु०, मा० पा० दि० जैन बोर्डिंग	रतलाम
३१.	दिगंबर जैन पंचान	खंडवा
३२.	डाह्याभाई शिवलाल मैनेजर, बीसपंथी उपरेली कोठी शिखरजी	मधुवन
३३.	सेठ मथुरादासजी टड़ैया	ललितपुर
३४.	बाबू जुगमंदरदास सभापति दि० जैन बोर्डिंग	बिजनौर
३५.	प्रो० ए० बी० लट्ठे एम० ए०	कोल्हापुर
३६.	सेठ मूलचन्द किसनदास कापड़िया	सूरत
३७.	पं० धन्नालालजी कासलीवाल	इन्दौर
३८.	लाला देवीदासजी, सभापति दि० जैन सभा	लखनऊ
३९.	मोरालीटी (Morality)	रंगून
४०.	परीख चुन्नीलाल प्रेमानंददास	बोरसद
४१.	दिगंबर जैन पंच	बोरसद
४२.	जैन मंडली	बीजापुर
४३.	दिगंबर जैन पंचान	आकलुज
४४.	सेठ हीराचंद नेमचंद दोशी ओ० मजिस्ट्रेट	सोलापुर
४५.	रेवचंद छगनलाल शाह	रंगून
४६.	लक्ष्मीचंद वेलचंद	रंगून
४७.	सेठ माणिकचंद मोतीचंद सभापति दि० जैन पंचान	सांगली
४८.	शा. हाथीचन्द माणेकचन्द दलाल मा० दि० जैन पंचान	सोनासण
४९.	बी. बी. जाधव, सभापति जैन सभा	कोल्हापुर

नं.	भेजनेवाला	स्थान
५०.	सेठ दालचन्दजी, सभापति, मालवा नीमाड़ प्रान्तिक सभा,	इन्दौर
५१.	दिगंबर जैन पंचान	लाकरोडा
५२.	मुंगीलाल पाटनी मंत्री, जैनधर्म प्र. सभा	इन्दौर
५३.	दिगंबर जैन पंचान	अमदावाद
५४.	सेठ झुन्नीलाल मुन्नालाल मा० मालवा नीमाड़ प्रान्तिक सभा	इन्दौर
५५.	पं० पीताम्बरदासजी उपदेशक दि० जैन प्रान्तिक सभा	ईडर
५६.	मिसिस बापुजी (अजैन)	पूना
५७.	बापुलाल काला मा० रा० ब० सेठ ओंकारजी कस्तूरचंद	इन्दौर
५८.	नगीनदास मोतीचंद शाह	मांडवी
५९.	सेठ गुलाबचंद हीरालाल, सभापति जैन पंचान	धूलिया
६०.	सेठ कस्तूरचंद कल्याणमल	इन्दौर
६१.	सेठ लूणकरण मदनमोहनजी	उज्जैन
६२.	रायबहादुर सेठ कस्तूरचंदजी	उज्जैन
६३.	सेठ बिनोदीराम बालचन्दजी	उज्जैन
६४.	पं० धन्नालालजी	इन्दौर
६५.	नरसिंगपुरा दि. जैन पंचान	कलोल
६६.	समस्त दि. जैन पंचान घोघा और भावनगर	भावनगर
६७.	हुमड़ पंच समस्त	ईडर
६८.	श्रीयुत अण्णाप्पा लेंगडे	शाहपुर
६९.	समस्त छात्रगण आदि, स्याद्वाद महाविद्यालय	बनारस
७०.	श्रीमंत सेठ मोहनलालजी	खुरई

नं.	भेजनेवाला	स्थान
७१.	रेवचंद मगनलाल महेता	वसई
७२.	श्रीमान् श्रीमंत सेठ पूरनसावजी	सिवनी
७३.	बापीची (Bappiche)	पेरिस (फ्रान्स)
७४.	दिगंबर जैन पंचान, शांतिनाथ मंदिर	झालरापाटन सिटी.
७५.	समस्त जैन पंचान	वर्धा गंज
७६.	समस्त जैन पंचान	बड़ौत
७७.	बाबू देवीसहायजी हेड एकाउन्टंट	बडवानी
७८.	जैन समाज	झांसी
७९.	नेमचन्द रवचन्द मंत्री, दि० जैन हितवर्धक सभा	ईडर
८०.	मंत्री, मालवा प्रांतिक दि० जैन सभा	बडनगर
८१.	सिंघई नाथुरामजी मा० दि० जन पंचान	नरसिंगपुर
८२.	समस्त जैन पंचान	कानपुर
८३.	सेठ येसुसिंघई सोनासिंगई	अंजनगांव
८४.	चौतर कल्लनम सेठी	मूडबिद्री
८५.	जैन पंचान, बेलगाम, शाहपूर और होसूर	शाहपुर
८६.	जैन फ्री लायब्रेरी	मांडवी
८७.	गुलाबचन्द जैन मा० जैन कुमार सभा	गोटेगांव
८८.	जैन कुमार सभा और हितोपदेशिनी सभा	बीना
८९.	सिंघई फतेहलालजी, सभापति, जैन पंचान	मुरवाड़ा
९०.	दि० जैन मंडली	कपडवंज
९१.	सेठ जुगराजसाव कुंवरसाव	सिवनी
९२.	जैन सिद्धान्त प्रचारिणी सभा	मोरेना

कितनेक शोकजनक तार।

Sorry Shethaji died. My sincere condolence with your family. May Jineshwar bless noble soul of Shethaji.

JINSEN BHATTARAK
Swami Nandni, Kolhapur.

Sorry to learn Maneckchand's death. Convey my sincere condolence to Nabibai on the sad bereavement.

CHIEF OF PHALTAN (फलटणके महाराजा)

Pandita Maganbai,

Offer sincere sympathy for your father's death whom I always admired for his public charity and philanthrophy.

MAHARAJAH of KOLHAPUR

Offer hearty condolences for death of Manik Shet, who was a great benefactor of Jains of India.

ABNIS DIVAN of Kolhapur.

Dhannoolal, Parmestidass, Dayachand, Padamraj, Durgaprasad, Baldeodass, Birdhichand and others much shocked and aggrieved at sad news of Danbir Manakchand's death which caused irrepareable loss to Digamber Jain com-

munity and offer sincere condolences to his generous widow, noble, daughter son and family members.

DHANOOLAL—Calcutta.

Extreamly sorry for sudden death of Sheth Manekchandji. By this Digambor Jain community has become without leader.

MOOLCHAND KASONDAS KAPADIA, Surat.

Deepest condolences of myself and Jains of Southern Maratha Country in your sad bereavement.

A. B. LATHE M. A., Kolhapur.

Jain Community of Dhulia have heard with deep sorrow the death of Danavir Sheth Maneckchand Hirachand. In him we have lost a prominent leader and sincere worker of Jain Digamber Community. We offer our sincere condolence and sympathy to you and all family for sad death of Sheth Maneckchand.

GULABCHAND HIRALAL, Dhulia.

On behalf of Sangli Jain Community I beg to offer our most respectful and heartfelt-sympathy on the sad and untimely death of Sheth Manickchand and pray that God may give you

and your family strength and fortitude to bear this irrecoverable loss I shall ever remember the great services benevolently endured by Shett to the Jains.

MANICKCHAND MOTICHAND, Sangli.

Jains in Mysore assembled at special meeting learnt with profound sorrow the demise of Sheth Manickchand, offer their heart-felt condolence to his family in their sad bereavement.

ANANTRAJAIYA, Mysore.

I mourn deeply Maneckchand Sheths death most dignified phillanthrophist.

REVCHAND CHHAGANLAL, Rangoon.

Deeply grieved at the suddun death of Shethji an irrepairable loss to jain community

HARNARAIN JAIN. Bhagalpur City.

शोकजनक कविताऐं।

रंज ! शत् रंज !! सहस्र रंज !!!

मर गये जगमें मनुष्य, जो मर गये अपने लिये।
पर वे अमर जगमें हुए, जो मर गये जगके लिये ॥ १ ॥
जो उपजता सो विनशता, यह तो जगत् व्यवहार है।
पर देश, जाती, धर्महित, मरना यही जग सार है ॥ २ ॥
श्रीमान् अरु धीमान् राज्यऽरु लोकमान अनेक हैं।
पर सेठ माणिकचंद सा, दिखता मुझे नहीं एक है ॥ ३ ॥

यह सेठ माणिकचंद हीराचंद जे. पी. है नहीं ।
वह वीर दानी जैन कुलभूषण कहीं दिखता नहीं ॥ ४ ॥
उन्नीससो चालीस श्रावण कृष्ण नवमी दुःखमई ।
जिस रैन माणिकचन्द बिछुड़े हा! दियो क्या दुःख दई ॥ ५ ॥
वह अंधकी थी लाकड़ी अरु रंककी पूंजी हुती ।
धर्म जाती उन्नतीके कुलुपकी कुंजी हुती ॥ ६ ॥
घाटा अरब दीनारका श्रीमान् कुछ गिनते नहीं ।
पर एक कौड़ी रंक खोकर दुःख सह सक्के नहीं ॥ ७ ॥
वे शिर उठा देखें जहां दिखता वही अंधयार है ।
अब खोई लाकड़ी हा! दुःखका क्या पार है ॥ ८ ॥
शोक भू फटती नहीं जाते समा उसमें कहीं ।
दुर्दैव प्रेरित जनों अब आश्रय दिखता नहीं ॥ ९ ॥
आश्रय जिसका जहां जब दीन जैनोंने लिया ।
तब काल निर्दयीने वहां ही आनकर पीछा किया ॥ १० ॥
उन्नती जात्यऽह धर्मके कुछ कार्य जिसको सौंपकर
सो रहे थे जैन सारे हिन्दके हो बेफिकर ॥ ११ ॥
तब काल रक्षक पुरुषको ले गया इकला पायकर ।
सोते हुए ये लुट गये हे नाथ! इनहिं सहाय कर ॥ १२ ॥
यह वज्रपात हुआ अचानक हाय प्रभु अब क्या करैं ।
सच्चा हितैषी रतन खोकर किस तरह धीरज धरैं ॥ १३ ॥
पर रुके नहीं होनी कभी होत अन होनी नहीं ।
यह जानकर धीरज धरो जो उपजता विनशे वही ॥ १४ ॥
अरु शोक क्या है सेठका वे सुख शांति पायँगे ।

घरघरके हम हो जांयगे कहो कौन हमहिं जगायंगे ॥१५॥
क्या मर गये हैं सेठजी ? नहिं वे अमर भूपर भये।
अदृश्य उनको देखकर ही लोग कहते मर गये ॥१६॥
महिमा उन्होंके दान पुण्यऽरु शांति सरल स्वभावकी।
घरघरमें गायी जा रही है उन्नतीके चावकी ॥१७॥
ये सभा बोर्डिंग आश्रम चटशाल जो हैं दिख रहे।
सो सब उन्हींकी सौम्य दृष्टिसे अजहुं लहरा रहे ॥१८॥
अब नाथ! ऐसे नरतनके आत्माको शांति दे।
अरु कर सनाथ हमहिं प्रभो! उत्साह अरु सद्बुद्धि दे। ॥१९॥
दुःखित कुटुम्बी जनों अरु जैनोंको हे प्रभु! धैर्य दे।
दीप शांतिः दे प्रभुः! नित शांति दे, नित शांति दे ॥२०॥

शोकग्रसित—

मास्टर दीपचंदजी परवार. नरसिंहपुर (C. P.)

शेठ माणेकचंदजीना विरहनी वेदना।

अरर दइवर, आ ते शुं बन्युं, माणेकचंदनुं मृत्यु तो थयुं;
जैन कोमनुं भूषण तो गयुं, रत्न एवुं कां खरे ना रह्युं. १
हिंदनो दीवो अस्त तो थयो, तिमिर कोममां व्यापीने रह्यो;
अखिल कोमनां हृदय फाटीयां, नेत्रसरीतथी अश्रु तो झर्यां. २
मेघ नृपतिए, वृष्टि तो करी, एना शबपरे मौक्तिथी खरी;
स्वर्गलोकमां वास तो कर्यो, संसार त्यागीने सुखथी रह्यो. ३
तुम विरह तो, ना खमायरे, एकवार तुं दृष्टि फेंकरे,
अंतः प्रार्थना, एटलीज हवे, प्रभु तेमने शांति आपजे. ४

अजब कोप दैवे आ कीधो रत्न जैन लीधुं हारी;
धर्मी प्राणीना प्राण हर्या छे, ना दीधो तें बहु कारी. १
अखील कोम आ रुदन करे छे, नर बच्चांने कारणेरे;
धन्य धन्य माणेकचंद तुं ने, धन्य छे तुज माताने. २
गरीब बिचारां बाळकने तो, सहाय करीने सुख दीधां;
विद्यारूपी दानज दीधुं, पुत्र रूप मानीज लीधा. ३
बाळको ते रुदन करे छे, अम सहायक ते शीद गयो;
माणेकचंदे विश्वज मुक्युं, फानी ने ते स्वर्ग गयो. ४

शोकोद्गार।

अहा दैव ! तुं छेकज निर्दय, केर कारमो गजब कर्यो;
झपट मारीने झड़पी लीधो, लेश नहिं तुं हृदय डर्यो ॥
हतो हीरलो नायक नृपसम, तेर लक्ष जैनोमां जे।
खोळी खोळीने लीधो खुंचवी, जड्यो नहिं शुं बीजो के ?
दिगंबरीमां दीपक सरखो, हतो वीर ए माणेकचंद।
कोम डुबेली तारी लाववा, धार्यो हृदये रुडो छंद ॥
केळवणी दई कंइक तारुण्या, बांधी बोर्डिंगो बेस कर्युं।
दया लावीने दिलमां अनहद, दीन दुःखी दुःख दूर कर्युं;
विधवा अबला बालक केरां, कष्ट निहाली कांप्यो जे;
तेवा परदुःखभंजन नरने, जतो मुक्यो ना जमड़ा तें.
दानवीर हिंमतपुरण जे, काळ खरे तें कर्यो गुलाम;
काळ सुणी कंपे अम दिलडां, शुं सरीयुं यम तारुं काम ?
पण एमां शुं वांक ताहरो, खुट्युं तेल दीप अस्त थयो,
गयो गयो पण रही सुकीर्ति. जीवन सुयश झळकावी गयो.

जीवणलाल कसनदास कापड़िया—सूरत.

शेठ माणेकचंदजीनो विरह.

शार्दुलविक्रीडीत छंद.

आ संसार असार म्हांय भरती ने ओट दीठा घणा;
जेणे हर्ष विषादने सम गण्या गर्व न जेने हण्या.
सादा शांत दयाळ दान गुणथी दीप्या बधा देशमां;
ते पंथी माणेकचंद चंद्र अथम्यो हा हा थयो लेशमां.

✣ ✣ ✣ ✣

(बेडो भाई बुडतो तारो रे अंबे आई पार उतारोरे–ए राग.)

गयो वीररत्न स्वधामे रे, शेठ माणेकचंदभाई नामेरे.

विक्रम संवत ओगणीशेने, सीत्तेर वेरी साल;
अषाड वदी नोमने दीने, शेठ गया करी काळ–**गयो** १

तारथी माठी खबर ज्यां पहोंची, गाम सुरत शहेर;
हाहाकार पड्यो हडहाल्यो, वरतायो बहु केर–**गयो** २

लोक कहे गयो गरीबनो बेली, निराधार आधार;
धर्मनो धोरी गयो अहींथी, हा रूठ्यो कीरतार–**गयो** ३

शांत सरळ सादा सोभागी, गंभीर निर्मळ चंद;
विद्या विनय विवेकी थशे कोइ, विरला माणेकचंद–**गयो** ४

सत्य क्षमा शील सत्वथी शोभीत, काया कंचनवान;
लक्षण लक्षीत अंग सुकोमळ, लेश नहि अभिमान–**गयो** ५

मुंगळ सम कर ढींचण सुधी, रेखा युक्त विशाळ;
शरद शशिसम मुखनी शोभा, तेजे तपे शुभ भाळ–**गयो** ६

नाशिका कर्ण ने नेत्र अनोपम, कोमळ हृदय विशाळ;
भाग्यशाळीनां चिन्ह हतां सौ, सफळ थयां तत्काल–**गयो** ७

गजगति गेले चाल हती अल, वाणी अमीरस पुर;
वदन कमलोथी फूल खरतां, बोलता बोल मधुर—गयो ८
गरिब कुटुंबमां सुरत गामे जन्म्या हता महाभाग्य;
पढती ने चढती दीठी आ भवमां, थिरज न करी त्याग—गयो ९
भाग्य उदयथी बधी संपत्ति, रह्यो क्षमा पर भाव
सज्जन संगथी हर्ष शोकमां, रह्यो सदा समभाव—गयो १०
राज्य प्रजानो मित्र सुभेच्छक, देश स्वजातिनो मित्र;
क्यां गयो जैन जवाहीरमांथी, हीरो अमुल्य पवित्र—गयो ११
अकस्मात् ए पुरुषना मरणे, वरस्यो बधे हा—हा—कार;
स्वजन ने परजन रुदन करे बहु, क्यां गयो दीनदातार—गयो १२

ललीत छंद.

अरर दैव तें, कोप शो कर्यो, गरिबनो खरो आशरो हर्यो;
सकल संघनो मित्र क्यां गयो, अरर चंद्र तुं चालतो थयो. १
विकट आ समे क्यां गयो अरे, परम मित्र तुं प्राण संहरे;
धरम धामनां काम क्यां थशे, तीरथ वाळवा कोण दोडशे. २
विरह ताहरो ना खमायरे, तुज वियोगथी खेद थायरे;
पलक एकमां प्राण जायरे, धरम ध्यानमां मौन थायरे. ३
अमर आतमा रूपथी शम्यो, शरीर धर्मथी भिन्नथ रम्यो;
नियम कालनो ना कदी फरे, जनमनार ते प्राणीयो मरे. ४
सफल जन्म तो तेहनो खरो, सुकृत पंथमां जेह संचर्यो;
जगतमां रह्यो जीवतो खरे, विजय वावटो विश्वमां फरे. ५

H. V.

सेठजीके लघु भ्राता सेठ नवलचंद हीराचंदजी

शोक सप्तकम्।

न्यपतत्किमु हाशनिर्गिरीशे चपला स्फटिकमंदिरेऽमले वा।
अथवा हिमसंहतिर्विकाले फलसंपादकभूतलेऽनुकूले ॥ १ ॥
जनताशमतोषकोऽमृतांशुर्यदि वार्कस्तिमिरापहा गृहीतः।
नियतोऽदयराहुणा यमेन प्रहतो **माणिकचंद्र** एष मेशः ॥ २ ॥
निहता यमनाथ भूरिबोधाः शुभसंपन्निधयः पुरा प्रभूताः।
अतृपन्न तथापि रे खलेयं विहिता जातिरपि त्वयाद्य दीना ॥ ३ ॥
प्रचुरानवबोधसौरभासा चिरसंतापित एष जैनलोकः।
परिशांतिभियाद्य यस्य मूले क्षितिजं त्वां परिलोचयामहे क? ॥ ४ ॥
गुणम.छ ! विनम्रभालजातिर्न हि चक्रे परिभूषणं परं त्वां।
गुणमानदभारतीयराज्यं पद **जे० पि०** प्रतिदानतोऽपि भूयः ॥ ५ ॥
ममतोषि सुदर्शनं यदीयं विविधेहाकुलितेक्षणान्मनुष्यान्।
गुणपत्रविलंबिताढ्यशाखं शुभकल्पद्रुममाप्नुमः कुतस्त्वाम् ॥ ६ ॥
धनविग्रहमानसेषु केचिद्भुवि जाता विकलेन कार्यकाः प्राक्।
सकलेन बलेन किंतु धीमन्नजनि त्वां परिलोचयामहे क ? ॥ ७ ॥
अनित्यसंपन्निधनाकुलं त्वत्कथंचनाबोधिमनः परत्र।
त्वमेहि शांतिं तव यांतु वंश्याः शुभाभिवृद्धिं ननु कामना नः ॥

काशीस्थ विद्यार्थिसप्तक।

भावार्थ–हाय ! क्या यह पर्वतपर वज्र गिरा ? या निर्मल स्फ-टिक-मन्दिरपर बिजली गिरी ? अथवा वृक्षोंके फलनेका अनुकूल समय आनेपर उनपर हिम समूहने गिरकर उन्हें जला दिया ? ॥१॥

जैसे मलिनात्मा राहुने लोगोंको सुख–शान्ति देनेवाले चन्द्रमाको या अन्धकार नष्ट करनेवाले सूर्यको ग्रसा हो, उसी तरह सेठ माणिक-चन्द्रजी निर्दय काल द्वारा ग्रसे गये ॥२॥

पापीकाल ! तू पहले बड़े बड़े ज्ञानी और बुद्धिमानोंको अपना ग्रास बना चुका है, तब भी तुझे सन्तोष नहीं हुआ, जो आज तूने सेठ माणिकचन्द्रजीको हरकर सारी जातिको भिखारिणी बना दिया ? ॥३॥

जैनसंसार बहुत समयसे अज्ञानरूपी भयंकर गर्मीमें संतप्त हो रहा था। भाग्यहीसे उसे सेठ माणिकचन्द्रजी सरीखे शीतल-वृक्षके नीचे आकर शान्ति मिली थी। हाय ! उसे अब हम कहाँ देखेंगे ? ॥४॥

हे गुणाकर ! इस विनीत जातिहीने आपको अपना भूषण नहीं बनाया, पर गुणियोंका आदर करनेवाली भारत सरकारने भी जे० पी० का पद प्रदान कर आपका उचित सम्मान किया ! ॥५॥

अनेक प्रकारकी वस्तुओंको देखनेकी इच्छासे असन्तुष्ट नेत्रोंको जिसका सुन्दर दर्शन सन्तुष्ट करता था, उस श्रेष्ठ कल्पवृक्षको अब हम कहाँ प्राप्त करेंगे ? जिसके पत्रकी जगह तो आपके गुण थे और उँगलियोंकी जगह हाथ ॥६॥

सेठ साहब ! ऐसे तो बहुत लोग हो चुके हैं, जो किसीने धनको, किसीने शरीरको और किसीने मनको समाजके हित लगाया, पर उन सबमें आप एक ही हुए जो आपने अपना तन, मन और धन समाजके लिये अर्पण किया। हाय ! आप जैसे पुरुष रत्नको अब हम कहाँ देख पायँगे ? ॥७॥

हे दयासागर ! आपकी मृत्युने हमारे अशान्त मनको किसी तरह समझाना ही पड़ेगा। (क्योंकि उसके लिये सिवा इसके कुछ गति ही नहीं है)। अन्तमें हम चाहते हैं कि आपका पवित्र आत्मा शान्ति लाभ करे और आपका कुटुम्बवर्ग भी सुखी हो।

काशीके सात विद्यार्थी।

शेठ माणिकचंदजी यांचा निधनजन्य विलाप

(चाल—चन्द्रकांत राजाची)

खनिजोद्भिज (ज) तिर्यञ्च-मनुज हे कोटि-चतुष्टय की।

असे तयां सकलांत श्रेष्ठ परि मानव इहलोकीं ॥ ध्रु० ॥

दुर्लभ ही मानव-तनु लाधे पुण्यबलें जीवां।
कांत, सदय, अव्यंग असा नरदेह सौख्य-ठेवा ॥
उच्च वस्तु न्यूनत्व पावती नीच बहुत जगतीं।
मनुज, रत्न, गुण, धर्म असो सकलांचि हीच रीति ॥
अखिल जीवसृष्टीस अभयकर श्रेष्ठ दयाधर्म।
उच्चस्थानीं तया ठाव जा धम मूर्त-शर्म ॥
सत्य सनातन अनुपम सुंदर परम धर्म ऐसा।
असे अहिंसा प्रमुख जयामधिं जैन धर्म खासा ॥
प्रसिद्ध श्रावक विशुद्ध विलसे भुवनीं इंदुपरी।
निपजे "नर-माणिक्य" तयामधिं वर्णवे न थोरी ॥
लक्ष्मीचें चिरनिवास-स्थानचि मुंबापुरि नगरी।
भरतभूमि भूषण इहलोकीं मानव-इंद्रपुरी ॥
पुनित केली सुरत भूमिका जन्मा येवोनी।
विराजिती मुंबापुरिमाजी माणिक गुणखाणी ॥
दानवीर मशहूर असा माणिक्यचन्द्र शेठी।
औदार्य गुणाब्धि अक्षय अखिल जैन-सृष्टि ॥
दिधली पुष्टी धर्म तरुतें धनवर्षा करुनि जलें।
शांतिवायुनें आंग्लराज्य तो स्वातंत्र्यें डोले ॥
अतिशय सिद्धक्षेत्रें तीर्थें तदीय शक्तीने।
विराजिती बहरांत फुलविलि कीं धर्म-द्रुम-सुमनें ॥
ठायीं ठायीं विद्यासदनें जैनशिशुस्तव तीं।
स्थापुनि केली सकल भारतीं जिनविद्योन्नति ती ॥
चिरशिवदायक, भेषजमंदिर, विद्यार्थी-सदनें।
रुग्णमंदिर, चैत्य उठविले, मूर्तिमत पुण्य ॥
अखिल हिंदु पांथस्थां सुंदर धार्मिक नव शाला।
स्थापियल्या बहु प्रमुख शोभते 'हिराबाग' अतुला ॥

व्याख्यानालय, सभामंडपा, जिनकन्याशाला ।
श्राविकाश्रमा स्थापुनि केल्या संस्कृत जिनशाला ॥
विद्यार्जनार्थसाह्य देउनी तुष्टविलें छात्रां ।
भाविक सुजनां सर्वे घेउनी भूषविल्या यात्रां ॥
निखिल भारत जैन जनपद परिचय-ग्रंथाला ।
अमुनी केलें पूर्ण 'दिगंबर जैन डिरेक्टरिला' ॥
स्थापियलें त्या विद्वद्-खचिता काशिपुरिमाजी ।
'स्याद्वाद महाविद्यालय' जिनवाणो ती गाजी ॥
प्रामाणिक माणिक आणिक या लोकिं न नर कोणी ।
जे. पी. पदवी अर्पि तयातें अवनिपाल वाणी ॥
शांत, सरल, अतिप्रेमळ सर्वप्रिय नच लव मानी ।
आप्त, जाति, साधर्मि, देशजन स्वकीय स्वच मानी ॥
करुनी स्वोन्नति, जात्युन्नति, धर्मोन्नति देशाची ।
सेवा करुनी मेवा मिळवी ठेवाचि पुण्याची ॥
यापरि वेंचुनि कायावाचामनें धनें आयु ।
विद्याहाराभयभेषजदानें हो चिर-आयु ॥
झाले सुरवर माणिक स्वर्गी गेले वा मोक्षीं ।
शांत जाहला तदीय आत्मा सुकृतें ती साक्षी ॥१॥

(चाल-आजि अक्रुर हा)

अजि अवचित हा जैनसुकृतनिधि सरला ।
माणिक्यचंद्र मावळला ॥ ध्रु० ॥
ती प्रेमाची धर्मचंद्रिका साची ।
जाहली नष्ट की अमुची ॥
जिनवाणीचा मेघाचि बोधसुधेचा ।
वितुळला जैनवृंदाचा ॥ चाल ॥
भरविल धर्मसभा कणि आतां ।

होइल कवण तयांचा नेता।
खुलनिल धर्मविभव तें आतां ॥
मालाकाराचि तो धर्मतरूचा गेला।
जनि हाहाःकाराचि पडला ॥ २ ॥

शोकविकल-**गणपत सोमाजी काळे**-चिनावलकर.

विरह विलाप।

(राग मरशिओ)

रेहाय ! केम, आज स्हेशे जैनो आ रंडापो ;
स्हेशे, जैनो आ रंडापो,
प्रभु शान्ति **माणेकने** आपो-**रेहाय०** १
मानवंता मुंबाईमां गणाय, शहेर सुरतना वतनी जणाय;
कहेतां उठे छे अंतरमां लहाय-**रेहाय०** २
अशाड कृश्न नवमी केरी रात्रे, बार उपर एक कलाक जाते;
वार गुरु सीत्तेरनी राते-**रेहाय०** ३
कीधो शान्तिथी स्वर्गे जई वास, पड्यो भारतमां भोर आ त्राश;
काळे कीधो **कोहीनूर** नाश-**रेहाय०** ४
आश्रम, शाळाजनो दुःखी भारी, सुणी चोंक्या छोडी देई वारी;
त्राहे त्राहे करे नर नारी-**रेहाय०** ५
मित्रो संबंधी कुटुंब रुवे, आंख चोधारा आंसुज चुवे;
जैन ज्ञाती सुखे नव सुवे-**रेहाय०** ६
पाछळ पुत्र **जीवणचंद** मेली, पूत्री **मगन, तारा** दूर ठेली;
जैन ज्ञातीनो कोण हवे बेली-**रेहाय०** ७

जैन संघना स्थंभरूप स्वामी, शिक्षण संस्था पिता शीरनामी;
भारत प्रजा वियोगे दुःख पामी–रेहाय० ८
जैन शासन शान्ति सदा आपो, आवी आफत दीलाशाथी कापो;
करो दूर प्रभु परितापो–रेहाय० ९
हाथीचंद्रनुं हृदय बळे छे, स्मारक फंडनी अपील करे छे,
भावी बनवा काळ बने छे,
रेहाय केम आज स्हेशे जैनो आ रंडापो० १०
वियोगी–हाथीचंद माणेचंद–सोनासण।

निर्दय काळने ठपको।

गझल–कवाली.

अरे न गुणा! अरे निर्दय! अदेखा काळ शुं कीधुं?
अमे भूख्या तणुं भाणुं, भरेलुं तें लई लीधुं.–अरे० १
साखी–वार दई बासेठने, लेवा बेठो हाल;
पाटुं मारी पतितने, जरी न आवी व्हाल.
रतन आ रंकना करथी, अचानक छीनवी लीधुं–अरे० २
साखी–अभागीओ आ देश छे, अभागणी आ कोम;
हीरो हस्त थकी गयो, उकळे रोमे रोम.
हता मगरूर जे नरथी; उडी गई ते बधी आशा–अरे० ३
साखी–खीलतां पहेल डोलर कळी, पवन झपाटा साथ;
ढळी पडी पृथ्वी परे, दई न शकयो को हाथ.
हवे ए पुष्पनी सुरभी, मळे क्यांथी अमोने ते–अरे० ४
साखी–पुनर्जन्म लईने अहीं, करजो पूरण आश;

ज्यां हो त्यां सुख पामजो, व्हाला **माणेकचंद**.
हती ए रत्ननी प्यासा, पड्या अवळा बधा पासा-**अरे०** ५

मोतीलाल त्री० मालवी-थाकरोल.

दानवीरनो स्वर्गवास.

(काळने ठपको.)

ओचींती आपत शुं ! आ, स्वप्नमांके शुद्धिमां छे ?
मांघेलुं "माणेक" मारूं, गयुं केम हाथथी ?
काळ विकराळ तने, लज्जा जरी आवी नहि;
हिंदना **हीरानो** तन, आल्यो केम झडपथी ?
संवत सीतेर ओगणीश, केरी साल्रमां शुं ?
अषाड अंधारी नवमीए, केम आवीओ ?
जैन कुळ ज्ञाति कुळ, दानवीर जे. पी. हरी;
दीपक बुझाव्यो जैन कोम रडती करी. १

(यक्षदेवे कहेली आगाही.)

चैत्रमां चलाव्युं मन मांघेरा **माणेक पिता**,
पर्युषण व्हेलां जई, स्वर्गमां सीधावशे !
पण में तो मान्युं नहि, खोटो आ आभास थाय;
आवुं याद लावी शाने, दीलने दुःखाववुं ?
बीजीवार कीधी वात, जाणी गई नहि रात;
पत्र ते लखाय केम ? धुजे तन तापथी,
भाद्रवे भूलावी वात, प्रीतिमांही कीधो घात;
दैव यक्षराज तीथि, आपवामां शुं डर्यो ? २

(सुप्रसिद्ध कार्यो)

बोर्डिंग ने हीराबाग, मुंबाइमां भावे कर्या,
जुबेली, मंदीर, श्राविकाश्रम ज्यां शोभतां;
चंदाबाडी सुरतमां, कन्याशाळा, पाठशाळा,
कोल्हापुर, काशी, उदेपूर मांही ओपतां;
" राजनगर " बोर्डिंगने, दवाशाळा, धर्मशाळा,
पक्षपात वीण नरनारी, बहु शोभतां;
कथे हाथीचंद्र जैन, जातिना मुगटमणी,
रुदन करे छे हिंद, वियोगना तापथी. ३

कंकर समान द्रव्य, **लक्ष दश** दीधा दाने,
हिंदना हाकेमोमां, प्रसिद्धी बहु पामीया;
मारवाड, मेवाड ने गुर्ज्जर, दक्षिण देशे,
कोन्फरन्स सभामांही, जाणे झट आवीआ;
पाठशाळा, ज्ञानशाळा, भूवन ने आश्रमोमां,
लक्ष्मिनुं देई दान, सज्जनोने भावीआ;
कथे हाथीचंद्र मारा, तुरंगोने आपी मान,
हठीसंघ कही मने, प्रेमथी बोलावता. ४

जैनोना प्रमुख प्यारा, बोर्डिंगोना पिता व्हाला,
कमिटी मीटींग मांहे, क्यारे हवे आवशो ?
कुधाराओ तोडवाने, सुधाराओ जोडवाने,
केशरी समान फरी, क्यारे शीख आपशो;
धर्म, अर्थ, काम माट, धारी कर्या ठाटठाठ,
स्वर्गे सीधाव्या नाथ, असार संसारथी;

कथे हाथीचंद्र मारा, शीरोमणी शाणा शेठ,
दीननी उच्चारी वात, क्यारे दीले लावशो ? ५
हीराबाग बेठकमां, मीटींग भरेली रहे,
देश ने विदेशना, भावे पधारे भेटवा;
रीद्धिमां कुबेर सम, **दान** कर्णराय सम,
बुद्धिमां अभयकुमार, प्रेमथी पधारता;
पंडितोनो सुणी पाठ, प्रश्न पूछो प्रेमे करी,
समाधान थाए पछी, शान्तिए सीखावता;
कथे हाथीचंद्र मने, बतावो माणेक पिता,
जैन जाति उन्नतिना, रसता बतावता. ६
शान्ति सम दयावान, **दुकाळमां** दीधां दान.
ठामठाम गामगामे, घास अन्न मोकल्यां;
कमीटी सभाओ स्थापी, देशोदेश-ज्ञान आपी,
उंघथी जगाडी कोम, झाली रुडा हाथथी;
श्रीमंतोने स्थान आप्यां, **पंडितोने मान** आप्यां,
दरिद्रनां दुःख काप्यां, खरी भरी खंतथी;
कथे हाथीचंद्र थयुं, वियोगे विशेष दुःख,
मेळाप थयो न मने, पूरवना पापथी. ७
मंदिरनी अंदरमां, भावे जिनराज भजो,
पास आवे तेने बहु, प्यारथी बोलावता;
देईने **सुपात्र दान**, मनुष्य मात्र देई मान,
वाणिज्य विद्या तणरी, नीतिने बतावता;
युनिवर्सिटि **जैन ग्रंथ**, प्रीते त्यां पढावा पंथ,

जैनना त्हेवार माटे, प्रयत्न कर्यो प्रेमथी;
डिरेक्टरी, धवलजय, धार्मिक नैतिक ग्रंथ,
भंडारो खूलावीने, छपाव्या रुडी छापथी. ८
उंची डीग्री आपवाने, बाळ दुःख कापवाने,
स्कोलरशीप स्थापवाने, कोण व्हारे आवशे ?
ग्रेज्युएट गणवामां, विदेशे चढाववामां,
हाम दाम काम आपी, कोण दुःखो कापशे ?
तीर्थोना तोफान बुरां, आप विना कोण पुरां,
हाल रह्यां जे अधुरां, सल्लाह कोण स्थापशे ?
कथे हाथीचंद्र सदा, शान्ति, अविनाशी सुख,
प्रेमे परम आनंद, जिनराज बहु आपशे. ९
समेद, पावन, चंपा, पावा, गज, तारंगाने,
तुंगी, मांगी, बद्रीजैन, आदिनेक भेटीआ;
दान तणुं देई दान, **तीर्थोना सुधार्यां स्थान**,
आपी मान खोली कान, वेगे व्हेला आवीआ;
ज्ञान रुडुं आपवाने, तिमिरने कापवाने,
उपदेशको घेर घेर, खंते बहु फेरव्या;
मासिक, ने पाक्षिक, पत्रो कढावीया,
स्वर्गे सीधावी बहु, शान्ति जई पामीआ. १०
लघुभ्रात, **नवलभाई**, के पुत्र जीवणचंद्र,
तारा, रत्न, ठाकोरने शान्ति सदा आपजो;
व्हेन मग्न, तारा व्हेन, केशर के शेठाणीने,
दिलासो देईने प्रभु, दुःख पडयुं कापजो;

शीरोमणी शेठतणी, अंतरमां थाय याद,
परमेष्ठी उच्चारे पंच एवी बुद्धि आपजो.
कथे **हाथीचंद्र** बंधु, " स्मारक खोली फंड, "
नामना अमर करी, कीर्तिने दीपावजो. ११
वियोगी–**हाथीचंद माणेकचंद–सोनासण.**

शोकजनक अवसान.

अमूल्य हीरा रत्नने, माणेकना भंडार,
माणेकचंद्र उडी गया, नभ छाया अंधार!

गुणानुवाद.

पानानी खाणमांथी, माणेक उत्पन्न थया;
माणेकना यत्ने, बहु रत्नो उभराव्यां छे,
पूर्वजनां नामोने, तार्यां धन धामोने;
पुण्यमय कामो, पृथ्वीमां पथराव्यां छे.
धर्म ध्वजा फरके छे, यश कीर्ति चळके छे;
रंक मुख चातक, रसदाने मलकाव्यां छे,
तसचित ठार्यां, बहु दुखीयां उगार्यां ने;
निर्धननां द्वारो, धन धान्ये छलकाव्यां छे,
अनाथालयो, देवालयो अने विद्यालयो;
आनंदारोग्यालयो, बांधनार क्यां गयो?
जनसेवा, **देव**सेवा, **राज्य** अने **देश**सेवा,
सेवाना मेवा चखाडनार क्यां गयो?
सभाओ गजावनार, **शान्ति** रेलावनार,

संपना सीतारनो ए सांधनार क्यां गयो ?

धर्मवृत्ति धारनार, **दया प्रेम** पाळनार,

अधर्मने कापनार असिधार क्यां गयो ?

स्वभाव परिचय.

कलि काल करालनी जाळ महिं, भय व्याकुळ भारत व्यस्त थयो;
सुर्य वह्यो अस्ताचळ त्यां, शशीने निरखी मन मस्त थयो.
ए ताप प्रताप जतां हजीये, सद्भागी शशीनो दस्त रह्यो;
मणि माणेक मन्दिर शून्य करी, **श्री माणेकचंद्र** शुं अस्त थयो ?
वीर हता वीर शासनना, अति धीर गंभीर सुधीर हता;
नरवीर उदार पवित्र छतां, अभिमानी न लेश लगीर हता,
स्वार्थ त्यजी, परमार्थ त्यजी, निज मार्गने कोण सुधारी शके ?
अहिं माणेकचंद्र जतां जिन शासन, आसन आश न धारी शके ?
डुबता दुःख दुःखना आा विषे, हती एकज आश तुं शासनने;
लई पामती धर्म प्रवृत्ति टकावी, शिखावी दया जिन सज्जनने.
करी कार्य अनेक प्रजा हितना, नहीं प्यारा गण्यां तन के धनने;
जन्म्या जगमां ते भले जन्म्या, कर्युं सार्थक उन्नत जीवनने.

शान्तिवाचन.

गुमाव्युं श्रेष्ठ धन आजे, हमारूं रत्न रोळायुं,
शशी परलोकमां राजे, सुधानुं जाम ढोळायुं;
गयो नरवीर ए शुरो, दया धर्मे हतो पूरो,
करी दुःख दर्दनो चुरो, जीवननुं सत्व चोळायुं ? !
पताका कीर्तिनी राजे, जगत्मां नामना गाजे,
सुखेथी स्वर्गमां साजे, सुधा सर्वस्व घोळायुं;

थयो तुं देवमां आदि, पडावी इन्द्रनी गादी,
नमी तुं न धर्मनी डांडी, हशे ज्यां पुण्य तोळायुं !
निवेदकः—**शोकनिमग्न सरैया** (सूरत)

शेठ माणेकचंदजीनो विरह.

हरिगीत.

गंभीर दरियामां डुबातुं व्हाण " दिगम्बर " हतुं
पण दैवयोगेथी बची खडको महिं सपडायुं'तुं;
रस्ते च्हडावी तारवानो यत्न त्हें कीधो खरो,
पण व्हाण भरदरिये मुकी तुं चतुर नाविक क्यां गयो ? १
नामाक्षरो जेनी ध्वजाना नष्टप्राय थया हता,
अंगो शीथील थइ अने जे भागवा मांड्या हता;
ऐक्य त्हें करी गगनमां सोनेरी ध्वज चोंड्यो खरो,
पण व्हाण भरदरिये मुकी तुं चतुर नाविक क्यां गयो ? २
त्हें मुक्त करवा व्हाणने फरी डुबवाना भय थकी,
कुशळ नाविको बनावा संस्था स्थापी घणी;
आ कार्यकुशळता वडे बहु त्हारो यश वाध्यो खरो,
पण व्हाण भरदिये मुकी तुं चतुर नाविक क्यां गयो ? ३
विकट मार्गोमां कसोटी छे खरी नाविक तणी,
ते मार्गमांथी डाघ विण त्हें चालवा हिंमत धरी;
छे धन्य त्हारा धैर्यने पण मार्ग पुरो ना कर्यो,
तो व्हाण भर दरिये मुकी तुं चतुर नाविक क्यां गयो ? ४
तुं मध्यदरिये एकलां चाल्यो गयो अमने मुकी,
लाग्युं स्हरुं ते तें कर्युं पण उर विषे न दया धरी;

ह्हे तारवा ह्हारी पछी कप्तान कुशळ ना सुस्यो,
तो व्हाण मध्दरिये मुकी तुं चतुर नाविक क्यां गयो ? ५
हे व्हाणना माणेक नाविक रत्न अरज उरे धरो,
शाश्वत सुखो बहु भोगवो शान्ति सदा तुंपे रहो;
अम उर विषे उत्साह आदि सद्गुणो भरपुर भरो,
आ व्हाण पार उतारवा अदृश्य रही ह्हायी बनो. ६

Shah. P. C.

शोकदर्शक संदेशो.

(रचनारः—जेठालाल भाईलाल शाह, पादरा.)

(राग सैदानो)

माणेक तुं स्वर्गे सिधाव्योरे! दया नहि दीलमां लाव्योरे,
चौद लक्ष तारा साथीने छोडी, गयो प्रभु केरे द्वार;
तेथी रुवे तारा साथी सर्वे, जोई तुज गुण अपार—माणेक. १
माणेक तुं खरे माणेक हतुं, तुज वीन शून्याकार;
जैन कोमे एक रत्न गुमाव्युं, तेथी थयो अंधकार—माणेक. २
एकाएक काळ चळे आवी, उंचकी लीधो झट वार;
जुलम वर्ताव्यो जगमांही, कीधा सर्वे निराश—माणेक. ३
धर्म कार्य अने विद्या मार्गे, धन खरचे अपार;
धर्म मार्गमां पाछी पानी, काढे नव तुं लगार—माणेक. ४
सगां सहोदर साथीने छोडी, गयो तुं स्वर्ग मोझार;
हाय ! हाय ! थयो भूतळ विषे, देखी दीनकर अस्त—माणेक. ५
सने ओगणी चौदनी साले, जुलाई छे मास;

तारीख सोलनी काळी रात्रे, **हीरो** गयो प्रभू पास--माणेक. ६
याचे **जेठालाल** प्रभू पासे, आप सुगति तत्काल
दीर्घायुषी कर पृत्र तेनाने करवाने धर्म काज--माणेक. ७

विलाप।

कुलभूषण दूषणरहित, हरन जाति संताप।
दानवीर अति धीरचित, गये हाय! कित आप ॥

छन्द राधिका (२२ मात्रा)

कित गमन कियो हे! जैनजाति उपकारी!
महसभा भई है आज, बिना सहकारी ॥
व्याकुल बिछोहसे भये, सकल नर नारी।
दृग टपटप टपकत नीर, प्रकट दुख भारी ॥ २ ॥
तजि निज बिलासता आप, स्वार्थ पर कीना।
अरु त्याग रमासे मोह, दान बहु दीना ॥
आहार औषधी अभय, शास्त्र परचारी।
अब कियो गमन कित 'दानवीर' पदधारी ॥ ३ ॥
जैन जातीसे।
पुनि कीना बहु उपकार, विविध भांतीसे ॥
अब त्याग तासुकी बांह, छोड़ मझधारी।
किस कारणसे हुए देव, देव-पुर-चारी ॥ ४ ॥
जब यह अनुशासन प्रकट, हुआ सरकारी!
सम्मेदशिखरपर बनें, भवन सुखकारी ॥
वह आमिष भक्षण करें, केलि विस्तारें।
तब होय धर्मकी हानि, जीव बहु मारें ॥ ५ ॥

यह विपत परी अति आन, धर्मपर भारी ।
सब रुदन करत थे जैन, अजैन दुखारी ॥
तब धारि हृदय सन्तोष, शान्ति विस्तारी ।
कर अमित परिश्रम आप, विपत निरवारी ॥ ६ ॥
तुम सत् विद्या परचार, हेतु श्रम कीना ।
चंचल लक्ष्मीसे नेह, त्याग तुम दीना ॥
तुम धन्य धन्य नररत्न, दीन दुख हर्त्ता ।
निज करनीके वश सुयश, जगत विस्तर्ता ॥ ७ ॥
वह हीरासा[1] उद्यान, लगत है सूना ।
हिय आवत ताकी याद, होय दुख दूना ॥
बहु सभा सुसैटी स्याद्वाद चटशाला ।
बिन तेरे विधवा हुईं, हाय ! तव बाला ॥ ८ ॥
सद्विद्या प्रेमी छात्र-बृन्द बहु तेरे ॥
होगये सकल असहाय, हाय ! बिन तेरे ॥
इक तुम्हरे ही अवलम्ब, रही जिन जाती ।
अब तुव बिछोहसे रुदन, करत दिन राती ॥ ९ ॥
तसु डूबत हति मंझधार, शरण तुम दीनी ।
अब त्याग तासते नेह, स्वर्ग गति लीनी ॥
नहिं धारी किंचित दया, मार्ग गह लीना ।
हा ! शोक जलधिमें डुबो, कहां चल दीना ॥ १० ॥
इस आर्य भूमिपर उपजे, पुरुष घनेरे ।
ऐसे ही नररत्न, हुए सम तेरे ॥

---

१ हीराबाग धर्मशाला.

शेठजीकी स्त्री नवीबाई वैधव्यावस्थामें और
चीरंजी जीवनचंद.

जैन विजय प्रेस, सुरत।

मर जाय मनुजपर नहीं, सुयश मरता है ।
दिन दिन दूना निश चतुर-गुणित बढ़ता है ॥ ११ ॥
तेरे बिछोहसे हाय ! हृदय जलता है ।
पर काल बलीपर किसका, बल चलता है ।
जो उपजत है जग मांहि, अवशि मरता है ।
हो पूर्ण आयु फिर नहीं, समय टरता है ॥ १२ ॥
बहु इन्द्र चन्द्र अवनीन्द्र, आदि पदधारी ।
परि गाल कालके हुए, मृत्यु-मग चारी ॥
यह है अशरण संसार, मरणकी बेरा ।
नहीं मेट सकत है कोई, कालका फेरा ॥ १३ ॥
गुरु साधु सिद्ध अरहंत, आदि उपकारी ।
हैं जिन शासनमें शरण, बाह्य विहारी ॥
पर निश्चयनयसे शरण आप अपना है ।
यह जानि शोकके ताप, नहीं तपना है ॥ १४ ॥
ये दुःख शोक आताप, प्रगट दुखकारी ।
अति करत असाता बंध, सुगति सुख टारी ॥
इमि जान शोकका तजन, करौ सब भाई ।
नित प्रति जिनवरका मनन, करौ सुखदाई ॥ १५ ॥
हे दीनबंधु सर्वज्ञ, जगत हितकारी ।
हों श्रेष्ठ श्रेष्ठ अवनीन्द्र विदेह मंझारी ॥
तजि सकल परिग्रह सर्व, महाव्रत धारें ।
धरि धरम शुकल मुनि छपक, मोह निरवारें ॥ १६ ॥
हनि चार घातिया कर्म, धर्म विस्तारें ।

पुनि गह अयोग गुनठान, कर्म वसु टारें ॥
वे केवलज्ञान उपाय, तत्त्व परकाशें ।
हों मुक्ति वधूके कंत भ्रमण भव नाशें ॥ १७ ॥
तसु शेष सकल परिवार, बंधु सुत नारी ।
लहि शोक सिंधुसे पार, धैर्य्य दृढ़ धारी ॥
करि करि तिनको अनुकरण, करणसे दानी ।
बनि बनिकें होवें 'मूलचन्द' सुख खानी ॥ १८ ॥

मूलचन्द बड़कुर जैन, दमोह।

"दिगंबरजैन" के कितनेक शोकजनक लेख।

दिगंबरीनो दीवो बुझाई गयो !

आ परिवर्तनशील संसारमां जीववु अने मरवुं सवनी साथे लागेलुं छे. जे मरे छे ते पुनर्जन्म ले छे अने जे जन्मे छे ते निश्चय एक दिवस मरशेज, पण जे पुरुषना जन्मथी देश, धर्म, जाति अने कुलनी उन्नति थाय तेवाज पुरुषनुं जीववुं सार्थक छे अने तेज पुरुष इतिहासमां अमर नाम करी जाय छे.

....

दिगंबरीना राजा।

आ दानवीर सेठथी आखा हिंदनो एक पण जैन अजाण्यो नहि होय, केमके एमनी **दानवीरता** अने आखा हिंदना जैनो प्रत्येनी एकसरखी प्रिय लागणीथी शेठ माणेकचंदजीनुं नाम सर्व स्थळे घरगथुं न हतुं. दिगंबरीमां एमना करतां विद्या अने समृद्धिमां

चीजा बनाए पुरुषो छे, पण शेठ माणेकचंदजी स्वभाव, उदारता अने ज्ञातिभोगादिने लीधे आखा हिंदना दिगंबर जैनोना एक **राजा** याने **वायसरॉय** जेवा हता, केमके ए जे कहेता, ते सर्वे मान्य करता हता, तेम भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभाना प्रमुख पण आ महान पुरुषज हता, तेथी दि. जैनोना राजा कहेवा ए योग्यज लागे छे. एमणे जिंदगी दरम्यान दानपुण्यनां शुं शुं महान कार्यो करेलां छे ते आ अंकमां आपेला जीवनचरित्रमांथी वांचकोने मळी आवशेज, पण एटलुं तो अत्रे जणावीए छिए के आ महान नरना वियोगथी दिगंबर जैन कोमे एक महान संचालक गुमाव्यो छे अने तेनी खोट कदी पण पुराई शकवानी नथी. गुजरात, मुंबाईमां दिगंबरी कोण, ए कोई जाहेरमां जाणतुं नहोतुं अने जैनो ते मात्र श्वे० जैनोज छे एम भासतुं हतुं, पण लगभग २५ वर्ष थयां **गुजरात**मां अने आखा हिंदमां जे **धर्मजागृति** आ शेठे फेलावी छे, तेथी जैनोमां दिगंबरी जैनो पण एक मोटो विभाग छे, एवुं जगजाहेर थई गयुं छे.

तन, मन अने धननो भोग.

कोई तनथी कार्य करे छे, कोई मनथी कार्य करे छे अने कोई धनथी कार्य करे छे पण तन, मन अने धन त्रणेने एक सरखी रीते रोकनार जो कोई वीरनर जैनोमां थयो होय तो ते आ शेठ माणेकचंदजीज हता, के जेओ दश पंदर वर्ष थयां व्यापार धंधाथी फारेग थई रात्रिदिन पोतानो समय जैन कोमनी उन्नति थाय एवां धार्मिक कार्योमांज ज्ञातिभोग आपीने रोकता हता; अने लगभग ६२ वर्षनी उमर थवा छतां एक युवान माणसनी माफक दरेक कार्य

उमंगथी करता हता. मकानो बांधवा संबंधीनी माहिती अने अनुभव एमनो एटलो विशाळ हतो के कंईपण संस्था के मकान बांधवाना प्लान माटे सेंकडो लोको एमनी सलाह लेता. ए शेठ तीर्थक्षेत्र कमीटीना महामंत्री तेम अनेक सभा, बोर्डिंगो, पाठशालाओ वगेरेना प्रमुख तथा ट्रस्टी हता तेथी ते दरेक खाताने एमना अणधारेला ओचिंता स्वर्गवासथी घणोज अगवडो पडशे अने ते खोट पुरावी मुश्केलज छे. मर्हूमने कुटुंब संबंधी अनेक आफतो स्हेवी पडी हती, छतां पण धर्मकार्यमां पाछा न हठतां वधु ने वधु धार्मिक कार्यो ठेठ सुधी करता हता. एमना भत्रिजा शेठ **प्रेमचंद** मोतीचंद तथा भाणेज शेठ **चुनीलाल** झवेरचंदना अकाल वियोगथी तेमने असह्य आफत पडेली अने आ बे पुरुषो एवा विरला हता के तेओ जो आजे होत, तो दानवीर शेठ माणेकचंदजीनुं दरेक कार्य सहेलाईथी उपाडी लेत. आ शेठने बीजी आफत पोतानी एक मोटी अने भोळी पुत्री फूलकोर मृत्यु पामवानी अने बीजी पुत्री **मगनव्हेनने** २० वर्षनी वयमां वैधव्य प्राप्त थवानी हती, पण जेवुं पुरुषोमां माणेकचंद शेठे नाम मेळव्युं छे, तेवुंज नाम हिंदना तमाम स्त्री वर्गमां श्रीमती मगनव्हेन मेळववा भाग्यशाळी थया छे, तेना प्रताप तेमना पुण्यशाळी पिताज हता. वळी आ **अल्पज्ञ सेवक** उपर शेठ माणेकचंदजी एक **पुत्र करतां पण वधु स्नेह** राखता हता अने आजे अमो समाजनी जे कंई अल्प सेवा बजावी रह्या छिए, तेनुं मूळ कारण तेमज " **दिगंबर जैन** " पत्र शरू थवानो मूळ पायो आ शेठथीज रचायो हतो. घणां घणां स्थळोए सभाओमां, मेळावडा वगेरेमां अमो आ शेठ साथे जता, जेथी अमने घणुंज

जाणवानुं अने जोवानुं मळयुं छे, जे भाग्ये कदि पण विसरी जवाय तेवो नथी.

विद्यादाननो महान पाठ.

चार प्रकारना दानो पैकी मुख्यत्वे करीने दानवीर शेठ माणेकचंदजी विद्यादान माटेनां जे महान कार्यो करी गया छे तेनो पाठ दरेक व्यक्तिए शीखवानो छे. जे **पारसी** कोम आजे बेएक लाखनी संख्यामां छे ते केळवणीने लीधेज हिंदमां अग्रगण्य गणाय गणाय छे; तेवी रीते शेठ माणेकचंदजी केळवणीना जे महान कार्योनो आरंभ एवो युक्ति पुरःसर करी गया छे के ते जो पुरां थशे तो एक समय एवो आवशे के जैन कोम पण केळवणीनी बाबतमां अग्रगण्य गणाशे.

तीर्थोनी संभाळ अने डिरेक्टरी.

मर्हुम शेठ माणेकचंदजीए दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्रो, सिद्धक्षेत्रो, अतिशयक्षेत्रो तथा अनेक मंदिरोनी एटली बधी सारसंभाळ अने सुव्यवस्था जातिभोग आपीने करी छे के जे माटे जैन इतिहासमां आ वीरनरनुं नाम सोनेरी अक्षरे कोतरायलुं रहेशेज; तेमज आखा हिंदना दिगंबर जैनोनो अने तीर्थोनो पूर्ण इतिहास, अथाग परिश्रम अने खर्चथी तैयार करावी जे "दिगंबर जैन डिरेक्टरी" आ शेठ प्रकट करावी गया छे, तेथी आखा हिंदना दिगंबर जैनोनी माहीति सर्वेने घेर बेठां मळी शके एम छे अने ए उपकार कंई जेवो तेवो नथी.

हीराबाग धर्मशाळा.

मुंबाईमां एक सार्वजनिक महान काय जो दानवीर शेठ माणेकचंदजी करी गया होय तो ते 'हीराबाग' याने 'हीराचंद

गुमानजी धर्मशाळाओ छे, जे रूपिया सवा लाखना खर्चे एवी तो उत्तम सगवड अने व्यवस्थावाळी बंधावी छे के दरेक यात्रीने तेमां भर करतां पण वधु सगवड मळे छे, तेम तेमां लेक्चर हॉल बांधेलो होवाथी व्याख्यानभूवन माटे पण आ हीराबाग जगजाहेर थई गयो छे. आखी हिंदु कोम माटेनी आ सखावत कंई जेवी तेवी नथी अने तेनुं अनुकरण बीजा श्रीमानोए करवानुं छे.

कुल सखावत.

दानवीर शेठ माणेकचंदजीए विद्यादान, आहारदान, अभयदान अने औषधदान माटे करेली सखावतोनो आंकडो रु. ८ थी १० लाखनो थवा जाय छे के जेनुं महान गंजावर दान समग्र जैनोमां आज सुधीमां कोईए कर्युं होय, तो ते आ शेठज करी गया छे अने तेनो धडो आखी जैन कोमे लेवानो छे. लाखोपतिओ अने करोडपतिओनो जैनोमां टोटो नथी, पण आवा महान दानीओनोज टोटो छे, ते ज्यारे पुराय त्यारे एक समय एवो आवे के जैन कोम दुनीयाना बधा धर्मोमां सर्वोपरी गणाय.

स्मारक फंडनी स्थापना.

दुनियामां ज्यारे कोई वीरनरनो वियोग थाय छे त्यारे तेनुं नाम अने कीर्ति अमर राखवाने तेना नामना स्मारक फंडो थाय छे एटले के ते महान नरनी यादगीरी हंमेश कायम राखवाने एक फंड (मोटी टीप) भरावबामां आवे छे अने पछी जे रकम थाय ते स्थायी राखी तेनी उपजमांथी ते वीरनरना नामनी एक अथवा वधु संस्थाओ खोलवामां आवे छे, तेमज तेना गुणो अहर्निश याद आवे ते माटे ते पुरुषना **बावलाओ** स्थळे स्थळे उभा करवामां आवे

छे, ते प्रमाणे दानवीर शेठ माणेकचंदजीनी यादगीरी हरहंमेश कायम रहेवाने स्मारक फंड खोलवानी जरूर छे, जेथी मुंबाईमां एक स्मारक फंड खोलवामां आव्युं छे, तेम अत्रे (सुरतमां) पण एक "दानवीर शेठ माणेकचंद हीराचंद स्मारक फंड" खोलवामां आव्युं छे अने तेमां दिनपर दिन रकमो भराती जाय छे अने आवतो जाय छे, तेथी आ फंड गंजावर थवानी आशा बंधाय छे, माटे "दिगंबर जैन," ना वहाला वांचको ! माणेकचंद शेठे आपणे माटे घणुंज कर्युं छे, तेनो बदलो आपवा कोई पण समर्थ नथी, छतां पण 'फुल नहि अने फूलनी पांखडी' नी उक्ति मुजब तेमणे करेलां कार्योना बदला तरीके आ स्मारक फंडमां कंई ने कंई रकम भरीने तरतज अत्रे (मनीओर्डरथी) मोकलो, केमके "तरत दान महा कल्याण" छे अने आवा कार्यमां उघराणी ! करवानुं के उधार ! राखवानुं होयज नहि.

जीवनचरित्रनी जरूर.

दानवीर शेठ माणेकचंदजी त्रण वर्ष थयां अमने कहेता हता के मारुं जीवनचरित्र तमे मारी हयातीमां बहार पाडो, पण अमारे पारावार दिलगीरी साथे जणाववुं पडे छे के अमो ए दानवीर शेठनी आ सूचना अमलमां लावी शक्या नथी, पण हवे एमनुं गंजावर जीवनचरित्र २५ थी ५० चित्रोसहित जन्मथी स्वर्गवास सुधीना लंबाण इतिहास साथे बहार पाडवानो प्रयास करवानो अमारो इरादो छे अने ते फळिभूत करवा अमो भाग्यशाळी थईए एज अमारी आंतरिक इच्छा छे !

मूळचन्द किसनदास कापडिया (संपादक)
('दिगम्बर जैन' वर्ष ७ अंक १०)

विनोद-बाण ।

माईओ ! गया मासनों **गंडेरीना ककडा** जेवो अने वळी बेहद काळा लीटा खेंचेलो " **दिगंबर जैन** " नो अंक जोई हुं तो आश्चर्यमां ज गोथां खावा लाग्यो के आ वळी शी आफत ! काळा लीशोटा तो शोकदर्शक

चिंतामणी रत्न गयुं !

गणाय, तो ' दिगंबर जैन ' ने एवो शु जबरो शोक पडी गयो हशे के ठाम ठाम लीशोटाज लीशोटा ! खेंची मार्या छे, पण उपर छपेटेली दानना सागर माणेकचंदजीनी छबी जोई बंदो व्हेमायो के आ मोटी छबी वळी शु काम ? विचार थयो के अंदर वांचु तो खरो, शी भयंकर खबर छे ? वांचु शुं मारूं कपाळ ! पहेले पानेज " दिगंबरीनो दीवो बुझाई गया " झगझगता हीरातुल्य वीरपुत्र माणेकचंदनुं जादुई रीते मरण ! हाय ! शुं ते वखतनी मारा हृदयनी स्थिति ! चोपानीयुं पण हाथमांथी पडी गयुं. एक पछी एक अनेक तर्कवितर्क दोडी आवे के हाय, हाय ! आ शुं स्वप्नुं के साची बात, पण खोटुं शुं होय ? आपणा दिगंबरीओनां नशीबज टूंकां त्यां काळनो शुं वांक ? गयुं ! गयुं ! चिन्तामणी रत्न हाथथी गयुं !!!

जे नरबच्चाए पोतानी कोमने माटे दश लाख रुपिया कांकरा माफक खरची विद्यादाननो अमुल्य स्तंभ स्मारक फंड माटे रोप्यो ! ऊंघती दिगंबरी कोममां जागृति स्वार्थत्यागनी जरूर पेदा करी, असंख्य श्रमण बाळकोने विद्वान बनाव्या, अनेक अनहद दुःखी विधवाओने सुमार्गे लगाडी, अनेक

तीर्थोनुं रक्षण कर्युं, अनेक टंटा बखेडा पताव्या, ते महान् नरनो खाली अफसोस करी बेसी रहेवुं ए शुं आपणे माटे योग्य गणाय? नहि, कदी नहिज. त्यारे शुं करवुं? स्मारक फंड खोलेलुं छे तेमां नाणां मोकलवां के फंड गंजावर थाय तो तेमनी यादगीरी कायम रहे. विनोदी.

('दिगंबर जैन' वर्ष ७ अंक ११)

हाय ! दुर्भाग्य !

न जाने जैन समाजका कैसा दुर्भाग्य है कि यह सदा किसी न किसी विपत्तिमें ही फंसी रहती है। इसके जीवनका एक एक पल शोक और दुःखमें ही बीतता है। इसके दुर्भाग्यसे प्रथम तो इसके जीर्ण रोगके दूर करनेवाले वैद्योंका ही अभाव है, यदि दैव-योगसे मिल भी जाते हैं तो इसके तीव्र अशुभ कर्मोके उदयसे स्वयं वैद्यराज ही यम देवकी भेंट हो जाते हैं। कितने ही महापुरुषोंने दृढ़ संकल्प किया कि हम इस जातिको शीघ्र दुःखावस्थासे निकाल-कर रोगसे मुक्त करेंगे, परंतु शोक है कि वे शीघ्र अकाल मृत्युके ग्रास बन गए। अभी हम बाबू **देवकुमारजी** आदि महापुरुषों-का शोक न भूले थे और समाजमें उनकी त्रुटि पूरी न हुई थी कि यकायक एक दूसरी आपत्ति हम पर टूट पड़ी, जिसने सर्वत्र भारतमें— जैनसमाजमें खलबली मचा दी। उत्तरसे दक्षिण तक, पूर्वसे पश्चिम तक जैन संसारमें शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जो श्रीमान् दानवीर जैनकुलभूषण सेठ **माणिकचन्द** हीराचन्दजी जे. पी. बम्बईनिवासीका यशस्वी नाम न जानता हो। नहीं २ जैन समा-जका बच्चा २ आपके नामसे परिचित है। आपके उदारता, दयालुता

आदि गुणोंसे सम्पूर्ण भारतभूमि गूंज रही है ।

शोक, महा शोक ! कि आज आपकी दिव्यमूर्ति इस संसारमें हमारे नेत्रोंसे अदृश्य हो गई !! हा ! दुष्ट काल, तुझे किंचित भी दया न आई ! क्या तुझे किंचित भी दया न आई ? क्या तुझे अपने पापी पेटकी क्षुधा मिटानेके लिए और कोई न मिला ? क्या तुझे जैन समाजको ही दुःखी करना अभीष्ट था ? निर्दई, पापी, तुने १३ लाख जैनियोंके दिलोंको दुखाकर अपने वज्र हृदयको शांत किया ! अरे दुष्ट पापी ! शेठजी जैसे सरल स्वभावी, शांतचित्त मनुष्यने तेरा क्या बिगाड़ा था ? वे स्वप्नमें किसीका बुरा न विचारते थे, किंतु सदा इसी चिंतामें रहते थे कि किसी तरह जैन समाज जिसकी बड़ी हीन अवस्था हो रही है उन्नति करे और अन्य समाजोंकी समान उच्चावस्थाको प्राप्त हो ।

उनके जीवनका एक मात्र यही उद्देश्य था । बहुत दिनोंसे व्यापारादिका काम भी छोड़ दिया था और केवल धर्मोन्नति व समाजोन्नत्तिके कार्योंमें ही अपना सम्पूर्ण समय व्यय करते थे। एक प्रतिष्ठित धनाढ्य होनेपर भी आप स्वार्थ और अभिमानको तिलांजली देकर शारीरिक कष्टोंको सहते हुए चहूं ओर भ्रमण करते थे और जहां जिस चीजकी कमी देखते थे तत्काल उसे दूर कर देते थे ! आज समाजमें जितनी संस्थाएं हैं, जितने आंदोलन हैं, उन सबके नेता आप ही थे । ऐसा कोई भी उन्नात्तका काम समाजमें नहीं हुआ, जिसमें आपने अग्र भाग न लिया हो और तन मन धनसे सहायता न की हो । आपने जैन समाजका जितना उपकार किया उसके प्रकट करनेके लिए हमारी लेखनीमें सामर्थ्य नहीं । हम केवल

इतना ही कह कर संतोष करते हैं कि वर्त्तमानमें आपके समान सज्जन, धर्मात्मा, निस्वार्थी, समाज हितैषी, परोपकारी इस समाजमें न कोई था और न कोई है । आपने अपना तमाम जीवन जैन समाजके हितार्थ अर्पण कर दिया था और आपके ही प्रभावसे आपका सम्पूर्ण कुल आपके समान उदार और दयालु हो गया था । आपके आश्रयसे कितने ही निर्धन धनवान हो गए और कितने ही मूर्ख विद्वान् हो गए ।

अतएव जैन समाजका कर्तव्य है कि आप जैसे महापुरुषका एक स्मारक चिन्ह बनावें, जिससे सदैवके लिए उनका नाम चिरस्मरणीय रहे और आपकी आपके उपकारियोंके प्रति भक्ति, प्रेम, वात्सल्य और कृतज्ञताका प्रकाश हो । हमें आशा है कि जैन समाज शीघ्र रुपया इकत्रित करके एक स्मारक चिन्ह बनायगी स्मारक क्या होना चाहिए इसका पीछेसे विचार किया जायगा ।

अन्तमें हम श्री सर्वज्ञ देवसे प्रार्थना करते हैं कि सेठजीकी पवित्रात्माको भव २में शांति मिले और उसके द्वारा सदा जैनधर्म और जैन समाजका कल्याण होता रहे । हम स्वर्गीय सेठजीकी धर्मपत्नी, पुत्री तथा अन्य कुटुम्बीजनोंसे विनयपूर्वक निवेदन करते हैं कि इस संसारकी असारता पर विचार करके शोकको त्याग करें और धैर्य धारण करें ।

सेठजीके वियोगसे दुःखी–दयाचंद्र गोयलीय–लखनऊ ।

('दिगम्बर जैन' वर्ष ७ अंक ११)

* * * * *

अब क्या करें ?

बन्धुओं ! हमारा अग्रेसर तथा जैन मात्रका सच्चा हितैषी धर्मवीर दानी जैन कुलभूषण तो लोगोंसे सदाके लिये मोह छोड़कर अमरपुर (स्वर्ग) को प्रस्थान कर गया ! चारोंओर करुणाजनक ध्वनि सुननेमें आ रही है । जैनों ही के नही, किन्तु उक्त महानुभावसे परिचित स्वदेशी तथा विदेशी अजैनोंके भी चेहरेपर शोक चिन्ह दृष्टिगत होते हैं, सो क्यों ? इसका कारण यह है कि उक्त सेठजी (माणिकचंद हीराचंद) ने अपने सरल स्वभाव, कार्यकुशलता मिष्टभाषण, परोपकार, दान, शील, उत्साह, उद्योग, प्रेम आदि सद्गुणों द्वारा हम सब पर ऐसा प्रभाव डाल रक्खा था, जिससे कि बार बार भुलानेपर भी वह गंभीर मूर्ति हमारे नेत्रोंसे अलग नहीं होती है । यही कारण है, कि चहुं ओरसे यह ध्वनि ध्वनित हो रही है—अब क्या करें ? हाय ! अब क्या करें ? इत्यादि सो ठीक है ।

शोकाकुल और निराधार मनुष्योंके मुंहसे ही ऐसे वाक्य निकलते हैं । यथार्थमें जैन समाज इस समय बिलकुल ऐसी ही निराधार हो रही है । वह शोकग्रसित है । उसे इस समय और कुछ सिवाय " अब क्या करें " के नहीं दिखता है, भला, जब रामचंद्रजी, बलदाऊ जैसे महान नररत्न भी भाईके शोकसे विह्वल हुए छःमाह तक भटकते फिरे थे तो हमारे मस्तकका छत्र उतरे अभी १ सप्ताह भी नहीं हुए हैं, सो भला विह्वल क्यों न होंगे ? परन्तु भाइयों, यह अनादिका नियम है कि प्रायः ज्यों ज्यों दिन बीतते जाते हैं, त्यों त्यों जीव अपने विषय कषायोंमें फंसकर

शोकसे शांति पाते जाते हैं । यहां तक कि स्त्री अपने सर्वस्व पतिको खोकर विधवावस्थामें भी (अधिकतर) खान पान श्रृंगार भूषणादिको नहीं त्याग सकी और कुछ दिन रह (रो) कूटकर 'हाय हाय हई रे' के गीत गाकर फिर अपने रागमें मस्त हो जाती है । आजकल कितनी तो पतिको यहां तक भूल जाती हैं " कि वे फिरसे सुहागिन बन बैठती हैं " इसी प्रकार ज्यों ज्यों दिन बीतते जांयगे, त्यों त्यों इधर उधरकी चिंताओंमें पड़कर भाइयों, आप लोगोंको शोक तो क्या शायद सेठजीकी याद तक भी भूल जायगी ।

थोड़ी देरके लिये हम यह मान भी लें कि जिन्होंने सेठजी साहबको देखा है व जिनको परिचय है वे कदाचित न भी भूलें तो भी उनकी भावी (होनहार) सन्तानको तो नाम भी सुनना एक तरह कठिनसा हो जायगा । यों तो सेठ साहेबका नाम दुनियांके इतिहासमें चिरकाल तक स्थान पावेगा, परन्तु उससे लाभ बहुत कम लोगों (खोजियोंके सिवाय) को मिलेगा। ऐसी अवस्थामें हमारा क्या कर्तव्य है कि जिससे हमारे सेठीजीका नाम और उनके गुण सदा तक हमें और हमारी परम्परा सन्तानके उत्साहोंको वर्धनार्थ चिरकाल स्मरण रहे। और हम लोग उनका अनुकरण करनेके लिये उत्साहित होते रहें। यों तो सेठजी साहेबने अपनी अवस्थितिमें ही ऐसे २ स्मारक कार्य किये हैं, कि जिससे उनका नाम कल्पांत तक अमर रहेगा, तो भी हम लोगोंपर जो उनका असीम उपकार है, उसका परिचय यद्यपि हमारा आत्मा उनके आत्माके प्रति दे रहा है, किन्तु व्यवहारापेक्षा अब प्रत्यक्ष भी कुछ (परिचय) देना

आवश्यक है। यह परिचय देना भी उनके लिये कुछ नहीं है, किन्तु हमारी वर्त्तमान व भावी जातिके लिये एक प्रधान गौरवकी बात होगी। यह बात आगे चलकर बतायगी, कि जैनियोंमें ऐसे आदर्श पुरुष हो गये हैं, कि जिनकी कीर्ति चिरकाल तक चल रही है, उनका इतिहास हम लोगोंके मुर्दे दिलोंमें जीवत्व शक्ति पैदा कर देगा, इसलिये भाइयो, शोकको छोड़ो, अब क्या करें ? अब क्या करें ? ही मत करते रहो, किन्तु क्या करें का उत्तर भी सुनो—

बड़े पुरुषोंकी सन्तान अपने पूर्वजोंके मरने पर 'हाय, हाय हइरे' का पाठ नहीं पढ़ती है। न क्या करें क्या करें, इत्यादि कायरों जैसे शब्द मुंहसे निकालती है, किन्तु अपने पूर्वजोंकी कीर्ति सदा स्थिर रखके उनका स्मारक (यादगार) बताती है। उनके उत्तम गुणोंका अनुकरण करके केवल उनके कुलकी ख्याति ही नहीं फैलाती है, किन्तु अपना स्वार्थ भी साधन करती है, अर्थात् पुरुषत्व पैदा करके महत्वता प्राप्त करती है। ऐसा समझकर भाइयों ! आपका कर्तव्य है। यदि आपको सेठजीके वियोगका दुःख है, यदि आपके मनमें कुछ भी कृतज्ञताका अंश है, तो स्वर्गवासी सेठ साहबके चिरस्मरणार्थ उनका एक बड़ा भारी स्मारक बना डालो। जैसे रायचन्द्रजी आदिके नामसे "रायचन्द्र जैन शास्त्रमाला" निकल रही है इत्यादि। इस स्मारक बनानेके लिये बम्बई व सूरतमें एक 'दानवीर सेठ माणिकचन्द हीराचन्द स्मारक फंड' खोला गया है, और अनुमान ५—६ हजारके चंदा भी भरा गया है, परन्तु इतनेसे अभी कुछ कार्य न चलेगा। क्योंकि कोई

वृहत् कार्य होना चाहिये और उसके लिये लाखों रुपयोंकी आवश्यकता है, और हमारी कृतज्ञ समाजके लिये यह कुछ (चंदा करके भेजना) कठिन कार्य नहीं है। सहजमें ही हो सकता है इसलिये इस दशलक्षण (पर्यूषण) पर्वमें प्रत्येक ग्रामके भाइयोंको स्वशक्ति अनुसार रुपया एकत्र करके-संपादक, "दिगम्बर जैन"-सूरतके पते पर सेठ माणिकचन्द हीराचन्द स्मारक फंडके नामसे भेजना चाहिये और सेठ साहबके गुणोंका अनुकरण करके उनके बोये हुए अंकुरोंकी सेवा करना व और भी नवीन बीज बोना चाहिये। देखें, कौन कौन सज्जन अपनी कृतज्ञता व दिली शोकका परिचय देते हैं? बस बन्धुओं, अब क्या करें? का उत्तर मिला, कि स्मारक बनावो, (उसके लिये द्रव्य एकत्र करके भेजो) और उनके गुणोंका अनुकरण करो, तथा सेठजीके अनुसार आप भी अपने गुणोंसे संसारको मोहित करके स्वर्ग मोक्षका मार्ग पकड़ो। यही करो, अब यही करो, अब यही करो।

आपका कृपाभिलाषी—

मा० दीपचन्द परवार-नरसिंहपुर (सी० पी०)

("दिगंबर जैन" वर्ष ७ अंक ११)

* * * * *

शोकोद्गार.

आजे आपणी आसपास जे ग्लानि तथा शोकनी छाया प्रसरी रही छे ते शानी छे? सर्व कोई आ दुनियाना दिगम्बर जैन नानाथी ते मोटा सुधी गळगळित कन्ठे कही शके छे के आ असह्य ग्लानि ते आपणा अभेद मार्ग प्रवासी, ब्रह्मनिष्ठ सुरलोकमां विरहनार, तत्वविद् तथा मानवकूलमां मनुष्याकृतिथी फिरस्ताना रूपमां आवेला

दिगम्बर कोमने आखा गुजरातमां ओळखावनार अग्रगण्य दानवीर जैनकुलभूषण श्रीमान शेठ माणेकचंद हीराचंद जे. पी. ना अवसानने लीधेज छे. अवसान समय व्यतीत थयो, तोपण ते विषेनो विचार करीए छिए, तो आपणुं हृदय एकाएक विदीर्ण थाय छे. सन्ध्याकाळ पछी रात्रि पडवाना समये ज्यारे एकाएक मेघयूथ चढी आववाथी तेजःपुंज नष्ट थाय छे अने बधे शून्य निरव अने शमशमाकार लागे छे, तेम आजे पण जैन कोमना आगेवान श्रीना स्वर्गपन्थ तरफ रवाना थतां जे शोके आपणा हृदयने घेरी लीधो छे तेथी खरेखर आनन्द रूप तेजःपुंज आजे आपणामांथी नष्ट थयुं छे. हा! आजे ते पुण्यात्मा अने परोपकारीना गुण स्मरण थई आवतां हुं बोलवा कंइ प्रयास करुं छुं के तरतज हृदय एकाएक कम्पवा लागे छे. मन जाणे के बेशुद्धिमां पडयुं न होय एम लागे छे अने कण्ठ पण बाष्प कलुषित थई जाय छे. हा! आ बनावे आपणा हृदयाकाशने घेरी लई जे आपणा मनना तरंगोमां विकृति उत्पन्न करी छे, ते हवे आपणा उद्गार रूपे कोना आगळ ढोळीशुं? हा, प्रभो! आ हृदय स्वार्थने लीधे एटलुं बधुं कठण थई गयुं छे ते फाटीने चुरा थई जतुं नथी.

अहा महात्मन्! आखरे ए मधुर! ए दयानी खाण परोपकारी जीवडो! अनन्त विश्वनी अपरिमित लीलामां जीवननुं टूंकु प्रयाण आदरी आपज्योति रूपे सुर्य लोकना पडदा भेदी परमपुराण विभुना अलौकिक धाममां विरमो छो. प्रेमाळ सात्विक तेजथी भर्यां नयनो आ फानी दुनीयामांथी हमेशने माटे उडी गयां. आ विचार हृदयभेदक छे. हे कुलभूषण! आप आ स्थळनो त्याग करी दिव्य प्रदे-

शर्मां सीधाव्या, पण आपणी पाछळ रहेला दिगंबर जैनगणनी शी अवस्था थशे? छोडवाओनी दरकार राखनार खरो माळी चाल्यो गयो, पछीथी उद्यान शोभा केवी रीते नवपल्लव कुसुमवासित थाय? प्रजान्तक आ दयाशीळ जैनोनो शो अपराध हतो के त्हें छळकपट करी त्हेमना परोपकारी जीवडाने त्हारी पासे बोलावी लीधा. अरे जनापकारिन् प्रजान्तक! खरेखर मनुष्योने फसाववाने तुं कंई कंई उपाय करी रह्यो छे.

अरे विधि! तुं जाणे छे के हुं तो आ जगतमां एक जातनी क्रीडा करुं छुं, पण " कागडानुं बेसवुं अने ताडनुं पडवु " ए प्रमाणे खरेखर अमारुं तो आथी विपरीत थयुं छे. अरे! आ समये जो कोई मृत्युभूमिना माणसे आवो छळकपट कर्यो होत तो अमे न्यायमंदिरमां जईने तेनी साथे लडत, पण हवे हे क्रूर विधि! त्हारी सामे अमे कया न्यायमंदिरमां जईने दावो करीए अने त्यां अमारो पक्ष करनार कया वकील या बेरीस्टरने शोधवो? अमारे नसीबे तो हमेशने माटे रोदणां रडवानां रह्यां अने अमे ते प्रमाणे रोदणां रडीशुं.

महात्मन्! सर्व सामग्रीथी भरेला वहाणना जेवी तमारी मानसिक समृद्धिनी स्थिति हती तेथी जे बंदरे आ वहाण उतरतु त्यां यश दाखवतुं अने विजयी प्रकाशतुं. आपे आपनुं जीवन जीवनतत्त्वनो ए गंभीर अर्थ करी गाळ्युं हतुं. आपना हृदय—गिरिमांथी अनुकम्पा, स्नेह, उत्साह, प्रशम, संवेग, आस्तिक्य अने औदार्यनां विमळ झरणां हमेशां वह्यां करतां हतां. जीवननी गांभीर्यताना विचारे आपना हृदय उपर एटली ऊंडी असर करी हती के तेथी

आपे जीवनशैलनी कई दिशामां विशाळ अने रमणीय उच्च भूमिका आवी छे ते विषे सारूं संशोधन करी जीवनयात्राने ते पंथ स्वीकारीज हती. आथीज दिन प्रतिदिन उर्ध्व प्रयाण करता एमना आत्माए देहरूपी मृतपिंडनी अवगणना करी हती.

प्रेमना म ळो तूटी गई, संसारनी स्वप्न वस्तु अदृश्य थई ! परोपकारनो अखूट भंडार, दयानिधान हमेशाने माटे विलोप थयो ! हा ! अरेरे मनोहर मूर्ति....परोपकारी जीवडो अदृश्य थयो ! शुं हवे ते आ स्वप्न माया तरफ प्रयाण करशे ? हे बोर्डिंग वत्सल ! शु त्हारी उं । आशाओ फलिभूत करशे ?

रे कोन्फरन्स ! शुं त्हारो नेता फरीथी त्हने बोलाववाने मोटा सादे हांक मारशे ? ना, ना. असत्यना तिमिरो भेद्या, सत्यना द्वारे पेठा अने स्वर्गीय सुखो अनुभववा लाग्या. संसारने तुच्छ गण्यो, मायाथी अळगा थया अने अमरत्वमां एकाकार थई गया. काष्ठनी चीता प्रदिप्त करी अने काष्ठवत् शरीरने अग्निज्वाळमां प्रवेश कराव्यो। पंचतत्वो पंचमहाभूतमां मळी गया अने स्थुल मूर्ति सर्वने माटे अदृश्य थई.

आहाहा ! सवनो संबंध तुट्यो, सरिताना निर्मळ जळमां स्नान करी प्रेमनो प्रभाव, परोपकारनो अखूट भंडार हमेशने माटे तरतो मूक्यो अने ते अंतिम मूर्तिने छेल्ला नमस्कार करी दुनियानां स्वकार्यमां लक्ष आप्युं.

हे विभो ! अमारा आ परोपकारी जीवडाने अने सर्वे मित्रोना आत्माने शान्ति आपी सुखमय कोषमां प्रवेश कराव अने स्वप्नवत् दुनियामां विखुटा पडेला आत्माओने आश्वासन आप.

हे प्रभो! जे अनुपम गुणनिधान पवित्र आत्माना प्रकाशथी दिगंबर जैन कोम झळहळी रही ते अत्यारे अमारा हतभाग्यने लीधे सदाने माटे चाल्या गया छे. अन्तिममां हे प्रभु! अमारी एटली विज्ञापना छे के ते पुण्यात्माने हमेशां शान्ति आपो.

मनसुख कालीदास-बोरसद.

(दिगंबर जैन वर्ष ७ अंक ११)

× × × ×

कर्मवीर माणेकचंद।

चलं वित्तं चलं चित्तं चले जीवित यौवने ॥
चलाचलमिदं सर्वं कीर्तिर्यस्य स जीवति ॥

भावार्थ—धन चंचळ छे, चित्त चंचळ छे, जीवित चंचळ छे, यौवन चंचळ छे, अने बधुं चळाचळ छे, तेथी जेनी सारी कीर्ति छे ते पुरुषज जीवे छे.

प्रिय वांचक! सूर्य उगे छे अने आथमे छे, नदीमां पूर आवे छे अने जाय छे, श्रावण मासे वरसादना झपाटा पडे छे अने घडीमां तरोधान थई जाय छे, बीज चमकारा करी आपणा चक्षुओने आश्चर्यमां गरकाव करी छेतरी अदृश्य थई जाय छे, घडानी रेंटमाळ फरी फरीने पाछी त्यांनी त्यांज आवे छे, तेमज पाणीना परपोटा जेवो बनेलो आ नाशवंत देहधारी मनुष्य जन्मे छे अने मरे छे, त्यारे आवा अनियमित जातनां कार्यो माटे मनुष्ये शोक अने हर्ष शामाटे धारण करवो जोईए?

खरेखर! जे सूर्य सदैव पोतानां किरणोद्वारा प्रकाश आपी आपणने तेजोमय बनावी रह्यो होय, जे नदी निश्चितपणे म्होटुं पेट

रात्री आवता पुरने शान्ति आपी रही होय अथवा तृषातुर दुःखी पुरुषने तेहेनी तृषाने शान्त करी आश्वासन आपती होय, जे वरसाद धीमे धीमे वर्षी जमीनमां पाणी पचावी कृषिकारोनां मन रंजन करतो होय, जेने बीजने आकर्षी पोताने स्वाधीन बनावी जगतनी विशाळ दृष्टि समक्ष मूकी होय, जे जीवात्मा पोताना जीवनने अल्प गणी पोताना सहचारी बन्धुओ माटे, पोतानां प्रान्तनां बाळको माटे के तेओनी दशा शोकजनक देखी तेओने उगारवा माटे के दुनियानी हरिफाईमां आगळ वधारवा माटे जेने अनेक संस्थाओ खोलवा खोलाववा अनहद परिश्रम लीधो होय, एवा सूर्य जेवा प्रकाशमान, सरिता जेवो समभाव राखनारा, आस्ते आस्ते दरेक कार्यो उत्साह-पूर्वक करी बतावनारा, जेने विजळीक बळ आपी आपणने नवुं जीवन प्राप्त कराव्युं होय, जे मनुष्ये पोतानुं जीवन समाजना उत्कर्ष माटेज अर्पण कर्युं होय, जेओए आपणे माटे लक्ष्मीनो भोग आपी अगणित प्रयासो आदर्या होय, तेमज आलोक अने परलोक बन्नेने सुधारनार जे सरस्वती, तेनो जेणे उद्धार कर्यो होय, तेमना गुणानुवाद देशोदेश गवाय, तेओने माटे तेमनो समाज, आ बालवृद्ध शोका-ग्रस्त, निस्तेज अने विदीर्ण थयेलो दृष्टिगोचर थाय, तेमज तेओने माटे पवित्र प्रेमीओ अनेक राग रागणीमां गुणानुवादोनां ब्युगलो फूके, पत्रकारो शोक प्रदर्शित करवा पोताना हृदय घटरूपी पत्रोपर विरह भावनाओ रूपी काळी बोर्डरनी मर्यादा बांधी हृदयाकर्षक लखाणो लखी कोलमो भरे एटलुंज नहि, पण तेओनी छबी प्रेमी हृदयोमां कोतराई रहे एमां शुं आश्चर्य ?

वदनं प्रसादसदनं सदयं हृदयं सुधामुचो वाचः
करणं परोपकारणं येषां केषां न ते वन्द्याः

भावार्थ—जेओनुं मुख प्रसन्नतानुं घर छे, जेओनुं हृदय दयावंत छे, जेओनी वाणी अमृतने वरसावनारी छे अने जेओनुं परोपकार (पारकाने माटे उपकार करवो) एज कर्तव्य छे, तेवा पुरुषो कोने वंदन करवा योग्य नथी? ज्यारे एम छे त्यारे तेवा सर्व सद्गुणभूषितने नेताओनो समागम दूर थतां कयो सत्य धर्मानुरागी तेमना गुणानुवाद गावानी इच्छा नहि करे? कयो कठोर हृदयनो पुरुष तेओना स्मारकमां नाणां भरवा इच्छा नहि करशे? अलबत करशेज!

विशुद्ध प्रेमीओ! आवा एक कर्मवीर समाजनेता, हिंदुस्ताननां एक सुप्रसिद्ध, श्रीमान, उदारचित्त धर्मात्मा अने दानवीर, बोर्डिंग हाउस अने शिक्षण संस्थाओना पिता, दिगंबर जैन समूहना एक जळहळता कोहिनुर, तेमज समग्र जैन संघना स्तंभरूप गणाता अने उत्साही अग्रेसर जैनकुलभूषण दानवीर सेठ माणेकचंद हीराचंद जे. पी. ना अचानक स्वर्गवासथी कदिपण न पुराय एवी जे भारे खोट आपणने पडी छे ते माटे आ लेखनी, आ हृदयनी अवस्थाओ प्रगट करवा असमर्थ छे, तेनुं वर्णन म्हारे कया शब्दोमां करवुं!

अरे! हाय! माणेक मोत लखतां, दर्द दिलमां थाय छे;
लखतां अचानक मोतने, मुज कलम धृजी जाय छे.

हे गुणियल समाज! एक वखत आपणे धर्मानुराग छोडी मिथ्यात्वना खाडामां पडया हता, एक वखत आपणा पुत्रोने केवी केळवणी आपवी तेनी आपणने खबर पण न्होती अथवा केळवणी एटले शुं तेथी पण आपणे अज्ञान हता, एक वखत आपणी बाळाओने केवी केळवणी आपवी के जेथी खरी साध्वी, सन्नारी के गृहि-

णीओ उद्भवी शके विगेरे अनेकानेक बाबतोथी आपणने वाकेफ करनार जो कोई होय तो एक श्रीयुत् माणेकचंदजी हता. तेओना अने तेमना कुटुंबीओना भेगा बळथी परन्तु वीरनर माणेकचंदना उप-देशामृतथी आपणा आंगणा पासे (गुजरातमां) अने एओश्रीनुं अनु-करण करी आजे आपणी समाजमां लाखोना दान थवा मांडयां छे, तेमज घणे भागे एमनाज प्रयासथी समस्त भारतमां दिगंबर संप्रदायमां बोर्डिंगो, श्राविकाश्रमो, पाठशाळाओ, कन्याशाळाओ, पुस्तकालयो, ओषधालयो विगेरे संस्थाओ पुर जाहोजलालीमां चालती द्रष्टिगोचर थाय छे. तेमज आपणा गुजरातमां एमणेज स्थापेली बोर्डिंगमांथी बी. ए. सुधीनी उच्च डिग्री संपादन करी केटलांक रत्नो बहार पडया छे अने केटलाको एवी डिग्रीओ मेळववा भाग्यशाळी थशे एमां संशय छेज नहि, परन्तु दिलगीरी साथे म्हारे कहेवुं पडे छे के ए बी. ए.नी डिग्री संपादन करनाराओ जाणे बी. ए. ना अभ्यासमां बीधा होय तेम अथवा तो बी. ए. नो अभ्यास करतां मगज कंटाळी गया होय अथवा पहोंचेला श्रमथी शान्ति लेता होय तेम गुजरातमां एक पण व्यक्ति अग्रगण्य भाग लेवा अथवा समाज हितार्थे आ पत्र द्वारा बे शब्द लखवा उत्सुक थई नथी, ए केटलुं शोचनीय छे ? आपणापर अगणित उपकारोमांथी ए नररत्नना एक महद् उपकारनो उल्लेख करूं तो ते अस्थाने नहि गणाय.

गुजरातना मशहुर शहेर सुरतना वत्नी रा. केशवलाल डाह्या-भाई कोलेजमां अभ्यास करवा मुंबाई गया हता, ते वखते त्यां गोक-ळदास तेजपाळनी एक हिन्दु बोर्डिंग हयात हती, ते बोर्डिंगना कार्यवाहकोए जैन जाणीने रा. केशवलालने रहेवा देवा ना पाडी हती

त्यारे निराश, लाचार अने उदासिन चहेरे रा. केशवलाल धर्मप्रेमी शेठ माणेकचंद पासे गया अने बोर्डिंगमां जे बीना बनी हती ते सर्व विदित करी. सांभळतां श्रीमान् सेठ माणेकचंदनुं हृदय अत्यंत शोक-निमग्न थयुं, परन्तु जैनधर्मना महान उपासके, स्वधर्मी युवकोनी आवी आपत्ति दूर करवा, ए उद्देशने हृदयस्थ करी विद्याविलासी माणेकचंदे तत्काळ मुंबाईमां बोर्डिंग खोली हती. प्रिय गुर्जरीना वीर तन्यो ! शुं आपणा पर आ जेवो तेवो उपकार? वीरना ए वीर पुत्रे आपणा माटे सर्वस्व मेळवी आप्युं छे, परन्तु तेनो उपभोग करी वीतरागी महावीर पितानी कीर्ति—धर्मध्वजा पृथ्वी तलपर फेलाववी एज कर्तव्य छे.

....

जे गुजरातीओ अने दिगंबर संप्रदाय जेवो के एक वखत हस्तीमांज नहोतो, जे गुजरातीओने घेरघेर शास्त्र शुं छे, जैनधर्मना व्रत नियमो केवां छे, जैनधर्ममां आहारविहार केवां छे तेनुं शिक्षण आपनार, जे जैन देहेरासरोमां के भंडारोमां उधाईना भोग थयेलां शास्त्रो, तेनो उद्धार करी आधुनिक पद्धति पुरःसर लखावी, छपावी आपणी समक्ष मुकनार, जे शास्त्रोना अध्ययनथी थई गयेला पवित्र मुनिगणोना सत्य शब्दनुं पान करी भावी सुधारवा उत्सुक बन्या छिए, विशेषमां जेने प्रतापे आपणे केलवणी पाम्या छिए, आपणने तेमज आपणा दिगंबर संप्रदायने दुनियामां ओळखाव्यो छे, तेमज आपणा दिगंबर जैनो माटे अनेक विद्यालयो उभां कर्यां छे, कराव्यां छे अने तेथीज आजे जैनोना त्रणे फिरकामां दिगंबर संप्रदायने मुख्य नंबरे मुकवा भाग्यशाळी थया छिए, एवा श्रेष्ठ पुरुषने माटे पोतानी समाज जे करे ते थोडुंज छे. हे महावीर प्रभो ! ए पवित्र

आत्माने अहोनिश शान्ति मळ एटली हमारी अनन्य भवे प्रार्थना छे, तेमज आपणे " गोल्डस्मिथ " ना शब्दोमां कहीशुं के—

म्हारी रमतगमतना मित्र, पुराण शी प्रीत, सदा सुखी रहेजे;
तुम घरनी चोकी प्रतिपाळ करो, स्पळी देव जे जे ते.

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

लघुभ्राता-सरैया, सुरत.

('दिगंबरजैन' वर्ष ७, अंक ११)

× × × ×

अनुकरणीय पुरुषनुं अवसान.

प्रिय जैन बंधुओ, महात्मा कबीरनुं वचन छे के—

" जब तुम आये जगतमें, सब हसे तुम रोय;
ऐसी करणी कर चलो, तुम हसे सब रोय. "

अर्थ—हे पुरुष ! ज्यारे तारो जन्म आ दुनियामां थयो हतो, ते वखते तुं तो रोतो हतो, पण तारा मातापिता तथा अन्य सगां-संबंधी तारा जन्म (पुत्रप्राप्ति) ना समाचार जाणीने हसतां हतां; हवे तुं एवी करणी करीने दुनियामांथी जजे के जेथी मरते समये तुं हसे ने तारा मरणथी अन्य सघळा रडे.

भावार्थ—ए छे के ज्यारे मनुष्य सुकृत करीने आ दुनियामां-थी जाय छे, त्यारे तेने एमज लागे छे के आ दुनियामां आवीने में तो मारुं कर्त्तव्य बजाव्युं छे, पण तेवा माणसना वियोगथी सघळा आप्तजनो रुदन करे छे.

आजे आपणे तेवा एक नररत्नने आ संसारमांथी विदाय थई गएल जोईए छिए. दिगंबर जैन समाजमां एवा भाग्येज कोई माणस

हशे के जे दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणेकचंदजी जे० पी० ना नामथी अपरिचित हशे. ता. १२ मी जुलाईनो दिवस दिगंबर जैन समाजने माटे घणोज कमनसीब लेखाशे के जे दिवसे उपरोक्त सेठ साहेब तेमना कुटुंबीओ तथा अन्य आप्तजनोने बल्के आखा दिगंबर जैनसमाजने शोकसागरमां छोडी हरहंमेशने माटे आ दुनियामांथी चाली गया छे.

जे महान पुरुषे निद्रामां पडेली जैन समाजने जगावी पोताना कर्तव्यनुं भान कराव्युं छे एटलुंज नहीं पण खुद पोते तन, मन अने धनथी भगीरथ प्रयत्न आदरी ठाम ठाम सभा, सोसायटीओ, शालाओ, बोर्डिंगो—स्कूलो स्थापी छे, आवा एक महान नरने लई लेवामां दैवने पण केम दया नहीं आवी ? अत्यारे तेना विना मारी समाज सुनी पडी छे. सामाजिक नावने मरदरिये छोडी सुकानी अन्तर्गत थयो छे. हवे सदरहु नावने कयो वीरपुरुष (सुकानी) कये किनारे लईने छोडशे, तेज जोवानुं रह्युं छे.

वांचको, मरवुं बधाने छे, मरण कोईने छोडनार नथी, पण जन्मवुं अने मरवुं तेनुंज सार्थक छे के जेणे पोतानुं जीवन परोपकार अर्थे खर्च्युं छे; तेवा माणसो मरवा छतां पण तेमनी कीर्ति तो अच-ळज रहे छे. शेठ माणेकचंदजी आज आ दुनियामां नथी, पण तेमणे जे कृत्य कर्यां छे, तेथी तेमनुं नाम हरहमेंशने माटे अमरज रहेवानुं.

दिगम्बर जैन समाजनी अवनत दशा थवानुं मूळ कारण जे अविद्या हती तेने दुर करवाने माटे शेठ साहेबे जे जे स्तुत्य पगलां भर्यां छे ने विद्या प्राप्त करवाने माटे जे जे साधनो तेमणे पुरां

पाडयां छे, ते सर्वने जाहेरज छे. आजथी वीस वर्षपर गुजरातमां अंग्रेजी भणनार विद्यार्थीओने केटलुं खर्च करवुं पडतुं, तेम अमदावाद तथा मुंबाई शहेरमां के ज्यां खावानुं मळे पण रहेवानुं न मळे तेवे स्थाने रहेवामां केटली अगवडो वेठवी पडती तेनो अनुभव जेने छे ते अत्यारे शेठ साहबनो अन्तःकरणपूर्वक आभार माने छे.

पैसा कमावा तो सौ कोई जाणे छे, पण तेने सद्रस्ते लगावी जाणनार थोडाज छे. पोतानी नामनाने खातर पैसा खर्चनारनी जैन समाजमां खोट नथी, पण जमानाने अनुसरी कये रस्ते पैसा खर्चवानी जरूर छे ते समजनार तो शेठ माणेकचंदजीज प्रथम हता.

कोई पोताना कुटुम्बनाज श्रेयने खातर, तो कोई पोतानी ज्ञातिना हित खातर, तो कोई पोताना गामनी भलाइने वास्ते, तो कोई खास पोताना प्रांतमां रहेनारा भाईओना भला खातर नाणां खर्चे छे, पण मद्रहु शेठ साहेबे ज्ञाति के कुळनो भेद राख्या सिवाय जैन समाजने वसुधैव कुटुंबकम् गणीने गरीब विद्यार्थीओने जे सहाय करी छे ते बदल जैनसमाज शेठ साहेबनो जेटलो आभार माने तेटलो ओछो छे; आवा एक परोपकारी नरना मरणने लीधे शु गुजरात, शुं पंजाब, शुं दक्षिण अने शुं हिंदुस्थान सारा भारतवर्षना जैन समाजे एके अवाजे दिलगिरी जाहेर करी छे.

शेठ माणेकचन्दजीने **महात्मानी** उपमा आपवामां जरा पण अतिशयोक्ति नथी; कोईपण दृष्टिथी तपासतां मालुम पडशे के एक मित्र तरीके, समाज तथा तीर्थना उद्धारक तरीके, गुरु तरीके, निराभिमानी पुरुष तरीके, पैसानो सद्व्यय करनार तरीके तथा सलाहकारक तरीकेना हरेक गुण तेओनामां हता; आटला गुणो एकी

वखते एक पुरुषमां होय एवो नर दिगम्बर जैन समाजमां तो हाल छेज नहीं अने भविष्यमां कोई विरलज पेदा थशे.

जे जे माणसो शेठ साहेबना समागममां आव्या हशे तेमने मालुमज हशे के तेओ केवा सादा मिजाजना तेम निराभिमानी पुरुष हता; चाहे गरीब, चाहे अमीर, चाहे छोटो, चाहे बडो कोई माणस तेमनी पासे जतो तो तेओनी साथे ते घणी छुटथी वात करता हता; गरीब आदमीओने धन्धे वळगाडवानी सलाह आपवामां तथा विद्यार्थीओनो उत्साह वधारवामां ते एकाज हता.

कहेवुं अने करवुं ए बेमां घणो तफावत छे. भूल काढवी सहेज छे. 'परोपदेशे पांडित्यम्' दर्शावनारा तो घणा मळी आवशे, पण पोते कहेवा मुजब करी बतावनारा तो घणा थोडाज हशे. तीर्थो उपर जैन समाजना हजारो रुपिया हरसाल जाय छे तेनो गेरव्यय थतो देखी तथा तीर्थना हकोने नुकसान थतुं देखी शेठजीना दिलमां जे लागणी उद्भवेली तेना परीणामे **तीर्थक्षेत्र कमीटी**-नी स्थापना करावी तीर्थनी उन्नति माटे शेठ साहेबे जे जे फरज अदा करी छे ते आबालवृद्ध जैनथी अजाण्युं नथी अने तेनेज परिणामे आजे शेठ साहेबनुं नाम वखर जाणीतुं थयुं छे.

शीखरजीनो पहाड अपवित्र थतो अटकाववामां, **गोमट्टस्वामी**, गिरनार, पालीताणा, गजपंथा, तारंगा तथा घणां तीर्थोनो वहीवट सुधारी तेने उन्नत दशाए पहोंचाडवामां कोईए पहेल करी होय तो ते ए शेठ साहेबज छे, अने तीर्थोना उत्तम नमुना रूपे जे लोको शीखरजी तथा पालीताणा विगेरे स्थळे गया हशे ते लोकोए जोयुं हशे के वीस वर्ष पहेलानां ने हालना वहिवट-

मां केटलो तफावत छे. यात्रीओने आराम पहोंचाडवा केटली तम-बीजो करवामां आवे छे ? पैसानो केवी रीते उपयोग करवामां आवे छे तथा ते तीर्थोना हिसाब जे आज लगी अन्धारामां रहेला ते प्रगट करी तीर्थनी हालतथी समाजने केवी वाकेफ करी छे ?

लांबा टीलां टपकां करीने हाथमां माळा झालवाथीज भगतनी व्याख्यानी समाप्ति थती नथी, तेम हाथमां माळाने पेटमां लाळा, समाजने अवनत दशाये पहोंचती जोइने जेने जरा पण दया आवती नथी एवा माणसो खरा भगत नहीं पण आभगतोज छे. खरो भक्त तो तेना कृत्य परथीज जणाई आवे छे. पुण्य शुं चीज छे तथा शुं कार्य करे पुण्यनी प्राप्ति थाय छे, ते शेठजीना तीर्थ सम्बन्धीना कार्यथीज जणाई आवे छे; हजारो माणस तरफथी भली बुरी सुणीने पण काम करीनो कंईपण बदलो मेळववानी आशा विना निस्वार्थपणे पोताना कर्तव्यमां मरता सुधी दत्तचित्त रहेनार पुरुषने महात्मा नहीं तो बीजो शुं कहेवाय ? धन्य छे तेवा पुरुषने अने धन्य छे तेनी जननीने के जेणे आवा महात्माने पोतानी कुखे अवतार आप्यो. कह्युं छे के—

> " जननी जणजो भक्त जन, कां दाता कां शुर;
> नहीं तो रहेजे वांझणी, न गमावीश फोकट नूर "

महाशयो, आ एक महात्मानुं मरण सांभळीने एवो कोण कठिन हृदयनो पुरुष हशे के जेनुं हृदय पीगळ्या विना रहेशे ? निद्रामां पडेली तथा कर्त्तव्यनुं भान भूलेली समाजने जगाडवी ए वीर पुरुष सिवाय बीजो कोण करी शके ? तीर्थ प्रत्येनी खरी भक्तिने समाजना दुःखे दुःखी ते एक भक्त नहीं तो बीजो शुं कहेवाय ?

स्वार्थने अंगे तो सघळी दुनिया काम करे छे, पण निःस्वार्थ-पणे अने ते पण बीजाना श्रेयने माटे महेनत करनारज महात्मा गणाय छे. एवी कोण सभा ने सोसायटी, कमीटी के मिटींग हती के जेमां शेठ माणेकचंदजीए हाजरी नहीं आपी होय. जिंदगीनो घणो भाग जेणे परोपकार अर्थेज गाळ्यो हतो एवा महात्माने तो हालनी प्रजाए जाते निहाळ्यो छे, अने तेवो एक नर पोतानी कोममां होवानुं जे अभिमान आपणने हतुं ते महात्मानुं नाम भविष्यनी प्रजा पण याद करे तेने माटे एक स्मारक फंड उमुं करी हरेक आदमी पोतानी शक्ति तथा भाव मुजब ते फंडमां पैसा भरी पोताना उपर करेला उपकारनो बदलो फुल नहीं अने फुलनी पांखडी रूपे वाळशे एम लेखक इच्छे छे. आवुं फंड सुरतमां खोलायलुं छे अने तेमां रु. २५) मोकली आपुं छुं अने एज मुजब बीजा वांचकोने ए फंडमां रकमो मोकलवाने आग्रह करूं छुं. आवी रीते उपकारी पुरुषनो यत् किंचित बदलो वाळवामां ज्यारे जैनसमाज पाछी पानी करशे तो एमज समजवुं के समाज स्वार्थनीज सगी छे, तेम तेनी दशा सुधारवानी हजु घणीवार छे. आवा स्मारक फंडमां पण अगर कोईनुं श्रेय होय तो ते पण समाजनुंज न के मरनारनुं. फक्त शेठजीनी यादगारी रूपमांज आ पोतानाज फायदाने माटे करवानुं छे. आवा स्मारक फंडमांथी विद्यादान तथा विद्यावृद्धि के जे मरनारनो मूळ मंत्र हतो, तेने सारु कोई संस्था स्थापी अगर जे छे तेमांथी लायक गणी तेने उन्नत दशाए पहोंचाडवामां आवशे, तो मरनारनो आत्मा स्वर्गमां रह्ये रह्ये पण संतोष पामशे के तेना चाहनाराओए तेना उद्देशनी पुष्टि करी छे.

प्रिय वांचको, शेठ माणेकचंदजी एक खानगी गृहस्थ तरीके, कुटुंब वत्सल पिता तरीके, जाहेरमां समाज उद्धारक तरिके, सर्वना उद्धारक तरीके, उदार सुजन तरीके, क्षमा, निरभिमान ने चारित्रनी मूर्ति तरीके पोतानुं जीवन सुवासमय, आनंदमय, दृष्टान्तमय करी गया छे.

सुखनिद्रामां शान्त हृदये कांईपण मंदवाड वेठ्या सिवाय एमनो आत्मा निज स्वरूपमां समाई गयो, एज बतावी आपे छे के " आनुं नाम ते मरण. " एमना जवाथी एमना नामथी जाणनार एवा प्रत्येक जने कांई ने कांई खोयुं छे. कुटुंबीओए अनुकरणीय महात्म्य दृष्टिमांथी जतुं जोयुं छे, मित्रोए हृदयनो विश्राम खोयो छे, लोकोए चारित्रनो नमुनो खोयो छे, प्रिय वांचक, मरनारना चारित्र परथी तने ग्रहण करवा योग्य कांइपण शिक्षण मळ्युं होय अने ते प्रमाणे चाली समाजनी सेवा करवामां तुं शक्त्यनुसार बहु नहीं तो थोडो पण भाग लेशे, तो सदरहु लेखनी सार्थकता गणाशे.

शेठजीना मरणथी जे शोक थाय छे ते करतां तेमनी जग्या पुरनार कोई पुरुष नजरे नहीं आववाथी विशेष शोक थाय छे.

ईश्वर तेमना आत्माने शांति आपो अने तेमना कुटुंबमां तेमनाथी पण विशेष उज्वल कीर्ति प्राप्त करनार पुरुष पेदा थाओ, एज हृदयनी प्रार्थना छे. शांति ! शांति ! ! शांति ! ! !

डाह्याभाई शीवलाल शाह, गिरिडी.

('दिगंबर जैन' वर्ष ७ अंक ११)

× × × ×

हजारो बाळकोना पिता ।

अन्य कोमोना मुकाबले आ हरीफाईनां युगमां जैन कोम घणी

पाछळ छे. आ कोमनी उन्नति माटे तेर लाख जैनोमांथी मात्र एक बे सुशक्तिसंपन्न नरवरो सुमार्गे तन मन धनथी कोमनी सेवा स्वीकारी कर्तव्यक्षेत्रमां मान–अपमाननी दरकार विना कार्य करवा मंडी पडया छे, जे जैन समाजनी भविष्योन्नतिनी आशानां चिन्हो बतावे छे. जे जैन कोमने जमानाने अनुसरती उन्नतिना मध्य मार्गे लावी जैन कोमनी तन मन धनथी सेवा करनारो, हृदयथी जैन कोमनी उन्नति इच्छनारो अने ते मार्गे भगीरथ प्रयास करनारो सुलेहनो अमलदार **दानवीर** जैनकुलभूषण श्रीमान् शेठ **माणक-चंद** हीराचंद झवेरीना पवित्र शरीरने गई ता. १६मी जुलाईए क्रूर काळ–हजारो विद्यार्थीना भविष्यना कल्याणनी दरकार कर्या विना–कोळीओ करी गयो छे, ए परोपकारी शरीर आ पृथ्वी तल-परथी अदृश्य थयुं छे, एवा हृदयभेदक अमंगळमय अशुभ समाचार "दिगंबर जैन" मांथी वांची आ हृदयने अकथ्य अनुपम दिलगीरी थई छे.

सर्व कोई कबुल करशे के–दरेक समाज, ज्ञाति, कोम अने देशनी भविष्यनी उन्नतिनो आधार उक्त श्रेणीना बाळको–विद्यार्थी-ओपर अवलंबी रहेलो छे.

बाळको किंवा विद्यार्थीओने केळवायेल अने खरा मनुष्यो बनाववाने जैन कोममां बोर्डिंग हाउसो स्थापवानो प्रारंभ करनार नरवर शुं आ पृथ्वी तलपरथी चाल्यो गयो छे? अरे कुदरती क्रूर कायदा! तारा! हृदयमांथी अनुकंपा–दयानुं बळ नष्ट थयुं छे? सर्वने अजाण्या मनुष्य होय, तोपण–निर्दोष जीवन गाळनारा बाळको

प्रति प्रेम उछळे छे. अरे! कुदरती क्रूर कायदा! तारा हृदयमांथी प्रेमनुं नाम निशान पण अदृश्य थई गयुं छे के शुं! जो तारामां प्रेमनी ज्योत होय, तुं दयानुं नाम जाणतो होय, तो अमारा रंक विद्यार्थीओनुं छत्र–रत्न हरी लेवाने अयोग्य वर्तन चलावी शके नहि. गृहमां शिक्षण मेळवनाराओ करतां बोर्डिंगमां रही शिक्षण मेळवनाराओनुं वर्तन ऊंच बने छे, मगज उच्च संस्कारी बने छे, अने तेवा मनुष्यो पोते सुधरी पोताना कुटुम्बने–ज्ञातिने अने देशने सुधारी शके छे. एवा बोर्डिंग हाउसो आ नरवरे मुंबाई, अमदावाद, कोल्हापुर, रतलाम विगेरे स्थळे पोताना खर्चथी स्थापित कर्यां छे. बीजा स्थपायला अने स्थपाता बोर्डिंग हाउसोमां पण तेमनो फाळो प्रथम जडी आवशे. सनाथ अने अनाथ श्राविकाओना हितने अर्थे मुंबईमां स्थपायेल श्राविकाश्रम तेमना कर्तव्यपरायणी, तेमना सुमार्गना अनुकरणीय विदुषी महिलारत्न ब्हेन मगनब्हेनना आश्रय तळे चाले छे. केटलीक पाठशाळाओ, संस्कृत शाळाओ अने कन्याशाळाओ तेमना पोताना खर्चथी के मुख्य फाळाथी चाले छे, ते उपरांत मुंबाई सुरत–अमदावाद अने बीजे अन्य स्थळे जैन बंधुओना सगवड अर्थे धर्मशाळाओ घणाज साधन साथे स्थापी छे. आ बधां खातांओ स्थापी पोताना प्रवृत्तिमय धंधा चलाववानी साथे प्रांतिक कोन्फरन्सनी उत्तमोत्तम व्यवस्था राखवा साथे तेनापर घणीज बारीक देखरेख जोई कोई अवलोकनकार आश्चर्यमां लीन थया विना रहेज नहि, जेनो एक नमुनो–हुं गई साळमां विद्याभ्यास माटे मुंबाई गयो हतो त्यारे सुरतथी रवाना थती वखते लाखोने खर्चे सर्वे लोकोने उपयोगी हीराबाग धर्मशाळा माटे वपराय छे, त्यां उतरवाना प्रोग्राम

साथे रवाना थयो हतो, पण कोई कारणथी (के जे आहेरमां न मुकी शकाय) मेनेजरे उतारो आपवा आनाकानी करी हती. आनुं खुल्लुं कारण " दिगंबर जैन " पत्रना अधिपति श्रीयुत मुळचंदभा-ईने जणावता अने ते श्रीमान् शेठ साहेबना जाणवामां आवतां मने बोलावी तेमणे करेली तपास तेमनी एक स्थानकवासी जैन फिरकाना विद्यार्थी तरफनी सहानुभूति, प्रेम, वर्तन अने वार्तालापना समयनो विचार करतां आ वखते ते परोपकारी शेठनी मूर्ति म्हारा हृदय समक्ष खडी थाय छे. ते समयने आजे याद करतां, तेमनी अनुकरणीय प्रवृत्ति याद करतां थोडाक अश्रु बिंदुओ मुखना सिवाय हृदयनुं यथेच्छ शान्तवन थई शकतुं नथी. तेमना सहवासमां आवेला बाळको किंवा वृद्धोने तेमना उच्च चरित्र, तेमनी मायालु वृत्ति–निरभिमानी स्वभावादिमांथी कंईक ने कंईक नवुं शीखवानुं मळी आवतुं. तेओश्री साधारण स्थितिमांथी लक्षाधिपति बन्या हता. नामदार सरकारे तेमने जस्टीश ओफ धी पीस बनावी तेमनी कीर्तिमां वधारो कर्यो हतो छतां तेओ वर्तनमां हुं श्रीमान् छुं के मोटो छुं एवुं कशुंए जणातुं नहि.

आजकाल निर्धन स्थितिमांथी सामान्य पैसा प्राप्ति थएली छे एवा केटलाक पुरुषोना सहवासमां आव्या हशो तो जणाई आव्युं हशे के तेमनी प्रकृतिमां केटलो फेरफार थाय छे? तेओ गामना नहि, पण जगत्‌ना स्वामी बन्या होय, तेम जगतना पुरुषोने तुच्छ के तृणवत् गणता अभिमानमां आंधळा बने छे! वीरनर माणेक! त्हारी आवी उदार शक्तिने याद करतां खरेखर मगज भ्रमित थई जाय छे.

गयो ! वीर माणेक ! गयो ! भविष्यना विद्यार्थीओ कोन शरणे जशे ! भविष्यनी श्राविकाओने कोण सहाय करशे? उपाश्रओनी साची संभाळ कोण लेशे ? प्रांतिक कोन्फरन्सनी उत्तमोत्तम व्यवस्था कोण चलावशे ? तीर्थोनी संभाळ कोण लेशे? आ सर्वनी उपेक्षा करी आपणने तेना मानव शरीर देवना कार्य करी बतावी तेना सुगुणो—उच्च विचारोना यशोगानमां अथडाता मुकी ते तो स्वर्गपंथे चाल्यो गयो ! आपणा शास्त्रमां नाम तेनो नाश छे. The rich, the poor, the great the small are levelled death confounds them all जे खील्युं छे ते खरवा माटे, जे जन्म्यु छे ते मरवा माटे, एम मानी अहर्निश सत्कार्यो करी आ मना । दुर्लभ मनुष्यदेहनु सार्थक करवुं ए तेमनुं हृदयवेधक अकाल मृत्यु आपणने अमूल्य हृदयमां कोतरी राखवालायक **अमूल्य पाठ** शीखवतुं गयुं छे. नरवर माणेकचंदजी शेठ जैन कोमनी उन्नति अर्थे लगभग दश बार लाखनी गंजावर सखावत—जेनो उपयोग जेम तेम नहि करतां उत्तमोत्तम खाताओ स्थापी कर्तव्यपरायणी बनी परम पूज्य महावीर पिताए बतावेला मोक्षना चार मार्ग दान—शील—तप—भावना ए चारमांथी प्रथम मार्गे शूरवीर बनी आत्मश्रेय करी आ नरतननुं सार्थक कर्यु छे. आपणा जैन समाज प्रति तेमणे जे उपकारो कर्या छे तेनी कदर जैन कोम केटले दरज्जे करी शके छे, ते आपणे जोवानुं छे.

अंतमां 'गुणाः पूजा स्थानं गुणिषु न च लिंङ्गम् न च वयः' ए सुत्रने अनुसरी तेमनुं अनुकरण करनारा नरवरो जैन समाजने प्राप्त थाय अने स्वर्गवासी शेठनी खोट पुरी पडे ए हृदयनी शुभेच्छा साथे

मह्रुम शेठ माणेकचंदजीना पवित्र आत्माने शांति इच्छुं छुं.

ॐ शांति ॐ शांति ॐ शांति।

लघुतम वीरबाळ-वाडीलाल मुळजीभाई संघवी.

('दिगंबरजैन' वर्ष ७, अंक १२)

✤ ✤ ✤ ✤

जड देहनो त्याग अने यशःपींडनुं अवतरण।

अनादि काळथी जड देहनी क्षणभंगुरता सिद्ध थयेल छे. ए जड देहना निकट संबंधमां रही अज्ञानतिमिर पडळने दूर करवा" ए सिद्धांतने अनुसरवा चैतन्य अने जडनो संयोग थाय छे.

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥

भगवद्गीता।

जेवी रीते एक माणस जुनां लुगडां काढी नांखी बीजां नवां लुगडां पहेरे छे, ते प्रमाणे 'आत्मा' जुनां अंगनो त्याग करी दई नवा अंग धारण करे छे."

वेदांतनो आ सिद्धांत जैनदर्शनने मळतो छे. ए सरळ दृष्टांतथी आत्मानी प्रतीति थाय छे; अने व्यवहारिक दशामां थता शोकादि विकारोने दबावी आत्मानुं अमरत्व साबित करे छे.

जे व्यक्तिए संसारमां रही पोताना देहने अनुसरतां कर्तव्य बजाव्यां छे, जेणे मिथ्यादृष्टि टाळी स्वतः प्रकाशित दृष्टिथी व्यवहारिक वर्तन चलाव्युं छे, जेणे क्रोधादी महान शत्रुओनी समीपमां रही, तेमना पाशमां न पडतां तेमनी साथे अडग युद्ध चलाव्युं छे, जेणे समयोचित नीतियुक्त कार्यदक्षतावडे देशी, विदेशी बंधुओनुं हित करवा यावज्जीवन कमर कसी छे, जेणे हृदयनुं अपरिमित

सामर्थ्य व्यवहारिक अने पारमार्थिक कार्योमां बतावी आप्युं छे, आवी रीते तन मन अने धननुं संसार यज्ञमां रहेतुं के बलिदान आपनार 'कर्मवीर दानवीर शेठ माणेकचंदजीना जडपींडनुं अवसान थाय, तेमां शोक शेनो ?

संसारनो विचित्र घटनाना भार तळे दबाएलो आत्मा योग्य समये ते बोजो आघो फेंकी दई, निरुपाधि थई स्वधाममां जई रहे एमां शोक शानो ?

अनंत चतुष्टयधारक आत्मा पोतानी सुखवीर्यादि शक्तिओनो योग्य आविर्भाव करी संसार समुद्रनी पार जवा मथन करे तेमां शोक शेनो ?

बधुओ! व्यवहार योगीना जडदेहनुं अवसान शोककारक लेखातु नथी. कोई स्नेही संबधीने श्रम उठाववामांथी बचेला जोईने आपणने हर्ष थाय के शोक थाय ?

कोई स्नेही सबधीने विलायतमां ऊंचा प्रकारनो अधिकार मळे, एथी आपणने हर्ष थाय के शोक ?

बेशक, आपणी स्वार्थबुद्धिथी नहि, परन्तु निर्मळ वात्सल्य-भावथी आपणे आपणा संबंधीनी अधिकतर सारी स्थिति जोई आनंदित थईए छिए कारण:—

'भले ते दरियापार, देशपार के पछी देहबहार होय; परन्तु तेना यशःपींडना परमाणुओ आपणा वातावरणमांज प्रसरी रहे छे. ते परमाणुओना स्कंध बने छे अने ते स्कंधो बीजा पुद्गळ रचवामां सहायभूत थई नवीन तेजथी प्रकाशी नीकळे छे."

आ सिद्धांत सत्य हो वा असत्य हो, परंतु एटलुं तो सत्यज

छे के —भक्तिपात्रथी द्रवित थयेलां अंतःकरणो तो आ यशपींडना परमाणुओने ग्रहण कारोज करशे.

नागरदास नरोतमदास संघवी, केरवाडा-(मदुत्र.)

(दिगंबर जैन वर्ष ७ अंक १२)

कितनेक पत्रोंके अभिप्राय।

सेठ मानिकचंद हीराचंद, जे० पी०।

गत आषाढ़में एक बड़े दानी और धर्म्मनिष्ठ जैनका देहान्त बम्बईमें हो गया। इनका नाम सेठ मानिकचन्द था। इनके पिता, हीराचन्द सूरतके रहनेवाले थे। उनके चार पुत्र हुए—मोतीचन्द, पानाचंद, मानिकचन्द और नवलचंद। इन चारों भाइयोंने बम्बईमें पहले मोतीका रोज़गार शुरू किया; पीछेसे वे जवाहरातका रोज़गार भी करने लगे। धीरे धीरे इनका रोजगार बढ़ा। लाभ भी होने लगा। मानिकचन्द पानाचन्द जौहरीके नामसे ये काम करने लगे। सेठ मानिकचन्दने अपने व्यवसायकी इतनी उन्नति की कि कुछ ही वर्षोंमें ये अमीर हो गये। ६२ वर्षकी उम्रमें इन्हीं सेठ मानिकचन्दने, बिना किसी बीमारीके, परलोकके लिए प्रस्थान कर दिया। रातको ११ बजे ये आरामसे लेटे। कुछ देर बाद अकस्मात् हृदयका स्पन्दन बन्द हो गया और इनकी इस लोककी लीला समाप्त हो गई। इनकी दानशीलतासे प्रसन्न होकर गवर्नमेंटने इन्हें जे० पी० (जस्टिस आव् दि पीस) की पदवीसे अलंकृत किया था। इन्होंने अपने जीते जी आठ नौ लाख रुपया जैन मन्दिरों, तीर्थों और ग्रन्थोंके जीर्णोद्धार करने, धर्मशालायें और

छात्रावास बनवाने, स्कूल, औषधालय और श्राविकाश्रम खोलने और छात्रवृत्तियां देनेमें खर्च कर दिया। इसके सिवा २॥ लाख रुपयेकी वसीयत भी कर गये हैं, जिसके व्याजसे जैन तीर्थ-रक्षा, परीक्षालय, छात्रवृत्तियां और धर्मोपदेश आदिका काम होता रहेगा। रुपयेका सद् व्यय इसे कहते हैं।

" सरस्वती " (सितम्बर १९१४)

× × × ×

दानवीरका देहान्त।

बड़े शोकसे लिखना पड़ता है, कि इस सप्ताहमें जैन जातिका एक रत्न इस असार संसारसे उठ गया। बम्बईके जैनकुलभूषण दानवीर सेठ माणिकचन्द हीराचन्द जे. पी. अब इस संसारमें नहीं हैं। सेठजीकी विद्वत्ता, धार्मिकता, दानशीलता और उदारताकी जितनी प्रशंसा करें, थोड़ी है। आप सच्चे जैनी और अपनी जातिके अग्रगण्य-अगुआ थे। मृत्यु समय आपकी अवस्था ६३ वर्षकी थी। आपके समान दानी इस समय भारतमें विरले ही होंगे। इसीसे आप दानवीर कहे जाते थे। जैनियोंमें आपका खाली स्थान मुश्किलसे पूरा किया जा सकेगा।

" वेंकटेश्वर समाचार " (मुंबई) ता० २४-७-१४.

× × × ×

माणिकचन्द हीराचंद जौहरी।

माणिकचन्द जौहरीकी मृत्युसे जैनजाति और भारतवर्षका एक जवाहिर उठ गया। माणिकचन्द बंबईके बड़े धनी व्यापारी थे। बहुत दिनोंसे धर्मके अर्थ ही अपना जीवन उन्होंने समर्पित कर दिया

था। उन्होंने बंबई, रतलाम, प्रयाग, जबलपुर आदि स्थानोंमें बोर्डिंग हाउस विद्यार्थियोंके लिए खोले। हीराबाग धर्मशाला गिरगांव, बंबईमें १। लक्ष रुपये लगाकर बनवाई। कोई ५—६ लाख रु० विद्याके लिए अर्थदान कर चुके थे। मरते समय २॥ लक्ष रु० जैन बच्चोंकी शिक्षाके लिए दिए। इनका जन्म सूरतमें कार्तिक ब० १३ सं० १९०८में हुआ था। मृत्यु इसी श्रावण ब० ९ को बंबईमें हुई। संस्कृत पर इनका प्रेम था, धर्मनिष्ठ जैन थे, स्त्री शिक्षाके पक्षपाती थे। सूरतमें सर्वदेशीय कन्याशाला खोली, जो अब तक जारी है।

इनकी अन्तिम इच्छा थी कि लन्दनमें एक जैन बोर्डिङ्गहाउस स्थापित करें जिसमें धर्म पूर्वक विद्यार्थी रह सकें। स्वयं सिर्फ गुजराती और हिन्दी जानते थे। जैन लोगोंमें विद्याका विशेष आदर है और हिन्दी भाषाकी इस समय उनसे विशेष उन्नति हो रही है व्यापारके तो वे स्तम्भ हुई हैं।

" पाटलीपुत्र " (बांकीपुर) ता० ८-८-१४.

× × × ×

दिगम्बर जैन अग्रेसर दानवीर सेठ माणेकचंद हीराचंद जे. पी. गई ता० १६ जुलाईए एकाएक हृदय बंध पडवाथी स्वर्गवासी थया छे. आ गृहस्थ आजना १४ लाख जैनोमां एक अनुकरणीय पुरुष हता. विद्यादान, अभयदान, औषधदान वगेरेमां मळीने एमणे पोतानी हयातीमां ८—१० लाख रुपियानी सखावत करी हती अने मृत्यु वखते पण २॥ लाखनी सखावत करता गया छे. संख्याबंध बोर्डिङ्ग हाउसो तेमणे स्थाप्यां छे. रु० १५०००)ना खर्चे

दिगम्बर जैन डिरेक्टरी तैयार करावी छे. धर्मरक्षण अने धर्मसेवानां काम माटे तेओ मुसाफरी पण बहु करता. स्वभावे सादा, सरळ, निरभिमानी अने मायाळु हता. आ नररत्ननी खोट जैन वर्गमां वर्षो सुधी पुरावी मुश्केल छे. आवा पुरुषोनी सद्‌गति माटे कांई इच्छवानुं रहेतुं न नथी. एमनी पाछळ एक स्मारक फंड थयुं छे, जे संतोष लेवा जेवु छे.

"जैनहितेच्छु" (बम्बई) ओगष्ट १९१४.

✤　✤　✤　✤

THE LATE "DANVIR" SHETH MANECKCHAND HIRACHAND

On this side of India Sheth Maneckchand was known as a great philanthropist. Born in Surat in Vikram Samvat year 1908, he died only a short time ago at the age of 62. His father Hirachand was poor and so was his grandfather Gumanji who emigrated to Surat from Bhindar (Udaypore) in A. D. 1840 to trade in opium in a small way. Circumstances made the family to go to Bombay, where Maneckchand with his three brothers began business in a humble way and learnt the profession of pearlborers and stringers. Fortune favored their honest efforts, and in a short time they began to purchase and sell land in Bombay at a great profit. Ultimately they settled down as pearl merchants; exporting pearls to Europe and making huge profits. Although a man with comparatively very little education, Maneckchand's outlook on life was very wide, and just as he was able to amass a huge fortune, so he spent generously huge sums in works of charity. His total gifts come to near ten lacs of Rupees and he

fully deserved the appelation of "Danvir Jainkulbhusan" which was bestowed on him in these parts.

He belonged to the Digambar sect of Jains, and in all parts of India, his helping hand reached the needy and poor of his community and assisted them most liberally. He early saw the utility of Boarding Houses if education was to spread, and his long purse was always opened to plan out and build Hostels in several towns in and out of the Bombay Presidency. In Bombay proper, he would best be remembered by the splendid pile of building, which he has erected in that part of the town which is most thickly inhabited by Hindus, and called the Hirabag. It is used as a Dharmashala for all Hindu pilgrims, where they get accommodation of the best class and as an appanage of which is a fine lecture hall, which is used as a Town Hall of the locality. A mere perusal of the list of his donations is enough to engender feelings of admiration for a man, who in raising himself from poverty to wealth, never forgot the uses to which his enormous wealth could be put, and consequently gave them a practical and enduring shape Even on his death bed he has made a trust of Rupees two lacs and a half, all to be utilised for (sectarian) charitable purposes.

He gave away Rs. 8,000 for repairing a Jain temple at Surat, Rs. 25 000 for building a Dharmashala at Surat; Rs. 2 1000 for repairing a Dharmashala at Palitana; Rs. 80,000 for a Jain Boarding House in Bombay; Rs 22,000 for a Jain Boarding House at Kolhapur; Rs. 40,000 for a similar institution at Ahmedabad; Rs. 1,25,000 for a Dharmshala (Hirabag) in Bombay; Rs. 50,000 for a boarding house at Jabbalpore; Rs. 15,000 for a dispensary at Ahmedaabd.

Various small sums between 6,000 to 10,000 for charitable purposes such as founding schools for girls, scholarships, preparing Jain Directories, have not been included in the list. Government rewarded him with a justiceship of the peace.

It is no small wonder if the Digambar Jain community is mourning his loss as they would mourn the loss of a king.

"Modern Review" Calcutta September. 1917

⚜ ⚜ ⚜ ⚜

राजा राणा छत्रपति हथियन के असवार। मरना सबको एक दिन अपनी अपनी बार॥
दल बल देवी देवता मात पिता परिवार। मरती बिरियां जीवको कोई न राखनहार॥

A great soul has passed away from amongst us, to accelerate its evolution to perfection. *Dana-veer, Jain-kula Bhushan, Shriman Seth Maneckchand Hirachand, Justice of the Peace, Bombay,* was a respected and honored name in every Jain family throughout India; and the grief caused by his parting is as general and wide-spread. *Jati sewak* or servant of the community is a title lightly adopted by many a young and old hypocrite as a means for gaining low personal ends But the great man, for whose loss to us we are in mourning today, was a real benefactor and had the service of the Jain community at heart. Born in 1851 in a great and famous family of jewellers, he for the last 16 or 17 years devoted the greater part of his life and fortune to the service of religion and community. He did not know the English language, but in the Jain community he was the first to conceive the idea of establishing Jain Boarding Houses to afford large and special facilities to students. In 1898 at a cost of Rs. 80,000 he founded

the *Hirachand Gumanji Jain Boarding House* in Bombay, named after his respected father He was a lover of Boarding Houses, a *Boarding-Premi* as some of his malevolent critics at one time nicknamed him. The Students' Boarding Houses at Ahmedabad, Kolhapur, and Rutlam gradually came into existence The first impulse and initial support to what is now a splendid Boarding House at Jubbulpur was also given by him. His benefactions were not limited to any city or province. He worked hard, and contributed liberally wherever necessary, towards the establishment of such Boarding Houses at Agra, Allahabad, Lahore, Sholapur, Hubli, Sangli, Mysore, Banglore, Vardha, and Akola. His activities were not, however, limited in one direction The Kashi Syadvad Mahavidyalaya, was opened by him, and he made substantial donations to the permanent and current funds of the institution. He was the President of its Committee of management.

He was a firm believer in "female education." His beloved daughter *Mahila Ratna* (the jewel among ladies) *Shrimati Maganbai* is a well-read scholar of Jain Scriptures, and her knowledge of Jain philosophy is quite adequate to place her in the front rank of Pandits. Her Shravikashram at Jubilee Bagh, Tardeo, Bombay, a splendid building which was dedicated to the Ashram by her father, is the only institution of its kind in the community. It is both a Model School for girls and a Training College for lady teachers.

He was also the President of the *Tirtha Kshetra Committee*, in which is vested the management of all places of pilgrimage among Jains This was an arduous task, and he performed it with a diligence, which is rare among the favoured sons of Dame Fortune.

His charities again were not limited to the Jain community alone. The Hirabagh Dharamshala is a splendid rest-house at Bombay where all persons who abstain from animal food, can stay free of charge. Special furniture and necessary articles are also supplied to those who require them at very moderate charges. The lecture Hall at Hirabagh is a well-known place for public lectures at Bombay.

In his mercy for the dumb creatures, he constantly distributed free and gratis a vast literature of the Humanitarian League and Vegetarian Societies.

In his last days he was maturing a scheme for the efficient protection of milch-cattle, who, when they cannot supply milk are generally sold to the butcher for their flesh and skin. His death was a sudden and painless one. He worked as usual till within an hour or two of his last breath.

His last idea which he discussed on the day he died with Mr. M. H. Udani, M. A., was that there should be established a Boarding House, with a *Chaityalaya* (place of worship), in London for the convenience of Jain students and visitors there. And we trust that the Jain community will carry out this last wish of their great departed benefactor by establishing a Maneckchand Boarding House in London, and thus perpetuate his illustrious name for ages to come.

We offer our sincere and heartfelt condolence to the illustrious lady, Jain Mahila Ratna, Shrimati Maganbai, and to all other members of the family, in the sad bereavement, which, we seriously say, is a bereavement not theirs alone, but of the whole Jain community throughout India.

The 'Digamber Jain' of Surat has brought out an obituary number giving a brief life sketch of the Philanthrophic Seth and a pathetic poem extolling his deeds and virtues and has enclosed a good portrait of the deceased.

Death has no power th' immortal soul to slay,
That, when its present body turns to clay,
Seeks a fresh home, and with unlessened might,
Inspires another frame with life and light.
Souls cannot die. They leave a former home.
And in new bodies dwell, and from them roam
Nothing can perish, all things change below,
For spirits through all forms may come and go.
Good beasts shall rise to human forms, and men,
If bad, shall backward turn to beasts again.
Thus, through a thousand shapes, the soul shall go,
And thus fulfil its destiny below.

"*Jain Gazette*" (Lucknow) July 1914.

✤ ✤ ✤ ✤

हाय ! जैनसंसारके भाग्याकाशका चमकता हुआ तारा टूट पड़ा ! ! !

समाचार तो केवल इतना ही है कि जैनसमाजके प्रसिद्ध दानी और मान्य श्रीयुत सेठ माणिकचन्द्रजी जे. पी. अब इस संसारमें नहीं हैं। पर हाय ! कैसा भयानक, कैसा लोमहर्षण समाचार ! एक महान् आत्मा बातकी बातमें चल बसा ! जिसका स्वप्नमें भी भान नहीं था, वह बात आँखोंके सामने आ उपस्थित हुई ! जैनसमाज वैसे ही तो दुर्बल है, उसे अभी उठने तककी भी तो शक्ति प्राप्त नहीं हुई कि उसे हाथका सहारा देकर उठना सिखानेवाला ही एका-एक गायब ! जैनसमाज अभी थोड़ा भी कष्ट उठालेनेको तैयार

नहीं हुआ, कि उसपर अनायास यह आपत्तिका पहाड़ आ गिरा ! हाय ! अब कौन बेचारे दुर्बल समाजकी रक्षा करेगा ? कौन उसे अपने हाथका सहारा देगा ? निर्दयी काल ! तूने उसका एक मौक्तिक रत्न छीनकर उसे पथ पथका भिखारी बना दिया है ! अन्धेके हाथकी लकड़ी छीनकर उसे गहरी खाईमें ढकेल दिया है ! हाय ! हम अपने इस दुःखका हाल किसे जाकर कहें ! कौन हमें प्यारके साथ अपने पास बैठाकर हमारी इस मर्मवेदनाको सुनेगा ? कौन हमें इस दुःखमें सान्त्वना देकर स्वयं भी शामिल होगा ? हाय ! कहते हृदय फटता है कि जो हमारी दुःख दशाका सुननेवाला था, जो बड़े प्रेमके साथ दुःखमें सान्त्वना देकर हमें धैर्य बँधानेवाला था— हमारे दुःखपर प्रेमके दो आँसू बहानेवाला था, वह अब इस भौतिक देहको छोड़कर स्वर्गमें जा बसा !

महात्मा माणिक ! आपको खोकर आज जैनसमाज बहुत दुःखी है । उसका बच्चा बच्चा आज आपके लिये आंसू बहा रहा है । उसने आपको खोकर आज सब कुछ खो दिया। वह कंगाल हुआ, भिखारी हुआ । उसके भाग्याकाशमें आज फिर अन्धेरा छाया ।

महात्मन् ! जैनसमाजमें आप सच्चे महात्मा थे, दानी थे, उपकारक थे, वीर थे, रत्न थे, क्योंकि आप ही इस बीसवीं सदीमें सबसे पहले पहल उसके कल्याणपथ–प्रदर्शक हुए । आपहीने अपने धनका उपयोग समाजकी जरूरतोंको देखकर किया । आपहीने अज्ञानके समुद्रमें डूबते हुए समाजको विद्या–तरणिका सहारा देकर बचाया । आपहीने सबसे पहले अज्ञानरूपी भयंकर राक्षसका साम्हना कर उसे मार भगानेका साहस किया । आपहीने

जैनसमाजके हृदयपर पहले शिक्षाका प्रकाश डाला। इसलिये कहते हैं कि जैनसमाजने आपको खोकर अपना सर्वस्व खो दिया।

सेठ साहब! हमारे दुःखी आत्माको सान्त्वना देनेके लिये कदाचित आप स्वर्गमे सन्देशा भेजो और कहो कि "भाई, एक मेरे लिये तुम इतना क्यों दुःख करते हो? जैनसमाजमें तो अभी मुझसे भी बड़े बड़े धनी मानी पुरुष हैं।" हाँ हम भी कहते हैं कि हैं, पर वह उदारता, शान्ति, परोपकार, प्रेम, सहनशीलता, निरभिमानता– आदि गुणोंकी पवित्र मूर्ति वहाँ? क्या अब हमें कभी उनके दर्शन होंगे? नहीं। आजके धनिक जैनसंसारमें न उदारता है, न शान्ति है, न सच्ची परोपकारता है, न प्रेम है, न सहनशीलता है और न निरभिमानता है। फिर हमें उससे क्या आशा हो सकती है? समाजको किसी कारण सहायता देना दूसरी बात है और उसके लिये हार्दिक प्रेम बतलाकर अपना कर्त्तव्य पालन करना दूसरी बात है। आपमें प्रेम था, आपने जो कुछ किया वह अपना कर्त्तव्य समझकर किया है, इसीलिये आज सारा जैनसंसार आपके लिये हृदयसे रो रहा है और शताब्दियों तक रोयेगा। सेठ साहब, आपकी जगहकी पूर्त्ति करनेवाला जैनसंसारमें इस समय तो कोई है नहीं, आगे होगा या नहीं? यह भगवान् जाने, पर ऐसी आशा करनेका अभी कोई लक्षण नहीं है।

सेठ साहब, आपके वियोगसे हमें जो दुःख है, उसे तो हमारा हृदय ही जानता है; पर–" गतिर्दैवी बलीयसी " इस वाक्यका स्मरण कर मन मारकर रहजाना पड़ता है। अस्तु, हमारा जैसा भाग्य है, उसे हम तो भोगेंगे ही, पर आपके पवित्र आत्माको शान्ति

प्राप्त हो और अधोगत जैनसमाजकी सेवाके लिये; नहीं, उद्धारके लिये आपका फिर भी भारतमें अवतार हो, यह हमारी हार्दिक कामना है ।

आपके कुटुम्बके साथ भी इस भयानक आपत्तिके समय हम समवेदना प्रकाश करते हैं । शान्तिः शान्तिः ।

"सत्यवादी" (बम्बई) जुलाई १९१४

✤ ✤ ✤ ✤

दानवीरका देहपात ।

"अच्छा-बुरा बस नाम ही रहता सदा है लोकमें,
वह धन्य है जिसके लिए हों लीन सज्जन शोकमें ॥"

—जयद्रथवध ।

यह प्रकट करते हुए हमें बड़ा ही दुःख होता है कि ता० १६ जुलाईकी रातको २ बजे श्रीमान् दानवीर सेठ माणिकचन्द हीराचन्द जे. पी. का एकाएक स्वर्गवास हो गया । दो घंटे पहले जिसकी कोई कल्पना भी न थी, वह हो गया । भारतके आकाशसे एक चमकता हुआ तारा टूट पड़ा, जैनियोंके हाथसे चिन्तामणि रत्न खो गया, समाजमन्दिरका एक सुदृढ़ स्तंभ गिर गया । जहाँ जब जिसने यह खबर सुनी, वही भौंचकसा होकर रह गया और 'हाय हाय' करने लगा । मृत्युकी वह अचिन्त्य शक्ति देखकर विचारशील काँप उठे ।

सेठ माणिकचन्दजीसे हमारा जो कुछ परिचय रहा है, उससे हमारा हृदय कहता है कि उनके स्वर्गवाससे जैनसमाजकी जो बड़ी भारी हानि हुई है, उसकी पूर्ति होनेका इस समय कोई भी चिह्न नहीं दिखलाई देता है और वह पूर्ति आगे जल्दी हो जायगी इसकी

भी बहुत कम संभावना है। यद्यपि आज सारे जैनसमाजमें सेठजी-की कीर्तिपताका फहरा रही है और सभी लोग उनकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा कर रहे हैं, तो भी हमारा विश्वास है कि वास्तवमें सेठजी किस श्रेणीके पुरुषरत्न थे, इस बातको बहुत ही कम लोग जानते होंगे। उनके हृदयमें जैनसमाजके प्रति जो भावनायें रहती थीं, जिन निष्कपट वृत्तियोंसे वे समाजसेवामें अहर्निश तत्पर रहते थे और जिन शान्तता उदारता तथा धीरतादि गुणोंसे उन्हें प्रत्येक काममें सफलता मिलती थी, उन सबके परिचय प्राप्त करनेका जिन्हें सौभाग्य प्राप्त हुआ है वे उन्हें केवल दानवीर और धनी ही न समझते थे, किन्तु एक महात्मा समझकर अतिशय पूज्यदृष्टिसे देखते थे। सेठजीने गत बारह वर्षोंमें जो जो काम किये हैं, उन सब पर दृष्टि देनेसे यदि यह कहा जाय कि वे इस समयके युगप्रवर्तक थे—उनके प्रयत्नोंने जैनसमाजमें एक नया युग उपस्थित कर दिया है, तो कुछ अत्युक्ति न होगी। केवल रथप्रतिष्ठाओंमें और मन्दिर बनवानेमें ही लाखों रुपया प्रति वर्ष खर्च करके सन्तुष्ट हो जानेवाले जैन समाजके धनियोंका चित्त विद्यामन्दिर स्थापित करनेकी ओर आकर्षित करनेका प्रधान श्रेय सेठ माणिकचन्दजीको ही प्राप्त था। उनकी देशव्यापी अनन्यसाधारण कीर्तिने धनियों पर वह प्रभाव डाला है, जो बीसों समाचारपत्र, पचासों उपदेशक और सैकड़ों सभा समितियाँ नहीं डाल सकती हैं। यह आपहीके सभापति-पदका प्रभाव है, जो सभा सुसाइटियोंको बच्चोंका खेल समझकर उनकी ओर आँख न उठानेवाले धनाढ्य लोग आज उन्हीं सभाओंके सभापति बननेके लिए लालायित रहते हैं और अपने प्रसादलब्ध

पुरुषोंके द्वारा इसके लिए प्रयत्न तक कराते हैं ।

सेठजी केवल दानवीर ही थे, वे कर्मवीर भी थे। धनवानोंमें दानवीर तो अनेक हैं और आगे और भी हो जावेंगे, परन्तु सेठजी जैसा कर्मवीर होना कठिन है । उन्होंने जैनसमाजके लिए अपने पिछले जीवनमें कई वर्षों तक अश्रान्त परिश्रम किया है। यदि उनकी पिछली चार पाँच वर्षकी दिनचर्या देखी जाय, तो मालूम होगा कि जैनसमाजकी संस्थाओंके लिए उन्हें प्रतिवर्ष कमसे कम तीन महीने प्रवास—पर्यटनमें रहना पड़ा है और अपने व्यापारादिके तमाम काम छोड़कर प्रतिदिन चार पाँच घण्टे प्रान्तिक सभा, तीर्थक्षेत्रकमेटी तथा अन्यान्य संस्थाओंके लिए देना पड़े हैं ! समाजके किसी कार्यके लिए उनको आलस्य न था । हर समय हर कामके लिए वे कटिबद्ध रहते थे । इस समय दिगम्बर जैनियोंके जो डेढ़ दर्जनसे अधिक बोर्डिंग स्कूल हैं, उनमें आपकी दानवीरताकी अपेक्षा कर्मवीरताने अधिक काम किया है ।....

सेठजी न अँगरेज़ीके विद्वान् थे और न संस्कृतके; वे साधारण देशभाषाका पढ़ना लिखना जानते थे । परन्तु उन्होंने अपने जीवनमें जो कुछ किया है, उससे बाबू लोग और पण्डितगण दोनों ही बहुत कुछ शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं । ज्ञानकी अपेक्षा आचरण अधिक आदरणीय है । उनका अनुभव बहुत बढ़ाचढ़ा था । जैनसमाजके विषयमें जितना ज्ञान उनको था, उतना बहुत थोड़े लोगोंको होगा ।....

यदि संक्षेपमें पूछा जाय कि सेठजीने अपने जीवनमें क्या किया ? तो इसका उत्तर यही होगा कि जैनसमाजमेंसे जो विद्याकी

प्रतिष्ठा उठ गई थी, उसको उन्होंने फिरसे स्थापित कर दिया और जगह जगह उसकी उपासनाका प्रारम्भ करा दिया। सेठजीके हृदयमें विद्याके प्रति असाधारण भक्ति थी। यद्यपि वे स्वयं विद्यावान् न थे, तो भी विद्याके समान मूल्यवान् वस्तु उनकी दृष्टिमें कोई न थी।....

सेठजीके हृदयमें यह बात अच्छी तरह जम गई थी कि अँगरेजी स्कूलों और कालेजोंमें जो शिक्षा दी जाती है, वह धर्मज्ञानशून्य होती है। उनमेंसे बहुत कम विद्यार्थी ऐसे निकलते हैं जो धर्मात्मा और अपने धर्मका अभिमान रखनेवाले हों। अपनी जाति और समाजके प्रति भी उनके हृदयमें आदर उत्पन्न नहीं होता है। परन्तु वर्तमान समयमें यह शिक्षा अनिवार्य है-अँगरेजी पढ़े विना अब काम नहीं चल सकता है, इसलिए कोई ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे इनके हृदयमें धर्मकी वासना स्थान पा लेवे। इसके लिए आपने 'जैन बोर्डिंग स्कूल' और उनमें स्कूल कालेजके विद्यार्थियोंको रखकर उन्हें प्रतिदिन एक घण्टा धर्म शिक्षा देना लाभकारी समझा। इस ओर आपने इतना अधिक ध्यान दिया और इतना प्रयत्न किया कि इस समय दिगम्बर समाजके लगभग २० बोर्डिंग स्कूल काम कर रहे हैं!

संस्कृत पाठशालाओंकी ओर भी आपका ध्यान था—संस्कृतकी उन्नति आप हृदयसे चाहते थे; परन्तु इस ओर आपके दानका प्रवाह कुछ कम रहा है—पूर्ण वेगसे नहीं हुआ। इसका कारण यह था कि एक तो कोरी संस्कृत शिक्षाको आप अच्छी न समझते थे—इस समय वह जीविकानिर्वाहके लिए उपयोगी नहीं और

संस्कृत पाठशालाओंकी पढ़ाईका पुराना ढचरा तथा उनके प्रबन्धकी कठिनाइयाँ आपको इस ओर प्रवृत्त न होने देती थीं। तो भी आप संस्कृतके लिए बहुत कुछ कर गये हैं। बनारसकी स्याद्वाद-पाठशालाने आपके ही लगातार उद्योगसे चिरस्थायिनी संस्थाका रूप धारण किया है, आपके बोर्डिंग स्कूलोंमें वे विद्यार्थी प्रथम स्थान पाते हैं जिनकी दूसरी भाषा संस्कृत रहती है और संस्कृतके कई विद्यार्थियोंको आपकी ओरसे स्कालर्शिप भी मिलती हैं। अपने पिछले दानमें वे जैनपरीक्षालयको स्थायी बना गये हैं। उक्त दानका और भी बहुत अंश संस्कृतकी उन्नतिमें लगेगा।

सेठजी बड़े ही उदार हृदय थे। आम्नाय और सम्प्रदायोंकी शोचनीय संकीर्णता उनमें न थी। उन्हें अपना दिगम्बर सम्प्रदाय प्यारा था, परन्तु साथ ही श्वेताम्बर सम्प्रदायके लोगोंसे भी उन्हें कम प्रेम न था। वे यद्यपि बीसपंथी थे, पर तेरहपंथियोंको अपनेसे जुदा न समझते थे। उनके बम्बईके बोर्डिंग स्कूलमें सैकड़ों श्वेताम्बरी और स्थानकवासी विद्यार्थियोंने रह कर लाभ उठाया है। एक स्थानकवासी विद्यार्थीको उन्होंने विलायत जानेके लिए अच्छी सहायता दी थी। उनकी सुप्रसिद्ध धर्मशाला हीराबागमें निरामिषभोजी हिन्दूमात्रको स्थान दिया जाता है। साम्प्रदायिक और धार्मिक लड़ाईयोंसे उन्हें बहुत घृणा थी। उनकी प्रकृति बड़ी ही शान्तिप्रिय थी। पाठक पूछेंगे कि यदि ऐसा था तो वे मुकद्दमेंबाजी-में सिद्धहस्त रहनेवाली तीर्थक्षेत्रकमेटीके महामंत्री क्यों थे? इसका उत्तर यह है कि वे इस कार्यको लाचार होकर करते थे।.... अपने ढाई लाखके अन्तिम दानपत्रमें वे तीर्थक्षेत्रोंकी रक्षाके लिए $\frac{\circ}{१००}$

भाग दे गये हैं, परन्तु उसमें साफ शब्दोंमें लिख गये हैं कि इसमेंसे एक पैसा भी मुकद्दमोंमें न लगाया जाय इससे सिर्फ तीर्थोंका प्रबन्ध सुधारा जाय।

जैनग्रन्थोंके छपाने और उनके प्रचार करनेके लिए सेठजीने बहुत उद्योग किया था। यद्यपि स्वयं आपने बहुत कम पुस्तकें छपाई हैं; परन्तु पुस्तकप्रकाशकोंको आपने खूब जी खोलकर सहायता दी है। उन दिनोंमें जब छपे हुए ग्रन्थोंकी बहुत कम विक्री होती थी, तब सेठजी प्रत्येक छपी हुई पुस्तककी डेढ़ डेढ़ सौ, दो दो सौ प्रतियाँ एक साथ खरीद लिया करते थे जिससे प्रकाशकोंको बहुत बड़ी सहायता मिलती थी। इसके लिए आपने अपने चौपाटीके चैत्यालयमें एक पुस्तकालय खोल रक्खा था—उसके द्वारा आप स्वयं पुस्तकोंकी विक्री करते थे और इस काममें आप अपनी किसी तरहकी बेइज्जती न समझते थे। जैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय तो आपका बहुत ही उपकृत है। यदि आपकी सहायता न होती, तो आज वह वर्त्तमान स्वरूपको शायद ही प्राप्त कर सकता। आप छापेके प्रचारके कट्टर पक्षपाती थे; परन्तु इसके लिए लड़ाई झगड़ा खण्डन मण्डन आपको बिलकुल ही पसन्द न था। जिन दिनों अखबारोंमें छापेकी चर्चा चलती थी, उन दिनों आप हमें अक्सर समझाते थे कि " भाई तुम व्यर्थ ही क्यों लड़ते हो! अपना काम किये जाओ—जो शक्ति लड़नेमें लगाते हो, वह इसमें लगाओ, तुम्हें सफलता प्राप्त होगी—सारा विरोध शान्त हो जायगा। "

सेठजीके कामोंको देखकर आश्चर्य होता है कि एक साधारण पढ़े लिखे धनिक पर नये जमानेका और उसके अनुसार काम

करनेका इतना अधिक प्रभाव कैसे पड़ गया। जिन कामोंमें जैन-समाजका कोई भी धनिक खर्च करनेको तैयार नहीं हो सकता, उस काममें सेठजीने बड़े उत्साहसे द्रव्य खर्च किया है। दिगम्बर-जैन-डिरेक्टरी जो छपकर तैयार हुई है—एक ऐसा ही काम था। इसमें सेठजीने लगभग १५ हजार रुपये लगा दिये हैं। दूसरे धनिक नहीं समझ सकते कि डिरेक्टरी क्या चीज है और उससे जैनसमाजको क्या लाभ होगा। विलायतमें एक 'जैन-छात्रावास' बनवानेकी ओर भी सेठजीका ध्यान था; परन्तु वह पूरा न हो सका।

दिगम्बर जैनसमाजमें इस समय कई पक्ष या दल हो रहे हैं। जिसे देखिए वही अपने पक्षका गीत गाता है और दूसरेको नीचा दिखानेका प्रयत्न करता है; परन्तु सेठजीका पक्ष इन सबसे निराला था, उनकी दृष्टि सदा समूचे जैनसमाजके कल्याणकी ओर रहती थी। किसी भी पक्षसे वे द्वेष न रखते थे। जब कभी इन पक्षोंमें लड़ाई झगड़ोंका मौका आता था और वह शान्त न होता था तब आप तटस्थवृत्ति धारण कर लेते थे। ऐसे अनेक मौके आये हैं जब अखबारोंमें आप पर बहुत ही अनुचित आक्रमण हुए हैं; परन्तु आपने उनमेंसे एकका भी खण्डन या परिहार करनेका प्रयत्न नहीं किया है।....

धनवैभवका मद या अभिमान सेठजीको छू तक न गया था। इस विषयमें आप जैनसमाजमें अद्वितीय थे। गरीबसे गरीब ग्रामीण जैनीसे आप भी बड़ी प्रसन्नतासे मिलते थे—उससे बातचीत करते थे और उसकी तथा उसके ग्रामकी सब हालत जान लेते थे।

आप शामके दो घण्टे प्रायः इसी कार्यमें व्यतीत करते थे। सैकड़ों कोसोंकी दूरीसे आये हुए यात्री जिस तरह आपकी कीर्तिकहानियाँ सुना करते थे, उसी तरह प्रत्यक्षमें भी पाकर और आपके मुँहसे चार शब्द सुनकर अपनेको कृतकृत्य समझने लगते थे।....

विलासिता और आराम-तलबी धनिकोंके प्रधान गुण हैं। परन्तु ये दोनों बातें आपमें न थीं। आप बहुत ही सादगीसे रहते थे और परिश्रमसे प्रेम रखते थे। अनेक नौकरों चौकरोंके होते हुए भी आप अपने काम अपने हाथसे करते थे। इस ६३ वर्षकी उमर तक आप सबेरेसे लेकर रातके ११ बजे तक काममें लगे रहते थे।....

सेठजीकी दानवीरता प्रसिद्ध है। उसके विषयमें यहाँ पर कुछ लिखनेकी जरूरत नहीं। अपने जीवनमें उन्होंने लगभग पाँच लाख रुपयोंका दान किया है जो उनके जीवनचरितमें प्रकाशित हो चुका है। उसके सिवाय उनके स्वर्गवासके पश्चात् मालूम हुआ कि सेठजी एक २॥ लाख रुपयेका बड़ा भारी दान और भी कर गये हैं जिसकी बाकायदा रजिस्ट्री भी हो चुकी है। बम्बईमें इस रकमकी एक आलीशान इमारत है जिसका किराया ११००) महीना वसूल होता है। यह द्रव्य उपदेशकभण्डार, परीक्षालय, तीर्थरक्षा, छात्रवृत्तियाँ आदि उपयोगी कार्योंमें लगाया जायगा। इसका लगभग आधा अर्थात् पाँच सौ रुपया महीना विद्यार्थियोंको मिलेगा।

सेठजीके किन किन गुणोंका स्मरण किया जाय; वे गुणोंके आकर थे। उनके प्रत्येक गुणके विषयमें बहुत कुछ लिखा जा सकता है।....

"जैनहितैषी" ज्येष्ठ वीर सं० २४४०.

ग्रन्थकर्ताका प्रयोजन ।

माननीय सम्पादक, "दिगम्बर जैन," सेठ मूलचंद किसनदासजी कापड़ियाकी प्रेरणा और सेठ साहबके वे अलौकिक गुण जो ग्रन्थकर्ताने स्वयं अनुभव किये हैं और जिनका वर्णन वाचकोंको सुमार्ग पर आकर्षण करनेवाला है इन दोनोंने मुझे प्रेरित किया कि मैं सेठजीकी जीवनी जो एक बहुत बड़ी इतिहासकी वार्ताओंकी माला है लिखनेका उद्यम करूँ। मेरा प्रयोजन इस जीवनके प्रकाशमें अपनी शुभ भावनासे अपना लाभ और दूसरा वाचकोंको पढ़नेसे जो उनके जीवन पर असर पड़ेगा उसका अपूर्व लाभ है। जहां तक मसाला संग्रह कर सका वर्णन यथाशक्ति यथार्थ लिखा गया है तौ भी यदि कहीं अज्ञान व प्रमादवश भूल रही हो उसको विज्ञ पाठकगण सुधार लेवें तथा प्रकाशकको खबर करें जिससे आगामी आवृत्तिमें ठीक हो जावे।

प्रजा वत्सल व शिक्षाप्रचारके अग्रगामी महाराज सयाजीरावके शांतमय बड़ौधा राज्यमें वीर सं० २४४२-४३ के चातुर्मासमें ठहरकर व रात्रि दिन उपयोग लगाकर इस जीवनचरित्रको आजकी रात्रिमें पूर्ण किया है। यद्यपि इसका प्रारंभ बड़ौधा आनेके पहले हो चुका था पर बहु भाग इसी शुभ स्थानमें ही लिखा गया है।

इस ग्रंथको पढ़कर पाठकगण सेठ माणिकचंदजीके सद्गुणोंका अनुकरण करके पवित्र जिन धर्मके प्रचारमें व जैन जातिको शिक्षित बनानेमें तन, मन, धन अर्पण करनेवाले हों। यही भावना करता हुआ विश्राम लेता हूं और अपने द्वारा रही हुई इस ग्रंथमें त्रुटियोंके लिये सज्जनोंसे क्षमाका प्रार्थी हूं।

दिगम्बर जैन मंदिर, वाडी-बड़ौधा।	पवित्रधर्म व समाजकी वृद्धि चाहनेवाला-
वीर सं० २४४३ मगसर वदी १०	**ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद**
ता० २०-११-१६.	सम्पादक "जैनमित्र"-सूरत।

—※ समाप्त । ※—

THE TRUST DEED OF
Sheth Hirachand Gomanji Dharmshala
HIRABAG.

Daily No. 7,

Presented at the Bombay Sub-Registrar office on Monday the 10th June 1907 between the hours of 2 and 3 p. m.

આનંદચંદ હીરાચંદ.

J. C. D. Almeida.
Ag. Sub-Registrar.

Received fees as follows :—

Registration fee ...	Rs. 100	0	0
Copying fee Folios 38	5	15	0
TOTAL	Rs. 105	15	0

.C. D. Almeida.
Ag. Sub-Registar.

STAMP Rs. 500.

MESSRS. MULJI AND KHAMBATTA.
Stamp Rs. Five hundred only

Assistant Superintendent of S'amps

General Stamp Office ;
Bombay 18th February 1907.

CERTIFIED under section 32 of Act No. 11 of 1899 that the full stamp duty Rupees (500) Five hundred only with which this instrument is chargeable has been paid.

Seal of Court.

(Signaure.)
Collector.

This Indenture made the tenth day of June one thousand nine hundred and seven BETWEEN MANEKCHAND HIRACHAND and NAVALCHAND HIRACHAND both of Bombay Digamber Jain Hindu Inhabitants of the one part and MANEKHAND HIRACHAND NAVALCHAND HIRACHAND, HIRACHAND NEMCHAND, CHOONILAL JAVERCHAND, LALOOBHAI PREMANAND, RAJA GNANCHAND, son of Raja Bahadur Musavir Jung Raja (Deen Dayal) and TARACHAND NAVALCHAND all of Bombay Digamber Jain Hindu Inhabitants hereinafter unless otherwise designated called the said trustees which trust shall unless repugnant to the context or meaning thereof include the survivors or survivor of them and the heirs executors and administators of such survivor their successor or successors and the trustees for the time being of these presents) of the other part Whereas one Panachand Hirachand, Premchand Motichand, the said Manekchand Hirachand and the said Navalchand Hirachand were carrying on business in partnership as jewellers and shroffs in Bombay had with the intention of perpetuating the memory and comemorating the name of Sheth Hirachand Gumanji deceased, set apart a certain sum of money from the profits of their business for the purpose of building a Dharamsala to be called "Hirabag" and for diverse other charitable purposes hereinafter mentioned for the use and benefit of the Jains in the first instance and generally for the benefit of other high caste Hindus visiting Bombay for a temporary purpose or staying in Bombay for a short period that is to say for the purposes of travel, business, trade, profession service,

pilgrimage and other like purposes and whereas the said Premchand Motichand and Panachand Hirachand died in Bombay on or about the eleventh day of April one thousand nine hundred and three and the fifteenth day of October one thousand nine hundred and three respectively and whereas the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand out of the said sum so set apart as aforesaid purchased at a cost of Rupees fifty six thousand in the names of both of them the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand a piece or parcel of land or ground hereditaments and premises situate at Kavasji Patel Tank Road within the town of Bombey More particularly described in the schedule hereunder written and subsequently made certain alterations and additions in the said premises at a total cost of Rupees forty three thousand and hence the whole property is *about a lac of Rupees worth*. And Whereas the said manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand are desirous of establishing in the said premises hereinafter unless otherwise designated referred to as the trust estate a Dharamsala for the use and benefit of the persons aforesaid. And also a charitable dispensary and are further desirous of allowing a portion to be used as a Hall for the purpose and with the object hereinafter mentioned. And of setting apart a portion of the said premises to be used as an office for the purpose of transacting such business as may be connected with the diverse charities established or that may be established hereafter by the descendant of the said Hirachand Gumanji and whereas the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand are desirous of declaring a trust thereof and of inviting some other fit and proper persons to join with

them as trustees upon the trusts and uses and fort he ende intents and purposes and with and subject to the powers, provisoes, charges, declarations and agreements hereinafter mentioned, declared and contained concerning the same. And Whereas the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand having requested the said Hirachand Nemchand, Choonilal Javerchand, Laloobhai Premanand, Raja Gnanchand son of Raja Bahadur Musavir Jung (Deen Dayal) and Tarachand Navalchand to act as trustees along with them the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand they the said Hirachand Nemchand, Choonilal Javerchand, Laloobhai Premanand, Raja Gnanchand son of Raja Bahadur Musavir Jung (Deen Dayal) and Tarachand Navalchand have consented to act as such trustees by being parties to these presents. Now this Indenture witnesseth and it is here by declared, that the lands hereditaments and premises hereinafter described were purchased out Of the said trust moneys. and this indenture further witnesseth that in pursuance and in consideration of the premises they the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand do and each of them doth by these presents grant convey and assure into the said trustees the said trust estate being all that piece or parcel of land or ground together with all buildings standing thereon situate lying and being at the said *Kavasji patel Tank Road* within the Town and Island of Bombay and more particularly described in the Schedule hereunder written tnd delineated on the plan hereto annexed and therein surrounded by a red boundary line together with all houses, out houses buildings, yards, ways, wells, waters, water-courses,

sewers, ditches, drains, lights, liberties. easements, advantages, profits, privileges and appurtenances whatsoever to the said trust estate or any part thereof belonging of in anywise appertaining or with the same or any part thereof now or at any time heretofore usually held, used, occupied or enjoyed or reputed to belong or be appurtenant thereto. And all the estate, right, title interest, claim and demand whatsoever both at law and in Equity af them the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand into or upon the said trust estate and every part thereof. To have and to hold the said trust estate hereby granted and assured or expressed so to be unto the said trustees to the use upon the trusts and for the ends intents and purposes and with under and subject to the powers, provisoes, charges, declarations and agreements hereinafter limited, declared and contained of and concerning the same that is to say that the said trustees shall hold and stand possessed of the said trust estate upon trust Firstly to allow such portion of the said trust estate as is coloured *yellow* on the plan hereto annexed to be used as a Dharamsala or resting-place for the use and benefit of Jains and other high caste Hindus visiting Bombay for the purpose of travel, business, trade, profession, service, pilgrimage and other like purposes with power to the said trustees to allot and setapart for the purposes aforesaid such further portion or portions out of the said trust estate as are hereinafter directed to be let to tenants as the trustees may from time to time deem fit and proper. Provided always and it is hereby further agreed and declared that preference shall always be given to the Hindus professing the Jain pursuasion.

Secondly to allow a portion of the said trust estate for the purpose of opening a Dispensary replete with such drugs and chemicals as may not be repugnant to the feeling of a person Professing the Jain religion for the use and benefit of such persons and on such terms and conditions as the trustees may from time to time prescribe. Thirdly to allow a portion of the said of trust estate to be used as a Hall or meeting-place (for the use of the Jains and other Hindus generally) for the purpose of delivering sermons, or lectures on religion, ethics, science, education, or for holdings meetings for any lawful purpose or for performing Jain religious rites and ceremonies or for such other purposes of a like nature and on such terms and conditions as the said trustees may think fit or proper. Fourthly to allow a portion of the said trust estate for opening an office for the transaction and management of business aforesaid as well as of business relating to diverse charitable institutions established or to be established by the heirs and descendants of Seth Hirachand Gumanji. Fifthly to let out such portion of the trust estate as is coloured *red* on the plan hereto annexed to such tenants or tenant and on such rent or rents and upon such terms and conditions as the said trustees in their absolute discretion may deem fit, and the said trustees shall collect, get in and recover the rents and profits thereof and pay thereout in the first instance all rates and taxes of what nature and kind soever payable to the Government of Bombay and the Municipality of Bombay. *Secondly* such sum or sums as shall be requisite or necessary for the purpose of keeping the said trust estate in good order and Condition and insured against

loss by fire or accident and *lastly* the costs and expenses of and incidental to the management of the said trust estate And shall out of the residue of such rents and profits thereof set apart (1) a sum equal fo thirty per cent thereof to form the nucleus of a reserved fund to be used on occasions of urgency and emergency or accident such as in making repairs of a special kind and in making additions and alterations into or upon the said trust estate or any part thereof from time to time as to the trustees may seem fit and proper (2) a sum equal to forty percent. for the purpose of establishing, equipping and maintaining the said Dispensary replete with all necessary instruments and appliances and also with such drugs, powders and chemicals as may not be repugnant to the feelings of persons professihg the Jain religion for the use and benefit of persons professing the Jain religion and generally for all classes of high caste Hindoos and for the purpose of giving free of charge medical help and advice and dispensing medicines and for defraying the expenses of keeping a proper staff that is to say Doctors, Compounders and other servants as may from time to time be found necessary. And the trustees shall out of the residue of the said rents and Profits further set apart a sum equal to ten percent thereof and shall pay the same from time to time to the Secretary of the Digamber Jain Prantic Sabha of Bombay as long as the office of the said Sabha remains in and continues to work in Bombay but if the said Sabba removes its office to any other place out of Bombay then the said payment shall discontinue and shall accumulate until the time the said Sabha again removes its office to and works in Bom-

bay when the accumulated amount should be paid over to the said Sabha and payment of the said ten percent should thereafter be continued and the trustees shall out of the remaining twenty percent of the said residue pay such sum or sums of money to the poor members of the Jain Digamber Community who to the said trustees may appear deserving of support either in their business or for the purpose of maintaining them. And it is hereby further agreed and declared that the Reserved Fund to be set apart as aforesaid and all sums of moneys remaining unexpended in the hands of the said trustees shall be invested in securities authorised under the provisions of the Indian Trust Act II of 1882 Section 20 or any of them or in the purchase of an immoveable property in Bombay which investiments shall form part of the reserve fund and shall be utilised for the purposes hereinbefore mentioned in connection with the Reserve fund. And it is hereby further provided and declared that for the proper management of the said trustees shall appoint a Managing Committee which shall from time to time make such rules and regulations in respect of the proper and better management of the several objects of the trust as the said committee shall think fit and proper. And it is hereby further agreed and declared that it shall be lawful for the managing committee to reserve from time to time such portion or portions of the said Dharamsala for the use and benefit of Digamber Jains only as they may from time to time think fit. And that the said managing committee for the purposes aforesaid shall consist of the trustees for the time being of these presents and of such other persons as shall from

time to time be elected members of the Managing Committee of Sheth Hirachand Gumanji Jain Boarding School. And it is hereby agreed and declared that if at any time the said trust estate or any part thereof shall be purchased or taken possession of by the Government or the Municipality of Bombay or by the Bombay City Improvement Trust for any public purpose under any law for the time being in force relating to the acquisition of land then and in that case it shall be lawful for the trustees of these presents to apply the moneys or compensation to be received therefor for the purpose of erecting one or more new building or buildings at such place or places in Bombay as the trustees may from time to time agree upon for the purpose of the trusts of these presents. And it is hereby further agreed and declared that the trustees of these presents shall at all times be not less than six and more than eight and that two male descendants from the family of the said Hirachand Gumanji shall always act as trustees of these presents but if there be no such male descendant then two persons from the nearest male relations of the said Hirachand Gumanji and who may be found fit to act shall be appointed trustees of these presents. And it is hereby further agreed and declared that Sheth Manekchand Hirachand shall be the Chairman of the trustees hereby appointed and after his decease th eldest surviving male member of the family of Sheth Hirachand Gumanji shall be appointed to act as chairman of the trustees and if there be no such member living then in such case any of the nearest male relations of the said Hirachand Gumanji shall be appointed to act as Chairman of the

trustees and that such Chairman shall also be the Chairman of the Managing Committee and shall preside at every meeting of the trustees and the Managing Committee and in his absence the trustees and the Managing Committee shall have power to appoint any one of them to act as such Chairman. And it is hereby further agreed and declared that the business of the trust shall be carried on by majority of votes and the Chairman shall have in addition to his own vote a casting vote Provided always and it is lastly declared that if the trustees hereby appointed or to be appointed as hereinafter mentioned or any of them shall happen to die or continue to reside abroad for a period of more than twelve calender months or become bankrupt or take the benefit of any Act for relief of Insolvent Debtors or resign or be desirous of being discharged or disclaim neglect or refuse to act or become incapable of acting in the trusts hereinbefore declared before the same shall have been fully executed then and in every such case and so often as the same shall happen it shall be lawful for the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand during their joint lives and after the decease of any of them or the survivor of them and after the decease of such survivor for the surviving or continuing trustees or trustee for the time being of these presents or for the executors or dministrators of the last surviving or continuing trustee by any deed or instrumont in writing from time to time to substitute or appoint within a period of three months from the happening of any of the aforesaid contingencies any persons or person in the place or stead of such trustees or trustee so dying or continuing to reside abroad bec-

oming Bankrupt or Insolvent desirous to be discharged disclaiming n eglecting or refusing to act or becoming incapable of acting as aforesaid and immediately thereupon all the aforesaid trust estate and premises shall be forthwith conveyed, assigned and assured so and in such manner as that the same may become legally and effectually vested in such new trustee or trustees either jointly with the surviving or continuing trustees or trustee or solely as the case may be to the uses upon the trust and to the ends intents and purposes hereinbefore limited and declared or such of them as shall be then subsisting, undetermined and capable of taking effect and every instrument expressed to be made in pursuance of the aforesaid power and not appearing on the face of it to be invalid shall although not so made be valid and effectual for all purposes other than the exoneration of the parties to the making thereof from responsibilities and that every such new trustee or trustees either before or after such conveyance assignment or assurance as aforesaid shall have the same power and authority in all respects as if he or thay had been originally appointed a trustee or trustees by these presents Provided always and it is hereby declared that the trustee or trustees to be appointed as hereinabove mentioned shall be appointed from the trustees of Sheth Hirachand Gumanjis Jain Boarding school and that there shall be at least two meetings of the trustees in a year but if any two trustees desire a meeting of the trustees to be held the chairman shall convene a meeting of the trustees. And that accounts and the reports shall be printed and published every year, that bills of monthly income and expenses should bear the

signature of at least two trustees and that no trustee or trustees hereby appointed or to be appointed as aforesaid be responsible for the acts deeds or defaults of any co-trustee or co-trustees nor for involuntary losses nor for moneys expressed to have been received in any receipt or receipts in which they or he shall join for the sake of conformity only nor be accountable for any banker broker attorney solicitor. agent or auctioneer or any other person or persons whomsoever with whom any of the trust monies may be deposited for safe custody or otherwise in execution of the aforesaid trust nor for the insufficiency or deficiency of any stock funds or securities nor for any other loss of damage that may happen to arise to all or any part o the said trust estate monies and premises unless through the wilful neglect or default of such trustees respectively and that the present or any future trustees or trustee shall or may reimbures himself and themselves out of the monies which shall come to his or their hands by virtue of these presents all such costs damages and expenses as he or they shall incur or sustain in or about the execution of the aforesaid trust or in relation thereto and the said Manekchaad Hirachand and Navalchand Hirachand do hereby for themselves their heirs executors and administrators covenant with the said trustees that notwithstanding any act deed or thing whatsoever by them the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand or any person or persons lawfully or equitably claiming by from through under or in trust for them made, done or committed or omitted to the contrary they the said Manekchand Hirachand and Navalch and Hirachand

now have in themselves good right full power and absolute authority to grant and assure the said trust estate hereby granted and assured or intended so to be unto and to the use of the said trustees in manner aforesaid. And that it shall be lawful for the said trustees from time to time and at all times hereafter peaceably and quietly to enter upon possess and enjoy the said trust estate and to receive and take the rents and profits thereof and of every part thereof without any lawful eviction interruption claim or demand whatsoever of from or by them the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand or any person or persons lawfully or equitably claiming or to claim by from under or in trust for them or any of them and that free from all incumbrancers whatsoever and further that they the said Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and their heirs executers and administrators and all and every other person or persons whosoever having or claiming any estate or interest whatsoever in the said trust estate or any of them or any part thereof from under or in trust for the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand their heirs or any of them shall and will from time to time and at all times hereafter upon every reasonable request and at the costs of the said trustees do and execute or cause to be done and executed all such further and other lawful acts deeds and things whatsoever for the

better and more perfectly conveying and assuring the said trust estate and every part thereof the unto said trustees in manner aforesaid as by the said trustees shall be reasonably repuired, in witness whereof the parties hereto have hereunto set their respestive hands and seals the day and year first hereinabove written.

Schedule.

All that piece or parcel of Pension and Taxland being a portion of all that land or cart which is known by the name of Kapoorwady together with the messuages, tenements or buildings hereditaments and premises standing thereon lying and being in the *Kandewady Lane* at the corner of the Khatar Gully Lane opposite the Cawasji patel Tank out of the Fort in the Town and Island and in the Registration Sub-District of Bompay containing by admeasuremens 1706 square yards or thereabouts and bearing Collectors Old No. 17 and 140 New No- B-77 and B-1273 Old Survey No-459, 462 and New Survey No- 7521 and assessed by the assessor and Collector of Municipal rates and taxes under D. Ward No. 1266, 1267, 833, 832, 825, 827, and 830 ond street Nos. 70, 72, 74, 149, 151, 147, 135, 3 and 5 and which said premises are bounded on the North partly by the said Kandewady Street and partly by the Bhooleshwar Road joins the said Kandewady Street on the East by vacant land formerly be-

longing to Damodar Balaji but now belonging to Ardeshir Hormusji Wadia and on the South by the strip of land belonging to the Vendors falling within the regular line of street and intended to be acquired by the Municipality of Bombay for widening Khutar Gully Lane beyond which the said Khutar Gully Lane and which said premises are now and for many years past have been the possession of the said Vendor and his tenants.

Signed.

The Trust-deed of Sheth Hirachand Gumanji Jain Boarding School.

STAMP Rs. 200.

Daily No. 6 of 23rd January 1900.

Received fees as follows:-
Registration fee Rs. 40-0-0
Copying fee Rs. 6-9-0
(12 Fols.) ———
Total Rs 46-9-0

M. W. Gadgil,
Sub-Registrar.

Presented at the Bombay Sub-Registrar office on Tuesday the 23rd January 1900 at 2-15 P. M.

માણેકચંદ હીરાચંદ.

M. W. Gadgil,
Sub-Registrar.

This Indenture made the 4th day of December in the Christian year one thousand eight hundred and ninty nine between Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand all of Bombay Hindoos professing the Jain Digamber faith (hereinafter unless otherwise designated called the settlors) of the one part and the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand, Premchand Motichand, Raja Dharamchandra, son of Raja Bahadur Nussavir Jung (Deen Dayal) and Hirachand Nemchand all of Bombay Hindoos following the same Digamber Jain religion (hereinafter

unless otherwise designated called the trustees) of the other part. Whereas the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand are absolutely possessed of or otherwise well and sufficiently entitled to the piece or parcel of land or ground hereditaments and premises hereinafter described (and hereinafter unless otherwise designated referred to as the trust estate) free from incumbrances. And Whereas the said settlors are desirous of establishing a Jain Boarding House for the use and benefit of their fellow countrymen, of the Jain caste in order to perpetuate the memory of their father Hirachand Gumanji, and whereas for the charitable purposes aforesaid the said settlors are desirous of settling the said trust estate to the uses upon the trusts and for the ends, intents and purposes and with and subject to the powers, provisoes, charges, declarations, and agreements hereinafter limited, declared and contained. Now **this Indenture witnesseth** that in pursuance of the said desire and in consideration of the premises they the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand do by these presents grant, convey and assure unto the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand,

Premchand Motichand, Raja Dharamchandra son of Raja Bahadur Mussavir Jung (Deen Dayal) and Hirachand Manekchand and the Survivors and Survivor of them and their and his successors and assigns All that piece or parcel of land or salt balty ground with the messuage tenements and buildings standing thereon situate on the west side of the Gilder Street outside the Fort of Bombay in the Registration Sub-District of Bombay containing by admeasurement two thousand six hundred and sixty square yards be the same little more or less and assessed by the Collector of Land Revenue New Nos. 13862, 13874, 13930, $\frac{a}{16621}$ under old Nos. 346, 131, and old Survey Nos. new Survey Nos. $\frac{1}{7604}$ $\frac{1}{7063}$ $\frac{1A}{7605}$ and by the Assessor and Collector of Municipal rates and taxes under ward No. E. 2829, 2830, 2625, 2778 (1), (2) 2779, (2). (3) 2831 to 2833, 2626, and street No. 1, 3, 474, 5 to 9,476 to 480 and bounded as follows, that is to say on or towadrs the East by the said Gilder Street, on or towards the West by the other property of the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand, and Premchand Motichand, on or towards the north partly by the Falkland road, partly by the Low Lever road and partly by property of Cawasjee Kharadi

and on or towards the South by the Public Passage and which said land hereditaments and premises are now in the possession of the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Nawalchand Hirachand, and Premchand Motichand and which said premises are particularly delineated in the ground plan thereof hereto annexed and marked with the letter A. and therein coloured by a red boundary line and which said land hereditaments and premises are for the purpose of the Stamp Act, estimated to be of the present market value of rupees forty thousand. Together with all houses, out houses, buildings yards, ways, wells, waters, water courses, sewers, ditches, drains, lights, liberties, easements, profits, privilages and a appurtenances, whatsoever to the said piece or parcel of land or ground hereditaments and premises or any part thereof belonging or in any-wise appertaining or with the same or any part thereof now or at any time heretofore usually held, used, occupied or enjoyed or reputed to belong or be appertenant thereto, and all the estate, right, title, interest, claim and demand whatsoever both at Law and in Equity of them the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand into or upon the said piece or parcel of land or ground hereditaments and

premises and every part thereof. **To Have and to hold** the said piece or parcel of land or ground hereditaments and premises hereby granted and assured or expressed so to be unto the trustees and the survivors and survivor of them and their and his sucessors and assigns to the use upon the trusts and for the ends, intents and purposes and with under and subject to the powers, provises, charges, declarations and agreements, hereinafter limited, declared and contained of and concerning the same that is to say that the said trustees or trustee for the time being of these presents shall hold and stand possessed of the said land hereditaments and promises herein before described and shall collect and get the rents and profits thereof and shall pay thereout all the rates and taxes payable to the Government of Bombay and the Municipality of Bombay and shall spend such portion thereof as shall be requisite or necessary for the purpose of keeping the said hereditaments premises in the good repair and condition and of keeping them insured and for the purposes of managing the said trust and shall out of the residue of the rents and profits set apart at least five percent of the net annual income towards forming a reserved fund to be used on occasions of urgency, emorgeney or accident as the trustees may think proper and out of the

residue the trustees shall set apart a sum of Rupees twenty five per month for the purposes of the maintenance of a Dera (temple) to be hereafter erected on a position of the said land such as paying as a Poojari and lighting the temple and keeping Pooja articles such as *Kesar &c.* and out of the residue shall pay the salary of a propers superintedent and shall appoint a proper person as superintendent to look after the boys or youngmen to be admitted to the Boarding House under or by virtue of this settlement with power to remove him and to appoint another in his stead and shall appoint a managing Committee for the management of the said Boarding House with power to remove the same or any member thereof and to appoint others, and shall have full power to make rules and from time to time to abrogate, alter, and add to the same for the guidance of such managing Committee and superintendent and generally for the purpose of carrying out this settlement and the object thereof provided only that no such rule shall be against the law or inconsistent with the provisions hereof. Further that the said trustees shall out of the residure of the income and rent including the general charges of carrying one tenth for payments of scholarships to poor Jains engaged in learning the Jain Shashtras in Sanskrit and another four-

tenths towards payment of scholarships to the Degamber poor Jains who are taking general education in or out of Bombay and the remaining five tenths towards the payment of the Scholarship to the students residing in the Boarding House which shall be called "Sheth Hirachand Gumanji Jain Boarding House." FURTHER that any sums remaining unexpended shall be invested in securities of Government of India or upon any of the public stock fund port trust Bonds or Debentures or Municipal Loans or other elisgible securities under the Law for the time being in force in this respect and form reserve funds for the purposes for which the unexpended sums are by this settlement intended. Further that the premises marked **B** on the accompanying plan shall be used for Boarding purposes and that the premises marked **C** on the accompanying plan shall be used for Dharmsala and that the plate containing the inscription as to such Boarding House shall be fixed upon some conspicuous part of the said *Boarding House* and that the said trustees shall allow the Jain boys who have passed the Matriculation Examination and who intend to prosecute their studies in some College or are studying for the District Pleader's and Sub-judge's Examinations to live in the said Boarding House free of rent **provided**

always that preference shall be **given to** the Digamber Jains who have passed their Matriculation examinations with Sanskrit as their second Language and provided further if there is any surplus accomodation in the Jain Boarding House Digambari Jain Students who have passed the fourth English standard and are studying for the higher standards or for the Matriculation examination may also be allowed to live therein free of rent **Provided always** that in the event and for the time there are no students living in the said Boarding House, the same may be temporarily used for such Jain religious purposes as the trustees for time being may deem meet. **Provided** further that Digambari Jain (Travellers) may be allowed to lodge in the Dharmshala free of rent. Provided further that any person of Jain religion desiring to build a Digambari Jain Dera (temple) on the premises hereby granted or intended so to be at his own cost expenses may be allowed to do so subject to such terms and conditions as to site and style of building as may be laid down by the trustees. But no such person shall have any right whatever over the said temple after it is built and completed but the same shall vest in the trustees and only the ceremonies relating to the Jain Digamber religion shall be allowed to be performed in the temple. that

the said trustees shall be at liberty to accept and take such sum or sums of money which shall be given by any Jain towards the purposes of the said trust and such monies shall form a part of this trust estate.

that the trustees for the time being of these presents shall appoint a Managing Committee which shall from time to time make such rules and regulations in respect of the proper and better management of the said Boarding House, Dharmshala, and Temple if built as they shall think fit and proper.

That there shall be a Managing Committee for the purposes aforesaid which shall consist of the trustees for the time being of these presents and of such other persons from time to time as may be elected by such trustees out of the Jains following Digamber Jain religion.

That there shall always be two trustees out of the male descendants of the said Hirachand Gumanji and if there shall be no made descendent of the said Hirachand Gumanji, such two trustees shall be appointed from the nearest relation of the said Hirachand Gumanji. **Provided always** that if at any time the said land hereditaments or premises or any part thereof shall be taken by the Government for any public purpose under any Law for the time being in force the amount of compensation that

may be given for the same or any part thereof shall be applied for the ends, intents and purposes afore-said. That the number of the trustees shall be at least six and shall not exceed eight. That Sheth Panachand Hirachand shall be the Chairman of the first trustees and after his decease the elder living scion of Sheth Hirachand Gumanji shall be appointed the Chairman of the trustees. That the Chairman of the trustees shall also be the President of the Managing Committee unless he resigns. During the temporary absence of the Chairman the trustees may appoint any one of themselves to act as chairman for the time being. Provided always and it is hereby lastly declared that the trustees hereby appointed or to be appointed as hereinafter mentioned or any of them shall happen to die, continue to reside abroad for the space of more than twelve calendar months or shall become a bankrupt or take the benefit of any act for the relief of insolvant debtors or be desirous of being discha-arged from disclaim neglect refuse to act or become incapable of acting in the trust herein before declared before the same shall be fully performed and then and in such case and so often as the same shall happen it shall be lawful for the said Panachand Hirachand, manek chand Hirachand, Navalchand Hirachand and

Premchand Motichand, during their joint lives and after the decease of any of them for the survivor and after the decease of such survivor for the surviving or continuing trustees of trustee of these presents for the time being or the executors administrators of the last surviving or continuing trustee by any deed or instrument in writing from time to time to substitute or appoint within three months at the most any persons or person in the stead or place of such trustees or trustee so dying continuing to reside abroad becoming bankrupt or insolvent, desirous to be discharged, disclaimining, neglecting or refusing to act or becoming incapable of acting as aforesaid and immediately thereupon all the aforesaid trust estate and premises shall be forth-with conveyed assigned and assured so and in such manner as that the same may become legally and effectually vested in such new trustee or trustees either jointly with the surviving or continuing trustees or trustee or solely as the case may be to the uses, upon the trust and to the ends intents and purposes hereinbefore limited and declared or such of them as shall be then subsisting undetermined and capable of taking effect and every instrument expressed to be made in pursuance of the aforesaid power and not appearing on the face of it to be invalid shall although not so

made be valid and effectual for all purposes other then the exoneration of the parties to the making thereof from responsibities and that every such new trustees or trustee either before or after such conveyance assignment or assurance as aforesaid shall have the same power and authority in all respects as if he or they had been originally appointed a trustee or trustees by these presents and that there shall be at least two meetings of the trustees in a year but if any two trustees desire a meeting of the trustees to be held the Chairman shall convene a meeting of the trustees That accounts and the reports shall be printed and published every year, that the bills of monthly incomes and expenses should bear the signatures of at-least two trustees and that no trustee or trustees hereby appointed or to be appointed as aforesaid shall be responsible for the acts deeds or defaults of any co-trustee or co-trustees, nor for involuntary losses nor for monies expressed to have been received in any receipt or receipts in which they shall join for conformity only, nor be accountable for the sufficiency of any banker, broker, attorney, solicitor, agent or auctioneer or any other person or persons whomsoever with whom any of the trust monies may be deposited for safe custody or otherwise or who may receive the same in

execution of the aforesaid trust, nor for the insufficiency of any stock funds or securities nor for any other loss or damage that may happen to arise of or to all or to any part of the said trust estate, trust monies and premises unless through the wilful default of such trustees respectively and that the present or any future trustees or trustee shall and may reimburse themselves and each other out of the monies which shall come to their respective hands by virtue of these presents all such costs, damages and expenses as they or any of them shall or may suffer, sustain expend disburse or be put into in or about the execution of the aforesaid trust or in relation thereto and the said Panachand Hirachand, Manekchand, Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand do hereby for themselves their heirs, executors and administrators convenant with the said trustees, their successors and assigns and their heirs, executors, administrators and assigns, that notwithstanding any act deed or thing whatsoever by them the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand or any person or persons lawfully or equitably claiming by through, under or in trust for them made, done or committed or omitted to the

contrary they the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand, now have in themselves good right full power and absolute authority to grant and assure the hereditament and premises hereby granted released and assured or intended so to be unto and to the use of the said trustees, their successors and assigns and their heirs, executors, administrators and assigns in manner aforesaid. And that it shall be lawful for the said trustees their successors and assigns and their heirs, executors administrators and assigns from time to time and at all times hereafter peacably, quietly to enter upon, possess, and enjoy the said hereditaments and premises and to receive and take the rents aud profits thereof and of every part thereof without any lawful eviction, interruption, claim or demand whatsoever of, from, or by them the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand, and Premchand Motichand or any person or persons lawfully or equitably claiming or to claim by, from, under or in trust for them or any of them, and that free from all incumbrances, and further that they the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand

Motichand and their heirs executors and administrators and all and every other person or persons whosesoever having or claiming any estate or interest whatsoever in the same hereditaments and premises or any of them or any part thereof, from, under, or in trust for the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand or their heirs or any of them shall and will from time to time and at all times hereafter upon every reasonable request and at the costs of the said trustees, their successors and assigns and their heirs, executors administrators or assigns do and execute or cause to be done and executed all such further and other lawful acts deeds and things whatsoever for the better and more perfectly co[illegible]g and assuring the said hereditaments and [illegible]mises and every part thereof unto the [illegible]ustees their successors and assigns and [illegible] heirs, executors, administrators and assigns in manner aforesaid as by the said trustees their successors and assigns and their heirs, executors administrators or assigns or their counsel in the Law shall be reasonably required.

In Witness Whereof the parties hereto have respectively hereunto set their respective hands and seals, the day and year first above written. Signed.